कथन की हुई युक्ति जो मैंने देखी और सुनी उसी के (उच्छिष्ट) प्रसाद से मै इस ग्रन्थ की रचना करता हू। कवि चन्द की उपरोक्त उक्ति को सुनकर कविचन्द की स्त्री बोली कि हे पति इस काव्य के शब्द साक्षात ब्रह्म स्वरूप है। इनको उच्छिष्ट ऐसे अनुचित शब्द से सम्बोधन न कीजिए। इस पर कवि चन्द ने उत्तर दिया कि हे प्रिये, तेरा कथन सर्वथा सत्य है। यह वाणी वास्तव मे उस ब्रह्म के समान है जिसके कि रूप रेख गुण आकारादि कुछ भी नही है, किन्तु मेरे इस प्रकार कथन का तात्पर्य्य यह है कि मै किसी प्रकार चूक भी जाऊ तो मेरी हँसी कदापि न होगी। यह सुन कवि चन्द की स्त्री पुनः बोली कि हे पति आपको पहिले तो सरस्वती जी का वरदान है इस हेतु आप काव्यकला मे भलीभांति निपुण हो, दूसरे राजा पृथ्वीराज ससार में इस समय एक अवतारी नरेश है, तीसरे उनके सामत भी अद्वितीय वीर है, फिर इस में उच्छिष्ट उक्ति कैसी ? यह सुन पुन कवि चन्द बोला कि हे चन्द्रमुखी यह भी सत्य है, यद्यपि मै काव्यरचना मे प्रवीण हू और यह काव्य रसमय होगा किन्तु उक्ति वही है जो कि मेरे से प्रथम कवि अपने अनेकानेक ग्रन्थो मे वर्णन कर चुके हैं, इसीलिये मेरा उच्छिष्ट कहना अयोग्य नही है।

इस प्रकार कवि चन्द स्त्री की शका का समाधान करके ईश्वर के ऐश्वर्य्य का वर्णन करने लगा। वह कहता है कि हे प्रिये, मै सब से पहिले अपने उस आदि देव को प्रणाम करता हू जिससे अक्षय ओंकार शब्द उत्पन्न हुआ है, पुन वह ईश्वर कैसा है कि उसने निराकार से साकार किया अर्थात् उससे प्रथम कुछ भी न था उसने ही अपने इच्छानुसार इस जगत को निर्माण किया, उसके तेज से ही सत, रज, तम ये तीनो गुण और इनसे ही स्वर्ग, मृत्यु, और पाताल लोकादि उत्पन्न हुए, पुन उसने ब्रह्मा का रूप धारण कर वेद का उच्चारण किया जिससे कि इसी आदि देव का गुणानुवाद वर्णन है कि वह सर्व गुण सम्पन्न इस जगत का कर्ता ईश्वर स्वयं गुणरहित है अर्थात् वह किसी प्रकार के गुण अर्थात् माया के प्रपच मे बद्ध नही है, किन्तु तीनो लोक ब्रह्मा, यम, इन्द्र, वरुण, लोकपाल, पवन, अग्नि, जल, आकाश, नदी, नाले, बन, पर्व्वत, समुद्र इत्यादि और ८४ लक्ष योनि ये सब उसी ने बनाए है कि जिनका वर्णन करना कठिन है—उसी ने १८ प्रकार की बेली अलग अलग गुण की बनाई—कोई उसकी आज्ञा को भग करने मे समर्थ नही है, सब उसकी आज्ञा को शिरोधार्य्य करके सुख दुःख सहन करते है, रात दिन साय प्रात नियमानुसार उसकी आज्ञा से होते है, दिगपाल उसी के आज्ञानुसार भूमि को थाम्हे हुए है, पवन उसी के आज्ञानुसार प्रमाण से परिमाण मात्र भी अधिक सचालन नही हो सकती, इन्द्र उसी के आज्ञानुसार स्वर्ग मे बास करता हुआ मेघो को ठीक समय पर वर्षा करने की प्रेरणा करता है, उसी के आज्ञानुसार अथाह समुद्र आकाश तक अपनी लहरो को उठाता है, किन्तु मर्य्यादा को कदापि छोड नहीं सकता। तात्पर्य्य यह है कि उसके नियत किए हुए नियमो को उल्लघन करने की किसी मे भी सामर्थ्य नहीं है, उसी के नियमो पर, जिसे 'प्रकृति' कहते है, यह ससार निर्भर है और रहेगा, कोई भी परिमाण को मेट नही सकता, जीव वही कर्म करता है जो कुछ उस आदि देव परमात्मा की आज्ञा होती है।

ब्रह्मा ने वेद वर्णन किया जिसमे जल थल की कोई वस्तु वर्णन करने को शेष न रही—पुन वेदव्यास जी ने १८ पुराण बखान किए जिनमे नाना अवतारो की कथाए वर्णित है—फिर वाल्मीकिजी ने सहस्रो ग्रन्थो का मत लेकर रामावतार की कथा वर्णन की—फिर अनेक कवियो ने लोको का अज्ञान दूर करने के लिये नाना काव्यो की रचना की—किन्तु हे प्रिये, यह सब हुआ पर उस अनन्त जगदीश्वर के गुणानुवाद का वर्णन कोई भी न कर सका और न उसके विषय मे कोई भी निश्चय जानकारी प्राप्त कर सका फिर भला मेरी बानगी क्या है, यदि इस

विषय मे मैं कुछ गर्व करू तो लोक मे मै केवल हँसी का कारण मात्र होऊगा।

तदनन्तर कवि अपनी लघुता वर्णन करता है कि चौहान पृथ्वीराज की अनन्य कीर्ति इस जुग्गनीपुर मे अनन्त समय तक फैली रहेगी। मेरी बुद्धि उसे केवल वर्द्धन करनेवाली है। हे! कवियो, मेरी हसी न कीजिए क्योंकि चौहान का यश राजाओ के भोजन दूध भात दाल और शक्कर के समान है गँवार गूर्जरी का राधा हुआ महेरा उसकी समता नही कर सकता। पुन चौहान की कीर्ति सतखडे महल मे सुन्दर स्त्री के नूपुर की मद मद ध्वनि के समान है और मेरी कविता घूघचू की घूघरू सी हे फिर भी घूघचू का रस अमृत की बराबरी कदापि नही कर सकता। भिन्न भिन्न ग्रन्थो मे कवियों ने जो युक्तिया कही हैं उन्हीं का सग्रह करके मै इस ग्रन्थ की रचना करता हू अर्थात् उक्त कवियों की वाणी बसत ऋतु में रसाल के वृक्ष पर बैठी कूजती हुई कोयल के समान और मेरी वाणी बबूर के वृक्ष पर बोलते हुए कपोत की सी वाणी है। पुन कवियो की वाणी सूर्य्य के समान और मेरा काव्य उस सूर्य्य की किरणों से चमकते हुए भोडर के समान हैं। पुन उक्त कवियो का काव्य ऐसा है जैसे कस्तूरी पडा हुआ राज महिषियो के शृगार करने योग्य उत्तम अजन और मेरी वाणी कुभकारिणी स्त्रियो के नेत्रो के शृगार योग्य करखे के समान है। पुन. उक्त कवियों की कविता अद्वितीय शिव के शीश से उत्पन्न हुई गगधारा के समान है और मेरा काव्य उस धार में से पूजा के हेतु लिये हुए एक गडुए जल के समान है। अस्तु मैं अपनी लघुता का जहा तक वर्णन करू थोडा है, मै तो प्राचीन कवियो का एक छोटा सा दास मात्र हू, उनके ग्रन्थो मे मैने जो कुछ पढा और देखा है उसी का मै छन्दोबद्ध वर्णन करूगा।

पुनः कवि कहता है कि मै जो इस उत्तम काव्य की रचना करता हू तो दुर्जन मूर्ख लोगों का इसे देखकर हँसना सभव है जैसे कि मार्ग मे जाते हुए हाथी को देखकर कुत्तों का स्वभाव ही भोंकने का है, परन्तु मै इसका कुछ भी विचार न करके सज्जन पुरुषों के लिये आनन्द पूर्वक यह रचना करता हू क्योंकि चीलरे के डर वस्त्र को त्याग देना बुद्धिमता नहीं है।

पुनः कवि सरस्वती की स्तुति करता है कि वह अबुधा बुधा गोपिनी है, सुन्दर मोतियो का हार उसके हृदय पर विहार करता है गभीर स्वच्छ जल के समान श्वेत है शरीर उसका, और उसे गौरी, गिरा योगिनी इत्यादि नामो से सबोधन करते है। समुद्र से उत्पन्न हुई सरस्वती के हाथ में सदैव सुन्दर सुरवाली वाणी रहती है और हस पर उसकी सवारी है जानु पर्यन्त लम्बे आजान है बाहु जिसके, वह सरस्वती सब विघ्नों की नाश करने वाली है।

पुनः कवि गणेश की स्तुति करता है कि कैसे वह गणेश हैं कि मद के सुगन्ध की रुचि के लोभ से भवरा के समूह जिनके सीस पर छत्राकार आच्छादित है, गले मे जो गुन्जा का हार धारण किए हुए है, कर्ण के अग्रभाग मे कुडल शोभायमान है हाथी की सूड के समान है भुज जिनके, सोई गणेश मुझे इस पृथ्वीराज का काव्य करने में निर्विघ्न ग्रन्थ पूर्ति की सफलता देवे।

गणेश की स्तुति करने पर कवि श्रीमहादेवजी की स्तुति करता है। वह कहता है कि द्वितिया का बालचन्द्रमा जिनके मस्तक पर शोभायमान है ऐसे शिव को मै नमस्कार करता हू। वे मेरी बुद्धि को बढावेगे, साधना और भोग सयोग और भक्ति की मूर्ति, जटाजूट बाधे हुए, पार्वती के हृदय मे वास करने वाले उस अखड शिव को बार-बार मेरा नमस्कार है। वे शिव जटाओं का जूडा शीश पर, ललाट में चन्द्रमा, गले मे सर्प तथा नरमुडमाला धारण किए हुए पार्वती को आनन्द देनेवाले ह, सिंह का चर्म है वस्त्र जिनका, गगा

कथन की हुई युक्ति जो मैंने देखी और सुनी उसी के (उच्छिष्ट) प्रसाद से मै इस ग्रन्थ की रचना करता हू। कवि चन्द की उपरोक्त उक्ति को सुनकर कविचन्द की स्त्री बोली कि हे पति इस काव्य के शब्द साक्षात ब्रह्म स्वरूप है। इनको उच्छिष्ट ऐसे अनुचित शब्द से सम्बोधन न कीजिए। इस पर कवि चन्द ने उत्तर दिया कि हे प्रिये, तेरा कथन सर्वथा सत्य है। यह वाणी वास्तव मे उस ब्रह्म के समान है जिसके कि रूप रेख गुण आकारादि कुछ भी नहीं है, किन्तु मेरे इस प्रकार कथन का तात्पर्य्य यह है कि मै किसी प्रकार चूक भी जाऊ तो मेरी हँसी कदापि न होगी। यह सुन कवि चन्द की स्त्री पुनः बोली कि हे पति आपको पहिले तो सरस्वती जी का वरदान है इस हेतु आप काव्यकला मे भलीभांति निपुण हो, दूसरे राजा पृथ्वीराज ससार में इस समय एक अवतारी नरेश है, तीसरे उनके सामत भी अद्वितीय वीर है, फिर इस में उच्छिष्ट उक्ति कैसी? यह सुन पुन कवि चन्द बोला कि हे चन्द्रमुखी यह भी सत्य है, यद्यपि मै काव्यरचना मे प्रवीण हू और यह काव्य रसमय होगा किन्तु उक्ति वही है जो कि मेरे से प्रथम कवि अपने अनेकानेक ग्रन्थो में वर्णन कर चुके है, इसलिये मेरा उच्छिष्ट कहना अयोग्य नही है।

इस प्रकार कवि चन्द स्त्री की शका का समाधान करके ईश्वर के ऐश्वर्य्य का वर्णन करने लगा। वह कहता है कि हे प्रिये, मै सब से पहिले अपने उस आदि देव को प्रणाम करता हू जिससे अक्षय ओंकार शब्द उत्पन्न हुआ है, पुन वह ईश्वर कैसा है कि उसने निराकार से साकार किया अर्थात् उससे प्रथम कुछ भी न था उसने ही अपने इच्छानुसार इस जगत को निर्म्माण किया, उसके तेज से ही सत, रज, तम ये तीनों गुण और इनसे ही स्वर्ग, मृत्यु, और पाताल लोकादि उत्पन्न हुए, पुन उसने ब्रह्मा का रूप धारण कर वेद का उच्चारण किया जिसमे कि इसी आदि कर्ता का गुणानुवाद वर्णन है कि वह सर्व गुण सम्पन्न इस जगत का कर्ता ईश्वर स्वय गुणरहित है अर्थात् वह किसी प्रकार के गुण अर्थात् माया के प्रपच में बद्ध नहीं है, किन्तु तीनो लोक ब्रह्मा, यम, इन्द्र, वरुण, लोकपाल, पवन, अग्नि, जल, आकाश, नदी, नाले, बन, पर्व्वत, समुद्र इत्यादि और ८४ लक्ष योनि ये सब उसी ने बनाए है कि जिनका वर्णन करना कठिन है—उसी ने १८ प्रकार की वेली अलग अलग गुण की बनाई—कोई उसकी आज्ञा को भग करने मे समर्थ नही है, सब उसकी आज्ञा को शिरोधार्य्य करके सुख दुःख सहन करते है, रात्र दिन साय प्रात नियमानुसार उसकी आज्ञा से होते है, दिगपाल उसी के आज्ञानुसार भूमि को थाम्हे हुए है, पवन उसी के आज्ञानुसार प्रमाण से परिमाण मात्र भी अधिक सचालन नहीं हो सकती, इन्द्र उसी के आज्ञानुसार स्वर्ग मे वास करता हुआ मेघो को ठीक समय पर वर्षा करने की प्रेरणा करता है, उसी के आज्ञानुसार अथाह समुद्र आकाश तक अपनी लहरो को उठाता है, किन्तु मर्य्यादा को कदापि छोड नहीं सकता। तात्पर्य्य यह है कि उसके नियत किए हुए नियमो को उल्लघन करने की किसी मे भी सामर्थ्य नही है, उसी के नियमो पर, जिसे 'प्रकृति' कहते है, यह ससार निर्भर है और रहेगा, कोई भी परिमाण को मेट नही सकता, जीव वही कर्म करता है जो कुछ उस आदि देव परमात्मा की आज्ञा होती है।

ब्रह्मा ने वेद वर्णन किया जिसमे जल थल की कोई वस्तु वर्णन करने को शेष न रही—पुन वेद-व्यास जी ने १८ पुराण बखान किए जिनमे नाना अवतारो की कथाए वर्णित है—फिर वाल्मीकिजी ने सहस्रो ग्रन्थों का मत लेकर रामावतार की कथा वर्णन की—फिर अनेक कवियो ने लोको का अज्ञान दूर करने के लिये नाना काव्यो की रचना की—किन्तु हे प्रिये, यह सब हुआ पर उस अनन्त जगदीश्वर के गुणानुवाद का वर्णन कोई भी न कर सका और न उसके विषय मे कोई भी निश्चय जानकारी प्राप्त कर सका, फिर भला मेरी बानही क्या है, यदि इस

विषय मे मैं कुछ गर्व करू तो लोक मे मैं केवल हॅसी का कारण मात्र होऊगा।

तदनन्तर कवि अपनी लघुता वर्णन करता है कि चौहान पृथ्वीराज की अक्षय कीर्ति इस जुग्गनी-पुर मे अनन्त समय तक फैली रहेगी।मेरी बुद्धि उसे केवल वर्द्धन करनेवाली है। हे! कवियो, मेरी हँसी न कीजिए क्योंकि चौहान का यश राजाओ के भोजन दूध भात दाल और शक्कर के समान है गॅवार गूर्जर का राधा हुआ महेरा उसकी समता नही कर सकता। पुन चौहान की कीर्ति सतखडे महल मे सुन्दर स्त्री के नूपुर की मद मद ध्वनि के समान है और मेरी कविता घूघचू की घूघरू सी है फिर भी घूघचू का रस अमृत की बराबरी कदापि नही कर सकता। भिन्न भिन्न ग्रन्थो मे कवियों ने जो युक्तिया कही हैं उन्हीं का सग्रह करके मै इस ग्रन्थ की रचना करता हू अर्थात् उक्त कवियो की वाणी वसत ऋतु मे रसाल के वृक्ष पर बैठी कूजती हुई कोयल के समान और मेरी वाणी बबूर के वृक्ष पर बोलते हुए कपोत की सी वाणी है। पुन कवियो की वाणी सूर्य्य के समान और मेरा काव्य उस सूर्य्य की किरणों से चमकते हुए भोडर के समान है। पुन उक्त कवियों का काव्य ऐसा है जैसे कस्तूरी पडा हुआ राज महिषियो के शृगार करने योग्य उत्तम अजन और मेरी वाणी कुभकारिणी स्त्रियो के नेत्रो के शृगार योग्य करखे के समान है। पुन. उक्त कवियो की कविता अद्वितीय शिव के शीश मे उत्पन्न हुई गगधारा के समान है और मेरा काव्य उस धार में से पूजा के हेतु लिये हुए एक गडुए जल के समान है। अस्तु मै अपनी लघुता का जहा तक वर्णन करू थोडा है, मै तो प्राचीन कवियो का एक छोटा सा दास मात्र हू, उनके ग्रन्थो में मैने जो कुछ पढा और देखा है उसी का मै छन्दोबद्ध वर्णन करूगा।

पुनः कवि कहता है कि मै जो इस उत्तम काव्य की रचना करता हू तो दुर्जन मूर्ख लोगों का इसे देखकर हॅसना सभव है जैसे कि मार्ग में जाते हुए हाथी को देखकर कुत्तो का स्वभाव ही भोंकने का है, परन्तु मै इसका कुछ भी विचार न करके सज्जन पुरुषो के लिये आनन्द पूर्वक यह रचना करता हू क्योंकि चीलरे के डर वस्त्र को त्याग देना बुद्धिमता नही है।

पुन कवि सरस्वती की स्तुति करता है कि वह अबुधा बुधा गोपिनी है, सुन्दर मोतियो का हार उसके हृदय पर विहार करता है गभीर स्वच्छ जल के समान श्वेत है शरीर उसका, और उसे गौरी, गिरा योगिनी इत्यादि नामो से सबोधन करते है। समुद्र से उत्पन्न हुई सरस्वती के हाथ में सदैव सुन्दर सुरवाली वाणी रहती है और हस पर उसकी सवारी है जानु पर्यन्त लम्बे आजान है बाहु जिसके, वह सरस्वती सब विघ्नों की नाश करने वाली है।

पुनः कवि गणेश की स्तुति करता है कि कैसे वह गणेश हैं कि मद के सुगन्ध की रुचि के लोभ से भवरा के समूह जिनके सीस पर छत्राकार आच्छादित है, गले में जो गुञ्जा का हार धारण किए हुए है, कर्ण के अग्रभाग मे कुडल शोभायमान है हाथी की सूड के समान है भुज जिनके, सोई गणेश मुझे इस पृथ्वीराज का काव्य करने में निर्विघ्न ग्रन्थ पूर्ति की सफलता देवे।

गणेश की स्तुति करने पर कवि श्रीमहादेवजी की स्तुति करता है। वह कहता है कि द्वितिया का बालचन्द्रमा जिनके मस्तक पर शोभायमान है ऐसे शिव को मै नमस्कार करता हू। वे मेरी बुद्धि को बढावेगे, साधना और भोग सयोग और भक्ति की मूर्ति, जटाजूट बाधे हुए, पार्वती के हृदय मे बास करने वाले उस अखड शिव को बारंबार मेरा नमस्कार है। वे शिव जटाओं का जूडा शीश पर, ललाट में चन्द्रमा, गले मे सर्प तथा नरमुडमाला धारण किए हुए पार्वती को आनन्द देनेवाले है, सिंह का चर्म है वस्त्र जिनका, गगा

जिनके माथे पर विराजमान है, तीन हैं नेत्र जिनके, अग्निनेत्र से भस्म किया है कामदेव को जिन्होंने, ऐसे शिव को बारम्बार मेरा नमस्कार है। पुनः कविचन्द कहता है कि हर महादेव और हरि विष्णु की एक भाव से आराधना करनी चाहिए इसके विरुद्ध हरि हर में जो भेद मानता है सो नर्कवासी होता है। यथा नारायण की भक्ति करनेवाले स्वर्ग पाते हैं सो सही है परन्तु जो शिव से द्वेष करने वाले है वे कदापि स्वर्ग नहीं पाते क्योंकि शिव गंगाजी को धारण किए हुए हैं और विष्णु भृगुलता को, शिव उमापाति हैं और विष्णु लक्ष्मीपाति, विष्णु शंख को धारण किए हुए है तो शिव विभूति को, विष्णु के हृदय मे वैजंतीमाल शोभायमान है तो शिव भी नरमुडमाला धारण किए हुए हैं, विष्णु पीताम्बर धारण किए है तो शिव बागम्बर धारण किए हुए हैं—इस प्रकार दोनों देवता पाप को हरण कर मुक्ति के देनेवाले हैं किसी प्रकार भिन्न भिन्न मानने योग्य नहीं हैं, शिव और विष्णु दोनों समान ही हैं दोनोंही समान पूजनीय हैं।

इस ग्रन्थ में संग्रहीत कथाएं समुद्र के समान, उनकी कीर्ति तरगों के समान हैं इसमें जो उक्तिया हैं सोई नौकाए हैं और कवि की आशा मल्लाह स्वरूप है।

यह काव्यसमुद्र कैसा है कि ज्ञान के द्वारा मुक्ति देने वाला और राजनीति रूपी समुद्र में पार उतरने के लिये साक्षात नौका स्वरूप है। इस ग्रन्थ के छन्द, प्रबन्ध, कवित्त, साटक, गाहा, दूहा इत्यादि मात्रा वर्णादि भेदों से परिपूर्ण अमर और भरथ रचित पिंगल के अनुसार हैं। यह कोई ढॅकी हुई बात नहीं है। वर्ण, मात्रा, अक्षर, रत्ति, जाति, ध्वनि, स्वर इत्यादि सब वस्तुए इस ग्रन्थही में स्पष्ट है। यदि पढनेवाला स्वय भूलकर शुद्ध शुद्ध न पढ सके तो इसमें मेरा दोष नहीं क्योंकि पाठक को भी काव्य सुर इत्यादि का जानकार होना आवश्यक है।

चद कवि ने इस ग्रन्थ में उक्ति, धर्म्म, राजनीति, नवरस का छः भाषाओं में वर्णन किया है अक्षर भेद, लघु गुरु मात्रा उक्ति युक्ति आदि का जिसे भलीभांति ज्ञान हो तथा गान विद्या मे निपुण, ताल स्वर का जाननेवाला भी हो वह रसिक पुरुष रासो काव्य का रस पा सकता है। तर्क वितर्क को जानकर राजसभाओं और श्रेष्ठ कवियों की मडली में जो पुरुष आदरणीय होना चाहे वह रासो को पढ़े और मनन करता हुआ अभ्यास करे।

जो रासो को सुगुरु से पढ़ता है उसे काव्य नीति, धर्म्म, उक्ति, युक्ति का ज्ञान होता है। अधिक कहां तक कहा जाय मनुष्य इसका अभ्यास करने से तीनों काल का जाननेवाला परम बुद्धिमान हो सकता है, जो मनुष्य रासो के क्रम को नहीं जानता उसे यह बुरा मालूम होता है और जो मनुष्य उपरोक्त बातों का ज्ञान रखता हुआ रासो को पढ़ता और सुनता है उसी को वह भला मालूम होता है। कवि कहता है कि इस रासो मे मैंने सात हजार छद मुनियों कथित ग्रन्थों के आश्रय पर वर्णन किए हैं, यदि कोई मात्रा घटा बढ़ा कर पढे और छन्द पूरा न बैठे तो कोई मुझे दूषण न दे।

रासो के विषय का संक्षेप वर्णन।

क्षत्रिय वश में ढूढा नाम का एक राक्षस था उसकी ज्योति से राजा पृथ्वीराज, जीभ से कविचद और अन्यान्य अवयवों से सामत लोगो का जन्म हुआ। उक्त राजा पृथ्वीराज ने बादशाह को कई बार कैद किया और और भी कीर्ति के काम किए, उन्हीं का इस ग्रंथ में कविचंद ने वर्णन किया है।

परीक्षित की सर्पदंशन और जन्मेजय की सर्पसत्र कथा।

एक ब्राह्मण ने जो कि छन्द शास्त्र अर्थात् काव्य में परम विद्वान था, शरीर त्याग कर सर्प का

जन्म पाया। जिस समय यह सर्प योनि में था तो गरुड़ ने उसे भक्षण करने का विचार किया किन्तु वह छल कर किसी प्रकार गरुड के हाथ से निकल गया। उसी का नाम **तक्षक** भूविख्यात है।

एक समय का वृत्तान्त है कि राजा परीक्षित शिकार खेलने जगल में गए। वहा पर शृंगी ऋषि को तपस्या करते देख उन्होंने उन से कुछ प्रश्न किए और जब उत्तर न पाया तो क्रुद्ध होकर एक मृतक सर्प ऋषि के गले मे डालकर आप महलों को चले आए। किंचित कालोपरान्त शृंगी ऋषि के पुत्र ने आकर जब पिता की उक्त अवस्था देखी तो वह अत्यत क्रोधित हुआ और तुरन्त हाथ में जल लेकर उसने शाप दिया कि जिसने मेरे पिता के गले में सर्प डाला हो वह एकही सप्ताह में सर्प के काटने से मृत्यु को प्राप्त होवे। जिस समय शृंगी ऋषि समाधि से जागे और उन्होंने जब यह वृत्तान्त सुना तो योग विद्या से ध्यान करके विचार करने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि यह कर्म तो कलिकाल से भुलावे में पडे हुए धर्म्म धुरन्धर राजा परीक्षित का है— इसलिये पुत्र को बहुत धिक्कारा और इस विषय की सूचना देने के लिये वे आप स्वय राजा परीक्षित के पास गए। राजा ने ऋषि का बड़ा आदर सत्कार किया और आगमन का कारण पूछा। तब ऋषि ने अत्यन्त शोक प्रकाश करते हुए उपरोक्त विवरण कह सुनाया जिसे सुनकर राजा ने ऋषि से प्रार्थना की कि स्वामी अब आपही मेरी मुक्ति का उपाय बतलाइए कि मैं मोक्ष पाऊ। तब ऋषि ने कहा कि आप व्यास जी के पुत्र श्रीशुकदेव जी से भागवत श्रवण कीजिए—इस पर राजा ने परम आदर पूर्वक श्री शुकदेव जी को बुलाकर भागवत की कथा सुननी आरम्भ की। जब सातवा दिन आया तो उपरोक्त तक्षक पुष्पों के हार में छिपकर राजा परीक्षित तक जा पहुचा और गगा किनारे ऋषि समाज में बैठे भागवत की कथा सुनते हुए धर्म्म धुरन्धर राजा परीक्षित के अकाल काल का कारण हुआ। जिस समय तक्षक राजा परीक्षित को डसने के लिये चला तो देखता क्या है कि भूविख्यात वैद्य धन्वन्तरि राजा परीक्षित का सर्पाघात द्वारा मरण सुनकर उनकी औषधि करने को हस्तिनापुर जा रहे है। यह देखकर तक्षक लकुटाकार होकर रास्ते में जा पडा। ज्योंही धन्वन्तरि उसके पास आए तो उन्होंने उस तक्षक को लकड़ी समझकर उठाकर कन्धे पर रख लिया और तक्षक ने अवसर पाकर ततक्षण धन्वन्तरि की पीठ मे डस लिया जिससे धन्वन्तरि ने व्याकुल होकर उसी क्षण प्राण छोड दिए।

धर्म्म धुरन्धर राजा परीक्षित का स्वर्गवास होने के पश्चात उनके पुत्र राजा जन्मेजय गद्दी पर बैठे, एक दिन जन्मेजय अपने मन में विचार करने लगे कि जिस पुत्र ने अपने बाप का बदला न लिया उसका जन्म लेनाही वृथा है, इसलिये अब मुझे चाहिए कि मैं पृथ्वी भर के सर्पमात्र का नाश कर दू। ऐसा विचारकर बडे पडितों को बुलाकर उसने यज्ञ करना आरम्भ किया। ब्राह्मण जिन जिन सर्पों का नाम ले ले कर अग्नि कुण्ड में आहुति देते थे वे सर्प सपरिवार आ आकर उस अग्नि में गिरते और भस्म होते जाते थे। यह हाल देख कर तक्षक इन्द्र के सिंहासन मे जा लिपटा। इन्द्र ने भी शरणागत की रक्षा करना अपना धर्म्म जान उसे अभय दान दे किसी प्रकार यज्ञ मे आहुति होने से उसे बचाया। तदनन्तर वह सर्प आबू राज पर्वत पर रहने लगा।

गालव ऋषि के शिष्य उत्तङ्क का उपाख्यान।

एक समय का वृत्तान्त है कि उतङ्क ऋषि अपने गुरु गालव से विद्या पढ़ कर जब उत्तीर्ण हुए तो वे बडे विनीत भाव से गुरु से बोले कि हे भगवन् अब आप गुरु दक्षिणा की आज्ञा दीजे। यह सुन गालव ऋषि की स्त्री बोली कि हे पुत्र तू मुझे राजा जन्मेजय के कान के कुण्डल ला दे, मैं इसके लिये आठ दिन पर्य्यन्त प्रतीक्षा करुगी। गुरुपत्नी के ऐसे वचन

सुन कर वह ऋषिपुत्र जन्मेजय के द्वार पर गया, और उसने राजा से कुण्डल मांगे। राजाने भी ब्राह्मण को अपने द्वार पर भिक्षा के लिये आया देख उसे निराश फेरना क्षत्री धर्म्म के विरुद्ध जान अपने कुण्डल उसे दे दिए। उत्तङ्क ऋषि कुण्डल ले कर जिस समय अपने गुरु के पास आ रहा था तक्षक ने किसी प्रकार छल कर उससे वे कुण्डल ले लिये और उसके देखते ही देखते वह पाताल को चला गया। इस पर उत्तङ्क ऋषि को बडा संताप हुआ और उसने इन्द्र से प्रार्थना करनी आरम्भ की। तब इन्द्र स्वयं वहां आया और उसने किसी प्रकार उसे पाताल तक इस उपाय से भेज दिया कि जिससे विषैले सर्पों का विष उसके शरीर को न व्याप सके। तब तो उत्तङ्क प्रसन्नता पूर्वक तक्षक के समीप गया और उन कुण्डलों के जोडे को उससे ले आया और जा कर उसने उन्हें गुरुपत्नी को दिया। उत्तङ्क ऋषि जहां हो कर पाताल को गया था वहां पर एक बडा भारी बिल अर्थात् गडहा हो गया और वह प्रति दिन बड़ा ही होता गया।

एक समय का वर्णन है कि ऋषियों में श्रेष्ठ वसिष्ठ ऋषि कुछ ऋषियों की समाज सहित उपरोक्त स्थान पर आए और इस स्थान को रमणीक देख कर उन्होंने वहां ही कुछ दिन निवास करने का विचार किया। एक दिन ऋषि की गाय उक्त बिल अर्थात् गडहे में समा गई। जब ऋषि को यह समाचार ज्ञात हुआ तो उन्हें बडी चिन्ता उत्पन्न हुई। वे आप स्वयं बिल के पास आए और गौ को निकालने के लिये श्री गङ्गाजी की स्तुति करने लगे। तब माता मन्दाकिनी ने भी प्रसन्न हो कर ऋषि की इच्छा पूर्ण की। बिल से बहुत सा जल उबलने लगा यहां तक कि वह गडहा जल से भर गया। उसी में पैरती हुई ऋषि नंदिनी नामक गौ ऊपर आगई। वशिष्ठ ऋषि ने अपनी गौ तो पा ली परन्तु उन्हें इस बात की चिन्ता उत्पन्न हुई कि यह बिल बडा भयानक है इसमें न जाने कितने जीवों की वृथा मृत्यु होगी, इस लिये इसको पूर देना परम आवश्यक है। इसलिये वसिष्ठ ऋषि हिमालय पर्व्वत के पास गए और उस से उक्त बिल और अपनी गाय की सम्पूर्ण कथा वर्णन कर के उन्होंने कहा कि यदि उस बिल को पूरने के लिये आप हमको अपना एक पुत्र देवें तो परम कल्याण हो, अनन्त जीवों के प्राण बचेंगे और आपका बडा यश और कीर्ति संसार में होगी। तब हिमाचल ने उसी समय अपने छओ पुत्रों को बुला कर ऋषि कथित वृत्तांत कह सुनाया और ऋषि के साथ जाने के लिये अपने बड़े पुत्र पर इच्छा प्रगट की किंतु उसने सर्वथा नाहीं कर दी और कहा कि ऐसी निषिद्ध भूमि पर बास करना मुझे स्वीकार नहीं। तब वशिष्ठजी ने उत्तर दिया कि हे पुत्र यद्यपि तेरा कथन सत्य है किंतु जो उस बिल पर कोई पर्व्वत स्थापित हो जाय तो हम सब ऋषि वहां पर तपस्या करेंगे, नाना प्रकार के उत्तमोत्तम वृक्ष वल्ली फल फूलों से वह स्थान सुशोभित हो जायगा सब देवता गंधर्व मुनि और ब्रह्मा, विष्णु महेश वहां पर निरंतर निवास करेंगे और हे पुत्र वह वही स्थान है जहां पर वाल्मीकि को चौर कर्म करते करते ऋषित्व प्राप्त हुआ है। वशिष्ठ ऋषि के ऐसे वचन सुन कर हिमालय का नंद नामक मध्यम पुत्र बोला कि हे ऋषिराज यदि ऐसा है तो मैं चलने को प्रस्तुत हूं क्योंकि मैं लंगडा हूं इसलिये मैं अन्य कोई उपकारक काम करने योग्य नहीं हूं किंतु यह ऐसा समय आन लगा है जिसमें पिता के वचन का निर्वाह होता है और मेरी भी मुक्ति होनी सम्भव है। नन्द पर्व्वत का ऐसा वचन सुन कर वशिष्ठ ऋषि ने अर्बुद नाग का आह्वान किया और उससे कहा कि जो तू इस पर्व्वत को अमुक स्थान पर पहुंचा दे तो हमारा बडा कार्य्य सिद्ध हो। तब अर्बुद बोला कि हे ऋषि, मैं मित्र नंद को ले चलने को प्रस्तुत हूं किंतु वह तीर्थ मेरे नाम से प्रसिद्ध होना चाहिए। यह सुन नंद बोला कि हे मित्र तेरे नाम से अवश्य तीर्थ प्रसिद्ध होगा क्योंकि तू ऋषि का कार्य्य साधन करता है और मेरे साथ भी परम उपकार करता है अर्थात् मेरा पितृऋण से उद्धार करता है– तब उस अर्बुद

ने नंद गिर को अपनी पीठ पर रख लिया और वह ऋषि के पीछे हो चला और उक्त स्थान पर पहुँच कर उसने बिल मे पर्वत को स्थापित कर दिया जिसे देख कर अन्य सब ऋषियो ने जय जयकार करके पुष्पवर्षा की। किंतु देखते ही देखते वह बड़ा पर्वत हिलने और शनैः शनैः नीचे को धसने लगा। यह देख कर वशिष्ठ ने अत्यन्त व्याकुल हो श्री महादेव जी का स्मरण और उनकी स्तुति करनी आरम्भ की जिससे प्रसन्न होकर श्री महादेव जी स्वय प्रगट हुए और वशिष्ठ के सिर पर हाथ रखकर बोले कि हे पुत्र वर माग परन्तु ऋषि शिव का स्वरूप देख कर ऐसे मोहित हुए कि मुँह से कुछ बात न निकली, पुनः नमस्कार कर के रह गए तब शिव ने पुनः कहा कि हे पुत्र वर माँग तब ऋषि ने सावधान होकर प्रार्थना की कि हे देव इस पर्वत को अचल कर दीजिए और आप भी इस पर अचल रूप से विराजमान हूजिए ऋषि का ऐसा वचन सुन कर महादेवजी ने एवमस्तु कह कर तीन वेर " अचल " शब्द का उच्चारण किया और कहा कि जिस प्रकार मै कैलाश और काशीपुरी मे निवास करता हू उसी प्रकार इस पर्वत पर भी रहूगा। जो मनुष्य इस तीर्थ का दर्शन करेगा वह परम पुण्य का भागी हो कर मेरी अचल भक्ति को प्राप्त होगा और इस पर्वत पर कभी किसी प्रकार की बाधा न व्यापेगी तथा स्वर्ग और मुक्ति इसके आसपास निवास करेगे।

महादेव जी का ऐसा वरदान पाकर वशिष्ठ ऋषि अत्यन्त प्रसन्न हुए और उस समय से उस स्थल को परम पवित्र और रमणीक जान विश्वामित्र गौतम, सुमित्र, दालभ्य, अगस्त्य, मारकण्डेय, कौंडिन्य, उद्दालक इत्यादि ऋषियों का बड़ा समाज जोड कर वहा निवास करने लगे। श्री शिवजी के वरदान के अनुसार ऋषियों के भोजन योग्य नाना प्रकार के स्वादिष्ट और उत्तम कद मूलादि भी उस पर्वत पर उगने लगे जिससे वे ऋषि लोग अत्यन्त प्रसन्न चित्त हो कर तपस्या करने लगे। इसी समय उन्हो ने परस्पर मिल कर एक बृहत् यज्ञ करने का विचार किया जिसे सुनकर राक्षसो ने भी यज्ञ विध्वंस करने की इच्छा से अपना दल जोडा।

समय आने पर ऋषि लोगो ने श्राप वेद मन्त्रानुसार आठ अंगुल गहरा खोद तीन हाथ लम्बा और इतना ही चौड़ा एक सुदर चौकोण यज्ञकुण्ड बनाया और नाना प्रकार की यज्ञ की सामिग्री जोड कर सब ऋषि एक चित्त होकर आनद से यज्ञ करने लगे। उधर राक्षसो का समूह जो कि इसकी ही प्रतीक्षा कर रहा था उपद्रव करने मे तत्पर हुआ। जिस समय ऋषि लोग वेद पाठ करते हुए होम करने को उद्यत हुए उस समय राक्षस ऊपर से रक्त मूत्र मांस इत्यादि निषिद्ध पदार्थों को बरसा के भूमि और पर्वत को हिला के अनेक प्रकार के भयानक और मधुर शब्द और सुन्दर, कुरूप, और घृणित नाना प्रकार के भेष धारण कर के यज्ञ विध्वस करने की चेष्टा करने लगे। इस महान उपद्रव से अत्यत दुखी हो सब ऋषियो ने वसिष्ठ के पास जाकर अपना समस्त दुःख निवेदन किया। तब वशिष्ठ ने स्वय अग्निकुड के पास आकर उसमे से परिहार चालुक्य और प्रमार ये तीन क्षत्री उत्पन्न किए और उन्हे राक्षसों को मारने के लिये आज्ञा दी, किंतु जब यथासाध्य चेष्टा करने पर भी इन तीनो क्षत्रियो द्वारा अपेक्षित कार्य्य का सतोषप्रद साधन न हो सका, तब वसिष्ठ जी स्वयं एक नवीन यज्ञकुण्ड की रचना कर श्री चतुरानन ब्रह्मा का ध्यान और जाप करते हुए आहुति देने लगे, जिससे तुरत ही चार बाहुवाला, चारो हाथो मे खड्ग धारण किए हुए, रक्त मुख, रक्त वर्ण, एक दीर्घकाय महान तेजस्वी पुरुष उत्पन्न हुआ। उस दीर्घकाय पुरुष के उन्नत कंध और ललाट, विशाल वक्षस्थल, काले घुघराले केश, रक्त नेत्र, विकट भृकुटि और गुलाब के सदृश मुख का रंग था। वह धनुष, बाण, ढाल, तलवार इत्यादि शस्त्रों से सुसज्जित था और कवच को धारण किए हुए था। वेदी से निकले हुए उस पुरुष को देखकर वशिष्ठ जी ने उसे चहुवान नाम से सबोधन किया और उसी समय वेद मंत्रो को पढते हुए उसका राज्याभिषेक करके उसे राक्षसों से युद्ध

सुन कर वह ऋपिपुत्र जन्मेजय के द्वार पर गया, और उसने राजा से कुण्डल मागे। राजाने भी ब्राह्मण को अपने द्वार पर भिक्षा के लिये आया देख उसे निराश फेरना क्षत्री धर्म्म के विरुद्ध जान अपने कुण्डल उसे दे दिए। उत्तङ्क ऋपि कुण्डल ले कर जिस समय अपने गुरु के पास आ रहा था तक्षक ने किसी प्रकार छल कर उससे वे कुण्डल ले लिये और उसके देखते ही देखते वह पाताल को चला गया। इस पर उत्तङ्क ऋपि को बडा सताप हुआ और उसने इन्द्र से प्रार्थना करनी आरम्भ की। तब इन्द्र स्वय वहा आया और उसने किसी प्रकार उसे पाताल तक इस उपाय से भेज दिया कि जिससे विपैले सर्पों का विप उसके शरीर को न व्याप सके। तब तो उत्तङ्क प्रसन्नता पूर्वक तक्षक के समीप गया और उन कुण्डलो के जोड़े को उससे ले आया और जा कर उसने उन्हे गुरुपत्नी को दिया। उत्तङ्क ऋपि जहा हो कर पाताल को गया था वहा पर एक बडा भारी बिल अर्थात् गडहा हो गया और वह प्रति दिन बडा ही होता गया।

एक समय का वर्णन है कि ऋपियो में श्रेष्ठ वसिष्ठ ऋपि कुछ ऋपियो की समाज सहित उपरोक्त स्थान पर आए और इस स्थान को रमणीक देख कर उन्होने वहा ही कुछ दिन निवास करने का विचार किया। एक दिन ऋपि की गाय उक्त बिल अर्थात् गडहे में समा गई। जब ऋपि को यह समाचार ज्ञात हुआ तो उन्हे बडी चिन्ता उत्पन्न हुई। वे आप स्वय बिल के पास आए और गौ को निकालने के लिये श्री गङ्गाजी की स्तुति करने लगे। तब माता मन्दाकिनी ने भी प्रसन्न हो कर ऋपि की इच्छा पूर्ण की। बिल से बहुत सा जल उबलने लगा यहा तक कि वह गड़हा जल से भर गया। उसी मे पौरती हुई ऋपि नदिनी नामक गौ ऊपर आगई। वशिष्ठ ऋपि ने अपनी गौ तो पा ली परन्तु उन्हें इस बात की चिन्ता उत्पन्न हुई कि यह बिल बडा भयानक है इसमें न जाने कितने जीवों की वृथा मृत्यु होगी, इस लिये इसको पूर देना परम आवश्यक है। इसलिये वसिष्ठ ऋपि हिमालय पर्व्वत के पास गए और उस से उक्त बिल और अपनी गाय की सम्पूर्ण कथा वर्णन कर के उन्होंने कहा कि यदि उस बिल को पूरने के लिये आप हमको अपना एक पुत्र देवें तो परम कल्याण हो, अनत जीवो के प्राण बचेंगे और आपका बडा यश और कीर्ति ससार मे होगी। तब हिमाचल ने उसी समय अपने छओ पुत्रो को बुला कर ऋपि कथित वृत्तांत कह सुनाया और ऋपि के साथ जाने के लिये अपने बडे पुत्र पर इच्छा प्रगट की किंतु उसने सर्वथा नाही कर दी और कहा कि ऐसी निपिद्ध भूमि पर बास करना मुझे स्वीकार नही। तब वशिष्ठजी ने उत्तर दिया कि हे पुत्र यद्यपि तेरा कथन सत्य है किंतु जो उस बिल पर कोई पर्व्वत स्थापित हो जाय तो हम सब ऋपि वहा पर तपस्या करेगे, नाना प्रकार के उत्तमोत्तम वृक्ष वल्ली फल फूलो से वह स्थान सुशोभित हो जायगा सब देवता गधर्व मुनि और ब्रह्मा, विष्णु महेश वहा पर निरतर निवास करेगे और हे पुत्र वह वही स्थान है जहा पर वाल्मीकि को चौर कर्म करते करते ऋपित्व प्राप्त हुआ है। वशिष्ठ ऋपि के ऐसे वचन सुन कर हिमालय का नद नामक मध्यम पुत्र बोला कि हे ऋपिराज यदि ऐसा है तो मै चलने को प्रस्तुत हू क्योकि मे लगडा हू इसलिये मै अन्य कोई उपकारक काम करने योग्य नही हू किंतु यह ऐसा समय आन लगा है जिसमे पिता के वचन का निर्वाह होता है और मेरी भी मुक्ति होनी सम्भव है। नन्द पर्व्वत का ऐसा वचन सुन कर वशिष्ठ ऋपि ने अर्बुद नाग का आह्वान किया और उससे कहा कि जो तू इस पर्व्वत को अमुक स्थान पर पहुँचा दे तो हमारा बडा कार्य्य सिद्ध हो। तब अर्बुद बोला कि हे ऋपि, मै मित्र नद को ले चलने को प्रस्तुत हू किंतु वह तीर्थ मेरे नाम से प्रसिद्ध होना चाहिए। यह सुन नद बोला कि हे मित्र तेरे नाम से अवश्य तीर्थ प्रसिद्ध होगा क्योंकि तू ऋपि का कार्य्य साधन करता है और मेरे साथ भी परम उपकार करता है अर्थात् मेरा पितृऋण से उद्धार करता है– तब उस अर्बुद

ने नंद गिर को अपनी पीठ पर रख लिया और वह ऋषि के पीछे हो चला और उक्त स्थान पर पहुँच कर उसने बिल मे पर्वत को स्थापित कर दिया जिसे देख कर अन्य सब ऋषियो ने जय जयकार करके पुष्पवर्षा की। किंतु देखते ही देखते वह बडा पर्वत हिलने और शनैः शनैः नीचे को धसने लगा। यह देख कर वशिष्ट ने अत्यन्त व्याकुल हो श्री महादेव जी का स्मरण और उनकी स्तुति करनी आरम्भ की जिससे प्रसन्न होकर श्री महादेव जी स्वय प्रगट हुए और वशिष्ट के सिर पर हाथ रखकर बोले कि हे पुत्र वर माँग परन्तु ऋषि शिव का स्वरूप देख कर ऐसे मोहित हुए कि मुँह से कुछ बात न निकली, पुनः नमस्कार कर के रह गए तब शिव ने पुनः कहा कि हे पुत्र वर माँग तब ऋषि ने सावधान होकर प्रार्थना की कि हे देव इस पर्वत को अचल कर दीजिए और आप भी इस पर अचल रूप से विराजमान हूजिए ऋषि का ऐसा वचन सुन कर महादेवजी ने एवमस्तु कह कर तीन बेर "अचल" शब्द का उच्चारण किया और कहा कि जिस प्रकार मै कैलाश और काशी-पुरी मे निवास करता हू उसी प्रकार इस पर्वत पर भी रहूगा। जो मनुष्य इस तीर्थ का दर्शन करेगा वह परम पुण्य का भागी हो कर मेरी अचल भक्ति को प्राप्त होगा और इस पर्वत पर कभी किसी प्रकार की बाधा न व्यापेगी तथा स्वर्ग और मुक्ति इसके आसपास निवास करेगे।

महादेव जी का ऐसा वरदान पाकर वशिष्ट ऋषि अत्यन्त प्रसन्न हुए और उस समय से उस स्थल को परम पवित्र और रमणीक जान विश्वामित्र गौतम, सुमित्र, दालभ्य, अगस्त्य, मारकण्डेय, कौडिन्य, उद्दालक इत्यादि ऋषियो का बडा समाज जोड कर वहा निवास करने लगे। श्री शिवजी के वरदान के अनुसार ऋषियों के भोजन योग्य नाना प्रकार के स्वादिष्ट और उत्तम कद मूलादि भी उस पर्वत पर उगने लगे जिससे वे ऋषि लोग अत्यन्त प्रसन्न चित्त हो कर तपस्या करने लगे। इसी समय उन्होने परस्पर मिल कर एक बृहत् यज्ञ करने का विचार किया जिसे सुनकर राक्षसो ने भी यज्ञ विध्वस करने की इच्छा से अपना दल जोडा।

समय आने पर ऋषि लोगो ने आप वेद मन्त्रानुसार आठ अगुल गहरा खोद तीन हाथ लम्बा और इतना ही चौडा एक सुदर चौकोण यज्ञकुण्ड बनाया और नाना प्रकार की यज्ञ की सामिग्री जोड कर सब ऋषि एक चित्त होकर आनद से यज्ञ करने लगे। उधर राक्षसो का समूह जो कि इसकी ही प्रतीक्षा कर रहा था उपद्रव करने मे तत्पर हुआ। जिस समय ऋषि लोग वेद पाठ करते हुए होम करने को उद्यत हुए उस समय राक्षस ऊपर से रक्त मूत्र मास इत्यादि निषिद्ध पदार्थों को बरसा के भूमि और पर्वत को हिला के अनेक प्रकार के भयानक और मधुर शब्द और सुन्दर, कुरूप, और घृणित नाना प्रकार के भेष धारण कर के यज्ञ विध्वस करने की चेष्टा करने लगे। इस महान उपद्रव से अत्यत दुखी हो सब ऋषियों ने वसिष्ठ के पास जाकर अपना समस्त दु.ख निवेदन किया। तब वशिष्ठ ने स्वय अग्निकुड के पास आकर उसमे से परिहार चालुक्य और प्रमार ये तीन क्षत्री उत्पन्न किए और उन्हे राक्षसों को मारने के लिये आज्ञा दी, किंतु जब यथासाध्य चेष्टा करने पर भी इन तीनो क्षत्रियो द्वारा अपेक्षित कार्य्य का सतोषप्रद साधन न हो सका, तब वसिष्ठ जी स्वय एक नवीन यज्ञकुण्ड की रचना कर श्री चतुरानन ब्रह्मा का ध्यान और जाप करते हुए आहुति देने लगे, जिससे तुरत ही चार बाहुवाला, चारो हाथो मे खड्ग धारण किए हुए, रक्त मुख, रक्त वर्ण, एक दीर्घकाय महान तेजस्वी पुरुष उत्पन्न हुआ। उस दीर्घकाय पुरुष के उन्नत कंध और ललाट, विशाल वक्षस्थल, काले घुघराले केश, रक्त नेत्र, विकट भृकुटि और गुलाब के सदृश मुख का रंग था। वह धनुष, बाण, ढाल, तलवार इत्यादि शस्त्रों से सुसज्जित था और कवच को धारण किए हुए था। वेदी से निकले हुए उस पुरुष को देखकर वशिष्ठ जी ने उसे चहुवान नाम से सबोधन किया और उसी समय वेद मंत्रो को पढते हुए उसका राज्याभिषेक करके उसे राक्षसों से युद्ध

करने की आज्ञा दी। जब चाहुवान जी ऋषि की आज्ञा मान राक्षसो से युद्ध करने लगे तब वशिष्ट जी ने इनकी सहायता करने के लिये देवी आशापुरा जी का आह्वान किया और देवी आशापुरा जी ने सिंह पर सवार होकर सब अस्त्रशस्त्रों को धारण किए हुए आकर सग्राम करते हुए चाहुवान जी की सहायता की। यत्रकेतु नामक राक्षस को चहुवान जी ने मारा और धूम्रकेतु का सहार देवी जी ने स्वय किया। उक्त दोनो नेताओं के मारे जाने पर समस्त राक्षस दल भाग उठा। तब देवी जी ने प्रसन्न होकर चाहुवान जी से कहा कि—हे पुत्र मेरा नाम आशापुरा है, तू मुझे अपनी कुल देवी मान, मेरे नाम के स्मरण मात्र से मनवाछित फल प्राप्त होता है। इस प्रकार आशीर्वाद देकर देवी तो अंतर्ध्यान होगई, उधर अग्निकुण्ड में से हुकार शब्द करता हुआ एक चार मुखवाला पुरुष उत्पन्न हुआ जो अपने चारों मुखों से चारों वेदो का उच्चारण कर रहा था, जिसे देख कर सब ऋषियों ने उसकी स्तुति की और उस पुरुष ने सबको आशीर्वाद दिया और चारों अग्नि से उत्पन्न हुए क्षत्रियों का गोत्र, वेद, बता वह अतर्ध्यान होगया। उसी समय दुर्वासा ऋषि भी वहा आ उपस्थित हुए जिन्हें देख कर वशिष्ट जी बोले कि यदि अब भी राक्षस उपद्रव करेगे तो यह अग्निकुलवाले क्षत्री हमारी रक्षा करेगे, यद्यपि क्षत्रियों की सनातन से छत्तीस वश चले आते हैं किंतु ये चार क्षत्री उन सब में श्रेष्ठ हैं।

कवि कहता है कि पृथ्वीराज चाहुवान जिनका यश इस ग्रथ मे वर्णन किया गया है उसी अग्निकुण्ड से उत्पन्न हुए चाहुवान के वश में हैं, जिन्हों ने उत्पन्न होते ही ब्राह्मणों की रक्षा की।

चाहुवान जी की कीर्ति चतुर्दिक फैल गई। समय पाकर उनसे सामत देव नामक उन्हीं के समान प्रतापी पुत्र हुआ उनका पुत्र महादेव हुआ। उसके पश्चात मोहत, अजय सिंह, रामसिंह, वीरसिंह, विन्दसूर, उदारहार, अशोक, शकाविहार, वैरसिंह, वीरसिंह, वीरदण्ड, अरिमन, मानिकराय, महासिंह, संग्राम, चंद्रगुप्त, प्रतापसिंह, मोहसिंह, सेनराय, सप्रत्तिराय, नाग हस्त, स्थूलनद, आनंद राज, लोहधीर, धर्म्मसार, विबुधसिंह, योगसूर, चंदराय, कृष्णराज, हर हर राय, बालन्न राय, प्रथवराय, अनेय और धर्म्माधिराज हुए, धर्म्माधिराज का पुत्र * वीसलदेव अजमेर की गद्दी पर बैठा,—इसने ६४ वर्ष पर्य्यंत बडे न्याय से राज्य किया किंतु अंतिम समय में शाप वश राक्षस शरीर को पाकर उसने बडा उपद्रव किया। वीसल देव जी के सारँग देव और सारँग देव जी के आनल राज नाम से पुत्र हुआ। आना राजा जब अपनी माता गौरी के गर्भ में ही थे तब इनके पिता सारँग देव जी ढुढा राक्षस के हाथ से मारे गए थे। इसी से इनकी माता ने फिर अजमेर मे रहना उचित न जाना और वह अपने पिता के घर रणथभौर चली गई—वहां (गौरी) उनके गर्भ से आनल देव का जन्म हुआ। आना राजा का पालन पोषण इनके ननिहाल में हुआ, वहा ही ये युवा अवस्था को प्राप्त हो नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र चलाने मे निपुण हुए। नित नव विकट बन प्रात मे जाकर अहेर करना तथा अन्यान्य बीरता और पौरुष के कार्य्य करना ही इनका व्यवसाय था। इस प्रकार अवस्था के साथ साथ जब इनकी बुद्धि का भी विकास हुआ तो एक दिन ये अपनी माता से बोले कि हे माता मै नहीं जानता कि मेरा जन्म किस वश मे है सो कृपा कर बतलाइए? पुत्र का ऐसा प्रश्न सुन कर गौरी ने उत्तर दिया कि हे पुत्र इस बात को न पूछ, इसके स्मरण करने मात्र से मेरे चित्त मे भय करुणा और दुःख का सचार होता है। यह सुन आन्हल देव जी पुनः बोले कि हे माता क्या मै ऐसे अप्रसिद्ध वश में हू कि न तो बदीजन मेरे पिता का नाम उच्चारण करते है, न मैने कभी अपने पितरों का श्राद्ध किया, न एक

* चाहुवान जी से वीसल देव जी तक १७३ पीढी होती है किन्तु मूल ग्रथ मे केवल ३६ पीढी के नाम लिखे पाए जाते है और ज्ञात होता है कि शेष नामावली वर्णन के छद नष्ट हो गए है। उक्त १७३ पीढी के क्रम से नामावली बूंदी राज वशावली में दी हुई है।

चिल्लू जल ही उन्हें अर्पण किया, मै अपने गोत्र और वेद को भी नहीं जानता, मातुल वश से प्रसिद्ध होना क्या वीरो को शोभा देता है। या तो मै पिता का वैर लूगा या अपने ही प्राण दूंगा। आप सत्य सत्य क्यो नही कहतीं। तब गौरी ने इसके उत्तर में संक्षेप से ढुढा नामक राक्षस के हाथ से सारंग देव जी के वध की कथा का वर्णन करके कहा कि यह वार्ता किसी से कहना मत, परतु इससे आना राजा को सतोष न हुआ। इसलिये वे बोले कि हे माता धर्म्म के लिये, बलि, पाण्डव, श्री रामचद्र, राजा नल, और हरिश्चद्र इत्यादि राजाओं ने असीम कष्ट सहे पर उसे छोडा नही। हे माता! पिता का बदला लेना ही पुत्र धर्म्म है सो आप निर्भय हो कर इस कथा को विधि-पूर्वक आद्योपान्त कह डालिए। इसमे मुझे यह एक परम आश्चर्य्यदायक विषय ज्ञात होता है कि बीसल देव जी ने मनुष्य से राक्षस शरीर कैसे पाया। मैं आप से प्रण करके कहता हूं कि यदि आपने मुझसे इस विषय को स्पष्ट करके न कहा तो मैं सर्वथा अपने प्राण दे दूंगा। इस पर पुनः आना की माता ने उत्तर दिया कि उस कथा के सुनने से चित्तभग होने के सिवाय और कुछ लाभ नहीं, जो विषय अपने पराक्रम के बाहर हो उसमें हस्तक्षेप करना केवल हतोत्साह का कारण होता है। तब पुनः आना ने प्रत्युत्तर दिया कि यद्यपि आपका वचन सर्वथा मान्य और उक्तिसयुक्त है तथापि केवल कथा सुनने में क्या हानि है, यदि कथाओं के सुनने में हानि होती तो यह पुराणादि बनाए ही क्यों जाते। हे माता होनहार अमिट है। आप कहतीं क्यों नहीं ?

इस प्रकार पुत्र के धीर गभीर वचन सुनकर गौरी बोली कि हे पुत्र यदि तेरी ऐसी ही इच्छा है तो इस प्रभावोत्पादक और ओजवर्द्धक कथा को सावधान हो कर सुन। आबूराज पर्वत पर वशिष्ठ—ऋषिकृत यज्ञ से उत्पन्न हुए चाहुवान जी से कई एक पीढ़ी पीछे धर्म्माधि नामक राजा हुआ और धर्म्माधि से वीसल देव हुआ। धर्म्माधि का देहान्त होने पीछे उन का पुत्र वीसल देव स० ८२१ वैशाष सुदि १ शुक्रवार को अजमेर के राजसिंहासन पर बैठा। वीसल देव के सिहासन पर बैठते ही अजमेर नगर की शोभा दूनी हो गई। यह धर्मज्ञ राजा निरतर अपना धर्म्म धारण किए हुए कभी अधर्म्म कार्य्य को मन में स्थान भी न देता था, नीति और न्याय का पालन करते हुए उचित रीति से प्रजा से धन संचय कर धर्म्म कार्य्यों मे व्यय करता और अधर्म्म का निषिद्ध धन कभी खजाने में न आने देता। ऐसे उस न्यायपरायण बीसल देव के राज्य में चारों वर्ण अपने अपने धर्म्म पर आरूढ थे और उसके राज्यकर्मचारीगण दत्त-चित्त हो कर स्वामिसेवा करते थे। उक्त बीसल देव जी के पॅडिहारिन पटरानी से सारॅग देव नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ परन्तु पुत्र के जन्मते ही जब उसकी माता का देहान्त हो गया तो बीसल देव जी ने एक कन्यावत्सला वणिक स्त्री को सारॅग देव जी के पालन पोषण पर नियत किया। निदान उस वणिक स्त्री ने अपनी कन्या नंदनी और सारॅग देव जी का पालन पोषण किया। दोनों मे जन्म काल से साथ साथ रहने के कारण गाढी प्रीति हो गई थी। जब नन्दिनी की उमर ९ वर्ष की हुई तो बीसल देव जी ने एक सुन्दर वणिक युवा वर के साथ उसका विवाह कर दिया किन्तु दैवयोग से उस युवा को सिंह ने भक्षण कर लिया और वह कन्या विधवा हो गई। इस से सारॅग देव जी के हृदय मे ऐसा शोक हुआ कि वे शस्त्र बॉधने, अहेर करने इत्यादि समस्त राजकीय व्यवसायों से विरक्त हो बैठे। पुत्र का यह हाल देख कर राजा को बडा खेद हुआ और इसलिये उसने अनेक इतिहास पुराणादिको के प्रमाण देते हुए सारॅग देव जी को समझाया कि मरण जीवन तो यह ससार का नियम ही है, इस विषय पर शोकग्रस्त हो अपने व्यवसाय को छोडना बुद्धिमानी नही है। इस पर जब सारॅग देव जी को कुछ चेत हुआ तो वीसल देव जी ने सारॅग देव जी के साथ में कृपाल राय कायस्थ मुकुन्द प्रोहित और सॉचोर के राजा नरसिंहभान के साथ बहुत सी फौज देकर उन्हें मभर में राज्य करने की आज्ञा दी। सारॅग देव जी भी पिता की आज्ञा मान गाजे

बाजे से राह मे कई एक मुकाम करते हुए सभर नगर मे जा पहुचे। सारॅग देव जी का आगमन सुन वहा के यादव सर्दारो ने अगवानी दे कर सारॅग देव जी को बडे आदर से लिया। नगर के सब लोगो मे भी जब यह चर्चा फैल गई तो उन सब लोगो ने आ आ कर नजरे देनी शुरु की और यादव वशीय देवराज के पुत्र देवदत्त ने गैरी नामक अपनी कन्या वीर सारॅग देव जी को ब्याह दी।

इधर बीसल देव जी स्वय शिकार करने पधारे। शिकार से लौटते समय नगर के निकट एक परम रम्य भूमि देख कर मत्रियो को वहा पर एक तलाब बनवाए जाने की उन्होने आज्ञा दी। फिर नगर मे आ अपने सब सूर सामत कार्य्यकर्ता अथवा अन्य महज्जनों को बुला कर उन्होने एक सभा की। सायकाल से अर्द्ध रात्रि पर्य्यन्त नाना प्रकार के नृत्य गान वाद्य इत्यादि होते रहे तदनन्तर सभा विसर्जित हुई और महाराज बीसल देव जी रनिवास मे पधारे।

-महाराज बीसल देव जी की कई रानियॉ थी किंतु महाराज का प्रेम पॅवारिन पटरानी पर अधिक था जो वास्तव मे रूप लावण्य और गुणो मे सब रानियो से अधिक होने के कारण राजा की परम प्यारी थी। इसी से अन्य रानियॉ उससे सवत भाव से डाह करती हुई महाराज की भी शत्रु होगई। इस हेतु उन्होने परस्पर सम्मति करके एक योगिनी को बुलवाकर उससे अपना दुःख निवेदन किया। तब योगिनी ने उत्तर दिया कि यदि कहिए तो मै तुम्हारी उस सवत की जीवहानि कर दू, कहिए तो उन दोनो मे परस्पर विरोध करवा दू अथवा राजा को नपुसक कर दू। निदान योगिनी का अन्तिम प्रस्ताव सब रानियो ने स्वीकार किया। योगिनी ने तत्र शास्त्र द्वारा कुछ ऐसा उपाय किया कि बीसल देव जी उसी समय सहसा नपुसक हो गए।

जब बीसल देव जी को अपने नपुसकत्व का ज्ञान हुआ तो वे मन मे अत्यन्त शोकातुर हो कर ब्रह्मचर्य्य से रहने लगे और पुष्कर जी मे कार्तिक स्नान करते हुए गोकर्ण महात्म्य को श्रवण करने से जिसमे महा- देव गोकर्ण जी के पूजने का अनन्त महात्म्य जान कर उन्होने अपने पुनः पुसकत्व को प्राप्त होने की अभिलाषा से गोकर्ण की यात्रा की। उस स्थान की शोभा देख कर राजा को बडा आश्चर्य्य और उत्साह हुआ। उस आनन्दमय स्थान मे विचरण करते हुए राजा ने देखा कि पर्व्वत की कंदरा में एक योगि-राज विराजमान है जिन्हे देख कर राजा ने पास जा विनीत भाव से दण्डवत की और अपना नाम ग्राम कह सुनाया जिसे सुन कर योगिराज अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होने आशीर्वाद देते हुए बीसल देव जी को आदर से आसन दिया और कहा कि हे राजन् यहॉ पर जो शिव गोकर्ण जी का अन्तःकरण से ध्यान कर निराहारव्रत करते हुए सेवन करता है वह यथेच्छ फल को पाता है। ऐसा कहकर मुनि तुरत अन्तर-ध्यान हो गए। निदान बीसल देव जी ने ऋषि के आज्ञानुसार विधिपूर्वक शिवार्चन कर तीन उप-वास किए। जब तीसरा दिन व्यतीत हुआ तो शिव प्रेरित अप्सराओ ने आकर बीसल देव जी से कहा कि महादेव गोकर्ण जी ने आप पर प्रसन्न हो कर आपको पुनः पुसकत्व दिया। अब आप उठिए और घर जाइए। उसी समय बीसल देव जी को भी अपने पुरुषत्व प्राप्त होने का ज्ञान हुआ तो वे प्रसन्नता पूर्व्वक अपने शिविर मे आए और अपने मत्रियो को उसी स्थल पर अनुपम बाग तडाग सुशोभित एक नगर बसाने की आज्ञा देकर आप अजमेर पधारे और दो दिन का रास्ता एक दिन मे तै करते हुए अजमेर मे जा पहुचे और तुरन्त ही पॅवारिन रानी के पास जाकर उन्होने आद्योपान्त सब वृतान्त कह सुनाया।

किन्तु उस समय से बीसल देव जी की विषय तृष्णा दिन प्रति दिन इस प्रकार बढने लगी कि उन्हे कभी सतोष न होता और इसलिये यह उप-द्रव करने लगे कि नगर की जिस स्त्री के सौंदर्य्य और यौवन की वार्ता सुनते उसे तुरत ही अपने पास लाए जाने की कठिन आज्ञा देते और जो इस दुराज्ञा के पालन मे क्षणमात्र का विलम्ब होता तो आप स्वय उसके घर जा उसका सतीत्व नाश

करते और कुटुम्ब के मनुष्यो को प्राण दण्ड देते जिससे नगर के लोगो ने अति दुखित हो कर प्रधान से पुकार की कि अब हम लोगो को बडा कष्ट है इसलिये अब हम अजमेर छोडते है। तब सब राज्यकर्मचारियों ने मिल कर बीसल देव जी से राजधर्म्म वर्णन करते हुए विनीत भाव से प्रार्थना की कि आप ऐसे यशस्वी पुरुष को यह कर्म शोभा नहीं देता। तब राजा ने उत्तर दिया कि यद्यपि मै यह सब जानता हू पर क्या करू कामाग्नि की बाहुल्यता के कारण मेरा मन मेरे वश में नही है। अच्छा अब जो कुछ तुम लोग कहोगे वही मै करूगा और तुरत "प्रधान कर्मचारी" कृपाल को आज्ञा दी कि मेरी इच्छा दिग्विजय करने की है इस हेतु तुम फौज और खजाना लेकर बीसल सरोवर पर चलो पीछे मै भी आता हू। बीसल देव जी का ऐसा विचार सुन कर उनके सब इष्ट मित्र और आज्ञाकारी शूरवीर पुरुष, मडोवर का मोहन सिह पडिहार, रामगौर तोवर, गहलौत, प्रमार, जैसलमेर के भाटी बघेला जादो और बिलोचिस्तान का बलोच इत्यादि बीसल सरोवर पर आ उपस्थित हुए। केवल गुजरात का चालुक्य अर्थात् सोलंकी राजा न आया, इस पर बीसल देव जी ने अत्यन्त कुपित हो कर जैतसिह गोलवाल को अजमेर की रक्षा करने के लिये छोड *गुजरात पर चढाई कर दी और बालुका राय की प्रजा को लूटते हुए वे आगे बढने लगे। यह खबर सुन कर बालुका राय भी लडने को तय्यार हो गया और अपने प्रोहित श्रीकण्ठ भट्ट को बीसल देव जी के पास भेज कर कहला भेजा कि आप राजा होकर रय्यत को क्यो दुःख देते है, जो कुछ बात हो तो हमारा और आपका निबटेरा हो जाय, मै तो अब तक विरोध का कोई कारण नहीं देखता वृथा सैन सहार करने से क्या लाभ है. इसलिये उचित यही है कि आप अजमेर को चले जाइए और यदि हठ वश युद्ध करना हीं आपका अभिप्राय है तो हम भी तय्यार है। यह सुन कर बीसल देव जी ने अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रच कर बालुका राय पर आक्रमण किया। उधर से बालुका राय ने भी अपनी सेना का सर्पव्यूह रच कर युद्ध आरम्भ किया। दोनो दल मे घमासान युद्ध होने लगा। दोनों तरफ के योद्धा प्रचार प्रचार कर एक दूसरे पर आघात करने और शत्रु के कठोर आघातो को सहते प्राणों का मोह छोड अपनी बीरता का परिचय देने लगे। क्षण मात्र में रुधिर की नदी बह निकली और उस अखड बीर भूमि मे घायल और मृतको के कारण करुणा और बीभत्स रस का भी अभाव न रहा। ऐसे ही समय मे हाथी पर बैठे हुए चाहुवान और अश्वारूढ चालुक्य का साम्हना होगया, जिन्होंने स्वय परस्पर वीरता से युद्ध करके अपनी अपनी सैन्य का मन द्विगुण उत्तेजित कर दिया। निदान प्रातः काल से युद्ध होते होते जब सायकाल हो गया तो दोनो सेनाऍ विश्राम करने के लिये अपने अपने डेरो पर आ जमीं; रात को चालुक्य के मत्री पाबासुर तोअर (क्षत्री) ने राजा को एक झूठी पत्री[1] दिखा कर महलो को उलटा भेज दिया और आप चाहुवान के मत्री से मिल कर स्वय राजा के पास गया और हार मानना स्वीकार कर के उसने दण्ड देने का भी प्रस्ताव किया। किन्तु बीसल देव जी ने आज्ञा दी कि यहा पर मेरा महल बनवाया जाय और मेरे नाम से एक नगर भी बसाया जाय। निदान बुद्धिमान पाबासुर ने तुरत ही बीसल नगर की नीव डाल दी। बीसल के नगर मे पैठते ही दूतनी ने खबर दी कि यहा पर एक वणिक पुत्री अत्यत: रूपवती है इसलिये बीसल देव जी ने तुरन्त ही उसे बुला

* इस गुजरात विजय के सवत् के विषय में रासो में सोत सेत नव सत्त गध, बरस तीस छ अग्ग। पुर पट्टन बीसल नृपति, राजत सयलह जग्ग॥ लिखा है जिससे सवत् ८५६ सिद्ध होता है किन्तु रासो के प्रसिद्ध ज्ञाता पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पड्या ने अपनी सप्रमाण टिप्पणी द्वारा उसे १०८६ सिद्ध किया है।

१ मूल ग्रन्थ मे—मिले सकल चालुक के मत्रिय। झूठी एक बनाई पत्रिय॥ सो कर जाय राज के दिन्नय। तुम घर जाहु कहा अब थन्निय॥ छन्द है जिस मे पत्री का आशय स्पष्ट तो नही है परन्तु इस से ऐसा भासित होता है कि उक्त पत्र में चाहुवान की ओर से सन्धि का प्रस्ताव कल्पित किया गया होगा।

उसके साथ व्याह किया और तब वे अमजेर को आए और पुनः विषयतृप्ति मे लिप्त हो कर दिन बिताने लगे। एक दिन उसी वणिक कन्या ने बीसल जी को प्रसन्न देख कर कहा कि पुष्कर जी में एक वणिक कन्या तपस्या करती है उसका रूप लावण्य आपके स्वाद लेने योग्य है। तदुपरान्त कुछ दिन पश्चात् दीपमालिका के उपरान्त की एकादशी आई। उस दिन पुष्कर जी के मेले में बड़ी दूर दूर के यात्री आए थे। निदान बीसलदेव जी भी यहां जा पहुँचे और उक्त वणिक कन्या को देखकर मोहित हो गए। अत्यन्त कामातुर और अधीर हो कर कार्तिक सुदी १२ को तपस्या करती हुई उस गौरी नामक वणिक कन्या का सतीत्व उन्होने नष्ट करही डाला। इससे उसने अत्यन्त क्रुद्ध और विकल हो कर बीसलदेव जी को शाप दिया कि तुमने यह राक्षसी कर्म किया है इसलिये तुम मनुष्य का माँस भक्षण करने वाले राक्षस हो, किन्तु इस शाप से राजा को अत्यन्त भयभीत देखकर उसने पुनः कहा कि तुम्हारा पोता ही तुम्हारा उद्धार करेगा। ऐसा कह कर उस वणिक कन्या * गौरी ने प्राण त्याग दिया।

इस प्रकार शापित हो कर बीसलदेव जी अजमेर आए और शाप से मोक्ष पाने के लिये उन्होंने गोकर्ण जी की यात्रा की किन्तु कर्म्म का भोग करना यह प्रकृति का नियम है इसलिये बीसल तडाग पर जब बीसलदेव वायु सेवन कर रहे थे कि सर्प ने डँस लिया जिससे उसी समय उनका देहान्त हो गया। रानी यह खबर पा उनके उस मृत शरीर के साथ सती हो गई। जिस समय बीसलदेव जी की रथी में आग लगाई गई उसकी अग्नि की लौ के साथ ही एक महा भयानक मूर्ति उत्पन्न होकर उपस्थित मनुष्यों का भक्षण करने लगी। उस राक्षस को जहां जहा मनुष्य मिलते वह ढूँढ ढूँढ कर खा लेता। इसी से लोगों ने उसका नाम ढुंढा रख लिया।

ढुंढा के उपद्रव की खबर पा कर सारँग देव जी ने अपनी रानी गौरी को तो उनके पिता के घर रणथंभौर भेज दिया और आप एक सहस्त्र सेना लेकर उस दानव से युद्ध करने के लिये अजमेर को चले गए। वहाँ जा कर देखा तो सब अजमेर ऊजाड पाई। निदान तीन दिन तक प्रतीक्षा की पर जब ढुंढा का कोई पता न लगा तो सारँगदेव जी निर्भय हो पुनः अजमेर को बसाने लगे किन्तु एकादशी के प्रातः काल ही दानव आन पहुँचा जिसे देख सारँगदेव जी ससैन्य ढुंढा पर अस्त्र शस्त्र की वर्षा करने लगे किन्तु उस पर इन शस्त्रों का कुछ भी असर न होता था, वह बराबर एक एक को पकड़ पकड़ के खाने लगा और अन्त में सारँगदेव जी के भी उसने प्राण ले लिए।

यह कथा सुन कर आना जी बोले कि हे माता अब आप आज्ञा दें तो मैं जाकर उस राक्षस को मार आऊँ। तब गौरी ने उत्तर दिया कि हे पुत्र यह तू क्या कहता है। राक्षस से मनुष्य क्योकर युद्ध कर सकता है।

यह सुन आना जी ने पुनः उत्तर दिया कि यदि मै युद्ध मे नही जीत सकता तो उसे सेवा से प्रसन्न करके अजमेर में अपना राज्य जमाऊगा, क्योकि सेवा सुश्रुषा एक ऐसी वस्तु है कि देव, दानव, राक्षस, ऋषि, मुनि, मनुष्य प्रेतादि जो किसी प्रकार हाथ नहीं आते वे सेवा से वश हो सकते है और मेरा तो यह सकल्प है कि इस सिर पर या तो छत्र धारण करके अजमेर का राज्य करूंगा या उस दानव से लड़कर इसे उसका भक्ष्य बनाकर प्राण दूगा। निदान माता ने बहुत कुछ समझाया बुझाया परन्तु आना ने एक न मानी और वह उसी क्षण अजमेर को चल दिया।

आना राजा ऊजाड़ अजमेर में पहुँच कर ढुढा को खोजने लगा। अन्त में उसे नगर के बाहर जगल में पहाड की गुफा मे सोते हुए देख निधड़क उसके पास चला गया और बिना कुछ बिचार किए

* यह वणिक कन्या गौरी वही सारंग देव जी की भा बहिन थी जिसका वर्णन प्रथम हो चुका है। जब इसका पति ढिंढ से मारा गया तो इसने संसार को असार जान अपनी सर्वस्व ब्राह्मणों को पुण्य कर दी और आप ब्रह्मचर्य्यव्रत से पुष्कर क्षेत्र में तप करने लगी।

हुए उसने उसके सीस पर खड्ग का एक आघात किया जिससे वह तुरंत जम्हाता हुआ उठ बैठा और एक सर्वाङ्ग सुन्दर राजसी लक्षणों सयुक्त एक बालक को अपने सम्मुख खडा देखकर वह बोला कि हे बालक तू कौन है ? तेरे माता पिता का नाम क्या है और तू यहा किस हेतु से आया है ? इसपर आना ने अपने मन में यह विचार कर कि " जो यह मुझे निगल लेगा तो मै इसका पेट फाड़कर निकल आऊगा " उत्तर दिया कि मै बीसलदेव जी के पुत्र सारगदेव जी का पुत्र हू। मेरी माता का नाम गौरी है और मै यहा आपके दर्शन करने के लिये आया हूं। तब ढुढा ने पुनः कहा कि क्या तू दरिद्री है अथवा कुष्टी है या स्त्री का वियोगी है या बड़े का शत्रु है या तेरा मानभग हुआ है या गुरु द्वारा शापित है या संसार से विरक्त है या तेरी माता मर गई या तेरी स्त्री तुझे आलिंगन नहीं करती जो तू मेरे पास मरने को आया है। तब पुनः आना जी ने उत्तर दिया कि यह कुछ भी नहीं है। मैं केवल आपकी सेवा करने के ही अभिप्राय से यहा आया हूं मैं तभी तक दीन हीन था जबतक आप के श्री चरणो के दर्शन मुझे नही हुए थे। तब पुनः ढुढा ने कहा कि अब तेरी क्या अभिलाषा है, तू जिसमें प्रसन्न हो सोई मै करू। तब आना जी ने उत्तर दिया कि मै आपके पास यह निश्चय करके आया हू कि जो मेरे मन की साधना पूजेगी तो मैं आजन्म आपही की सेवा करूगा, सो यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो यह अजमेर की भूमि मुझे दे दीजिए कि मैं इसे फिर से बसा कर अपने पुरुषाओं का नाम चलाऊ।

ढुंढा ने प्रसन्न होकर आना जी को अपने हाथ से तलवार बॉध अजमेर का अक्षय राज करने का आशीर्वाद दिया और रविवार को पूजन करने की आज्ञा दे कर वह आकाश में लोप हो गया।

आकाश मार्ग में जाता हुआ ढुढा तृषाकुल हो कर गंगा के किनारे जल पीने को उतरा। वहा पर नैम ऋषि जी का स्थान था जिन्होंने देख कर ढुढा को पूछा कि तू कौन है। तब ढुढा ने अपना आद्योपान्त सब वृत्तान्त कह सुनाया जिसे सुन ऋषि ने उसे काशीजी में जाकर तपस्या करने को कहा। ऋषि का उपदेश पाकर ढुंढा ने उसी समय काशी का मार्ग लिया। यमुना के किनारे पहुँच कर पुनः ढुढा नीचे उतरा और यमुना में पैठ कर जल-क्रीडा करने लगा। अर्द्धरात्रि को जल की घरघराहट का शब्द सुन कर किनारे पर वास करते हुए हारिफ ऋषि ने कुटी से निकल कर पूछा कि तू कौन है और यहा क्यों आया ? निदान ढुंढा ने हारिफ ऋषि से भी अपना अद्योपान्त वृत्तात कह सुनाया और कहा कि हे मुनिवर आप त्रिकालज्ञ है सो मुझ पर दया कर के ऐसा उपाय बतलाइए कि जिससे मेरा उद्धार हो जाय। ढुढा का वचन सुन कर ऋषि जी ने उसे तप करने का उपदेश किया। वह भी ऋषि के वचन को मान कर वहीं तपस्या करने लगा। कुछ काल बीतने पर हारिफ जी तीर्थयात्रा को चले गए और ढुंढा से कह गए कि जब तक मैं न आऊ यहा से न जाना। निदान ढुढा ने उसी स्थान पर ३८० वर्ष पर्य्यन्त तप किया।

किसी समय में हस्तिनापूर में राज्य करते हुए पाण्डव वशीय किसी एक अनग नामक राजा ने यमुना के किनारे पर एक गॉव बसाया था। उसी स्थान पर तोंअर वशीय अनगपाल जी ने दिल्ली बसाई और वह अपने समस्त राजसी परिकर सहित वहां रहने लगा। अनगपाल जी की एक अष्ट वर्षीया कन्या श्रावण में यमुना में स्नान कर कालिन्दी तटस्थ निगमबोध भवानी की पूजा करने को जाती थी। एक दिन जल वर्षा होने के कारण वह सहेलियों सहित ढुढा की गुहा मे घुस गई और वहा ढुढा की उस दीर्घकाय मूर्ति को देख वरदान पाने की इच्छा से ढुढा का पूजन करने लगी। निदान इस प्रकार जब वह राजकुमारी ५ वर्ष २ महीने पूजा कर चुकी तो ढुढा ने प्रसन्न हो कर कहा कि हे राजकुमारी मैं तुम्हारी सेवा से परम सतुष्ट हुआ और तुम्हे वर देता हूं कि तुम्हारी मनोभिलाषा पूर्ण होगी। यों कहकर वह आप काशीजी को चला गया।

ढुढा ने काशी मे जाकर गंगा के किनारे वेदिका रच कर अपने अग के सौ टुकड़े करके होम कर दिए जिसकी मूल जोति से पृथ्वीराज, जिन्हा से कविचन्द, नेत्रों से पति और पितृकुल का नाश करने वाली सयोगता और अन्यान्य अगो से पृथ्वीराज के १०० सामत लोग भिन्न भिन्न स्थानों में उत्पन्न हुए।

पृथ्वीराज के सामंतों की नामावली।

नम्बर	नाम सामंत	कौन क्षत्री	जन्मस्थान
१	निभ्भर (निढ्ढुर)	राठौर	कनवज्ज
२	जैतसिंह	सलष	आबूगढ
३	बलभद्र		नागौर
४	कविचन्द		लाहौर
५	अत्ताताई		ढिल्ली
६	राम दे राव		जालौर
७	गोइन्द राव		धामनिगढ़
८	दाहिम्मराय		बयाना
९	हरसिंह	वैश्य	„
१०	अचलेसभान		जैसलमेर
११	पज्जून राय	„	चित्तौर
१२	जघार भीम	„	कलिकुण्ड
१३	नरसिंह राय		समियान गढ
१४	देवरा धीर		पीछौरदेश (पेशावर)
१५	रणधीर		„ „
१६	भीमग या जघार भीम		जूनगढ़ या झूनागढ
१७	सारंग राव	मोरी	
१८	बारडह राय		
१९	सहसकरन		
२०	कन्हराय	चहुवान	अजमेर
२१	तेजल्लराय	„	जुनौर
२२	कैमास	„	
२३	नारन्नराय		भटनेर
२४	भोहाराय	चंदेल	
२५	अरसी राय	„	पानीपत
२६	भोरा भुअंग	चालुक्य	
२७	जावलाराय		दक्षिणदेश
२८	जल्हनराय		„
२९	राजा पूरनमल्ल	चहुवान	सूरत
३०	रामराय	बडगूजर	
३१	हड्डा हम्मीर	„	
३२	ननवारिद्ध	„	
३३			
३४	खिचे दोनो भाई	खंगार	
३५	कनकराय	प्रमार	कनवज्ज
३६	माखन्नो राय	„	

नोट—मूलग्रन्थ में इतने ही नाम लिए हैं। ऐसा अनुमान होता है कि यहां के कुछ छन्द नष्ट होगए हैं जिनमें और नाम थे।

ढुंढा ने वर देते समय राजकुमारी को एक फल भी दिया था जिसे उसने घर पर आकर तेरह हिस्सो मे विभाजित करके अपनी सहेलियो को भी दिया जिनसे १३ सामन्त एक साथही उत्पन्न हुए।

यहा से कवि चन्द अब पुनः वशावली आरम्भ करता है। ढुढा से वरदान पा कर आना राजा ने आद्योपान्त सब वृत्तान्त माता से कह सुनाया, और वह माता सहित अजमेर मे आकर राज महल मे रहने और नगर को बसाने लगा। उस स्थान के निवासी महाजन और व्यापारी लोग जो भाग कर अन्य देशो में रहने लगे थे उन्हें सादर बुला कर उसने रक्खा और बाजार, हाट चौहट्ट, बगीचे आदि जो जैसे प्रथम थे उन्हे उसी प्रकार सज कर उसने बनवाया। नीति और न्याययुत ७१ वर्ष राज्य करके निज महाराज कुमार जैसिंह को राज्य का अधिकार दे वह आप स्वर्ग वासी हुआ।

जैसिह देव भी अपने पिता की नाई न्यायशील और धर्म्मरत महाराज हुए। इन्हो ने वीसल तडाग मे बड़ा भारी धन पाया था परन्तु इसे राज्यकोष में न लाकर वहाँ का वही ब्राह्मण और भिक्षुको को दान कर दिया था। इन्हो ने १०८ वर्ष राज्य किया और वे अपने पुत्र आनन्द देव को राज्य देकर आप तप करने वन में चले गए। आनन्द देव जी को वाराह रूप का दर्शन हुआ था। इन्होंने भी पिता की भाति १०० वर्ष राज्य करके राज्य का भार निज पुत्र सोमेश्वर को दिया और वे आप तप करने चले गए।

सोमेश्वर जी ने भी अपनी सनातन मर्य्यादा का निर्वाह करते हुए, नीति और न्यायपरायणता से राज्य करना आरम्भ किया। इन धर्म्मप्रिय महाराज के समय मे अजमेर नगर का वैभव प्रति दिन वर्द्धन और इनका उज्वल यश भी चतुर्दिक फैलने लगा। एक समय का वृत्तान्त है कि किसी परस्पर के विरोध के कारणवश कमधज्ज राय जी ने कन्नौज के राजा विजयपाल जी राठौर की सहायता लेकर दिल्ली पर चढ़ाई की। इस खबर के सुनते ही अनगपाल जी ने अपनी सेना लेकर जमुना पार आकर डेरा डाल दिया और एक चतुर दूत द्वारा अजमेर के राजा सोमेश्वर जी के पास एक पत्र लिख भेजा जिसका आशय यह था कि कमधज्ज और विजयपाल दिल्ली पर आक्रमण करने आते है अस्तु मै तो निज धर्म्मानुसार प्राण देने को सन्नद्ध ही हू किन्तु यदि आप भी इस गाढे समय में सहायता दे तो बहुत अच्छा हो। निदान उक्त पत्र के पाते ही वीर सोमेश्वर ने क्षणमात्र का विलब न करके अपनी चतुरगिनी सेना सज कर दिल्ली को कूच कर दिया और कमधज के पहुँचने के पहिले ही पहुँचकर रात्रि को अनगपाल जी से मिलकर परामर्श करके युद्ध के विषय मे ठीक ठीक नियम और उपाय निश्चय करके वे तैय्यार हो बैठे और दूसरे दिन युद्ध हुआ जिसमे घोर सग्राम होने पर दोनो ओर के बड़े बडे वीर पुरुष काम आए। अन्त मे कमधज्ज और विजयपाल की सेना के पैर उखड़ गए और अनगपाल जी की जय हुई। अनगपाल सोमेश्वर जी की वीरता पर बहुत ही प्रसन्न हुए। इसलिये कुछ दिन उन्हे अपने पास रख कर उन्होने अपनी कन्या के साथ विवाह करके बहुत से दास दासी और दहेज देकर उन्हें सादर बिदा किया और अपनी दूसरी पुत्री का विवाह कन्नौज के राजा विजयपाल जी के साथ कर दिया।

कुछ दिन पीछे सोमेश्वर जी की रानी को गर्भ हुआ और समय पूर्ण होने पर ढुढा के वरदान के अनुसार विक्रमी अनद १११५ मे पृथ्वीराज का जन्म हुआ जिससे अनंगपाल जी ने बडा उत्सव मनाया और दान पुण्य किया। इस खबर को सुन कर पृथ्वीराज की मौसी अर्थात् विजयपाल जी की रानी ने भी बडा आनन्द मनाया। निदान जब यह खबर सोमेश्वर जी के पास गई तो उन्होंने भी अगनित द्रव्य दान किया और कवि चंद के पिता "राव वेन" को भी बहुत सा धन घोडे, हाथी आदि वधाई में दिए और अपने मत्री को भेज कर पृथ्वीराज को मय उनकी माता के दिल्ली से बुला भेजा। जब पृथ्वीराज दिल्ली

पहुँच गए तो सोमेश्वर जी ने ज्योतिषियों को बुलवा कर पुत्र का भविष्य पूछा जिसपर उन्होने उत्तर दिया कि यह आपका पुत्र अद्वितीय पराक्रमी होगा, दिल्ली, अजमेर और सब पजाब पर राज्य करेगा, किन्तु तेंतालीस वर्ष की अवस्था मे गजनी के बादशाह से कैद किया जाकर मारा जायगा। इस बात को सुन कर सोमेश्वर के अवछिन्न आनंद पर शोक आच्छादित हो गया परंतु लोगों ने यह कह कर समझाया कि जो होनहार है सो कभी किसी को नहीं मालूम। आप इसका विचार न कीजिए। सोमेश्वर जी ने पुनः दरबार में बैठ ज्योतिषियों को बुलवाकर पृथ्वीराज जी की सम्पूर्ण जन्मपत्री सुनाने की आज्ञा दी और ज्योतिषियों ने इस प्रकार कहना आरम्भ किया कि जो इस बालक का जन्म सवत् १११५ वैशाख बदि २ वृहस्पति को सिद्ध योग. चित्रा नक्षत्र. गर नाम कर्ण, ऊषा प्रकास मे हुआ सो इसकी लग्न कुण्डली में गुरु, बुध, और शुक्र ये तीन ग्रह दसम स्थान में, अष्टम स्थान मे शनि पाँचवें में सोम दूसरे में मगल, ग्यारहवें मे राहु और बारहवें स्थान में सूर्य्य विराजमान है। इसका फल यह है कि इसकी अवस्था ४३ वर्ष की होगी और यह दिल्ली का छत्र धारण करके अपना राज्य बहुत बढ़ावेगे। इसी से इसका नाम पृथ्वीराज होगा। इसको आपसे आप असख्य धन मिलेगा और यह १० स्त्रियों से व्याह करेगा। इस प्रकार जन्मपत्री का फल सुनकर अजमेर नगर के बाल वृद्ध सब लोग आनंद में मग्न होकर बधाई करने लगे।

जिस दिन पृथ्वीराज का जन्म हुआ बडे बडे किलों की चोटियाँ हिलने लगीं। स्थान स्थान पर भूचाल हुआ। शत्रुओ के स्थान पर नाना प्रकार के उपद्रव हुए। बडी बडी गढी और कोट लौट गए। नदियों में अप्रमाण जल की बाढ आई। प्रत्येक नगर मे कुछ ऐसा विचित्र चमत्कार हुआ कि जिससे वहा के भूमियाओं की बुद्धि चकित हो गई। खुरासान इत्यादि देशों में खरभर पड गया। स्त्रियों का गर्भपात हुआ और जहा तहा भूत बैतालों का प्रचार अधिक हुआ।

प्रायः साधारण बालक दो वर्ष की अवस्था में जितना बड़ा होता है पृथ्वीराज जी वर्ष भर की ही अवस्था मे उससे कही बड़े थे। दिन प्रति दिन उनकी शोभा बढ़ती जाती थी जिसे देख कर इनके माता पिता और समस्त राज्य के कर्म्मचारी आनन्द में मग्न थे। इसी प्रकार जब पृथ्वीराज जी की अवस्था पाँच सात वर्ष की हुई तो वे अपने आजन्म साथी छोटे छोटे सामन्तों के साथ खेलने लगे। उन्हें साथ में भोजन कराते और खेल में जो अधिक वीरता का कार्य्य करते उसे पारितोषिक देते। निदान जिस प्रकार अवस्था बढ़ती जाती थी उसी प्रकार उनके राजसी गुण और दैवदत्त अलौकिक शक्तियाँ भी प्रति दिन प्रबल होती जातीं थीं। पृथ्वीराज जी १३ वर्ष की अवस्था में ही घोड़े पर सवार होने तथा बाण और बरछा चलाने में निपुण होगए और दिन प्रति दिन बड़े बड़े बाराहों और शूकरों का शिकार किया करते। तेरह वर्ष की अवस्था होने पर इन्होंने गुरु राम से अनेक विद्याओं का अध्ययन करना आरम्भ किया और थोड़े ही दिनो में छओ भाषाओं को सीख कर चौदह विद्या और ६४ कलाओं मे वे निपुण हो गए।

एक दिन चन्द्र की स्त्री ने अपने घर मे अपने पति को प्रसन्न देख कर पूछा कि हे सब शास्त्रो के जानने वाले प्राणपति मुझसे यह कहिए कि कौनसा दानव मानव वा राजा कीर्ति गाने योग्य है। इस पर कवि चन्द ने उत्तर दिया कि हे प्रिये नट का बांस पर चढना, सिपाहियो का युद्ध मे प्राण देना इत्यादि नाना प्रकार के कर्म मनुष्य कीर्ति के ही लिये करता है किन्तु जिस प्रकार पति बिना स्त्री, सेनापति बिना सैन्य, दांतों के बिना भोजन, शस्त्र धारण किए बिना कीर्ति, जल बिना मीन, क्षत्री बिना शूरता की शोभा नही होती उसी प्रकार हरि की भक्ति किए बिना मानव जन्म वृथा है। यह सुन कर स्त्री ने प्रत्युत्तर दिया कि हे चतुर कवि तो फिर तू ऐसे पृथ्वीराज का यश गान करने मे क्यों वृथा समय नष्ट करता है जो स्वय साधारण मनुष्यों की नाई हाड मास का पुतला है और निरन्तर ससार की माया

आशा तृष्णा मे पीडित रहता है। इसको तू छोड़। उसी जगनियता परमेश्वर का स्मरण क्यो नही करता। यह सुन कविचन्द बोला कि तेरा कहना सत्य है परन्तु मै इस रीति से चाहुआन के पूर्व्व ऋण से उऋण होता हू। इस पर स्त्री ने पुन: उत्तर दिया कि जो तू राजा के ऋण का खटका करता है तो गोविन्द ही का स्मरण क्यो नही करता जिससे ससार के ही बन्धन से मुक्त हो जाय। तब कविचद ने पुनः उत्तर दिया कि हे प्रिये मै उस सर्वव्यापी गोविंद कमलासन को देख कर अकुलाया हुआ हू, अब मुझे केवल भक्ति का विलम्ब है और वह परमपिता परमात्मा सूक्ष्म रूप से ससार की प्रत्येक वस्तु में व्याप्त है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश इत्यादि देवता और प्रकृति वा तत्त्व इत्यादि सब उसीकी कलाएँ है और मनुष्यो मे वह राजाओ के अंश मे बास करता है। इस पर स्त्री ने पुनः उत्तर दिया कि ब्रह्म को ब्रह्म ही मे देखो। यह आपका कैसा एक अनोखा विचार है कि ब्रह्म को मनुष्य रूप मे देखते हो। तब कविचन्द बोला कि तू नहीं जानती कि ईश्वर रग रग में व्याप्त है। तब स्त्री ने कहा कि अच्छा तो मुझे बतलाइए तब जानू। यह सुन कर कविचन्द बोला कि यदि तू सुनना चाहती है तो ध्यान देकर सुन मै कहता हू।



दशम समय।

[दूसरा समय]

परमात्मा के उस अनुपम स्वरूप को नमस्कार करता हूं जिसका ब्रह्मा, विष्णु, महेश निरंतर आराधन करते है, जो कच्छप रूप से पृथ्वी को अपनी पिष्ट पर धारण किए हुए है समुद्र जिसका उदर है अग्नि जिसकी जठराग्नि है और सूर्य्य और चन्द्रमा जिसके क्रम से दक्षिण और वाम नेत्र है और भारी पर्व्वत जिसके बाहु है। पुनः वह ईश्वर कैसा है कि जिसने मत्स्य रूप धारण करके शखासुर का वध कर वेदों की रक्षा की—कच्छप रूप को धारण कर पृथ्वी के बोझ को अपनी पीठ पर रक्खा—वाराह रूप धारण कर हिरण्याक्ष को मार पृथ्वी का उद्धार किया—नृसिंह रूप धारण कर प्रह्लाद की रक्षा की और हिरणाकुश का वध किया—देवताओं के हित के लिये वावन रूप धारण कर राजा बलि को छल समस्त भूमण्डल को तीन पद से नापा—परशुराम अवतार धारण कर पिता की आज्ञा से माता का वध किया, सहस्राबाहु को युद्ध मे मार २१ वार क्षत्रियों से भूमि निर्बीज कर दी—मर्य्यादा पुरुषोत्तम रामावतार हो सूर्य्य कुल मे जन्म धारण कर जो दशरथ के पुत्र कहलाए, पिता की आज्ञा मान १४ वर्ष वन में रह रावणादि दुष्टों का जिन्हों ने सहार किया—और यदुवश में कृष्णावतार धारण कर वृज की गोपिकाओं मे विहार करके कस को विध्वश कर, महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की रक्षा की। एक समय ब्रह्मा ने कृष्णावतार का निश्चय तत्व लेने के लिये कुछ माया की, किन्तु जब उसका कुछ परिणाम न हुआ और वे आप स्वय भगवान कृष्णजी की माया में मोहित हो गए तो स्तुति की कि हे भगवन क्षमा कीजिए मैंने भूल की, क्योंकि आपको कोई नहीं जान सकता कि आप कैसे है और आपमे क्या क्या चमत्कार है इत्यादि—आप कैसे है? न आपका कोई रूप है, न कोई आकार है, न आपका मूल है, न शाखा है और आप से पूर्व्व सूर्य्य, चन्द्रमा, तारागण, विद्या, अविद्या, सिद्धि, ऋद्धि, पीली पृथ्वी, नीला आकाश, श्वेत जल, हरी वायु और रक्त तेज, छाया, माया, काया, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, बस्ती, जगल, पहाड तीनों लोक, समुद्र और उसकी मर्य्यादा, माया, मोह, शोक, दुःख, सुख इत्यादि कुछ भी नहीं थे अर्थात् यह आपही की इच्छा से प्रगट होते है और प्रलय होने पर पुनः आपही मे लय हो जाते है। इस प्रकार स्तुति कर ब्रह्मा ने सब देवताओं से दशावतार की कथा वर्णन करनी आरम्भ की।

मत्स्यावतार।

समुद्र में रहने वाला शखासुर नामक दैत्य ऐसा बली और पराक्रमी हुआ कि जिसके असाधारण उत्पात से इन्द्र, सुर, नर, मुनि सब दुखी हो गए, उसने ब्रह्मा से वेद छीन लिए और उन्हे लेकर वह समुद्र में शख के भीतर छिप रहा—जब समस्त देवताओ ने भगवान का आराधन किया तो प्रभु ने स्वय प्रगट होकर सबको आश्वासन दिया और वे आप मत्स्यरूप धारण कर समुद्र में पैठे और खोजते खोजते दैत्य के पास जाकर उसे मार उसके उदर मे से वेदो को निकाल लाए और उन्हे ब्रह्मा को दिया जिससे सब देवता और प्रजा अत्यत प्रसन्न हुई।

कच्छावतार।

एक समय सनकादिकों ने इन्द्र से पूछा कि श्रीभगवान ने कच्छरूप क्यो धारण किया? यह सुनकर इन्द्र ने उत्तर दिया कि समय पाकर दैत्य ऐसे बलवान हो उठे कि उनके सम्मुख देवताओं का तेज मलीन पड गया। तब सब देवता क्षीर सागर के किनारे जा कर आर्त स्वर से लक्ष्मीनारायण से प्रार्थना करने लगे, तब आकाश वाणी हुई कि तुम सब देवता सेन सज कर दानवों से युद्ध करने की तैयारी करो। इस प्रकार वर पा सब देवताओं ने युद्ध के लिये अपनी सेना सजी। उधर से महा बलवान दैत्य लोग भी अपनी सेना सज कर आ जमे। यद्यपि देवताओं

का न तो समूह दानवों के समान था न उनके अस्त्र शस्त्र ही उनसे बढ़ चढ के थे किन्तु वे देवताओं का साम्हना न कर सके और उनसे परस्पर मेल करने लगे। तब तक श्रीपुरुषोत्तम भगवान ने आप आकर समुद्र को मथने का प्रस्ताव किया। इस कार्य्य के लिये मंदिराचल पर्व्वत का मथनिया, शेषनाग का नेता बनाकर सुमेरु पर्व्वत को आपने स्वय अपनी पीठ पर धारण किया। शेषनाग के मुख की ओर दैत्यो ने पकडा और देवताओ ने पूँछ पकड कर समुद्र का मथन आरम्भ किया। समुद्र मे दधि के समान फेन उठने पर प्रथम लक्ष्मी उत्पन्न हुई, उसके पीछे कौस्तुभ मणि, पारिजात (कल्पवृक्ष), सुरा, चन्द्रमा, धेनु, गज, बाज, धन्वतरि, विष, अमृत, शख और रम्भा इत्यादि १४ रत्न क्रम से निकले। रम्भा के देखते ही सब दैत्य मोहित हो गए। शेषनाग के विषज्वाल के फुँफकार से सहस्रो दैत्य भस्म हो गए। अत मे जब रत्नों के परस्पर बाटने की बारी आई तो नारायण ने प्रथम देवता और दैत्यो को अलग अलग दो पक्तिओ में बिठा कर दैत्यो को मदिरा और देवताओं को अमृत पिलाना आरम्भ किया। राहु को इस विषय में सदेह हो गया। इससे उसने देवताओ की पक्ति मे छलकर बैठना चाहा किंतु चद्रमा ने इशारे से श्रीविष्णु भगवान को यह जता दिया। विष्णु भगवान की इच्छा होते ही सुदर्शन चक्र ने उस दैत्य को काट कर दो खण्ड कर दिया—इस पर सब दैत्यो ने अत्यत क्रोधित होकर समस्त देवताओं का नाश कर देने की प्रतिज्ञा की। उधर से देवता लोग भी श्रीविष्णु भगवान का बल पाकर निर्भय हो कर दैत्यो से जुट पडे। यही देवासुर सग्राम है जिसमें विष्णु भगवान ने देवताओं पर प्रहार किए हुए दैत्यो के प्रचण्ड अस्त्र शस्त्रो को अपनी पीठ पर सहन कर देवताओ को बचाया और सुदर्शन चक्र से दैत्यों का नाश किया।

वाराह अवतार।

एक समय हिरण्याक्ष नामक दानव ने पृथ्वी को हर लिया जिससे देवताओं ने परम दुखी हो कर क्षीर समुद्र के किनारे जा कर श्री शेषशायी नारायण से अवतार धारण कर उक्त दैत्य को मार पृथ्वी को उबारने की प्रार्थना की। इसे सुनकर विष्णु भगवान विकट वाराह रूप धारण कर देवताओ के सम्मुख प्रगट हुए। उनका प्रचण्ड तेज इस प्रकार जाज्वल्यमान हो रहा था मानो शक्ति की भी शक्ति ने यह अद्भुत रूप धारण किया हो। उस पर्व्वत समान शरीर मे कोटर ऐसे मुख से निकले हुए दोनों खीसें साक्षात् वैश्वानर अग्नि स्वरूपवत् प्रतीत होते थे। इस प्रकार विकराल रूप धारण कर भगवान ने देवताओं को अभय वरदान देकर राक्षस को मारने की प्रतिज्ञा की और आप महा भयानक शब्द करते तीनो लोको को कँपाते हुए दानव की गुहा की ओर चले। यह देख कर पर्व्वताकार शरीर वह राक्षस भी तलवार फटकारता हुआ वाराह जी पर आक्रमण करने को सन्नद्ध हुआ। वाराह जी और उस राक्षस में परस्पर घोर युद्ध होने लगा। हिरण्याक्ष बडे ही वेग से असि प्रहार करता किंतु वह उसका प्रहार वाराह जी के वज्रवत दातों के ऊपर कुछ भी असर न करता और जब वे दातों पर धर कर उसे फेंक देते तो वह योजनों दूर जा गिरता। इस प्रकार घोर युद्ध होते होते बहुत समय व्यतीत हो गया। अत में श्री भगवान ने अत्यत कुपित हो कर उस दुष्ट दैत्य के खण्ड खण्ड कर डाले और पृथ्वी को मुक्त कर पुनः अपने स्थान पर स्थापित किया, जिससे समस्त देवताओं ने प्रसन्न हो कर आनद ध्वनि करते हुए पुष्पवृष्टि की।

नृसिंहावतार।

एक समय हिरणकश्यप नामक राक्षस ने शिव जी की घोर तपस्या की और आशुतोष शिव जी का वरदान पाकर वह ऐसा प्रतापी हुआ कि इन्द्र कुवेरादि देवताओं को जीत कर वह सब देवता और ऋषि मुनियों को कष्ट देने लगा। तब देवताओं ने दुखी हो कर श्री विष्णु भगवान से प्रार्थना की कि-हे देव हिरण्यकश्यप नामक राक्षस ने श्री महादेव जी का इस प्रकार बरदान पाया हुआ है कि ब्रह्मा की सृष्टि में

वह किसी से नहीं मारा जा सकता । इसलिये वह बड़ा ही उपद्रव कर रहा है. सो कृपा पूर्वक आप अवतार धारण कर उसका संहार करिए । उधर हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रह्लाद भी अपने दुष्ट पिता की प्रेरणा से दुखित हो विष्णु भगवान से प्रार्थना कर रहा था । निदान समय पाकर भक्तवत्सल श्री विष्णु भगवान नृसिंह रूप धारण कर खम्भ मे से उत्पन्न हुए जिनके उस तेजोमय स्वरूप को देख कर तीनो लोक कापते थे । नृसिह भगवान् को प्रगट होते देख कर वह दैत्य हाथ मे खड्ग लेकर नृसिंह जी पर बेड बेग से झपटा । इस पर जो नृसिंह जी ने वार किया तो वह छटक कर दूर जा खडा हुआ और फिर से क्रोधित हो कर झपटा । यह देखकर सब देव शंकित चित्त से हो कर त्राहि त्राहि करने लगे । तब श्री नृसिंह जी ने उसे उछग पर उठा लिया और अपने जघों पर रख कर विकराल नखों से उसका उदर विदार डाला । उस समय का विकराल रूप देख कर तीनों लोक कॉप रहे थे । लक्ष्मी स्वय भयभीत हो कर श्री विष्णु जी के निकट आने में असमर्थ थी । उसी समय जब हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रह्लाद सम्मुख आकर हाथ जोड खडा हो कर स्तुति करने लगा तब श्री नृसिंह जी ने उसे बडे प्रेम से उठा कर गोद में बिठा लिया और पुत्र के समान उस की ऑखें और सीस चूम कर उसे सब भॉति आश्वासन दे कर शान्त किया । भक्तवत्सल श्री विष्णु भगवान की इस लीला पर प्रसन्न हो सब देवताओं ने पुष्पवर्षा की ।

वामनावतार ।

नृसिंहावतार होने के बहुत काल पीछे उसी हिरण्यकश्यप के वंश मे बलि नामक एक दैत्य उत्पन्न हुआ जो सदैव यज्ञ जप तप पूजा होमादि कर के अगनित दान दिया करता था और इस प्रकार ब्रह्मादि देवताओ मे वरदान पाकर अत्यन्त बलवान हो दैत्य सेना सज कर नित्त देवताओं को दुःख देने में तत्पर रहता था । एक समय उसने पाताल में यज्ञ किया और यज्ञ की शान्ति मे सवा लाख ब्राह्मणों को गौ वस्त्राभुषणादि का दान दे कर तृप्त किया । उसी समय श्री विष्णु भगवान ५२ अंगुल के ब्राह्मण का स्वरूप धारण कर बलि के यज्ञस्थल मे आ पधारे और उन्होंने ३॥ पग पृथ्वी बलि से मॉगी । बलि ने भी बड़े आदर से वामन भगवान की पूजा शुश्रुषा कर उन्हें पृथ्वी सकल्प दी, किन्तु पृथ्वी नापने समय श्री वामन भगवान ने अपने स्वरूप को ऐसा बढ़ाया कि सब पाताल लोक उनके तीन ही पैर को हुआ और तब शेष आधे पैर के लिये भूप्रख्यात दानी बलि ने अपना शरीर वामन जी को समर्पण किया जिस से प्रसन्न हो कर भगवान ने उसे बरदान दे कर अभय किया और तब से श्री लक्ष्मी जी का साथ छोड कर चार महीने इन्द्र के कोप से बलि की रक्षा करने के लिये वर्षा ऋतु भर भगवान पाताल मे रहते है ॥

परशुरामावतार ।

त्रेता युग मे जब कि क्षत्रिय लोग अत्यन्त बलवान होकर नीति त्याग अनीति का आचरण करने लगे और राजश्री के गर्व से उनमत्त होकर न्याय की ओर भी मटियाहट करने लगे तब उनका गर्व हरण करने के लिये ब्राह्मणकुलोत्पन्न श्रीपरशुराम अवतार हुआ ।

सुपति नाम एक राजा था जिसकी रेणुका और अनुकम्पा नामक दो पुत्रिया थी । उसने रेणुका का विवाह यमदग्नि ऋषि से कर दिया और दूसरी अद्वितीय बलवान सहस्राबाहु नामक क्षत्री राजा को ब्याह दी । सहस्रबाहु का समग्र शरीर साधारण मनुष्य ही का सा था किन्तु भुज उसके एक हजार थे । एक समय सहस्रबाहु शिकार खेलते खेलते गगा किनारे यमदग्नि के कुटी के पास से आ निकला । गगा मे स्नान करती हुई रेणुका अपने बहनोई को देखकर यमदग्नि के पास गई और उसने सविनय निवेदन किया कि मै इस अपने बहनोई का निमत्रण कर आतिथ्य सम्मान किया चाहती हू । इस पर पहिले तो ऋषि ने

बहुत समझाया कि वह राजा है और मै योगी हू मेरा उसका परस्पर व्यवहार साधन क्योकर हो सकता है किन्तु जब रेणुका ने बहुत ही हठ किया तो यमदग्नि सहस्रार्जुन के पास गए और उन्हे सादर बुला कर उन्होने डेरा दिया। इधर योगसिद्धि द्वारा कामधेनु का आह्वान कर उन्होंने राजा का सम्पूर्ण भाँति से सत्कार साधने की प्रार्थना की। तब कामधेनु ने यमदग्नि की वह कुटी सम्पूर्ण भाति के धनधान्य भोजनादि से परिपूर्ण कर दी और मुनि ने उससे ससैन्य राजा सहस्रबाहु का आदर सत्कार साधन किया। सहस्रबाहु यमदग्नि के सत्कार, शिष्टाचार से बहुत ही सतुष्ट हुआ किन्तु उसे आश्चर्य्य इस बात का हुआ कि इस कुटीनिवासी साधू के घर मे भोजन, वस्त्र का तो सर्वथा अभाव दीखता है, परन्तु इसने जो हमारा इस प्रकार सत्कार किया सो इसके पास नाना प्रकार के भोज्य पदार्थ और रत्नजटित स्वर्ण रजत पात्र कहा से आए? निदान उसे अनुसधान करने पर ज्ञात हुआ कि यह करामात यमदग्नि की गौ कामधेनु की है। तब राजा ने यमदग्नि से वह गौ मागी किंतु ऋषि ने उसके देने से इकार किया तब तो राजा ने कुपित हो बरबस कामधेनु को ले लिया। तब यमदग्नि ने अपने पुत्र परशुराम का आह्वान किया और उपरोक्त वृत्तान्त यथावत् कह सुनाया। इसे सुनकर क्षत्रिय वंश का गर्भ दमन करने वाले परशुराम ने आगे बढ कर सहस्रबाहु को जा छेडा और युद्ध की जिज्ञासा की। परशुराम के कहने पर वीर क्षत्री सहस्रबाहु भी युद्ध करने मे प्रवृत्त हुआ। बहुत समय तक युद्ध होता रहा। अन्त मे परशुराम जी ने उसके सहस भुजा अपने कठिन कुठार (फरसी) से काट गिराए। परशुराम ने इसी प्रकार कई बेर अभिमानी क्षत्रियों का सहार कर पृथ्वी ब्राह्मणों को दान कर दी।

रामावतार।

परशुरामावतार के पश्चात सूर्य्य वश मे रघुकुलोत्पन्न अयोध्या के राजा दशरथ के घर श्री रामावतार हुआ। दशरथ जी के राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न चार पुत्र थे। ये चारो भाई बाल्यावस्था में अपनी बालक्रीडा से माता पिता का चित्त प्रसन्न करते हुए सब परिवार और प्रजा को आनन्द देते रहे। अवस्था प्राप्त होने पर लक्ष्मण राम के और शत्रुघ्न भरत के अनुयायी हुए। रामचन्द्र जी ने मुनि विश्वामित्र के साथ जा उन्हें कष्ट देने वाली राक्षसी ताडका का बध किया तथा परशुराम को शक्तिहीन कर शिव का धनुष तोंड सती सीता से व्याह किया। जब राजा दशरथ ने रामचन्द्र जी को राज्य तिलक देने का विचार किया तो रामचन्द्र जी की विमाता ने अपने पुत्र भरत को अयोध्या का राज्य मिलना और रामचन्द्र जी को १४ वर्ष का बनवास दशरथ जी से मागा। दशरथ जी को भी वचनबद्ध होने के कारण वज्रहृदय कर के रामचन्द्र जी को बनवास की आज्ञा देनी पडी। तब पिता की आज्ञा शिरोधार्य्य कर रामचन्द्र जी अपनी पत्नी सती सीता सहित बन को गए और पचबटी मे कुटी बना कर रहने लगे। वहा पर सूर्पनखा नामक राक्षसी राम के सुन्दर स्वरूप पर मोहित होगई। तब लक्ष्मण जी ने उसका नाक कान काट लिया। इस पर वह रावण के पास रोती हुई गई। तब रावण ने आकर सीता जी का हरण किया और रामचन्द्र जी ने हनुमान जी को सीता की खोज करने भेजा। हनुमान जी ने लका में जा सीता जी को ढूँढ उन्हे रामचन्द्र जी का कुशल समाचार सुनाया और आप वे बाग उजाड, अक्षय कुमार को मार, इन्द्रजीत से बँधे जाकर रावण के दरबार मे गए। और फिर लका को जला कर रामचन्द्र जी को सब सँदेसा कह सुनाया। तब श्री रामचन्द्र जी हनुमान, जामवन्त, सुग्रीव, नल, नीलादि कपि सेना सहित समुद्र का पुल बाँध कर लका मे जा पहुँचे और वहा घोर युद्ध करके लका के राजा रावण के पुत्र मेघनाद और उसके भाई कुम्भकर्ण को मारा। अन्त में अट्ठारह अक्षौहिणी राक्षस दल का नाश कर रावण को भी मारकर उन्होने लका का राज्य रावण के छोटे भाई विभीषण को दिया। इस प्रकार चरित करने

वाले मर्य्यादा पुरुषोत्तम भक्तवत्सल श्री भगवान रामचन्द्र जी को प्रणाम करता हू।

कृष्णावतार।

उस स्नेहमय सौन्दर्य्य को भी सौन्दर्य्य देने वाले त्रिभुवन पुरुप कमलनाभि कमलदृग शख, चक्र, गदा, पद्म को चारो भुजाओ मे और भृगुलता को हृदय मे धारण करने वाले मधुर मधुर वशी ध्वनि अलाप कर ससार को मोहित करने वाले मोर मुकुट धारी घनवत् कान्तिवाले घनश्याम को मैं बार बार प्रणाम करता हू।

द्वापर युग के अन्त मे उस भक्तभयहारी भगवान श्री कृष्ण जी ने ब्रजभूमि मे अवतार धारण कर भूमि का भार हरण किया। बालावस्था मे नाना भाति की अद्भुत बाल क्रीडाएँ कर नद यशोदा को आनन्द दिया और कालान्तर मे वयः प्राप्त होने पर माथे पर मोर मुकुट, हाथो मे वशी और लकुट, कटि में काछनी और पीत पट पहने हुए, हृदय पर वनमाला को धारण किए हुए, गोप और गौवो के साथ साथ उस पवित्र, बृज वन के वनमाली वन, यमुना के कूल कूल ललित कदवो की शाखाओं में झूल झूल कर कुछ समय तक विहार किया। उस त्रैलोक्य मोहिनी मूर्ति की छवि पर बृज की स्त्रिया ऐसी मोहित थीं कि यमुना किनारे श्रीकृष्ण की वंसी की मधुर ध्वनि सुन कर घर वार को छोड उनके दर्शन के लिये वहा ही जा पहुँचती थीं। शरद की चाँदनी में स्वच्छ जल मे कल्लोल करती हुई यमुना के किनारे रास रचकर सब गोपियो के साथ साथ आप नृत्य करते और उन्हें नचाते, कभी कभी उनके प्रेम की परीक्षा करने के लिये जो उन प्रेम की पूतरी गोपिकाओ के चर्म नेत्रो के सम्मुख मे अन्तर्ध्यान हो जाते तो वे ऐसी बेहाल हो जातीं जैसे शीतकाल के विषम बयार के झकोर मे कोमल लताएँ झुरम जाती है। उस साँवरे सुजान के प्रेम मे रगी हुई वे गोपिकाएँ खान, पान, शयन, सपरण त्याग विरह वेदना मे बेहाल हो कर सघन वन में विचर कर कदम्ब करीलादि के वृक्षों से श्रीकृष्ण का पता पूछती फिरती थीं। उनकी ऐसी करुणामयी दशा देख कर वे आप पुनः प्रगट हो जाते और आनन्दमय रास रचकर उनके दग्ध हृदय को पुनः प्रफुल्लित कर देते इसी प्रकार लीला विहार करते हुए मथुरा के राज कस के भेज हुए अघासुर, बकासुर, धेनुकासुरादि कई असुरों का उन्होने सहार किया। एक समय जब कि इन्द्र ने क्रोध कर मुसल धार जल की वर्षा कर बृज भूमि को बहा देना चाहा तो आपने स्वय गोवर्द्धन पर्व्वत को अपने कर कमलो पर उठा कर सब गोपी ग्वालो पर आच्छादित कर उन्हे इन्द्र के कोप से बचाया।

समय पा काल वश हो कस ने यज्ञ आरम्भ किया। वहाँ तो मथुरा मे घर घर हाट, बाट चौहाटो मे साज बाज होने लगे। देश देश के नरेश निमत्रणपत्र पा, आ आ मथुरापुरी के चतुर्दिक डेरे डालने लगे। इधर कस ने श्रीकृष्ण बलराम को बुलाने के लिये अपने कुल प्रोहित अक्रूर को भेजा। अक्रूर ने वृन्दावन मे आकर कस का सदेसा श्रीकृष्ण बलराम से कहा। तब तो दोनो भाई प्रसन्नता पूर्वक मथुरा जा कस के यज्ञ मे सम्मिलित होने को प्रस्तुत हुए। जिस समय श्रीकृष्ण बलराम अक्रूर के सग रथ पर बैठ मथुरा की ओर पयान करने लगे तब नन्द यशोदा ने मोह से बिकल हो कर आखो मे आँसू भर दिए। प्रेमबाहुल्य के कारण कण्ठ गदगद होने से मुख से बचन भी न निकला और सब ग्वाल गोपी गोपिकाएँ श्री कृष्ण मे अन्तिम मिलाप करने आए और होनेवाले आजन्म विछोह की आलोचना मे मुग्ध हो कर चित्र लिखे से देखते रह गए। सब के देखते देखते अक्रूर का रथ दृष्टि से छिप गया और वे विचारी अबलाएँ असह्य शोक मे आँसू मोचन करती हुई कलेजा थाम कर रह गई। बृजचन्द श्रीकृष्ण आनन्दकन्द ने मथुरा में पहुँच कर प्रसन्नतापूर्व्वक कस की मखशाला मे पदार्पण किया। उस अनन्त आनन्दमयी रगभूमि के द्वार पर जाते ही कस के आज्ञानुसार

पीलवान ने कुवालियानन्द नामक मदोन्मत्त बलवान हाथी को कृष्ण बलराम के सम्मुख झोका जिसे उन दोनो भाइयो ने सहज ही मे मार डाला और वे स्वच्छन्दतापूर्व्वक आनन्दमय रगशाला मे पैठ पडे। यह देख कस ने चानूर नामक मल्ल से श्री कृष्ण बलराम को युद्ध करने की आज्ञा दी। निदान कुछ देर बालको की तरह खेलाकर उन्होने चानूर को भी मारडाला। यह देख कर कस का चित्त चञ्चल हो उठा। वह स्नेह मूर्त्ति नेत्र को सुख देने वाली जो अन्य सब प्रजा को प्राण सी प्यारी देख पडती थी कस को तथा उसके दुष्ट दर्बारियो के काल सी दीखने लगी। सब सभा ने कोलाहल हो उठा। कस के योद्धा जहा तहा श्री कृष्ण बलराम को पकडने को उठ पडे। उन सबको बलराम ने मोक्ष मार्ग दिखाया और श्रीकृष्ण जी ने आगे बढ कर कस के राजसिंहासन पर चढ कर उसकी चोटी पकड कर उसे नीचे गिरा दिया और बिना अस्त्र शस्त्र के ही मुष्टकों से प्राण ले कर उसे यमुना मे बहा दिया और तब दोनो भाई यमुना के किनारे पर बैठ कर श्रम दूर करने लगे। इसी स्थान का नाम विश्राम घाट है।

इस प्रकार कसको मार उन्होने उसी से बदी किए गए अपने पिता माता देवकी वसुदेव को बधनमुक्त किया। और कस के पिता उग्रसेन को मथुरा का राज्य दे कर आप उस राज्य की रक्षा करते हुए ससार की रक्षा करने लगे। वृन्दाबन से आए गोप गोपियों से प्रेम मे मिल कर उन्होने उन्हें पुन॰ वृन्दाबन की ओर जाने को कहा और समझाया कि हे सखाओ यह जो कुछ हुआ सो तो तुम देख ही चुके। कस केसी इत्यादि राक्षसों के मारे जाने की खबर नन्द यशोदा से कह देना और कहना कि आप किसी प्रकार का दु.ख अपने मन मे न लावे हम दोनों भाई दिन दस एक में आवेगे। श्री कृष्ण बोले कि हे सखाओ मेरी माता यशोदा से कह देना कि मेरी गेद, हिंगुरी ठिकाने मे रक्खे कहीं राधा चुराकर न ले जाय। श्री कृष्ण के मुख मे यह बचन सुन कर सब ग्वाल बालो के नेत्रों से आँसु-धार बह निकली। वे गदगद कण्ठ से बोले कि हे प्यारे नदनन्द आप आनन्द करो। जिसमे आप सुखी है प्यारे सोई हमें सुखकर है। हमे बिचार केवल इसी बात का है कि अब जो इन्द्र और यमलार्जुन कोप करेगे तो हमारी रक्षा कौन करेगा। इस प्रकार करुणामय बचन कहते हुए सब गोप ग्वाल प्रेम से अक मिलकर अगम्य बिरह वियोग सागर मे निमग्न हो वृन्दावन की ओर चले किन्तु दृढ प्रेम बधन के कारण चल नही सकते थे बार बार यह कहते हुए कि हे नाथ आज हम आप के बिछोह से अनाथ होते है लौट पडते थे। जब सब गोप ग्वालों ने यह सँदेसा यशोदा से कहा तो वे मूर्छित हो कर काटे हुए वृक्ष के समान गिर पडी। राधिका सहित सब गोपियाँ बौरानी सी बन बन फिरने लगीं किन्तु फिर हरि माया वश हो कर सब अपने अपने ग्रहकार्य्य में लग गई। श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द ने कुछ काल मथुरा में रह कर फिर द्वारिकापुरी को पयान किया और जो कुछ लीलाएँ कीं सो श्रीशुकदेवजी ने भागवत पुराण मे वर्णन की है।

बौद्धावतार।

कलियुग के आरम्भ में हिंसादि पातक अधिक होने पर कैटक देश मे बौद्धावतार हुआ जिन्होंने अहिंसा का प्रचार कर अगनित जीवों की रक्षा की। ज्ञान का प्रचार किया और वेदों की निन्दा की।

कल्कि अवतार।

जब कलियुग के प्रभाव से ससार में पाप की वृद्धि होगी यज्ञादि शुभ कर्म्मो का लोप हो कर सब लोग धर्माधर्म का विचार न करके परस्पर पशुवत् व्यवहार करने लग जायगे तब उन असुरों को मारने वाला कल्कि अवतार कलिंग देश में होगा।

कल्कि अवतार हृदय में सामवेद का ध्यान

किए हुए श्याम अश्व पर आरुढ़ माथे पर क्रीट धारण किए चार भुज वाला पीत पट कसे हाथ में खड्ग कटार आदि अस्त्र धारण किए दुष्टों का खण्ड खण्ड कर के भूमि पर पुनः सत्धर्म्म का प्रचार करने वाला होगा।

उपसंहार।

कवि कहता है कि रामकृष्ण की लीला का यश वर्णन करने को मेरी बुद्धि कहां? उसे तो सनक सनन्दन सनत्कुमार वाल्मीकादि महामुनियों ने भी कह कर पार न पाया, मेरी गिनती क्या है जो मैं कहूं।



दिल्ली किल्ली कथा।

[तीसरा समय।]

कविचन्द ने अपनी स्त्री से कहा कि कल्लोल करती हुई यमुना के किनारे जो सुन्दर दिल्ली नगर सुशोभित है सो पृथ्वीराज के ही भोग करने के लिये है। इस दिल्ली की कथा को मै सक्षेप में पृथ्वीराज की माता को ढुढा का वर मिलने के प्रसग मे वर्णन कर चुका हू। अब मे उसी को विस्तारपूर्वक कहूगा।

बाल्य अवस्था में एक दिन पृथ्वीराज ने स्वप्न में देखा कि जुग्गनि देवि उत्तमोत्तम वस्त्र और आभूषणों को धारण किए हुए पृथ्वीराज के पास आई और उसने इन्हें बडे प्यार से गोद में बैठा कर दिल्ली का राज्याभिषेक किया। प्रातःकाल होते ही पृथ्वीराज ने अपने स्वप्न का सब हाल अपनी माता से कह सुनाया जिसे सुन कर पृथ्वीराज की माता के चित्त में दुःख सुख आश्चर्य्य इत्यादि का एकत्र आविर्भाव हुआ। अस्तु उसने उसी समय ज्योतिषियों को बुला कर उनसे पुत्र के स्वप्न का वर्णन कर के फल कथन करने का आदेश किया। ज्योतिषियों ने उत्तर दिया कि राजकुमार ने जो कुछ स्वप्न में देखा है वह सत्य ही पॉच दिवस के बीच में यथावत् होनहार है। शास्त्र का यही वचन है कि पृथ्वीराज दिल्ली का राजा हो। निदान रानी जी ने बहुत कुछ दान देकर ज्योतिषियों को बिदा किया और आप पुत्र सहित एकान्त स्थान में बैठ कर बोली कि हे पुत्र दिल्ली की पूर्व्व कथा जिस प्रकार है सो मैं तुझ से कहती हू सुन। पृथ्वीराज की माता बोली कि मेरे पिता अनगपाल के पुरुषा राजा कल्हण जो हस्तिनापुर में राज्य करते थे एक समय अपने समस्त सूर सामन्तो को साथ में लिए हुए शिकार खेलने निकले। जब उस स्थान पर पहुँचे कि जहा अब दिल्ली नगर बसा हुआ है तो देखते क्या हैं एक शशा (खरगोश) उनके सग के शिकारी कुत्तो पर आक्रमण करता है। इससे राजा को बडा आश्चर्य्य हुआ और उस भूमि को वीरभूमि जान कर लग्नशोधन करा कल्हणपुर नाम नगर उन्होने बसाया। उक्त कल्हण जी से कई पीढ़ी पीछे मेरे पिता राजा अनगपाल जी हुए जिन्हों ने अपने कुल प्रोहित से कहा कि मैं अपनी धन सन्तान और यश की इच्छा से एक गढ़ बनवाना चाहता हू सो कृपा कर आप मुहूर्त शोधन कर दीजिए। निदान कुल प्रोहित व्यास * जी ने भी मुहूर्त साधन कर के वास्तु शास्त्रानुसार शिलान्यास कर्म्म किया और कहा कि हे राजन् यह जो कीली गाडी जाती है उसको पॉच घडी तक कोई न छुए और तुरन्त एक ६० अगुल की कील मगवाकर उसी स्थान में गाडी और कहा कि यह कील शेष जी के मस्तक में जा कर लग गई है इसको न उखाडने से आपके (तोअर) वश का राज्य ससार में अचल रहेगा। यों कह कर व्यास तो चले गए परन्तु राजा को इसका विश्वास न हुआ और इसके निश्चय करने के लिये ज्योंही उन्होंने कील उखडवाई कि नीचे से रुधिर की धार निकल पडी और कील का कुछ अश भी लोहू से भरा हुआ निकला जिसे देख कर राजा बहुत दुखी हुआ और अपनी मूर्खता और अविश्वास पर पश्चाताप करने लगा, परन्तु इससे क्या, होनहार कदापि नहीं मिटती। यह समाचार सुन कर व्यासदेव जी भी यहा आए और राजा को समझाने लगे कि हे राजन बीती बात पर पछतावा मत करो, मैने तो आपसे पहिले ही कह दिया था कि जब तक यह किल्ली गड़ी है तब तक आपका राज्य भारतवर्ष में अचल है—परन्तु होनहार प्रबल होती है इसीसे आपने अपने मन मानी की। परतु इसमें आपका भी दोष क्या है। यद्यपि विद्याओं द्वारा भविष्य का ज्ञान हो जाता है और लोग उसका उपाय भी करते है किंतु वह सब उपाय उलट कर फल देते हैं और होनहार भावी के ही सहायक बन जाते है। रामचन्द्र क्या नहीं

* व्यास शब्द से किसी विशेष व्यक्ति के नाम से संबन्ध नहीं है। व्यास कुल के कुलाचार्य्य की पदवी थी।

जानते थे पर उन्हें होनहार के ही कारण सब दुःख भोगना पड़ा। प्रबल यादव वंश ने स्वय अपने नाश का कारण रच कर दुर्वासा ऋषि का उपहास करके शाप लिया था। राजन्, ससार में एक से एक बडे और प्रतापी हो गए हैं, किंतु उनके यश अपयश के सिवाय दूसरा कोई भी चिन्ह अब उनका शेष नहीं है। इस हेतु शोक को छोड कर भगवत के भजन में लवलीन हो जाइए। आपके पश्चात् यह राज चहुआनों का होगा। चहुआनों के पीछे मुसल्मानों का राज्य होगा और जब मुसल्मान बहुत उत्पात करेंगे तो सवत १६७७ में पुनः मेवातिपति का जोर बढ़ेगा और यह कुछ थोडे ही दिनों में पुनः शान्त हो जायगा। हे राजन् ! इसके विरुद्ध कदापि न होगा यह व्यास जी का वचन सर्वथा सत्य और होनहार है।

पृथ्वीराज की माता अपने पुत्र से उक्त संवाद कह कर स्वप्न का परिणाम भविष्य में अपने पुत्र को दिल्ली का राज्य सुन कर होम यज्ञ और अनेक प्रकार के दान करने लगी। उधर पृथ्वीराज भी अपना शुभ भविष्य सुनकर फूले न समाते थे। उनका जिस प्रकार प्रति दिन उत्साह लालसा और आनंद बढ़ता जाता था उसी प्रकार अजमेर राज्य के कोष भडार अन्न इत्यादि प्राति दिन वृद्धि को प्राप्त होते जाते थे और राज्य प्राति दिन सुख और श्रीसम्पन्न होता जाता था। कवि चद कहता है कि ऐसे अद्वितीय पुरुषसिंह पृथ्वीराज की काति, श्री, ह्री, धी नित नव और दूनी होती जाती थी। इसके पश्चात लोहाना का किले पर से कूदना और पृथ्वीराज का उसे आजान बाहु का खिताब और कई जागीर देना वर्णन किया जायगा।



लोहाना आजानबाहु समय ।

[चौथा समय ।]

एक समय का वृत्तात है कि राजा पृथ्वीराज अपने सब सूर सामतों सहित चित्रसारी में बैठे हुए प्रकृति का आनद ले रहे थे।जिस समय का यह वृत्तात है उस समय एक घडी दिन बाकी था। पृथ्वीराज जिस चित्रसारी में बैठे थे उसकी गौख ३२ हाथ ऊँची थी। पृथ्वीराज ने सब सामतों से कहा कि जो इस गौख पर से कूदे उसे मै बहुत सा इनाम और जागीर दूंगा। यह सुन कर सब सामंत चुप रह गए। कन्ह बोल उठे कि प्राय: राजाओं के विचार ऐसे अनगढ़ हुआ ही करते है। चामुण्ड राय और जैतसिंह को तो इस बात पर कुछ क्रोध भी आगया. परतु लोहाना नामक एक सामंत एक बेर राजा की ओर देख कर इकबारगी कूद पडा । उस स्वामिधर्म्मधारी वीर के कूदने की सब ने प्रशसा की और राजा पृथ्वीराज तो तुरत ही आसन छोड़कर दौडते हुए स्वय लोहाना के पास गए और उन्होंने उसे बहुत से प्रशसा युक्त उत्तेजक शब्दों से सबोधन करते हुए गले लगा लिया और तुरत राज्यवैद्यों को बुलवा कर आज्ञा दी कि जहां तक जल्दी हो सके लोहाना को अच्छा कर के मेरे पास लाओ। मैं बहुत सा इनाम दूगा। अतएव वैद्य लोहाना को अपने घर ले गए और उन्होंने ६ दिन में लोहाना को हृष्ट पुष्ट कर दिया।निदान १३ रविवार को लोहाना पृथ्वीराज जी के सम्मुख आया।ज्योंही उसने दरबार में आकर राजा को प्रणाम किया कि उन्होंने अत्यत प्रसन्न हो कर उस को रणथभ, ओरछा और ग्वालेर जागीर में दिए और साथही ५०० गॉव और भी दिए। राजा ने लोहाना को जागीर के साथ १८ हाथी ५०० घोड़े ५०० ऊंट और पांच हजार पैदल दिए और आजानबाहु का खिताब भी दिया। निदान आजानबाहु उक्त सेना को पाकर पृथ्वीराज से पाई हुई जागीर पर दखल करने लगा और सब जागीर पर दखल कर के जब ओरछे आया तो वहा का राजा जसवन्त सिंह लोहाना से युद्ध करने को तय्यार हुआ। लोहाना तो पहिले ही से सन्नद्ध था। दोनों में घोर युद्ध हुआ। अत मे जसवंत सिंह की पराजय हुई और ओरछे पर लोहाना का अधिकार हुआ।



कन्ह पट्टी समय।

[पांचवां समय ।]

कवि चन्द की स्त्री ने कहा कि हे पति राजा पृथ्वीराज जी का भोरा भीमंग देव से बैर क्यों कर हुआ। यह सुन कर कवि चन्द ने उत्तर दिया कि हे प्रिये सुनो। कुँवर पृथ्वीराज का प्रताप प्रति दिन चन्द्र की कला सा बढ़ने लगा और अनन्त दान और गुणी और कवियों के सम्मान के कारण दसों दिशाओं में उसकी कीर्ति फैलने लगी। जिस समय पृथ्वीराज अजमेर की गद्दी पर थे, गुजरात में भीम देव राज्य करता था। वह भी राजनीति का जानने वाला धर्म्मधुरन्धर स्वयं कीर्तिवान और प्रजाप्रिय था। अत्यन्त प्रजाप्रिय होने से लोगों ने इस का खिताब भोला राय भीम देव रख लिया था। भोला राय भीम देव के भाई सारँग देव के प्रताप सिंह, अरसिंह, वरसिंह, गोकुलदास, गोविन्दराज, हरसिंह, स्यामसिंह, भगवान दास इत्यादि पुत्र थे, जब प्रताप सिंह अपने बाप सारँग सिंह की गद्दी पर बैठा तो वह अभिमान में आकर व्यर्थ प्रजा को दुःख देने लगा और अपने भाइयों सहित भोलाराव भीम से रूठ कर बागी हो गया और उसके राज्य में प्रजा को अत्यन्त कष्ट देने तथा लूटने मारने लगा, जिस से भोला राय अत्यन्त क्रोधित हो कर बडी भारी सेना सज कर स्वय उसको पकडने के लिये चला। आगे चल कर जब कि भीम देव की सेना एक नदी के किनारे पडी हुई थी, एक फीलवान राजा के निज हाथी को नदी में नहलाने के लिये लेगया। दैवयोग से ये सातों भाई भी जो कहीं छिपे हुए थे आ पहुँचे और सबने जुड कर हाथी और फीलवान को मार डाला। इससे भोला राय भीमदेव और भी कुपित हुआ और इन लोगों ने भी उस राज्य में रहना उचित न जान कर पृथ्वीराज की शरण ली। पृथ्वीराज ने इनकी वीरता पर प्रसन्न हो कर उन्हें एक एक घोडा सिरोपाव और जागीर दे कर अपने सरदारों में रख लिया। एक दिन पृथ्वीराज ने एक दरबार लगवाया जिसमें पृथ्वीराज के सब सूर सामन्त अपने अपने स्थान पर आकर बैठने लगे। कन्ह के साम्हने प्रताप सिंह और उसके छओं भाइयों की बैठक थी। बैठे हुए प्रताप सिंह ने भरे दरबार में अपनी मूछ पर हाथ फेरा कि जिसे देख कर कन्ह ने बिना कुछ कहे सुने सहसा प्रताप सिंह पर ऐसा हाथ मारा कि वह दो टूक हो गया भाई का मारा जाना देख कर अमर सिंह से न रह गया। उसने झपट कर कन्ह के बाएँ हाथ पर तलवार का वार किया जिससे कन्ह की प्रज्वलित क्रोधाग्नि में मानो घी पड गया और कन्ह ने झपट कर जो अमर सिंह का सर पकड़ कर के मसक दिया तो वह बेल सा फूट गया। यह देख कर हरिसिंह झपटा और वह भी मारा गया, नरसिंह लडने को झपटा और कन्ह ने उसे भी मार गिराया। यह देख कर पृथ्वीराज तो उठ कर चले गए उधर घोर घमसान द्वन्द होने लगा। वीर कैमास ने भी कन्ह का साथ दिया। जब वे सातों भाई मारे जा चुके तो उनका एक सेवक माधव नामक खवास (नाई) तलवार निकाल कर कन्ह पर झपटा। पर वह भी मारा गया। इधर महलों के बाहर अजमेर नगर में घर घर इस बात की चर्चा फैल गई कि आज कन्ह ने सातों भाई चालुकों को मार डाला है। यह बात प्रताप सिंह के लशकर तक भी जा पहुची, जिसे सुनते ही वे सब के सब जो जैसे बैठे थे अपने अपने हथियार कस के उठ धाए और बराबर महलों में पैठते ही गए। उधर वीर कन्ह की फौज भी सज कर आ गई और दोनों दलों मे खूब तलवारें चलने लगीं। यद्यपि कन्ह के एक एक वार में कई एक चालुकों का वारा न्यारा होता था परन्तु वे स्वामिधर्म्मरूपी अग्नि में ही पतग की तरह शरीर को होम देते जाते थे। देखते ही देखते वह आनन्दमयी रगभूमि करुणामयी रणभूमि देख पडने लगी। सायकाल पर्य्यन्त यही हाल रहा। न चालुक्य के योधा हटे, न वीर कन्ह ही हटा। अन्त में कन्ह

की जय हुई और वह आनन्द में मस्त अपने घर चला गया किन्तु पृथ्वीराज को यह बात बहुत बुरी लगी और कन्ह के इस निष्प्रयोजन बखेडा मचाने से पृथ्वीराज का जी बहुत खट्टा हो गया। जब यह बात कन्ह ने सुनी कि पृथ्वीराज मुझ से कुपित हो गया है तो उसने अपना दरबार में आना जाना बन्द कर दिया।

जब सात दिन तक कन्ह दर्बार में न आए तब पृथ्वीराज ने स्वय प्रधान कर्म्मचारी को भेज कर कन्ह को बुलाया और कहा कि भला विचारिए तो सही, संसार में लोग क्या कहेंगे कि चहुआनों ने चालुकों को अपने घर में बुला कर के मारा। इसमें सब यश, अपयश आप ही का है, मेरा क्या मै तो लडका हू। तब कन्ह ने उत्तर दिया कि चाहे कुछ हो परन्तु मेरे देखते कोई मूछ पर हाथ नहीं रख सकता। तब पृथ्वीराज ने कहा कि अच्छा तो अब आप अपनी आखों में पट्टी बँधी रक्खा कीजिए। और उसी समय २५०००) की कीमत की २१ टँक भर तौल में स्वर्ण की एक जडाऊ पट्टी बनवा कर अपने हाथ से कन्ह की आखों पर बाँध दी। वह पट्टी दिन रात बराबर बँधी रहती थी केवल रात के समय सेज पर और युद्ध में खोली जाती थी। कवि कहता है कि पृथ्वीराज के समय में कन्ह ऐसा योधा था, जैसे महाभारत में भीम द्रोणाचार्य्य हुए हैं, और त्रेता में रावण हुआ है। वह युद्ध में शत्रु पर इस प्रकार टूटता था जैसे सिंह सिंहनी पर टूटे—मानो पृथ्वीराज जी की रक्षा के लिये साक्षात् दुर्योधन का उसने अवतार लिया था। जहाँ जहाँ काम पडा कन्ह ने वास्तव में अद्वितीय पराक्रम किया।

प्रताप सिंह इत्यादि सातों भाइयों के मारे जाने की खबर जब गुजरात के राजा भोलाराय भीमदेव को लगी तब भ्रातृस्नेह से व्याकुल हो कर उस की क्रोधाग्नि भभक उठी और उसने उसी समय पृथ्वीराज जी को एक पत्र लिखा कि तुमने व्यर्थ मेरे भाइयों को मारा है मैं उनका बदला लेना चाहता हूं। सावधान रहो। इस के उत्तर में पृथ्वीराज ने लिख भेजा कि मैं सदा सन्नद्ध हू आपकी जब इच्छा हो आइए। इस पत्र के पढ़तेही चालुकराय ने उसी समय अजमेर पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी। किन्तु राज्यमंत्रियों ने यह कह कर कि वर्षा काल में चढाई करना ठीक नहीं है राजा की तय्यारी बंद कर दी।

रूप गुण यौवन सम्पन्न राजा पृथ्वीराज श्री कृष्ण की तरह अजमेर में अखण्ड क्रीड़ा और केल करता हुआ प्रति दिन वृद्धि को प्राप्त होने लगा।



आखेटक वीर बरदान।

[छठां समय।]

इस प्रकार पृथ्वीराज की अवस्था १५ वर्ष की हो गई। शैशव का अभाव और यौवन अवस्था का प्रभाव प्रति दिन बढने लगा। प्रशस्त वक्षस्थल वज्र के समान कठोर और शत्रुओं के बल को नाश करने वाले भुजदण्ड प्रति दिन बलवान होने लगे। पृथ्वीराज के साक्षात कामदेव के उमग से भरे हुए नेत्र कमल के समान प्रकाशमान थे, उज्वलमुखक्रान्ति सूर्य्य के समान प्रदीप्त थे, वाणी भ्रमर की गुजार के समान भासित होती थी। वह कलियुग मे साक्षात् धुव्र का अवतार मानने योग्य था। जिस प्रकार पृथ्वीराज की आयु बढ़ती जाती थी उसी प्रकार उस के साथी सामत गण भी क्रमशः शैशव अवस्था को त्यागते हुए यौवन को प्राप्त होते जाते थे। जो भोग विलास पृथ्वीराज स्वय करता उनसे अपने प्रिय सामतों को भी कदापि वञ्चित न रखता। अपने बाल सवाती सामतों के मध्य में पृथ्वीराज इस प्रकार शोभित होता था जैसे देवताओं में इन्द्र, सर्पों में शेषनाग, हस्तियों में गजराज, नक्षत्रों में चन्द्र, एकादश रूद्रों में महावीर, नव ग्रहों में सूर्य्य, और अलकापुरी में कुबेर शोभा देते है। जो जो विद्याऐं पृथ्वीराज जानता था सामत भी उनमें दक्ष थे। तात्पर्य यह कि पृथ्वीराज की समस्त मण्डली चौदहों विद्याओं और नाट्य वाद्य सहित चौंसठों कलाओं में निपुण थी। पृथ्वीराज का यह नियम था कि सायकाल के समय वह हथसार घुडसार इत्यादि सब कारखाने स्वय देखता। इस के उपरान्त दरबार लगता जिस में विद्वान कवि और पण्डितों की सभा होती। तिस पीछे नाट्य वाद्य की सभा जमती। प्रात काल शौच क्रिया सन्ध्या वदनादि से निश्चित हो कर अपने सब साथियों सहित वह अखेट को जाता था।

एक समय का वृत्तान्त है कि पृथ्वीराज एक बड़े दल बल के साथ शिकारी कुत्ते, चीते हरिण और बरही, कुहीं, बाज इत्यादि शिकारी चिड़ियों को लेकर जगल में शिकार करने गया। जब एक गहन वन में पहुँच कर सब अपने अपने शिकार के पीछे पडे तो कविचद भी अपने शिकार के पीछे हो गया और दैव योग से सब का साथ छूट कर आप एक निर्जन वन में जा पहुँचा। वहा वह देखता क्या है कि उस निर्जन वन मे एक ऐसा स्थान है जहा पर नाना प्रकार की सुन्दर लता वेलीं लहलहाती उतग वृक्षों से लिपटी हुई हैं। नाना प्रकार के सुन्दर फल फूल लग रहे थे। उन पर नाना प्रकार के शुभ पक्षी कल्लोल करते हुए असीम आनद की बहार बता रहे थे। उसी स्थान में एक आम के वृक्ष के नीचे एक योगी समाधि में लीन बैठा हुआ था, जिसके हाथ में माला, नीचे मृगछाला, शरीर पर विभूति और हाथ में खप्पर था तथा अष्ट सिद्धि नव निद्धि जिसकी जिव्हा पर बास करती थीं। यह देख कर कविचद ताड गया कि यह कोई बड़ा भारी सिद्ध योगिराज है और तब बडे विनीत भाव से साष्टाग दण्डवत करके बोला कि हे नाथ आज आपका दर्शन होने से मेरा जन्म सफल हुआ। हे! योगिराज संसार के कर्ता धर्ता आपको बारम्बार प्रणाम कर के प्रार्थना करता हू कि कृपा करके मुझपर प्रसन्न हूजिए। तब योगिराज ने समाधि खोली और बोले, हे जन! तू कौन है और तू इस स्थान मे क्यो कर आया कि जहा नाना प्रकार के हिंसक पशु रहते हैं और दूसरे जीवों को मार कर ही अपने जीव की रक्षा करना जिनका व्यवसाय है। तब कविचद ने उत्तर दिया कि हे नाथ मेरा नाम कविचद है और आखेट में भूल कर इधर आ निकला हू किंतु आप के दर्शन होने से मुझे भासित होता है कि वास्तव में मेरा परम सौभाग्योदय हुआ है। निदान ऋषि राज ने प्रसन्न होकर कविचद को एक मत्र बतलाया और कहा कि इसका जप करने से ५२ बीर तेरे वश होंगे और जिस समय उनसे जो सहायता चाहेगा वे तुझे देंगे। अतएव गुरू से मत्र लेकर कविचद उसी समय एकात मे जा मत्र की परीक्षा

करने के लिये आसन मार कर बैठ गया और उक्त मंत्र का जप करने लगा।

भली बुरी जो कुछ होनहार होती है वह कभी नहीं टलती, इसी से भवतव्य को प्रबल माना है। कहा तो कविचद पृथ्वीराज के साथ शिकार करने चला था और कहां भाग्यवश भूल कर ऋषि से आ मिला जिस समय धूप दीपादि देकर कविचंद ने उक्त मत्र का जाप करना आरम्भ किया तो नाना प्रकार के हृदय कँपाने वाले शब्द चतुर्दिक होने लगे और ज्योंही जप खतम हुआ कि ५२ वीर कविचद के सम्मुख आ उपस्थित हुए। उन वीरों के आते ही उस वन में नाना प्रकार की मन हरण सुगंधि व्याप्त होगई। कोई कोई वीर सिह व्याघ्र इत्यादि भयंकर हिंसक पशुओं के वेष में थे कोई ऐसे थे जिनको देखते ही भय उत्पन्न होता था। कोई कोई सुन्दर अद्वितीय जगद्वशकर्ता सुन्दर रूप को धारण किए गान वाद्य करते हुए आनन्द में मग्न थे। उन्हें देखकर कविचद ने साष्टाग दण्डवत करके स्तुति की और हाथ जोड कर वह खडा हो गया। तब वीरों ने कहा कि हे कविचद तू ने किस लिये हम को बुलाया है। इस पर चद ने विनीत भाव से कहा कि जिस प्रकार देव और दैत्यों के युद्ध में आपने देवताओं की सहायता कर के दुष्टों का पराजय किया उसी प्रकार मेरे स्वामी पृथ्वीराज की सकट में सहायता कीजिए। यह सुन सब वीरों ने प्रसन्न हो कर एवमस्तु कहा और भैरव जी ने एक गण को आज्ञा दी कि वह सब वीरों का पृथक पृथक नाम और गुण कविचद को कह समझावे।

भैरव जी की इस प्रकार आज्ञा पाकर वज्रपाट नामक एक वीर ने सब वीरो * के नाम और गुण कविचंद से कह सुनाए जिसे सुनकर कविचंद ने पुनः सब को साष्टाङ्ग प्रणाम किया और मन में प्रसन्न होता हुआ पृथ्वीराज से मिलने के लिये आगे चला। उधर पृथ्वीराज भी अपने सब सूर सामतों से बिछुड़ कर एक ऐसे स्थान में जा पहुँचा था जिसकी आनंदवन से उपमा देना कदापि अत्योक्ति नहीं हो सकता—चतुर्दिक आकाश को छूते हुए उतग पर्व्वतों से वेष्टित एक परम रमणीक उपवन था जिसमें नाना प्रकार के उत्तमोत्तम वृक्षों और उन में लिपटी हुई सघन लताओं के कारण सूर्य्य का प्रकाश भी न पहुँचता था। उस स्थान में नाना प्रकार के मगलीक तथा हिसक पशु पक्षी कल्लोल करते हुए एक अनुपम प्राकृतिक शोभा दिखाते थे। पृथ्वीराज ने वहां पहुँच कर उसी स्थान के बनैले पशुओं का शिकार करना आरम्भ कर दिया। दैवयोग से तब तक कन्ह, गोइन्द राय, चद पुडीर इत्यादि सब सामत लोग भी आ उपस्थित हुए। और और परिकर के लोग भी आगए किन्तु सब की सलाह से राजा एक दिन वहां और ठहरे और तब तक कविचंद भी भूलते भटकते वहीं आन पहुँचे, इन्हें देखते ही पृथ्वीराज ने प्रसन्न होकर कण्ठ से लगा लिया।

दूसरे दिवस भोजन प्रसाद कर के पृथ्वीराज ने दिल्ली को प्रस्थान किया। सब सामतो को सवारी के लिये एक एक घोडा दिया और कविचद को एक मतवाला हाथी दिया जिसको पाकर कविचद ने राजा को आशीर्वाद दिया और प्रसन्न होकर वह हाथी पर सवार हुआ और सब के साथ साथ दिल्ली को चला। जिस समय से कविचद ने वीरों के सिद्ध होने की वार्ता पथ्वीराज से कही थी तब से पृथ्वीराज

---

* वीरों के नाम (१) आइक (२) बपुलाइ (३) बुधिलाइ (४) भानङ्ग प्रहारिय (५) नारीय (६) सूलांय (७) समसान लोटना (८) गढ उपडनाइ (९) मधुरतरन (१०) समुद्रसोख (११) लोह भर्जन (१२) सकला चोट (१३) छिपखाय (१४) रुडमाल (१५) आगिया (१६) छिपखिया (१७) जमघट (१८) कालाइ (१९) कुरलाइ (२०) वैगिन कान्त (२१) विषकत (२२) रणनिया (२३) काइलाइ (२४) कालक (२५) कालिङ्गाइ (२६) कालघटाइ (२७) इन्द्रवीर (२८) जमवीर (२९) वैश्वाग्नि (३०) ऊकार (३१) छापटा (३२) मानिक रूद्र (३३) कपाडिया (३४) केदाइ राय (३५) नरसिंह (३६) गोरिया (३७) घटघंट (३८) कटेभ्य (३९) वग (४०) महाव्रगाय (४१) सतोसाइ (४२) महासतोष (४३) भ्रमरकाय (४४) महाभ्रमर काय (४५) सहसाप (४६) सहस्रांग (४७) क्षेत्रपाल (४८) भूतपानइ (४९) साकिनीमार (५०) वैदरीन (५१) सालिग्राम (५२) ससिसर

असीम आनंद में मगन होकर नाना प्रकार के उमंग और संकल्प विकल्प में मस्त था। दिल्ली पहुँच कर पृथ्वीराज ने रात भर अपने उक्त आनंद की ही आलोचना की, प्रातःकाल शौचादि क्रिया से निश्चिंत हो सध्या वंदनादि कर नित्त नियमानुसार दस गोदान, दसभार स्वर्ण और अतोल अन्न का विद्वान विप्रों को दान कर उत्तमोत्तम नवीन वस्त्र धारण कर नाना प्रकार के रत्न जटित आभूषण और अस्त्र, शस्त्रों से सुसज्जित होकर वह राज सभा में पधारा। उधर से कन्ह, कैमास, पज्जून राय, पूरन राय, गोइन्दराज इत्यादि सामंत आ आ कर क्रमानुसार यथायोग्य अपने अपने स्थान पर बैठने लगे। उन समस्त शूर सामंतों में गद्दी पर बैठा हुआ पृथ्वीराज ऐसा शोभायमान होता था जैसे तारागण में चन्द्रमा शोभित होता है। वीरों के वश होने के समाचार से जो प्रसन्नता पृथ्वीराज के हृदय में थी कौमार अवस्था के कारण वह बार बार उसके चन्द्रानन पर झलक कर एक अलौकिक शोभा का भडार होती थी। इसे देख कर बुद्धिमान कैमास ताड गया और समय पाकर उसने हाथ जोडकर विनीत भाव से प्रार्थना की कि हे राजन आज आप का मुखारविंद अत्यंत प्रफुल्लित है जिससे ज्ञात होता है कि आपके हृदय कमल पर किसी प्रचण्ड दीप्तमान आनंद रवि का प्रकाश हो रहा है और श्रीमान उसको प्रगट कर के हम सब को भी उस अलौकिक आनंद का भागी किया चाहते हैं, किंतु न जाने किस विशेष कारण वश आप स्पष्ट रूप से नहीं कहते। इस बात के सुनते ही पृथ्वीराज ने कहा कि जिस समय कविचंद हम लोगों से बिछुड कर बन में भूल गया तो वहा उसे एक सिद्ध ने वीरों के सिद्ध का मंत्र बतलाया जिसे कविचंद ने उसी समय अजमाया और वीरों से गाढे समय में मेरी सहायता करने का वरदान पाया। यह बात सुन कर सब सामन्तों ने हँस दिया और कहा कि महाराज आप किस फेर में पडे हैं। भाट, नट, चारण, आरत (अर्थात् दरिद्री) इन लोगों की बात का विश्वास ही क्या, किन्तु कैमास ने बडे गम्भीर भाव से कहा कि नहीं आप लोग ऐसा वचन कदापि न कहैं। कविचंद साधारण भाट नहीं है। उसे देवी जी ने साक्षात् वरदान दिया है। वह कोई अवतार है। श्रीमान से जो उसने कहा वह सर्वथा माननीय है। यह सुनकर कन्ह बोले कि वास्तव में कविचंद साथ से भटक तो अवश्य गया था, इधर उधर फिरता रहा होगा और उसने यह बात हँसी की तरह पर कही होगी। इस प्रकार भिन्न भिन्न बातें सुनकर पृथ्वीराज के मन में भी उक्त विषय पर सन्देह उत्पन्न हुआ और जब तक वे उक्त विषय के सत्यासत्य पर विचार करें कि कविचंद भी आ उपस्थित हुआ और प्रणाम करके अपने स्थान पर बैठ गया, पृथ्वीराज ने कहा कि कविचंद जो आपने मुझे वीरों के सिद्ध होने की कथा सुनाई थी सो अब इस समय मुझे और इस सामन्त मडली को वीरों के प्रत्यक्ष दर्शन करवाइए। आप श्रीदेवी जी से वरदान पाए हुए बड़े चतुर और बुद्धिमान पुरुष हो। पृथ्वीराज का ऐसा बचन सुनकर कविचंद ने उसी समय मंत्र जपना आरम्भ किया और तत्काल ही वीरों के आगमन से उस स्थान में महा भयंकर शब्द पूरित हो गया। इस शब्द को सुनकर सब डर गए, और बिचारने लगे कि हमने बिना प्रयोजन इन वीरों को वृथा कष्ट दिया है। इस घोर घमसान शब्द को सुनकर किल्ले से बँधे हुए दो मतवारे हाथी छूट गए और परस्पर लडने लगे, जिसके कारण महल में बडा खरभर पड गया। यह उपद्रव देख कर दरबारी लोग भी घबडाए और सामन्तो ने उनको बाँधने की यथा साध्य चेष्टा की किन्तु सब निष्फल हुई। तब कविचंद ने भैरव जी से उन हाथियों को बाँधने के लिये प्रार्थना की और भैरव ने इस कार्य्य के लिये देवी की आराधना की और तुरत ही देवी ने दोनों हाथियों के दाँत एक एक हाथ से पकड कर उसी समय उन्हें अलग कर दिया और उन्हें उनके पूर्व स्थान पर बाँध दिया। इसके पीछे पृथ्वीराज ने सब वीरों को विनीत भाव से प्रणाम किया और कविचंद ने प्रत्येक का प्रथक प्रथक नाम और गुण वर्णन करते

हुए राजा की सब वीरों से पहिचान कराई और तब कहा कि हे राजन् आपने इनको बिना प्रयोजन बुलाया है इसलिये अब इनके लिये ५२ घट मद्य और बावन बकरे मँगवाइए। राजा का हुक्म होते ही मद्य और बकरे आए। तब कविचद ने सिंदूर तेल पुष्प माला इत्यादि से भैरव सहित सब वीरों का पूजन किया। भैरव ने तृप्त होकर पृथ्वीराज से कहा कि मै प्रसन्न हू जो वर माँगना हो माँगो। वीरों के यह वचन सुन कर पृथ्वीराज ने विनय की कि कृपापूर्व्वक मुझे युद्ध में सहायता दिया कीजिए। तब भैरव जी ने एवमस्तु कह कर कविचद से कहा कि जब तुम पर कष्ट पड़े मुझे स्मरण करना। मै तत्काल ही तुम्हारी सहायता करूंगा किन्तु ध्यान रहे कि जहाँ देवी न होगी वहा मै न आऊंगा। यह कह कर बीर चले गए।

पृथ्वीराज और सब सभा के लोग कविचंद से अत्यन्त प्रसन्न हुए। पृथ्वीराज ने कविचंद से कहा कि यह मंत्र सब सामन्तों को बतला दो और कविचद ने भी वैसा ही किया। पृथ्वीराज ने प्रसन्न होकर कविचंद को २० गाँव और एक अति उत्तम घोड़ा इनाम में दिया।



असीम आनंद में मगन होकर नाना प्रकार के उमंग और संकल्प विकल्प में मस्त था। दिल्ली पहुँच कर पृथ्वीराज ने रात भर अपने उक्त आनंद की ही आलोचना की, प्रातःकाल शौचादि क्रिया से निश्चिंत हो सध्या वंदनादि कर नित्त नियमानुसार दस गोदान, दसभार स्वर्ण और अतौल अन का विद्वान विप्रों को दान कर उत्तमोत्तम नवीन वस्त्र धारण कर नाना प्रकार के रत्न जटित आभूषण और अस्त्र, शस्त्रों से सुसज्जित होकर वह राज सभा में पधारा। उधर से कन्ह, कैमास, पज्जून राय, पूरन राय, गोइन्दराज इत्यादि सामंत आ आ कर क्रमानुसार यथायोग्य अपने अपने स्थान पर बैठने लगे। उन समस्त शूर सामंतों में गद्दी पर बैठा हुआ पृथ्वीराज ऐसा शोभायमान होता था जैसे तारागण में चन्द्रमा शोभित होता है। बीरों के वश होने के समाचार से जो प्रसन्नता पृथ्वीराज के हृदय में थी कौमार अवस्था के कारण वह बार बार उसके चन्द्रानन पर झलक कर एक अलौकिक शोभा का भडार होती थी। इसे देख कर बुद्धिमान कैमास ताड़ गया और समय पाकर उसने हाथ जोडकर विनीत भाव से प्रार्थना की कि हे राजन आज आप का मुखारविंद अत्यंत प्रफुल्लित है जिससे ज्ञात होता है कि आपके हृदय कमल पर किसी प्रचण्ड दीप्तमान आनद रवि का प्रकाश हो रहा है और श्रीमान उसको प्रगट कर के हम सब को भी उस अलौकिक आनंद का भागी किया चाहते हैं, किंतु न जाने किस विशेष कारण वश आप स्पष्ट रूप से नहीं कहते। इस बात के सुनते ही पृथ्वीराज ने कहा कि जिस समय कविचंद हम लोगों से बिछुड कर बन में भूल गया तो वहा उसे एक सिद्ध ने बीरों के सिद्ध का मंत्र बतलाया जिसे कविचद ने उसी समय अजमाया और बीरो से गाढे समय में मेरी सहायता करने का वरदान पाया। यह बात सुन कर सब सामन्तों ने हँस दिया और कहा कि महाराज आप किस फेर मे पडे हैं। भाट, नट, चारण, आरत (अर्थात् दरिद्री) इन लोगों की बात का विश्वास ही क्या, किन्तु कैमास ने बडे गम्भीर भाव से कहा कि नहीं आप लोग ऐसा वचन कदापि न कहें। कविचंद साधारण भाट नहीं है। उसे देवी जी ने साक्षात् वरदान दिया है। वह कोई अवतार है। श्रीमान से जो उसने कहा वह सर्वथा माननीय है। यह सुनकर कन्ह बोले कि वास्तव में कविचंद साथ मे भटक तो अवश्य गया था, इधर उधर फिरता रहा होगा और उसने यह बात हँसी की तरह पर कही होगी। इस प्रकार भिन्न भिन्न बातें सुनकर पृथ्वीराज के मन में भी उक्त विषय पर सन्देह उत्पन्न हुआ और जब तक वे उक्त विषय के सत्यासत्य पर विचार करें कि कविचंद भी आ उपस्थित हुआ और प्रणाम करके अपने स्थान पर बैठ गया, पृथ्वीराज ने कहा कि कविचद जो आपने मुझे बीरों के सिद्ध होने की कथा सुनाई थी सो अब इस समय मुझे और इस सामन्त मडली को बीरों के प्रत्यक्ष दर्शन करवाइए। आप श्रीदेवी जी से वरदान पाए हुए बडे चतुर और बुद्धिमान पुरुष हो। पृथ्वीराज का ऐसा वचन सुनकर कविचद ने उसी समय मंत्र जपना आरम्भ किया और तत्काल ही बीरों के आगमन से उस स्थान में महा भयकर शब्द पूरित हो गया। इस शब्द को सुनकर सब डर गए, और विचारने लगे कि हमने विना प्रयोजन इन बीरों को वृथा कष्ट दिया है। इस घोर घमसान शब्द को सुनकर किल्ले से बँधे हुए दो मतवारे हाथी छूट गए और परस्पर लडने लगे, जिसके कारण महल में बडा खरभर पड गया। यह उपद्रव देख कर दरबारी लोग भी घबडाए और सामन्तो ने उनको बाँधने की यथा साध्य चेष्टा की किन्तु सब निष्फल हुई। तब कविच ने भैरव जी से उन हाथियों को बाँधने के लि प्रार्थना की और भैरव ने इस कार्य्य के लिये दे की आराधना की और तुरत ही देवी ने दोनों हा यो के दाँत एक एक हाथ से पकड कर उसी स उन्हें अलग कर दिया और उन्हें उनके पूर्व स्थ पर बाँध दिया। इसके पीछे पृथ्वीराज ने सब बी को विनीत भाव से प्रणाम किया और कविचद प्रत्येक का प्रथक प्रथक नाम और गुण वर्णन क

हुए राजा की सब वीरों से पहिचान कराई और तब कहा कि हे राजन् आपने इनको बिना प्रयोजन बुलाया है इसलिये अब इनके लिये ५२ घट मद्य और बावन बकरे मँगवाइए। राजा का हुक्म होते ही मद्य और बकरे आए। तब कविचद ने सिदूर तेल पुष्प माला इत्यादि से भैरव सहित सब वीरों का पूजन किया। भैरव ने तृप्त होकर पृथ्वीराज से कहा कि मै प्रसन्न हूं जो वर माँगना हो माँगो। वीरों के यह बचन सुन कर पृथ्वीराज ने विनय की कि कृपापूर्व्वक मुझे युद्ध में सहायता दिया कीजिए। तब भैरव जी ने एवमस्तु कह कर कविचद से कहा कि जब तुम पर कष्ट पडे मुझे स्मरण करना। मै तत्काल ही तुम्हारी सहायता करूंगा किन्तु ध्यान रहे कि जहाँ देवी न होगी वहा मै न आऊंगा। यह कह कर बीर चले गए।

पृथ्वीराज और सब सभा के लोग कविचंद से अत्यन्त प्रसन्न हुए। पृथ्वीराज ने कविचंद से कहा कि यह मंत्र सब सामन्तों को बतला दो और कविचद ने भी वैसा ही किया। पृथ्वीराज ने प्रसन्न होकर कविचंद को २० गाँव और एक अति उत्तम घोड़ा इनाम में दिया।



नाहर राय कथा।

(सातवाँ समय।)

संवत ११२६ (आनन्द) फालगुण वदि १४ की शिवरात्रि को समस्त दिन उपवास करने पश्चात रात्रि भर सविधान होमयुत शिवार्चन करके सोमेश्वर जी ने प्रातःकाल पञ्च गव्य पान करके विधिवत स्नान ध्यान कर उत्तम सिंहासन पर बैठ कर स्वर्ण-तुला करके दरिद्रो को दान दिया, और सब विद्याओ मे निपुण शास्त्रादि के जानने वाले विद्वान ब्राह्मणों को षटरस युत स्वच्छ और स्वादिष्ट भोजन करवाए और भी जो याचक और अतिथि आए सब का यथायोग्य सम्मान किया और तब शिवमन्दिर में जा कर आपने चतुर्दशी की पूजा करके शिव की स्तुति की। इसके पीछे वे निज प्रधान मत्री और बंधु बॉधवों सहित भोजन प्रसाद कर के दरबार मे आ बिराजे।

राजा सोमेश्वर जी ने एक अति उत्तम विद्वान दूत को नाना प्रकार से समझा बुझा कर एक पत्र देकर मडोवर के परिहार राजा नाहर राय *के पास पृथ्वीराज के व्याह के लिये भेजा।

एक समय जब कि पृथ्वीराज की अवस्था २ वर्ष की थी और जब कि ये अपने ननिहाल में राजा अनगपाल के पास गए थे तो नाहर राय दिल्ली आए और पृथ्वीराज को देख कर बहुत ही प्रसन्न हुए। इन्हों ने एक माला अपने हाथो पृथ्वीराज को पहिनाई और कहा कि जब इन की अवस्था १६ वर्ष की हो जायगी तो मै अपनी कन्या इन्हें व्याह दूगा, इसीलिये सोमेश्वर जी ने समय पाकर उक्त दूत भेजा।

किन्तु नाहर राय की इच्छा मे कुछ अतर पड़ गया था इसलिये जब सोमेश्वर जी का दूत उक्त पत्र लेकर नाहर राय के दरबार में पहुँचा तो उन्हो ने व्याह करने से साफ साफ यह कह कर नाहीं कर दी कि अजमेर के चौहानो का कुल हमारे योग्य नहीं है, व्याह प्रीति वैर समान कुल मे ही किया जाना चाहिए अतएव मुझे व्याह करना स्वीकार नहीं है। निदान दूत ने अजमेर आकर सभा मे बैठे हुए सोमेश्वर के सम्मुख नाहर राय का पत्र देकर समस्त वृत्तान्त यथातथ्य निवेदन कर दिया जिसके सुनते ही पृथ्वीराज की क्रोधाग्नि की असीम ज्वाला भभक उठी। सब सामन्तों मे भी न रहा गया और सब की सम्मति यही ठहरी कि नाहर राय पर चढाई कर के उसे जीत कर बलपूर्व्वक व्याह किया जाय। निदान इसी मत के अनुसार अजमेर के अधीन अन्य राजाओं को सहायता के लिये बुलाया गया। और अपनी चतुरंगिनी सेना सजकर पृथ्वीराज ने निज पिता वीर सोमेश्वर की आज्ञा पा अष्टमी रविवार को मडोवर पर चढ़ाई करने को कूच किया।

मडोवर राज्य के गुप्तदूतों ने जो राज्य की ओर से केवल समाचार देने ही के लिये हमेशा इधर उधर घूमा करते है आन कर नाहर राय से निवेदन किया कि हे महाराज अजमेर का राजकुमार पृथ्वीराज जो सात दिशाओ को विजय कर चुका, जिसका उदड पराक्रम ससार में विदित है अपनी विकट सेना को लिए हुए आपकी तरफ आ रहा है। उसकी सेना म १००० बलवान कुत्ते शूरवीरों के समान घी, दूध और मॉस भोजन करने वाले हैं जिससे उसने शिकार का बहाना किया है। नाहर राय दूत के मुँह से यह वचन सुन कर और पृथ्वीराज का प्रबल प्रताप स्मरण करके मन मे बहुत घबडाया और उसी समय अपने समस्त राज्यमंत्री और सेनापतियो को बुला कर उसने सब समाचार कह सुनाया और कहा कि यद्यपि प्रथम मुझ में और चौहान मे मित्रता थी किंतु अब कुछ और ही बात होगई है। इसलिये तुम लोग विचार कर कहो कि अब क्या करना चाहिए। राजा की बात सुन कर सब योधाओ ने उत्तर दिया कि गत विषय पर पश्चाताप करना व्यर्थ है, यदि पृथ्वीराज हम पर चढाई करने आता है तो हम भी उससे

* जिस समय का यह वर्णन है उस समय पट्टन में चालुक्य (सोलखी) भीमदेव आबू में सलख (जैत) पवाँर, मेवाड में समर सिंह और मडोवर मे नाहर राय पडिहार राज्य करते थे।

लडने को सन्नद्ध है और सब की यह सलाह ठहरी कि यदि पृथ्वीराज पट्टन तक आ जायगा तो युद्ध के कारण एक तो प्रजा की बड़ी हानि होगी और दूसरे उसका बल भी बढ़ जायगा इसलिये आगे ही चल कर युद्ध छेडना उचित है। ऐसा विचार कर नाहर राय भी अपनी सेना सज कर आगे बढा। यह खबर पा कर पृथ्वीराज ने अपने जोवन राय नामक एक सामन्त को नाहर राय का मुहासरा करने की आज्ञा दी। इस पर जोवन राय ने विनीत भाव से निवेदन किया कि लोहाना आजानबाहु ने पहिले से ही उसकी राह रोक रक्खी थी किन्तु वह उस स्थान को तिरछा देकर भाग गया है। निदान पृथ्वीराज और आगे बढा और जहा से नाहर राय भाग गया था सायकाल के समय वहा पर जा पहुँचा और नाहर राय की खोज मे प्रवृत्त हुआ, एक गुप्तचर ने आकर समाचार दिया कि नाहर राय तीन हजार घुड़सवार सेना सहित चालुक्य के प्रधान मत्री के यहा छिपा हुआ है। यह खबर पाकर पृथ्वीराज अपनी चतुरंगिनी सेना सहित नदी पार कर के नाहर राय के सिर पर जा पहुँचा। जब नाहर राय को यह खबर लगी कि पृथ्वीराज नदी पार कर चुका है तो उसने मीना लोगो के पहाड़ी सरदार पर्व्वत राय को बुला कर आज्ञा दी कि तुम घाटी का रास्ता रोक कर पृथ्वीराज से युद्ध करो। निदान वीर पर्व्वत राय भी स्वामिकार्य्य करने अथवा देश रक्षा करने को ही अपना मूल कर्तव्य मान कर चार हजार धनुष बाण धारी मीना और भील लोगो को लेकर घाटी के तंग रास्ते में आ डटा। पर्व्वत राय के रास्ता रोकने की खबर जब पृथ्वीराज को लगी तो उन्हो ने कन्ह राय को पर्व्वत राय का मुकाबिला करने की आज्ञा दी। कन्ह राय हुक्म पाते ही अपनी छोटी सी सेना लेकर उन कठोर भीलों के समूह पर इस प्रकार से टूट पडा जैसे मतवाले हाथियों पर सिह टूटे। उधर से तीरो की बौछार ने कन्ह की समस्त सेना को आच्छादित कर लिया किन्तु वीर कन्ह तनिक भी न हटा और पर्व्वत राय से जा भिडा। बहुत समय तक दोनो मे द्वंद युद्ध होता रहा। अन्त मे कन्ह राय ने पर्व्वत राय को मार डाला और भीलो की सेना को भगा दिया। वीर पर्व्वत राय की मृत्यु का सवाद पाकर नाहर राय स्वयं कन्ह पर चढ दौडा। उधर से पृथ्वीराज भी लोहाना चामुण्ड राय इत्यादि योधाओं को लेकर कन्ह की पीठ पर आ पहुँचा और घोर घमासान लोहा झरने लगा। हाथी हाथी से, सवार सवार से, पैदल पैदल से जुट गए। सरदार सरदारो का द्वद युद्ध होने लगा और नाहर राय और पृथ्वीराज का युद्ध छिड़ा। बडी देर तक दोनो उस वनप्रान्त मे सिंह के समान भिडते रहे। अन्त में पृथ्वीराज जी ने नाहरराय के घोडे को मार डाला जिससे वह जमीन पर लवा लोट हो गया किन्तु पृथ्वीराज ने उस पर वार न किया। नाहर राय को गिरते देखकर कनक राय उसका चचेरा भाई पृथ्वीराज जी के साम्हने आया। निदान उसके घोड़े को भी पृथ्वीराज ने दो टूक किया। इस कौतुक से दोनो ओर की सेनाओ मे बहुत जोश बढ गया और दोनो ओर के वीर योद्धा गण कुपित होकर वार करने लगे। वह दो पहाड़ो के बीच की खोह रक्त का समुद्र हो गई। पाच दिन घमासान युद्ध रहा। पाचवें दिन नाहर राय भाग निकला। पृथ्वीराज ने पुन: उसका पीछा करना उचित न जानकर पट्टनपुर पर अपना दखल किया। दशमी के दिन पृथ्वीराज का पट्टन मे राज्याभिषेक हुआ।

नाहर राय लडाई से भाग कर अपनी ही सीमा के गिरनार नामक एक ग्राम में जा रहा। वहा पर नगर के सब सभ्य महाजन तथा अन्य माननीय कर्म्मचारियों से मत्र करके पृथ्वीराज जी को अपनी कन्या व्याह देना स्वीकार करके प्रोहित द्वारा पृथ्वीराज के पास उसने टीका (लग्न) भेजा। पृथ्वीराज ने भी उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया और बड़े गाजे वाजे से अपनी सेना को सज कर वह पचमी रविवार को गिरनार में जा पहुचा। जिस समय पृथ्वीराज की वारात गिरनार मे पहुँची उस समय नाना प्रकार

के साज बाज से सुसज्जित वह नगर साचात कैलाश सा प्रतीत होता था। नगर में प्रवेश करते ही पृथ्वीराज ने ग्राम्यदेवताओं को दण्डवत किया। नाहर राय ने भी बची खुची सेना सज कर बारात की अगवानी करके बारात को डेरा दिया और बड़े उत्साह से अपनी कन्या का विवाह पृथ्वीराज के साथ कर दिया। कन्यादान करके नाहर राय ने विनीत भाव से पृथ्वीराज जी से विनय की कि वीरवर चहुआन आप मुझ से सब प्रकार बड़े है इसलिये मै कुछ भी नहीं दे सकता केवल यह कन्या अर्पण करते हुए अपना सिर आप की चरणसेवा में सदा के लिये अर्पण करता हूं। इसके उत्तर में पृथ्वीराज ने भी कोमल शब्दो से नाहर राय का चित्त शान्त किया। दोनो श्वसुर दमाद में क्षण क्षण प्रेम बढ़ने लगा। बड़े उत्साह से दोनो ओर के प्रधान और साधारण पुरुषो ने मिलकर आनन्द मनाया। दो दिन पीछे पृथ्वीराज नाहर राय की कन्या जभावती सहित ११ डोले साथ लेकर सम्हर को लौट आया।



मेवाती मुगल कथा।

[आठवाँ समय]

नीति धर्म्मयुक्त राज्य करते हुए सोमेश्वर ने मंडोवर के अभिमानी पडिहार राजा पर चढाई करके उसे जीत लिया और मडोवर पर अपना अधिकार कर लिया और शहर, गढमडोवर की लूट मे जो सपत्ति हाथ लगी वह सब सूर वीर योद्धाओं को बॉट दी और आप स्वय वीरता से अपने राज्य की रक्षा करता हुआ दसो दिशाओ मे अपने नीति वैभव और कीर्ति का प्रकाश करते हुए अजमेर का स्वच्छन्द राज्य करने लगा। राजा सोमेश्वर घमडी शत्रुओं का हृदय दहलाने के लिये और दुष्टों से प्रजा की रक्षा करने के लिये अपनी विकराल सेना को सदा तैय्यार रखता, राज्यकर्म्मचारियों का भली भॉति मान करता किन्तु इस बात का भी ध्यान रखता कि वे स्वार्थवश कहीं प्रजा को कष्ट तो नहीं देते, कोष की वृद्धि का उपाय करता किन्तु प्रजा को दुःख न देता था, वह सदा अपनी प्रजा के हित के लिये व्यग्र रहता। उस समय का जो गुणज्ञ पुरुष दरबार में आता यथायोग्य सबका मान करता—राजा समस्त दिन राज्यकार्य्य करके रात्रि का समय नाना प्रकार के उत्तमोत्तम गान, वाद्य और आमोद प्रमोद में व्यतीत करता था।

एक दिन सोमेश्वर ने एक चतुर दूत को एक पत्र देकर मेवात के मुगल राजा मुद्गल राय के पास भेजा और उससे जबानी कहला भेजा कि जो मुगलराज सुखपूर्व्वक राज्य किया चाहता है तो हमको वार्षिक कर दिया करे जैसे कि हमारे अधीन के अन्यान्य राजा लोग देते है और जो मेरी आज्ञा को भग करेगा तो मै उस पर चढाई करूगा। निदान उस चतुर दूत ने मेवात में जाकर सोमेश्वर जी के आदेश को यथातथ्य वर्णन कर सुनाया। और वहा से जो उत्तर मिला वह सोमेश्वर जी के सम्मुख उपस्थित किया। जिस समय सोमेश्वर के प्रधान मुशी प्रमान राय ने मुगल राज का यह पत्र पढ कर सुनाया कि मैं कर देने को राजी नही युद्ध करने को सन्नद्ध हू तो चहुआन का मुख लाल होगया, ऑखों से आग की चिनगारियॉ निकलने लगी, ओठ और दॉत फडकने लगे और उसी समय प्रधान राज्यकर्म्मचारियों और सेनानायको को बुला कर उन्होंने आज्ञा दी कि मै मेवात पर चढाई करूगा इसकी तैयारी की जाय। उधर ज्योतिषियों को बुला कर शुभ मुहूर्त निश्चय करवाया गया अतएव ज्योतिषियो ने भृगु की दशा मे त्रयोदशी पुष्य नक्षत्र का प्रस्थान नियत किया। इधर इतना अवकाश पाकर शूर वीर भी अपनी अपनी अनी कनी सहित तैयार हो बैठे।

सोमेश्वर जी ने पृथ्वीराज को अजमेर की गढ़ रक्षा पर छोड कर उक्त नियमित तिथि को आधी रात के समय मेवात की ओर प्रस्थान किया। नगर से निकलते ही नाना प्रकार के शकुन हुए। सोमेश्वर जी ने मेवात के निकट पहुँच कर बाहर अपनी सरहद में डेरा डाल दिया और एक पत्र सहित पुनः दूत को मुद्गल राय के पास भेजा कि वह अब भी बात मान लेवे वृथा सहस्रों मनुष्यों के मृत्यु का कारण न बने—इस पत्र का उत्तर मुद्गल राय ने इस प्रकार से दिया कि चहुआन आप पिता पुत्र दोनों बलवान है आपको अपने पराक्रम का गर्व भी है इसीसे आपने यहां आने का परिश्रम किया है किन्तु अब क्षमा करने का कष्ट न उठाइए आप पिता पुत्र दोनो से जो बन पडे कीजिए मै भी आपका सत्कार करने को तैय्यार हू। इस पत्र को पाकर सोमेश्वर के हृदय पर शोक मोह और भय का विचित्र प्रभाव पडा किन्तु क्षण मात्र के ही लिये, उन्होंने सम्हल कर वह पत्र ज्यों का त्यों पृथ्वीराज के पास अजमेर भेज दिया और एक पत्र अपनी ओर से इस प्रकार लिख भेजा कि शत्रु ने सदर्प से जो उत्तर दिया है सो मैं तुम्हारे पास भेजता हू तुम राजनीति में स्वय चतुर पुरुषार्थी बलवान हो अब इस समय जैसा आप उचित जानो करो। मैं सबेरे ही चढ़ाई करके लडाई छेडूगा।

सोमेश्वर जी का उपरोक्त पत्र पाकर पृथ्वीराज क्रोध से लाल हो गया और बिचारने लगा कि यह पिता को क्या सूझी कि यहां से चढ़ कर लडाई करने गए और वहाँ मत्र करने लगे। भला शत्रु से सन्धि कैसी? वह युद्ध में पराजित हुए बिना कब सेवा स्वीकार करेगा और उसी समय वे अपने वीर सामंतों को लेकर मेवात को चल दिए और आधी रात को सोमेश्वर के शिविर में जा पहुँचे। वहां देखते क्या हैं कि सोमेश्वर पडे सो रहे है। पृथ्वीराज ने पिता से कुछ न पूछा और शत्रु की सेना की गुप्त रीति से जॉंच करके एक बारगी उस पर धावा कर दिया पृथ्वीराज अपने थोडे से सामन्तो सहित मेवातियों पर इस प्रकार टूटा जैसे हाथियों पर सिंह टूटे। मुदगल राय और पृथ्वीराज का युद्ध होने लगा और उसके सामन्त लोग मेवाती अन्य वीरो से भिड पडे। सिंहवत बीर कन्ह के साम्हने जो पडता था उसे वह मूली के समान काटता जाता था। कन्ह ने क्षण मात्र में सैकड़ों मुगल सेनापतियों का नाश कर दिया। कैमास और मुदगल राय के बड़े पुत्र सेनानायक बाजीदखा की बरनी हुई। कूरभराय से रामराजा का द्वंद युद्ध छिडा। पृथ्वीराज को वीरता से युद्ध करता हुआ देखकर उसकी सेना का बल दूना हो गया। उधर से मुदगल सेना भी बडे जोर से लड रही थी। क्षण मात्र मे लोहू की नदी बह निकली। सहस्रों हाथी, घोडे, ऊँट और पैदल सिपाहियो के मृतक और घायल शवों के ढेर लग गए। वह रणभूमि जो युद्धारम्भ के समय कडखैता के कडखे और नाना प्रकार के वीर रसोत्पादक वाद्यो की ध्वनि से परिपूर्ण थी अब घायलों के रुदन और करुणामय शब्दो से प्रतिध्वनित हो उठी। घोर घमासान युद्ध के पश्चात मुगल सेना भाग उठी। मुदगल राय का बडा पुत्र बाजीदखा तथा और भी बडे बडे सरदार मारे गए। मुदगल राय स्वयं पृथ्वीराज का बंदी हुआ। इस प्रकार मेवात को विजय करके अपने सब मृतक वीरों की दाह क्रिया करवाके और घायलों को उठवा कर उनकी चिकित्सा का प्रबन्ध करके और उन्हें अपने साथ लेकर पृथ्वीराज अजमेर को लौट आया।



हुसेन कथा।

[नवां समय।]

"इस समय में कविचंद ने पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन के बैर होने का मूल कारण वर्णन किया है।"

शहाबुद्दीन महम्मद गोरी का एक चचेरा भाई मीर हुसेन नाम से था जोकि बल बुद्धि विद्या और नीति में शहाबुद्दीन के सब सर्दारो से बढ कर था। उक्त सद्गुणों से परिपूर्ण होते हुए वह सौन्दर्य्य मे भी अद्वितीय और नाटय और गान विद्या मे भी परम प्रवीण था। शहाबुद्दीन के दरबार मे चित्ररेखा नामक एक वेश्या भी थी जिसकी वय १५ वर्ष की थी। ईश्वर ने उसे जैसा जगद्विमोहन अद्वितीय रूप दिया था उसी प्रकार वीणा बजाने और गान विद्या में भी उस समय में वह एकही थी। शहाबुद्दीन उस वेश्या के हावभाव कटाक्ष और गुणों पर ऐसा मोहित था कि अन्तरग अवस्था मे उसका अनुचर या दास हो रहा था। वह वेश्या ही उस यवन राज का इष्ट थी किन्तु चित्ररेखा की शाह की ओर ऐसी प्रीति न थी क्योंकि गुणी पुरुष प्रायः गुणग्राहक होते है, गुण पर अपना तन मन धन न्यौछावर करते है और शाह मे एक राज्यशक्ति के अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु ऐसी न थी कि जिसपर चित्ररेखा का मन स्थिर हो, किन्तु उक्त मीर हुसेन चित्ररेखा को चाहते थे वे सब गुणसम्पन्न थे इसीसे चित्ररेखा उन पर आसक्त हो गई। वह भी चित्ररेखा के प्रेमपाश में आप उलझ गए। यद्यपि इस प्रीति को गुप्त रखने की दोनो ने यथासाध्य चेष्टा की किन्तु यह असम्भव था। गुप्त चरों द्वारा यह भेद शहाबुद्दीन पर प्रगट हो गया इसलिये उसने मीर हुसेन से कहला भेजा कि तुम चित्ररेखा से कोई सम्बन्ध न रखो, इसमें तुम्हारा भला नहीं है, यदि तुम अपना हठ न छोडोगे तो तुमको प्राणदण्ड दिया जायगा, अन्यथा चित्ररेखा का ध्यान छोडकर हमारे देश से निकल जाओ। इस पर मीर हुसेन अपने सपरिवार चित्ररेखा को साथ लेकर गजनी से बाहर हुआ और सीधा सम्हर में आ पहुँचा। उसे वहॉ मालूम हुआ कि पृथ्वीराज शिकार खेलने गया है और उसके डेरे नागौर के पास खट्टूपुर में पडे हैं। इसलिये वह भी वही चला गया और जगल मे डेरा डाल कर उसने अपने आने की खबर पृथ्वीराज के पास भेजी। वहा से पृथ्वीराज ने अपने एक सुन्दर दास नामक सरदार को मीर हुसेन के पास भेजा और उधर कैमास, चदपुडीर, पज्जूनराय, गोइन्दराय, इत्यादि मत्रियों को बुलाकर मीर हुसेन के आने का समाचार कहा और कहा कि मै म्लेच्छ को तो दरबार मे रख नहीं सकता, उधर शरणागत को भी त्यागना वीर धर्म्म के विरुद्ध है अब क्या करना उचित है सो मत्र करो। राजा की ऐसी वाणी सुनकर कविचद ने प्रार्थना की कि पृथ्वीनाथ जो वह आप की शरण मे आया है तो उसे रखिए। समर्थ की शोभा दीन की रक्षा करने मे ही है। तब तक सुन्दर दास भी आ पहुँचा और सब ने पूछा कि कहो मीर के यहॉ आने का कारण क्या है। तब सुन्दर दास ने चित्ररेखा और मीर की परस्पर प्रीति और शाह के उस पर कुपित होने का वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि मीर हुसेन आप की शरण में स्थान पाने का प्रार्थी है। इसपर पृथ्वीराज ने अपने एक सामत द्वारा मीर को बुला भेजा और बडी प्रसन्नता से वे उससे मिले। मीर को साथ ले कर पृथ्वीराज जब नागौर में पहुँचे तो अपने मुशी धर्म्मायन कायस्थ को आज्ञा दी कि मीर को दरबार में दाहिनी बैठक दी जाय और वहॉ पर हुसेन का सत्कार किया और हुसेन ने पॉच तरकस, एक खुरासानी कमान, एक सिंहलद्वीपी मतवाला हाथी, पॉच एराकी घोडे और एक अमूल्य हीरा और दो माणिक राजा को नजर दिए, जिन्हें राजा ने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया और हासी और हिसार के परगने उसे जागीर में दिए और नीतराय कोतवाल का मकान सपरिवार मीर के रहने को दिया।

शहाबुद्दीन के भेजे हुए चार दूत जो गजनी से

मीर हुसेन के पीछे लगे आए थे पृथ्वीराज का मीर प्रति सब व्यवहार देख भाल कर गजनी गए और शहाबुद्दीन से यथातथ्य सब समाचार उन्होंने कह सुनाया जिसे सुनकर शहाबुद्दीन ने तातार खा, सजाब खा और अरब खा को बुला कर दूत कथित सब समाचार कह सुनाया और अरब खा को आज्ञा दी कि तुम खुद नागोर को जाओ और जो हुसेन चित्ररेखा को देना स्वीकार करे तो मीर हुसेन समेत उसे लिवा लाओ, मैं उसे क्षमा करूंगा और जो वह इस बात मे सहमत न हो तो पृथ्वीराज से कहना कि तुम मेरे शत्रु को न रक्खो। इसे अपने राज्य से निकाल दो और इसी मजमून का एक पत्र भी अजीज खा की सलाह से पृथ्वीराज के नाम लिख दिया। उधर तो अरब खा को २०० सवारों के साथ उसने नागौर को रवाना किया इधर वह अपनी फौज की तय्यारी करने लगा।

अरब खा गजनी से चलकर एक महीने में नागौर पहुँचा और पहिले हुसेन खा से मिला और साम, दाम, दण्ड, भेद सब प्रकार से हुसेन खा को समझाया कि वह चित्ररेखा को दे दे, परन्तु उसने एक न सुनी। तब अरब खा ने निराश होकर पृथ्वीराज के यहा खबर की। तब पृथ्वीराज ने भी अपने सूर सामन्तों का दरबार जोड कर अरब खा को बुलाया और सादर शाह का कुशल प्रश्न पूछ कर उसके आने का कारण पूछा। तब अरब खा ने शहाबुद्दीन का आदेश यथावत कह सुनाया जिसे सुनते ही क्रोध से पृथ्वीराज का मुख लाल हो गया, भौहें चढ़ गईं और ओठ फरकने लगे। यह देखकर कैमास ने डपट कर कहा कि शाह आर्य्य लोगों के श्रेष्ठ धर्म्म से अनभिज्ञ है इसी से उसने इस प्रकार कहला भेजा है। हुसेन चहुआन की शरण में है, शरणागत का त्यागना क्षत्रियों का धर्म नहीं है। अस्तु कन्ह चहुआन, सूरसिंह, गोयन्दराज, चन्द पुडीर आदि सामन्त भी क्रोध में आकर बोल उठे कि हम लोग शाह का गर्व चूर्ण करने को तय्यार हैं। मीर हुसेन नहीं दिया जायगा, अपने कर्तव्य के विपरीत प्रभाव देख कर अपने और शाह के मानभंग की आशंका करके अरब खा दरबार से उठकर चल दिया और उसी समय गजनी को चला आया।

अरब खा ने शहाबुद्दीन के पास जाकर विधिवत निज बीती कह सुनाई जिसे सुनकर शहाबुद्दीन ने ततार खा, अरब खा, मीर जमाम मीर कमाम, खुरासान खा, रुहन खा, महन खा, रुस्तमखा, हाजी खा, गाजी खा, जम्मन खा, गजनी खा, मुहब्बत खा, मीर खा इत्यादि सरदारों को तुरत बुलवा भेजा और अरब खा की बातें विकल ज्यों की त्यों कह सुनाई। इसपर ततार खा ने मत्र किया कि जो उसे इतना अभिमान है कि उसने आप का अपमा[न] किया तो मेरा मत यही है कि सेना सज कर उ[स] पर चढाई की जाय और उसकी सेना और प्रजा क[ो] नष्ट करके ही उसका गर्व्व धूल में मिलाया जाय तब खुरासान खा बोला कि पहिले पृथ्वीराज के ब[ल] पराक्रम की जाच भी तो कर लो तब यह इच्छ[ा] करना। यह सुन कर अरब खा बोला कि वास्तव [मे] पृथ्वीराज बडा बलवान है। आपने उसकी प्रब[ल] सेना और बुद्धिमान मत्रियों को नहीं देखा है, इसी से यह कहते हो। यह सुन कर बादशाह ने पूछ[ा] कि अच्छा पृथ्वीराज के पराक्रम का हाल कहो तब अरब खा बोला कि पृथ्वीराज के मत्री लोग सदैव उसे उत्तम सलाह देते हैं। क्रम से २५, २५ सामन्त सदैव पृथ्वीराज की मुसाहिबी में हाजिर रहते है और वे सौ सामत ऐसे है कि एक एक सामत एक हजार सिपाहियों का साम्हना करने वाला है वे एक पल में दस सिपाहियों का सहार सहज में कर सकते है। यदि उनका सर कट जावे तो धड़ युद्ध करता है, रक्त मे लत्थ पत्थ होकर वह रुड पुनः पुनः उठता और वार करता है। वे लोग तलवार की धार देख कर ही आनन्द मे मग्न हो जाते है और यही शूरवीर पुरुषों का लक्षण है। इस व्याख्या को सुन कर तातार खा आदि हँस पड़े। तिस पर अरब खा बोला कि आप हँसते क्या है उन अतुल बलवान योद्धाओं को आपने देखा नहीं। यद्यपि आप

के दरबार में बड़े बड़े योधा हैं पर उनके समान एक भी नहीं है।

तब तो शहाबुद्दीन ने क्रोध मे आकर ततार खां को लडाई के लिये फौज तैयार करने की आज्ञा दी और वह आप अदर चला गया। उस रात्रि को रात भर शहाबुद्दीन के मन में चहुआन के बैर ने बस कर नींद न आने दी। उसे कभी शेख और कभी पृथ्वीराज आँखों के साम्हने देख पडता था। प्रातःकाल होते ही शहाबुद्दीन ने बडी भारी सेना सज कर हिन्दुस्तान की तरफ चलने की तैय्यारी की। ज्यों ही शाह सवार हुआ कि बहुत से अपशकुन होने लगे, जिन्हे देख कर अरब खां ने कहा कि अपशकुन हो रहे है इससे आज की तैय्यारी बद कर दी जाय। यह सुन कर सुलतान ने कहा कि तूं कायर है और अपने प्राणों के भय से ऐसा कहता है। यह कह कर उसने कूच कर दिया। जब सुलतान सिंधु नदी तक पहुँच गया तो मीर हुसेन के दूतों ने सुलतान की चढाई की खबर मीर से की। इधर पृथ्वीराज के कान तक भी यह खबर जा पहुँची। तब पृथ्वीराज ने अपने मंत्री कैमास और कन्ह, चन्द, पुंडीरादि सामन्तों को बुला कर उक्त सवाद की सूचना दी। निदान सब की सलाह यही ठहरी कि वह युद्ध द्वारा ही पराजित किया जाय और उसी समय फौज तय्यार की गई। सब सामत और चतुरंगिनी सेना महल के दरवाजे आ उपस्थित हुई। ज्योंही पृथ्वीराज घोडे पर सवार हुए गुरुराम राजप्रोहित ने आ कर राजा को तिलक किया और राजा ने पुरष्कार में बहुत सा दान दिया। ईश्वर का स्मरण करता हुआ ज्योंही पृथ्वीराज ससैन्य आगे बढा कि और भी अनेक प्रकार के शुभ शकुन हुए–ज्योंही पृथ्वीराज की सेना दिल्ली से बाहर हुई कि मीर हुसेन भी एक हजार कट्टर सिपाहियो सहित पृथ्वीराज के साथ हो लिया। दस कोस चलने पर फौज का पडाव डाल दिया गया।

इधर शहाबुद्दीन के गुप्तचरों ने उसे भी पृथ्वीराज की चढाई की खबर कर दी, जिसे सुनते ही उसने अपनी फौज तैय्यार की और वह बड़े सज धज से आगे बढ़ा और दो दिन की राह एक दिन में तै कर के सारुडपुर मे उसने पडाव डाला। इसका समाचार कैमास को एक दूत ने एक घडी रात रहे आकर कहा। कैमास ने तुरत अपने शिविर से निकल कर फौज की तैय्यारी करवाई और आप राजा के पास जाकर शाह के आगे बढ़ने की उसने खबर दी। इधर तो सब सेन पहिले से ही युद्ध पिपासाकुलित होकर तैयार खड़ी थी। पृथ्वीराज स्नानध्यानादि से निश्चित होकर शालिग्राम की शिला और तुलसी की माला गले में धारण कर धनुष बाण तलवार नेजा इत्यादि अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हो घोड़े पर सवार हुआ और उसने "जै हर" शब्द मुख से उच्चारण कर के घोड़े की गरदन ठोंकी जिसके उत्तर में जयकार के चिन्ह में घोड़े ने भी गरदन उठाई और वह पृथ्वी को खोदता हुआ फड़क उठा। पृथ्वीराज मीर हुसेन के डेरे में गया जो पहिले ही से सन्नद्ध बैठा था। राजा का आगमन सुनते ही घोड़े पर सवार होकर "रहमान" का स्मरण करता हुआ वह पृथ्वीराज के पास आया और उसने झुक कर सलाम किया और राजा ने सादर उसका उत्तर दिया और तब मीर हुसेन की और अपनी सब सेना सहित पृथ्वीराज आगे बढ़ा।

जब शहाबुद्दीन के दूतों ने उसे जाकर खबर दी कि पृथ्वीराज की सेना एक योजन पर आगई है तब शहाबुद्दीन ने फौज तयार कर के पॉच टुकड़ों में विभक्त कर के व्यूहबद्ध की। दक्षिण पक्ष मे तत्तार खा, बाए पक्ष में खुरासान खां, हाजी खां, गाजी खा और राजी खा को, हरावल में मीर जमाम खां; मीर कमाम खा, और महब्बत खा को पिष्ट मे तथा रुस्तम खा को मध्य में रक्खा। अनेक प्रकार के रण वाद्यों को बजाती, रग बिरगे निशान उड़ाती हुई सब सेना सहित शहाबुद्दीन सारुडा के बॉई ओर आन जमा। तब तक पृथ्वीराज भी देखा देखी के वार में पहुँच गए और शहाबुद्दीन की फौज को देख कर पृथ्वीराज ने मीर हुसेन की तरफ देखा, निदान मीर हुसन

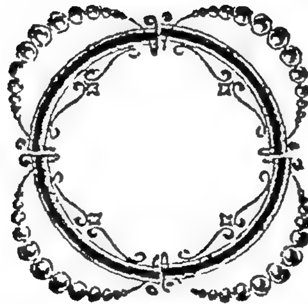
ने भी अपनी अनी सहित आगे बढ़ कर पृथ्वीराज को सलाम किया और कहा " कि हे राजन् आपने क्षत्री धर्म्म की निर्वाह कर के मेरी रक्षा की है सो आज मे भी शहाबुद्दीन का शिर काट कर श्रीमान् के चरणों मे समर्पण करता हूं। इसके उत्तर मे पृथ्वीराज ने कहा कि वास्तव मे ऐसा ही होगा मे भी आज तुम को गजनी के तख्त पर बैठालूगा। यह सुन कर मीर ने पृथ्वीराज को पुनः सलाम किया और उसने बॉई तरफ अपनी फौज सम्हाल कर दुरुस्त की। पृथ्वीराज ने जद्दव राय, महनसी, बडरामगूजर, मडलीक, जहिराज आदि सामन्तों को सेना सहित मीर हुसेन की सहायता करने की आज्ञा दी। दाहिनी ओर कैमास, चामुंड राय, चन्द्रसेन चद पुडिर, जुझ्भ सिंह पम्मार, गहलौत, तुवरराय परिहार आदि सामन्त४०००सेना सहित व्यूहबद्ध हुए, बीच में पृथ्वीराज और गोइन्दराय; देवराज, कन्ह, प्रसग षींची, कनकू बडगुज्जर आदि अपनी अपनी सेना सहित हरावल अर्थात् साम्हने की पक्ति मे। पृथ्वीराज की सेना इस प्रकार व्यूहबद्ध होकर आगे बढ़ी और बसि हजार सेना के साथ तातार खां से चार हजार सेना सहित मीर हुसेन का साम्हना हुआ। दोनो फौजों के मेल में आते ही दोनो फौजों के घुडसवारों ने घोडे छोड़ दिए और पैदल हो कर मुकाबिला किया। मीर हुसेन के साथ १००० और तातार खा के साथ ७००० सवार थे। मुठभेड़ होते ही दोनों ओर के बीर सिपाही अपने अपने स्वामियों का हित चाहते हुए हथियार चलाने लगे। जीवन का मोह छोड कर बीर सिपाहियो ने ऐसा युद्ध किया कि क्षण मात्र में लोथ पर लोथ अटे गई और रक्त की नदी बह निकली। अन्त में ततार खा की फौज भाग उठी और उसकी ढाल(निसान) गिर पडी। पाच हजार वीरो के साथ ततार खा मारा गया और तीन सौ मुसलमान और दो सौ हिन्दुओं के साथ मीर हुसेन काम आया। इस युद्ध मे तीस कमध उठे। तब अपनी फौज को खुरासान खा ने आगे बढ़ाया और उससे और चामुड राय से साम्हना हुआ। जब युद्ध होते होते दो पहर हो गया तब वह सरदारो के सहित घोडे पर से उतरा और इधर मे चामुड राय ने भी घोडा छोड दिया किन्तु मिलान होते ही चामुंड राय ने खुरासान का काम तमाम किया और खुरासान खा की फौज भाग कर बादशाह की सेना मे जा मिली। बादशाह का दाहिना हाथ तो टूट ही चुका था। निदान खुरासान खा के मरते ही पृथ्वीराज की फौज ने बडे क्रोध से उमग मे आकर आक्रमण किया। यद्यपि शिकस्त खाने से शहाबुद्दीन की सेना का मन उत्साहहीन हो गया था किन्तु अपने स्वामी की उत्तेजना मे वे लोग भी डट गए और दोनों ओर से बडा घोर घमासान लोहा झरा। मुठभेड़ होते ही पृथ्वीराज का नामी सरदार मडलीक नामक खीची मारा गया। मडलीक के कमध ने मुसलमानों के नामी नामी ४० बीरों को मारा। जब उस सेना के बडे बड़े अमीर उमराव और सेनापति काम आए तो फौज की भी हिम्मत कम हो गई और वह भाग उठी। इधर से पृथ्वीराज की फौज ने पीछा किया। मुसलमान भागते जाते थे और चहुआन की फौज उन्हें मारती हुई आगे बढती जाती थी। शहाबुद्दीन जो अपनी सेना को हिम्मत दिलाने के लिये डटा हुआ था चहुआन के सामन्तो से घेर लिया गया। चामुड राय ने साम्हने से जाकर ललकारा। चन्द्रसेन और पुंडीर ने बॉई तरफ से और कैमास ने दाहिनी तरफ से आकर घेर लिया। और चामुड राय और पुडीर ने दोनो तरफ से आनकर बादशाह के दोनों हाथ पकड़ लिए।

सूर्य्योदय से एक घडी ५ पल पर लडाई आरम्भ हुई और चार घड़ी दिन रहे शहाबुद्दीन पकड गया। सुलतान की तरफ से २० हजार सैनिक न्याजी खा, गाजी खा, मीर खा, मान खा, कम्मान खा आदि सरदार और सात हजार हाथी घोडे इत्यादि मारे गए। पृथ्वीराज के कुल १३०० सिपाही और मडलीक खीची, टीकम राय, रामराव पमार ये सरदार मारे गए। इस युद्ध मे ४० कमध खडे हुए। इस प्रकार विजय प्राप्त कर और शहाबुद्दीन को कैद करके

पृथ्वीराज आनन्द मनाता हुआ डेरे पर आया और उसने रण क्षेत्र मे से मीर हुसेन का शव खोज किए जाने की आज्ञा दी। जब चित्ररेखा को यह ज्ञात हुआ कि उसका सब गुणआगर नवनागर बीर प्रेमपात्र इस अनित्य शरीर को रणक्षेत्र मे त्याग कर सूक्ष्म शरीर से वैकुंठ का आनंद ले रहा है किन्तु वहा भी उसे मेरे मिलने की अभिलाषा कदापि लगी हुई है, तो उसने तुरन्त पृथ्वीराज के सम्मुख आकर प्रणाम किया और वह ईश्वर स्मरण करती हुई मीर हुसेन के शव के साथ जीवित कब्र में गड गई।

पृथ्वीराज ने ५ दिन पर्य्यन्त शहाबुद्दीन को अपने एक विशेष मेहमान की तरह बड़े प्रेम से रक्खा। पाचवे दिन मीर हुसेन के पुत्र को उसके हवाले कर दिया और तीन वार सलाम करवा कर और यह सौगंद लेकर कि अब वह पुनः हिन्दुओ पर चढ़ाई करने की चेष्टा न करेगा उसे छोड़ दिया।

इस प्रकार शहाबुद्दीन गजनी को लौट गया। वहां के अमीर उमरावों ने अपने बादशाह के जीवित कैद से छूट आने की बधाई मे बड़े बडे उत्सव किए और खैरात बाटी और शहर के सब पीर पठानो को चादरे चढ़ाई और उनकी पूजा की।



आखेटक चूक वर्णन।

[दसवां समय]

शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज की कैद से छूट कर आए हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया किन्तु शहाबुद्दीन को पल भर भी कल नहीं पड़ती थी। उसे उठते बैठते सोते जागते पृथ्वीराज से अपने अपमान का बदला लेने की धुन सवार थी। दिल्ली से लौट कर गजनी पहुँचते ही उसने हुसेन के लडके को कैद कर दिया और वह एक महीने पाच दिन में वहा से किसी प्रकार निकल कर फिर पृथ्वीराज के पास आ गया और पृथ्वीराज ने भी उसे सादर स्थान दिया। इससे शहाबुद्दीन की कौंडी और भी जल रही थीं। एक दिन शहाबुद्दीन के एक गुप्तचर ने समाचार दिया कि पृथ्वीराज नागौर के खट्टू वन में शिकार खेलने के लिये आने वाला है। यह समाचार उसे नीतिराव नामक एक चत्री से मिला था जो कि प्रायः नित्य प्रति दिल्ली के समाचार गज़नी को भेजा करता था। उक्त समाचार पाकर शहाबुद्दीन का कलेजा फूल उठा। उसने तुरंत ही हाजी खां, गप्पर शाह, महम्मद गाजी आदि सरदारों को बुला कर उक्त समाचार कह सुनाया और खट्टू बन की ओर स्वयं जाने के लिये तैयारी करने का हुक्म दिया और ततार खा और खुरासान खां को आज्ञा दी कि तुम लोग चतुर एयारों को लेकर स्वय खट्टू बन में जाओ और इस बात का भेद लो कि पृथ्वीराज कितनी सेना के साथ और किस तरह शिकार करने आता है और हम लोग किस तरह अपनी फलसिद्धि प्राप्त कर सकते है। इस तरह भेदिए दूतों को आगे भेज कर शहाबुद्दीन, खुरसान खा, गाजी खां, गप्पर साह, पप्पर साह, मीर मुहम्मद, वाजीद खा, आदि सरदार और आठ हजार घुडसवार सेना सहित खट्टू बन में आ पहुँचा और उसने छिप कर एक बड़े घेरे में पडाव डाल दिया।

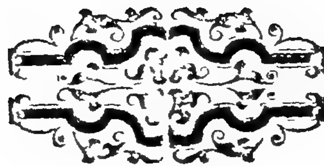
पृथ्वीराज भी ५०० पैदल, पाच सौ सवार, एक हजार कुत्ते, ५५ चीते और बहुत से शिकारी पची और परिकर की भीड भाड सहित निश्चिंतता पूर्वक खट्टू वन में पहुचा। एक रात विश्राम कर दूसरे दिन प्रातः काल होते ही पृथ्वीराज, कन्ह, सलप, पवार, रघुवंश चहुआन, कविचंद इन सामन्तों को साथ ले और सारी फौज परिकर को छोड कर जगल में घुस पडा। शहाबुद्दीन जो कि पहिले ही से ताक में लगा हुआ था पृथ्वीराज को अपनी सेना के केन्द्र में जानकर उस पर आ टूटा। कविचंद को इस विषय में प्रथम ही से कुछ संदेह था। इसलिये उसने पहिले ही से सामन्तों से सचेत रहने को कह दिया था किन्तु उन लोगों पर इस बात का विशेष प्रभाव न पडा। जब एकाएक मुसलमान सेना ने घेर लिया तब उनको चेत हुआ और तुरत ही चार सरदार तो पृथ्वीराज के चारों तरफ तलवार निकाल कर अटल वीर रूप से डट गए और कन्ह ने आगे बढ कर हरावल पर धावा किया। उस आठ हजार मुसलमान सेना में इन पाचों राजपूत वीरों की अनुपम छटा प्रस्फुटित होती थी। चण चण में उन राजपूत वीरों पर वीर रस और यवन सेना पर करुणा रस का प्रभाव जमता जाता था। शहाबुद्दीन के सरदारों ने अपना सा खूबजोर मारा पर वे पृथ्वीराज की छाई दावने में भी समर्थ न हो सके जो आगे जाता था वह वहीं टूट कर दो हो जाता था। इस प्रकार केवल उक्त पाच सामन्तों ने ७५५ मुसलमानो को मार डाला और तब तक पृथ्वीराज के शिविर मे भी इस बात की चरचा फैल गई। इसलिये उसकी सेना भी सज कर आ पहुची और छली यवनों का नाश करने में तत्पर हुई। भला जो सेना केवल पाच सामन्तों का साम्हना करने में भी समर्थ न हो सकी थी वह अब इस वीर दल के साम्हने कब ठहर सकती थी। निदान मुसलमान सेना के पैर उखड गए और सब लोग तीन तेरह हो गए। शहाबुद्दीन ने भी अपनी पहिली गति का स्मरण कर के इन्हीका साथ देना उचित जाना और सब के साथ साथ जीते जागते गजनी पहुँच कर उसने खैर मनाई। इधर वीर पृथ्वीराज पुनः आनन्द से खट्टू वन में शिकार करता हुआ निश्चिन्त भाव से विचरने लगा।

चित्ररेखा समय।

[ग्यारहवां समय।]

एक समय कविचन्द ने हुसन खा से चित्ररेखा की उत्पत्ति के विषय में पूछा। तब उसने इस प्रकार वर्णन करना आरम्भ किया कि एक समय वीर शहाबुद्दीन ने अपने समस्त शूर वीर मत्री खुरासान खा, मारूफ खा, तत्तार खा, इत्यादि सरदारो को बुलाकर पूछा कि सिंध के किनारे राज्य करने वाला छोटा सा सरदार * अरब खा मेरी सेवा करना स्वीकार नहीं करता इस हेतु उस पर ससैन्य चढाई कर के उसे अपने अधीन करना चाहिए। इस प्रकार शहाबुद्दीन की आज्ञा पाकर मंत्रियो ने ५०० हाथी, एक लाख सवार, काबुली, पंजाबी, रूमी, गोरी, अरब इत्यादि जाति के मुख्य मुख्य एक लाख शूर वीरों की सेना तैयार करके शहाबुद्दीन सहित हमला किया। निदान शहाबुद्दीन भी स्वयं उक्त सेना के साथ हो लिया। जब सिन्धु की सरहद पर पहुँचा तब उसने अपना डेरा वहीं पर डाल दिया और निसुरत्त खां को अरब खा के पास भेजकर कहल भेजा कि यदि वह चित्ररेखा वेश्या को दड स्वरूप मुझे देना स्वीकार करे और सदैव के लिये मेरी सेवा करना भी स्वीकार करे तो मै भी उसे क्षमा कर दूगा। अरब खा शहाबुद्दीन की विकट सेना और उसके बीर बलवान सरदारों के पराक्रम से स्वय डर गया था, निसुरत्त खां से बड़े आदर से मिला और उसने बादशाह की आज्ञा को भी सादर स्वीकार कर लिया। बरन साथही उसके गजनी के दरबार में उच्चपद पाने की अभिलाषा से सनातन हिन्दू धर्म्म को त्याग करके मुसलमानी मत भी उसने स्वीकार कर लिया जिस पर निसुरत्त खा ने उसकी बडी प्रसशा की और उस समय अद्वितीय रूप लावण्यमई परम सुन्दरी चित्ररेखा को लाकर शहाबुद्दीन को नजर किया जिसके लिये बादशाह ने उसको बहुत कुछ इनाम दिया और किसी झगड़े झझट खून बहाव के बिना चित्ररेखा को सहज ही में पाकर मन ही मन आनान्दित होता हुआ वह गजनी को लौट चला। गजनी पहुच कर चित्ररेखा और शहाबुद्दीन की परस्पर दिन प्रति प्रीति बढने लगी। अन्त में यहा तक हो गया कि सुलतान सर्वथा चित्ररेखा के प्रेम के वशीभूत हो गया। एक मात्र उसी के प्रेम में मग्न होकर अपनी सब क्रियादि कों भुला कर उसी की प्रसन्नता की चेष्टा में वह मग्न रहता। यह खबर सुन कर कविचंद अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

* 'अरब खा' यह मुसलमानी नाम है किन्तु आगे कथा के सम्बन्ध से ज्ञात होता है कि वह कोई हिन्दू क्षत्री राजा था किन्तु उसका असली नाम क्या था सो मालूम नहीं और न कहीं पर लिखा मिलता है।



भोला राय समय।

[बारहवाँ समय ।]

संवत ११३६ चैत्र सुदी दुतिया शुक्रवार को पुष्य नक्षत्र में भोलाराम भीमदेव गुजरात के राजा का शिवपुर अर्थात् आबू के राजा सलष पँवार पर चढ़ाई करने और सोमेश्वर जी का उसको सहायता देने का वर्णन इस समय में है।

शुकी अर्थात् कविचंद की स्त्री का इच्छनी कुमारी के विवाह की कथा पूछना और कविचंद का उसे सविस्तर वर्णन करना।

कविचंद बोला कि जिस समय प्रतापी पृथ्वीराज अजमेर और दिल्ली का स्वतंत्र राज्य करता था उसी समय आबूगढ़ में सलष नामक पँवार राजा नीति धर्म्मयुक्त राज्य करता था, सलष सत्पुरुष साधुओं की रक्षा करता हुआ सदैव दुष्टों को दंड देने में तत्पर रहता था। उसके मंदोदरी और इच्छनी नामक दो कन्याएँ और जैत नामक एक पुत्र था। सलष ने अपनी ज्येष्ठ पुत्री मंदोदरी का विवाह गुजरात के प्रतापी राजा भोलाराय भीम से कर दिया था और इच्छनी को पृथ्वीराज के साथ विवाह करने का उसका संकल्प था।

भोलाराय भीमदेव का मंत्री अमरसिंह सेवरा नामक एक जैन धर्मावलम्बी ब्राह्मण था जो कि तंत्र और मंत्र शास्त्र में अद्वितीय निपुण और परम शक्तिसंपन्न था। उसने एक समय अमावास्या को चन्द्रमा का दर्शन करा के राज्य के समस्त माननीय प्रसिद्ध पंडितों को मूर्ख और झूठा प्रमाणित करके सब का सिर मुड़वा दिया था। भीमदेव की स्त्री मंदोदरी के साथ जो प्रोहितानी, मालिन, इत्यादि अन्यान्य स्त्रिएँ आबू से आई थीं उन्होंने इच्छनी कुमारी के अद्वितीय रूप लावण्य की अत्यन्त प्रशंसा की जिसे सुनकर भीमदेव का मन कामातुर होकर उसी के ध्यान में मग्न हो गया। अस्तु उस का यह ध्यान यहां तक बढ़ा कि सोते जागते सदैव इच्छनी कुमारी की मनोहर मूर्ति ही उसकी आंखों के साम्हने फिरा करती और इस धुन में वह पागल सा हो गया। अंत में उसने प्रधान द्वारा सलष को एक पत्र लि[ख] भेजा जिस का आशय यह था कि तुम अपनी कनिष्ठा कुमारी इच्छनी का विवाह मेरे साथ कर दो उसका वाग्दान जो तुम पृथ्वीराज को कर चुके हो उसका ध्यान भी भुला दो, यदि ऐसा न करोगे तो तुम्हें सपरिवार नष्ट भ्रष्ट करके मैं आबूगढ़ पर अपना अधिकार करूंगा और बलवत इच्छनी कुमारी को अपनाऊंगा। इस पत्र को लेकर भीमदेव का प्रधान जब आबू पहुँचा तो राजा सलष ने उसे अपने दमाद के यहां से आया जान सादर स्थान दिया और पांच दिन बड़े सम्मान से रक्खा। पांचवें दिन दरबार लगा और प्रधान भी बुलाया गया। कुशल प्रश्न हो जाने पर प्रधान ने उक्त पत्र सलष को समर्पण किया जिसे पढ़ते ही सलष ने कहा कि मैं ने चालुक्य को मंदोदरी व्याह करके सम्बन्ध किया था किन्तु वह अनीति करता है कि इच्छनी के रूप पर मोहित हो कर अब उसे भी वरा चाहता है। मैं उसे पृथ्वीराज से व्याहने का संकल्प कर चुका हूं और मैं अपने दृढ़ संकल्प को प्राणों के बदले भी कदापि पलटने का नहीं। पत्र का सारांश जान कर जैतसिंह की तो विचित्र ही दशा हो गई। क्रोध से मुख आरक्त हो उठा, ओंठ फड़कने लगा, शरीर के रोमांच खड़े हो गए। उसके क्रोध की मात्रा यहां तक बढ़ी कि उसने झिल्लाकर तलवार निकाल ली और वह कहने लगा कि भीमदेव बड़ा पाखंडी है उसे आकर्षन, मारन मोहन इत्यादि के मंत्र यंत्रों का बड़ा गर्व है। वह क्षत्री नहीं है और न उसे क्षत्रियों से काम पड़ा है। वह इस प्रकार पाखंड से बल बढ़ा कर अपने को अमर मानता है। यह सर्वथा भूल है। इस पर भीमदेव के मंत्री से न रहा गया और वह कहने लगा कि तुम लड़के हो भीमदेव के आर्थिक और सैनिक बल से परिचित नहीं हो, इससे ऐसा कहते हो। वह क्षणमात्र में पुंगल गढ़, आबू, मंडोवर और अजमेर इत्यादि को बिना प्रयास ले सकता है। यदि भीमदेव रूस जावेगा तो सपरिवार आपकी और नौकोटि मारवाड़ की प्रजा की रक्षा करने वाला

मुझे कोई नहीं दीख पड़ता है। यह सुन कर राजा सलप ने गम्भीरतापूर्व्वक उत्तर दिया कि मेरी सहायता गोवर्द्धनधारी श्रीकृष्णाचन्द आनन्द कन्द करेगे। इस प्रकार पिता पुत्र दोनो का एक मत देख कर प्रधान ने कहा कि अच्छा यदि आपकी ऐसी इच्छा है तो सावधान रहिए। मै जाता हू और अब राजा के सहित शीघ्र ही आकर आपका बल देखूंगा। ज्यो ही उधर भीमदेव के मत्री ने पीठ फेरी कि राजा सलप ने इच्छनी कुमारी के व्याह की तय्यारी कर दी और उक्त सवाद की स्पष्ट सूचना देते हुए पृथ्वीराज को भी एक पत्र लिख कर उसके पास मत्री को भेजा जिसको पृथ्वीराज ने बडे आदर से लिया और उसकी कही हुई सब बातें सुन कर सलप के पत्र को बडे आदर से पढ़ा। यथासभव शीघ्र ही इच्छनी से व्याह करने का समाचार पाकर पृथ्वीराज के आनन्द की सीमा न रही। उसने तुरन्त ही सलप के मत्री को पाच हाथी १०० घोडे पाच सौ रुपए और नाना प्रकार के वस्त्र आभूषण देकर बिदा किया और आप स्वय बीर सामन्तो सहित सज कर आबू की ओर चला। इस समाचार के पाते ही भीम देव आग बबूला हो गया। उसने एक पत्र लिखकर पृथ्वीराज के पास भेजा कि सलप मेरा शत्रु है तुम्हे उचित है कि तुम कभी भी उसका पक्ष न करो, उसका पक्ष करके मुझ से बैर बिसाह लेना भला नहीं है। उसने साथही सिंध, सोरठ, कच्छ इत्यादि अपने अधीन के राजाओं को बुला कर आबू पर चढाई करने की तय्यारी की और अपने परम मित्र मत्री अमर सिह की मत्रणानुसार उसने नियत समय पर ससैन्य आबू की तरफ प्रस्थान कर दिया और आबूगढ से कुछ दूरी पर पडाव डाल दिया। आधी रात के समय जब कि अमर सिह सेवडा के मत्र बल के कारण वह रात्रि पावस की रात्रि से भी अधिक अधेरी और भयावनी बन रही थी भोला राय भीम देव ने दक्षिण की तरफ से आबू गढ पर आक्रमण किया। पँवार सलप जोकि इस आक्रमण की सम्भावना मे प्रथम ही मे सदैव सैनसहित सचेत रहा करता था भीमदेव का आक्रमण रोकने मे तत्पर हुआ। बडी देर तक युद्ध हुआ। दोनो ओर के सहस्रो बीर काम आए। अन्त मे खेमकरन खंगार, बीर सिह, जरासिंह इत्यादि बीरों के सहित सलप पँवार मारा गया और आबू गढ पर भोला राय भीमदेव का अधिकार हो गया। आबू गढ़ के सब राज्य भर मे भीमदेव की दुहाई फिर गई। आबू के गढ़ पर भीमदेव का पताका फहराने लगा। इस प्रकार भीमदेव आबू मे एक महीने पाच दिन रह कर गुजरात को चला गया।

भीमदेव ने अपने राज्य पट्टनपुर में आकर शहाबुद्दीन महम्मद गोरी को एक पत्र लिखा कि आप अपने दल बल सहित दिल्ली नगर को घेरिए और मै नागौर पर आक्रमण करूंगा। इस प्रकार आप और हम दोनो मिलकर के पृथ्वीराज पर जय प्राप्त करे। यह पत्र अपने एक चतुर विश्वास पात्र सभासद मकवान को देकर उसने समझाया कि हे वीरवर मैं जो कुछ यह कार्य्य कर रहा हूं वह सब एकमात्र इच्छनी कुमारी के ही लिये है। मै उस रमणी रत्न के लिये अपना सर्वस्व आहुति करने को प्रस्तुत हू। उसी के लिये आबूगढ की लड़ाई में मेरे परिवार के अनन्त जन संहार हुए हैं। हे मित्र मेरे मन का तब ही दुःख दूर होगा जब शहाबुद्दीन मेरे इच्छानुसार मेरे मन्तव्य में सहमत हो जाय और मै पृथ्वीराज पर आक्रमण कर के दिल्ली का राज्य स्वयं नष्ट कर डालू। इस प्रकार समझा कर और बहुत से घोड़े चमर, पश्मीना इत्यादि शहाबुद्दीन को अपनी ओर से भेंट देने के लिये देकर उसने मकवान को गजनी की ओर भेजा। मकवान ने गजनी पहुँच कर शहाबुद्दीन से साक्षात् किया और भरे दरबार मे भीमदेव का पत्र पेश किया और उसका मूल अभिप्राय भी कह सुनाया जिसे सुनते ही शहाबुद्दीन का मुख लाल हो गया, ओष्ठ फडकने लगे। उसने फड़कती हुई भुजाओं से अपना तीर उठाकर कमान पर चढाया और कहा कि मै स्वय काफिरों का नाश करूंगा तभी खुरसान में रहूंगा। बादशाह का ऐसा

वचन सुन कर ततार खां, न्याजी खां, पिरोज खा, रुस्तम खा, उजबक खा, निसुरत्त खा इत्यादि सभासदो ने भी हा मे हा मिला दी। बादशाह पुनः बोला कि दान खड्ग विद्या और सपति ये वस्तुए साझे में नहीं होतीं। रे मूढ दूत यह पृथ्वी वीरभोग्या है, तुच्छ भीमदेव मुझ से क्या शेखी मारता है। मैं उसे भी नष्ट भ्रष्ट करने मे समर्थ हू। यह सुनकर मकवान बोला कि भीमदेव भी ऐसा दुर्बल नहीं है वह भी म्लेच्छो को नीचा दिखा सकता है। तब शहाबुद्दीन फिर बोला कि पहिले पृथ्वीराज को नष्ट कर के तब भोलाराय भीमदेव की भी खबर लूगा। यह सुनकर मकवाना सगर्व बोला कि हे शाह! जिस समय भीमदेव का दल बल चलता है तब पृथ्वी डोलती है और काल भी भयभीत होता है। चालुक राय के सम्मुख जालधर, वग, तिलग, कोकन, कच्छ, परोट, मरहट्ट इत्यादि कोई भी ठहर नहीं सकते, सब उसको नवते है। यह वही प्रतापी भीमदेव है जिसने बघेलो को जीता, आबू को तोडा, और यदवों को हराया। उसे जीतना सहज नहीं है। ब्रह्मा ने उस अद्वितीय वीर को स्वयं अपने करकमलों से रचा है। मकवाना का यह गर्व शहाबुद्दीन सह न सका और वह उसे मारने पर उद्यत हुआ किन्तु वजीर ने समझाया कि दूत मारा नहीं जाता। ऐसा करने में बड़ा ही कलक और अपयश होगा। इस पर शहाबुद्दीन तो निस्तब्ध हो रहा किन्तु एक सभासद बोल उठा कि यद्यपि दूत का मारना नीति विरुद्ध है किन्तु यह दूत भी कैसी असभ्य वाणी बोलता है। इस दृश्य को देखकर वीर मकवाना से न रहा गया और उसने उपरोक्त सभासद को एक ऐसा हाथ मारा कि उसका सिर धड़ से पृथक होकर लोटने लगा। अपने प्रिय सभासद को मरा देख कर शहाबुद्दीन से न रहा गया और उसने तुरत ही मकवाना का हृदय बाण से बेध दिया। वीर मकवाना ने मरने से प्रथम ही हैजम और हुजाब नामक दो सरदारों को और मार डाला और तब वह आप मरा। जब यह समाचार भीमदेव को मिला तो उसके क्रोध और पश्चात्ताप का ठिकाना न रहा। एक तो आशा के विरुद्ध फल हुआ, दूसरे प्रिय सामन्त मकवाना भी मारा गया। इसलिये भीमदेव को पृथ्वीराज तो भूल गया। उसने गजनी पर चढाई करने का विचार किया किन्तु ज्योंही इसने राज महल से बाहर प्रस्थान किया कि आग लगने का बडा भारी अपशकुन हुआ। उधर से शहाबुद्दीन ने भी हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने को बडी भारी सेना एकत्रित करके प्रस्थान किया, नागौर में पड़े हुए पृथ्वीराज को जब इन तय्यारियों की सूचना मिली तो उसने भी सब सूर सामन्तों को जिरहबख्तर सम्हालने की आज्ञा दी। उस समय नागौर में उसके पास केवल ८ हजार सेना थी। इसलिये उसने दिल्ली से चार हजार सेना और मगवाई और १२ हजार सेना को सन्नद्ध करके वह बैठ रहा। पृथ्वीराज की केवल १२ हजार सेना ही भीमदेव और शहाबुद्दीन को धूल चटाने को बहुत थी। जब शहाबुद्दीन का पडाव सारुडा में आन पडा और भोलाराय की सेना सोझती में आन पहुँची तब कैमास ने पृथ्वीराज से कहा कि अब यह समय दोनो शत्रुओं को पराजित करने के लिये बहुत ही उपयोगी है। इस समय हम अपनी इतनी ही सेना से बहुत कुछ कर सकते है। कैमास का यह प्रस्ताव पृथ्वीराज ने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया और इसके निश्चय के लिये उसी रात को सब सामन्तो की सभा करके उक्त प्रस्ताव पर विचार किया गया। इसको सब वीर सामन्तों ने भी सादर स्वीकार किया और युद्ध आरम्भ के विषय में अपना अपना मत प्रगट किया। चामुड राय, जैतराव, देव राव बग्गरी, बड़गुज्जर इत्यादि वीरों ने प्रतिज्ञाएँ की कि हम लोग दोनों दलों का क्षण मात्र में नाश करेगे। हम वीर लोगो का जन्म ही स्वामिकार्य्य के लिये है और कैमास का मंत्र सर्वथा माननीय है। दूसरे दिन प्रातःकाल जब कि पृथ्वीराज नगर के बाहर सब सेना की देख भाल कर रहा था उस समय लोहाना आजानबाहु भी पाँच हजार सेना सहित नागौर मे आ उपस्थित हुआ।

पृथ्वीराज ने अपनी सेना के दो बराबर भाग किए। एक भाग का सेनापति कैमास और उपसेनापति चामुंड राय हुआ और दूसरी सेना का सेनापतित्व पृथ्वीराज ने स्वयं अपने ही हाथ मे रक्खा। दोनो शत्रुओं की राह रोकने के लिये दोनो सेनाओं की तय्यारी एक ही साथ की गई। पृथ्वीराज ने कैमास को तो भोलाराय भीमदेव के मुकाबिले के लिये नागौर में छोडा और आप अपनी अनी लेकर शहाबुद्दीन के मुहासिरे पर सारुंडे की तरफ रवाना हुआ।

उधर भोलाराय भीमदेव एक तो इञ्छनी के विरह वियोग में प्रथमही से खान पान छोड़ बैठा था तिसपर भी शहाबुद्दीन से अपमानित होने पर तो उसके क्रोध और दुःख का ठिकाना न रहा, न तो इञ्छनी कुमारी का चित्र उसकी आंखो के साम्हने से टलता था, न पृथ्वीराज और न शहाबुद्दीन का अठल वैर उसे पल भर कल लेने देता था। जब कैमास की चढ़ाई का सँदेसा भोलाराय भीमदेव के कानों तक पहुँचा तो उसने अपने राज्यमंत्री मुख्य मुख्य सभासद और सेनानायकों की एक सभा की जिसमे राम रन प्रमार, गुरगुंठीर झाला, बीरदेव बघेला, गगडामी राजप्रोहित, धर्मधुर बघेला, अमरसिंह सेवरा, इत्यादि का यह मत हुआ कि दोनों शत्रुओं से युद्ध किया जाय, किन्तु सारगदेव, वैरभराय इत्यादि कई सरदारों का यह मत था कि चहुआन मे विग्रह न करके संधि कर ली जाय और दोनो मिल कर विदेशी धर्मशत्रु शहाबुद्दीन से युद्ध करें। उन्होने भीमदेव से कहा कि पृथ्वीराज का केवल इतना अपराध है कि उसने सलख को शरण रक्खा, परन्तु सलख ने यदि मदोदरी का आपके साथ व्याह करके इञ्छनी कुमारी को न व्याहा तो कोई अपराध नहीं किया। झालाराव तथा कई अन्य अन्य क्षत्री सरदारों ने इसी मत का अनुमोदन किया और कहा कि गत वैर को भुलाकर पृथ्वीराज से सन्धि कर लेनी ही उत्तम है। ये वचन अमरसिंह सेवरा को बाण से लगे। उसने क्रोधित हो कर कहा कि तुम लोग यह क्या कह रहे हो मैं मंत्र बल से चहुआन के मत्री कैमास को बश करूंगा और शस्त्रबल से शहाबुद्दीन को जीतूंगा। भैरव भट्ट चरन चन्द्र और पाटरिया रान इत्यादि जैन धर्मावलम्बी वीरों ने अमरसिंह की बात का अनुमोदन किया। इञ्छनी की विरहाग्नि में विह्वल हृदय भीमदेव को भी यही मत भा गया।

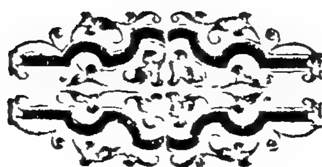
उधर नागौर मे कैमास अपनी मोरचाबंदी कर रहा था, इधर अमर सिंह उसे मंत्र बल में बंदी करने के लिये नाना प्रकार के यांत्रिक, तांत्रिक प्रयोग मे दत्त चित्त था। कैमास नागौर से बढ़ कर भोलाराय भीमदेव की फौज पर छापा मारने के लिये तय्यार हो ही रहा था कि अमर सिंह सेवरा का भेजा हुआ भाट बडे साज बाज से नागौर में आ पहुँचा। उसने कैमास से मेल कर अमरसिंह की दी हुई एक बहुमूल्य मोतियों की माला नजर की और सन्धि पत्र पेश किया। उस पत्र में प्रथम परस्पर के शिष्टाचार लिखे थे तिस पीछे बहुत कुछ अपनी बड़ाई लिख कर एक सुन्दरी स्त्री का चित्र लिखा हुआ था और लिखा था कि तुम इस स्त्री को लो और आनन्द करो, जिसके देखतेही कैमास की बुद्धि "किं करतव्य विमूढ़" हो गई। अमरसिंह के मंत्र के वशीभूत होकर वह उस चित्र पर ऐसा मोहित हो गया कि उस समय से अमरसिंह की इच्छा के विरुद्ध कोई भी कार्य्य करने की समर्थ्य न रख सका। अमरसिंह सेवरा के मंत्रबल से आकर्षित लाले नामक खत्री की परम स्वरूपवती कन्या के प्रेमपाश में कैमास ऐसा मुग्ध हो गया कि अपने स्वाभाविक स्वामिधर्म्म को बिलकुल ही भूल गया। पृथ्वीराज के नाम को भी भूल गया और भीमदेव की आज्ञा का निपट वशवर्ती बन गया और इसी से समस्त नागौर नगर में भीमदेव की दुहाई फिर गई।

दिल्ली में जब कविचंद को स्वप्न में इस बात का समाचार मिला कि नागौर पर भीमदेव का दखल हो गया है और कैमास अमर सिंह सेवरा के मंत्रबल में ऐसा वशीभूत हो गया है कि वह सब

कार्य्य चालुक्य के इच्छानुसार ही करता है, नागौर नगर मे वेदधर्म्म का ह्रास और जैनधर्म्म का प्रकाश हो रहा है, इसी से वहाँ की प्रजा बडी ही दुखित है और पृथ्वीराज को इस विषय में कुछ भी नहीं मालूम है, तब तो कविचंद से न रहा गया वह सबेरा होते ही कुछ थोडी सी सेना लेकर नागौर की तरफ चल पडा। वहाँ पर पहुँच कर देखता क्या है कि जो कुछ स्वप्न मे देववाणी द्वारा सुना था वह सब रत्ती रत्ती साक्षात् पाया। वह सीधा कैमास के पास गया और उसे उसने बहुत कुछ समझाया किन्तु वहाँ सुने कौन। वह तो बेचारा अपने को भी भूला हुआ था—इसलिये चन्द ने योगिनी की आराधना की और उन्हे मंत्र द्वारा प्रसन्न कर के प्रार्थना की कि वह अमर सिंह की इस मंत्रमाया को नष्ट भ्रष्ट कर देवे और मंत्री कैमास को अमर सिंह के मंत्रपाश से मुक्त करे। कविचंद की प्रार्थना स्वीकृत हुई और धीरे धीरे नागौर से मंत्रशक्ति द्वारा आच्छादित अंधकार घटने लगा। जब अमर सिंह को यह समाचार ज्ञात हुआ तो वह स्वयं नागौर में दौडा आया और चंद के साथ तांत्रिक संग्राम करने मे प्रवृत्त हुआ। दोनो ने अपने अपने इष्टदेवों की आराधना कर के एक दूसरे की शक्तियो का ह्रास और अपने अपने तेज के प्रकाश करने की चेष्टा आरम्भ की। अन्त में कविचंद की ही जै हुई और अमर सिंह पराजित हो कर अपने साथियो सहित नागौर से भाग निकला। इस प्रकार शत्रुओं को निकाल कर जब कविचंद कैमास के पास गया तो कैमास ने लज्जित हो कर सिर नीचा कर लिया। वह कविचंद के साम्हने भी न देख सका। तब कविचंद ने उसे आश्वासन दे कर कहा कि हे बुद्धिवर कैमास इसमे तुम्हारा दोष नही है, यंत्र मंत्र से देवता भी वशीभूत हो जाते है तब मनुष्य की गणना ही क्या है। ऐसे समझा कर उसने कैमास को संतोष दिया और भोलाराय भीम देव पर चढाई करने को उत्साहित किया। कविचंद ने कहा कि हे वीर कैमास अब तुम भीम देव को परास्त करके ही अपना मुख उज्ज्वल करो। उधर दिल्ली मे जब कैमास के मंत्रवश होने का समाचार पहुचा तो सब राज्य में खलबली पड गई। कन्ह, चामुंड राय, चंद पुंडीर आदि सब सामन्त पृथ्वीराज को अजमेर में छोड कर नागौर की तरफ चल दिए। इन सब के पहुचने पर कैमास के उत्साह का ठिकाना न रहा। उसने तुरत ही तय्यारी कर दी और इन वीर सामन्तों की सूक्ष्म परन्तु बलिष्ठ सेना लेकर बडी सावधानी से भीमदेव के मुकाबिले पर वह जा डटा। भीमदेव तो इस होनहार मे प्रथम ही से सचेत था। उसकी चतुरंगिनी सेना आठ प्रहर चौसठ घडी सन्नद्ध रहती थी। जब से कविचंद ने कैमास को मंत्र बल से मुक्त कर के अमर सिंह का मान धूलिधूसरित कर दिया था उस समय से भीमदेव का भी दिल दहल गया था और इसीलिये वह सदैव अपनी रक्षा के लिये विकट विश्वास पात्र वीरों की चौकस चौकी रखता था। जब कैमास की यह थोडी सी फौज मुठभेड मे जा पहुंची और एक रात राह की थकावट मिटा कर दूसरे दिन युद्ध करने का विचार करके पडाव डाले पडी थी तो भीमदेव ने सप्तमी को सात घडी रात जाने पर कैमास पर सहसा आक्रमण कर दिया। यद्यपि कैमास की फौज थोडी थी भीमदेव के अनन्त दलबल में यह थोडे से शूर सामन्त आटे मे नौन के समान थे किन्तु इनमे खारापन नोन से भी कही अधिक था। भीमदेव का आक्रमण होते ही ये लोग भी सम्हल उठे। दोनो ओर से लोहा झरने लगा। तीर, तुबक, तलवार, कटार, बर्छी, बॉक, बिछुए इत्यादि की खचाखच मार होने लगी। दोनो तरफ के शूर वीर असार संसार को छोड कर स्वर्ग को जाने लगे, बडे बडे मतवाले हाथी सामन्तो की तेज तलवार से दो दो टूक हो हो कर नदी की कगारो से गिरते थे, इस युद्ध मे बाजी खॉ जो कि भीमदेव का एक सरदार था पाँच हजार वीरों के सहित बडी ही वीरता के साथ काम आया।

अनन्द विक्रम सं० ११४४ अष्टमी को चंद्रोदय होने पर आधी रात के समय पुनः युद्ध प्रारंभ हुआ

इधर से कैमास का सेन समूह सज धज कर चला उधर से भीमदेव की प्रचण्ड सेना आई। इस युद्ध मे कैमास की सेना का सेनापति चामुण्डराय था जिसने अपने बाहुबल का अद्वितीय पराक्रम प्रगट किया। इकतीस हज़ार भीमदेव की सेना और बीस हजार कैमास की सेना इस वीर का अद्वितीय पराक्रम देख कर चकित थी। बडे बडे शूरवीर इसकी वीरता की सराहना करते थे, मोहनसिंह परिहार, नाहर राय, निड्डुरराय, पज्जूनराय इत्यादि सामन्त भी शत्रु की सेना को कृषी की भाति काट रहे थे, पृथ्वीराज की तरफ से चामुण्डराय जैतसी, बड गुज्जर, रामराय, कन्ह चौहान, पज्जूनराय, प्रसग राय खीची, चंदपुडीर, महनसीग मारू, देवराज वग्गरी, सलप देवराज का भाई और पुत्र, निड्डर वीरसिंह आदि वीर अपनी अपनी सेना सहित कैमास के साथ मे थे। भीमदेव की तरफ के सारंगदेव, नरसिंह, वरसिंह आदि सरदार भीमदेव की तरफ से भी ससैन्य प्रस्तुत थे। उस धूँधली रात में उक्त वीरों की तेज तलवारों की चमक बडी ही भली मालूम देती थी। जिस सवार पर उन का हाथ पडता था वह घोडे सहित दो टूक हो जाता था। मतवाले हाथियों के कुंभ को सहज विदीर्ण करने वाली असिधारा से वह वीर अपने अपने शत्रुओं के दलसमूह को काई सा फाड़ रहे थे। दो शत्रुओं से दबाया हुआ भीमदेव यद्यपि बडे ही सोच विचार में व्यस्त था पर तौभी अपनी सेना के उत्साह के लिये मतवाले हाथी पर सवार क्रोध से आखें लाल लाल किए हुए युद्ध में प्रस्तुत था। राम राय बड गुज्जर की आँख उस पर पड गई। वह चालुक्य सेना को काटता हुआ वहा आ पहुँचा और भीमदेव के हाथी को उसने एक ऐसा हाथ मारा कि वह ढोल सा ढलक गया और भीमदेव भी पृथ्वी पर गिर कर लोटपोट होगया जिससे उसकी क्रोधाग्नि बडे वेग से प्रज्वलित हो उठी और वह तुरंत दूसरे हाथी पर सवार हो कर जीवन की आशा छोड कर कैमास का प्राण लेना ठान कर उस पर झपटा। जहा राजा वहा फौज। भीमदेव की फौज भी राजा को कैमास की तरफ बढ़ता देख कर उसी ओर झुक पडी। चामुड राय ने जब कैमास के सिर पर यह आपत्ति देखी तो वह भी अपना मोरचा छोड कर कैमास की सहायता के लिये आ पहुँचा। कैमास की मोड पर और सब सेना भी मुड़ पड़ी। उधर भीमदेव इधर चामुड राय और कैमास दोनों अपने अपने स्वामिकार्य्य के लिये प्राण को तुच्छ जान कर हथियार चलाने लगे। क्षण मात्र में वह वीर रस करुणा रस मिश्रित देख पडने लगा। पॉच घड़ी पर्य्यन्त बड़ा ही घोर युद्ध होता रहा। अन्त में भीमदेव की सेना भाग गई। पृथ्वीराज की जै हुई। दोनों तरफ की १६००० फौज मारी गई, तेरह हजार भीमदेव की तरफ की, और तीन हजार कैमास की। पृथ्वीराज के तरफ के पथमा राव परिहार मोहल मल्लीन महीराव सहदेव इत्यादि सर्दार काम आए। आबू पर पृथ्वीराज का राज्य स्थापित हुआ और जैतसी प्रमार वहा का सूबेदार नियत किया गया।



सलष युद्ध समय।

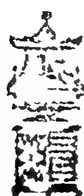
(तेरहवां समय)

उधर जब भीमदेव से कैमास का युद्ध आरंभ हो गया तब इधर पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन का भेद लेने के लिये दूत भेजा। वह चतुर दूत शीश पर जटा बनाए शरीर में विभूति रमा कर दम, कपट, पाखण्ड, और आडबर से भरी हुई ज्ञान चरचाओं का उच्चार करता हुआ शहाबुद्दीन के लश्कर में गया और वहा का राई रत्ती सब भेद लेकर पुनः पृथ्वीराज के पास उसी भेष में आया। पृथ्वीराज के सम्मुख आ कर उसने आशीर्वाद और अपना परिचय दिया। तब पृथ्वीराज के पूछने पर उसने इस प्रकार कहना आरम्भ किया कि हे राजन् शहाबुद्दीन के साथ तीन लाख सेना है। जब उस ने सारुडपुर के बाहर पडाव डाला तब मैं इधर को आया हूं। उसकी सेना का विवरण इस प्रकार है कि दस हजार विशालकाय गष्पर, बत्तीस हजार काबुली, सत्तर हजार काश्मीरी, तिरपन हजार हबशी जोकि तलवार के युद्ध में बडे निपुण है, पैतीस हजार रूमी, तेतीस हजार फिरंगी अर्थात् गौराग विलायती, सत्रह हजार पठान, दस हजार पंजाबी जाट, पन्द्रह हजार उसके पासवान के आदमी और पच्चीस हजार सब सागिर्द पेशा परिकर के आदमी है। इस प्रकार वर्णन की हुई सेना के तीन लाप मनुष्य सब ही बड़े पराक्रमशाली और बलवान है। उनकी विकट विकट मूंछ और भयावनी मुखाकृति देख कर सहज ही भय उत्पन्न होता है। इस प्रकार दूत के वचन सुन कर पृथ्वीराज क्रोध से इस प्रकार फडक उठा जैसे पूँछ दबाया हुआ काला सॉप फुंफकारने लग जाता है। पृथ्वीराज का रुख देख कर लोहाना आजानबाहु बोला कि यदि यह निर्लज्ज यवन अपने हठ से नहीं चूकता, बार बार व्यर्थ सिंह की पूँछ पकड़ने का साहस करता है तो अब की गज़नी समेत इसे न लौट दूँ तो मेरा नाम लोहाना आजानबाहु नहीं।

पृथ्वीराज की युद्ध के लिये तैय्यारी जान कर आबूराज सलष पॅवार का पुत्र जैतसी भी सेना सहित पृथ्वीराज के दल बल में आ मिला। सेना तय्यार हो कर खडी हुई और जब राजा घोडे पर सवार होने लगा तो गुरुराम प्रोहित ने राजा को तिलक किया और आशीर्वाद दिया कि शीघ्र जाओ और शत्रु अपने राज्य की सीमा न दबाने पावे वहीं परास्त किया जाय। इस प्रकार पृथ्वीराज केवल पन्द्रह हजार सिपाहियों की चुनी हुई सेना लेकर शहाबुद्दीन के तीन लाख दल बल का साम्हना करने के लिये सारुंडपुर की तरफ बढा। पॉच सौ सिपाहियों सहित लोहाना सेना के आगे रहना और पॉच हजार सेना सहित पृथ्वीराज सेना के मध्य में रहना। इस प्रकार से कूच करके वे दिल्ली से तीन दिन में सारुड पुर के पास जा पहुंचे। यह खबर जब शहाबुद्दीन को लगी तो उसने भी खुरासान खां रुस्तम खां फीरोज खा इत्यादि अपने मुख्य मुख्य सेनापतियों को बुला कर युद्ध के लिये तय्यारी करने की आज्ञा दी और युद्ध के लिये प्रस्तुत फौज के बीच में खड़े हो कर उसने कहना आरम्भ किया कि हे भाइयो बार बार की हार की अबकी बार कसर निकाल लेनी चाहिए। अब की बार तुम्हारी वीरता यही है कि बाजी जाने न पावे। उधर रात व्यतीत होतेही चहुआन भी बढ़ आए। पूरब से चहुआन और पश्चिम से शहाबुद्दीन की सेना की मुठभेड हुई। शहाबुद्दीन की तरफ से खुरासानी सेना हरावल में थी। वे लोग पृथ्वीराज की थोडी सी सेना देख कर बडे वेग से झपटे परन्तु लोहाना ने उन्हे सहज ही मार भगाया। सलष पॅवार का पुत्र जैतसी चौहान के फौजी निशान की रक्षा पर दृढ़ था। रामराय बडगुज्जर ततार खां के मुकाबिले पर था। वीर पृथ्वीराज की थोडी सी सेना असख्य यवन दल मे धसकार उसी में खिल्लत मिल्लत हो गई और उसने ऐसे विकट पराक्रम से युद्ध किया कि अखंड धूल आच्छादित हो जाने के कारण आकाश नहीं सूझ पड़ता था। जब इस प्रकार विकट मार हो रही थी तो वीर कन्ह

चौहान भी कैमास का साथ छोड़ कर ससैन्य सारुंडपुर में आ पहुँचा और उसने युद्ध होता देखकर चढ़ी सवारी धावा कर दिया। अद्वितीय वीर कन्ह चौहान उस अगम्य यवन सेना में इस प्रकार धस पड़ा जैसे सुंदर सुंदर पुरैन से आच्छादित स्वच्छ जलवाले गहरे सरोवर में मतवाला हाथी पैठ पडे। वह यवन सेना के बडे बडे मुख्य सरदार और सूरबीरों को कमल नाल की नाई तोड़ तोड कर डालने लगा। दोनो ओर के सेनापति सरदार स्वामिधर्म्म धारण किए हुए बड़ी वीरता से युद्ध कर रहे थे। आकाश में देवागनाएँ उन वीरों का पराक्रम देखती थीं। इसी समय पृथ्वीराज के प्रोहित गुरुराम ने यवन सेना पर एक पत्र लिखकर वाण द्वारा चलाया जिसके बल से समस्त यवन सेना मोहित सी होकर युद्ध करने में शिथिलता करने लगी। यह देख कर इश्वर से मीर हाजी खा काज़ी ने भी अपना मत्र चलाया जिससे यवन सेना की मोहनिद्रा भग हो गई और दोनों दल पुनः प्रचार प्रचार कर लड़ने लगे। पृथ्वीराज की सेना बराबर यवन दल को छिन्न भिन्न करती हुई शहाबुद्दीन के सनिकट पहुँचने लगी। यह देख कर शहाबुद्दीन ने घोड़े को छोड़ कर हाथी की सवारी की। तब शहाबुद्दीन का एक पासवान मुसाहिब मारुफ खा बोला कि अब क्या किया जाय। जिस पर सेनापति खुरासान खा का सब दारमदार था उस काजी ने भी पराक्रमहीन हो कर तसवी हाथ से छोड़ दी है। यह सुन कर खुरासान खा अन्यान्य सरदारों सहित बादशाह के निकट आगया और चारो ओर से घेर कर उन की रक्षा करने लगा। भगवान चन्द्र देव के समान वीर पृथ्वीराज सेना के मध्य में स्थित नक्षत्रों के समान तेजोमय अपनी वीर सेना सहित बराबर आगे बढ़ता ही जाता था। इस समय पँवार राज सलप का पुत्र जैतसी हरावल में था। पन्द्रह बीस हजार सेना का तीन लाख सेना से मुकाबला करना भी तो सहज नहीं है। इसी से जैतराव के ऊपर बडी भीर पड़ रही थी परन्तु वीर जैतराव इसकी तनिक भी परवाह न करके अपने धर्मकार्य में तन मन से प्रवृत्त था। जब जैतराव एक बडे टेढे मौके पर फँस गया तब पृथ्वीराज ने स्वय उस की सहायता की जिस के लिये जैतसिंह बहुत कृतज्ञ हुआ और इस से उस का साहस ऐसा बढा कि उसने अपने अद्वितीय पराक्रम से यवन सेना का मुँह मोड़ दिया। घड़ी भर मे बडे बड़े मीरजादे पीरजादे प्राणों के भय से भाग निकले। शहाबुद्दीन ने हाथी छोड कर घोड़े पर सवार हो कर प्राण झोकते हुए अपनी सेना को धैर्य्य दिलाना चाहा किन्तु यह सब चेष्टा निष्फल हुई। समस्त यवन सेना भाग निकली। पृथ्वीराज ने लूट करते हुए उसका पीछा किया और सलप पुत्र जैतराव ने बादशाह को बंदी कर लिया। इस युद्ध में शहाबुद्दीन के एक लाख सैनिक और तेरह नामी नाभी सरदार खेत रहे। अत में सवत ११३६ माघ सुदि ९ को शहाबुद्दीन पकड कर बंदी बनाया गया। सारुडपुर में पृथ्वीराज का दखल हुआ।

शिशिर ऋतु के अन्त में संवत ११३६ अनन्द चैत्र सुदि ९ को इच्छनी कुमारी से पृथ्वीराज ने व्याह किया और शहाबुद्दीन से दड लेकर तब उसे पुनः मुक्त कर दिया। इस प्रकार कविचद ने सारुंडपुर के युद्ध की कथा अपनी स्त्री से वर्णन की॥



इच्छनी व्याह कथा।

(चौदहवाँ समय)

कविचदं की स्त्री ने कहा कि हे पति यह रमणीक कथा सुन कर मुझे बडा आनन्द हुआ। रात दिन मुझे वही ध्यान रहता है। अच्छा अब जो मै पूछती हू वह बतलाइए। यह सुन कर कविचद ने अपनी प्रिया का सिर अपनी गोद मे रख कर कहा कि अच्छा पूछो मै कहताहू। तब शुकी बोली कि हे प्यारे आपने चालुक्य भीमदेव के परास्त होने और शहाबुद्दीन के बंदी किए जाने की कथा तो कही अब इच्छनी व्याह की कथा वर्णन करके मुझे कृतार्थ कीजिए।

यह बात सुन कर कविचद बोला कि जब उचित दण्ड देने पर शहाबुद्दीन छोड दिया गया तो उस दण्ड मे प्राप्त सब मणिमुद्रा सलप को दिया गया और आबू का राज्य भी सलप को दिया गया और बहुत कुछ भूमि और भी दी गई। तब ग्रीष्म ऋतु के अन्त में, आबूराज सलष ने अपने भानु नामक प्रोहित के हाथ जडाऊ नारियल अक्षतादि सहित इच्छनी कुमारी की लग्नपत्रिका पृथ्वीराज के यहाँ भेजी। जिस दिन श्रीलक्ष्मिजी कुबेर के स्थान गई उसी दिन लग्न हाथ पर रक्खा गया। लग्न का उत्सव हो जाने पर पृथ्वीराज ने आबू से आए हुए मनुष्यों से पूछा कि इच्छनी की अवस्था क्या है, उसके सब रूप गुणों का वर्णन करो। यह सुन कर वे लोग बोले कि हे राजन् इच्छनी कुमारी इस समय बालकपन को त्याग करती और यौवन को प्राप्त होती हुई वयःसधि नायिका है। उसकी सुकुमार अवस्था इस समय मकर की सक्रान्ति से उपमा देने योग्य है। उसकी बालपन रूपी निशा का दिन प्रति ह्रास होता जाता है और दिवस रूपी यौवन चढ़ता हुआ उसके लावण्य में विलक्षण योग दे रहा है। हे राजन् ! उसके अनग स्थलों पर श्यामता चढ़ रही है, किशोरता के साथ साथ कटि क्षीण होती हुई एक अद्वितीय शोभा का भण्डार होरही है। हे राजन् ! हम लोग क्या कहें उसकी उपमा न तो हम विवाहिता दमयन्ती से दे सकते है, न हम उसकी उपमा शची से दे सकते है जिसका पति देवपति इन्द्र है, न हम उसे लक्ष्मी कह सकते है जोकि विषैले शेष नाग पर विराजमान है, न हम उसको रति कहने मे समर्थ है जो कि सदैव अपने पति के अतनु होने के दुःख मे दुखित होने के कारण क्षण भर कल नहीं पाती, न हम दुष्ट रावण की स्त्री मदोदरी से ही उसकी उपमा दे सकते हैं। हे पृथ्वीराज ! इच्छनी कुमारी की इस समय वह अवस्था है जिस की चाह में सुवर कवि हमेशा रहते हैं और उन्हें वह समय बड़ी कठिनता से प्राप्त हो सकता है।

पृथ्वीराज ने लग्न लेकर आए हुए मनुष्यो को विदा करके बारात की तैयारी की। कुछ थोड़ी सी सेना और कन्ह निड्डुर, बली गहलौत, भौहा चदेल, वीरसिंह परिहार, दाहिम कैमास, चामुडराय, आजान-बाहु लोहाना और गुरू रामप्रोहित को साथ लेकर अषाढ़ बदि ३ को बारात चली। प्रकृति के प्रभाव से बादलों ने उमड कर सूर्य को आच्छादित कर लिया और मद मद सुगधित वायु बहने लगी जिससे बारात कुशलतापूर्वक आनन्दध्वनि करती हुई प्रसन्नतापूर्वक आबू के निकट जा पहुची। बारात के आगमन की खबर जब जैतराव को लगी तो वह भी अपनी चतुरंगिनी सेना सज कर उचित आडबर के साथ अगवानी करने के लिये आगे बढ़ा और नगर के बाहरही बरात से जा मिला। दोनों सेनाओं का परस्पर मिलाप होते हुए ऐसा ज्ञात होता था मानों श्रावण भादों के गरजते हुए गभीर बादल समुद्र से मिल रहे हों। इस प्रकार मिलाप होकर वह आनन्द उनमत्त दोनों दल आबू नगर मे पैठा जहा द्वार द्वार पर बदनवार, तोरण, कलश, पताकों की छवि अद्वितीय छटा दिखा रही थी। आबू नगर के समस्त हाट बाट चौहटो पर साफ सुथरे सुगधित जल का छिडकाव था। ऊपर अट्टालिकाओ पर सोलहों शृंगार और बारहो आभूषणों से सुसज्जित मगलामुखी महिलाएँ मधुर मधुर गीत गान करती हुई पृथ्वीराज

की छबि देख रही हो थीं और इधर पृथ्वीराज के वीर सामन्त उनके गान की तान में मस्त होकर अपने लालची लोचनों को छबिसुधारस पान कराते चले जाते थे। इस प्रकार मत्त मतग की मद मद चाल से जब बारात राजद्वार पर पहुची तो वहा के तोरण बदनवार पताकाओं तथा अन्य मागलीक वस्तुओं का विस्तार कहना तो व्यर्थही है। द्वार पर सहस्त्रो सुहागिन स्त्रियाँ स्वर्णकलश लिये खड़ी मगलगान कर रही थीं। दुलहा के द्वार पर पहुचते ही सबने मोतियो के प्रेमाच्छत छोडना आरभ किया। ब्राह्मणो ने वेदध्वनि आरभ की, और गान वाद्य होते हुए पृथ्वीराज का टीका होने लगा। पृथ्वीराज की छवि देख कर इच्छनी कुमारी की माता के आनन्द का तो पार ही न था। टीका होजाने पर बारात सादर जनवासे मे पहुचाई गई।

उस दिन रात भर विश्राम करने पश्चात् दूसरे दिवस प्रात:काल जैतराव स्वय जनवासे को गया और विनयपूर्व्वक पृथ्वीराज सहित सब बारात को भोजन के लिये लिवा लाया। सुखपूर्व्वक भोजन हो जाने पश्चात् इधर तो सखियाँ उबटन स्नान करवा कर नाना प्रकार के वस्त्र आभूषणों से इच्छनी कुमारी का शृङ्गार करने लगीं, उधर दूलह का शृङ्गार होने लगा। लग्न आजाने पर दूलह ने मडप में प्रवेश किया और स्त्रियों ने मंगलगान आरम्भ किया। विवाह की समस्त सामग्री तो पहिले ही से प्रस्तुत करके चौक पूर वेदिकादि रची हुई थी। लग्न का वेध होतेहीं पंडितो ने दूलह दुलहिन की गाठ जोड कर उन्हे पेट पर बैठाकर गणेशपूजन किया। इसके अनन्तर नवग्रह कुलदेवता अग्नि ब्राह्मण आदि का पूजन कर शाखोच्चार किया गया। उस उपस्थित ब्राह्मण मडली ने वेदमत्र उच्चारण करते हुए दूलह दुलहिन को आशीर्वाद दिया। अन्त मे सलप राज निज रानी सहित गाठ जोडे हुए मडप में आए और वेद विधान युत इच्छनी का कन्यादान करके पृथ्वीराज से विनीत भाव से बोले कि हे भद्र सोमेससुत! मै यह कन्या आपकी सेवा मे समर्पण करता हू सो इसे अपनाइए।

यह सुन कर कन्ह चौहान आनन्द से बोल उठे कि हे सलपराज यह आनन्दमय दपति सदैव दिल्ली गढ में इस प्रकार शोभित रहेगें जैसे शिव पार्वती सहित कैलाश की शोभा बढाते है।

इस प्रकार लग्न साध कर पृथ्वीराज जनवासे मे आए। पीछे से ज्योनार का बुलावा आया। जिस के साथही सब बारात ज्यौनार को गई। नाना प्रकार के खट्टे, मीठे, मधुर, तीखे, सलौने इत्यादि षट रस व्यजन परोसे गए। सबने आनन्दपूर्व्वक भोजन करना आरम्भ किया। उधर स्त्रियों ने गाली गाना आरम्भ किया जिसे सुन कर वीर बारातियों का चित्त द्विगुणित प्रसन्न हो रहा था। इस प्रकार ज्यौनार हो जाने पर दूसरे दिवस पलकाचार हो जाने पर कुमारकोलेऊ होकर पृथ्वीराज दुलहिन सहित जनवासे में आए और अगनित द्रव्य कवि, चारण, ब्राह्मण और भिक्षुकों को लुटाया गया। उधर से सलप राज का भेजा हुआ दहेज भी आया जिसमे एक हजार रथ जिसमे मोतियो की झालरें लग रही थीं उनपर एक एक नायिका अपनी दो दो दासियों सहित सवार थी। साथ मे सौ हाथी थे जोकि लचो का आभूषण पहने थे। घोड़े ऊँट आभूषण इत्यादि का वर्णन ही क्या करना है। इस प्रकार दहेज देकर भी सलप राज ने सतुष्ट न होकर लज्जा प्रगट की। बारात के चले जाने पर बचा हुआ अन्न पाच दिन पर्य्यन्त आबू की समस्त प्रजा में बाँटा गया।

जिस समय बारात बिदा होने लगी उस समय सलपराज ने एक हाथी सौ घोडे ऊनी सूती, पश्मी, रेशमी, और जरकसी पाच सिरोपाव दूलह की भेंट किए। साथही इसके इच्छनी कुमारी के जमदार में अकूत बहुमूल्य वस्त्र भर कर दिए गए, गगाजमनी दस कलश, एक गगाम, दस सोने के थाल, बीस रत्न जडित लोटे और बटलोही इत्यादि दिए गए, एक बीस मन का बडा कोपर और १०० मन का हडा, रेशम की डोरियों से विने हुए अगनित पलग पीनसें भी दी गई, दास, दासी इत्यादि कुमारी की पीनस के इर्दगिर्द चलने थे। इन सब डोलियो के आगे सलप राज के भेजे हुए

अन्यान्य परिकर के लोग चलते थे। पृथ्वीराज के वीर सामतो को भी सलष राज ने सादर सिरोपाव पहनाए, तथा एक एक अंगूठी और एक एक घोडा भेट दिया। इसके सिवाय बारात के अन्यान्य राज्यकर्मचारियों और महाजनो और परिकर के लोगों को यथायोग्य भेट देकर सानन्द सलषराज ने बिदा किया और आप स्वय बारात को पाच कोस तक पहुँचाने आए। लौटने समय सलषराज ने पृथ्वीराज से विनीतभाव से निवेदन किया कि हे वीरपति चौहान मुझ से जो अपराध हुआ हो क्षमा करना, मेरे पास आपको देने योग्य कुछ भी नहीं है इससे मै आप की सेवा मे आजन्म के लिये अपना सिर समर्पण करता हू। इस प्रकार निर्विघ्नता से इन्छनी कुमारी को व्याह कर सानन्द सकल बारात अजमेर जा पहुची। बारात के दूलह दुलहिन सहित सकुशल अजमेर आजाने पर समस्त नगर निवासी आनन्द मे उमडे न समाते थे। बालक, वृद्ध, युवा, स्त्री, पुरुष सब ही आनन्द मे मग्न थे।

इस प्रकार कथा सुन कर कविचद की स्त्री बोली कि हे पति अब कुछ इन्छनी कुमारी के सौन्दर्य्य का वर्णन कीजिए। यह सुन कर कविचंद बोले कि हे प्रिया उस अद्वितीय सुन्दरी इन्छनी कुमारी के सौन्दर्य्य को मै वर्णन करू ऐसी सामर्थ्य मेरी जिह्वा नहीं है, किन्तु सुन प्रिये तेरे चित्तविनोदार्थ कुछ कहता हूं। इस प्रकार प्रेम भरे वचन कह कर कविचद ने इन्छनी कुमारी का नख सिख, मनोहर गद्य मे वर्णन करना आरम्भ किया और कविचद की स्त्री को सुनते सुनते प्रातःकाल हो गया।



मुगल युद्ध कथा।

[पन्द्रहवां समय।]

वीर पृथ्वीराज चहुआन ने धूमधाम से इन्छनी कुमारी को व्याह कर जब आबूगढ से अजमेर की ओर कूच किया तो यह समाचार पाकर मेवात के मुगल सरदार को चौहान वश से निज वंश का पूर्व्व वैर स्मरण हुआ और अपने पूर्वजो का बदला लेने का यही एक अच्छा अवसर जान कर छिपके उसने पृथ्वीराज को मार कर सब साज सामान लूटना चाहा इसलिये मुद्गलराय ससैन्य सन्नद्ध होकर जमुना के किनारे किसी औघट घाट पर पृथ्वीराज की बाट रोक कर डट रहा।

पृथ्वीराज की बरात का पडाव जमुना के किनारे वनप्रान्त मे पडा हुआ था और आधी रात के समय सब लोग पंथ की थकावट से थकित हो कर निद्रा में निमग्न हो रहे थे, केवल कैमास जागते थे। पासही एक वृक्ष पर घुघ्घू की बोली सुन कर वे विचारमुग्ध होकर चारो ओर देखने लगे। तो पाते क्या है कि निड्डुरादि सब सामन्त पडे सो रहे है, इस बडे दल बल मे कोई भी सचेत नही है, और बाई ओर साक्षात् भगवती की मूर्ति कुछ कह रही है जिसको कि वे समझ न सके इसलिये उन्होंने प्रोहित गुरुराम को सचेत करके उक्त वृत्तान्त आद्योपान्त कह सुनाया और पूछा कि इसका तात्पर्य्य अब आप बतलाइए। तब गुरुराम ने उत्तर दिया कि इस विषय मे कविचंद से पूछिए वे इस का यथार्थ उत्तर देगे। तब कैमास ने कविचद को सब हाल कह सुनाया जिसे सुन कर कविचद ने इस प्रकार कहना आरम्भ किया कि राजा पृथ्वीराज के पूर्वजो मे आना नाम से एक राजा हो गया है जिस के दस पुत्र थे और परस्पर सदैव विरोधी रहते थे। इससे वे इकट्ठे न रह सके और सब तीन तेरह हो गए, केवल बीसल देव जी के पिता यहा अजमेर की गद्दी पर रहे और वे लोग आपस मे मिलकर इस राज्य के शत्रु हो गए। जिस समय अजमेर मे बीसलदेव जी राज्य करते थे उस समय उस विरुद्ध दल का स्वामी जैसिंह नाम से एक क्षत्री था। इस ने जब बीसलदेवजी के राज्य मे उत्पात मचाया तो उन्हो ने इसे मार कर भगा दिया और वह जाकर पर्व्वत मे रहने लगा। निदान तब से सोमेश्वरजी के समय तक वे खटपट करते ही रहे। अन्त में सोमेश्वर जी ने उन्हे हार पर हार देकर ऐसा खदेडा कि वे जाकर रोमियो की शरण मे रहने लगे और वह भूमि आबू के प्रमार राजाओ के हाथ लगी जिस वंश मे कि अब तक आबू का राज्य स्थित है। अब जब सोमेश्वरजी के पुत्र चहुआन–कुल–कमल राजा पृथ्वीराज राजसिहासन पर विराजमान हुए तब उन दुष्ट मुगलो की होनहार ने उन्हे फिर से उत्तेजित किया है किन्तु यह अवश्य है कि उनका तारा-गण के समान तेज पृथ्वीराज के प्रताप के सम्मुख मलीन होगा। यह कथा सुन कर प्रसन्न हो सब लोग जहा के तहां निद्रानिमग्न हुए।

प्रातःकाल होते ही पृथ्वीराज ने नींद से उठ कर नित्यक्रिया सध्यावदनादि से निश्चित होकर वस्त्र पहिन शस्त्र लगा घोड़े पर सवार हो कर शिकार खेलने की तय्यारी की। साथ मे सात पाच सैनिक और सामत भी हो लिए। जिस समय पृथ्वीराज निर्जन बन प्रान्त मे पहुँचे तो मुगलराज ने रास्ता रोक रक्खा, यह देख कर वीर पृथ्वीराज लवलेश मात्र भी भय न करके शत्रुओं के बीच में धस पडे और बनैले हिसक पशुओं का शिकार करने के स्थान में उन पुरानन धर्म्मशत्रु नरपशुओं का शिकार करने में प्रवृत्त हुए। पृथ्वीराज के सामंत सिपाही भी जहा तहा लोहा झाडने लगे। इस प्रकार मार होते होते क्षणमात्र में ही पृथ्वी-राज रूपी वडवानल ने उस यवन दल समुद्र को नाश कर दिया। वीर राजपूतों की मार को मुगल के साथी सह न सके। इसलिये जिसे जहां राह मिली सब तीन तेरह होकर भाग निकले।

चहुआन के सामंतों ने मुगलराज को बंदी कर लिया। इस प्रकार मुगलराज को बंदी कर नवल नव वधूटी इन्छनी कुमारी सहित पृथ्वीराज आनं से अजमेर में आ पहुचे।



पुंडीरदाहिमी विवाह कथा।

[सोलहवां समय।]

इच्छनी कुमारी का विवाह हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया पृथ्वीराज का वह बर्ष नवीन मुग्धा नायिका इच्छनी कुमारी के साथ बडे ही आनन्द प्रमोद में व्यतीत हुआ, किन्तु राजाओं का चित्त स्थिर नहीं रहता। पृथ्वीराज अपने पराक्रम से शत्रुओं को पराजित कर ज्यों ज्यों नित प्रति नव कीर्त्ति प्राप्त करता जाता था त्यों त्यों उसे नित नवयोवनाओं के संग कामक्रीडा की इच्छा होती थी। निदान जब पृथ्वीराज ने चन्दपुडीर की कन्या के रूप गुण और यौवन की प्रशसा सुनी तो उसका लालची चित्त उस कमलकली का मकरन्द रूप पान करने की लालसा में उनमत्त सा हो उठा और उसने अपनी यह इच्छा चंदपुडीर पर प्रगट की जिसे सुन. कर चदपुडीर ने भी प्रसन्नतापूर्वक अपनी सुकुमार कुमारी को पृथ्वीराज के साथ ब्याह देना स्वीकार कर लिया और यथासंभव शीघ्र ही उत्तम लग्न ठहरा कर पृथ्वीराज को लग्न चढ़ा सुख सारे से अपनी कन्या का विवाह उसके साथ कर दिया।

विषयासक्त पुरुष की जितनी इच्छा पूर्ण होती जाती है उतनी ही उसकी विषयबासना और बढ़ती है। नवीन फल, फूल तथा स्त्री को देख कर चित्त में चोभ उतपन्न होना तो स्वाभाविक ही है। इधर तो पृथ्वीराज चदपुडीर की नवयोवना कन्या के साथ केलक्रीड़ा कर ही रहा था उधर दाहिमी कैमास की बहिन के रूप यौवन की प्रशंसा सुन कर उस से भी ब्याह करने की उसने इच्छा प्रगट की। कैमास के पिता ने भी यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और प्रसन्नतापूर्व्वक अपनी दोनों कन्याएं पृथ्वीराज को ब्याह दी और बरात बिदा होने के समय आठ सखी तिरसठ दासी और बहुत से हाथी घोड़े वस्त्र आभूपणादि दहेज में दिए। पृथ्वीराज इस प्रकार चंदपुडीर की पुत्री पुंडीरदाहिमी के साथ विवाह कर के इस केलकीड़ा में उनमत्त मतंग की भाति प्रवृत्त हुआ॥



भूमिस्वप्न प्रस्ताव।

(सत्रहवां समय।)

कुँअरपन में पृथ्वीराज को आखेट से बड़ी प्रीति थी। एक समय पृथ्वीराज अजमेर के पश्चिम प्रान्त के रमने में शिकार खेलने गए। इनके साथ में लोहाना, लगरीराय इत्यादि सब सामन्त और अनगिनत हाथी घोड़े और पदाति सैनकों की भीड़ थी। इस दल बल के विषम कोलाहल से सारा बन गूंज उठा। मेघस्पर्शी पहाड़ों और उनकी कंदराओं में उस कोलाहल की ध्वनि प्रतिध्वनित हो कर भयानक रूप से गूंज उठी, जिसे सुन कर तद्वनवासी जीव भयभीत हो कर आतुरता और भय से भौचक से भटकने लगे। एक गिरिगुहा में सोता हुआ सिंह उक्त कोलाहल से उकता कर उठ बैठा और अत्यन्त क्रोधित हो कर पृथ्वीराज के इस सेनसमूह की ओर बढ़ा। सिंह की विकराल आकृति को देख कर घोडे आदि पशु भभक उठे और बनरखो ने यह खबर पृथ्वीराज को दी जिसके सुनते ही वीर पृथ्वीराज धनुष पर बाण संधान कर आगे बढ़ा और सिंह सिंहनी दोनो में से सिंह को ही लक्ष कर के उसने बाण छोड़ा किन्तु निशाना खाली गया। तब पृथ्वीराज तलवार लेकर झपटा और उधर से अत्यन्त कुपित होकर साक्षात् कराल काल स्वरूप सा वह सिंह भी पृथ्वीराज पर झपटा किन्तु पृथ्वीराज ने एक ही हाथ में उसे मार गिराया जिसे देखते ही सब सेना में आनन्दध्वनि हो उठी।

सब सेना में जहां तहां पृथ्वीराज की वीरता का बखान होने लगा और पृथ्वीराज अपने सब सामन्तों सहित एक वृक्ष की छाया में बैठ कर श्रम दूर करने लगा। शिकार में मारे हुए जानवरों का ढेर भी एक तरफ लगा दिया गया। तब सजमराय का पुत्र पृथ्वीराज को अपने बलवीर्य्य की परीक्षा देने की इच्छा से उठा और एक एक हाथ में भारी भारी गज कुंभ को फाड़ने लगा और एक बाण संधान करके जो उस हन्त पशुओं के ढेर में उसने मारा तो वह बाण बड़े बड़े वराह, चीते, गेंडा, हिरण, हाथी आदि के शरीरों को पार कर वारापार हो गया जिसे देख कर पृथ्वीराज ने बड़ा आदर और अत्यन्त प्रसन्नता प्रगट करते हुए उस नव युवा कुमार को बहुत से प्रशंसित शब्दों से मनोरंजन कर के कहा कि मैं तुझ पर बड़ा प्रसन्न हूं अभी कहना व्यर्थ है मैं तुझे ऐसा पारितोषिक दूंगा कि तू भी प्रसन्न हो जायगा। इस के पश्चात सब लोग आगे बढ़े तो देखते क्या हैं कि एक सर्प अपनी बामी के द्वार पर एक हाथ ऊंचा फन उठाए खड़ा है और एक देवी * उसके फन पर नृत्य कर रही है। यह देख कर सब ने यह बात राजा से कही जिसे सुन कर पृथ्वीराज ने अत्यन्त आश्चर्यान्वित हो कर अपने दरबार के प्रसिद्ध ज्योतिषी महिर नामक पंडित से इसका फल पूछा, जिस पर महिर ने उत्तर दिया कि इस का परिणाम तो मेरे विचार में यह आता है कि आप को अनायास कुछ बड़ा धन और भूमि मिलनी चाहिए और आप के शत्रुओं का क्षय हो। इतने में सवारी और आगे बढ़ी तो पृथ्वीराज ने स्वयं उक्त दृश्य अपनी आंखों देखा कि उस सर्प के फन पर नाचती हुई देवी राजा को देख कर प्रसन्नता प्रगट करती थी और उस सर्प के फन पर से उड़ कर वह पास वाले एक रसाल वृक्ष पर जा बैठी और चोंच से कतर कर उसने एक फल नीचे डाला। यह देख कर ज्योतिषी महिर आगे बढ़ा और उसने वह फल ला कर राजा को दिया और कहा कि यह शुभ शकुन का प्रसाद लीजिए। इतने में उस सर्प की सर्पिनी ने आकर सर्प को कुछ खाद्य पदार्थ अर्पण किया जिसे सर्प ने प्रसन्नतापूर्व्वक खा लिया और तब वह सर्प सर्पिनी दोनो चल दिए। यह देख कर पृथ्वीराज ने फिर महिर से पूछा कि इसका भी फल कहिए तब उसने उत्तर दिया कि इस शकुन का फल यह सिद्ध होता है कि कोई भूम्याधिकारी तुम्हें अपना भूभाग स्वयं समर्पण करके आप तुम्हारी सेवा करे। यह सुन कर

---

* प्रसंग से मालूम होता है कि देवी लाल की नाईं छोटी खूबसूरत चिड़िया को कहते हैं।

पृथ्वीराज वडा प्रसन्न हुआ। कुछ दूर और आगे वढ कर सुन्दर जल और छाया से आच्छादित स्थान देख कर पडाव डाल दिया गया। उस दिवस मध्यान्ह मे उस स्थान पर भोजन पान हुआ और बेला ढलने पर वहां से अजमेर की तरफ सबने कूच किया।

उसी दिन सायकाल को पृथ्वीराज सेना सहित सानन्द अजमेर पहुँच गया। रात्रि को जब कि पृथ्वीराज अपने राजमहल मे सुखशैय्या पर सुसुप्ति अवस्था मे बेसुध पड़ा हुआ था तो देखता क्या है कि पीत वस्त्र धारण किए माथे पर लाल तिलक दिए केश बिखराए हुए एक अद्वितीय सुन्दरी स्त्री उस के पास आई। पृथ्वीराज ने उस से पूछा कि तू कौन है ? तब वह स्त्री बोली कि हे वीर पृथ्वीराज मैं वीरभोग्या भू देवी हूं। मेरे हृदय मे सदैव वीर पुरुष की ही इच्छा रहती है। मै अपने सूक्ष्म हाव भाव और कटाक्ष से वीर पुरुषो का ही चित्त क्षोभित करती हू। इस के विरुद्ध कायर पुरुष की ओर मेरी देखने की भी इच्छा नही होती और मैं वीर पुरुषो के लिये अनेकानेक कष्ट सह कर भी नाना भाति के उत्तमोत्तम गुणमय पदार्थ उत्पन्न करती हू। उस भूदेवी की लावरयता का मधुर पराग पान करके पृथ्वीराज का मन मकरन्द एक तो प्रथम ही से उन्मत्त सा हो रहा था तिस पर उस के ऐसे बचन सुन कर तो उसके आनन्द का ठिकाना न रहा उस का मन एक बिचित्र भाव से क्षोभित हो उठा। भूदेवी ने पुनः कहना आरभ किया कि हे पृथ्वीराज खटूटू बन मे अगनित धन धरा हुआ है सो वह तुझे प्राप्त होगा और उसने कहा कि अजमेर मे अजय पाल नामक एक प्रतापी पुरयवान राजा राज्य करता था। एक समय प्रातः काल जब कि वह पूजन कर रहा था एक ब्राह्मण ने आकर उससे एक सहस्र मुद्रा दान चाहा। होतव्य बश राजा ने देने से इन्कार कर दिया तब उस दरिद्र ब्राह्मण ने कुपित हो कर शाप दिया कि यदि इस द्रव्य पर इतना स्नेह है तो जा तू जन्मान्तर में भी सर्प होकर इस की रक्षा करता रहे। हे राजा तू नही जानता कि धन का सचय करके सत्कार्य्य मे व्यय न करना बडी भारी मूर्खता है। सचित की हुई माया, मध्य दिन की छाया और विषय का सुख सब क्षणिक होते है।



दिल्लीदान प्रस्ताव ।

[अट्ठारहवां समय ।]

एक समय पृथ्वीराज सभा में विराजमान थे कि दिल्ली से एक दूत आया और उसने एक पत्र कैमास को दिया । कैमास ने वह पत्र पढा तो उसमें अनगपाल की तरफ से लिखा था कि मैं अब वृद्ध हुआ इसलिये तप करने की इच्छा से बदरिकाश्रम को जाना चाहता हू और अपना यह दिल्ली का राज्य तथा सम्पूर्ण वैभव आपको सकल्प करने की मेरी इच्छा है । पत्र सुन कर सब लोग विचार करने लगे । कोई कहता है कि इसी समय दिल्ली चलाना चाहिए, कोई कहता है कि पृथाकुमारी का विवाह हो जाने पश्चात जाना अच्छा होगा । निदान कैमास ने वह पत्र सोमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किया । तब सोमेश्वर जी ने सब सामन्तों और विचारवान राज्य कर्म्मचारियों को एकत्र करके एक सभा की जिसमें चंदपुडीर के मत के अनुसार यही निश्चय हुआ कि आता हुआ राज्य छोड़ना भला नहीं । यह निश्चय हो जाने पर सब ने कविचद से पूछा कि हे वरदाई, अब यह बतलाना आप का काम है कि अनगपाल अपनी परपरा संपत्ति पृथ्वीराज को क्यों समर्पण करते है ? यह सुन कर कविचद ने देवी का ध्यान किया और अनगपाल और व्यास का सवाद जो कि दिल्ली किल्ली की कथा में वर्णन किया जा चुका है यथावत कह सुनाया और कहा कि दिल्ली में पृथ्वीराज का राज्य खूब तपेगा । यह सुन कर पृथ्वीराज ने दिल्ली जाना निश्चय कर लिया और दूसरे दिन अपनी अतरग सभा में उक्त आगत दूत को बुलाकर पूछा कि हे चतुर दूत ! यह तो बतलाओ कि मेरे नाना अनगपाल जी को सहसा वैराग्य उत्पन्न होने का कारण क्या है ? पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुन कर वह दूत अनगपाल के स्वाभाविक गुणों तथा उसकी नीति निपुणता की प्रशसा करता हुआ बोला कि अभी किञ्चित ही समय व्यतीत हुआ है कि राजा अनगपाल जी ने सुसुप्ति अवस्था में एक स्वप्न में देखा कि सम्पूर्ण तोंअर वश दक्षिण की ओर जा रहा है। ऐसा स्वप्न देख कर राजा की निद्रा भग होगई उसने शयन से उठते ही ईश्वरस्मरण करके मुख प्रक्षालन किया और अपने इष्टदेव नरसिंह जी का स्मरण करते हुए पुनः वह निद्रा में निमग्न हो गया। प्रातःकाल के समय पुनः वह स्वप्न में क्या देखता है कि जमुना जी के किनारे पर एक सिंह बैठा हुआ है और एक दूसरा सिंह उस ओर से पैर करके गया और उक्त सिंह के सम्मुख बैठ गया । दोनों सिंह परस्पर प्रेम प्रकाश करते हुए प्रेमालाप करने लगे कि इतने में अनगपाल जी की नींद खुल गई । इस पर राजा ने अत्यन्त आश्चर्य्यान्वित हो जगजोति नामक प्रसिद्ध राज्यज्योतिषी को बुला कर उक्त स्वप्न का ठीक ठीक फल कथन करने की आज्ञा की । अस्तु ज्योतिषी ने धीरभाव से अपनी विद्या द्वारा विचार कर कहा कि हे राजन् ! जमुना की कगार पर बैठे हुए सिंह तो आप है और उस पार से आया हुआ सिंह आप का दौहित्र पृथ्वीराज है । अब यहा चौहान वश का राज्य स्थापित होना सभव है । अतएव आपको भी उचित है कि आप यह राज्यभार पृथ्वीराज के सिर सौंप कर बदरिकाश्रम में जा भगवदस्मरण कर अपना परलोक सुधारिए । ज्योतिषी की इस भविष्य व्याख्या का प्रभाव महाराज के चित्त पर ऐसा पड़ा कि उन्होंने आप को राज्य दे कर स्वयं बदरिकाश्रम में तप करना ही अपना दृढ़ मन्तव्य निश्चय कर लिया और ज्योतिषी को विदा कर तुरंत ही राज्यमत्रियों को बुला कर अपना मन्तव्य कह सुनाया और उन्हें अपना अपना मत प्रकाशित करने की आज्ञा दी । इस पर सब ने नाना प्रकार की नीतियुक्त युक्तियों को दृढ प्रमाणों से पुष्ट करते हुए राजा को यही मत्र दिया कि आप की यह कल्पना उचित नहीं है किन्तु राजा के मन में एक न आई और उन्होने यह पत्र दे कर मुझे आप की चरण सेवा में भेजा है । यह सुन कर पृथ्वीराज ने दूत को

यह कह कर बिदा किया कि नाना जी को मेरे आने की सूचना दे दो और इधर अपने दिल्ली जाने की उसने तय्यारी कर दी।

पथ्वीराज ने बड़े ठाट बाट से अपने सूर सामन्त और परिकर सहित उत्तम मुहूर्त में अजमेर से दिल्ली को प्रस्थान किया। पृथ्वीराज के दिल्ली पहुँचते ही सम्पूर्ण दिल्ली नगर में घर घर बधाए होने लगे, दिल्ली के हाट बाट चौहटों और गली कूचों में कदली वृक्ष और पुष्प मालाओं की छटा देख पडती थी, घर घर मेघस्पर्शी हवेलियों के गोखों और झरोखों में वरण वरण के वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित मंगलामुखी स्त्रियों की छबि छटा देखते ही मन मुग्ध होता था। निदान अनगपाल जी ने शुभ लग्न ठीक करा के संवत् ११३८ मार्गशीर्ष शुक्ल ५ गुरुवार को मृगशिरा नक्षत्र, सिद्धनाम योग में पृथ्वीराज को दिल्ली के पाट पर बैठाया।

दूसरे दिन दिल्ली और अजमेर की सब सेना सहित पृथ्वीराज की सवारी निकली। आनन्दध्वनि होते हुए नाना प्रकार के गान वाद्यों सहित सवारी सब नगर और मुख्य मुख्य देवस्थानों में होकर राजमहल के द्वार पर आई। सायंकाल के समय बड़ा दरबार लगा। पृथ्वीराज राजगद्दी पर विराजमान हुए। दोनों राज्यों के मुख्य मुख्य राज्यकर्म्मचारी और सरदार लोग अपने अपने अदब से आ आ कर पृथ्वीराज को सादर जुहार करते और यथाशक्ति नजरे देते थे। दिल्ली के राज्यकर्म्मचारी परिजन और महाजन लोग दरबार में आए और पृथ्वीराज को नजरें दे दे कर निज निज योग्यतानुसार सब ने आसन ग्रहण किया। सब ने प्रसन्नतापूर्व्वक पृथ्वीराज को दिल्ली का राजा स्वीकार किया और पृथ्वीराज ने भी अंत में सब को पान सिरोपाव इत्यादि देकर बिदा किया। इधर यह शुभ समाचार सोमेश्वर के पास भेजा गया जिसे सुन कर सोमेश्वर तथा उसकी रानी फूली अंग न समाती थी। अजमेर नगर में भी यह बात घर घर फैल गई और वहां के बाल वृद्ध सभी युवा युवती भी आनन्द में मग्न भाति भांति के उत्सव करने लगे। दूसरे दिन अनंगपाल सब से बिदा हो कर अपनी धर्म्मपत्नी सहित बदरिकाश्रम को चले गए और पृथ्वीराज नीति न्याय सहित दिल्ली का राज्य शासन करने लगा।



अथ माधो भाट कथा।

[उन्नीसवां प्रस्ताव।]

अनंगपाल के बदरिकाश्रम चले जाने पश्चात् पृथ्वीराज ने दिल्ली नगर की दसों दिशाओं में दस भैंसों का बलिदान करवाया और भांति भांति की पूजा होमादि से दिल्ली नगर के ग्राम्य देवताओं तथा निज कुल देवताओं को शान्त कर निश्चिन्तता पूर्वक दिल्ली का स्वच्छन्द राज्यदंड अपने हाथ में लिया।

उधर शहाबुद्दीन को अहर्निशि इसी बात की चिंता लगी रहती थी कि किसी प्रकार पृथ्वीराज से अपने अपमान का बदला लेना चाहिए। जब उसने यह निश्चय जान लिया कि मैं बल करके पृथ्वीराज को परास्त करने मे समर्थ नही हू तब उसने कूटनीति का आश्रय ग्रहण किया और गजनी से माधव भाट नामक अपने एक मुसाहिब को पृथ्वीराज का भेद लेने के लिये हिन्दुस्तान में भेजा। माधव भाट ने दिल्ली मे आकर अपनी उच्च विद्याओं और बुद्धिविलक्षणता से पृथ्वीराज के सभासदो को प्रसन्न करना आरंभ किया। उसने पृथ्वीराज के खास कलम (पेशकार) धर्मायन कायस्थ पर तो ऐसी मोहनी डाली कि वह तन मन से उसका चेरा हो गया। उसी के द्वारा वह राज्यसभा तक जा पहुंचा। माधव भाट छहो शास्त्र और अट्ठारहो पुराण का मर्म जानने वाला था, ज्योतिष और काव्य शास्त्र में पारगत तथा संस्कृत और पारसी भाषा मे विशेष योग्यता रखता था। उसने अपने गुणों से पृथ्वीराज को भी ऐसा मोहित किया कि दरबार में प्रति दिन उसका आदर बढ़ने लगा। राजा की विशेष कृपा होने के कारण अन्यान्य सामन्त भी उस पर प्रेम करने लगे और जब उसने अच्छा अवसर पाकर पृथ्वीराज के राजनैतिक तथा व्यावहारिक चालों की पूर्ण मीमांसा और जांच कर ली और प्रथक प्रथक शूर वीर, सामन्त, राज्यकर्म्मचारी और प्रजा की रीति भांति का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया। तब एक महीने पश्चात् उसने विदा मांगी। निदान राजा ने भी उसके छद्म वेष की ओर कुछ भी ध्यान न देकर बहुत सा धन रत्न देकर उसे विदा किया।

माधव भाट दिल्ली से चल कर कुछ दिनो में रास्ते का भेद भाव लेता हुआ गजनी जा पहुंचा। उस के आने की खबर पाकर शहाबुद्दीन ने तुरत ही उसे दरबार में बुलाया और पूछा कि पृथ्वीराज के क्या समाचार लाए सो कहो? तब माधव भाट ने पृथ्वीराज के दिल्ली गोद जाने और अनंगपाल के तप करने के लिये बदरिकाश्रम जाने का समाचार कह कर पृथ्वीराज की समस्त बाह्य और अन्तरंग नीति रीति का विवरण कह सुनाया, जिसे सुन कर डाह के मारे शहाबुद्दीन का हृदय जल उठा। मित्र की सम्पत्ति देख कर प्रसन्न होने वाले तो थोड़े ही सज्जन होते हैं किन्तु शत्रु के वैभव पर डाह करना तो स्वाभाविक ही है। पृथ्वीराज एक तो प्रथम ही बलवान था अब उसके पास द्विगुण सम्पत्ति और सैन बल हो जाने से वह शहाबुद्दीन को निपट अजेय देख पडने लगा किन्तु उसने हिम्मत न हारी। उसने उसी समय तातार खा, खुरसान खा, नशरत खा, ममरेज खा, आजान खा, सुलतान खा, मारूत खा, मीर जम्मन खा, रुस्तम खां, गजनी खा, मीर मुहम्मद, शेख चम्मन खा आदि सरदारों को बुला कर एक अन्तरंग सभा रच कर माधो भाट का कहा हुआ सारा समाचार यथावत् कह सुनाया और पूछा कि अब इस बलवान शत्रु को परास्त करने का शीघ्र यत्न क्या करना चाहिए। जब तक पृथ्वीराज से अपने अपमान का बदला ले लूंगा तब तक मुझे संसार शून्य देख पडेगा। शहाबुद्दीन के ऐसे बचन सुन कर सब ने एक मत हो कर उत्तर दिया कि हुजूर की जो ऐसी इच्छा है तो हम लोगो को कोई उजर नहीं। हम तो उसी से प्रसन्न है जिस में जहांपनाह की प्रसन्नता हो। इसलिये बडी सेना सज कर शत्रु को जीता जाय। पर हम लोगो को माधो भाट की बातो पर विश्वास नही होता।

वह आप का नौकर है पर फिर भी हिन्दूही तो है। न जाने उस की बात मे क्या भेद हो इसलिये जब तक यहा फौजी तय्यारी की जाय तब तक एक ऐयार उस ओर भेज दिया जाय कि वहा की ठीक ठीक खबर मिल जाय। निदान सर्वसम्मति अनुसार महमूद खां नामक चतुर दूत दिल्ली को भेजा गया और यहा जहा तहा बड़े जोर शोर से फौज की तय्यारी की जाने लगी। वैतनिक फौज के अतिरिक्त अन्यान्य मातहत जागीरदार तथा अन्य मित्र मुसलमानी राज्य की सेना का जोड तोड करके बडा भारी दल इकट्ठा किया गया।

इधर महम्मद खा सूफी* वेष बदल कर दिल्ली की तरफ रवाना हुआ। उसने दिल्ली में पहुँच अपने आचार के करिस्मों से नगर निवासियों का चित्त प्रसन्न करते हुए अपना यथोचित कार्य्यसाधन करना आरम्भ किया। अनगपाल का वनवास करना और दिल्ली में पृथ्वीराज का राज्य स्थापन होना तो उसे सहज ही में मालूम हो गया। तत्पश्चात उसने धर्मायन के पास जाकर उसको बादशाह तथा माधो भाट का पत्र दिया। धर्म्मायन ने दूत को सादर स्थान दिया और पृथ्वीराज की राज्य प्रणाली का सब ब्योरा समझा कर कहा कि पृथ्वीराज को यहा बास करते सात पक्ष अर्थात् साढे तीन मास हुए है, कैमास को पाच पक्ष, चामुण्ड राय को चार पक्ष, लोहाना अजानबाहु को १॥ पक्ष और कान्ह को यहा निवास करते १ पक्ष हुआ है। शनै शनै. अजमेर से सब सामत यहा आकर वास करेंगे। शेष शुभ समाचार पत्र मे लिख कर उसने उसे गजनी को बिदा किया।

महम्मद खा ने उसी अपने पूर्वोक्त सूफी वेष में आकर शहाबुद्दीन को सलाम किया। शहाबुद्दीन ने उसे परिचान कर बडे आदर से पूछा कि कहो क्या समाचार है। तब उसने दिल्ली में केवल छः दिन रह कर धर्म्मायन की कृपा से जो छ महीने का समाचार पाया था सो सब कह सुनाया और कहा कि दिल्ली की समस्त प्रजा पृथ्वीराज की नीति और उसके व्यावहारिक आचरणो से परम सतुष्ट है। सब सूर वीर सामन्तो का तो यह हाल है कि वे पृथ्वीराज की इच्छा से भी आगे चलने वाले है और इसी प्रकार वह भी उनकी मान मर्य्यादा का सदैव ध्यान रखता है। उसकी प्रजा मे कोई भी दरिद्र नहीं है सब लोग अपने अपने वर्णाश्रमानुसार कार्य्य करते हुए अपना धर्म्म पालन करते है और मुसलमानो के सब परम शत्रु है। इसके ऐसे वचन सुन कर शहाबुद्दीन ने अपने मंत्री तत्तार खां को बुलाया और दूत का आप कथनोपकथन उसे यावत् सुना कर उससे पूछा कि अब क्या करना चाहिए। पृथ्वीराज के प्रबल प्रताप की कथा सुनकर तो मेरा हृदय कंपित होता है। यह सुन कर तत्तार खा बोला कि जिस प्रकार पृथ्वीराज के राज्य शासन का समाचार मिला है वास्तव में वह हम लोगो के लिये भयप्रद है और जो कुछ समाचार है वह सर्वथा ठीक भी है किन्तु इससे हमको हिम्मत न हारनी चाहिए क्योंकि धर्मायन कायस्थ की, जो कि पृथ्वीराज के दरबार का एक प्रधान कर्म्मचारी है और हमारा सच्चा सहायक है, सहायता से हमे अपनी विजय प्राप्त होने की पूर्ण आशा है। अतएव अब बिना बिलब किए सेना सज कर दिल्ली पर आक्रमण करना चाहिए। इस प्रकार तत्तार खा की उत्तेजक सलाह से शहाबुद्दीन का दिल भी भर गया और उसने जहा तहा पत्र परवाने भेजने की आज्ञा दे कर अपने लश्कर के तय्यार होने की आज्ञा दी। दूसरे दिवस प्रातःकाल ही गाजे बाजे बजाती हुई शाही सेना राज्य महल के सम्मुख आ उपस्थित हुई। शहाबुद्दीन भी घोडे पर सवार होकर सेना मे आ मिला और हिन्दुस्तान की ओर चल पडा। उसने गजनी से बारह कोस चल कर नागेल नामक गाव में पडाव डाल दिया और तीन दिन पर्य्यन्त वह वहा ही रहा, जब तक उसके अन्यान्य जागीरदार भेमार लोग अपनी अपनी सेना सहित रग बिरंगे निशानों को फहराते हुए शाही सेना में आ मिले।

* एक मुसल्मानी फकीरो का एक फिरका होता है जो कि बडे आचार से रहता है।

शहाबुद्दीन इस प्रकार यहा पर दो लाख फौज इकट्ठी कर के आगे बढ़ा और सिन्ध नदी तक नियमानुसार पडाव पर पडाव डालता हुआ चला आया। सिंध नदी पार कर के दिन रात लगातार कूच करने लगा।

शहाबुद्दीन के सिंध पार करने की खबर जब पृथ्वीराज के कान तक पहुँची तो उसने उसी समय राज्यमंत्री कैमास और सिपह-सालार कन्ह को बुला कर शहाबुद्दीन की धृष्टता का समाचार कह सुनाया और उनका स्पष्ट मत पूछा। तब कैमास ने कहा कि अब इस समय यही कर्तव्य है कि वह अपनी सीमा न चापने पावे। आगे ही बढ कर उसे दण्ड देना उचित है। कैमास का यह मत अन्य सब सामन्तों ने भी स्वीकार किया और दरबार बरखास्त होने पर शहाबुद्दीन के आक्रमण का समाचार सब सेना में कानों कान फैल गया। तब सब शूरवीर धर्म्मशत्रु यवनों को दण्ड देने के लिये उत्साहपूर्वक अपने अपने आने बाने सजकर तय्यारी करने लगे। दूसरे दिवस प्रातःकाल ही चतुरंगिनी सेना सज कर प्रस्तुत होगई। पृथ्वीराज सुनहरे आभूषणों से सुसज्जित हाथी पर सवार हो कर उस दल रूपी जल मे साक्षात् कमल सा सुशोभित होने लगा एक तरफ से कैमास ने और एक तरफ से कन्ह ने समस्त सेना की जाच की और तब पृथ्वीराज के आज्ञानुसार प्रस्थान का आदेश दिया गया। आज्ञा पाते ही भाति भांति का जुझाऊ बाजा बजने और मारू राग का गान होने लगा जिससे शूरवीरों का मन उन्मत्त और कायरों का कलेजा कापने लगे। इस प्रकार सत्तर हजार सेना सहित अनियम कूच करते हुए शहाबुद्दीन की सेना से ९ कोस की दूरी पर *पानी पत के मैदान में पडाव जा पड़ा।

उधर से शहाबुद्दीन भी बराबर बढ़ा चला आता था। जब उसकी फौज मुठभेड में आगई तब पृथ्वीराज के आज्ञानुसार * मारू की ध्वनि के सहारे पर सामन्तो ने सेना की मयर व्यूहाकार रचना प्रारम्भ की। निड्डुर और कैमास एक पक्ष पर, अत्ताताई और बलिभद्र दूसरे पक्ष पर रहे। कुछ सेना सहित पृथ्वीराज पिंड स्थान पर स्थित रह कर पैर और नख की रक्षा पर रहे, पज्जून राय पेट पर, चद पुंडीर चोंच और महन सिंह पडिहार कठस्थान पर रहे। इस मयूर व्यूह की रक्षा के लिये सहायक सेना सहित दाहिनी ओर कैमास, और सकट व्यूह रचकर महन सिंह मारू और भोंहा चंदेल सहित चामुड राय अग्र भाग में रहे। इसी प्रकार अन्य अठारह सामन्त पीछे पृष्ठ पर सहायता देने को सन्नद्ध रक्खे गए। कन्ह अपने पक्ष पर आठ अन्य सामन्तो को दृढ़ रखकर आप राजा के पास आकर राजा के (छत्र स्थान पर) खवास खाने में बैठे। मुसलमान सेनापति ने अपनी सेना की अर्धचन्द्राकार व्यूह रचना की जिसकी एक अनी पर खुरसान खा और ततार खा थे और एक अनी पर पीरोज खा था और सुलतान स्वय मध्य-भाग में था। इस प्रकार व्यूह रचना हो जाने पर वीर क्षत्री दल ने यवन सेना रूपी सर्पों के भक्षण करने के लिये उनपर आक्रमण किया। उस समय धौंसों की धुकार और मारू की हुकार सुन कर वीर शिरोमणि शूर वीर फूले अग नहीं समाते थे और कायर पुरुष प्राण के भय से जहा तहा पलायन में तत्पर थे। दोनों ओर के वीर योद्धा लोग अपने अपने स्वामियों की जयप्राप्ति की अभिलाषा से एक दूसरे पर टूट पडे। दोनों ओर के दल बद्दलों से बाण रूपी जल की बौछार पडने लगी, घनघोर तुपक और शतघ्नियों की गर्जना से मेदनी कपायमान होती थी, बीच बीच में चमचमाती हुई तलवारे विद्युत प्रभा को मात करती थीं। उस युद्ध स्थल मे अवयव रहित जीव के धड धड़ाधड़ मेढ़क से कूदते

* मूल पुस्तक में जलपथ करके लिखा है यथा "अति कूचह कूच दल खरिय। जल पथह जाय सु उत्तरिय"॥

* मारू एक विशेष बाजे का नाम है। उस समय में इसी मारू के इसारे पर कवायद सिखाई जाती थी जिस तरह कि आज कल बिगुल से काम लिया जाता है। पाठकों को ध्यान रहे कि फौजी कवायद कोई नई चीज नहीं है।

थे। उधर से खुरसान खा ने आगे बढकर पृथ्वीराज पर आक्रमण करना चाहा तो इधर से कन्ह ने बढ़ कर एकही वार में उसे मार भगाया। कन्ह की इस चोट में खुरसान खा अपनी दो हजार सेना के मारे जाने पर पीछे हटा। सब मुसलमानी सेना के पैर उखड़ गए किन्तु बादशाह के क्रुद्ध होकर धैर्य्य देने पर वे लोग फिर से बटुर पड़े और स्वामिधर्म्म रूपी दीपशिखा पर अपना प्राण पतिगा बारने लगे। शहाबुद्दीन ने इस प्रकार जोर बॉध कर तत्तार खा की सलाह के अनुसार खुरासानखा को फिर से पृथ्वीराज पर धावा करने को कहा कि जिसमें सब का ध्यान उसी ओर जाय और आप तत्तारखां के सहित हरावल तोडने पर मुस्तैद हुआ, किन्तु वीर सामन्तों के सम्मुख उसकी एक भी कला न चली। प्रबल राजपूतो की दपेट से वह अर्ध चन्द्राकार यवन सेना पूर्ण चन्द्रमा स्वरूप बन गई और तब चहुआन रूपी राहु ने उसे सहज ही में ग्रस लिया। शहाबुद्दीन तथा अन्य प्रधान यवन सैनिकों ने अपना सा प्रबध किया किन्तु कुछ भी चारा न चला और यब सेना भाग उठी। तब पृथ्वीराज के आज्ञानुसार प्रमार जैत ने तत्तार खा की अनी का पीछा किया। पृथ्वीराज कन्ह सहित आप अन्य यवन मृगो का शिकार खेलने लगा और चामुडराय ने घेर बार शहाबुद्दीन को कैद कर लिया। यह युद्ध वैसाख सुदि १० बृहस्पतिवार ११३८ को हुआ। इस युद्ध में दोनों ओर के निम्न लिखित सरदार काम आए।

पृथ्वीराज की ओर के।

भीम — मान्य सामन्त
नागदर — कन्ह का पुत्र
श्यामदास — ”
जसधवल — लोहाना का पुत्र
केसरि सिंह — ” का भाई
रनवीर सोलकी — विभुराज का पुत्र
सागरह खीची — प्रसग राव खीची का पुत्र
महन राय — ” का भाई
हरि प्रमार — ” ” ”
वीरध्वज ” — सिंघ राज का पुत्र
भीमसिंह बघेल — ”
लषनसिंह — रामराव का पुत्र

शहाबुद्दीन की ओर के।

शेर खां, सुलतान खा, मारु मीर, मीर जहान, मीर जुम्मन, गजनी खा, मीर महम्मद, मीर फतेह जग, (हसन) खा, अन्नर (अनार) खा ये १० मुख्य सेनापति और अट्ठारह हजार साधारण सैनिक काम आए। उक्त सामन्तों के सिवाय १००० हिन्दू सैनिक और भी मारे गए और दोनों तरफ के ७००० घोडे मारे गए।

चामुडराय जब शहाबुद्दीन को बदी करके उसे पृथ्वीराज के पास लाया, तब पृथ्वीराज के आज्ञानुसार यवन सेना का सब रखत बखत अर्थात डेरा डडा लूट लिया गया। दिल्ली आकर १ महीने पर्य्यन्त बादशाह को कैद रख कर तब बहुत सा दण्ड लेकर पृथ्वीराज उसे छोडा और उससे पाए हुए दण्ड की सपत्ति में अपनी तरफ से भी कुछ मिला करके सब सामन्तों को यथायोग्य बॉट दिया।

इसके आगे अब पृथाविवाह वर्णन करके तब फिर पृथ्वीराज को गडा हुआ धन प्राप्त होने और फिर से बादशाह को बॉध करके छोडने की कथा वर्णन की जायगी।



पद्मावती विवाह कथा ।

[बीसवाँ समय ।]

पूर्व दिशा मे समुद्रशिखर गढ नामक एक सुदृढ दुर्ग था, जहाँ एक विजयपाल नामक यादववंशी क्षत्री राज्य करता था। उसके राज्य की सीमा पूर्व की ओर समुद्र पर्य्यन्त थी। उसके केवल १०००० जिरहबख्तर वाले सवार थे और सब मिला कर वह बहुत से हाथी और तीन लाख पैदल का स्वामी था। उसके राज्य मे प्रजा प्रसन्न और राज्यकोष सब तरह द्रव्य से परिपूर्ण था। उसके दस पुत्र और दस पुत्रियाँ थी। विजयपाल की पद्मसेना नामक रानी बडी ही सुन्दर और राजा को बहुत ही प्यारी थी। उसी के गर्भ से पद्मावती नाम से एक अत्यन्त रूप और गुणवती कन्या उत्पन्न हुई।

पद्मावती जिस प्रकार वयः प्राप्त होती जाती थी उसी प्रकार उसका रुप लावण्य शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के समान प्रति दिन बढ़ता जाता था। उसका अद्वितीय सौन्दर्य्य कवियो के काव्य का आधार, ब्रह्मचारी, मुनिजन तथा पशु पक्षियो का भी मन हरण करने वाला था। कुछ बडी होने पर वह चित्त-विनोदार्थ बाग मे जाने लगी। एक दिन एक सुग्गे के रग रूप पर हृदय से मोहित हो गई और उसे पकड कर महलो मे ले गई। यहा उसे स्वर्ण के पिंजरे में बन्द कर यत्नपूर्व्वक रखने लगी। जिस दिन से वह सुग्गा पद्मावती के हाथ लगा उस दिन से उसे खेल कूद सब भूल गया। वह सब दिन उसी अपने प्यारे सुग्गे की सेवा में रह कर ही अपना चित्तविनोद करती, अहर्निशि उसे राम राम पढ़ाती और उससे वार्तालाप करती हुई दिन व्यतीत करती थी। एक दिन उसने सुग्गे से पूछा कि हे सुग्गे तू बडा चतुर है तुझ से मेरा चित्त बडा प्रसन्न है अब तू मुझे यह बतला कि तू कौन से देश का रहने वाला है? । यह सुन कर सुग्गा बोला कि हे सुन्दरी! मै दिल्ली का रहने वाला हू वहा का राजा पृथ्वीराज है, जो अति पराक्रमी प्रचण्ड प्रताप वाला और महान बलवान है। उसने कई बार गजनी के बादशाह को पकड़ कर छोड़ दिया है। उसका पराक्रम ऐसा है कि उसके धनुष पर लोह गुरुता की प्रशंसा नहीं है और वह शब्द वेधी बाण मारता है। सुन्दर तो ऐसा है कि मानो साक्षात कामदेव का ही अवतार है। पद्मावती पृथ्वीराज के इस प्रकार रूप गुण की महिमा सुन कर उस पर तन मन से मोहित हो गई और उसी समय से निरन्तर पृथ्वीराज के ध्यान में मग्न रहने लगी।

संवत् ११३९ मे जब पद्मावती की अवस्था ब्याह योग्य हुई तब राजा विजयपाल ने अपने कुल प्रोहित को बहुत सा धन रत्न देकर पद्मावती के लिये वर की खोज मे भेजा, वह चलते चलाते जब उत्तर की ओर गया तो वहा पहाड़ी राज्यो मे कमाऊं के राजा कमोदमणि को पद्मावती के योग्य वर जान कर उसने उसे लग्न चढ़ा दिया और घर पर आकर राजा विजयपाल को उक्त विषय की सूचना दी। इस समाचार को पाकर राजा ने राज्यकर्म्मचारियों को ब्याह की तय्यारी करने की आज्ञा दी। उधर से कमोदमणि भी दस हजार सवार तेतीस हजार पैदल और ८४ हाथी और बहुत से ऊंट इत्यादि लेकर बडी सज धज की बारात लेकर समुद्रशिखर गढ को चल दिया। समुद्रशिखर गढ़ में भी घर घर नित नाना भाति के उत्सव हो रहे थे। यद्यपि यह गान वाद्य और उत्सव सब प्रजा के चित्त को महान आनन्द प्रदायक थे किन्तु पद्मावती इससे इतनी दुखित थी कि मानो यह ब्याह लग्न साक्षात उसकी मृत्यु सा निकट आ रहा था। उसने बहुत कुछ सोच विचार कर पृथ्वीराज को एक पत्र मे यह लिखा कि आप यहा आकर राज्यमहल के पश्चिम ओर शिवालय से मुझे हर ले जाइए। जो आप पाच दिन में मुझे संकेत स्थल पर न मिलेगे तो मै अपना प्राण त्याग दूगी। इस प्रकार पत्र लिखकर उसने सुग्गे के गले मे बाँध दिया और उसे दिल्ली की ओर जाने की प्रेरणा की। निदान वह सुग्गा एक दिन रात के

दिल्ली जा पहुँचा और उसने वह पत्र पृथ्वीराज को जा दिया। पत्र के पढ़ते ही पृथ्वीराज भी कुछ थोड़े से सामन्तों की सेना साथ लेकर, दिल्ली की गढ़रक्षा चामुण्डराय के सिर सौंप कर समुद्रशिखर गढ की ओर चल दिया। जिस दिन कमोदमणि की बारात समुद्रशिखर गढ़ पहुँची उसी दिन पृथ्वीराज भी जा पहुँचा और उसी दिन इस विषय का समाचार शहाबुद्दीन के कान तक पहुँचा, जिसको सुनते ही शहाबुद्दीन फूल कर कुप्पा हो गया। उसने इस अवसर पर पृथ्वीराज को धोखे से पकड लेने का मन्तव्य मन में ठान लिया और बडी भारी सेना सहित पृथ्वीराज की राह रोक कर वह अड रहा और कविचन्द ने इस विषय की सूचना पृथ्वीराज को दी।

उधर तो गान वाद्य सहित बडे गाजे बाजे से बारात नगर में घूम रही थी इधर पद्मावती पृथ्वीराज के रंग में रँगी हुई कंठस्थगत प्राण संकट में पडी हुई राजमहल की गोख में बैठी टकटकी लगाए दिल्ली की तरफ देख रही थी कि इतने में सुग्गे ने आकर पृथ्वीराज के आगमन की सूचना दी। शुकदेव अरुण द्वारा चाहुआन सूर्य्य के आगमन की सूचना पाकर पद्मावती का हृदयपद्म प्रफुल्लित हो उठा। उसने तत्क्षण ही सोलहों शृंगार और बारहों आभूषणों से सुसज्जित हो कर सहेलियों सहित शिवार्चन के लिये यात्रा की। शिवालय में पहुँच कर उसने शिवपार्वती की पूजन कर पृथ्वीराज से प्रीति होने का वरदान मांगा और ज्योंही वह मन्दिर के बाहर आई कि पृथ्वीराज ने हाथ पकड कर उसे अपने साथ घोडे पर बिठा लिया। सब सखी सहेली और बाहक जन चित्रलिखे से देखते रह गए। किसी किसी ने यह समाचार कुमोदमणि को दिया तो वह अपनी सेना सज कर पृथ्वीराज के पीछे पड़ा परन्तु चहुआन के वीर सामन्तो ने उसे सेना सहित सहज ही में मार भगाया और पृथ्वीराज पद्मावती सहित दिल्ली की ओर चला। जब यह समाचार शहाबुद्दीन को मिला कि पृथ्वीराज पद्मावती को ब्याह कर इधर ही आ रहा है तो वह भी अपने सामन्तो को सज कर उन से बोला कि इस समय सन्नद्ध रहो, अब की पृथ्वीराज को पकड ही लेना है। जब पृथ्वीराज का लश्कर पास आया तो उसने आक्रमण किया। पृथ्वीराज तो प्रथम ही इस घटना की सूचना पाकर सावधान था। उसने यवनसेना का साम्हना किया और पलक मारते लोह की झार झरने लगी और लोहू के कुंड भरने लगे। कन्ह ने झपट कर शहाबुद्दीन के हाथी को घेर लिया और सहज ही उसे पकड कर पृथ्वीराज के सम्मुख ला कर प्रस्तुत किया। इस युद्ध में ५०० मुसलमान और ५० राजपूत योद्धा खेत रहे। वीर पृथ्वीराज इस प्रकार गोरी पद्मावती को प्रेम से और शहाबुद्दीन गोरी को आतंक से गिरफ्तार करके साथ लिए हुए खुशी खुशी दिल्ली जा पहुँचा और ज्योतिषियों से शुभलग्न सुधाय बडी धूमधाम से पद्मावती का उसने पाणिग्रहण किया। इसी ब्याह की बधाई में शहाबुद्दीन को उसने छोड दिया और आप अन्तःपुर में पद्मावती के छवि मकरन्द में मुग्ध होकर मत्त मलिन्द की भांति कामक्रीडा में रत हुआ।



पृथा व्याह कथा।

[इक्कीसवाँ समय।]

सोमेश्वर को पृथ्वीराज के सिवाय पृथाकुमारी नाम की एक कन्या भी थी। जब इसकी बाल्यावस्था का ह्रास और इसके अंग अंग में कामदेव का प्रवास होते हुए यौवन का प्रकाश होने लगा तब सोमेश्वर ने हिन्दूकुल सूर्य्यवंशावतंस चित्तौराधिपति रावल समरसिंह को पृथाकुमारी के योग्य वर जान कर प्रोहित गुरु राम और कन्ह चहुआन को लग्न लेकर रावल जी के पास चित्तौर भेजा। लग्न के साथ में तेरह बलवान और तेज घोडे, मोतियों की माला और बहुत सा धन रत्न भेजा। कन्ह और गुरु राम ने चित्तौर पहुँच कर जिस समय वस्त्र शस्त्र आभूषणों से सुसज्जित सर्वगुणसंपन्न सिंह समान योगीराज समरसी जी को सभा में बैठा हुआ देखा तो इनका भी चित्त प्रसन्न हो गया। ये लोग मन ही मन कहने लगे कि अद्वितीय सुन्दरी पृथा-कुमारी के योग्य यही वर है। धन्य है ईश्वर को जिसने यह रति काम, सिय राम, नल दमयन्ती, अर्जुन द्रोपदी, इन्द्र सची का सा संयोग जोड दिया है—गुरु राम ने शुभ मुहूर्त्त साधन कर वैसाख वदी ५ को रावल जी के हाथ पर लग्न रक्खा—लग्न पढ़े जाने पर उक्त तिथि के एक महीने पश्चात् विवाह का दिन नियत हुआ। लग्न चढ जाने पर कन्ह और गुरु राम को पाँच दिवस पर्यन्त बडे आदर भाव से पहुनई में रावल ने रक्खा और चलते समय गुरु राम को बहुत सा धन रत्न और सिरोपाव देना चाहा; किन्तु गुरु राम ने उसे लेना स्वीकार न किया और विनीत-भाव से प्रार्थना की, कि आप का दर्शन पाने से ही हमारे पाप दूर हो गए हमको अब अधिक क्या चाहिए। इस प्रकार लग्न चढाकर कन्ह और गुरु राम अजमेर में आए तो यहां भी विवाह की तय्यारियां होने लगीं— जहां तहां घर घर द्वार द्वार कदली के विटप और वदन वार की बहार देख पडती थी। अजमेर के हाट बाट चौहटे राजपथ पर, सर्वत्र स्वच्छता और सुगंध की छटा छा रही थी। राजमहल में अहर्निशि प्रसन्नवदना स्त्रियों का गान वाद्य तथा नाना प्रकार का आनन्द नाद हुआ करता था। विवाहोत्सव के आनन्द में उमंगे हुए राज्यकर्म्मचारी से लेकर दास दासी पर्य्यन्त अपने अपने कार्य्य को कुशलतापूर्व्वक संपादन करते हुए फूले अंग नहीं समाते थे। *कूनात और †अटाले में षट रस पदार्थों के अंबर लगने लगे तथा दिल्ली और अजमेर की प्रजा के दरिद्र दूर भागने लगे। इधर पृथ्वीराज ने अपने अधीनस्थ तथा समान व्यवहार वाले राजाओं को निमंत्रण भेजे और एक पत्र ऊंचे फरहरे सहित शहाबुद्दीन के पास भेजा।

विवाह की तिथि आते आते सब न्योतार अजमेर में आ पहुँचे। नियत समय पर बरात भी नगर के निकट आ पहुँची। ऐसा समाचार पाते ही सब सूरवीर सामंत योद्धागण और न्योतार लोग अपने रथ हाथी घोडे इत्यादि को स्वर्ण रजत साजों से सज सज कर अपने ठाठबाठ के साथ राज्य महल के द्वार पर आ जमे। पंचाल राज जैतसिंह प्रमार, भौंहा चंदेल, नाहनर कन्ह, पज्जून राय सिंह नग और आजानबाहु अजमेर की तर-फ के पंच होकर सब दल बद्दल सहित बारात की अगवानी को आगे बढे। नगर के बाहर से बारात की अगवानी करके सादर बरात को लिए हुए नगर में से निकले और नगर के दूसरी ओर बारात का पडाव दिया गया। लग्न का वेध होने पर जब रावल जी अपने वीर सिसौदिया सरदारों सहित सज धज कर राजद्वार पर आए उस समय की सुखमा अपार थी। जहां तहां अटा अटारी औख, गोख और झरोखों में झाँकती हुई मृगनयनी पिकबयनी मंगलामुखी स्त्रियाँ कल कंठ से गान करती हुई

---

* वह स्थान जहां पर अन्न, मेवे, मिष्टान्न इत्यादि का भंडार रहता है।

† जहां भोजन पकाया जाता है अथवा परिपक्व भोजन इकट्ठा जमा रहता है।

ऐसी भासित होती थीं मानो इस योगिराज समर सिंह और सती पृथा कुमारी के सबन्ध से प्रसन्न हुए धर्म्मराज की प्रेरणा से इन्द्र की भेजी हुई अप्सराएँ आकाश मे आनन्द बधाई दे रही हों। राजद्वार नाना प्रकार के प्रफुल्लित मंगलमय ललित लताओं से आच्छादित हो रहा था। तिस पर लटकती हुई मोतियो की झालरे इस आनन्द से जड़ वृक्षों के सजीव होकर हास्य करने का दृश्य दिखाती थी। राजद्वार के एक तरफ राव जी के सगे सम्बन्धियों की भीड थी और भीतरी तरफ स्त्रिया माथे पर स्वर्ण कलश धारण किए हुए रावल जी तथा उनके सबन्धी और सरदारो के नाम से मगल गान करती थी। समरसिंह का वीर वेष देखकर पृथाकुमारी की माता तो खुशी के मारे फूली अग न समाती थी।

गोधली वेला मे रावल समरसिंह जी ने विवाह मडप में प्रवेश किया। वहा पर पाच सौ वेदज्ञ और दो हजार छद और तर्क शास्त्र के ज्ञाता पंडित लोग मंत्र पाठ कर रहे थे। एक हजार पौराणिक कथाओं के ज्ञाता चारण लोग बिरदावली पढ़ रहे थे। उस मडप में लटकती हुई मोतियों की झालरें अनुपम शोभा की भडार थी। चाहुआन के घर में उस विवाह मडप में होता हुआ यज्ञ इन्द्र सहित आठो देवताओ को भाग देने वाला था। उस समय के दान मान और सम्मान की छटा देख कर कुबेर भी छकित होता था। पाणिग्रहण का लग्न ज्यों ज्यों निकट आता जाता था त्यों त्यों सब का आनन्द बढ़ता जाता था। भांवरि पडते समय चाहुआन ने रावलजी को पहिली भावरि में मेवात के ६० गाव दूसरी भावरि में ११ हाथी, तीसरी भावरि में कन्यादान किया और चौथी भावरि मे अनन्त हेम रत्नादि दान किया। ततपश्चात् रणथभ का देश दिया और गुरुराम प्रोहित को पृथा कुमारी के सग चित्तौड़ जाने की आज्ञा दी। साथही इसके ऋषीकेश देव को धन्वन्तरि का पद दे कर और कवि चन्द के पुत्र जल्हण को भी रावलजी को दान किया। इसी समय निमन्त्रण मे आए बगाल, कर्नाट, गुजरात मांडर इत्यादि देशो के राजा और एलचियो ने भी नजर दहेज और व्यवहार मे असख्य धन दिया। पृथ्वीराज के सामन्तों ने भी व्यवहार में बहुत कुछ दिया।

इस प्रकार सब के व्यवहार को पृथ्वीराज ने आदरपूर्वक ग्रहण करके बहुत कुछ अपनी तरफ से भी मिलाकर रावल जी को दे दिया। इस प्रकार सानन्द विवाह समाप्त हुआ और तब रावल समर सिह जी दरबार में आकर बैठे। उस समय पृथ्वीराज और समर सिंह बराबर बैठे हुए सूर्य्य और चन्द्रमा की भाति सुशोभित होते थे और दोनों ओर के सामन्त लोग उनके आसपास बैठे हुए साक्षात तेजोमय तारागण से प्रतीत होते थे। पृथाकुमारी का विवाह एक मात्र करुणा रस रहित आठो रसो से परिपूर्ण सानन्द समाप्त हुआ। तब पृथ्वीराज के १२ सामन्तो ने १२ दिन तक बराबर एक एक दिन बारात का न्योता किया। इसलिये रावल जी को १२ दिन तक और अजमेर में रहना पड़ा। बारहवे दिन बहुत सा दान दहेज पृथ्वीराज ने अपनी तरफ से देकर बारात को विदा किया। जिस समय बारात चलने को हुई कि उस के पश्चिम ओर में सूर्य्योदय होते ही स्यार बोला जिसका शब्द सुन कर रावल जी ने जगजोति नामक अपने ज्योतिषी से इसका फल पूछा और उसने इस प्रकार वर्णन किया कि इस जुग्गिनिपुर में चाहुआन के राज्य पर पश्चिम दिशा से बार बार आक्रमण होंगे जिससे यहा की पृथ्वी भरपूर रुधिर से परिपूर्ण होगी और चाहुआनें का यश ससार में विच्छिन होगा। किन्तु अन्त में आक्रमण कर्ताओं की ही जय होगी और दिल्ली में यवन राज्य स्थापित होगा। चाहुआन और उनके सम्बन्धी और सामन्तों की कीर्तिमात्र शेष रह जायगी। चलते समय सोमेश्वर जी ने ५० हाथी १०० घोडे १०० दासी और बहुतसा धन रत्न द्रव्यादि रावल जी को दहेज में दिया। रावल जी इस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक पृथाकुमारी को व्याह कर सानन्द चित्तौड़ मे आए।

होली कथा ।

[बाइसवां समय ।]

एक दिन पृथ्वीराज ने कविचन्द से पूछा कि हे बरदाई फाल्गुण मास में जो लोग छोटे बडे का कुछ भी विचार न करके पागलों की भांति अश्लील शब्दों का उच्चारण करते हैं, खाद्याखाद्य पदार्थों का कुछ भी विचार न करके सब कोई घृणित और निषिद्ध पदार्थों को एक दूसरे के ऊपर डालते हैं इसका क्या कारण है सो मुझ से कहो। पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुनकर कविचन्द बोला कि चाहुआन कुल में ढुंढा नामक एक राक्षस था और ढुंढिका नामक उसकी एक बहिन थी। जिस समय ढुंढा अजमेर और दिल्ली का सिमाना छोडकर काशी को चला गया और वहां तप करने लगा तो ढुंढिका भी काशी को गई, किन्तु जब तक यह पहुँचे कि ढुंढा ने अपना शरीर काट काट कर होम कर दिया (जिसके अंश से आप और ये सब सामन्त लोग उत्पन्न हुए हैं)। यह देखकर ढुंढिका अत्यन्त दुखित होकर भाई के वियोग में स्वच्छ चित्त से तपस्या करने लगी। जब उसे निराहार तप को करते कुछ दिन का काल व्यतीत होगया तब पार्वती जी ने प्रसन्न होकर उससे कहा कि तू जो कुछ वर मांगेगी वह पावेगी। पार्वती के ऐसे वचन सुनकर वह आमिषाहारी राक्षसी बोली कि यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे यह वर दीजिए कि मैं आबाल, वृद्ध, युवा जितने मनुष्यों को पाऊं खाती जाऊं। ढुंढिका का यह प्रस्ताव सुनकर पार्वती ने इस धर्मसंकट में पडकर यह समाचार महादेव जी से कहा। तब महादेव जी ने कहा कि उससे यह कह दो कि जिस किसी को पागल की भांति बौराया असभ्य कर्म करते हुए राक्षस स्वरूप पावे उसे सवर्ग न मान कर कदापि भक्षण न करे। इसके विरुद्ध जिन्हें सीधा सादा पावे उन्हें सहज ही खा जाय और इधर पवन को आज्ञा दी कि ऐसी धूल उडावे कि सर्वत्र अंधकार मच जाय और सब मनुष्य बौरा कर तीन दिन तक असभ्य कर्म करने लग जाय जिसमें ढुंढिका मनुष्यों को भक्षण न कर सके। निदान तभी से यह होली का व्यवहार प्रचलित हुआ।



दीपमालिका कथा

[तेइसवां समय]

एक दिन पृथ्वीराज ने कविचंद से कहा कि दीपमालिका के उत्सव के विषय में जो कुछ जानते हो सो कहो। पृथ्वीराज के ऐसे वचन सुन कर कविचन्द ने उत्तर दिया कि सतयुग में सत्यव्रत नामक राजा का पुत्र राजा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी और पुण्यवान था, वह प्रजापालन में बडा दक्ष था इसलिये लोग उससे बडे प्रसन्न थे। सोमेश्वर की राजधानी की प्रधान नगरी जहां वह स्वयं सपरिवार निवास करता था भांति भांति के पुष्प और पल्लवों से परिवेष्टित समुद्र के तट पर स्थित थी। उस सत्यवती नगरी में सत्यश्रम नामक एक दरिद्र ब्राह्मण भी रहा करता था। एक दिन उसकी स्त्री ने अपने पति से कहा कि हे पति इस धनहीन जीवन से मृत्यु अच्छी। जिस पुरुष के पास धन नहीं है वह जीवित अवस्था में भी मृतकवत् है। स्त्री के ऐसे वचन सुन कर सत्यश्रम ने विष्णु भगवान का नियम पूजन और ध्यान किया। तब विष्णु ने उसे ब्रह्मा के पास भेजा और ब्रह्मा ने उसे शिव की आराधना करने को कहा। भाग्यवश रुद्र ने उसकी तपस्या से प्रसन्न हो कर कहा कि तूं मेरी अनुगामिनी माया का ध्यान कर, सांसारिक सब कार्य्य उसी द्वारा संपादन किए जाते है। निदान उस ब्राह्मण ने वैसा ही किया और उसके ३ महीने १३ दिन की तपस्या में देवी ने प्रसन्न होकर उसे ऋद्धि सिद्धि और १४ रत्न दिए। तब ब्राह्मण ने अपने मन में कहा कि ऋद्धि सिद्धि से क्या होगा। ऐसा विचार कर वह राजा की सेवा करने लगा। एक दिन उसे अकस्मात ज्ञान हुआ कि कार्तिक की अमावास्या को लक्ष्मी उनके घर आती है और दीपक जलते समय तक रहती है। दीपक शान्त होने पर वह अन्य दीपक प्रज्वलित स्थान में चली जाती है।

उस ब्राह्मण को राज्य सेवा करते करते जब चार वर्ष व्यतीत हो गए तो एक दिन राजा ने उससे कहा कि ब्राह्मण बर मांग। यह सुनकर ब्राह्मण ने कहा कि मैं यही चाहता हू कि कार्तिक मास की अमावास्या को मेरे सिवाय किसी के घर में दीपक न जलने पावे। ब्राह्मण के ऐसे बचन सुन कर राजा ने कहा कि हे ब्राह्मण जो तुमने मांगा सो पावोगे; किन्तु तुम अवश्य अपनी उलटी बुद्धि पर पछताओगे। इस समय तुम मुझ से अन्न, धन, स्वर्ण पृथ्वी जो कुछ मांगते वह मै प्रसन्नतापूर्व्वक देता। इसका कुछ भी उत्तर न देकर वह ब्राह्मण अपने घर गया और एक मन तेल और सवा सेर रुई मंगाकर अपनी कुटीर में दीप मालिका के उत्सव का प्रबन्ध करने लगा। जब अमावास्या की तिथि निकट आई तब वह पुनः राजा के पास गया और उसने पूर्वोक्त वरदान के पूर्ण किए जाने की प्रार्थना की। निदान राजा ने भी आज्ञा दी कि अमावास्या के दिन मेरे राज्य भर में कहीं भी दीप ज्वाला देख न पड़े। तब ब्राह्मण ने अपने घर आकर बहुत से दीपक जलाए और अपना गृह बाहर भीतर से सर्वत्र खूब प्रकाशमान करके वह बैठ रहा। जब आधी रात के समय लक्ष्मी समुद्र से निकली तो सर्वत्र अंधेरा देख कर ब्राह्मण के ही घर गई और उसने विचार किया कि इसी स्थान में सर्वदा रहूंगी, और ब्राह्मण के सम्मुख साक्षात् होकर उसे वरदान दिया कि तेरे यहां सात जन्म पर्य्यन्त वास करूंगी। यह चरित्र देखकर उस ब्राह्मण का बालसखा दरिद्र वहां से चुप के से चल दिया; परन्तु ब्राह्मण ने उसे दौड़ कर पकड लिया और कहा कि मै तुझे कदापि जाने न दूंगा; तुम मेरे लंगोटिया यार हो अब भी तुम्हें उचित है कि तुम मेरा साथ न छोड़ो और आनन्द से तुम भी एक कोने में रह कर इस पुंश्चली लक्ष्मी को कहीं जाने मत दो; परन्तु दरिद्र ने उसकी एक न मानी और यह कहता हुआ कि अब मै इस नगर भर में कभी न आऊंगा, वह भाग गया। उसी घडी से ब्राह्मण का घर धन धान्य से परिपूर्ण हो गया सर्वत्र धन रत्न के आश्चर्य्यजनक अटंब लग गए। उसी घडी से दीपमालिका का प्रचार हुआ है॥

धन कथा।

[चौबीसवां समय।]

एक समय मरुभूमि से दिल्ली को आते हुए जब कि पृथ्वीराज का डेरा पट्ट बन में पड़ा हुआ था पृथ्वीराज ने अंतरंग सभा में बैठे हुए अपने बुद्धिमान मंत्री कैमास की बुद्धि की बहुत ही प्रशंसा करके उससे पूछा कि हे मंत्रिवर इस बन में सुन्दर जल से सुशोभित एक सरोवर के किनारे एक पाषाण मूर्त्ति है जिसके शीस पर लिखा है कि "सिर कट्टै धन संग्रहै सिर सज्जै धन जाय" इसका तात्पर्य्य जानने के लिये बड़े बड़े बुद्धिमान चकित चित हो रहे है। अब तक इसका मूल भेद कोई भी न जान सका; इस हेतु अब मैं तुमसे पूछता हू तुम बतलाओ कि उक्त लेख का क्या अर्थ है। पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुन कर कैमास ने उत्तर दिया कि सुना जाता है कि गत समय में वीर बाहन नामक कोई बड़ा प्रतापी राजा था, वह महान इन्द्रियलोलुप और प्रजापीडक था। उसने प्रजा को कष्ट देकर यह अगनित द्रव्य का भंडार इकट्ठा किया। किन्तु प्रजा ने अत्यन्त दुखी होकर एकत्रित होकर उसे शाप दिया कि यह निःसन्तान मृत्यु को प्राप्त होवे। निदान प्रजा की प्रार्थना स्वीकार हुई और काल पाय ऐसा ही हुआ। सो हे महाराज! यह सब धन उसीका संचय किया हुआ है। इसका निकालना भी बहुत ही सरल है। यदि आप इस धन को निकालना चाहते हैं तो चित्तौराधिपति रावल समरसिंह जी को बुला लीजिए और तब इस कार्य्य में हाथ डालिए; क्योंकि जयचन्द, शहाबुद्दीन, भीमदेव इत्यादि आपके शत्रु निरंतर आपकी ताक में रहते हैं; इसलिये उत्तम यही होगा कि सब प्रकार से अपना पक्का प्रबन्ध कर के तब धन निकाला जाय। कैमास के ऐसे नीति भरे वचन सुन कर राजा ने उसे अपने पास बुला कर बड़े आदर से बैठक दी और सिरोपाव भी दिया और कहा कि हे मंत्रिवर मैं तेरी सलाह से परम प्रसन्न हुआ हूं। और उसी समय चन्दपुंडीर को बुला कर एक पत्र देकर उसे रावल समरसिंह जी के पास चित्तौर भेजा।

चन्द पुंडीर अपने साथ में रावल जी के भेट में देने के लिये पृथ्वीराज के दिए हुए बहुत से हाथी, घोडे, पट, वस्त्रादि लेकर चित्तौर पहुंचा और सादर रावलजी से मिला और पृथ्वीराज का दिया हुआ पत्र रावलजी को नजर करके उस धन संबन्धी समाचार आद्योपान्त सुनाने लगा। इसे सुन कर और पत्र को पढ कर योगिराज रावल समरसिंह जी ने हँस कर उत्तर दिया कि हे चन्द पुंडीर इस संसारचक्र की गति विलक्षण ही है। एक मांस के लोथडे को एक गिद्ध लाता है और अन्य गिद्ध लड कर उससे वह लोथड़ा छीना चाहते हैं। और इस धर पकड़ में वह लोथडा किसी और के ही हाथ लगता है। रावल जी के ऐसे वचन सुन कर चंद पुंडीर फिर बोला कि हे रावल जी आपका वचन तो सर्वथा सत्यही है परन्तु पृथ्वीराज को एक मात्र आपही का बल भरोसा है वह आप ही के भरोसे पर अपने बड़े बड़े शत्रुओं को कुछ भी नहीं समझते। इस हेतु मैं यही प्रार्थना करता हू कि आप पृथ्वीराज के उत्साह को भंग न करके कृपापूर्व्वक दिल्ली पधारिए और धन निकालने में उनकी सहायता भी कीजिए।

चन्द पुंडीर के ऐसे बचन सुन कर रावलजी एक बडी भारी सेना लेकर नागौर की ओर चल पड़े। पडाव पर पडाव करते हुए जब रावल जी नागौर में आए तब धर्म्मायन ने सब समाचार शहाबुद्दीन को लिख भेजे। जब रावल जी दिल्ली से दस कोस की दूरी पर रह गए तब दूत ने दिल्ली में जा कर पृथ्वीराज के दरबार में समाचार दिया जिसे सुन कर पृथ्वीराज अपने सब सूर सामन्तों और सेना सहित रावल जी की अगवानी के लिये दिल्ली से आध कोस आगे बढ आए और सादर समरसिंह जी को दिल्ली लिवा ले गए। वहा पर अनंग-

पाल जी के रहाइस भवन मे रावल जी को डेरा दिया गया और सब भांति से उनकी सेवा सुश्रुषा ने लगी। दो दिवस यों ही व्यतीत हुए। तीसरे न पृथ्वीराज ने रावल जी और सब सामन्तों सहित क अतरग सभा की, जिसमें धन निकालने के षय में उचित युक्ति विचारने का प्रस्ताव किया या। निदान फिर भी बुद्धिमान कैमास के विचार । यही निश्चय हुआ कि शहाबुद्दीन का मुहासरा थ्वीराज स्वय रोकें और भीमदेव का पंथ रावलजी कें और तब इधर धन निकालने का यत्न किया ाय।

निदान इस प्रकार परामर्श पक्का हो जाने पर थ्वीराज और रावल समर सिंह जी समस्त सूर ामन्त और अपनी अपनी सेना समेत नागौर को चले। वहा पहुँचकर रावलजी के मतानुसार दो ो कोस के अन्तर पर शहाबुद्दीन के मुहासिरे पर पृथ्वीराज और भोला राय के मुहासिरे पर रावलजी ने डेरा डाला। उधर इस बात की खबर शहाबुद्दीन के पास भी जा पहुँची। ज्योही शाह ने सुना कि दिल्लीपति नागौर में धन निकालने के लिये आगए हैं, वह भी चुनिन्दा मुसलमान वीरों की बडी भारी सेना सजकर नागौर की तरफ चल पडा। उसने रास्ते मे चलते चलते भी सेना को चक्रव्यूहाकार रक्खा और अब की बार पृथ्वीराज को अवश्य ही बदी बना लूंगा ऐसा विचारता हुआ बडी धूम धाम से वह नागौर के निकट आन अड़ा। इस प्रकार शाह का आना जानकर रावल जी ने बहुत प्रकार से समझा बुझाकर मत्री कैमास को तो धन रक्षा पर नियत किया और आप शाह पर आक्रमण करने के लिये प्रस्तुत हुए। प्रातःकाल होते ही रावल जी शाह की ओर बढे। रावल जी की असीम सेना के चलने से धूलि उडती हुई देख कर शहाबुद्दीन भी ताड़गया और इसलिये आप भी आगे बढ़ने से दुरुस्त होकर रावल समरसी जी से समर करने के लिये सन्नद्ध हुआ। इधर से वीर राजपूत उधर से मुसलमान योद्धा लोग अपने अपने अस्त्र शस्त्र चमकाते, हृदय में इष्ट देवों का स्मरण करते और मुख से अपने अपने मालिकों की जै जैकार की पुकार करते हुए भूखे सिंह की भांति एक दूसरे पर टूट पडे। हाथी हाथी से, घोडे घोडे से और पदाती पदाती से भिड पडे। रण क्षेत्र मे दोनो सेनाओं की मुठभेड होते ही दोनो दलों के मुखिया सरदार भी एक दूसरे को प्रचार प्रचार कर वार करने लगे। प्रबल प्रहार ने रुस्तम खा के भाई सूर खा को मार गिराया। उधर से रुस्तम ने प्रहार राय को भरपूर हाथ मारा। इसी प्रकार दोनों ओर के सूरवीर रण मदोन्मत्त हो लडने लगे। रण क्षेत्र में रक्त की धार बह निकली; जिसमें पडे हुए रुंड मुंड हाथी पहाड़ से और श्रेणीबद्ध शस्त्र धारी शूरवीरों की कतार नदी की कगार सी नजर आती थी। सारे दिन खूब लोहा झरा। हिन्दू और मुसलमान दोनों जी छोड कर लड़े, अन्त में आधी घड़ी दिन रहते वीर राजपूतों ने मीर पीरजादों को पीछे पिछेल दिया।

ज्योंही सूर्य्य भगवान अपने प्रकाश को सकुचित करते हुए अस्ताचलगामी हुए, कायर कमल सकोच से सिर नीचा करने लगे, कुमोदिनी गण प्रसन्नचित चन्द्रमा की ओर चित्त दे चहकने लगी, विहग गण कोमल कोमल पत्तों की आड मे किवाड देकर अपने अपने घोसलों में चुहचुहा कर चुप होने लगे, उधर समस्त दिन के समर श्रम से श्रात दोनों सेना के सूरवीर गण अपने अपने स्वामियों की आज्ञा से अपने अपने शिविर समूह की ओर लौट पड़े और सब जमादार सिपाही इत्यादि अपने अपने स्थान पर जम कर जगत के जजाल को तिलाजुली देकर निर्मूल हो निद्रा देवी की गोद में पैर पसार सोने में मग्न हुए। इधर रावल समरसी जी और पृथ्वीराज, उधर शहाबुद्दीन अपने अपने प्रशस्त शिवरों में सोते थे और उनके सगे विश्वासपात्र सरदार लोग सावधानी से पहरों पर सन्नद्ध थे। चामुडराय निडडुरराय अत्तताई और जैतराव सेन प्रमार और कन्ह का भतीजा पृथ्वीराज के पहरे पर थे। और रुस्तम खा, तातार खा, नूरी खा, हुमाय

खां, महमद असाकोली खां और खोखर खां आदि मुसल्मान सरदार शहाबुद्दीन की चौकी पर थे। रात्रि इसी प्रकार व्यतीत हुई। दूसरे दिवस पूर्व्व दिशा में सूक्ष्म सफेदी नजर आते ही कुक्कुटने ज्योंही कड़कदार आवाज लगाई कि उसी समय दोनों सेनाओं में खर भर पड़ गई, सब सूर सिपाही लोग अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हो कर रणभूमि में शत्रुओं के रक्त की पिपासा से आकुलित हो नायकों की आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगे। एक घड़ी दिन चढ़ते चढते वीर पृथ्वीराज भी शूर वीरों के छत्तीसों बाने और जिरह बख़तर धारण कर मतवाले मैंगल पर सवार हो कर अपनी सेना के मध्य में आकर सुशोभित हुआ और उसने शत्रु सेना पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। पथ्वीराज की आज्ञा पाते ही युद्ध रँगराते मदमाते वीर राजपूत उस असंख्य यवन सेना पर ऐसे टूटे जैसे भेड़ों के समूह पर भेड़िया दौड़े। दाहने रुख़ से पृथ्वीराज और बाएँ रुख से समर सिंह जी ने आक्रमण किया। तब मुसलमान सेना भी अल्लाह बिसमिल्लाह करती हुई हृदय में अपने स्वामी की जय की अभिलाषा करती हुई, युद्ध में प्रवृत्त हुई। पूर्व्व दिशा में उदयाचल स्थित बाल सूर्य्य की कोमल लालिमा में दोनों सेनाओं के उज्वल शस्त्रों की चमचमाहट से चकाचौंध सी छा जाती थी। उस समय रण वाद्यों की घड़ घड़ाहट, प्रवल वायु वेग से उड़ने के कारण उत्तग और प्रशस्त निसानों की फडफडाहट, अग्न्यास्त्रों की धड़धडाहट, बान की बौछार और गोले गोलियों की सनसनाहट को सुन कर शूरवीरों को तो सुख होता था परन्तु कायर कपूतों के तो प्राण पखेरू ही पयान किए जाते थे। शाह की तरफ से अरब खा सेनापति था और उमर खा सहायक सेनानायक का कार्य्य संपादन करता था। उसने अपने वीरत्व पराक्रम और बुद्धिमता से राजपूत सेना से ११ दिन पर्य्यन्त साम्हना किया; अन्त में बारहवें दिन पाच घड़ी दिन चढ़ने पर मुसलमान सेना के पैर उखड़ ही पड़े। ऐसा समाचार पाकर पीठि सेनानायक खुम्मान खां ने बहुत जोर मार और मुसलमान सेना को हिम्मत देनी चाही; जिससे वास्तव में मुसलमान सेना ठहर गई और यवन लोग जी तोड़कर युद्ध करने लगे। इसी प्रकार जब मध्यान्ह होगया और २००० गव्वर काम आ चुके तब मुसलमान सेना ने राजपूतों पर घोर आक्रमण किया। इसी प्रकार चोटें होते होते जब आधी घडी दिन शेष रह गया तब निसरत खां याकूब खा और नत्तार खा ने सेना की तीन अनी कर के राजपूतों पर तीन ओर से प्रबल आक्रमण किया और ऐसी बुद्धिमानी और वीरता दिखाई कि राजपूतों के पैर उखड़ पड़े। यह देख कर रावल समरसिंह जी और पृथ्वीराज हाथी से उतर घोड़ों पर सवार होकर प्राण का मोह छोड़ कर शत्रु सेना में घुस पड़े और अपनी उज्वल असि द्वारा वे बड़े बड़े यवन योद्धाओं को खंड खंड करके धराशायी करने लगे। उनके पीछे पीछे अन्यान्य राजपूत बीर भी अपनी अपनी माई के सपूत पूत होने का परिचय देने में तत्पर हुए और पावस के बद्दल की भाति सबटित यवन सेना को राजपूत लोग प्रबल वायु स्वरूप बन कर काई सा फाड़ने लगे; उधर मुसलमान भी पाव पीछे देना जहन्नुम में जाने से भी बुरा जानते थे। इसीलिये दोनों सेनाओं में खूब लोहा झरा किन्तु आखिर मुसलमान लोग रावल जी की तेज तलवार की धार के सम्मुख ठहरने में असमर्थ हो उठे। उधर पृथ्वीराज ने अपने हाथी को शहाबुद्दीन के सम्मुख झुकाया तब शाह पृथ्वीराज पर सघन बाणों की वर्षा करता हुआ अपनी सेना से बोला कि "अय बहादुरो, खाने और सोने में तो सब इन्सान बराबर हैं मगर सच्चा बहादुर वही है जो दुश्मन के सामने सीना खोल कर अडे। गोकि मुझे यह पूरा यक़ीन है कि आप लोग अपने नाम पर और मेरे काम पर अपनी जान और जहान कुछ भी चीज़ नहीं समझते मगर तब भी कहता हू कि जिसका जी चाहे यहां से बिला शक चला जाय और अपने बाल बच्चों से मिले। मगर

मेरा तो यही कसद है कि या तो इसी मैदान जंग में मरूंगा या जिस ख्वाहिश से गजनी से चला हूं उसे पूरा करके छोड़ूगा। मै यह भी जानता हूं कि बिला मतलब कोई सींक नहीं हिलाता, क्या देव क्या जिन्नत क्या इन्सान सब मतलब के यार है। इन्सान दौलत और आराम चाहता है तो शहीद देव व जिन्न परिसतिश के खाहिशगार है, मगर सच्चा नौकर वही है जो वक्त मुशकिल मालिक के काम आवे, सच्चा मित्र वही है जो मित्र के चित्त की गति जानता हुआ उसे सदैव प्रसन्न करने का यत्न करे और कोई वस्तु उससे छिपावे भी न और जो सच्चे दिल से मुहब्बत करता है वही दोस्त है।" सुलतान के ऐसी बातें सुन कर सब मुसलमान सरदार शाह के सद विचार की प्रशसा करते हुए जी खोल कर लडने लगे। इधर कन्ह ने खुरासान खा के भाई का साम्हना किया और उसे एकही वार में मार गिराया। इससे मुसलमान सेना और भी घबडा उठी। उधर पृथ्वीराज ने अपनी सेना को उत्तेजित करते हुए म्यान से खड्ग खींच लिया और शहाबुद्दीन पर आक्रमण किया। इनके साथही चामुडराय, बलभद्र, पीप पड़िहार और निद्दुरराय ये चार सामन्त भी धरो पकड़ो की ध्वनि मचाते हुए शाह के चारों ओर झुक पड़े। अपने स्वामी की रक्षा करने के लिये शाह के पांच सरदारों ने जो कि खशासखाने की जगह पर तैनात थे, बडा पराक्रम दिखाया किन्तु अन्त में वे मारे गए और शहाबुद्दीन भी पकड लिया गया। तब तो मुसलमानी सेना निपट निराश होकर भाग उठी और सब शाही रखत बखत जहा का तहां पडा रह गया जो कि विजयी राजपूत सेना ने राई रत्ती करके लूट लिया। शहाबुद्दीन के बंदी होते ही समस्त सेना में जय जय कार शब्द होने लगा। जहां तहां वीर राजपूत सैनिक आनन्द ध्वनि करते हुए स्वामी के उत्साह को द्विगुणा उत्तेजित करते थे। इस युद्ध में पृथ्वीराज ने चतुर्दशी रविवार को विजय प्राप्त की।

इस प्रकार गजनी के बादशाह शहाबुद्दीन पर विजय पाने पश्चात् आनन्दसूचक अतरंग सभा में गुरूराम ने पृथ्वीराज से कहा कि महाराज अब आप दिल्ली को चलिए और वहा पर इस विजय का उत्सव मना कर तब पुनः शुभ मुहूर्त साधकर धन निकालने को आइए तो अच्छा होगा। गुरूराम के ऐसे बचन सुनकर राजा ने काका कन्ह और दाहिम्म राय कैमास की तरफ देखा तो उन्होंने भी गुरूराम के बचनों का अनुमोदन किया। तब राजा पृथ्वीराज रावल समरसिंह जी कैमास तथा सब सेना को पट्टू बन में छोड़ और आप जामदेव, पज्जून राय, बलभद्र, जैतप्रमार, काका कन्हराय, अरिसिंह आदि छ सामन्तों और थोड़ी सी सेना को लेकर फाल्गुण सुदि १३ को दिल्ली की तरफ पधारे और दस दिन में पथ पूरा करके दिल्ली जा पहुँचे। शत्रु पर विजय प्राप्त करके बीर पृथ्वीराज का शुभागमन सुनकर राजकुमार सब सेना और शहरवालों की भीड़ भाड़ सहित दिल्ली के बाहर आध कोस पर्य्यन्त पिता की अगवानी करने के लिये पैदल पधारे। राजा ने कुमार से सादर मिलाप करके उन्हे अश्व पर सवार होने की आज्ञा दी। और तब आप सब सेना सहित आगे बढे। चैत बदि ७ को पृथ्वीराज दिल्ली में पहुँचे। वहां उन्होंने सानन्द सबसे मिलाप करके सुख से भोजन किया और नाना प्रकार के भोग बिलास से सुखी होकर, शहाबुद्दीन को अपने साम्हने बुलवा कर सेवकों को आज्ञा दी कि उसे सुख से सम्मान सहित रक्खो।

शहाबुद्दीन के पकडे जाने का समाचार जब गज़नी में पहुँचा तो वहा के राज्य उपमत्री तत्तार खा ने एक चतुर खत्री को सब प्रकार से समझा बुझा कर और एक पत्र देकर दिल्ली की ओर भेजा। यह लोरक राय नामक खत्री पाच सौ सवारों सहित बारह बारह कोस का पड़ाव करता हुआ दिल्ली के नगर द्वार पर आ पहुँचा। वहां उसने सब दिन विश्राम कर के दो घडी दिन रहने पर दिल्ली नगर में प्रवेश किया और राजद्वार पर जाकर दरबार में इत्तला करवाई कि गजनी से तत्तार खां का भेजा

हुआ राजदूत श्रीमान के दर्शनों की अभिलाषा से द्वार पर उपस्थित है। यह समाचार पाकर राजा ने उसे सम्मुख बुलवाया। तब लोरक राय ने दरबार में पहुँच कर राजा को सादर प्रणाम किया और राजा की आज्ञा पाकर वह एक ओर अदब से बैठ गया। कुछ देर में राजा का रुख देखकर वह चतुर दूत फिर उठा और राजा को तीन बार झुक कर प्रणाम करके उसने तत्तार खा का दिया हुआ पत्र राजा के पेशकार मधुशाह के साम्हने सादर पेश किया। राजा की आज्ञा पाकर मधुशाह ने उस पत्र में लिखी हुई शहाबुद्दीन को मुक्त किए जाने के विषय में तत्तार खा की अर्जी पढ सुनाई, जिसे सुन कर राजा ने हँस दिया। बुद्धिमान मधुशाह राजा की दृष्टि से उनके आतरिक अभिप्राय को ताड गया, और इसलिये उसने लोरक राय को युक्तिपूर्वक दरबार से विदा कर दिया।

दूसरे दिन लोरक राय पुनः दरबार में उपस्थित हुआ और उसने पृथ्वीराज की वीरता धीरता और सहनशीलता की बहुत कुछ प्रशसा कर के पुनः बादशाह के मुक्त होने की बात चलाई। पृथ्वीराज ने उसकी बातों का कुछ भी उत्तर न देकर उससे प्रश्न किया कि शहाबुद्दीन का गोरी नाम क्यों पड़ा।

राजा के ऐसे वचन सुन कर लोरकराय बोला कि महाराज! गजनी में जलालुद्दीन नामक एक क्रूर बादशाह राज्य करता था। वह ऐसा विषया-सक्त था कि उसके महल में ५१० हरमें (रानिया) थीं; किन्तु साथही इसके वह निष्ठुर और निस्स्नेह भी बडा था। वह जिस हरम के गर्भवती होने की खबर पाता उसका सर अपने हाथ से काट लेता था और वह केवल इसी भय से कि गर्भ से जन्मा हुआ पुत्र कहीं मुझे मार कर आप राज्य का अधि-कारी न बन बैठे; किन्तु न जाने क्या सोच कर निजाम शाह नाम के एक फकीर की सेवा वह बहुत किया करता था। उसकी सेवा से प्रसन्न हो कर फकीर ने आशीर्वाद दिया कि तुझ को एक प्रतापी पुत्र उत्पन्न होगा। फकीर का आशीर्वाद सुन कर शाह के शिर पर मानो वज्र पात हुआ। वह थर्राता हुआ घर आया तो सुनता क्या है कि एक बेगम गर्भवती है; परन्तु जब तक शाह उसके मारने का विचार करे कि वह भयभीत बेगम महल से निकल कर भाग गई। इसके पाच वर्ष पश्चात् शाह जलालुद्दीन भी जहन्नुम रसीद हुआ। तब राज्य कर्म्मचारी गण बडे सोच विचार में पडे कि अब इस अराजक प्रजा का पालन किस भाति होना सभव है। तबतक एक शेख ने आकर कहा कि एक अद्वितीय तेजस्वी बालक नगर के बाह्यप्रान्त में गोर अर्थात् कब्रिस्तान में रहता है, तुम उसे ही अपना बादशाह बनाओ। चलो, मैं तुम्हें उस बालक को दिखाद्रू। जब सब लोग उसके साथ हो लिये तो वहा जाकर देखते क्या हैं कि एक ५ वर्ष का परम प्रतापी बालक बैठा हुआ बाल क्रीडा कर रहा है। सब लोग उसका तेजस्वी स्वरूप और होनहार पुरुषों की आकृति देख कर उसे सादर राज्य महल में लाए और नजूमियों को उसके जन्म फल कहने की आज्ञा दी तो उन लोगों ने कहा कि यह बड़ा प्रतापी बादशाह होगा। यह भारतवर्ष में भी मुस-लमानी शासन की नींव डालेगा और जिससे यह बार बार बदी किया जायगा, उसे ही यह नाश करने वाला होगा।

इस प्रकार जब लोरक राय शहाबुद्दीन की पूर्व कथा वर्णन कर चुका; तब पृथ्वीराज बोले कि शाह के पास शृगारहार नामक एक सिंहलद्वीपी परम सुन्दर प्रशस्तकाय हाथी है। वह और उसके साथ ३० हजार घोडे हमको दड मे दिए जाय तो हम तुम्हारे बादशाह को छोड देवे। इस पर लोरक राय ने उत्तर दिया कि श्रीमान् की जैसी मर्जी होगी वही किया जायगा परन्तु हमारी प्रार्थना यही है कि शाह छोड दिया जाय। इस प्रकार प्रतिज्ञा करके लोरक राय ने गजनी को एक पत्र लिख कर वहा से उक्त हाथी और घोड़े मँगा कर पृथ्वीराज को समर्पण किए; और तब शाह को छुडा लिया। शहाबुद्दीन कैद से छुटकर गज़नी जा पहुँचा और वहा उसके सूर

सामन्त और साथी लोग नाना भांति से आनन्द मनाने और अपने परवरदिगार को धन्यवाद देने लगे।

इधर पृथ्वीराज उस दीर्घकाय शृगारहार को निरतर अपनी आँख के साम्हने रखता था, वह हाथी सात हाथ ऊचा नौ हाथ लबा और दस हाथ मोटा था। जिस समय पृथ्वीराज गिरिपुत्र ऐसे गयद पर सोने चादी का साज सज कर सवार होता था उस समय ऐसा सुशोभित होता था मानों पृथ्वी को तारण-तरण करने के लिये इन्द्र के अश का आविर्भाव हुआ हो। एक दिन पृथ्वीराज उस हाथी पर सवार होकर शिकार करने के लिये पधारे तब तक नरनाह कन्ह भी साथ में हो लिए, दोनों नरसिंह बीर उस सघन वन में विचरते फिर रहे थे कि बनरखे ने आकर खबर दी कि महाराज पास ही में एक बड़ा भारी सुअर है। तब राजा ने उसको रोकने की आज्ञा दी और वह आप स्वय उसकी ओर बढा; चारों ओर से घिर जाने पर उस सुअर ने हुकार शब्द करते हुए जो बढना चाहा कि राजा ने उसे वाण से मार कर धराशायी किया। तब तक एक शेर का समाचार मिला जिसे सुन कर राजा ने प्रसन्नता प्रगट करते हुए कहा कि मै तो अब इसका शिकार किए विना न रहूगा और तत्क्षण ही वह पारधी के कहे हुए सकेत स्थल की ओर मुड पडा। थोड़ी ही दूर चलने पर देखा गया कि नदी के किनारे एक बिकराल सिह एक वृषभ के मृत शरीर को भक्षण कर रहा है। ऐसा देख कर राजा ने उसके हाके जाने की आज्ञा दी, इधर से महावत ने भी शृगारहार को उसी तरफ झुकाया। यह सब कोलाहल सुन कर वह सिंह बडे ही वेग मे राजा की तरफ झपटा और राजा ने भी तीर चलाया पर चूक गया। तब खवास स्थान मे बैठे हुए कुरम राय ने खड्ग से सिह को दो टूक कर के गिरा दिया। इस वीरता से सब सेना तथा राजा ने स्वय कूरम राय की बड़ी प्रशसा की। इस प्रकार शिकार करके राजा जब दिल्ली लौट आए तब कविचद ने शेर के शिकार सम्बन्धी उक्त समाचार को सुनकर राजा पर पुष्प वर्षा करके आशीर्वाद देते हुए अपने हार्द्रिय आनन्द की सूचना और बधाई दी।

दूसरे दिवस राजा ने प्रोहित गुरुराम से धन निकालने के लिये षट्टू बन को चलने के लिये शुभ मुहूर्त्त पूछा। अतएव गुरुराम ने वैशाख सुदि ३ को प्रस्थान निश्चय किया। तदनुसार ही महाराज ने यात्रा की। रास्ते में नाना प्रकार के मागलीक वस्तुओं का दर्शन करते हुए जब पृथ्वीराज षट्टूबन में पहुचे तब रावल जी ने आगे बढ कर सादर मिलाप किया। इधर पृथ्वीराज ने भी योगिराज रावल को शाह छोडे जाने और शिकार इत्यादि का समाचार सुना कर प्रसन्न किया।

इस प्रकार उस दिन पथ का परिश्रम निवारण करने पश्चात् राज्यमत्री कैमास से राजा ने धन निकालने के विषय में पूछा। तब कैमास ने वहा का भेद वर्णन किया और राजा, रावल जी तथा मुख्य मुख्य सामन्त और कुछ सेना को लेकर उपरोक्त पाषाण लिपि के पास पहुचे। कैमास ने उस बीजक को पढ़ा तो उसमें ये वाक्य लिखे थे—

दोहा ॥

ऊरध अगुल सठ त्रिसठ, तीर कहत चवसाठि।
तहा अच्छर त्रिम्यो सु इम, सर में द्रव्य अनिट्ठ ॥
भरि प्रसक अगुल भरिग, तिय अगुल सत अक॥
अगुल अगुल अक में, एकादमो प्रसक ॥२॥

कैमास ने बीजक के तात्पर्य को भली भाति समझ कर और तदनुसार ही अपने हाथ से स्थान को माप कर वहा पर खोदने की आज्ञा दी। रावल जी ने वहा पर अनिष्टों के नष्ट होने के अभिप्राय मे प्रथम पूजनार्चन किया और तब खुदवाना आरभ किया। कुछ ही गहरा खुदने के अनतर एक पाषाण पुतरी पाई गई जिसके माथे पर कुछ अक खुदे हुए थे। निदान उसे भी कैमास ने पढा तो उसमें लिखा था कि "सब सामन्त लोग मुझे देख कर न

इसे तो पाषाण को देखे।" निदान शुभ मुहूर्त का वेध होते ही कमान की मूठ के बीच की ताली निकालने के लिये ज्योंही उसे तोडा गया कि एक बडा भारी सर्प फनफना कर निकला जिसको देख कर और तो सब लोग भागे परन्तु चन्द ने मन्त्र द्वारा कील कर उस सर्प को पकड लिया और तब सब लोग धन देखने लगे।

चंद की बात मान कर (संवत ११३८) महाराज पृथ्वीराज स्वयं धन निकालने के लिये वहां आए और आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काट कर धन निकाला जाय; राजा की इस आज्ञा के देते ही वह भूमि कांपने लगी और एक हुंकार शब्द भी हुआ। शस्त्र की नोक से एक पत्थर हटाया गया जो कि तीस अंगुल मोटा था जिसमें से बारह अंगुल मोटे हंडे का मुंह दबा था। इस प्रकार खजाने का मुहं खुल गया। जब बारह हाथ और खोदा गया तो वहां से एक महा भयानक देव निकला और नाना भांति की राक्षसी माया करके युद्ध करने लगा। जब उसने अधिक उपद्रव किया तब चंद ने देवी को स्तुति और अर्चना से प्रसन्न करके आवाहन किया और उस राक्षस के बध करने की प्रार्थना की। जब देवी उस दैत्य का बध कर चुकी तब चंद ने विनीत भाव से पुनः प्रार्थना की कि हे माता हम लोग इस धन की पूर्व्व कथा जानने के बड़े अभिलाषी है। सो कृपा कर कहिए तो बड़ा अनुग्रह हो।

चंद के ऐसे बचन सुन कर देवी ने कहा कि हे पुत्र, सतयुग में मन्त्र, त्रेता में सत्य, द्वापर में पूजा और कलियुग में वीरता प्रधान है। हे कविचंद गत समय में रघुवंश में कोई आनन्द नामक राजा बड़ा वीर और पराक्रमी था परंतु साथ ही इसके वह अधर्मी अन्यायरत और प्रजापीडक भी था। जहां कहीं ऋषि ब्राह्मणों के यज्ञादि की चरचा सुनता कि उसे विध्वंस कर देता। इसलिये ऋषियों ने उसे शाप दे दिया जिससे उसका शरीर उसी समय भस्म हो गया और तब से वह दैत्य रूप धारण कर इस स्थान पर निवास करने लगा। इसके बहुत दिन पश्चात उसी रघुकुल को भगवान रामचन्द्र ने जन्मधारण कर पवित्र किया। इस प्रकार काल तो पुराना हो गया परन्तु यह लक्ष्मी अब तक ज्यों की त्यों बनी हुई है।

देवी के मुख से ऐसे बचन सुन कर पृथ्वीराज ने प्रार्थना की कि अब कृपा कर ऐसा वर दीजिए कि धन निकालने में अब किसी प्रकार का विघ्न उत्पन्न न हो। इस पर देवी एवमस्तु कह कर अन्तर्ध्यान हो गई। तब देव ने चन्द से कहा कि मेरे पिता रघुवंशी धर्म्माधिराज थे। उनका अन्यायी पुत्र आनन्द चन्द मैं ही हूं। शाप से मर जाने बाद मेरा नाम वीर पड़ा। यह सब धन मेरा ही संग्रह किया हुआ है। इसी कारण मेरी यह गति हुई। निदान इसी प्रकार अपने पिता तथा अपनी वीरता की प्रशंसा करते हुए उसने अपने साम्हने ही धन निकाले जाने को कहा; तब चन्द ने पूछा कि हे वीर अब तुम्हारी प्रसन्नता के लिये हमारे महाराज क्या कार्य्य करें। यह सुन कर वीर बोला कि मेरे लिये ब्राह्मणों से जप करवाओ और महिष का बलि दो- इस प्रकार कहके वह वीर अन्तर्ध्यान हो गया।

तदुपरान्त राजा ने विद्वान पण्डितों को बुलवा कर पूजन करने की आज्ञा दी और आप, रावल जी, चंद, कैमास तथा अन्य छ प्रधान सामन्तो सहित वहां ही बैठे। उस स्थान के खोदे जाने पर एक बड़ा भारी पत्थर का स्वच्छ दालान निकला उसमें एक स्वर्ण के मणिजटित हिंडोले पर एक सोने की पूतरी बीणा बजाती और नाचती हुई निकली; जिसे देख कर सब के सब आश्चर्य्य में पड गए। तब चंद ने कहा कि यह मायारूपी पूतरी है और ध्यान द्वारा वीर से उस का वृत्तान्त जानकर कहा कि यह पुतरी ऋद्धि रानी का अवतार है। इस से डरिए मत, इस हिंडोले को पूजन में रख देना उचित होगा। इस प्रकार वार्तालाप हो ही रहा था कि उस पूतरी की एक कटाक्षमय दृष्टि से गुरु राम और चन्द मूर्छित होकर गिर पड़े; परन्तु कुछ

देर में फिर से सम्हल कर उठ बैठे। तब गुरुराम ने पृथ्वीराज से पूछा कि यह जो धन अब तक प्राप्त हुआ है सो तो श्रीमान नजर ही कर चुके; आगे अब क्या किया जाय सो आज्ञा दीजिए।

दूसरे दिवस सब धन सम्मुख रक्खा गया। राजा पृथ्वीराज और रावल समर सिंह जी पहिले तो देवी पूजन को गए। वहा दस महिष बलि करके और देवी की प्रसन्नता प्राप्त करके दोनों बीर पुरुष प्रेम पूर्व्वक एक ही सिंहासन पर बैठ कर उक्त धन का निरीक्षण करने लगे। उसी समय पृथ्वीराज ने रावल जी को आधा धन बाँट देने की इच्छा प्रगट की; परन्तु रावल जी का रुख न देख कर चुप हो रहे। और उनके अनुचरों को यथायोग्य द्रव्य प्रदान करके उन्हें प्रसन्न किया। तदुपरात रावल जी ने भी आग्रह पूर्व्वक विदा माग कर चित्तौर चलने की तय्यारी की; तब पृथ्वीराज ने उन्हें ५ हाथी और १०० घोडे देकर बिदा किया। चद कवि और कैमास कुछ दूर पर्य्यन्त पहुँचाने गए। जब कैमास रावल जी को पहुँचा कर लौटे तब राजा की आज्ञाअनुसार वह सब धन हाथियों पर लदवा कर ससैन्य दिल्ली की ओर यात्रा की गई। निदान ज्येष्ठ सुदि १२ रविवार को राजा पृथ्वीराज दिल्ली में दाखिल हुए। इनका आगमन सुन कर राजकुमार ने सब राजसी ठाट बाट सहित नगर के बाहर आकर अगवानी की। उस दिन दिल्ली नगर भी अपनी सजधज और प्रतिभा से इन्द्रपुरी को परास्त करने का अभिमानी था; अटा अटारी गोख और झरोखों में मगला मुखी स्त्रिया कलकण्ठ से गान करती थीं। राज द्वार पर नौबत झडती, बंदीजन विरदावली पढ़ते और ब्राह्मण लोग स्वास्तिवाचन कह रहे थे। राजा ने महलों में जाकर सब रानियों को प्रसन्न किया। दूसरे दिवस राजा ने दरबार में बैठ कर उस संपति का आधा भाग यथायोग्य सब सामन्तों में बाट दिया। शेष को राज्य कोष में जमा किए जाने की आज्ञा दी।



शशिवृता वर्णन ।

(पचीसवां समय ।)

पृथ्वीराज के खट्टूवन मे गडा हुआ धन प्राप्त करने की कथा समाप्त करके कवि शशिवृता के व्याह की सविस्तर कथा इस प्रकार से वर्णन करता है।

गरवीली ग्रीष्म ऋतु के अवसान और पावस के आरम्भ मे एक समय जब कि पृथ्वीराज. केशर कुंकुमादि अष्टसुगंधमिश्रित घनसार का शरीर मे लेप किए हुए लहलहाती हुई ललित लताओं, प्रस्फुटित पुष्पों और हरे भरे तृण समूह से पूरित उद्यान मे, सेवक, सामन्त और सखाओ सहित बैठा हुआ स्वच्छन्दता से प्रकृति का आनन्द ले रहा था उसी समय चन्द्रोदय नामक एक नट ने आकर प्रणाम किया। राजा ने प्रसन्नतापूर्वक उसका प्रणाम स्वीकार कर के उसे अपनी नाट्य विद्या सम्बन्धी कलाए दिखाने की आज्ञा दी। अतएव नट ने मृदंगी, दाविडका ताली, कलही, श्रुत, धुर्द्धरी आदि प्रबन्धबद्ध गीत और नृत्य इत्यादि दिखला कर राजा को सन्तुष्ट किया।

नट की नाट्य एवं नृत्यादि कलाओ के खेल से प्रसन्न हो राजा पृथ्वीराज ने उसे बैठने की आज्ञा दी और पूछा कि हे चतुर नट, तेरा नाम ग्राम क्या है सो कह। यह सुन कर नट ने उत्तर दिया कि हे महाराज ! देवगिरि नामक नगर मे सोमवंशी यादव राज्य करता है जो कि एक उत्तम राज्य शासक होने के सिवाय संगीत विद्या और कलाओ मे भी अत्यन्त निपुण है। मै उसी राजा के दर्बार का नट हूं। अपने दर्बार से सीख (छुट्टी) लेकर कुरुक्षेत्र की तीर्थ यात्रा करने जा रहा था, श्रीमान् की गुणग्राहकता के विषय में सुन कर दिल्ली को आया हूं। तब पृथ्वीराज ने पूछा कि हे नट, तुम्हारे राजा की कन्या का विवाह कहा हुआ? नट ने उत्तर दिया कि प्रथम तो उसका सम्बन्ध उज्जैन के राजकुमार से होना निश्चय हुआ था किन्तु यह सगाई तोड़ दी गई है और अब वह व्याह कन्नौज के राजा के भतीजे के साथ होगा। अन्नदाता! वह राजकुमारी शशिवृता ऐसी सुन्दर है कि मुझ से उसके सहज सौन्दर्य्य और स्त्रियोचित गुणों का वर्णन कदापि नहीं किया जा सकता।

पृथ्वीराज ने सभा विसर्जन कर नट को एकान्त मे बुलाकर पूछा कि शशिवृता के विषय मे जो कुछ कहना हो अब कहो। तब नट बोला कि धणी क्षमा, अन्नदाता, मैं क्या कहूं। उस चंद्रमुखी, मृगलोचनी, कलकंठी, सुकनासा, गजगामिनी, सर्वाङ्ग सुन्दरी सुकुमार राजकुमारी शशिवृता का ऐसा मनोहर स्वरूप है मानो ब्रह्मा ने भूमि पर दूसरी मेनिका का निर्माण किया हो। नट के ऐसे वचन सुन कर पृथ्वीराज के हृदय में शशिवृता के सौन्दर्य्य का चित्र सा खिंच गया। उसने उत्सुक होकर नट से पूछा कि कोई ऐसा उपाय भी है जिसमें शशिवृता का व्याह मुझ से हो। इस पर नट ने उत्तर दिया कि इस विषय में श्रीमान् से मैं फिर कभी निवेदन करूंगा परन्तु अपने बश भर आपके लिये संतोष जनक प्रयत्न करने में किसी प्रकार की त्रुटि भी न करूंगा।

पृथ्वीराज ने नट को तो एक हाथी, पांच घोडे और बहुत सा द्रव्य देकर बिदा किया और वह कुरुक्षेत्र को चला गया, परन्तु राजा का चित्तचकोर शशिवृता के रूपराशि रूपी शशधर की धुन मे ऐसा निमग्न हुआ कि उसे अहर्निशि कल्पसम व्यतीत होने लगा। राजा ने अपनी अभिलाषा की पूर्ति के लिये शिव की आराधना की और आशुतोष शिव ने उसे वाञ्छित वर्दान भी दिया, परन्तु उससे पृथ्वीराज की आशालता को एक प्रकार का सहारा होने से उसकी निज प्रेयसी से सम्मिलन की लालसा दिन प्रति दूनी बढने लगी। पावस का प्रवेश होते ही पृथ्वीराज की विरह वेदना और भी बढने लगी, ज्यों ज्यों जल की वृष्टि अधिक होती, पपीहा, मोर मेढक बोलते, झिंगुर झनकार करते, जुगनू दमदमाते, घन घहराता और बिजली चमचमाती त्यों त्यों राजा की शशिवृता प्रति विरह वेदना बढती ही जाती थी। जब पावस का अवसान और स्वच्छ

शरद ऋतु की अवाई हुई, तब प्रकृति के निर्मल होने के साथ ही पृथ्वीराज की हृदयस्थ प्रेयसी प्रतिमा भी मानो स्वच्छ भाव से भासित होने लगी। सुन्दर सर सरिताओं का निर्मल जल, उसमें कल्लोल करते हुए पक्षी समूह, वन और उपवन की लहलहाती हुई लोनी लताएं और सुगन्धित सुमन राजा की कामेच्छा को अत्यन्त उद्दीपित करते थे प्रफुल्लित कुमोदिनी और कमल तो पृथ्वीराज के कलेजे पर कटारी का काम करते थे। इसी समय पृथ्वीराज ने अपने मन बहलाने के लिये निज स्वाभाविक व्यवसाय एवं व्यसन अर्थात् शिकार खेलने की इच्छा की। राजा की आज्ञा होते ही समस्त शिकारी साज सामान सज कर दुरुस्त हो लिए। नियत दिन मंगल वार को पृथ्वीराज अपनी मित्र मंडली एवं सामंतों सहित शिकार करने के लिये जंगल को पधारे। पृथ्वीराज के साथ में अगनित वागुर, जाल, शिकारी बैल, चीते, कुत्ते, हिरन, श्रीगोस और कुही, बाज, जुर्रा आदि शिकारी पक्षी भी थे। जंगल में पहुंच कर जहां तहां शिकारी जानवर छोड़े गए और राजा एक उत्तम स्थान में ठहर कर अपने पालित पशुओं एवं वधिकों का जघन्य कार्य्यकौशल निरीक्षण करने लगे। राजा जिस समय इस व्यवसाय में व्यस्त होकर वधिकों को इनाम दे रहे थे तब तक एक बनरखे ने खबर दी कि अमुक स्थान में एक बड़ा भारी वाराह है। उसने यह भी कहा कि उक्त स्थान ऐसे समारोह के साथ जाने योग्य नहीं है। ऐसा सुनते ही पृथ्वीराज बंदूक कंधे पर रख कर अकेले ही उस बनरखे (वधिक) के साथ हो लिए। उस समय राजा के साथ में गतिसिंह (सिंह-गति) नामक स्थान भी था जिसपर पृथ्वीराज का अत्यन्त प्रेम और विश्वास था। राजा ने बड़ी कठिनता से उक्त स्थान पर पहुंच कर वाराह को एक ही गोली से मार गिराया। राजा ने उस वधिक को बहुत सा इनाम दिया। एक दिन और भी उसी गहन बनमें ठहर कर दूसरे दिन दिल्ली को प्रस्थान किया।

कविचन्द के इतनी कथा कह चुकने पर उसकी स्त्री ने कहा कि हे स्वामिन्! राजा पृथ्वीराज और शशिवृता के गन्धर्व विवाह का सम्पूर्ण प्रबन्ध वर्णन कीजिए। ऐसा सुन कर कविचन्द ने कहा कि जिस समय दक्षिण दिशा में स्थित देवगिर के राजा शशिवृता के पिता राजा भानराय यादव का भेजा हुआ ब्राह्मण शशिवृता का टीका लेकर कन्नौज में पहुंचा और उसने जयचन्द के दर्बार में अपने आने की खबर कराई तो जयचन्द ने उसे तुरन्त ही अपने पास बुला कर उसके आने का कारण पूछा। तब ब्राह्मण ने कहा कि मैं देवगिरि के राजा भानराय का प्रोहित हूं। मैं उन्हीं की कन्या का लग्न लेकर आपके भतीजे को चढाने आया हूं।

जयचन्द की सभा में वर्तमान एक गंधर्व उक्त वृत्तान्त के सुनते ही देवगिर की तरफ चल दिया और नगर के बाहर एक रमणीक उपवन में सखी समूह सहित बाल क्रीडा करती हुई शशिवृता के पास सुन्दर हंस के स्वरूप में जा पहुंचा। राजकुमारी शशिवृता ने उस हंस को प्रसन्नता पूर्वक पकड़ लिया और उसे अपने कोमल कर कमल पर बिठा कर वह कहने लगी कि हे पक्षि वर, तुम्हारा निवासस्थान कहां है? यह सुन कर हंस ने उत्तर दिया कि मैं वास्तव में गंधर्व हूं और इन्द्र की आज्ञा पाकर इस स्वरूप से तुम्हारे पास आया हूं। तब शशिवृता ने कहा कि हे त्रिकालज्ञ गंधर्व आप मुझे यह बतलाइए कि मैं पूर्वजन्म की कौन हूं और मेरा विवाह किसके साथ होगा। इस पर हंस वेषधारी गंधर्व ने उत्तर दिया कि तुम पूर्वजन्म की चित्ररेखा नाम की अप्सरा हो, कोई विशेष अपराध हो जाने से इन्द्र के शाप वश तुम्हें मानव शरीर धारण करना पड़ा। तुम्हारे पिता ने तुम्हारा व्याह कन्नौज के राजा के भतीजे वीरचन्द से करना विचारा है परन्तु वह वर तुम्हारे योग्य नहीं है क्यों कि वह एक ही वर्ष बाद युद्ध में मारा जायगा। ऐसा विचार कर इन्द्र ने दयापूर्वक मुझे तुम्हारी सहायता करने के लिये भेजा है। हंस की ऐसी विचित्र वाणी सुन कर शशिवृता ने उससे कहा कि आपने मेरे ऊपर माता पिता के समान अनुग्रह प्रगट

किया है अतएव अब आप जिसे बतलावेंगे मैं अपना व्याह उसीके साथ करूंगी। तब हम ने कहा कि दिल्लीपति चहुआन ही तुम्हारे योग्य वर है, इस समय वह एक अद्वितीय वीर पुरुष है, उस ने गुजरात के राजा महाबली भीमदेव को परास्त किया और गजनी के बादशाह सुलतान शहाबुद्दीन को कई बार बांध बांध कर छोड़ा दिया है। इस पर शशिवृता ने उत्तर दिया कि तो आपही वहां जाकर पृथ्वीराज के हृदय में मेरे प्रति अनुराग उत्पन्न कराइए और यदि उन्होंने मुझे न स्वीकार किया तो मैं शरीर त्याग दूं गी।

इस प्रकार शशिवृता के हृदय में पृथ्वीराज के अतुल अनुराग का अङ्कुर अङ्कुरित करके वही हंस वेशधारी गन्धर्व पृथ्वीराज के पास चला। सुन्दर स्वच्छ चन्द की कला के समान स्वेत एव हिमवत धवल देहधारी हंस गहन बन में विहार करता हुआ पृथ्वीराज के समीप आकर फिरने लगा, पृथ्वीराज ने ज्यों ही उसे हाथ बढ़ा कर पकड़ना चाहा कि वह उसी समय ब्राह्मण के स्वरूप में हो गया, उसने सायकाल के समय राजा को एकान्त में पत्र देकर कहा कि महाराज यादव कुमारी शशिवृता ऐसी सुन्दर है कि मैं ही क्या कोई भी उसके अनुपम लावण्य और प्राकृतिक सौन्दर्य्य का यथावत वर्णन नहीं कर सकता। बयःसन्धि अवस्था में होने से उसकी अग शोभा इस समय ऐसी जगमगा रही है जैसे पूर्णिमा को सूर्य्य के अस्त और चन्द्रमा के प्रकाश होने के समय प्रकृति की शोभा होती है। एव राजन उस सुकुमार कुमारी की बाल्यावस्था शिशिर ऋतु के अवमान के समान ह्रास और बसत ऋतु के आरभ के समान उसके यौवन का प्रकाश होता आता है। उसके बाल्यावस्था सम्बन्धी साधारण अवयवों का प्राचीन पत्रों के समान काट छाट होता हुआ उसके सुकोमल अंग नवीन कोपों की भाति कुसुमित हो रहे है। अधिक क्या कहूं वह सुकुमारी स्वय वसत ऋतु की फुलवारी की क्यारी के समान मुनि मनहारी, ससार सुखमा की मूर्ति बन रही है। एक तो पृथ्वीराज का मन पहिले ही से शशिवृता की याद मे व्यग्र था तिस पर हम के मुख से ऐसा उपमाए सुन कर पृथ्वीराज की कामाग्नि एव उसका भविष्य प्रिया प्रति अनुराग ऐसा बढ़ा कि उसे सब रात्रि शशिवृता की ही मूर्ति स्वप्न में दिखाई दी। प्रातःकाल होते ही राजा ने पुनः उससे मिल कर शशिवृता के विषय में वार्तालाप छेड़ा और इस समय उसने शशिवृता के पिता के कन्नौज दूत भेजने, शशिवृता की उस सम्बन्ध प्रति विरक्त होने और उसको पृथ्वीराज प्रति प्रीति होने की कथा कह सुनाई। उसने कहा कि हे राजन् वह चित्र रेखा अप्सरा का अवतार शशिवृता आपको व पाने के लिये व्रत धारण करके सदा शिव का पूजन करती है, अतएव मैं उन्हीं शिव की प्रेरणानुसार आपके पास आया हू। अब जहां तक आपसे हो सके जल्दी कीजिए और शशिवृता से मिलिए।

हंस के मुख से ऐसे अलौकिक युक्तिमय वचन सुन कर पृथ्वीराज ने पूछा कि हे सर्व विद्याओं के विज्ञ, सब रसों में सरस शृंगार रस के शिरोमणि हंसराज, मैं आपसे यह जानना चाहता हू कि जो कवियों ने स्त्री जाति के चार भेद कहे हैं उन का सूक्ष्म विवरण क्या है और शशिवृता उनमें से किससे सम्बन्ध रखती है। इस पर हंस ने उत्तर दिया की महाराज जिस स्त्री की जिह्वा लाल हो, सिंह के समान जिसके अंग हों, वाणी मधुर हो, रति सदृश हो, प्रभावाती हो, शील हो, कुलीन हो जिसके स्तन साधारण और उदर सम हो वही स्त्री सर्वोत्तम कही गई है। आगे जो कवियों ने स्त्रियों के चार लक्षण कहे है वे ये हैं—पद्मनी उस स्त्री को कहते है। जिसके केश कुटिल हों, स्तन गोल हों दत पक्तिस्निग्ध हो, जिसके शरीर से कमल की सी गंध आती हो, वीणा स्वर समान जिसकी वाणी हो निद्रा काम क्रीड़ा और प्रवाद में कम प्रीति करने वाली हो, धैर्य्य, क्षमा, शीलादि सद्गुण जिसके स्वाभाविक हों, सब भाति के वस्त्रों पर जिसकी रुचि रहती हो। हंसिनी उसे कहते है जिसके केश ऊर्द्ध हों,

स्तन वक्र, दांत चमकीले, गंध मधुर, जो कामक्रीडा में अधिक प्रीति करने वाली हो, नेत्र जिसके खजन की भाति चित्रित , विशाल और चचल हों और हृदय जिसका सदैव अनिस्थिर हो, किन्तु पति की प्रेम मूर्ति का चित्र सदैव चित्त से चिंतन करती हुई, जो उस से मान की अभिलाषिनी हो। चित्रनी उसे कहते हैं जिसके केश बडे और चन्द्रमा के समान मनहरण मुख हो, जिसके शरीर से मृगमद की गंध आती हो, कोकिला के समान जिसका उच्चारण हो, रति में प्रीतियुक्त हो, जिसके नेत्र शील, लज्जा और आलस्य से भरे हुए हों और वह छबि की खानि सहज क्षमावान, मोहनी मत्र के समान कटाक्षमय दृष्टिपात से ही हृदय पर आघात करती हो। और सखिनी उसे कहते हैं जिसके केश छोटे और मूक्ष्म हों, स्तनतल क्षीण हो, दात मोटे हो, उच्चारण मधुर हो, उदर और कटि मोटी हो, जिसके शरीर से दुर्गन्ध आती हो, कम बोले और अधिक सोवे, शील और गम्भीरता हीन सदैव कलहकारिणी हो, आचार विचार में स्वच्छ न हो स्त्रियोचित सद्गुणों से रहित, व्यभिचार में दत्तचित्त ऐसी असख अवगुण की मूर्ति शखिनी स्त्री का स्वामी सदैव सासारिक सुखों से वञ्चित रहता है। हे राजन वह यादव कुमारी सुकुमारी शशिवृता इनमें से उपरोक्त प्रथम श्रेणी की स्त्री है। उसके उठते हुए यौवन ऐसे सुशोभित होते है मानो उसके हृदय कमल पर आसीन मनोज महाराज ने अपनी रक्षा के लिये दो दृढ दुर्ग निर्माण किए हों। इस अवस्था में उसके सुरग नख और एडी माणिक और कमोदिनी की रक्त प्रभा का उपहास करते है, हंसशिशु की चाल को नीचा दिखाने वाले, उस गजगामिनी कामिनी के जघा और पिंडुरी काम की खराद एव अनग के रंग मे रँगे हुए स्वर्ण के खम्भे मे सुशोभित होते हैं। उसके बडे बडे कोमल और सुडौल नितम्ब मनसिज की शय्या के गुलगुले गेंडुए से ज्ञात होते है। उसकी क्षीण हीन लङ्क पर आरोपित उन्नत अग्रभाग तुला का सा काटा तुल रहा है, सुन्दर सुकोमल उदर पर विराजमान रोमराजि ऐसी प्रतीत होती है मानो मुख चद का अमृतपान करने की लालसा से सुमेर शिखर पर चींटिया चढ रही हो, उसकी ग्रीवा शख एव कपोत की ग्रीवा के समान है, उसकी सुढार चारु सुन्दर चिबुक पर रक्खा हुआ नील बिन्दु इकट्ठा हुआ चन्द का कलङ्क सा मालूम होता है। उसके सुढार दुतिमय दातों की दमक दामिनी की दीप्ति सी प्रदीप्त होती है, उसकी नासिका कीर की नासिका का लज्जित करती है, उसके स्वाभाविक कटाक्षमय नेत्र देखने वाले के कलेजे को काढे लेते है, उसका प्रशस्त ललाट साक्षात् अनग भवन के सुविचित्रित आगन के समान शोभित है, उसके सुकोमल काले सटकोर घुंघरारे सिवार सम सूक्ष्म केश रेशम को मात करते हैं और उनसे गुही हुई अलकें साक्षात सर्पिणी सी विराजती है, हे राजन् उस आनन्द मूर्त्ति रसिक मन हारिणी राजकुमारी की सुन्दरता को मै क्या कहू उसे देख कर बडे काव्यविशारद चतुर कविजनों का चित्त चकित होना सम्भव है।

पृथ्वीराज ने पुनः पूछा कि हे हसराज अप्सरी का अवतार क्यों कर हुआ सो कहो ? यह सुनकर हंस बोला कि एक समय महादेव जी स्वर्ग में इन्द्र के स्थान पर पधारे तब इन्द्र ने आशुतोष शिव को सादर सुभग आसन दे अर्घपाद्यादि पूजा से प्रसन्न किया और उनकी रुचि जानकर इन्द्र ने अप्सराओं को नाना प्रकार के नृत्य गान से उन्हें सतुष्ट करने की आज्ञा दी, तदनुसार रभा, घृताची, मेनिका मंजुघोषा, उर्वसी, केशी इत्यादि देवाङ्गनाएँ नाना प्रकार के वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित हो उच्च स्वर से उत्तमोत्तम राग रागनियों का अलाप और ताण्डवादि नृत्य कर कर शिव के सम्मुख कामोद्दीपक कटाक्षों सहित हाव भाव बताने में प्रवृत्त हुई। सयोग वश चित्ररेखा के स्वरूप पर मोहित हो महादेवजी क्षणमात्र के लिये काम के वशीभूत से हो गए। इस लिये उन्होंने कुपित हो कर उक्त अप्सरा को शाप दिया कि वह स्वर्ग से पतित होकर मृत्युलोक में मानवी शरीर धारण करे। शिव जी

के शाप से भयभीत हुई उस अप्सरा ने विनीत भाव से स्तुति कर के शिव जी को किसी प्रकार प्रसन्न किया तब उन्होंने कहा अच्छा तू मृत्युलोक मे देवता के समान बलवान और प्रतापी पति पावेगी। यह कह कर महादेवजी तो कैलाश को चले गए और अप्सरा स्वर्ग से पतित हो उसी क्षण शशिवृता के नाम से देवगिरि के राजा भान के घर जन्मी, हे महाराज सो उसका यह अवतार आप ही के लिये हुआ है। यद्यपि शशिवृता के माता पिता उसे कान्यकुब्जेश्वर के भतीजे को व्याहना चाहते है परंतु वह अपना तन मन आप पर न्योछावर कर चुकी है; अतएव अब आपको भी उचित है कि यथासम्भव शीघ्रही उसकी प्रेमपिपासा को पूरा कीजिए। हस की ऐसी बाते सुन कर पृथ्वीराज ने पूछा कि शशिवृता को मेरे प्रति अनुराग क्यों कर हुआ, हे हसराज, इसका भी कारण बतलाइए। तब हस ने उत्तर दिया कि देवगिरि के यादवराजा भान के मत्री आनन्द चन्द की बहिन का नाम चान्द्रिका था। उसका विवाह हिसार प्रान्तान्तर्गत नगर कोट में एक बडे धनाढ्य और गुणवान पुरुष से हुआ, दैव योग से चन्द्रिका के पति का सहसा परलोक वास होगया, तब वह पतिविहाना दुखित चित चन्द्रिका स्वसुराल से आकर देवगिरि में ही रहने लगी, वह मन्त्रिपुत्री पठन पाठन, गान, वाद्य इत्यादि स्त्रियोचित गुणों मे अत्यन्त दक्ष और चतुर थी इस लिये राजा भानु ने उसे शशिवृता को शिक्षा देने के लिये नियत कर दिया। चन्द्रिका शशिवृता को पढाते समय बहुधा आप के अतुल बल पौरुष और प्रताप का वार्तालाप किया करती थी जिसे शशिवृता बडे चाव से चित्त लगाकर सुना करती थी। इस प्रकार दो वर्ष व्यतीत होने पर जब शशिवृता का यौवन काल आया तो उसका मन मकरन्द आपही के यश कमल पर मोहित हो गया और वह आपकी प्राप्ति के लिये शिवजी का पूजन करने लगी अतएव आशुतोष शिवजी ने प्रसन्न हो कर आपके साथ विवाहे जाने का वर उसे दिया और मुझे आपके पास प्रेरित किया। पृथ्वीराज ने कहा कि उसके पिता ने जयचन्द के ही घर क्यों व्याह ठहराया? तब हम ने कहा कि आप इसको क्या पूछते है उसे नहीं घर जँचा तो क्या? परन्तु यह अवश्य है कि यादव के प्रोहित ने कनवज्ज जाकर कुम्भा को टीका चढा दिया और वह कमधुज पचास हजार सेना के साथ सज धज से व्याहने आ रहा है। पृथ्वीराज ने कहा कि तब मैं भी दस हजार रणकुशल सेना लेकर चलने को तय्यार हू किन्तु आप कृपा कर विवाह की नियत तिथि और शशिवृता से मिलने के सकेत स्थल की सूचना मुझे दीजिए, तब हस ने कहा कि विवाह की तिथि माघसुदी १३ है। आपको वहा पहुच कर शशिवृता से शिवजी के ही शिवालय पर मिलना चाहिए, यह कह कर हस तो उड कर आकाश मार्ग में लोप होगया और यहा पृथ्वीराज शशिवृता से मिलने के लिये जाने की तैयारिया करने लगे।

हस के चले जाने पर पृथ्वीराज ने दस हजार अश्वारोही सेना सजी जाने की आज्ञा दी। राजाज्ञानुसार माघवदी ५ शुक्रवार को प्रात काल से ही कन्ह, कैमास जैतराव प्रमार, पज्जूनराव कछवाहा, चावण्डराव, जैतराव, गोइन्दराव, रामराय रघुवंसी, प्रसगराय खींची, निड्डुरराय रट्ठौर, लगरीराय, सलष प्रमार, देवराज बग्गरी, हाहुलीराय, हम्मीर, लोहाना आजानबाहु, नरसिंह, वीरसिंह और लष्पराज बघेला समस्त सूर सामन्त स्वय सिंधी, कच्छी, पहाड़ी, अरबी, ताजी, आदि उत्तमोतम खेत के कुलीन और लक्खी कुल्ला कुम्मैत, सिरगा, सुरग, गुलाबी, हरिया, समद स्याह, हसी आदि अनेकानेक रग के घोडो पर, भाति भाति के अस्त्रों शस्त्रो से सुसज्जित होकर, अपनी अपनी रणकुशल अस्वारोही अनी कनी सेना सहित राजद्वार पर आ उपस्थित हुए। वे वीर बानैत सिपाही सामतोंके घोडे अपनी जातीय तेजस्विता के कारण तनिक भी स्थिर न रह कर जहा तहा नट की सी कलाबाजिया कर रहे थे। तब तक स्वय पृथ्वीराज भी अपने शक्ति नामक घोड़ेपर सवारहोकर उनके बीच मेआकर डटगया।

जिस समय पृथ्वीराज घोडे की पीठ पर सवार हो कर चलने को था कि साम्हने ही छिद्रमय काले कलश, मुक्त केश कामिनी के दर्शन हुए, इन अशकुनो को देख कर राजा ने चन्द से इसका फल कहने को कहा तब। चन्द ने उत्तर दिया कि इसके पहिले जो शुभ सूचक शकुन हो चुके है उससे कार्य्यसिद्धि की सूचना तो अवश्य ही प्रतीत होती है; परन्तु ये अपशकुन केवल इतनाही बतलाते है कि यातो यात्रास्थान पर ही या घर पर लौट कर कुछ विग्रह और रक्तपात होना आवश्यक है। उसने पुन कहा कि इसमें सन्देह ही क्या है, क्योकि आपसे और जयचन्द से एक तो पूर्व्व से ही विरोध भाव चला आरहा है अब इस अवसर पर तो मानो आहुति मे घी डालना है। इधर जब कि पृथ्वीराज रास्ते ही मे थे जयचन्द के भतीजे ने भी एक लाख दस हजार सुसज्जित सेना सहित माघवदी ९ को देवगिरि की तरफ कूच किया, और अपनी अवाई का समाचार दूत द्वारा देवगिरि के राजा भान के पास भेजा।

ज्योही शशिवृता ने यह समाचार सुना कि जयचन्द का भतीजा बडी भारी बरात सजकर उसे व्याहने के लिये शीघ्रही देवगिरि को आरहा है और पृथ्वीराज का अब तक पता भी नहीं है वह पृथ्वीराज के विरह वियोग से और भी व्याकुल हो कर और अपने को उपेक्षित वर के साथ व्याहे जाने से बचाने के लिये आत्महत्या करने पर उद्यत हुई। उसकी यह दशा देख कर उसकी सखी सहेली और सहचरी आदि उसके विरह विदग्ध व्याकुल मन को शान्तना देने के लिये उससे बोली कि हे सखी शशिवृता तूं क्यो वृथा रोरो कर प्राण देती है। यदि तेरी सच्ची भावना पृथ्वीराज मे है तो तुझे वही वर मिलेगा. रोने और वृथा विलाप करके अपने सुकुमार शरीर को कष्ट देने से क्या लाभ। इस व्यर्थ प्रलाप विलाप से होनहार नही मिटती। बलि ने इन्द्र का ऐन्द्र लेने को यज्ञ किया था परन्तु उसे छलनयुक्त होकर पातालही मे वास करना पडा। कहा तो रामचन्द्रजी को राजतिलक होने वाला था और कहां उन्हें भावी के वश होकर बन बास भोग करना पडा, सीता जी को रावण हर ले गया, और वे रामचन्द्र स्त्री वियोग के सताप से तप्त हृदय होकर बन मे भटकते फिरे; हे सखी इतिहास मे इस प्रकार के सहस्रों प्रमाण विद्यमान है कि होनहार की गति अमिट है, मनुष्य सब कुछ करना चाहता है परन्तु होता वही है जो होनहार होती है, इसलिये हे सखी तूं शोक को छोड कर शान्ति भाव धारण कर। सब ने सब कुछ समझाया बुझाया परन्तु शशिवृता कब किसी की सुनती थी, उसे तो एक मात्र पृथ्वीराज के बिना सब ससार सूना सूझता था। अतएव किसी प्रकार यह समाचार राजा भान के कान तक भी जा पहुचा।

जब राजा भान ने भी देखा कि शशिवृता किसी प्रकार से नहीं मानती और वह सचमुच प्राण देने को तय्यार है, तब उसने अपने मत्री हम्मीर सम्मीर को बुला कर सब हाल कह सुनाया और उनका भी मत पूछा। तब हम्मीर सम्मीर ने सलाह दी कि एक तो प्रथमही आपको सब सोच विचार कर काम करना था और जो आपने जयचन्द के घर टीका भेजही दिया, वहा से बारातही आरही है तब अब क्या है। आपको निज धर्म्मानुसार उचित तो यही है कि आप शशिवृता का व्याह कमधुज से ही करे। यद्यपि मत्रियो की यह सलाह राजा भान को अनुकरणीय थी परन्तु सतान का स्नेह भी तो ऐसी वस्तु है कि जिससे मनुष्य क्षणमात्र के लिये बावरा सा होजाता है। अस्तु जब राजा भान ने देखा कि मत्रियों का मत मानने से बेटी के प्राणों पर आ बनेगी तब उसने एक गुप्त दूत पृथ्वीराज के पास प्रेरित किया और लिख भेजा कि आप शिवालय पर आइए वहीं पर शशिवृता आपको मिलेगी।

इधर पृथ्वीराज ने सेना का भार तो नरनाह कन्ह के सिर सौंप दिया और आप निड्डुर राय और जद्दवराय दाहिम इन दोनों सामन्तो सहित देवगिरि के पास जा पहुचा। रात्रि भर तो उसने नगर के

बाहरी प्रान्त मे एक उपवन मे विश्राम किया। दूसरेही दिन वह सज बज कर विवाहोत्सव मे सुसज्जित देवगिरि नगर की शोभा देखने को निकल पडा। उस ने देखा कि समस्त नगर के हाट बाट चौहट्टे बडेही साफ और सुथरे बने हुए हैं और स्वच्छ सुगंधित जल से सींचे गए हैं, जहा तहा ऊँचे ऊँचे मकानों के गोख और झरोखे फूल माला और वन्दनवार से सजे हुए हैं। उनमे बैठ कर झाकती हुई सुन्दर कोमलाङ्गी स्त्रिया साक्षात् देवाङ्गनाएँ सी सुशोभित हो रही है।

हंस द्वारा तो इस बात की खबर पहिले ही शशिवृता को लग चुकी थी कि पृथ्वीराज शीघ्रही आन पहुचता है इस लिये वह सदैव अपने महल की गोख में बैठी पृथ्वीराज के दर्शन की बाट जोहा करती थी। जिस समय पृथ्वीराज शशिवृता के महल के सम्मुख पहुचा और उसने आँख उठाकर ऊपर को देखा तो उसकी और शशिवृता की आँखे चार हो गई उस निमेष काल में दोनों के आखो में ऐसी बातें होगई मानो वे सनातन के परिचित हों। पृथ्वीराज को देखते ही शशिवृता के मृग शिशु के से बडे, मीन एवं खजन से चचल और शूल की हूल से भी अनियारे नेत्र निमिष मात्र में एक ऐसा विलक्षण कटाक्ष कर गए कि जिसका भाव रसिक शिरोमणि मनोन्मत्त मनुष्यों के सिवाय अन्य कोई भी नहीं जान सकता। वे कानों से लग कर फिर लज्जा से पलाच्छादित हो गए। मानो पृथ्वीराज की यशकथा सुनने वाले कानों से उन्होंने पूछा कि क्या यही पृथ्वीराज है और उनसे सतोष जनक उत्तर पाकर उन्हों ने पृथ्वीराजा को प्रेम मूर्ति को हृदयस्थ कर लिया।

उपर्युक्त समय को उपस्थित हुआ जान कर शशिवृता ने पिता से कहला भेजा कि मैने बाल्यावस्था से शिव जी का पूजन किया है। अब मैं शान्ति के किये आशुतोष सदाशिव को अन्तिम अर्घ देना चाहती हू यदि आज्ञा हो तो शिव जी का पूजन कर आऊं। यह सुन उसके माता पिता ने प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा दी और उसकी सखी सहेलिया उसका उबटन आदि करने लगीं, जिस समय सखियों ने शशिवृता को वस्त्र विहीन कर के उसके गुहे हुए केश पाश और वेणी को छोड़ दिया उस समय वह ऐसी शोभित होती थी मानों स्वर्ण स्थम्भ पर से सर्पिणी अवतीर्ण हो रही हो।

उबटन लगाने बाद स्वच्छ जल से नहला धुला कर सुगन्ध मयुन लेप शशिवृता के शरीर मे लेपण किए गए तदन्तर सोलहों शृगार और बारहों आभूषणों से सुसज्जित करके जब उसे सखियों ने सवार कर तैय्यार किया तब उसके अङ्गप्रत्यङ्ग से अनुपम लावण्य रस टपक रहा था; उसकी पुष्प गुथित वेणी ऐसी मालूम होती थी मानों सर्प राज स्वय पुष्प माला के बीच में विराज रहे हों और माग पर सुहाग सूचक सिन्दूर ऐसा मालूम होता था मानों अरुणोदय के अशुमाली भगवान अंधकार को फाड़ कर निकल रहे हों, उसके कानों के रत्न जटित कर्ण फूल ऐसे भासित होते थे मानों उसके मुख चन्द की प्रभा की सहायता के लिये दोनों तरफ दो सूर्य्य प्रकाशमान हों। उसके स्वच्छ अच्छे ललाट पर बारीक बिंदा ऐसा सोहता था मानों चन्द्रमा की गोद में बुध विराज मान हो। उसकी सुरंग कञ्चुकी के बीच मे चपक वर्ण युगल कुचकलश ऐसे भासित होते थे मानों वे उसके हृदयस्थ कामराज के किले के दो बुर्ज हों।

इस प्रकार सुसज्जित हो कर शशिवृता शिव पार्वती का पूजन करने के हेतु प्रस्थान करने के लिये रत्नजटित चौडोल * में सवार हुई। शशिवृता की चौडोल के आस पास १२ चौडोलें और थीं जिनमें उसकी सखी सहेलिया थी। वे सब चौडोलें पाच सौ दासियों से घिरी हुई थीं। उनके आस पास चारों ओर राजा भान की सेना के पाच पाच सौ सवारों का घेरा था और तब कमधुज्ज के पचास हजार पैदलो की भीड़ थी। इस तरह से

* चौडोल--लकडी के ढांचे की एक पालकी सी बनाई जाती है और उसके ऊपर कपडा मढा जाता है। किसी २ राजपूतों में अब भी यह चाल है कि जिस दिन वहां से बारात चलती है उसी दिन लडकी चौडोल में बैठकर नगर के देवी देवताओं का पूजन करने जाती है।

शशिवृता घर से निकल कर पूजने चली। पूजा करके जिस समय वह शिवालय की तरफ बढ़ी और उसने शिवालय के शिखर पर स्थित त्रिसूल को देखा तो एक तो शिव प्रति भक्ति और दूसरे पृथ्वीराज के प्रति प्रेम इन दोनों भावों का आविर्भाव शशिवृता के हृदय में इस प्रकार से हुआ कि उसकी विचित्र ही गति होगई। वह शिव जी का नाम स्मरण करती हुई और पृथ्वीराज का कुशल मनाती हुई आगे बढने लगी। जिस समय वह शिवालय पर पहुच कर चौडोल से उतरी तो मनही मन चौकन्नी होती हुई शिवजी की प्रदक्षिणा करने लगी कि इधर सेना में बड़े उत्कर्ष से मधुर मधुर वाद्य ध्वनि होने लगी, सखी सहचरी भी मंगल गीत गाने लगीं तब तक कमधज्ज का भतीजा भी शिवार्चन की इच्छा से कुछ थोडे से सखाओं सहित उसी तरफ़ आता देख पडा जिसे देख कर किसी किसी मुँहलगी सखी ने कहा कि "वही शशिवृता का पति आरहा है" यह बात शशिवृता को बहुत ही खटकी परन्तु वह कुछ कह न सकी, और अवसर पर पृथ्वीराज को पति पाने की फिर शिवजी से प्रार्थना करने लगी। तब तक पृथ्वीराज भी सात हजार शस्त्रधारी सूर सामतो के साथ वहा पर आ पहुचा, पृथ्वीराज के सब सिपाही शरीर मे विभूत रमाए नगे सिर कावरी टागे, हाथो मे त्रिशूल लिए, शिव शिव उच्चारण करते हुए, ठीक कथाधारी योगियो का सा वेष बनाए थे, परन्तु उनकी गुदडी के भीतर छूरी, चक्र, कटार, बिछुआ, बॉक आदि सब मुठमार हथियार थे; ये सब कपटवेषधारी योगी शृंगी नाद करते हुए कमधुज्ज की फौज मे निधडक पैठ पडे जिन्हें देखतेही शशिवृता ताड गई कि ये योगी पृथ्वीराज के ही सामन्त है और अपनी इच्छित अभिलाषा की पूर्ति का सुअवसर जान कर वह शिव जी का धन्यवाद सूचक अभिवादन करने लगी।

तब तक पृथ्वीराज भी अपने नवीन घोडे पर सवार हुआ आ पहुचा। पृथ्वीराज को देखतेही शशिवृता के लज्जा से नेत्र नीचे होगए, उसके हृदय मे अब तक जो सम्मिलन की उत्कंठा थी वह तो शान्त हुई परन्तु अब उसे आन्तरिक कामाग्नि व्याकुल करने लगी। जिस समय पृथ्वीराज ने अपने शत्रुशूलक बलवान भुजदण्ड को बढा कर सुकोमल शशिवृता के कर कज को पकड़ा उस समय ऐसा मालूम होता था मानो लहलहाती हुई नवीन बल्लरी को मदोन्मत्त मतवाले हाथी ने पकड़ लिया हो। पृथ्वीराज के हाथ पकडते ही शशिवृता को अपने जन्मदाता माता पिता एव जीवनाधार जननी जन्मभूमि और सखी सहेली तथा सहचरियों के बिछोह की याद आगई। यद्यपि एक समय वह था कि वह पृथ्वीराज के नामही पर प्राण न्यौछावर करती थी, किन्तु इस समय जन्मभूमि के अकृतृम प्रेम ने उसको भी क्षणमात्र के लिये भुला कर कुमारी शशिवृता के हृदय को विह्वल कर दिया जिससे उसके अनियारे नेत्रो से आँसुओं की धारा बह कर निकलने को थी परन्तु ऐसें मगलमय समय पर अमगल सूचक चिन्ह को निवारण करना ही उचित जान कर शशिवृता ने अपने कोमल कलेजे को पाहन सा कठिन बना लिया। उसके अधिकतर रोकने पर भी जो दो एक कज्जलमय अश्रुविन्दु उसके कोमल कपोलों को स्पर्श करते हुए उन्नत उरोजों पर आकर ठहर गए वे ऐसे सुशोभित होते थे मानो सोने की कसौटी पर कस्तूरी कसी गई हो। जिस समय पृथ्वीराज ने देवालय की सीढ़ियों पर से बढ कर कामरूपी करि एव पवन के वेग से झकझोरी हुई ललित ललाम बल्लरी वत् शशिवृता का कर कमल पकड़ कर हृदय से लगाते हुए अपने साथ घोडे पर उसे बिठा लिया उस समय पृथ्वीराज स्वयं रौद्ररस की मूर्ति बनगया और शशिवृता उक्त कारण वश करुणा रस का अवतार स्वरूप थी, सामन्त एव सैनिक गण स्वामी सेवा के लिये वीर रस में रंगे हुए थे, और कमधुज्ज के पक्षपाती भयानक रस में पगे थे।

जिस समय पृथ्वीराज शशिवृता को अपने साथ घोडे पर बिठा कर चलने लगे उस समय चारो

तरफ धरो पकडो शब्द का कोलाहल होने लगा। मूर्तिमान नवरस के मूर्ति स्वरूप महादेव जी के शिवालय के चारों तरफ एक क्षण पहिले शृंगार रस का श्रोत बह रहा था, शशिवृता की सखिया विवाह समय के मगल गीत गा रही थीं, जहा तहा वंदीजन विरदावली पढ रहे थे, कमधुज्ज की फौज के सैनिकों में परस्पर हास्यमय वार्तालाप के फुहारे उड रहे थे। वे सब इस समय वीररस में परिवर्तन होने लगे। वीरोत्तेजक उच्चस्वर कडखों ने सुन्दर स्त्रियों के सुकोमल स्वर को परास्त कर दिया, मेघ की गर्जन के समान रणवाद्यों के भीषण और कठोर रव ने अन्यान्य मंगल वाद्यों को रद्द कर दिया। जयचन्द का भतीजा कमधज्ज वीरचन्द जो केशरिया बाना पाहिने सिर पर पुष्पों का मौर बाधे विवाह की आनन्द बधाई में मस्त मन शिव जी का दर्शन करने आ रहा था वह भी यह अपूर्व्व दृश्य देख कर चौकन्ना हो गया और तलवार निकाल कर पृथ्वीराज की तरफ झपटा। उसके अन्यान्य सूर सामन्तों ने झपट कर पृथ्वीराज से शशिवृता को छीनना चाहा परन्तु यह क्यों कर हो सकता था। पृथ्वीराज के साथी योद्धा गण भी अपनी अपनी कपट गूदडी फटक कर उसके अन्दर छिपे हुए अपने राजपूती बाने खड़ खड़ाते हुए मार मार करने लगे। इधर स्वामिधर्मधारी कमधुज्ज के योद्धा भी उन पर शस्त्र बरसाने लगे। उन दोनों दलों के अटपटे वीरों की झपट झपट कर विकट मारा मार से लोहे के हथियार परस्पर खटपट होते थे। उनसे इस प्रकार का शब्द प्रगट होता था, मानो जगल में आग लगने से बास की गोठें चटक रही हों। किसी किसी वीर की खोपडी फट जाने से जो कुछ कुछ भेजी देख पड़ती थी वह ऐसी मालूम होती थी मानो काला कौवा खीर खा रहा हो। सब सैनिको एव स्वय कमधुज्ज के विवाह समय के रग विरंगे नाना रग के वस्त्रों पर ताजे ताजे रक्त के छींटे पड़े हुए विचित्र ही छटा दिखाते थे। पहर दिन चढने से पहर दिन रहते तक बराबर इसी प्रकार की खचाखच मार होती रही। तब तक पृथ्वीराज शशिवृता को लिये मार काट करता हुआ अपनी सेना के पड़ाव में आगया।

तदनन्तर क्रमबद्ध युद्ध होने लगा। कमधुज्ज ने राजा भान की सेना सहित अपनी सेना को सर्प व्यूहाकार बनाया, मनबध नामक सोलंगी पुच्छ स्थान पर, गुज्जर राय पग स्थान पर, स्वय कमधुज्ज पेट स्थान पर, कमधुज्ज का भाई फन स्थान पर और कूरम जिह्वा स्थान पर नियत हुए। इधर पृथ्वीराज की आज्ञानुसार चहुआन सेना मयूर व्यूहाकार रची गई, इधर चुच स्थान पर कन्ह, पार्श पिंड और पक्ष स्थान पर गहलोत, पुच्छ स्थान पर रामराय रघुवंशी, चरण स्थान पर पुण्डीर आदि योद्धा रहे। इस प्रकार क्रमबद्ध होकर जिस समय दोनों सेनाएं परस्पर निर्द्वन्द युद्ध करने पर उद्यत हुई उस समय कायरो के कलेजे कॉपते थे और सूर वीर योद्धाओं का हृदय उमंग से फूला नहीं समाता था, वीर लोगों का प्रशस्त प्रदीप्त ललाट चन्द्रमा सा चमक रहा था, टेढी मूछें कानों से टकरा रही थी और वे अपने अपने चंचल चपल घोडों को कुदाते हुए शत्रुओं के सम्मुख होकर अपने अपने पराक्रम दिखाने के लिये उत्सुक थे। तब तक पृथ्वीराज की आज्ञा से नरनाह काका कन्ह की आखो पर से पट्टी हटाई गई। वह व्यूह मुख पराक्रमी काका कन्ह शत्रु सेना पर इस प्रकार से टूटा जैसे मतवाला हाथी हथनी पर, क्षुधित मृगराज मृग पर, सिह गजराज पर, और बाज तीतर पर टूटता है। कन्ह चहुआन बडे बड़े मतवाले हाथियों के दात पकड़ पकड कर उखाडने और सवारों सहित घोडों को पटक पटक कर मारने लगा। कमधुज्ज के सैनिक लोग भी खूब मार करने लगे। इसी प्रकार झनाझन लोहा झरते झरते साझ का समय हो गया और राजा भान का पुत्र मारा गया। इसलिये राजा भान ने तो लोहा मान लिया और वह अपनी ढाल गिरा कर गढ़ को चला गया, परन्तु कमधुज्ज ने हार न मानी। उसने अपनी सेना को और उत्साहित करके युद्ध को बराबर जारी रक्खा, यहा तक कि तीन घड़ी रात्रि चली गई दसों दिशाओं मे अधिक

अन्धेरा छा गया परस्पर की जान पहिचान में फर्क पडने लगा और तब उस दिन के युद्ध का अंत हुआ।

युद्ध समाप्त होने पर रात्रि के समय शिविर में सब सामंतो के बीच में बैठे हुए राम रघुवंश ने कहा कि स्वामिधर्म्म सम्बन्धी जो यह रणक्षेत्र है सो सूरवीर पुरुषो के लिये साक्षात् काशी के समान है तलवार की धार बरना और पीठ असी है, इस रीति से तलवार के बीच का जो लोहा है सूर वीरों के लिये वही काशी के समान उग्र मुक्ति का दाता है जो कि योगी लोग सहस्रों वर्ष तप करके भी नहीं पा सकते। उसी समय गुरुराम ने पृथ्वीराज को विष्णु पंजर कवच दिया।

दूसरे दिन पौ फटते ही जिस समय शीतल मंद सुगंध त्रिविध बयार बह रही थी तारागण मंदद्युति हो रहे थे कुमोदिनी लज्जा से सकुचित सी हो रही थी, अरुणोदय की लालिमा से दसों दिशाओं में लाली छा रही थी, मधुर मधुर कलरव कर कर मानों सूर्य्य को आशीर्वाद देते हुए चक्रवाकों के जोडे परस्पर मिल रहे थे उसी समय सामंत लोग शैय्या को त्याग कर स्नान ध्यान बंदनादि नित्त क्रिया से निश्चिन्त हो कर स्वामिसेवा में शीश देने के लिये अपने अपने अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होने लगे। पृथ्वीराज भी अपने वीरवर सामंतो के बीच में इस प्रकार सुशोभित होने लगा जैसे नक्षत्रों के बीच चन्द्रमा और समस्त ग्रहों में सूर्य्य सुशोभित होता है। गुरु राम ने राजा को विष्णु पञ्जर कवच पहनाया और आशीर्वाद देकर शत्रु के सम्मुख युद्ध करने की आज्ञा दी।

इधर यादव राजा भानु और कमधुज्ज की सेनाएं भी परस्पर मिल कर व्यूहबद्ध हुई पृथ्वीराज की तरफ चली आरही थी। कमधुज्ज की सेना का व्यूह इस प्रकार का था। सब से आगे हरावल में देवगिरि की सेना तिस के पीछे मुसलमान सेना तिस के पीछे हाथियों की पंक्ति तिस पीछे हथनार और कुहक बान आदि और सब के पीछे अपनी निज अश्वारोही सेना लगाई गई थी। कमधुज्ज के अश्वारोही सैनिक वीरों के घोड़े ऐसे चञ्चल और चपल थे कि वे अपनी चपल चाल से चचला को भी मात करते थे। उनकी द्रुत चाल से अकाश में आच्छादित धूलि से चक्रवाक सूर्य्यस्त का समय जानकर अपने दंपति के बिछोह की आशंका से व्यस्त हो रहे थे। सवारों के नेजों की अनी इस प्रकार घनी थी कि जिनके बीच से पक्षी भी पर न हिला सकता था और चढते हुए सूर्य्य की किरणों में उनकी चमक से ऐसा मालूम होता था मानों आज दामिनी ने मेघों को त्याग कर भूमि पर ही अपना निवास स्थान स्थिर कर लिया हो। कमधुज्ज की सेना के हाथियों की जंजीरों की झनकार अगनित झिंगुरों के रव को मात करती थी और उन मतवाले हाथियों के कपोल से बहता हुआ मद पावस ऋतु के पहाड़ी झरने की भांति झर रहा था। जिस समय सेनापतियों की आज्ञानुसार दोनों दलों ने रणवाद्यों का भीषण रव करते हुए एक ने दूसरे पर चढ़ाई की उस समय वह रणभूमि साक्षात् पावस ऋतु का क्रीड़ास्थल स्वरुप बन रही थी।

वीर रस के आवेश में आकर जिस समय सूर वीर योधाओं ने क्रोधित हो परस्पर एक दूसरे पर खड्ग और खाड़ों के वार किए उस समय सहज भीरु हृदय कायरों के कलेजे कॅपे जाते थे। वे मोहवश अपने नश्वर जीवन को नित्त मान कर रण भूमि से भाग जाने की इच्छा करते थे, परन्तु वीर लोग कलेजे के छिन्न भिन्न होजाने पर खिन्न मन न होते थे। वे बराबर सीना साम्हने किए हुए निज स्वामी के जय की अभिलाषा किए हुए मार करते जाते थे। उनके वज्रवत शरीर में जितने अधिक क्षत होते वे उतने ही अधिक क्रोधित और भयानक होते जाते थे। शूर वीर लोग शरीर का रक्त निकल जाने पर भी अपने स्थान पर अचल रूप से डटे हुए मार मार करते थे। उन शूरवीर पुरुषों के अवयव कट कट कर गिरे हुए बिना पानी के मछली के समान

तड़फड़ाते थे। कटार बिछुआ छूरी आदि के घाव लगने से किसी किसी के आंत कलेजे और फेफड़े निकल पड़ते थे, किसी का सिर कट जाने पर धड़ तो बराबर खेत में खड़ा खड्ग से खेलता था और मुंड पृथ्वीपर पड़ा हुआ मार मार शब्द उच्चार करता था। इसी विकट मारामार के समय मे वीरचन्द के हाथी पर खवास खाने मे बैठा हुआ पूज नामक खवास अपने स्थान पर से कूद कर समरभूमि में सम्मुख युद्ध करने लगा, वह वीर रस में मतवाला मदमत्त गयन्द की भांति झपट झपट कर किसी किसी पर वार करता और उसे तुरन्त काट कर दो कर देता था। पूज खवास जिस समय हाथी के मस्तक पर कुम्भस्थल के बीचों बीच तलवार का वार करता था उस समय उसकी उज्वल एवं चमकदार तलवार काले काले दँतारे हाथी के मस्तक पर इस प्रकार से शोभित होती थी मानो पावस के मेघों को फाड़ कर चन्द्रमा निकलता आता हो। इसी वीरता से युद्ध करते करते पूज खवास मारा गया। उसके मरतेही वीरचन्द के चित्त में ऐसा कुछ भय और अनित्यता का संचार हुआ कि वह उसी समय मन्त्रिमंडली को एकत्र कर के वर्त्तमान अवस्था पर विचार करने बैठ गया। अतएव उसके मन्त्रियों ने कहा कि एक मात्र स्त्री के लिये सहस्रों मनुष्यों का रक्तपात होना ही हमारे विचार से ठीक नहीं है। यद्यपि रामचन्द्र सुग्रीव और पांचों पांडव अपने अपने समय मे अद्वितीय वीर, बलवान, प्रतापी और पराक्रमी पुरुष होगए हैं परन्तु समय विशेष पर वे भी अपनी अपनी विवाहिता स्त्रियों की रक्षा यावत् एवं यथार्थ रूप से न कर सके। अर्जुन गोपिकाओं की रक्षा करने में असमर्थ हो गए। हे राजकुमार अच्छे अच्छे उस्ताद अपने काम में चूक जाते है, इससे क्या। अतएव हमारा विचार तो यही है कि जिस प्रकार से बने इस उपद्रव की इति ही कर देना उत्तम है। मन्त्रियों का यह विचार वीरचन्द कमधुज्ज के मन में बैठ गया और उसने उसी समय अपनी सेना को फिरने की आज्ञा दी।

वीरचन्द की आज्ञानुसार कमधुज्ज सेना का रुख कुछ ढीला पड़ने से चहुआन सेना का वेग और भी बढ़ उठा। उसने समझा कि कमधुज्ज सेना लोहा मान कर ही मनहार हो रही है परन्तु वास्तव में कमधुज्ज सेना का बल नहीं घटा था इसलिये वे भी सामन्तों के मुकाबिले पर डट गए और कमधुज्ज वीरचन्द ने देख लिया कि इस समय रणोन्मत्त योद्धाओं को युद्धविमुख करना उसके वश का नहीं है तब वह भी अन्तिम वारा न्यारा होने तक के लिये आंख मीच कर युद्ध करने लगा। यह म[...] लौट फेर दुपहर के समय हुआ था। दो पह[र] से सायंकाल तक दोनों ओर से खूब लो[हा] झड़ता रहा। दोनों सेनाओं में से कोई भी न मुरी, मनहार हुई। सायंकाल में सूर्य्यास्त के समय मृ[...] पूज खवास के भाई ने कमधुज्ज की तरफ से औ[र] राम राय बड़गुज्जर ने पृथ्वीराज की तरफ से धा[वा] किया। इस बाजी में निड्डुर राय ने बड़ा पराक्र[म] दिखाया। वीरचन्द यद्यपि निड्डुर राय का भतीजा [था] परन्तु उसका उसने कुछ भी विचार न कर [के] केवल चहुआन पृथ्वीराज के नमक का ही विचार किया और कमधुज्ज के सहस्रों सिपाही मारे गए। पूज खवास का भाई भी निड्डुर राय के हाथों मारा गया उसके सिवाय कमधुज्ज सेना के नौ मुखिया सेनापति और भी काम आए। कमधुज्ज की सेना के पूज खवास, देव सिद्ध मोरी, किल्ह काम जादव भाटिया पंगराय मोरी, और पांचो भाइयो सहित बलिभद्रराय ये योद्धा मारे गए। इधर पृथ्वीराज की ओर से चन्द पुंडीर, सारंगदेव, बलिभद्र, जैत पँवार सलख, लष्षन आदि वीरो ने अद्वितीय पराक्रम दिखाया। वीरचन्द के पिता के सिर पर जो चांदी का श्वेतछत्र चमचमा रहा था उसे तोड कर चन्द पुंडीर ने एक ऐसा वाण मारा कि जिससे वह छत्र कट कर दूर जा गिरा। छत्र के कटतेही तमाम सेना में कोलाहल मच गया और कमधुज्ज स्वयं भयभीत हो उठा। आकाश में चन्द्रमा का थोड़ा थोड़ा उजेला था। जब वह भी अस्त होगया और

भूमि पर पड़े हुए मृत एवं घायलो के कारण योद्धाओं को निपट अँधेरे में युद्ध करने मे असुविधा होने लगी तब दोनों ओर से फरहरा फिर गया युद्ध बन्द होगया और दोनों ओर के योद्धा गण सूर्य्योदय पर्यन्त किंचित विश्राम लेने के लिये अपने अपने शिविर शैली की तरफ चल दिए।

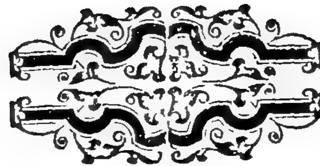
सूर्य्यास्त होने पर अंधकारमय रात्रि के राज्य ाल में जिस समय समस्त संसार के प्राणी मात्र देन भर के व्यवसाय और परिश्रम से निश्चिन्त ा कर निद्रा देवी की गोद में निस्तब्ध रूप से पाव सार कर सोते है उसी समय प्रीतिपास में बँधा ुआ मधुप, दंपति विछोह से दुखी चक्रवाक और ुद्धस्थल में शत्रु, दुःख से विहित शूर बीर निमेप ात्र के लिये सुखी नहीं होते। वे सदैव सूर्य्योदय ा ही चिंतवन किया करते है एवं रात्रि के समय जब की श्रमित सेना सोती है सयोगिनी स्त्रिया अपने अपने स्वामियों के गले का हार होती है उस समय भी कुमोदिनी और वियोगिनी को कल नही पडती। यह तो पहिलेही कहा जा चुका है कि पृथ्वीराज सदा से अपने सामन्तों के साथ ऐसा व्यवहार रखता था कि वे उसका अपने प्राण से भी अधिक सम्मान करते थे. इधर पृथ्वीराज भी कभी कोई काम उनकी इच्छा के विरुद्ध न करता था। उपरोक्त युद्ध का अवसान होते ही सामन्त लोगों ने एक सभा रची और उसमे उन्होने परस्पर गुप्त गोष्टी द्वारा निश्चय करके पृथ्वीराज से कहा कि "आप तो शशिवृता को ले कर दिल्ली को चले जाइए इधर हम लोग शत्रु का साहम्ना करेंगे।" इस पर पृथ्वीराज ने उत्तर दिया कि वीर योद्धाओ मुझे तुम्हारे बल का पूरा भरोसा है परन्तु क्या चन्द्रमा के बिना सम्पूर्ण तारागण ही चन्द्रमा का कार्य्य सम्पादन कर सकते है. क्या बिना सूर्य्य के दिवस हो सकता है. यद्यपि हनुमान जी बड़ेही पराक्रमी और रामचन्द्र जी के सच्चे भक्त थे परन्तु क्या वे लङ्का को अकेले विजय कर सके ? हे वीर सामन्तो. मैं नहीं चाहता कि मैं तो दिल्ली मे जा कर सुख सहवास करूं और तुम लोग विदेश में बृथा प्राण दो, मेरे भाइयो यहा तुम्हारे हृदय बाण से बेधे जाय, तुम्हारे कण्ठ पर शत्रु की तलवार कहर करे और मै अपने हृदय से प्रियतमा को लगाऊ। हा! ऐसा नचि व्यवसाय मुझसे न हो सकेगा, जो कुछ तुम लोगो के लिये होगा वह मुझे भी होगा। यद्यपि राजा का ऐसा रुक्ष उत्तर किसी को अच्छा न लगा परन्तु किसी ने इसका प्रत्युत्तर भी न दिया और यही बिचार और वादाविवाद होते होते दिशाओ मे हलकी हलकी सफेदी की झलक देख पडने लगी। इसे सूर्य्योदय के समय की सूचन जान कर सामन्तों ने जहा तहा अपने अपने हरबे कमर से लगाए, तब तक और सब सेना भी सजकर दुरुस्त हो गई। इस दिन निढ्डुर राय सेनापति नियत किए गऐ। वह कमधुज्ज बीर निढ्डुरराय सूर्य्योदय के पहिले ही सेना सहित रणक्षेत्र पर जा पहुचा। उधर से बीरचन्द कमधुज्ज की सेना भी रणभूमि में आ डटी और दोनों दलो में फिर से अस्त्र शस्त्र चल उठे, बाण बर्ष उठे, लोह झड उठे खड्ग खेल उठे, लोहू वह उठा और रुड हाक उठे। दोनों सेनाओं के वीर सैनिक लोग यद्यपि दो दिन से बराबर युद्ध के व्यवसाय से श्रमित थे परन्तु उनका दिल दूना होरहा था। डके पर चोट पडते ही उनके दिल फिर से हरे भरे हो गए, और वे परस्पर एक दुसरे को ललकार ललकार कर वार करने लगे। इस प्रकार स्वामिसेवा में दत्तचित्त, बीररस मदमाते बीर जो रणभूमि में मारे जाते है वे वास्तव में स्वर्ग को ही जाते है क्योंकि वे उस समय माया मोह आदिक नीच भावों से विरक्त हो कर उच्च भावों को धारण किए हुए केवल मरना मारना ही देखते है। इन दोनों दलों के शूर वीरों ने दिल खोल कर ऐसा युद्ध किया कि आशुतोष शिव की रुण्डमाला पूर्ण हुई. योगिनियों का खप्पर भरपूर हुआ, शशिवृता और पृथ्वीराज की विरहाग्नि शान्त होकर उनकी हार्दिक अभिलाषा भी पूर्ण हुई।

जिस समय पृथ्वीराज से उत्तर पाकर सामन्त

लोग इधर लडने की तय्यारियां कर रहे थे उसी समय पृथ्वीराज शशिवृता के पास गया। उसने शशिवृता से प्रेममय वार्तालाप करते हुए उसे सब भांति से सन्तुष्ट किया। तब शशिवृता बोली कि हे स्वामी यद्यपि आपके योद्धा लोग सब भांति बलवान और पराक्रमी है परन्तु लज्जावश मै और तो कुछ नहीं कह सकती केवल मेरी इतनी प्रार्थना है कि यह जीवन सादर आपको समर्पण है और इसकी बनी बिगरी सब आपही के हाथ है। हे नाथ अधिक क्या कहूं ? यह सुन कर पृथ्वीराज बोले कि " हे प्रिये मै तुझे सदैव कुसम्ब के रंग की भांति हृदय में धारण किए रहूंगा। मेरे रहते तुझे किसी प्रकार की चिन्ता को चित्त में स्थान न देना चाहिए। मैं शपथ करके कहता हूं कि मै तेरी तीनों अवस्थाओं में इसी प्रकार एक सी प्रीति रक्खूंगा जैसी कि तुझसे अभी इस युवा अवस्था में है। पृथ्वीराज के ऐसे सन्तोषप्रद बचन सुन कर शशिवृता उसके पैरों से लिपट गई और उससे दिल्ली चलने की प्रार्थना करने लगी। इस समय पृथ्वीराज बडे अड़चन में पड़ गया। जब तक पृथ्वीराज शशिवृता से निश्चित होकर शिविर के बाहर हुआ तब तक उसे समाचार मिला कि शत्रु सेना विचल उठी और रण निड्डुर के हाथ रहा।

इधर वीर निड्डुर ने विकट पराक्रम कर के कमधुज्ज की सेना को भगा दिया और वीरचन्द को घेर लिया। सब सामन्तों ने तो चाहा कि उसे पकड़ कर बंदी बना लें परन्तु पृथ्वीराज ने कहा उसे पकडने से क्या मतलब, अपना काम हो चुका अब उसे जाने दो। पृथ्वीराज की ऐसी आज्ञा पाकर निड्डुर ने वीरचन्द को छोड दिया और रण भूमि में चहुआन पृथ्वीराज की विजय का डंका बज उठा

जब भानराय यादव ने देखा कि कमधुज्ज सेना तीन तेरह हो कर जिधर तिधर भाग गई और वीर पृथ्वीराज ने विजय पा ली तब उसने शेष १२ डोलियां भी पृथ्वीराज के साथ बिदा कर दीं। इस प्रकार शशिवृता सहित तेरह डोलियों को लिए हुए वीरचन्द कमधुज्ज को युद्ध में परास्त कर के विजय के बाजे बजाता हुआ पृथ्वीराज दिल्ली को लौट आया। पृथ्वीराज दिल्ली नगर में सुन्दरी शशिवृता के साथ विहार करते हुए इन्द्र की भांति स्वच्छन्दता और स्वतन्त्रता से राज्य करने लगा।



देवगिरि समय।

[छब्बीसवां प्रस्ताव।]

पृथ्वीराज तो शशिवृता को लेकर दिल्ली को चला गया; परन्तु चन्द के भाई ने लज्जाग्रस्त हो कर पृथ्वीराज से हार खाने की कसर राजा भान पर निकालनी चाही, इस लिये उसने देवगिरि के किले के चारों ओर अपनी फौज का घेरा डाल दिया और एक दूत द्वारा सम्पूर्ण समाचार जयचन्द के पास लिख भेजा। इधर राजा भान ने भी अपने को असीम आपत्तिग्रस्त जान कर पृथ्वीराज को लिखा कि आपके ही कारण आज मेरा किला घिरा हुआ है और उसने कन्नौज से कुमक भी माँगी है न जाने भविष्य में क्या हो मै आपको लिख चुका आगे जो आप जानें सो करें।

वीर चन्द के भेजे हुए दूत ने कन्नौज पहुच कर उक्त पत्र जयचन्द को दिया और नीची गरदन करके खडा हो रहा। दूत को इस प्रकार तन क्षीण मन मलीन देख कर जयचन्द ताड गाय कि समाचार के लक्षण शुभ नहीं देख पडते परन्तु तब भी उसने अपने अनुमान को निश्चय करने की इच्छा से दूत से पूछा कि कुशल तो है? चुप क्यों हो, जो कुछ कहना हो सो कहो। तब दूत ने उत्तर दिया कि पत्र से तो आपको सब हाल मालूम हो ही जाय गा; आगे हाल यह है कि देवगिरि नगर में अपनी बारात पहुचने के पहिले ही से पृथ्वीराज पडा हुआ था उसका पडाव देवगिरि से आधे कोस की दूरी पर थी। निड्डुरराय उस सेना का सेनापति था, बस उसी ने नव दुलहिन को हरण कर लिया और निड्डुरराय ने लड़ाई ठान कर अपनी सेना को नीचा दिखलाया, इस कर्तव्य में राजा भान का भी कुछ भेद मालूम होता है, इस लिये श्रीमान ने देवगिरि के दुर्ग पर डेरा डाल कर मुझे आपके चरणों में भेजा है। दूत के ऐसे वचन सुनते ही क्रोध से जयचन्द का मुख लाल हो गया। उसने आवेश में आ-कर कहा कि पृथ्वीराज को इतना गर्व है कि उसने जान कर भी मेरे कार्य्य में बाधा दी। मै नहीं चाहता था कि परस्पर व्यर्थ विरोध बढ़े परन्तु कोई क्या करे, होनहार रोकने से नहीं रुकती। अच्छा यदि उसने ऐसी धृष्टता की तो मै उसे उसका फल भी चखाऊगा। पृथ्वीराज अपनी जिस सेना के भरोसे इतना घमण्डी बना है, उस सब को मेरा एक मीर वदा नेश्तनाबूद और बरबाद कर सकता है। जयचन्द ने उसी समय अपने राज्य मन्त्रियों को बुला कर समस्त समाचार कह सुनाया और आज्ञा दी कि मेरे सब सम्बन्धी और मित्र राजाओ के पास उक्त समाचार की सूचना देते हुए पत्र भेजे जावें कि वे यथा सम्भव शीघ्रही समय पर एकत्रित हो सकें और यहा अपनी राजधानी मे सब सेना अपने युद्ध सम्बन्धी सब सामान से सुसज्जित हो रहे मै आज इस समय पण करके कहता हू कि पृथ्वीराज चौहान और देवगिरि के राजा को मार करके तब राजसूय यज्ञ करूगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही कन्नौज राज की चतुरंगिणी सेना भाति भाति के अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर राजद्वार पर जुटने लगी। जयचन्द की सवारी का घोडा भी सज कर द्वार पर लाया गया। वह लाल रग का कुलीन, तेजस्वी तुरग अपनी अधिक चपलता के कारण इधर उधर चटकता हुआ ऐसा भला मालूम देता था मानो कुकर्मी मकरकेतु को भस्म करने के समय शिव जी के तीसरे नेत्र से निकला हुआ अग्नि का तिनका अश्व के स्वरूप में परिणत हो गया हो। जयचन्द के घोडे की पीठ पर सवार होते ही जिस समय वह घोडा थिर रूप से डट कर खडा हो गया उस समय ऐसा भान होता था मानो भूमि ने अश्व का रूप धारण कर के सपक्ष होकर आकाश मे जाने की इच्छा की हो और उस पर कुपित हो कर इन्द्र ने वज्राघात करके उसके चापल्य को दमन कर दिया हो। जयचन्द के सवार होने पर अचल स्वरूप से वह घोडा खडा रहा परन्तु खुरी करता हुआ ऐसा सुशोभित

होता था मानो चतुर वेश्या नृत्य करने के लिये उद्यत हो रही हो। उसकी पूंछ चौरसी डोल रही थी, अयाल खुले और खडे हुए कान ऐसे मालूम होते थे जैसे वायु से हिलती हुई दीपक की जोति हो उसके बड़े बड़े नेत्र शालिग्राम की सी शिलाए से शोभित होते थे एवं ऐसे भले लगते थे जैसे शान्त और श्रमित पथिक अजुली भर भर कर जमुना जल पान कर रहे हों। जयचन्द के घोडे पर सवार होते ही तीस लाख अन्य पैदल सेना और दस लाख (मुसलमान) मीर बन्दे तितर बितर अवस्था से एकत्र जुट कर तुरन्त ही इस प्रकार से श्रेणी बद्ध और व्यूहबद्ध हो गए जैसे देवेच्छा से पूर्वकृत कर्म्मों का फल एकत्रित हो जाता है।

जिस समय जयचन्द चलने लगा उसकी सुकुमार स्त्री विरह वेदना से व्याकुल हो गई। जयचन्द की इस नवोढ़ा प्रियतमा का ऐसा सहज सुन्दर सुकोमल स्वभाव था कि रात्रि में पति से पृथक होकर चन्द्रमा के उजियारे मे काले काले भ्रमर को देख कर वह भयभीत होती थी। ज्यो ही उसने सुना कि उसके कमल कलेजे का मकरन्द जयचन्द उसे त्याग कर प्रातःकाल ही परदेश को पयान करने के लिये प्रस्तुत है त्योंही उसकी सुखमामय मनहरण मुखकान्ति मन्द सी पड गई। केसर कपूरादि मिश्रित घनसार उसके शरीर मे घाव से करने लगा; उसे सपूर्ण सुख की सामिग्री शत्रु सी सूझने लगी एव वह सब आमोद मय व्यवसायों से विरक्त हो कर चित्र लिखी पूतरी सी रह गई। विरह ज्वाला के जोर से प्रज्वलित हो उठते ही जो कभी दो एक बूद आंसू निकल कर आख के कोने पर स्थिर रह जाते थे वे ऐसे प्रतीत होते थे मानो चित्रकार ने चातक का चित्र रच कर उसे मोती चुँगाया हो; यदि वह अश्रु बूद किसी प्रकार वहा से मुक्त हो कर कोमल कपोल को स्पर्श करता हुआ उसके वक्षस्थल पर आकर विलीन हो जाता तो ऐसा ज्ञात होता था मानो उसके नेत्र रूपी कमडल से पतित गगाजल को कुच रूपी सदा शिव जी ने सादर शीश पर धारण कर लिया हो। यदि कोई सखी सहेली उसको इस अवस्था में देख कर उसे सचेत करने की चेष्टा करती तो वह लज्जा शील सुन्दरी स्वास निच्छेद कर मृतप्राय की भाति निश्चेष्ट हो कर रह जाती थी। उस रात्रि का एक एक निमेष उसे काल रात्रि के कल्प सम व्यतीत होता था। उस की सखी सहचरी जो उसे आचल से पवन करके सचेत किया चाहतीं उसे वह मद मद पवन लू की भाति लगती थी, उस सुकुमार सुन्दरी की असीम विरह वेदना का सविस्तर वर्णन कहा तक करें उसकी उस समय ऐसी दशा हो रही थी जैसे चन्द्रमा के ग्रास होने के समय उसकी प्रियतमा कमोदिनी की हो जाती है। यह सब कुछ था परन्तु राजा जयचन्द ने उसकी ओर कुछ भी ध्यान न दिया और प्रात काल होते ही अपनी नौ योवना धर्म्मपत्नी को उसी विकल अवस्था में छोड कर राजा पृथ्वीराज पर बदला चुकाने की इच्छा से देवगिरि पर आक्रमण करने के लिये सब भाति के सैनिक समान से सुसज्जित हो कर चल दिया।

राजा जयचन्द महलों से निकल कर घोड़े पर सवार हुआ, उसकी सैनिक ध्वजा बडे भारी वृक्ष की भाति आगे आगे चलने लगी तिसके पीछे समस्त शूर वीर योद्धा लोग थे। उसी समय नरवर के राजा का छोटा भाई अमरसिंह गहलौत और पर्व्वत के समान दीर्घकाय पगुरराय भी उसकी सेना में आ मिले। सब सेना के पीछे हाथियो की भीड थी, उन हाथियों पर जरकसी सिरी और भसुड पर सिन्दूरी ऐसी भली मालूम होती थी मानो कज्जल गिरि पर्व्वत पर सूर्य्य और मगल दोनों एकत्र यथास्थान विराज रहे हो, अथवा पृथ्वी पुत्र मगल ने पृथ्वी से और सूर्य्य ने आकाश से अकार परस्पर भेंट भलाई की हो। जयचद की तय्यारी होते समय यद्यपि नाना भाति के भयकर अपशकुन हुए किन्तु उसने भले बुरे सबको विधिनिर्मित होनहार के सिर पर छोड़ कर कुछ भी किसी की परवाह न की।

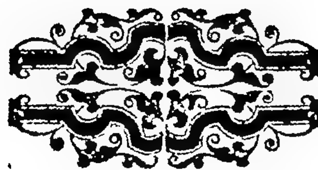
इधर देवगिरि के राजा भानुराय यादव का भेजा हुआ दूत भी पृथ्वीराज के पास आ पहुचा। राजा पृथ्वीराज जो क्षणेक पहिले नवयौवना प्रियतमा के साथ काम क्रीडा में रत साक्षात् काम का स्वरूप हो रहा था यादव राज का समाचार पत्र पढते ही शकर अर्थात् वीर स्वरूप बन गया। उसी समय उसे यह भी समाचार मिला कि मीर हुसैन के वैर का बदला लेने की लालसा में लिप्त शहाबुद्दीन अपने भाई पल्हन षान को बदरी बन में तपस्या करते हुए अनगपाल के पास भेज कर उन्हे उभाडना चाहता है। यह सब सोच विचार कर पृथ्वीराज ने चित्तौराधिपति रावल समर सिंह जी को एक पत्र लिखा, जिसमें उनसे प्रार्थना की गई कि वे इस गाढे समय में अवश्य सहायता दें। जब यह पत्र रावल जी के पास पहुचा तो उन्हों ने लिखा कि जब उधर शहाबुद्दीन भी प्रपच रच रहा है तो ऐसे समय में आपको दिल्ली छोडना उचित नहीं है। आप कुछ सामन्त हमारे साथ कर दीजिए। हम इधर देवगिरि की तरफ का प्रबन्ध कर लेगे। रावल समर सिह जी की यह सलाह पृथ्वीराज ने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर ली और यहा से चामडराय और जैतसी को उनकी मदद के लिये भेज दिया। निदान तब रावल समरसिंह जी ने अपने भाई अमरसिह को कुछ सेना सहित उक्त दोनों सामन्तो के साथ देवगिरि की तरफ भेज दिया।

इधर जयचन्द का भतीजा वीरचन्द बराबर देवगिरि के किले को घेरे हुए अखम रूप से डटा हुआ था; चामडराय ने पहुंच कर दूर ही अपनी सेना का पडाव डाल कर किले मे घेरे हुए राजा भान से सैनिक सैनों (इशारो) से वार्तालाप करके यह निश्चय किया कि वीरचन्द की फौज पर रात्रि को धावा किया जाय। अस्तु पावस की घनघोर अँधियारी रात्रि मे जब कि अपना ही हाथ नहीं सूझता था झाला-झाल मेह बरस रहा था बिजली कौंद रही थी और तडातड़ तड़कता हुआ बादल मेदनी को कपायमान कर रहा था, एक तरफ से चामंडराय ने और दूसरी तरफ से राजा भान ने वीरचन्द की सेना पर आक्रमण किया। एक तो वे लोग विचारे वर्षा के कारण स्वयं असुविधा में पड़े हुए थे परन्तु जब उनपर वाण वर्षा की बौछार भी पडने लगी तब वे लोग भी अताने बताने सज कर अपना बचाव करने लगे। लड़ाई होते होते जिस समय पहर रात्रि बाकी रह गई तब रावल जी के भाई अमर सिंह ने स्वय चन्द के हाथी के सर में सपाफनी सेल का एक ऐसा वार किया कि जिससे वह विकल होकर लवालोट हो गया।

इधर से जयचन्द बराबर बढ़ता चला जाता था, दूतों द्वारा उसके पास पल पल के समाचार भी पहुंचा करते थे। ज्योंही उसने उपरोक्त भीषण दुर्घटना का समाचार सुना रातों रात चल कर सवेरा होते वह भी देवागिरि के सिवाने रणभूमि पर आ गया। उसने चढी सवारी चलते युद्ध में हिस्सा जा लिया। परन्तु सूर्योदय होते होते किसी तरह युद्ध बन्द हो गया। इस युद्ध में गोयन्द राय का भाई हरचन्द, नरसिंह राय का छोटा भाई और कन्ह पुडीर पृथ्वीराज की तरफ के और वीर वाघेल और जयचन्द का पुत्र आदि सामन्त खेत रहे।

यद्यपि जयचन्द की इच्छा थी कि देवगिरि को चढी सवारी तोड़ लिया जाय, परन्तु जब उसने वहा जाकर देखा कि दस कोस के विस्तार में पक्के कोट और खाई से घिरा हुआ अभेद्य दुर्ग सहज ही हाथ नही आ सकता तब उसने भी अपने लश्कर का पड़ाव डाला और राजनैतिक चाल द्वारा वहा के भूमिया तथा द्वाररक्षक रावतों को उत्कोच देकर अपने वशीभूत कर के क़िला फ़तह करने का मन पक्का किया, तदनुसार यथासमय यथासाध्य चेष्टा भी की गई किन्तु वह सब निष्फल हुई। देवगिरि के स्वामि धर्म धारी सेवकों ने यही उत्तर दिया कि आपके दिए हुए किंचित धन के लोभ में आकर हम लोग अपने सनातन स्वामी को धोखा न देंगे, वरन इस तन पिंजर में प्राण पखेरू के रहने रहते स्वामिसेवा पर अटल स्वरूप से डटे रहेंगे।

जयचन्द तो इन प्रपंचों में लगा था, रावल जी के भाई अमरसिंह और चामण्डराय समय पा कर बराबर मार काट किया करते थे। इस आपत्ति से उकता कर जयचन्द ने किले पर सुरंग लगाने की आज्ञा दी; परन्तु किले की पहिली ही खाई अत्यन्त गहरी होने के कारण यह सब चेष्टा निष्फल हुई। जयचन्द के साम, दाम दंड ये तीनों राजनैतिक अस्त्र व्यर्थ गए तब उसने भेद नामक चौथे अस्त्र का प्रयोग करके शत्रु पर जय प्राप्त करने की इच्छा की। इस हेतु उसने चर-कार्य्य में चतुर कीर्तिपाल नामक भाट को राजा भान के पास भेजा; कीर्तिपाल ने राजाभान के पास जाकर कहा कि जयचन्द चाहता है कि आप मुझ से संधि करलेवें क्यों कि वास्तव में हमारा आपका कुछ विरोध नहीं है, और हम और आप दोनों मिल कर इस चहुआन सेना का नाश कर दें। राजा भान से कीर्तिपाल ने ये सब बातें एकान्त में कही थीं किन्तु कीर्तिपाल ने मंत्री को बुला कर सब हाल कह सुनाया। तब मंत्री ने उत्तर दिया कि हे राजन सर्प, सिंह, दुर्जन पुरुष, अग्नि और स्नेहहीन सम्बन्धी तथा शत्रु इनकी बातों का क्या विश्वास? जयचन्द की चालों में न आना ही उचित है। यह कह कर उसने कीर्तिपाल से कहा कि यदि हमसे सम्बन्ध रखना था और यदि वे हमारे हितेच्छु थे तो यह चढ़ाई क्यों आए, बस यदि हमसे मिलना चाहते हैं तो किले को भेद कर के ही मिलें। हे कीर्तिपाल! यही जाकर जयचन्द से कह देना। इस प्रकार रूखा उत्तर पाकर कीर्तिपाल वहां से उठ आया और जयचन्द को उसने सब समाचार कह सुनाया। यह सुनते ही जयचन्द क्रोध से लाल हो उठा, परन्तु करे तो क्या करे, किले पर तो कुछ चारा चलने का नहीं था। इसलिये उसने किले का घेरा छोड़ कर देवगिरि के राज्य में अपने थाने बैठा दिए और राज्य पर एक प्रकार से कच्चा दखल कर लिया, परन्तु राजा भान ने इस पर कुछ हाथ पैर न हिलाया। तब तो जयचन्द के मंत्रियों ने सलाह दी कि अपनी राजधानी से अधिक दूर होने के कारण इस राज्य का अपने शासनाधीन रहने पर भी उचित प्रबन्ध तो किया ही नहीं जा सकता और जो होनहार थी वह तो हो चुकी, दूसरे यह राज्य भी उस अमूल्य रत्न की तुलना योग्य नहीं है जो कि हाथ से जाता रहा, इसलिये इसे यौंही छोड़ कर अब कन्नौज को चलिए। अतएव यह मत जयचन्द ने भी निर्विवाद स्वीकार कर लिया और उसने सब दल बल सहित आश्विन बदि ९ को देवगिरि से कन्नौज की तरफ़ कूच किया॥



रेवा तट समय।

[सत्ताइसवां समय]

देवगिरि के युद्ध में विजय प्राप्त करके चामड राय दिल्ली को आया। पृथ्वीराज भी बडे आदर सम्मान के साथ उससे मिले। परस्पर के कुशल प्रश्न तथा आवश्यक वार्तालाप से निश्चित हो कर चामडराय ने पृथ्वीराज से कहा कि हे राजन्! जिस हाथी के लिलाट पर शिव जी ने अपने हाथ से तिलक करके उसे इन्द्र की सवारी के लिए दिया था अथवा जो कि ऐरावत के नाम से प्रसिद्ध है उसीके जोडे के लिये पार्वती जी ने स्वय एक हथनी निर्माण करके उसके साथ कर दी। उसी उक्त दपाति से उत्पन्न हुए हाथियों के झुड के झुड रेवा (नर्मदा) के किनारे पर पाए जाते हैं। इसके सिवाय वह रमणीक स्थान नाना प्रकार के सिंह व्याघ्रादि पशुओं से पूरित है। यदि आप वहा पर चल कर शिकार करें तो आपका चित्त अत्यन्त प्रसन्न हो। उस गहन बन में भद्र मद मृग और साधारण चारों जाति के हाथियों के झुड के झुड पाए जाते हैं। यह सुन कर राजा पृथ्वीराज ने कविचन्द से पूछा कि देवताओं का वाहन ऐरावत पृथ्वी पर किस कारण वश आया। तब कविचन्द ने उत्तर दिया कि प्राचीन समय मे हिमाञ्चल पर्वत के उपकठ में एक बडा भारी बर्गद का पेड था जिसकी अत्यन्त ऊची ऊची शाखाए आकाश को स्पर्श करती थी। उसके सन्निकट एक मुनि का आश्रम था। अवकाश के समय आकाश से आया, बन मे विहार करता हुआ ऐरावत उक्त स्थान पर आ पहुचा। उसने एक तो उस सुन्दर बड की शाखाए तोड डालीं दूसरे मुनि का आश्रम भी नष्ट भ्रष्ट कर दिया। ऐरावत के इस अत्याचार से कुपित हुए ऋषि ने शाप दिया कि वह आकाशगामिनी गति से हीन हो जाय और इस पर मनुष्य सवार हो। अस्तु इस प्रकार ऋषि के शाप के कारण ऐरावत अपनी आकाशगामिनी शक्ति से वंचित होकर अंग देश के पूर्व प्रदेश में स्थित गहन बन मे जहा कि नाना प्रकार के कमल और कुमोदिनी समूह से आच्छादित निर्मल जलमय अच्छे अच्छे सुवृहत् सरोवर शोभायमान है, आनन्द से केल क्रीडा करता हुए समय व्यतीत करने लगा। उसी बन में पालकाव्य नामक एक ऋषि रहते थे। पालकाव्य और ऐरावत में ऐसी घनी प्रीति हो गई कि वे एक दूसरे को देखे बिना पल भर भी न रहते थे। दैव योग से चपापुरी का राजा रोमपाद वहा पर शिकार करने आया और वह ऐरावत को पकड कर अपनी राजधानी को ले गया। इधर हाथी के विरह में पालकाव्य दिन दिन दुबला होने लगा। अन्त में वह उसी सोच में मर गया और हाथी की योनि में जन्मा।

ब्रह्मा ऋषी की तपस्या का प्रताप बढ़ता देख कर उसकी तपस्या भग करने के लिये रभा ने इन्द्र की आज्ञानुसार ऋषि का तप भ्रष्ट करने के लिये यथासाध्य उपाय और चेष्टा की; उससे ऋषि का चित्त तो चचल न हुआ वरन उसने कुपित होकर रभा को शाप दिया कि वह हथिनी होजाय। निदान रभा हथनी का रूप धारण कर बन मे विहार करती हुई हाथीभेष धारी पालकाव्य के पास आ पहुचीं। उन दोनों में अत्यन्त प्रीति और दाम्पत्य स्नेह बढ गया और वे दोनों साथ साथ रह कर रेवा के किनारे विचरने लगे, उन्हींसे उत्पन हुए हाथी रेवा के किनारे पाए जाते है

राजा पृथ्वीराज आजन्म से मृगया व्यसन लोलुप था ही, उपरोक्त आख्यान सम्बन्धी सुन्दर वन प्रान्त और उसमें स्वछन्दता से विहार करते हुए गज समूह मृग जूह और सिंहादि पशुओं का हाल सुनकर उसको शिकार करने की इच्छा प्रबल हो उठी। पृथ्वीराज को अधिक उत्कंठा इस बात की थी कि उक्त स्थान जयचन्द की राजधानी में था। पृथ्वीराज ने उसी समय रेवातट की तरफ शिकार करने की तय्यारी की। जिस समय पृथ्वीराज अपने सब सामंत रावत सूर वीर सिपाही और अगनित शिकारी सामान,

सहित रेवातट को जा रहा था, उस समय भान विस्तरी खंडल गढ़ी का राजा, नंदीपुर का राजा और रेवानरिंद आदि भूमिपाल पृथ्वीराज की सेवा में आए।

गुप्त रीति से संतत लाहौर में रहने वाले शहाबुद्दीन के जासूस ने गजनी को लिख भेजा कि पृथ्वीराज सेना सहित रेवातट पर शिकार खेलने गया है। यह सुनतेही शहाबुद्दीन ने दरबार में पान का बीडा रख कर कहा कि जो इस बीड़े को खा कर पृथ्वीराज को पकड़ कर मेरे पास लावे उसे मैं बहुत कुछ इनाम दूंगा। इतना सुनतेही तत्तार खां और मारूफ खां ने वह बीड़ा उठा कर शहाबुद्दीन को प्रणाम किया और कुरान को हाथ में लेकर कौल किया कि जो हम अब की बार पृथ्वीराज को पकड कर न लावें और दिल्ली पर अधिकार करके राजपूत सेना में प्रसिद्ध बलवान चामंडराय को मार न गिराए तो हमारा नाम न हो तो नहीं!!।

इधर पृथ्वीराज ने उस समय लाहौर के प्रतिनिधि शासक चन्दपुंडीर को परवाना भेज कर अपने आने का समाचार जता दिया और आप कभी ६ और कभी ८ कोस का मुकाम करता हुआ पजाब की सींध में चलने लगा। जिस घड़ी पृथ्वीराज ने पंजाब की भूमि पर पैर रक्खा उसी समय मुसल्मानी सेना ने भी वह सीमा पार की।

जब रेवा के किनारे शिकार करते हुए पृथ्वीराज को खबर लगी कि मुसल्मानी सेना बड़े भारी समारोह के साथ इस ओर आ रही है तब उसने सब सामंतों को एकत्र कर के पूछा कि अब क्या करना चाहिए? यह सुन कर पृथ्वीराज के राज्यनीति विशारद मंत्रियों ने उत्तर दिया कि वृथा अपनी तरफ से उपद्रव मोल लेना उचित नही, क्योंकि इस समय अपना बल पाहिले का सा नही है इससे उचित यही है कि इस प्रवल दल को किसी उपयुक्त नैतिक युक्ति द्वारा टाल दिया जाय। इस बात के सुनतेही पज्जून राय, प्रसग राय खीची, देवराय बग्गरी आदि सामन्त बोले कि यह सब मत्र तंत्र व्यर्थ है। "भरत" का बचन है कि यह जीवन अग्नि ज्वाला मे झुर मे वृक्ष में लगे हुए पत्र के समान है, न जाने कब वायुलगते ही इस का पतन हो जाय अतएव इस सुअवसर पर चूकना क्या? जब कि शत्रु साम्हने आ गया है तो उससे लोह लेना ही अच्छा है। जैन राय ने कहा कि मेरा विचार तो यों है कि लाहौर के पास ही शहाबुद्दीन से युद्ध छेडा जाय और तब तक इधर अपने इष्ट मित्र सगे सम्बन्धियों को परवाने लिख कर इस बात की सूचना दे दी जाय कि वे भी यथा अवसर सहायता के लिये आ जावें। मैं ने एक बार शाह को पकडा है अब फिर भी पकड ने की प्रतिज्ञा करता हू। तब तक रघुवंश राम बडगुज्जर बोला हे वीर सामन्त भाइयो, शाह आगया, अपना दिल छोटा न करो, गज, सिंह, सूरवीर पुरुष इनका यही नियम है कि जहां मिले वहा मार खाय। हम लोग वीर सामंतों का काम समय असमय गीला सूख देखना नहीं है, हम लोग किसी की मंत्र सलाह क्या जाने; हम तो केवल मरना जानते है। शहाबुद्दीन को कई बार बॉध चुके हैं अबकी फिर से बॉधे तो अपने पिता करणसिंह के पुत्र नहीं तो नहीं। यह सुन कर कविचन्द ने उत्तर दिया कि रे गॅवार गूजर, ऐसी बेसमझी बूझी बातों में ही राज्य सत्यानाश होते हैं।

परस्पर वादविवाद बढ़ता देख कर पृथ्वीराज ने कहा कि इन व्यर्थ बातों से क्या लाभ, जो बात आगे आई है उसका विचार करो। यह कह कर वह तो अपने सयनागार में चला गया, इधर सब सामन्त लोग भी अपने अपने डेरे को गए। अभी आधीरात का समय था कि लाहौर से एक दूत आया और वह पृथ्वीराज को सोते से जगा कर उसी वक्त उसके पास जाकर कहने लगा कि श्रीमान शहाबुद्दीन अठारह हजार हाथी और अठारह लाख और सब सेना के साथ इस तरफ बढ़ता आरहा है। उसने कहा कि इस प्रकार शाह की अवाई का समाचार सुन कर पचास हजार सेना के साथ चद

पुंडीर-ने नदी का नाका जा बाँधा है और मुझे आपके पास भेजा है। चन्दपुंडीर को रास्ते में डटा हुआ देख कर शहाबुद्दीन ने मारुफ खां, तत्तार खां, खिलचीखां नूरी खा हुजाब खां महम्मद खां आदि सर्दारों से गोष्ठी करके उसने अपनी सेना को दो गों में बाँटा। महमूद खा, मगोल लल्लरी, सहबाज , जहांगीर खां आदि सेनानायकों और निज र सहित एक सेना को लेकर सुलतान ने तो नाव पार करने की तय्यारी की और आलम खा, रूफ खा, उजबक खां आदि तीस यवन वीरों को छ सेना सहित उस पार अपनी सहायता के वास्ते रखा। जिस समय शहाबुद्दीन सेना सहित नदी में ाया, इधर से वीर चन्दपुंडीर ने उसको जा रोका। दोनों लों में बड़ी देर तक लोहा झडता रहा अन्त में चन्द- डीर घायल हो गया और शाह सब सेना सहित वनाव पार हो आयाहै उसने बराबर बढ़ते हुए लाहौरे ा पाच कोस उस तरफ अपना पडाव डाला है।

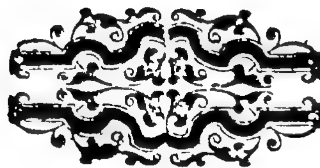
दूत के मुख से ऐसे बचन सुनते ही क्रोध से थ्वीराज का मुख लाल हो गया, दोनों भुजाए फडक ठीं, ओठ फडाफडा उठे। उसने उसी समय आज्ञा ो कि प्रातःकाल ही शहाबुद्दीन के ऊपर चढाई ी जाय। उसने कहा कि यदि अब भी फिर शहा- बुद्दीन को कैद करके न छोड़ूं तो मै सोमेश्वर का ुत्र नहीं। यों कह कर पृथ्वीराज रात्रि के शेष दो प्रहर व्यतीत होकर सूर्य्योदय की इस प्रकार इच्छा करने लगा जैसे रात्रि में दपति विछोह से दुखी चक्र- वाक, कठिन व्याधि पीडित रोगीजन वैद्य के द्वार पर जाने के लिये सूर्य्योदय की इच्छा करती है, एव जिस प्रकार पतिविहीना स्त्री ससार को असार जान कर पति की मृत्यु के साथ अपने भस्मी भूत शरीर को भी भस्म कर देने की इच्छा करते है। नियमानुकूल सबेरा होते ही चन्द और तारा गणों का प्रकाश मद हो गया, दीप शिखा भी द्युतिहीन हुई। इधर पृथ्वीराज और उसके सामन्त एव अन्यान्य सैनिक सूर वीर सूर्य्योदय से कमल की भांति प्रफुल्ल चित्त हो उठे। उस दिन मंगल वार और तिथि पंचमी थी। पृथ्वीराज की आज्ञा पाते ही समस्त राजपूत सेना चन्द्रव्यूहाकार होगई। वे सच्चे स्वामिसेवी एवं समरभूमि में शरीर त्याग कर स्वर्ग में अप्सराओं से मिलने की अभिलाषा से भरे हुए राजपूत बच्चे उत्साह ओज और आतंक सूचक ध्वनि करते हुए शत्रु सेना की तरफ इस तरह बढते जाते थे जैसे मद से भींगे हुए गण्डस्थल वाला मदोन्मत्त मातग मेघस्पर्शी उत्तग तरुवर की तरफ उसे तोड़ने के लिये बढ़ता जाता है। उधर यवन सेना में ऊंचे हाथियों पर बैठे हुए योद्धाओ के मणिमय वस्त्र एवं स्वच्छ चमकीले हथियार ऐसे सुशोभित होते थे मानों मद ज्योति उडगन समूह सूर्य्य के प्रखर ताप से उत्तापित हो कर पृथ्वी की ओर आ रहे हों। राजपूत सेना जो चन्दव्यूहाकार रची गई थी उसमें रावल जी, राजा पृथ्वीराज एक सिरे पर, हुसैन खां और चन्दपुंडीर दूसरे सिरे, पर रामराय रघुवशी और साखला सूर सारग देव ऐसे स्थान पर थे जहा से ठीक शहाबुद्दीन का साम्हना पडता था। पावस के प्रवल दल बद्दल रूपी यवन सेना को देखते ही प्रचड पवन रूपी मेवाडपति रावल समर सिंह जी ने उस पर इस वेग से आक्रमण किया कि वे छिन्न भिन्न होने लगे। उनके पीछे जैतराव और तिस पीछे चामडराय ने धावा किया। जिस समय युद्ध आरम्भ हुआ पूर्ण मध्यान्ह काल होने में आधी घड़ी शेष थी। चन्दपुंडीर ने छक पाकर यवन सेना पर तिरछे रुख से इस प्रकार धावा किया कि उनके पैर उखड पड़े। यह देख कर शहाबुद्दीन मनहार होकर घबराने लगा परन्तु तत्तार खा ने उसे धैर्य्य देकर समझाया कि मेरे रहते आप किसी बात की चिन्ता न करें। इस प्रकार शाह को सतोष देकर तत्तार खा अपने सैनिकों को उत्तेजना जनक वाक्यों से सम्बोधन करता हुआ आगे बढा। अपने मरदारों को झुकता हुआ देख कर यवन सेना भी अपने स्वामी की जय की अभिलाषा करती और धरो, पकडो, मारो इत्यादि नाना प्रकार के भयानक शब्द करती हुई हिन्दू सेना पर टूट पड़ी। उधर से खिचली अर्थात् खिलजी खां

को अगुवा देख कर इधर से माधव राव सोलंकी हरावल में होकर उसके साम्हने हुआ। दोनों वीर पहिले तो तलवारों से युद्ध करते रहे परन्तु जब दोनों की तलवारें टूट गई तब वे दोनों मल्ल युद्ध करते हुए परस्पर कटारों के वार करने लगे और यवन सेना के कई एक सिपाहियो ने मिल कर माधव राव को मार डाला। यह देखते ही गोइन्दराय का भाई यवन दल रूपी समुद्र को दीर्घकाय मगर की भाति मथता हुआ खिलजी खा के ऊपर टूटा परन्तु उसे भी कई एक मुसल्मान सिपाहियों ने काट कर टूक टूक कर दिया। गोइन्दराय के भाई का नाम जय सिंह था। इसने अपने शरीर के एक एक अवयव कटते कटते अद्वितीय पराक्रम किया, मरते मरते सहस्रों यवन योद्धाओं को पञ्चतत्व में लीन कर के आप स्वर्ग में अप्सराओं के साथ विहार करने लगा। चन्दपुंडीर के भाई वीर पाल्हन ने खुरासान खा का साम्हना पकड़ा, परन्तु जब तक यह खुरासान खा पर वार करे कि उसने एक ऐसा हाथ मारा कि पल्हन का सिर कट कर अलग जा खड़का और कमन्ध नाचने लगा। इधर जब खिलजी खां के मुकाबले में दो तीन अच्छे अच्छे वीर काम आए तब सारंग देव ने उस पर आक्रमण किया, सारग देव ने अपने घोड़े को एड़ देकर खिलजी खा के हाथी के मस्तक पर जा टपकारा। इस अद्भुत कौशल से इधर तो हाथी चिक्कार उठा उधर सारंग देव ने खिजली खा को मार कर दो कर दिया। गोइन्दराय सिसोदिया वीर तत्तार खां के सम्मुख जा पहुंचा। उसने जिस समय तत्तार खा के हाथी का दाँत पकड कर दे पटका और तलवार से एकही वार में मय दतूसरों के भसुड से सुंड उतार दिए उस समय ऐसा मालूम होता था मानों कंस की मखशाला में कृष्ण ने कुवलिया पील को पछाडा हो। कूरभराय के पुत्र नरसिंह ने खाड़ा खींच कर ख्वाजा की खोपड़ी पर मार उसे एकही वार में खपाना चाहा परन्तु उसने गिरते गिरते नरसिंह के पेट में कटारी भोक दी जिससे उसके पेट की अंत मेदा मज्जा आदि बाहर निकल पडी। वह वीर उसका कुछ भी परवाह न कर के कगरे वार करता रहा। इसी प्रकार युद्ध होते होते सायकाल हो गया।

दूसरे दिन सूर्य्योदय होतेही पुनः युद्ध आरंभ हुआ इस युद्ध में जैतराव का भाई लष्पन प्रमार हरावल का अनीपाति था। उसने बडा पराक्रम और वीरता दिखाई। लष्पन के मारे जाने पर इन्द्र की अप्सराए इस बात की आशा ही करती रह गईं कि वे उस नव युवक वीर को आलिङ्गन कर सकें और वह वीर इन्द्र और चन्द्रमंडल दोनों को बेध कर सूर्य की प्रभा में लीन हो गया। इसने पहर दिन चढते चढते तक युद्ध किया था। लष्पन कुमार के मारे जाने पर भीमदेव जंघारा हरावल पर झुका. जिस समय वीर रस मदमस्त मतंग की भाति सर्वाङ्ग शरीर में विभूति चढाए त्रिशूल खप्पर आदि कपालिकों की समस्त सामिग्री लिए शृंगी नाद करता एक मात्र कटार लिए हुए यवन सेना पर टूटा उस समय अच्छे अच्छे योद्धाओं के होश छूट गए। उसके पश्चात् सुन्दर केशर मय चन्दन की खौड दिए, हिए पर पुष्प माला धारण किए हुए वीरता के छत्तीसों वस्त्र लिए हुए लंगरी राय ने पसर की, जंघाराय भीम कटारे और लंगरी राय तेगे से मुसल्मानी सेना को इस प्रकार से उजाड करने लगे जैसे हनुमान जी के अग्नि लगाने पर लंका उजड़ रही थी। इस तरफ आजानबाहु लोहान अजब ही मजा कर रहा था। वह जिस लंबे चौडे काबुली वीर के सीने में कटार मार करके वारा पार कर देता तो ऐसा मालूम होता था मानो किसी दृढ दुर्ग का द्वार खोला गया हो। इस दिन के युद्ध में तेरह हिन्द सरदार और चौसठ मीर काम आए। दूसरे दिन मीर हुसैन के पुत्र हुसैन खा ने मारूफ खां का मुकाबला किया और उसे घायल करके गिरा दिया, यह देख कर उजबक खां उसके मुकाबले पर आया। दोनो में बड़ी देर तक बडी ताक झाक की मार होती रही अन्त में उजबक खां ने एक ऐसा हाथ मारा कि जिससे हुसैन खां

क भी गहरी चोट लगी और उसका घोड़ा कट कर जमीन पर लोट गया। इस युद्ध में शहाबुद्दीन विकट व्यूह से रक्षित स्वयं तलवार लिए मरने मारने पर उद्यत था। शाह की बातों से तैश मे आकर खुरसान खा ने बडा पराक्रम दिखाया परन्तु राम राय रघुवसी ने उसे खूब ही छकाया, राजपूत वीरों की विकट मार के मारे जब यवन सेना पस्त हिम्मत हो उठी तो कुछ सामतो ने मिल कर शहाबुद्दीन पर आक्रमण किया और उसे घेर कर पकड़ना चाहा। यह देख कर शाह ने एक बान से रघुवंस राम गुसाई और दूसरे से भीम भट्टी को घायल किया तीसरा बाण जब तक चढ़ता था कि पृथ्वीराज ने आकर उसके गले में कमान डाल दी।

पृथ्वीराज इस प्रकार यवन सेना को जीत शहाबुद्दीन को पकड कर दिल्ली को चला। दिल्ली में आकर पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को एक महीने तीन दिन तक कैद रक्खा, बाद इसके गजनी के अमीर उमराओं के अत्यत विनीत भाव से विनती करने पर ९ हजार घोडे, सात हाथी और बहुत सा जवाहिरात आदि नजर लेकर शाह को सकुशल उसके घर गजनी भेज दिया।



अनंगपाल समय।

[अट्ठाइसवां समय]

राजा अनगपाल तोमर दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को सौंप कर आप वदरिकाश्रम में तप करने चला गया था। परन्तु उसने पुनः दिल्ली में आकर पृथ्वीराज से विग्रह क्यों किया इसी का वर्णन इस समय में किया जाय गा।

तोमर वंश के कुल प्रोहित व्यास जी के विज्ञान मय वचनों ने अनगपाल के हृदय पर ऐसा अधिकार कर लिया कि उसने उसी समय पृथ्वीराज को अजमेर से बुला कर दिल्ली का राज दे दिया. और आप संसार को असार जान वदरिकाश्रम में तपस्या करने चला गया। उधर अनंगपाल तपस्या में रत हुआ इधर वीर पृथ्वीराज दिल्ली राज्य का राज्य शासन करने में प्रवृत्त हुआ। किसी को भला लगे या बुरा, किसी को दुःख हो या सुख, परन्तु इस परिवर्तनशील ससार चक्र का चरखा जिसे लोग होनी या विधना का लिखा हुआ कहते है एवं जिसके ही अधार पर सर्व पृथ्वी, वायु आकाश, सूर्य्य, चन्द्र और अन्यान्य चमकदार सितारे स्थिर है, अप्रतिहत रूप से चला करता है। इस सृष्टि का रचयिता ब्रह्मा पच महाभूत सहित इस काल में लीन हो जाता है परन्तु सब के शासक काल का ग्रास कभी भी खाली नहीं जाता, इसी काल चक्र के अनुसार जिस समय पृथ्वीराज दिल्ली का स्वामी हुआ तब यह समाचार सारे भारतवर्ष में फैल उठा। साथ ही इसके इस बात की भी चरचा चल उठी कि पृथ्वीराज अधर्म शासन करता है। दिल्ली राज्य के पूर्व्व कर्म्मचारी तथा प्रतिष्ठित प्रजा वर्ग को राजकीय स्वत्वों से रहित करके अपने सगे सम्बन्धियों का अधिकार वढा रहा है। येही बातें उड़ती हुई अनगपाल के कान तक जा पहुची। यह सुनते ही अनगपाल ने पृथ्वीराज के इस कुतघ्न आचार पर कुपित होकर पश्चाताप करते हुए कहा, हा! ऐसे भी लोग संसार में है कि उपकार की तरफ तनिक भी ध्यान नहीं देते!!

पृथ्वीराज को दिल्ली राज्य मिलने का समाचार पा कर मालवे के राजा के जो कि सोमेश्वर से परम शत्रुता रखता था, हृदय में डाह की ज्वाला जल उठी। उसने उसी समय अजमेर पर चढाई करके सोमेश्वर को जीत लेने और फिर दिल्ली पर आक्रमण करने की इच्छा से, गप्पर, गोंड, मदौड, और सो... पुर आदि के अपने मित्र राजाओं को बुला भेजा। इस प्रकार अपनी और उपरोक्त मित्र राजाओं की चतुरंगिणी सेना सहित हसस्त्रवाहु के वंश में उत्पन्न यादव वंशी मालवा का राजा अजमेर पर चढ़ चला और मोरपुर के पडाव पर कुछ दिन ठहर कर उसी वा... से चवल पार हुआ।

मालवपति के चढ़ आने का समाचार ज... सोमेस्वर ने सुना तो उसे वडी चिन्ता उत्पन्न हुई उसने विचार किया कि समस्त सेना और पारिक... सहित पृथ्वीराज तो दिल्ली में पड़ा हुआ है यदि इस प्रवल शत्रु से युद्ध करके मै परास्त हो गया तो व्यर्थ मेरे नाम में टीका लगेगा। मै इस अजेय उज्वल चहुआन कुल में कालिमा कहलाऊगा, अस्तु यह सब सोच विचार करते हुए उसने नरसिंह प्रमार, वीरसिंह गौड़, वीर वाहन आदि सामन्त मित्रों और गुरुराम को बुला कर पूछा कि इस समय मु... क्या कर्तव्य है? उन सब ने परस्पर सम्मति कर उत्तर दिया कि इस समय यदि साम्हने से युद्ध कि... जायगा तो अपनी सेना बहुत थोड़ी होने के कार... हार खाने की अधिक आशका है अतएव हमारा म... यह है कि त्रयोदसी को रात्रि के समय सेन सज क... सोते हुए शत्रु पर धावा करके उसे छल से ही परास्त किया जाय। यह सुन कर सोमेश्वर बोले, हे मित्रो यद्यपि तुम्हारा यह मत मेरे हित के लिये है परन्तु हा! इस अनुचित व्यापार का साधन मुझ से

न हो सकेगा। शास्त्र का वचन है कि निद्राग्रस्त, मल मोचन करते हुए, शौच स्नान पूजना दि करते हुए, मंत्र का जाप करते हुए इत्यादि मनुष्यों को कपट से मारना महापाप और क्रूरता है, इस लिये मेरे किए तो यह न हो सकेगा। राजा के ऐसे वचन सुन कर सामन्त लोग बोले कि राजनीति की आज्ञानुसार राजा को समयोचित कार्य्य करना चाहिए। क्या त्रेता में चक्रवर्ती राजा रामचन्द्र ने समुद्र को बाँधते और बलि को मारते समय छल नहीं किया? क्या नृसिंह ने हिरण्यकश्यप को विदारते समय छल नहीं किया? कृष्ण ने कंस को पछारते समय क्या छल नहीं किया? यह सुन कर सोमेश्वर चुप होरहे और सूरवीर योद्धाओं ने युद्ध के लिये बताने बताने बाँधने शुरू किए। यह देख कर सोमेश्वर ने भी अपने रणबाँकुर बीरों का साथ देने के लिये अस्त्र शस्त्र धारण किए। सब रावत योद्धाओं ने शौचादि से निश्चित होकर गंगाजल और तुलसीपत्र पान किए, तदनन्तर जिरहबख्तर से विभूषित होकर तन्न, त्रस, दून, तोमर, सेक, सर, साग्ग, शूल, शक्ति, सेल, साबल्ल, कत्ती, कज्ज, चक्र, कृपान, बक्री, अशनी, दंड, भिडमाल, मुग्दर, मूषल, हल, द्विस्फोट, परिघ, पाश, परस छरिका, नाराज, नसी, नालिका अर्थात् बन्दूक आदि शूरबीरों के छत्तीसों बाने बाँधे।

मालव के राजा यादवराय ने चंबल पार करके बरवास नगर के पास डेरा डाला। राजा सोमेश्वर अपने रणोन्मत्त शूर सामंतों सहित धावा मार कर आधी रात्रि के समय बरवास पहुंच गया। सोमेश्वर ने जाते ही चढ़ीमवारी यादव राज्य की सेना पर आक्रमण किया। यादव सेना को सोमेश्वर के आने की अब तक खबर भी न थी। जब चहुआन सेना यादव के सैनिकों को काट काट कर [illegible] पछाड़ पाड़ने लगी तब वे भी सचेत होकर युद्ध करने लगे, परन्तु सोने जागने में बड़ा फर्क [illegible]। सोमेश्वर की सेना ने पहिले से इन्हें मार के [illegible] हथियार [illegible], इस लिये यही रात रहते [illegible]

यादवराय अत्यन्त घायल होकर सोमेश्वर जी के सिपाहियों से पकड़ लिया गया। सोमेश्वर जी ने बड़े आदर भाव से यादवराय को अजमेर में लाकर रक्खा और उसकी दवा भी करवाई। एक महीने बाद जिस दिन यादवराय ने स्नान किया सोमेश्वर जी ने बड़ा दान पुण्य करवाया और फिर सादर उसे उसकी राजधानी को भेज दिया।

पृथ्वीराज के पक्षपातमय राज्य शासन से दुखित दिल्ली के प्रतिष्ठित पुरुषों और राज्यकर्म्मचारियों ने अनंगपाल की शरण में जा पुकारा। उन्हों ने कहा कि हे महाराज! जिस समय से पृथ्वीराज दिल्ली का राजा हुआ उस समय से आपकी प्यारी प्रजा अनाथ एवं भिखारी की भांति मारी मारी फिर रही है। अनंगपाल के प्रधान मंत्री ने कहा, हे महाराज! आपने उस समय हमारी बातों पर कुछ भी ध्यान न दिया, आपने व्यास जी की बातों मे आकर पृथ्वीराज को राज्य सौंप दिया। यदि आप को राज्य देकर देव सेवा करना ही अभिप्रेत था तो आप उसे अपने किसी निज भाई भतीजे को दे दिए होते। आपकी प्रजा असहाय की भांति कलपती फिरती है और आप तप करते हैं इससे आपको क्या फल होगा। कौरव पांडवों के बीच भूप्रख्यात भारत का युद्ध इसी भूभाग के लिये हुआ। रावण ने इसी भूमि के लिये भाई विभीषण को मार कर निकाल दिया, और सपरिवार अपना प्राण दिया। इसी भूमि के लिये बलि बंधन में पड़ा, मुंज ने भोज के मारने की आज्ञा दी और कन्ह तोमर ने अपने देखते पुत्र को विष दिया। हे राजन् आपने सदैव भूल की। पहिले तो किल्ली ढिल्ली करके अपने अखंड राज्य को खंडित किया तिस पर भी पृथ्वीराज को राज्य दिया। राजा को उचित है कि वह जिसे चाहे धन धान्य हाथी घोड़ा और जो चाहे सो दे दे परन्तु अपने राज्य की तिल भर भी भूमि कदापि न दे।

मंत्री की इन बातों ने अनंगपाल के दिल पर ऐसा असर किया कि उसने उसी समय पृथ्वीराज के [illegible] दूत प्रेरित करके कहला भेजा कि [illegible]

तुम्हारे व्यवहारों से अप्रसन्न हूं इस लिये तुम दिल्ली का राज्य छोड कर इसी समय अजमेर को चले जाओ। दूत के ऐसे वचन सुनते ही पृथ्वीराज क्रोध से जलकर आग बबूला हो गया। उसने दूत को दपट कर कहा रे मूढ यदि उन्हें ऐसा ही करना था तो पहिले ही सोच विचार कर राठौरों को क्यों न गोद ले लिया। मेरे रहते अब वे दिल्ली नगर का द्वार देखने की इच्छा न करें। यह सुनते ही उक्त दूत उठ कर खडा हो गया और बोला, हा! यह एक आश्चर्य्य की बात है कि जिसका धन थाम लिया जाय उसीको धना बताया जाय? तब पृथ्वीराज पुनः बोला रे मूढ़ बसीठ, राज्य कौन किसको देता है। जैसे दूध में माधुर्य्य स्वाभाविक ही होता है उसी भाति पृथ्वी पुरुषार्थी पुरुषों के पास आप आ जाती है, फिर उससे वह भूमि लेने की जो मूर्ख इच्छा करता है वह आप नाश को प्राप्त होता है। मैं उन्हें क्या कहू, उनकी तो जरा रूपी ज्वर से जर्जरित जीर्ण बुद्धि सठिया गई है, परन्तु यह प्रसंग तुम लोगों के लिये विषमूल होगा। पृथ्वीराज की ऐसी बातें सुनकर वह दूत तनक्षीण मनमलीन होकर अनगपाल के पास उलटा फिर गया। उसने अनंगपाल से कहा कि मैंने तो पहिलेही कहा था कि आप वृद्ध हुए अब इस प्रपञ्च में पैर न दीजिए परन्तु आपने न माना। वह राज्यमद मतवारा दैत्यवशी बलवान चहुआन सुई के अग्रभाग भर भूमि देना भी स्वीकार नहीं करता। प्रथम तो आपने राज्य खोकर देश देशान्तरों मे बात फैलाई, मालूम होता है कि आप को अब भी अपनी प्रतिष्ठा प्यारी नहीं है और हँसी कराने की इच्छा है।

यह सुनते ही अनगपाल के अंग अंग में आग सी लग गई उसने उसी समय बिना सोचे विचारे कुछ फौज लेकर दिल्ली की तरफ कूच कर दिया। जब यह समाचार पृथ्वीराज को मिला तो उसने कैमास से कहा कि इस समय मेरा मन विचित्र विपत्ति में फँसा हुआ है। यद्यपि वे (अनगपाल) मुझपर चढ करके आगए है परन्तु मेरी इच्छा नहीं होती कि मै उनका मुकाबला करूं, इधर दिल्ली छोड कर जाते भी नहीं बनता। तब कैमास बोला कि आप उनसे लडिए न, केवल अपने किले का प्रबन्ध कर लीजिए। निदान पृथ्वीराज ने ऐसाही किया। उधर से अनगपाल सेना सहित दिल्ली के किले की दीवारों के पास आजमका और दनादन आग बरसाने लगा। अनंगपाल चार दिन तक बराबर लडाई करता रहा परन्तु पृथ्वीराज ने अपनी रक्षा करने के सिवाय और कुछ भी न किया। अस्तु जब अनगपाल ने देख लिया कि यह अभेद्य दुर्ग उसके काबू का नहीं है तो वह चुके से उलटा फिर गया और अपनी सेना को अजमेर के सिवाने छोडता हुआ आप फिर से बदरिकाश्रम को चला गया।

अनगपाल दिल्ली से लौट कर बदरिकाश्रम न जाकर हरिद्वार में पडा रहा। वहा से उसने अपने मंत्री के मतानुसार पृथ्वीराज के पास फिर एक दूत भेजा। उसे पृथ्वीराज ने फिर भी वही उत्तर दिया। उसने कहा कि आपने जो भूमि सत्कार कर के दे दी उसे लेकर अब आप क्या करेंगे। आप वृद्ध है और जब आपने स्वयं राज्य त्याग कर के तापसीवृत्ति धारण करली तब आपसे और राज्य से प्रयोजन ही क्या? जैसे मेघों से वर्षा हुआ जल पुनः आकाश में नहीं जाता, पेड से पतन हुआ पत्ता फिर डाल में नहीं लगता, टूटा हुआ तारा फिर आकाश में नहीं जाता, सिंह जिस प्रकार लांघी हुई वस्तु को नहीं मारता और न भक्षण करता है वैसेही आप अपना दिया हुआ दिल्ली का राज्य अब नहीं पासकते। मै जानता हू कि आप शहाबुद्दीन के कान लग कर ऐसा कर रहे है। आप उस निर्लज्ज यवनराज के कहने में आकर क्यों वृथा अपने सत् धर्म्म और साहस को चौपट करने पर उतारू हुए है। वह जैसा आप है वैसा ही आप को करना चाहता है। स्मरण रखिए वह वही सुल्तान है जिसे मेरे सामन्तों ने कई बार कैद कर कर के छोड दिया है। जब ये बातें अनगपाल ने सुनी तो

उसने उसी समय एक दूत गजनी को रवाना किया। उधर लाहौर से नीतिराय खत्री ने पहिलेही सब समाचार शहाबुद्दीन को लिख भेजा था इधर अनगपाल के दूत ने भी अनगपाल का समचार कह सुनाया।

शहाबुद्दीन तो सदैव इसी टोह म लगा रहता था कि कब समय हाथ आवे और कब मैं दिल्ली पर दौरा करूं। अनंगपाल का प्रार्थना पत्र पाते ही वह तत्तार खा, खानखाना, खुरासान खा, मारुफखा, कमाल खा, कमान खा, नौशेर खा, आदि मुसाहिबों को साथ लेकर हिन्दुस्तान की तरफ चल पडा। अपनी चतुरगिनी सेना सहित जब शहाबुद्दीन सिन्धु नदी पार हो आया तब उसने अपने मत्री तत्तार खा को अनगपाल के पास हरिद्वार भेज कर कह पठाया कि मै आगया, अब आप भी आकर सोनपुर के पड़ाव पर मुझ से मिलिए। इधर अनगपाल तो पहिले से तय्यार बैठा था उसने दिल्ली की प्रजा की सहायता से धन पाकर बहुतेरे हाथी घोडे लेकर नवीन सेना तय्यार कर रक्खी थी। तत्तार खा के पहुचतेही अनगपाल अपने उन सब सूरवीर सिपाहियों सहित जो कि उसके साथ ही वैरागी हो गए थे, दिल्ली की तरफ चला और सोनपुर के पड़ाव से दस कोस आगे शहाबुद्दीन से जा मिला। अनगपाल के आने का समाचार पाकर शहाबुद्दीन ने उसे चार कोस आगे बढकर बडे भावभगत से लिया और अपने बराबर बैठाल कर बडी खातिरदारी और तवाजा की।

शहाबुद्दीन को अनगपाल ने पाच हाथी पचास घोडे और बहुत सा जवाहिरात नजर किया जिसके बदले मे बादशाह ने उसे एक तलवार एक तीर कमान और एक अमूल्य सिरोपाव दिया। तदनन्तर अनगपाल ने कहा कि मैंने आपको जिस लिये इतना कष्ट दिया सो तो आपको भली भाति सूचित [illegible]। जो हुआ है अब मेरी यह प्रार्थना है कि [illegible] दिल्ली पर चढाई करके पृथ्वीराज का दर्प [illegible] किया जाय। इस पर शहाबुद्दीन ने तो कुछ भी [illegible] न दिया परन्तु उसके मत्री तत्तार खा [illegible] कि पहिले एक परवाना पृथ्वीराज के नाम लिख भेजिए यदि वह उसीसे मान जाय तो वृथा सहस्रों मनुष्यों का नाश क्यो हो और यदि न माने तो फिर देखा जायगा। उसका यह मत शहाबुद्दीन तथा अनगपाल दोनों ने स्वीकार किया और उसी समय एक परवाना दिल्ली को रवाना किया गया।

जिस समय यह परवाना पृथ्वीराज के साम्हने पढा गया तो उसमे शहाबुद्दीन की तरफ से लिखा था कि हे पृथ्वीराज! अनगपाल ने तप करने को जाते समय अपना राज्य आपकी रक्षा मे छोड़ दिया था, कुछ आपको दे नहीं दिया था; अब वे तप करके अपना राज्य आप भोग करना चाहते है अतएव आपको उचित है कि उनका राज्य उन्हें सौप दीजिए। सनातन की रीति है कि चरवाहा जो गाएं चराता है वे उसकी नहीं होजातीं। राजा अपने घोडे पर जिस मनुष्य को मालदारी करने के लिये रखता है वह घोडा उस सईस का नहीं समझा जाता। इसी भाति दिल्ली राज्य पर आपका कुछ अधिकार नहीं है। मैं आपको मित्र की भाति यह सलाह देता हू कि आप घर में वृथा विग्रह की जड न जमाइए नहीं तो अच्छा न होगा। ये बातें सुनतेही पृथ्वीराज ने कहा कि अनगपाल ऐसे ऐसे एक क्या कई शहाबुद्दीन की सहायता लेकर क्यो न आवे परन्तु वह इस तरह से तिल भर भूमि न पा सकेगा।

पृथ्वीराज का ऐसा सूखा जवाब सुन कर उधर तो दूत ने पीठ फेरी इधर पृथ्वीराज ने अपने मत्री को युद्ध के लिये तय्यारी करने का हुक्म दिया। वहा क्या था, केवल हुक्म की देर थी, पृथ्वीराज के वीर वर सामत तथा अन्यान्य सैनिक सर्वीर राजपूत तो सदा युद्धक्षेत्र में प्राण देकर स्वर्ग के सोपान पर पैर देने को उद्यत रहते थे। बात की बात में दस हजार सेना तय्यार होगई और पृथ्वीराज उसके साथ होकर सोनपुर की तरफ चला। इधर शहाबुद्दीन को भी इस बात का समाचार मिल गया कि पृथ्वीराज लड़ाई का निशाना उठाए हु

आ रहा है, अस्तु उसने भी अपने सिपाहियों और सिपहसालारों को सचेत होने की सूचना दी। पृथ्वीराज के आते आते मुसल्मान सेना सन्नद्ध हो रही। उस सेना के वाम पत्त में मारूफ खां; दाहिने में खुरासान खां, हरावल में तत्तार खां और अनगपाल और पीछे शहाबुद्दीन थे। इधर पृथ्वीराज की सेना सर्पव्यूहाकार थी, जिसके मुख भाग पर कैमास, मध्य में पृथ्वीराज और पूछ पर चामंडराय था। रणमदोन्मत्त सेना के मध्य में स्थित पृथ्वीराज ने हाथ उठा कर कहा, हे वीरो, आपकी बहादुरी इसीमे है कि अनगपाल मारे न जावें उन्हें जीतेही पकड लेना। इतने मे दोनों सेनाओं की देखा देखी हुई और कैमास ने अपने घोड़े की वाग उठाई। पश्चिम दिशा से आए हुए यवन दल बहल पर सपूत राजपूत वीर ऐसे टूटे जैसे भेड पर भूखा मृगराज टूटता है। वे नमकहलाल मुसलमान भी अल्लाह अल्लाह का हल्ला करते हुए अस्त्र शस्त्र चलाने लगे; दोनों ओर से ढोल, भेरी, रब्बी, नगारे, शृगी, शख, सहनाई आदि रणवाद्य बजने लगे। इन रणवाद्यों की भीषण ध्वनि और बीरौटी की तानें सुन सुन कर वीरों के दिल दूने होने लगे। दोनों ओर के सूर सिपाही लोग वीररस मदमाते मतग की भाति एक दूसरे से भिड रहे थे। उनकी बिकट मारा मार से सोनपुर का मैदान रक्त का सरोवर बन गया, सहस्रों हाथी, घोड़े ऊटों के सर धर टाग पैर कटे पड़े नजर आते थे। इसी समय अवसर पाकर कैमास ने अनगपाल को जा घेरा और बडी मार काट के बाद उसे जीता पकड़ लिया। यह देख कर शहाबुद्दीन को बडी ईर्षा उत्पन्न हुई और वह अपनी अनी को उत्साह देता हुआ आगे बढा तब उसे चामंडराय ने धर दबाया। मुसलमान सैनिक बडी देर लों ठहरे परन्तु अन्त में चामंडराय ने शहाबुद्दीन को पकड कर बाध लिया और अपने घोडे के कधे पर डाल कर पृथ्वीराज के साम्हने ले गया। इस युद्ध मे सात हजार मुसलमान और पाच सौ राजपूत काम आए। इस प्रकार युद्ध जीत कर पृथ्वीराज ने मैदान साफ किए जाने की आज्ञा दी। इस युद्ध में जो मुसल्मान मारे गए थे उन्हें मिट्टी दिलाई गई और हिन्दू वीरो की यथोचित रीति से दाह क्रिया करवाई गई।

पृथ्वीराज ने अपने शिविर में आकर शहाबुद्दीन को सम्मुख लाए जाने की आज्ञा दी। राजा की आज्ञा पाते ही राज्यमत्री कैमास ने शहाबुद्दीन को दरबार में लाकर हाजिर किया। उस समय शहाबुद्दीन का भय एव सकोच के कारण मुख सूख गया था आखें नीची हो रही थीं और उसकी जबान से बात भी न निकलती थी। पृथ्वीराज की आज्ञा पाकर शहाबुद्दीन नीचा सिर किए बैठ गया; तब पृथ्वीराज ने अनगपाल से कहा कि आप तो बुद्धिमान है आप इस निर्लज्ज शहाबुद्दीन के कहने से क्यों आगए। तब तक गोइन्दराय गहलौत बोले कि हे सब सामन्तो सुनो इसमें राजा अनंगपाल का कुछ दोष नहीं है इन सब प्रपचों का स्वार्थी यही शहाबुद्दीन है। इसके सिवाय अन्यान्य सामन्तों ने भी जो जिनके मुँह आया सो कहा; परन्तु इस का न तो शहाबुद्दीन ने न अनगपाल ने ही कुछ उत्तर दिया। तब पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन से बीस हाथी सौ घोडे और दो लक्ष मुद्रा दण्ड लेकर और उसे अपनी तरफ से एक पाग सिरोपाव देकर गजनी को बिदा किया और आप अनगपाल को साथ लिवाकर वह दिल्ली को आया।

जब अनगपाल दिल्ली मे एक साल रह चुके तब उन्होंने एक दिन अपने मंत्री से पूछा कि मित्र तू मुझे ऐसी सलाह दे जिसमें मेरे धर्म कर्म दोनो की पति रहे, तब वह बुद्धिमान मंत्री बोला कि मैं क्या कहू आप तो स्वय सब जानते है हे राजन् अब आपका शरीर जरावस्था के कारण जीर्ण हो गया है, आप अपने जीवन के तीन आश्रमों का सम्पूर्ण भोग कर चुके है अस्तु अब आप को चतुर्थ आश्रम सन्यस्त के अनुसार बन मे जाकर तप करना ही उचित है क्योंकि राजपाट धन धान्य विषय सुखादि जो कुछ है सब यावत् रूप

विद्यमान रहेगा परन्तु अपने शरीर के नाश होने पर अपने लिये कुछ भी नहीं है, जिसके भाग का होगा सो भोगेगा। तदनन्तर अनंगपाल ने रानी का मत पूछा। स्त्रियों का चित तो हमेशा विषयलोलुप होता ही है, अस्तु रानी ने कहा कि आप पृथ्वीराज से पंजाब देश का आधा भूभाग लेकर उसी पर राज्य करते हुए शेष दिन बिताइए; मेरी तो यही सलाह है आगे जो आपके व्यास जी कहें सो कीजिए। रानी के ऐसे बचन सुन कर राजा ने व्यास जी को बुलाया और यही प्रश्न उनसे भी किया। तब व्यास जी बोले हे राजन् आपको अन्तिम समय में यह क्या प्रपंच सूझा है, आपकी राज्यगद्दी पर पृथ्वीराज ऐसा प्रतापी पुरुष राज्य शासन करता है। इससे आपको भी प्रसन्न होना चाहिए। आप राज्य का लोभ छोड कर बदरिकाश्रम में जा ईश्वर का स्मरण करो, जिससे आपका परलोक बने। आप इस वित्त के लोभ की अत्त करके चित्त को दुबिधा में डालकर अन्त में सत्त को न डिगाइए, इसी वित्त के लोभ की अत्त से पुत्त पित्त और मित्त भी शत्रु हो जाते हैं।

व्यास जी के ऐसे बचन अनगपाल ने बे आनाकानी स्वीकार कर लिए और उसी समय पृथ्वीराज के पास कहला भेजा कि मैं बदरिकाश्रम को जाना चाहता हूं तब पृथ्वीराज ने अनंगपाल के पास आकर कहा कि आपको जप, तप, धर्म, कर्म, ध्यानादि जो कुछ करना हो यहीं रहकर करिए, मैं सब तरह आपकी सेवा करने को प्रस्तुत हू। पृथ्वीराज ने बहुत कहा पर अनंगपाल ने एक भी न मानी। तब पृथ्वीराज ने दस लाख मुद्रा सौ दास दासी साथ में देकर उन्हें बदरिकाश्रम को बिदा किया और आप स्वयं हरिद्वार तक पहुंचाने गया।



त्या रहा है, अस्तु उसने भी अपने सिपाहियों और सिपहसालारों को सचेत होने की सूचना दी। पृथ्वीराज के आते आते मुसलमान सेना सन्नद्ध हो रही। उस सेना के वाम पक्ष में मारूफ खां; दाहिने में खुरासान खां, हरावल में तत्तार खां और अनगपाल और पीछे शहाबुद्दीन थे। इधर पृथ्वीराज की सेना सर्पव्यूहाकार थी, जिसके मुख भाग पर कैमास, मध्य में पृथ्वीराज और पूंछ पर चामंड राय था। रणमदोन्मत्त सेना के मध्य में स्थित पृथ्वीराज ने हाथ उठा कर कहा, हे वीरो, आपकी बहादुरी इसीमें है कि अनगपाल मारे न जावें उन्हें जीतेही पकड लेना। इतने में दोनों सेनाओं की देखा देखी हुई और कैमास ने अपने घोड़े की बाग उठाई। पश्चिम दिशा से आए हुए यवन दल बद्दल पर सपूत राजपूत वीर ऐसे टूटे जैसे भेड पर भूखा मृगराज टूटता है। वे नमकहलाल मुसलमान भी अल्लाह अल्लाह का हल्ला करते हुए अस्त्र शस्त्र चलाने लगे; दोनों ओर से ढोल, भेरी, रब्बी, नगारे, शृंगी, शख, सहनाई आदि रणवाद्य बजने लगे। इन रणवाद्यों की भीषण ध्वनि और बीरौटी की तानें सुन सुन कर वीरों के दिल दूने होने लगे। दोनों ओर के सूर सिपाही लोग वीररस मदमाते मतंग की भांति एक दूसरे से भिड रहे थे। उनकी बिकट मारा मार से सोनपुर का मैदान रक्त का सरोवर बन गया, सहस्रों हाथी, घोड़े ऊटों के सर धर टाग पैर कटे पड़े नजर आते थे। इसी समय अवसर पाकर कैमास ने अनगपाल को जा घेरा और बडी मार काट के बाद उसे जीता पकड़ लिया। यह देख कर शहाबुद्दीन को बडी ईर्षा उत्पन्न हुई और वह अपनी अनी को उत्साह देता हुआ आगे बढा तब उसे चामंडराय ने धर दबाया। मुसलमान सैनिक बडी देर लों ठहरे परन्तु अन्त में चामंडराय ने शहाबुद्दीन को पकड कर बाध लिया और अपने घोडे के कधे पर डाल कर पृथ्वीराज के साम्हने ले गया। इस युद्ध में सात हजार मुसलमान और पाच सौ राजपूत काम आए। इस प्रकार युद्ध जीत कर पृथ्वीराज ने मैदान साफ किए जाने की आज्ञा दी। इस युद्ध में जो मुसलमान मारे गए थे उन्हें मिट्टी दिलाई गई और हिन्दू वीरों की यथोचित रीति से दाह क्रिया करवाई गई।

पृथ्वीराज ने अपने शिविर में आकर शहाबुद्दीन को सम्मुख लाए जाने की आज्ञा दी। राजा की आज्ञा पाते ही राज्यमंत्री कैमास ने शहाबुद्दीन को दरबार में लाकर हाजिर किया। उस समय शहाबुद्दीन का भय एवं सकोच के कारण मुख सूख रहा था आखें नीची हो रही थीं और उसकी जबान बात भी न निकलती थी। पृथ्वीराज की आज्ञा पाकर शहाबुद्दीन नीचा सिर किए बैठ गया; तब पृथ्वीराज ने अनगपाल से कहा कि आप तो बुद्धिमान है आप इस निर्लज्ज शहाबुद्दीन के कहने क्यों आगए। तब तक गोइन्दराय गहलौत बोले कि हे सब सामन्तो सुनो इसमें राजा अनंगपाल का कुछ दोष नहीं है इन सब प्रपचों का रचयिता यही शहाबुद्दीन है। इसके सिवाय अन्यान्य सामन्तों ने भी जो जिनके मुंह आया सो कहा; परन्तु उस का न तो शहाबुद्दीन ने न अनगपाल ने ही कुछ उत्तर दिया। तब पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन से बीस हाथी सौ घोड़े और दो लक्ष मुद्रा दण्ड लेकर और उसे अपनी तरफ से एक पाग सिरोपाव देकर गजनी को बिदा किया और आप अनगपाल को साथ लिवाकर वह दिल्ली को आया।

जब अनगपाल दिल्ली मे एक साल रह चुके तब उन्होंने एक दिन अपने मत्री से पूछा कि हे मित्र तू मुझे ऐसी सलाह दे जिसमें मेरे धर्म कर्म दोनो की पति रहे, तब वह बुद्धिमान मंत्री बोला कि मैं क्या कहू आप तो स्वय सब जानते है। हे राजन् अब आपका शरीर जरावस्था के कारण जीर्ण हो गया है, आप अपने जीवन के तीन आश्रमो का सम्पूर्ण भोग कर चुके है अस्तु अब आप को चतुर्थ आश्रम सन्यस्त के अनुसार बन में रह कर तप करना ही उचित है क्योकि राजपाट धन धान्य विषय सुखादि जो कुछ है सब यावत् रूप स

विद्यमान रहेगा परन्तु अपने शरीर के नाश होने पर अपने लिये कुछ भी नहीं है, जिसके भाग का होगा सो भोगेगा। तदनन्तर अनगपाल ने रानी का मन पूछा। स्त्रियों का चित तो हमेशा विषयलोलुप होता ही है, अस्तु रानी ने कहा कि आप पृथ्वीराज से पजाब देश का आधा भूभाग लेकर उसी पर राज्य करते हुए शेष दिन बिताइए; मेरी तो यही सलाह है आगे जो आपके व्यास जी कहें सो कीजिए। रानी के ऐसे बचन सुन कर राजा ने व्यास जी को बुलाया और यही प्रश्न उनसे भी किया। तब व्यास जी बोले हे राजन् आपको अन्तिम समय में यह क्या प्रपच सूझा है, आपकी राज्यगद्दी पर पृथ्वीराज ऐसा प्रतापी पुरुष राज्य शासन करता है। इससे आपको भी प्रसन्न होना चाहिए। आप राज्य का लोभ छोड़ कर बदरिकाश्रम में जा ईश्वर का स्मरण करो, जिससे आपका परलोक बने। आप इस वित्त के लोभ की अत्त करके चित्त को दुबिधा में डालकर अन्त में सत्त को न डिगाइए, इसी वित्त के लोभ की अत्त से पुत्त पित्त और मित्त भी शत्रु हो जाते हैं।

व्यास जी के ऐसे बचन अनगपाल ने बे आनाकानी स्वीकार कर लिए और उसी समय पृथ्वीराज के पास कहला भेजा कि मैं बदरिकाश्रम को जाना चाहता हूं तब पृथ्वीराज ने अनंगपाल के पास आकर कहा कि आपको जप, तप, धर्म, कर्म, ध्यानादि जो कुछ करना हो यहीं रहकर करिए, मैं सब तरह आपकी सेवा करने को प्रस्तुत हूं। पृथ्वीराज ने बहुत कहा पर अनंगपाल ने एक भी न मानी; तब पृथ्वीराज ने दस लाख मुद्रा सौ दास दासी साथ में देकर उन्हें बदरिकाश्रम को बिदा किया और आप स्वयं हरिद्वार तक पहुचाने गया।



घघर नदी का युद्ध।

[उन्तीसवां समय।]

गजनी में शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज के भूत पूर्व्व पेशकार धर्मायन द्वारा समाचार मिला कि पृथ्वीराज सब सामंत और ६० हजार सवारों सहित अहेर के फेर मे फिर रहा है और दिल्ली का राज्य सिंहासन थोडे से सैनिकों सहित केवल कैमास से रक्षित है। शहाबुद्दीन ने यह समाचार पाकर अपना दूत भेज कर जब सब पूरा पूरा भेद मगा लिया तब इस अवसर पर दिल्ली को विजय करने की इच्छा से वह सब सरदारों के बीच पण कर के बोला कि अब तो जब मै पृथ्वीराज पर विजय प्राप्त कर लूगा तभी तसबी (माला) हाथ में लूगा और तब तक के लिये समस्त राजसी व्यसनों का भी त्याग करता हू। यह कह कर खुरासान, रूम, हबस, और बलष आदि देशों के बादशाहों को सहायतार्थ पत्र भेजे जाने की आज्ञा देकर आप अपनी सेना की तय्यारी करने में रत हुआ। तब शहाबुद्दीन यथासंभव शीघ्रही बडी भारी सेना इकट्ठी करके दस दस कोस का पडाव करता हुआ भारत और अफगान की पहाडी सीमा तक आगया। तब दिल्ली के राज्य दूतों ने पृथ्वीराज के पास दौड कर यह खबर दी जिसे सुन कर वह वीर पुगव पृथ्वीराज भी मृगया त्याग चैत्र सुदी ३ रविवार को शाह का रास्ता रोकने के लिये चल दिया और समयानुसार मोरचा बाधकर घोघर (घघर) नदी के तीर पर आडटा। उधर से शहाबुद्दीन भी अपनी सेना को पान व्यूहाकार रचकर चला आता था। उसकी सेना में आगे हथनाल तिस पीछे उँटनाल और तिस के पीछे एक लाख धनुर्धारी और तिस पीछे एक लाख गष्बर और खुरासानी, सात सौ बलखी सरदार निसुरत्त खा के ताबे में और हबशी रूमी इत्यादि सरदारों की कतारें सुशोभित थीं। इस प्रकार साज बाज से चल कर जब वह घनघोर घटा की नाई नदी के उसी तीर पर आडटा तब इधर से पृथ्वीराज ने भी चामुंड राय को हरावल का सेनापति नियत करके अपनी सेना को गरुड़ व्यूहाकार रचा। जिसमें चामुड राय चुंच, पृथ्वीराज पेट, अत्ताताई बंड, गोइन्दराय पर, जैत पँवार पेट और कन्ह चौहान पृष्ठ की रक्षा पर नियत हुए। उधर से शहाबुद्दीन नदी के इस पार आने के लिये बढा और इधर से राजपूत सेना ने उसे रोकने की चेष्टा की। निदान बीच नदी मे दोनों दलों का मुठ भेड़ हो गया। पहिली चोट चामुड राय और तत्तार खा की हुई जिसमें एक हजार मुसलमान मरे और तत्तार खा पीछे हट गया। इस पर उधर से आठ हजार गष्बरों ने धावा किया और उनमे घिर कर जब चामुड घात विक्षत हो कर मूर्छित होने लगा तब वहा पर जैत राव जा पहुचा और उसने ऐसी मार की कि मुसलमानी सेना के पैर उखड़ने लगे तब उधर से खुरासान खां ने बढ़ कर जैतराव का साम्हना किया। इन दोनों में जब जी जान से छिड रहा थी कि इधर से पज्जून राय ने धावा किया और उसके मुकाबिले में उधर से निसुरत्त खा उतर पडा। इस तरफ जबतक उक्त सरदार सरदारों और सैनिक सैनिकों का परस्पर द्वंद युद्ध हो रहा था, कि इधर नरसिंह वीर काका कन्ह चहुआन की पट्टी खोल दी गई। पट्टी के खुलते ही वह सूर्य्य के समान तेजधारी वीर अपनी किरण रूपी तेज तलवार द्वारा एक लाख काले कुलिंजरो में धस कर उन्हे काई सा काटने में प्रवृत्त हुआ। इधर चामुड राय, पज्जून जैतराव इत्यादि सामन्तो ने मुसलमानी हरावल को तोड़ा। उस वक्त इधर अकेले कन्ह ने बादशाह को जा दबाया। जिस कन्ह चहुआन का नाम सुनकर उस समय रसातल के वीर कापते थे, उसके साम्हने भला ठहरे कौन? ऐसा विचार कर बादशाह ने स्वयं भागना चाहा, किन्तु कन्ह ने उसके गले में कमान डाल दी और सहस्रों मुसलमानी सेना के देखते देखते उस शाह शहाबुद्दीन को अनाथ की स्त्री

---

(१) मुसल्मानी एक जाति—शहाबुद्दीन इसी सना के बीच में रक्षित था।

सा बांध लिया। बादशाह के बँधते ही मुसल-मानी सेना प्रबल बयार से पीडित बद्दलों की भांति छिन्न भिन्न होकर भाग उठी। राजपूत सेना ने उसे कुछ दूर खदेड़ कर जो कुछ माल असबाब पाया अपने हाथ किया। इधर कन्ह ने बादशाह को लाकर पृथ्वीराज के साम्हने पेश किया और तब उनकी आज्ञानुसार ही उसे अपने साथ अजमेर मे ले जाकर बड़े आदर भाव से रक्खा।

इधर जब पृथ्वीराज मृगया से संतुष्ट होगया तब उसने दिल्ली में आकर कैमास गोइन्द राय निड्डुर सलष, कन्ह, पज्जून राय, प्रसग राय खीची, हाहुलि राय हम्मीर इत्यादि सामतों की अतरग सभा की जिसमें शहाबुद्दीन के विषय में विचार किए जाने का प्रस्ताव पेश हुआ। इस पर अन्य सब सामन्तों ने यह मत प्रगट किया कि अब की बार इस दुष्ट का वध करना ही उचित है। इस नीच को न लज्जा है, न भय, न क्षमा और शील का व्यवहार सज्जनों के साथ किया जाता है, न कि ऐसे धृष्ट और कुटिल के साथ। राजन्! दुष्ट को दण्ड न देना ही पाप की वृद्धि करना है। यह सुनकर कन्ह ने कहा कि आप लोगों का कहना वास्तव में यथार्थ है किन्तु मेरे कहने से उसे अब की एक बार और छोड़ दीजिए। जो अब भी न मानेगा तो अबकी मैं स्वय उसका सिर अपने ही हाथ से काटूगा। निदान कन्ह की बात राजा ने भी स्वीकार की। फिर सब ने कहा कि एक गजनी को छोड़ कर कन्धार और पश्चिम के अपने सब देश जो अब की दण्ड में दे तो छोड़ा जाय नहीं तो नहीं। इस पर पुनः कन्ह ने कहा कि नहीं अब की बार भारतवर्षान्तर्गत पजाब का ही प्रदेश उसके हाथ से लेकर उसे छोड दिया जाय तो अच्छा है। निदान यह बात भी राजा ने मान ली। तब कन्ह ने अजमेर पहुच कर शहाबुद्दीन से सब हाल कहा। उसने एक मणि कन्ह को नजर की। कन्ह शहाबुद्दीन को साथ ले कर फिर दिल्ली जा पहुचे वहा पर शहाबुद्दीन ने दो घोडे और अपनी तलवार पृथ्वीराज को नजर करके बड़े विनीत भाव से कहा कि मैं अब की बार अपने दीन (इसलाम) की कसम करके कहता हूं कि अब फिर कभी भी आपके विरुद्ध आचरण करने की चेष्टा न करूंगा और अब से मै और आप सदैव मित्र भाव से रहेंगे। उसके ऐसे वचन सुनकर पृथ्वीराज ने दो हजार सवारों की सेना साथ देकर लोहाना आजानबाहु को साथ करके उसे सहर्ष बिदा किया। जब शहाबुद्दीन अटक के किनारे पहुचा तो रयमल जो कि शहाबुद्दीन का जानी दुश्मन था तेंतीस हजार सवार लेकर आ पहुचा। तब लोहाना ने बादशाह को तो ५०० सवारों सहित आगे रवाना कर दिया और आप रयमल का मुकाबिला करके उसे मार गिराया। तब आगे बादशाह से जा मिला। तब तक तातार खा निसुरत्त खा आदि वीर भी गजनी से दो लाख सेना सहित बादशाह से आमिले और बड़े गाजे बाजे से आनन्द मनाते हुए उसे गजनी ले गए। शहाबुद्दीन ने गजनी पहुचकर १० दिन लोहाना को अपना मेहमान रक्खा और चलते समय १०० हाथी १००० घोडे और अपना मणिजटित राज्यमुकुट और ७००००० नगद द्रव्य देकर बिदा उसे किया।

लोहाना ने दिल्ली में आकर वह सब द्रव्य पृथ्वीराज के चरणों में रक्खा और वहां का सब समाचार और राजा प्रजा का व्यवहार कह सुनाया। पृथ्वीराज ने उन घोडे हाथियों में से एक एक घोड़े और एक एक हाथी क्रम से सब सामतों को बाँट दिए और वह उक्त राजमुकुट और सब द्रव्य कविचंद के हवाले करके उसे रावल जी के पास चित्तौर को भेजा। चद ने चित्तौर में जाकर उक्त लड़ाई का सब समाचार कहा और वह सब द्रव्य पृथ्वीराज की ओर से सौगात की तरह रावल जी को नजर किया, जिसे उन्होंने भी प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार किया और कविचद को बहुत सा धन द्रव्य देकर सादर विदा किया॥

———.०———

कर्नाटी पात्र समय ।

[तीसवां समय ।]

कन्नौज राज्य के गुप्त दूता ने जयचन्द के दरबार में समाचार दिया कि दिल्लीपति पृथ्वीराज ने (उक्त) घघर नदी के युद्ध मे शहाबुद्दीन को परास्त करके कर्नाट देश पर चढ़ाई की। उस समय पृथ्वीराज के प्रबल दलबल के आतक से दब कर दक्षिण देशीय सब राजा उससे नम्रता पूर्वक मिले और उन्होंने कर्नाट देशीय एक परम सुदरी वेश्या पृथ्वीराज को समर्पण की जिसे लेकर सवत् ११४१ में पृथ्वीराज दिल्ली को लौट आया और अल्पवयस्का वेश्या को नाट्य और संगीत विषय में शिक्षा देने के निमित्त तद्विषय सम्बन्धी परम विद्वान कल्हण नाम नट को उसे सोंप दिया।

कल्हण की उत्तम शिक्षा के कारण वह कर्नाटी वेश्या थोडे समय में नृत्य गान विद्या में दक्ष होगई उधर उसके अग अग में अनग राज के उमग की प्रतिभा पड़ने लगी। स्वाभाविक हावभाव कटाक्षादि से परिपूर्ण होकर चतुरों का चित्त चुरानेवाली वह विचित्र वामा बन गई। जब यह समाचार पृथ्वीराज के कानों तक पहुचा तब उसका सहज रसलोलुप मन मलिन्द, कर्नाटी के आनन्द मय छबि मकरद को पान करने के लिये उनमत्त सा हो उठा। इसलिये उसने उसी दिन अपने अतरग सभा मडप को नाना प्रकार की सुखकर सामिग्रियों से सजावाया और कविचद रामराय, जद्दव, निड्डुराय, बलभद्र, कूरभराय लोहाना आजानबाहु आदि समवयस्क सामंतों सहित वहा स्वर्ण सिंहासन पर आन बैठा और कल्हण सहित कर्नाटी को बुलाए जाने की उसने आज्ञा दी। जब कल्हण कर्नाटी सहित सभा में आ उपस्थित हुआ, और राजा की आज्ञानुसार साज सम्हाल कर नाटक खेलने को उद्यत हुआ, तब कविचद बोला कि हे नटवर ऐसा नाट्य कौशल दिखलाओ जिसमें सगीत विद्या के परम प्रवीण राजा के पास बैठे हुए बीर निड्डुर राय का भी चित्त प्रसन्न हो। कविचद के ऐसे वचन सुन कर नट बोला कि राजा के पास बैठे हुए ये सुभट कौन हैं? तब कविचद ने उत्तर दिया कि ये बीर निड्डुर राय कन्नौज के महाराज जयचद के भाई है। यह सुन कर नट ने पुन प्रश्न किया कि हे कवि वर अब कृपापूर्वक यह भी बतलाइए कि आपका आना यहा क्यों कर हुआ?

नट की ऐसी बात सुनकर कविचद बोला कि एक समय जयचद, निड्डुर राय और विजय सिंह राजमंत्री महल में एकान्त बैठे हुए थे। यथासमय विजय सिंह ने बदशाह से मित्रता के विषय में बात छेड़ी जिस पर निड्डुर राय ने सर्वथा असम्मति प्रकाश की। उसके दूसरे ही दिन निड्डुर राय ने अपने मित्रवर्ग सहित नगर के बाहर राज्य मंत्री के पुत्र सारग देव के बाग में जलसा रचा यह समाचार पाकर सारगदेव दौड़ता हुआ आया और इनके रग में भग करने लगा, वीर निड्डुर राय ने उससे तो कुछ न कहा परन्तु वे क्रोध भरे जयचद के पास आए और उससे सब हाल निवेदन किया इस पर जयचद ने सारग के ही पक्ष का समर्थन किया। निदान जयचद का यह अविचार और अपमान निड्डुर राय से सहन न हो सका, इस लिये वे उसी समय कन्नौज को त्याग कर दिल्ली चले आए। अतएव यहा महाराज पृथ्वीराज ने आप का यथायोग्य सम्मान करके आपको अपने ही भाई के समान दर्बार मे रक्खा है।

कविचद के निड्डुर राय की कथा कह चुकने पश्चात नट ने मंगलाचरण गान करके राजाओं के लक्षण वर्णन किए और फिर पर्य्यायक्रम से रसमय अभिनय प्रारभ करके महाराज और वहा उपस्थित सब सभासदों का चित्त प्रसन्न कर दिया। राजा ने स्वय अपने मुख से कर्नाटी के नृत्य गान की प्रशसा करते हुए कहा कि हे नट तुझे इस परिश्रम के लिये क्या पारितोषिक दिया जाय। तब नट नम्र भाव से बोला कि भला मै श्रीमान् से क्या निवेदन करू। निदान राजा ने उन नट को १० मन स्वर्ण प्रदान करके कर्नाटकी को महल में रक्खे जाने की आज्ञा दी। महल में उस कर्नाटी के सहस्रों दास दासी सेवा मे रहते और राजा स्वय रात्रि दिवस उसी के प्रेमालाप और काम कृत केलि क्रीडा में रत रहता॥

पीपा युद्ध।

[एकतीसवां समय।]

एक समय पृथ्वीराज शौचादि नित्य क्रिया से निश्चिन्त हो, स्नान सन्ध्या वंदनादि कर, रत्न जटित सुन्दर आभूषण स्वच्छ वस्त्र, अस्त्र शस्त्रादि धारण कर, मस्तक पर राजमुकुट पहिन सभा में आ विराजे। उधर से राज्य मंत्री कैमास ने आकर अपना आसन ग्रहण किया। थोड़ी देर में चामुंड राय, कन्ह, पुंडीरादि, चंद कवि सहित सब सामंत लोग यथानियमित स्थान पर बैठ कर सभा को सुशोभित करने लगे। सपूर्ण सभासदों के जुट जाने पर यह चर्चा चली कि कन्नौज राज्य के सीमास्थित उज्जैन, धार, देवास आदि नगरों पर चढाई कर के उन्हें विजय किया जाय अथवा नहीं? धीर वीर जैमत्त के ऐसे वचन सुन कर पृथ्वीराज ने कहा कि इस तुच्छ जीवन में एक मात्र कीर्ति ही सार है। मरने के पश्चात यह पचभौतिक शरीर जहां तहां अपने अपने अंशों में विभक्त हो जाता है। जीव से और इस ससार से जो सबन्ध है वह शरीर के ही रहने तक है इस लिये एक मात्र कीर्ति सपादन के हेतु राजा दधीचि ने अपनी अस्थि (हड्डी) भी देवताओं को दे दी और दुर्योधन ने कीर्ति के ही लिये अपने प्राण दिए पर हाथ से प्रण न जाने दिया। अतएव मेरा मत यही है कि जयचद के विरुद्ध सेना सजी जाय। इस प्रकार राजा की प्रतिज्ञा सुन कर सब सामन्तों ने उसे स्वीकार किया। कन्ह, पर्व्वत राय, केहरि कठीर हरसिंह, वीरसिंह, जाम राय जद्दव, नाहरराय, तोंअरराय, जैतराव, निड्डुर राय इत्यादि सामन्तों ने अपने अपने तहत की सब सेना बात की बात में सुसज्जित कर ली। पृथ्वीराज की आज्ञानुसार वह सब चतुरगिणी सेना छ भागों में बांट कर निडडुरराय, कन्ह चहुआन, जैतसिंह प्रमार, जामदेव जद्दव, रामराय रघुवंशी और कैमास की हुकूमत में बांटी गई और पृथ्वीराज आप स्वय सब सेना का मुख्य सेनापति बना। इस प्रकार सब तरह से सेना की पूरी तय्यारी हो चुकने पर सब सामतों ने आग्रहपूर्व्वक गुरुराम प्रोहित से चढ़ाई करने के लिये शुभ मुहूर्त साधन करने की प्रार्थना की। निदान गुरु राम ने भी राजा का रुख पा 'वैशाष शुक्ल ५' का सुदिन निश्चय करके कह सुनाया। पृथ्वीराज और सब सामंत यद्यपि प्रथक प्रथक देहधारी थे किन्तु वास्तव में वे सब सामन्तों का प्रतिबिंब स्वरुप थे या यदि इन सब सामन्तों को किरण मान लें तो पृथ्वीराज को भास्कर स्वरूप मानना ही युक्तियुत होगा। गुरुराम के मुख से रणमुहूर्त का शुभागम सुनते ही वे सब वीर सामत आनन्द में उनमत्त से हो उठे और उनका वह दिन बड़े ही चाव और आनन्द में व्यतीत हुआ।

यात्रा के लिये नियत उपरोक्त तिथि के प्रातःकाल अरुणोदय के समय से ही सब सामत लोग काले काले दीर्घकाय मतवाले हाथियों पर बैठ बैठ कर राजमहल के सम्मुख आ आ कर धुँवाधार बद्दल से जुटने लगे। उनके पीछे पीछे रंग विरगी अनी ऊनी चतुरगिनी सेना भी पावस के बहुरग मेघों के समान आच्छादित होती चली आती थी। हाथियों के दांत बगपांत और चमचमाते हुए उज्वल शस्त्र साक्षात सौदामिनी से भान होते थे। उस समय सब सामत लोग क्रोध, उमग और उत्साह से भरे हुए ऐसे मालूम होते थे जैसे विषैला काल सर्प बामी की ओर शुद्ध रहता है किन्तु उसके बाहर चलता हुआ सदैव वक्रगामी होता है। सब सेना के जुट जाने पर सहकारी सेनाध्यक्ष निड्डुर राय ने सब सेना को यथा वर्ण प्रथक प्रथक श्रेणीबद्ध किया और आप स्वय सब सेना के बीच में खड़ा होकर कहने लगा कि हे भाइयो, यह जो हम तुम इस समय मिले हुए खड़े एक दूसरे को देख रहे हैं, यह सब कुछ भी नहीं है। मरने के पश्चात् यह पचभौतिक शरीर निज निज अंशों से पचतत्वों में और आत्मा आत्मा में लीन हो जायगा। मरने के पश्चात् न कोई कर्म है न उसका भोग है। जैसे तत तंत्

पर जल की बूंद का और बदर की छांह का कोई समय निश्चित नहीं है इसी प्रकार इस भस्मीभूत शरीर की स्थिरता का भी कोई निश्चय नहीं। परन्तु यह बात विषयाशक्त कायर पुरुषों को केवल उसी समय स्मरण आती है जब कि वे अपने किसी आत्मीय जन का दाह करने स्मशान को जाते हैं या स्त्री सभोग के अन्त में अथवा कथापुराणादि को सुनते समय भी उन्हें इसका स्मरण होता है । परन्तु भाइयो, वीरलोगों को इस क्षण भंगुर शरीर की अनित्यता और स्वामिसेवा का गौरव सदैव स्मरण रखना उचित है क्योंकि अन्तिम समय में जैसा ध्यान बँधा रहता है उसीके अनुसार पुनर्जन्म होता है अतएव अब इस समय जीवन की आशा सर्वथा त्याग करके ही युद्ध के लिये सन्नद्ध हो जाओ। निड्डुर राय के ऐसे वचन सुन कर सब सूर वीरों ने अपने प्रधान अस्त्रों से सलामी लेकर जैजैकार ध्वनि करके आकाश को प्रतिध्वनित कर दिया और सेनापति की आज्ञानुसार यथारीति श्रेणीबद्ध हो कर वे प्रस्थान करने लगे।

उधर तो शहाबुद्दीन सदैव इसी टोह में रहता था कि कब समय पाऊं और कब पृथ्वीराज को धर दबाऊं। उसने बड़े बड़े राजनैतिक चुटकलों द्वारा लखों रुपया व्यय करके पृथ्वीराज की तरफ के सैकड़ों मनुष्य इसीलिये अपना रक्खे थे कि वे समय पर केवल सही सही समाचार दिया करें जैसा कि पाठकों को अभी कई बार पढने में आचुका है। निदान इस प्रस्थान की खबर भी शहाबुद्दीन तक पहुच गई और वह अपने विचार से मोरचेबन्दी के उत्तम स्थान छांट कर रास्ते में आ डटा। इधर से राजपूत सेना मुकाम पर मुकाम कूच करती चली जाती थी और दो दो चार चार पड़ाव आगे गुप्त चर भी चलते थे। उन गुप्तचरों ने अपने अधिपति चामुडराय को बादशाह के राह रोकने की खबर दी। तब वह वीर चामुंडराय कुछ थोड़ी सेना लेकर पृथ्वीराज के बिना जाने ही आगे बढ़गया और रातोरात चलकर तत्तारखा की अग्रगामिनी सेना पर उसने छापा जा मारा। इस राजपूत सेना के आक्रमण कर देने पर मुसलमान लोग अपने अपने अ[illegible] त्राने सम्हाल कर साम्हने हो गए। निदान इ[illegible] जब तक चामुंडराय और तत्तारखा की परस्पर हा[illegible] वाही हो रही थी, तबतक पृथ्वीराज सब दल क[illegible] सहित देवास की तरफ आगे बढ़े जाते थे। मनु[illegible] आशा के वशीभूत होकर मनमाना हाथ पैर मरता है पर[illegible] होता वही है जो कुछ होनहारस्वरूप ईश्वरेच्छा हो[illegible] है। निदान आगे जयचद की बड़ी भारी कुमक लि[illegible] हुए शहाबुद्दीन अचल रूप से डँटा हुआ था जब पृथ्वीराज की सेना मुठभेड़ में जा पहुंची त[illegible] उधर से मुसल्मान सेना जो पहिले से ही इसके आ[illegible] मन की प्रतीक्षा कर रही थी अस्त्र शस्त्र सम्हा[illegible] कर तैयार होगई। इधर से पृथ्वीराज ने भी हल्ला बो[illegible] दिया। अपने अपने सेनापति सरदारों की आज्ञा पाते ही दोनों सेना के सूरवीर योद्धागण स्वर्ग [illegible] मग पर पदार्पण करने को उत्सुक होते हुए शत्रुओं के प्रचार प्रचार कर मारने में रत हुए। शहाबुद्दीन के द[illegible] मन्तव्य के अनुसार मुसल्मान योद्धाओं का यही मत था कि जिस तरह बने पृथ्वीराज को पकड़ लेना है और इसीलिये जान हथेली पर रख कर वे युद्ध कर रहे थे। उनकी ऐसी प्रबलता देखकर कन्ह गोइन्दराय.लगरीराय और अत्ताताई क्रोध से अ[illegible] कपाते हुए मतवाले मतंग की भाति यवन सेना [illegible] धँस पडे और उधर के बडे बड़े वीरों को महज ह[illegible] सिवार की नाई नाश करने लगे। इस प्रकार उत्त[illegible] चार वीरों के कोप के कारण जब हासबखा औ[illegible] खुरासानखा दो मुख्य सर्दार धराशायी हो गए त[illegible] मुसल्मानों के पाव उखड़ने लगे। यह देख क[illegible] शहाबुद्दीन ने सभों को बडे उत्कर्ष से ललकारा औ[illegible] आप स्वय उस कठिन मारामार के समय में घोडे की बाग उठाता हुआ वह आगे बढ़ा। तब इधर से पृथ्वीराज ने भी राजपूत वीरों को उत्तेजक वाक्यों से सबोधन करते हुए उस समर क्षेत्र में पण किया कि अब की बार इस म्लेच्छ को पकड कर अवश्य ही इसे इसकी निर्लज्जाता और शठता का पुरस्कार

देना है। पृथ्वीराज के ऐसे वचन सुन कर एक ओर से चालुक्क राय, और दूसरी ओर से जामदेव जद्दव ने आध आध कोस का रुख दे कर शाही सेना को बीचों बीच दबाया और पृथ्वीराज ने शेष सेना को स्वयं मयूरव्यूहाकार रचकर सम्मुख से आक्रमण किया। इस पर शहाबुद्दीन की तरफ से न्याजीखां तथा तत्तारखा ने सेना की बाग सम्हारी। पृथ्वीराज की ओर से पीप (पीपा) पड़िहार हरावल में था अतएव शहाबुद्दीन से ही उसका मुकाबला पडा। दोनों ओर खचा खच होते होते रात्रि होगई सेना नायकों की अनिच्छा होने पर भी सिपाहियों ने लडाई से मुह न मोंडा। तब छ हाजार मसालें जला कर युद्धभूमि में उपस्थित की गई और युद्ध बराबर होता ही रहा। जब आधी रात्रि हो गई तब पीप पड़िहार और कीर्तिसिंह तोंअर ने बादशाह को घेर लिया। जिसके ऊपर दार मदार था जब उसी के प्राण सकट में पडगए तब सिपाही और साधारण सेना नायकों की कौन पूछे। जिधर जिसका जी चाहा सब तीनतेरह हो उठे और पीपा पडिहार ने शहाबुद्दीन को बंदी कर लिया।

इस प्रकार शहाबुद्दीन को बंदी करके पृथ्वीराज ने दिल्ली में आकर पीपा पाड़िहार को बहुतसा धन पारितोषिक में दिया और बादशाह को बिना दण्ड लिए ही मुक्त कर दिया। इस युद्ध में प्रसंगराय खीची पज्जूनराय का पुत्र, वीरभान, जामदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन का भाई हुजाब खां इत्यादि सरदार मारे गए।



करहेरा युद्ध।

(बत्तीसवां समय।)

एक बार पृथ्वीराज केवल ६४ सामन्तों के साथ मालवा देश की भूमि मे शिकार खेलने के लिये पधारे। मालवपति उज्जैन के राजा भीमदेव ने सादर पृथ्वीराज को अपना स्वामी स्वीकार किया और अपनी बेटी इन्द्रावती का पाणिग्रहण भी पृथ्वीराज के साथ कर देने की प्रतिज्ञा की।

जिस समय पृथ्वीराज के डेरे मालवे के जगलों ही में पडे हुए थे, भीमदेव ने अपने कुल प्रोहित के हाथ पचमी मंगलवार को इन्द्रावती का टीका पृथ्वीराज के पास भेज दिया, जिसे पृथ्वीराज ने सादर स्वीकार किया और टीके के पश्चात् विधिवत नेगचार होजाने पर पृथ्वीराज ने उज्जैन से टीका लेकर आए हुए ब्राह्मण को बुलाकर पूछा कि हे विप्र उस कुमारी इन्द्रावती की क्या अवस्था है अथवा और भी जो तुम उसके सौन्दर्य्य और स्वरूप के विषय में जानते हो सो कहो। राजा के ऐसे वचन सुन कर वह ब्राह्मण बोला कि अन्नदाता, मैं किस मुख से उस सुकुमारी कुमारी के रूप गुण की प्रशसा करूं। धर्णीचमा! उसकी शैशव अवस्था का ह्रास और यौवन का दिनप्रति शरद चद के समान प्रकाश हो रहा है। उसके स्याम सचक्कन सटकारे कारे कच मकरन्द की स्यामता को मंद करते है, उसके चन्द्रमा समानतेजोमय उज्वल ललाट में लाल विन्दी ऐसी सुशोभित होती है मानो चन्दमण्डल में मगल विराजमान है। उसके धनुषाकार वक्र भृकुटियों के नीचे सुन्दर सूक्ष्म वरौनी प्रत्यचा स्वरूप है और उनके मध्य में स्यामता सहित स्वच्छ और बडे बडे नेत्र मीन दीन एव खजन इत्यादि को लाजित करने वाले साचात् पंचवाण के वाण से भी प्रखर हैं। उस की नासिका दीपशिखा को, कपोल गुलाब पुष्पों को, ओष्ठ विद्रुम को, दंतपंक्ति कुदकली को मद द्युति करते हुए देखने वालों के मन को सहज मोहित करते है। उसकी उठती हुई गरम गेमराजि सर्प के समान सरकती सी जाती है। और कोमल वक्ष स्थल पर कमल कली के समान युग यौवन अभी उमकते आरहे हैं। हे अन्नदाता, और मैं कहा तक कहूं वह सर्वांग सुन्दरी नवेली नवला मानो कामदेव की स्त्री रतिरानी का प्रतिबिम्ब स्वरूप है।

इस प्रकार टीका चढाकर प्रोहित ने ब्याह की पक्कायत का समाचर उज्जैन में दिया तो वहा क्या राजा क्या प्रजा सबके घर घर आनन्द बधाई होने लगी और राज्यगृह में नित नव मगल गान होते हुए इन्द्रावती के ब्याह की तैय्यारी होने लगी। इधर पृथ्वीराज को समाचर मिला कि गुर्जर नरेश भीम देव चालुक्य ने चित्तौर पर आक्रमण किया है इस बात के सुनते ही पृथ्वीराज ने रस राग छोड रावल जी की सहायता के लिये चित्तौर की तरफ जाने का विचार निश्चय किया, पज्जून राय को अपना खड्ग * बँधा कर उज्जैन की तरफ भेजा और अन्य सब सामन्तों को ले कर वह आप स्वय चित्तौर की तरफ चलदिया। पृथ्वीराज अपने सूर सामन्त और सुसज्जित सेना सहित दिनदून पडाव करता हुआ चित्तौर की तरफ जाने लगा। इस प्रकार चलते हुए जब वह आधी दूर गया होगा कि उधर से रावल जी का प्रधान इधर को आता हुआ मिला। पृथ्वीराज ने पहिले तो उससे रावल जी का कुशल समाचार पूछा और फिर पूछा कि भीमदेव की सेना कहा पर है और रावल जी इस समय सेना सहित क्या उद्योग कर रहे है। पृथ्वीराज के प्रश्नो का उत्तर प्रधान ने सच्चेप मे देकर कहा कि भीमदेव की सेना इस समय चित्रकोट से दस कोस के अन्तर पर है परन्तु शीघ्र ही मुठभेड हुआ चाहता है।

---

* राजपूत राजाओं मे पहिले यह रिवाज थी कि किसी कारण वश बर बरात में स्वय न जा सके तो उस कोई आमात्य उसका खड्ग या कटार लेकर बर के स्थ में ब्याहने जाया करता था। अन्यान्य सब नेग तो वहां पु सपादन करता था केवल भाँवरी उसी कटार के साथ पड थी और इस रीति से हुआ ब्याह उसीका ब्याह मा जाता था जिसकी कि वह कटार होती थी।

और इसी विचार से रावल जी की आज्ञानुसार मैं आपको ही यह समाचार देने के लिये दिल्ली जा रहा था। पृथ्वीराज बोला कि वह वही तो भीमदेव है जिसे मैंने अगनित बार गैल की धूलि चटाई है। मेरे इन्हीं समन्तों के साम्हने उसने कई बार पीठ दिखाई है और अब भी वह अपने किए पर पछतावेगा।

उधर भीमदेव जबतक चित्रकूट गढ़ पर आक्रमण करने को था कि पृथ्वीराज जी भी वहा पहुँच गए। पृथ्वीराज ने उक्त प्रधान को तो रावल जी के पास भेजा और उसने आप स्वय चढ़ीसवारी चालुक्य सेना पर हल्ला बोल दिया। पारधी के समान पृथ्वीराज की सेना से सताए जाने पर वह सर्प रूपी चालुक सेना समूह अपना खड्ग रूपी फन उठा कर इस तरफ बदल पड़ा। तब तक उधर से रावल जी ने भी आक्रमण कर दिया। दोनों तरफ से दो प्रवल सेनाओं से दबाए जाने पर भी वीर भीमदेव जरा न हिचका और जी खोलकर तलवार चलाने लगा। पृथ्वीराज के अधिसेनानायक हुसैनखां * ने अपनी सेना को गजव्यूहाकार रचा जिसमें आप और अत्ताताई दन्त स्थान पर रहे, गोइन्दराज को सुंड और राजा को कुम्भस्थल स्थान पर नियत किया। उसने महनसिंह मोरी और कन्ह को वाम और चित्तौर के सवल सामन्तों को दक्षिण पक्ष पर प्रेरित किया। निदान इस प्रकार व्यूहवध्य दोनों विकट सेनाओं से अकेले भीमदेव ने ५ प्रहर युद्ध किया। इस युद्ध में उसके १००० योधा काम आए।

दूसरे दिवस तीन घडी रात्रि रहते से फिर युद्ध आरम्भ हुआ। इस दिन भीमदेव ने नदी पार करके स्वय रावल की सेना पर आक्रमण किया किन्तु वह मेवाड़ी वीर प्रथमही सचेत था; इसलिये उसने हरावल का छापा सम्हाल कर तिरछा रुख देकर ऐसे जोर से धावा मारा कि चालुक्क सेना के छक्के छूट गए। इधर से पृथ्वीराज के सामन्तों ने भी मार का सिलसिला जारी कर दिया, और जब दिनभर घनघोर युद्ध होते होते भीमदेव के १० बड़े सेनानायक भी मारे जा चुके पर तौभी भीमदेव ने हिम्मत न हारी; तब आधी घडी दिन रहते हुसेनखा ने प्राणों का मोह छोडकर आक्रमण किया और पृथ्वीराज के सूर्य्यरूपी प्रखर प्रताप से हुसेनखा ने चालुक (सोलंकी) सेना को परास्त करके मार भगाया।

भीमदेव तो हार मानकर गुजरात की तरफ चलदिया परन्तु पृथ्वीराज चित्रकूटगढ में न जाकर वरावर अपने शिविर में ही डॅटा रहा। दूसरे दिन, रात्रि को स्वप्न में क्या देखता है कि उसकी कीर्ति दिव्य रूप धारण किए हुए उत्तमोत्तम वस्त्र आभूषणों से सुसज्जित उसके पास आई और बोली कि क्षत्रियों में श्रेष्ठ पृथ्वीराज! मैं तेरी दिगदिगन्तर व्यापिनी उज्ज्वल कीर्तिदेवी हू और तुझपर प्रसन्न होकर तुझे दर्शन देने आई हूं। इतना कहकर कीर्ति देवी तो अन्तर्ध्यान होगई किन्तु राजा की निद्रा उसी समय भंग हो गई। तब राजा ने गुरुराम को बुलाकर उक्त कीर्ति के दर्शन का वृत्तान्त कह कर उसका कारण पूछा? गुरुराम ने कहा कि हे राजन् यह स्वप्न भोलाराय भीमदेव के पराजय का स्वरूप था। इसके पश्चात् पृथ्वीराज पुनः निद्रादेवी की सुखमय गोद मे शीश रखकर सोने लगा। रात्रि के पिछले पहर में जब कि पृथ्वीराज के शिविर में सिवाय पहरेदार सिपाहियों के और कोई भी न जागता था भोलाराय भीमदेव ने ५००० शूरवीरों सहित पृथ्वीराज के निज शिविर पर सहसा आक्रमण कर दिया। इस अकस्मात घटना से सब सेना में कूह मच उठी जो जहा सोते जागते नंगे उघारे पडे थे जिसे जो हथियार मिला लेकर दौड पडे और भीमदेव के आक्रमण को रोकने में तत्पर हुए। इस रात्रि की लड़ाई में पृथ्वीराज की तरफ के रूपधन प्रमार (जैतप्रमार का छोटा भाई) किल्ह और सिंध नामक उसका हजूरी, वीर वागरी, जैसिंह, मोरी रक्खीसिंह, खेजवान इत्यादि नामी नामी सर्दार काम आए। दोनों

* नवम समय में वर्णन किए हुए शहाबुद्दीन के भाई चित्ररेखा के प्रेमपात्र मीरहुसैन का पुत्र 'हुसैनखा।' दसवां समय देखो।

सेना के १५०० वीर सिपाही खेत रहे। भीमदेव का नामी सेनापति मेरपहाड इस युद्ध में काम आया। यह रात्रि का युद्ध कृष्ण १० को हुआ था। चन्द्रमा निकलते निकलते उस दिन का युद्ध बन्द होगया।

दूसरे दिन प्रात काल से पुन: लोहा झडना आरम्भ हुआ। उधर से चालुक्य इधर से पृथ्वीराज दोनों ओर के शूर वीर दिल तोडकर एक दूसरे को प्रचार प्रचार कर मारने लगे। दो घड़ी में समस्त रण भूमि रक्त से परिपूर्ण होगई। जहा तहा पडे हुए मनुष्य और पशुओं के शव उस रक्त सागर में जल जन्तु से तैरते भान होते थ। कहीं कहीं मासाहारी पशु रक्त मास पान करने में मस्त थे। कहीं जम्बुक गृद्धादि एक एक लोथडे पर लड़ कर मरे जाते थे। उस समय वीर लोग आनन्द के मारे फूले नहीं समाते, परतु कायर और क्लीव जहा तहा भागे जाते थे। निदान इस प्रकार लगातार युद्ध होते हुए दो प्रहर दिन व्यतीत होगया और भीमदेव की तरफ ५००० सपूत सैनिक खेत रहे। तब भीमदेव भाग उठा। कुछ सेना तो पहिलेही खप चुकी थी। शेष इस भाग भगोड में पृथ्वीराज के क्रुद्ध योधाओं की शिकार बनी तात्पर्य यह कि गुजरात तक भीमदेव के ३०००० सिपाहियों में से तीस भी साथ न पहुचे।

इस प्रकार भीमदेव को भगाकर पृथ्वीराज ने रणक्षेत्र में से अपने सैनिकों की लाशें उठवाई और उनका यथाविधि मृतक संस्कार करवाया। तब वह विजय के बाजे बजाता मेघस्पर्शी रग विरगे निशान उडाता दिल्ली को आया।

आगे अब पृथ्वीराज के साथ इन्द्रावती के विवाह की कथा वर्णन की जायगी।



इन्द्रावती व्याह ।

(तेंतीसवाँ समय ।)

पृथ्वीराज के भेजे हुए कविचन्द, चन्दपुंडीर, जैतराव आदिक सामत जब उज्जैन पहुँचे और भीमदेव से मिलकर उन्होंने पृथ्वीराज के चित्रकूट को चले जाने का समाचार-कहा और अपने आने का अभिप्राय भी वर्णन किया तब भीमदेव बहुत बिगडा और बोला कि हे चन्दबरदाई, समान वस्तुओं का ही परस्पर मेल, सम्बन्ध व व्यवहार होता है। जो पुरुष ऐसा निष्ठुरहृदय है कि ठीक विवाह का अवसर छोड़ अन्यत्र युद्ध के लिये चला गया और उसने तुम लोगों को मेरे पास भेजा ऐसे पुरुष को मैं अपनी कन्या कदापि न व्याहूंगा। यह सुनकर कविचन्द बोला कि पृथ्वीराज यदि गाढे समय पर सगे की सहायता करने को कटिबद्ध हुआ तो क्या बुरा किया! आपके सम्मान और मर्य्यादा के विचार से इन्होंने हम लोगों को तो आपके पास भेज दिया है। तब भीमदेव ने यह पण किया कि जो पृथ्वीराज ५ दिन में न आवेगा तो फिर मैं व्याह न करूंगा, चाहे जो हो।

यह समाचार जब इन्द्रावती के कान तक पहुँचा कि भीमदेव पाच दिन की अवधि टर जाने पश्चात् उस का विवाह फिर पृथ्वीराज के साथ न करेगा तब उसने भी पण किया कि यदि मेरा विवाह होगा तो शहाबुद्दीन को बार बार बंधन और मोच करनेवाले पृथ्वीराज से ही होगा अथवा मैं प्राण परित्याग करूंगी। इसी प्रकार इन्द्रावती नाना प्रकार के सकल्प विकल्प करती हुई शोक से अधीर हो उठी। यह देखकर उसकी सखिया उसे सान्त्वना देने के लिये बोलीं कि उस दानव कुल मे उत्पन्न पृथ्वीराज के लिये इतना मोह क्यों करती हो। तुम्हारे पिता उससे कहीं सर्वोत्तम रूप गुण सम्पन्न वर ढूंढेंगे और भला कहो तो मृगमद की गन्ध से सुवासित शरीरवालों यदि चन्दन की चाह और चर्चा करे तो हेट सका तक बुद्धिमान समझा जाय। उनकी ऐसी बातें सुनकर इन्द्रावती बोली कि हम राजकुल उत्पन्न राजकुमारी हैं हमारे दृढ विचार कल्पनामात्र असगत और क्षणिक नहीं होते।

अवधि बीत जाने पर भी जब पृथ्वीराज की ओर से कोई सदेसा भी न आया तब भीमदेव ने सामन्तों से कहला भेजा कि तुमलोग यहा क्यों पड़े हुए हो, क्या मेरा बल प्रताप तुम्हें नही मालूम है। इसके उत्तर में कविचन्द ने अपने साथियों सहित स्वय भीमदेव के दरबार में जाकर कहा कि श्रीमान्. समय को देखकर कार्य्य करना चाहिए, शास्त्रों में समयानुसार कार्य्य करनेवाले को ही बुद्धिमान कहा गया है। तब भीमदेव पज्जूनराय की तरफ इशारा करके बोला कि तुमने बादशाह को पकड लिया बस इसी धुन में फूले नहीं समाते हो और दूसरे को क्षत्री ही नहीं गिनते। तब तो जैतराव से न रहागया और वह क्रोध से रक्त नेत्र करके ओष्ठ फडकाता हुआ बोला कि भीमदेव यह क्या कह रहे हो, सम्हल कर बात करो। इस पर भीमदेव ने शान्त स्वभाव से गुरुराम से कहा कि थोडे से स्वार्थ के लिये परस्पर व्यर्थ विग्रह करना भला कौनसी बुद्धिमत्ता है। तब गुरुराम बोले कि सुग्रीव और रामचन्द्रजी की मित्रता, बलि और रावण का बध इत्यादि ऐतिहासिक घटनाओं का कारण एक मात्र स्त्री ही है। यह सुन कर भीमदेव चिढकर बोला कि तुम तो निरे ब्राह्मण ही हो, आशीर्वाद देना और पुस्तक पढना जानते हो। इन राजनैतिक विषयों को क्या जानो। तब कविचन्द बोला कि हे राजन् कंस और शिशुपाल का वध, रुक्मकेश का बन्धन एक मात्र रुक्मिणी के कारण हुआ। यह क्या ससार में कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है जो प्राणप्यारी प्रिया के प्रेम के लिये प्राण का परित्याग करने में पीछे पडे। निदान भीमदेव ने बात बढती देखकर उन्हें तो युक्तिपूर्व्वक विदा किया और मत्री को बुलाकर पूछा कि अब क्या करना चाहिए? अस्तु मत्री ने भी यही वचन कहा कि इस व्याह का कर देना ही कल्याणकर है; परन्तु भीमदेव के मन में यह बात न आई।

इधर सामन्त लोग विचारने लगे कि यदि हमलोग परस्पर विग्रह न करके चले भी जाय, तौभी पृथ्वीराज कब मानने वाले है। निदान रघुवंस राम ने कहा कि एक दिन ऐसे भी मरना वैसे भी मरना, फिर ऐसा सुअवसर कठिनता मे मिलता है इसलिये और सब सोच विचार छोडकर इस समय बल से ही कार्य्य लेना ठीक है। यह सलाह पक्की होजाने पर प्रातःकाल होतेही सामन्तों ने उज्जैनगढ के द्वार द्वार पर मोरचेबन्दी कर ली। क्षणमात्र में सारे उज्जैन नगर में कूह मच गई। जब यह समाचार भीमदेव तक पहुँचा तो वह भी अपनी चतुरंगिनी सेना सजकर आ पहुचा। निदान इधर से रघुवंश राम तो नाकेबंदी की देख भाल पर रहा, पज्जूनराय ने उज्जैन के हरावल पर हमला किया और जैतराव स्वय भीमदेव से युद्ध करने लगा। दोनों ओर से खूब लोहा भडा परन्तु सायकाल तक किसी की हार जीत न हुई; इसलिये दूसरे दिन फिर लडाई ठनी और दोपहर तक बराबर खचाखच तलवार चलती रही दोपहर तक लडते लड़ते सामन्तों ने भीमदेव को घेरकर बेदाग पकड लिया और युद्धाग्नि शान्त हुई। निदान कविचन्द ने भीमदेव को बहुत कुछ समझा बुझाकर इन्द्रावती का व्याह पृथ्वीराज से करदेना स्वीकार कराके उसे छोड दिया।

तब तो भीमदेव की भी आँखें खुल गई। उसने पिछली सब बातें भुला कर सैन सहित सामतों का आतिथ्य स्वीकार किया और चहुआन के घायलों को भी बड़े आदर से रख कर उनकी दवा दारू का प्रबन्ध करा दिया।

इधर उज्जैन नगर में घर घर इन्द्रावती के विवाह का उत्सव होने लगा, उधर सामन्तों ने इस बात की सूचना देने के लिये पृथ्वीराज को पत्र लिख भेजा। विवाह की तिथि आ जाने पर सोलहो शृंगार बारहो आभूषणों से सुसज्जित सुन्दरी इन्द्रावती सखियों सहित शुभ स्थान सूचक नव पल्लवाच्छादित विवाह मडप मे लाई गई। वेदपाठी ब्राह्मणो ने वेद मन्त्रो का उच्चारण करते हुए पृथ्वीराज के खड्ग के साथ इन्द्रावती का गठबन्धन कर दिया। और उसी खड्ग के साथ विधिवत भावरी पडी। भीमदेव ने भावरी के समय १०० हाथी, एक हजार घोड़े, सौ पीनसें और बहुत से दास दासी दान किए।

इस प्रकार विवाह के नेगचार समाप्त हो जाने पर जब इन्द्रावती दिल्ली को विदा होने लगी तब उसकी माता ने कहा कि हे पुत्री, स्त्रियो का मु[illegible] धर्म पति की सेवा करना ही है, उसकी इच्छा [illegible] आज्ञा के विरुद्ध कोई भी कार्य न करे। स्त्री का [illegible] के जीवन मे जीवन, पति की मृत्यु मे मृत्यु होती [illegible]

इस प्रकार सब सामत लोग पृथ्वीराज [illegible] न होते भी उज्जैनपति भीमदेव को युद्ध में पर[illegible] करके और इन्द्रावती को विवाह कर गाजे बाजे [illegible] विजय के निशान उडाते दिल्ली की तरफ चले [illegible] जब दिल्ली से आठ कोस इधर रह गए तब उ[illegible] अपने आने का समाचार भेजा। निदान उधर से लोह[illegible] ने आकर अगवानी की और तब सबने सा[illegible] नगर में प्रवेश किया। शुभ लग्न आने [illegible] दुलहिन ने भी राजमहल में प्रवेश किया। राजम[illegible] का दक्षिण भाग इन्द्रावती के रहने के लिये दिया [illegible] और १०० दासिया उसकी सेवा में नियत की गई[illegible]

सुहाग रात्रि की रात को, इन्द्रावती [illegible] निवासस्थान भीमदेव के दिए हुए नाना प्रकार [illegible] नवीन नवीन साज बाजो से सुसज्जित करके सजा[illegible] गया। जहा तहा मृगमद, अगर, अरगजा, केसर, कुङ्कु[illegible] आदि के गंध से समस्त महल महक रहा था। [illegible] आनन्द आगार में स्वर्ण सिंहासन पर बैठा हु[illegible] पृथ्वीराज इन्द्रावती की प्रतीक्षा कर रहा था। [illegible] तक सहेलियों में मिली हुई इन्द्रावती भी आगई औ[illegible] कामातुर पृथ्वीराज ने अधीर हो कर उसे तुरत ह[illegible] अपने हिए का हार बना लिया। यह चरित्र देख कर आड में से देखती हुई अन्यान्य रानिया हँस पडीं और किलक कर तालिया देने लगीं। निदान उस रात्रि को उस सुहाग स्थान मे शृंगार, हास्य, करुणा, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स और अद्भुत शान्ति नवो रसो ने वारी वारी प्रवेश किया।

जैतराव युद्ध ।

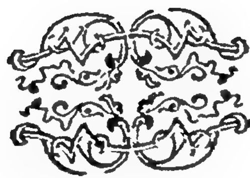
[चौतीसवां समय।]

इन्द्रावती को व्याहने पश्चात, पृथ्वीराज ढाई वर्ष पर्य्यन्त निश्चित भाव से दिल्ली की राजश्री का भोग और राज्य का निरीक्षण परीक्षण करता रहा। उसके अनन्तर एक दिन पृथ्वीराज ने आज्ञा दी कि शिकारी सामान तय्यार किया जाय और षट्टू बन में भी सब प्रकार बन्दोवस्त मुनासिब होजाय। इधर जबतक यह सब तय्यारियाँ होने लगीं तब तक नीतराव कुतवाल ने उक्त समाचार की सूचना शहाबुद्दीन के पास भेज दी। जब यहां सब साज समाज तैय्यार होगया तब पृथ्वीराज ७ चीते, १२०कुत्ते, ४२ श्रीघोस, १०० मृग और और भी नाना प्रकार के शिकारी जानवरों और कुही जुर्रा बाज इत्यादि बहुतसी शिकारी चिड़ियों को लिवाकर सब सामन्तों सहित षट्टूबन की तरफ चला। षट्टू बन में जाकर पृथ्वीराज ने डेरा डाला ही था कि शहाबुद्दीन का भेजा हुआ दूत राजा के शिविर के द्वार पर आ उपस्थित हुआ। पृथ्वीराज की आज्ञानुसार उस दूत ने राजसभा में जाकर शहाबुद्दीन का दिया हुआ एक पत्र पेश किया और कहा कि शहाबुद्दीन ने कहा है कि समस्त पंजाब देश और हमारा अपराधी हुसेनखां हमको दे दिया जाय अन्यथा अच्छा न होगा। अतएव तदनुसार मैं भी अर्ज करता हूं कि शहाबुद्दीन का कहना मानकर आप उससे मेल करलें, इसीमें भला है, क्योंकि समय की गति कोई जानता नहीं, आगे पीछे न जाने क्या हो। उस दूत के ऐसे वचन सुनकर पृथ्वीराज का क्रोध से मुख लाल होगया। वह बोला कि रे मूर्ख वसीठ! रे शठ!! तू नहीं जानता कि अबतक कौन जीता और कौन हारा। क्या इस पर भी हम शहाबुद्दीन ऐसे अधम मनुष्य से डरें। वह तो मनुष्यही है। एक बार साक्षात् यम भी क्यों न साम्हने आजाय किन्तु हम (क्षत्री लोग) राज्यसुख की लालसा से कर्तव्य का त्याग न करेंगे। भला तू विचार भी तो कर कि कहा गजनी और कहा दिल्ली और मैंने कितनी बार उसे कैद कर कर के सहजही जाने दिया। निदान इसका कुछ भी उत्तर न देकर वह दूत चुपके चला गया और यथातथ्य समाचार शहाबुद्दीन के सम्मुख उसने कह सुनाया।

दूत का कहा हुआ समाचार सुनकर, शहाबुद्दीन ने क्रुद्ध हो युद्ध के लिये तय्यारी बोल दी और असङ्ख्य यवन दल सहित वह दिल्ली की तरफ़ आने लगा। जब शहाबुद्दीन सिन्ध नदी तक आगया और यह समाचार पृथ्वीराज को मिला तो उसने भी इधर से अपनी राजपूत सेना तय्यार कर के शहाबुद्दीन से आगे चलकर मिलने के लिये कूच किया। मुसल्मानों से युद्ध करने के लिये जाते हुए राजपूत उत्साह के मारे फूले अंग न समाते थे। साथही उसके जो कहीं कोई कपूत कायर थे उनके सहजही प्राण सूखे जाते थे। इसी प्रकार उधर से मुसल्मान सेना भी ढाई वर्ष का अवकाश पाकर फिर से निर्लज्ज कदलीवृक्ष की तरह लहलहा उठी थी, तिस पर शहाबुद्दीन दिनप्रति पड़ाव से कूच करते समय नाना प्रकार की उत्कर्षजनक वक्तृताएं देता हुआ सिपाहियों को उत्साहित किया करता था। उसे बात बात में पृथ्वीराज को पकड़ लेने की ही धुन सवार थी। निदान जब दोनों सेनाएँ एक दूसरे के साम्हने आगईं तब शहाबुद्दीन की तरफ़ से जमशेदखां और नवरोजखां सेनानायक बनाए गए। इधर से जैतराव प्रमार सेनानायक हुआ। जैतराव की आज्ञानु सार राजपूत सेना भी सन्नद्ध होकर श्रेणिबद्ध खड़ी हो गई। धौंसे की धुंकार तुरही की पुकार से दिशाएँ गूंज उठीं। उस समय युद्ध के लिये उपस्थित दोनों सेनाओं में बजते हुए रणवाद्यों को सुनकर कपूत कायरों के कलेजे कॉपते थे। घोड़े, हाथी, ऊंट जहां तहां तड़फड़ाते हुए आगे बढ़ने को उत्साह दिखाते थे। निदान सेनानायकों की आज्ञा पाते ही दोनों सेनाएँ शौर्य्य के वेग से भरी हुई यह इधर से और वह उधर से एक दूसरे पर टूट पड़ीं। झनाझन तलवार झड़ी, रुधिर की धारा चलने और लोथ पर लोथ पड़ने लगी। इस प्रकार घोर घमासान युद्ध

होते होते तीसरे पहर पर शहाबुद्दीन ने " साम्हने का दबाव देकर " बाई तरफ से स्वयं पृथ्वीराज पर आक्रमण किया । परन्तु पृथ्वीराज की तेज तलवार के साम्हने डॅटने की हिम्मत न पड़ी और अन्त को आँख मीच कर उसे स्वय हटना पड़ा । युद्ध होते होते सायंकाल होगया परन्तु हार जीत किसी की न हुई । शहाबुद्दीन की तरफ के मारुफ खां और उरुगान खां लोहाना आजान बाहु के हाथ से और पृथ्वीराज की तरफ के वरसिंह और सांखलासूर दो नामी सर्दार पचत्व को प्राप्त हुए ।

युद्ध श्रम से श्रान्त दोनों सेनाओं ने रात्रिभर विश्राम करने पश्चात् दूसरे दिन सवेरे से फिर कमरें कसीं और अरुणोदय होते दोनों दल रणक्षेत्र में जा जमे । बाल सूर्य्य की कोमल किरणों की प्रभा से विद्युत समान चमचमाते हुए अस्त्र शस्त्रों को चमकाते हुए नेग्रक दूसरे को मारने लगे । जिस रणक्षेत्र में रा
भर गीदड़ गीध आदि पशुओं ने खमच मचा रक्
था उसी भूमि में फिर से ताजे रक्त के फौआरे छूट
तथा मनुष्य और हाथी घोड़ों की खोपड़ियों के फू
ने का शब्द होने लगा । अन्त में चहुआन सेना ने
जोर पकड़ा कि मुसल्मानों की हिम्मत हारने ल
ऐसेही समय में अवसर देख कर जैतराव ने श
दीन को जाकर घेर लिया और स्वयं अपनी त
के वार से शहाबुद्दीन के हाथी का जबरदस्त तग क
दिया । तग के कटते ही हाथी तो भाग उठा और
शहाबुद्दीन हौदे सहित भहराकर पृथ्वी पर आ गिरा
बस फिर क्या था । जैतराव ने स्वय मुस्कराते हु
जाकर शहाबुद्दीन का हाथ थाम लिया और कैदी की
भांति लाकर उसे पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत किया



कांगुरा युद्ध प्रस्ताव ।

(पैंतीसवां समय ।)

एक समय जालधरी रानी ने पृथ्वीराज से कहा कि आपने कागडे के भोटी राजा को परास्त करके वह किला मेरे लिये खाली करा देने के लिय कहा था सा कृपा कर अब वह बचन पूरा कीजिए। इसके दूसरे ही दिन इधर तो फौजी तय्यारी होने लगी उधर कागुरे को एक दूत यह कह कर भेजा गया कि भोटी राजा भान या तो शरण में आकर सेवा स्वीकार करें अथवा युद्ध के लिये सन्नद्ध हो जाय।

पृथ्वीराज के भेजे हुए दूत को भोटी राजा भान ने यह कह कर उलटा फेर दिया कि मुझे उससे युद्ध करने में कोई भय नही है। जब उसकी इच्छा हो चला आवे। पृथ्वीराज दूत के ऐसे वचन सुन कर मारे क्रोध के लाल हो उठा। उसने उसी समय कागुरा गढ पर आक्रमण करने के लिये कूच कर दिया। उधर भान देव पहिले ही से रास्ता रोके हुए पडा हुआ था। इस लिये रास्ते ही मे दोनो सेनाओं का साम्हना हो गया, जिसमें पाच पहर पर्यन्त घोर युद्ध होने के पश्चात् भीमदेव को परास्त हो कर भागना पडा। हारी हुई सेना सहित आगे आगे भोटी राजा भागता जाता था और पीछे पीछे पृथ्वीराज की सेना बढ़ती जाती थी। भीमराय भोटी पहाडी जगलों मे हिलबिलान हो कर कागुरे के सुरक्षित किले में जा छिपा। परन्तु पृथ्वीराज ने अपनी सेना का पडाव जगलो के बाहर ही रक्खा। इस स्थान पर एक चोट और हुई जिसमें दिन भर काट मार होती रही किन्तु परिणाम फिर भी वही हुआ।

कागुरे के दुर्ग में जाकर भोटी राज ने नाना प्रकार से देवी की पूजा करके पृथ्वीराज के साथ जय पाने का वरदान चाहा किन्तु देवी ने यही उत्तर दिया कि मै तेरी रक्षा करूं गी परन्तु होन हार को सर्वथा मेटना मेरी शक्ति के बाहर है। उसी रात्रि को भोटी राज ने स्वप्न मे देखा कि पृथ्वीराज ने एक बडी भारी सेना सहित उसको घेर लिया है। इस स्वप्न से घबडा कर उसने अपने मत्री कन्ह को बुलाकर उसे स्वप्न का हाल सुना कर कहा कि इस स्वप्न से मेरा चित्त तो अत्यन्त व्याकुल हो रहा है इस लिये अब तुम जो कुछ उचित जानो सो करो। इस पर भोटी राज के मन्त्री कन्ह ने बडी बीरता से उत्तर दिया कि मेरे रहते आप कोई चिन्ता न करें। इस प्रकार कह कर कन्ह गढ की रक्षा का उचित प्रबन्ध करने लगा।

इधर पृथ्वीराज के सब सामन्तों ने परस्पर मिल कर यह मंत्र निश्चय किया कि आधी सेना सहित पृथ्वीराज तो उसी स्थान पर खेमाजन रहें और रघुवसराय प्रमार और हाहुलीराय हमीर जो कि पहाडी युद्ध विद्या में विशारद हैं आधी सेना सहित गढ कागुरे पर पर अक्रमण करें। इस प्रकार मन्तव्य निश्चय हो जाने पर हाहुलीराय हम्मीर केवल पैदल सेना लेकर दुर्गम पहाडी मार्ग पर से हो कर कागुरे दुर्ग की तरफ़ बढने लगा। जिस समय हाहुलीराय हम्मीर किले पर आक्रमण करने को था उसी समय * हुसेन खा कुछ घुडचढी सेना लेकर सहायता के लिये जा पहुचा। रास्ता साफ़ हो ही चुका था इस लिये नारेन और नीतिराव कुटवार दो वीर और भी कुछ घुडसवारों सहित जा पहुचे। इस तरह धीरे धीरे पृथ्वीराज की एक बडी भारी सेना एकत्रित हो गई। तब पैदल सेना की बाग रामरेन प्रमार ने अपने हाथ मे ली और दो तरफ से किले पर इस प्रकार रणचातुर्य्य से आक्रमण किया कि गढ रक्षक सैनिक इनकी वार को जरा भी न सह सके जो जहा थे सब तीन तेरह होकर भाग निकले और किले के ऊपर रामरेन ने पृथ्वीराज के नाम का निशान रोप दिया।

इस प्रकार गढ पर विजय प्राप्त करके सब सामन्तों के मतानुसार कुछ फौज सहित रामरेन

* मीर हुसेन का लड़का।

प्रमार गढ रक्षा पर रहा बाकी कुछ लोग पृथ्वीराज के पास विजय की बधाई का समाचार देने आए। इसी समय भोटी राज भीम ने भी अपना एक दूत पृथ्वीराज के पास भेजकर कहला भेजा कि अब मै सब प्रकार से श्रीमान् की सेवा करने को तैय्यार हूं साथ ही इसके मेरी इतनी इच्छा है कि आप मेरी पुत्री का पाणिग्रहण स्वीकार कीजिए। भोटी राज का ऐसा सदेसा पाकर पृथ्वीराज शीघ्र ही अपनी सब सेना सहित कागुरे गढ में जा पहुंचे। और भोटी राज की कन्या के साथ व्याह करके नव दुलहिन सहित विजय के बाजे बजाते हुए दिल्ली को चले आए।



हंसावती नाम प्रस्ताव ।

[छत्तीसवां समय ।]

एक तो स्वदेशी शत्रु कन्नोजराज जैचन्द ही सदैव पृथ्वीराज को ग्रास करने की चिन्ता और चेष्टा में दत्तचित्त रहता था, दूसरे विदेशी शत्रु शहाबुद्दीन के अनायास आक्रमण की आशङ्का भी रहा करती थी। इस लिये पृथ्वीराज ने दिल्ली से कूच कर के शिकार के बहाने षट्टूपुर के जंगल में डेरा जा डाला।

उस समय रणथंभ के किले में यादववंशी राजा भान और चन्देरी में शिशुपालवंशी राजा पञ्चाइन राज्य करते थे। राजा भान की हंसावती नाम एक बेटी थी जोकि उस समय पृथ्वीतल पर अद्वितीय सुन्दरी और स्त्रियोचित सब गुणों से सम्पन्न साक्षात् रतिरानी का अवतार मानने योग्य थी। उस सुकुमारी कुमारी की नागिन के समान वेणी, विद्युतप्रभावत् दन्तद्युति, पंकज पाखुरी के समान नेत्र, अष्टमी के अर्द्धचन्द्र के समान उज्वल ललाट, दीपशिखा सी नासिका, एवं रोम राजि, अमृत कुण्ड के समान नाभि स्थल, सिंह की सी क्षीण कमर, कन्दलीखंभ के समान सुढार जंघा, गज के समान चाल, सरसिज समूह के समान सुवासित स्वेद गंध और पूर्ण शशि के समान मुख कान्ति देखने वाले चतुरों के चित्त को सहज बेहाल करती थीं।

चन्देरीपति शिशुपाल वंशी राजा पंचाइन हंसावती के सौन्दर्य की चर्चा सुन कर उस पर जी जान से मोहित हो गया। इस लिये उसने हंसावती के पिता राजा भानराय को एक पत्र लिखकर, दूत के द्वारा कहला भेजा कि हंसावती का व्याह मेरे साथ कर दो और किला भी छोड दो। यह समाचार पाकर भानुराय गुस्से के मारे लाला हो गया। उसने उसी समय अपने सगे सरदारों से सलाह करके दूत को उत्तर दिया कि मेरे तन पिंजर में प्राण पखेरू के रहते चन्देरी पति का ऐसा साहस करना वृथा है। रणथंभ के रणक्षेत्र में मर कर मुझे अलभ्य मोक्ष मार्ग की यात्रा करना स्वीकार है परन्तु चन्देरीपति का प्रस्ताव स्वीकार नहीं है। यह सुनकर दूत चलता हुआ और उसने ज्यों का त्यों सब हाल अपने स्वामी से कह सुनाया, जिसे सुनते ही वह क्रोध और कामना की ज्वाला से ज्वलित होकर मदान्ध हाथी की तरह अधीर हो उठा। उसने उसी समय अपनी समस्त चतुरंगिणी सेना सजकर हंसावती को बरबस व्याह लेने की इच्छा से रणथंभ की तरफ कूच किया और उधर एक पत्र शहाबुद्दीन की सेना में इस अभिप्राय से भेजा कि रणथंभ के विजय करने में वह भी उसे सहायता दे।

राजा पचाइन ने एक दूत और भी भानराय के पास भेजा जिसने आकर भानुराय से कहा कि संसार में जितने बड़े बड़े सामाजिक विग्रह हुए हैं वे सब स्त्री के ही कारण हुए हैं और आज इसी कारणवश चन्देरीपति आप पर आक्रमण करने आया है। संसार में धर्म कर्म सब कुछ इस जीवन की रक्षा के लिये किया जाता है। सुर नर नाग असुर गन्धर्व आदि सब जीवन रक्षा के लिये यत्न करते हैं। फिर आप क्यों वृथा जरा सी बात के लिये मरने मारने पर उतारू हैं। इस पर राजा भान ने फिर भी वैसा ही कड़ाचूर उत्तर दिया और अपनी सेना में जंगी तय्यारी होने का हुक्म दिया। निदान दूत फिर भी उलटा फिर गया और तीस कोस चल कर राजा पचाइन के पास पहुँच कर उसने सब हाल कह सुनाया। तब तक उधर शहाबुद्दीन के भेजे हुए शाह का धा-भाई उजबक खां, साहब खां तुर्की, नूरी हुजाब, केली खां कुलाह आदि यवन सरदार एक अच्छी रणकुशल सेना लिए हुए पचाइन की सहायता के लिये आपहुचें।

जब यह समाचार भानराय के पास पहुंचा तो उसने इस युक्त सेना को अजेय और प्रबल जान कर स्वयं भी पृथ्वीराज का सहारा लेना चाहा। बस उसने फौरन दिल्ली को एक दूत रवाना कर के लिख भेजा कि पचास हजार सेना के साथ चन्देरीपति ने रणथंभ को धूलिधूसित करने के लिये आक्रमण किया है। अस्तु इस गाढे समय पर मुझे आपही

का आसरा है। यह पत्र पाकर पृथ्वीराज ने फौरन रणथंभ की तरफ कूच कर दिया और इधर काका कन्हँ को रावल जी के पास भेजा। कन्ह ने चित्तौर में जाकर रावल समरसिंह जी से सब हाल कह सुनाया और यथासभव शीघ्रही रणथंभ की रक्षा करने,की प्रार्थना की जिसे रावल जी ने स्वीकार कर लिया और कहा कि तुम चलो हम पृथ्वीराज से पहिले ही वहा आ पहुचते है। यहा से रणथभ ६५ कोस का मार्ग कुछ अधिक नहीं है। इस पर कन्ह ने कहा कि पृथ्वीराज १२ को चल चुके। रणथभपति भानराय पर बडी विपत्ति पडी है। फिर आगे आप जानें? कन्ह के ऐसे वचन सुन कर रावल जी ने सगर्व प्रत्युत्तर दिया कि हे कन्ह हम बप्पावंशी लोगों की जबान नहीं टलती। क्षत्रियों का यही धर्म है कि सग्राम की सूचना पाकर हर्षित होना, शरणागत की रक्षा करना, वेद धर्म से विहित वचन न बोलना, और सुकीर्ति के लिये सर्वस्व आहुति कर देना। निदान यह कह कर कि तेरस के दिन डंका बजेगा कन्ह तो रवाना हुआ, इधर रावल जी ने जगी फौज के सजे जाने की आज्ञा दी। दसमी सोमवार के दिन पाच घडी दिन चढे शुभ मुहूर्त में रावल समरसिंह जी ने रणथभ की तरफ यात्रा की। जिस समय रावल जी की सेना चलती थी तो आकाश में आच्छादित धूलि के मारे सूर्य्य नहीं देख पडता था। लालिमामय कोमल किरणों की आभा से उज्वल अस्त्र शस्त्र चचला से चमचमाते थे। ढोल धौंसा आदि के गभीर गड गड़ शब्द से पावस के बदर की गर्जना का भाव भासित होता था,बीच बीच मे नफेरी, वीणा, सहनाई आदि उच्चस्वर वाद्यों की ध्वनि पावस के पक्षी सी बोलती जान पड़ती थी। जहा तहां रंग विरंगी उत्तग ध्वजाएं फहराती हुई ऐसी जान पड़ती थीं मानों सैनिक ओज उड़ कर आकाश को स्पर्श करने की चेष्टा कर रहा हो। इस प्रकार पावस के समान ओजमान रण कुशल सेना को लिये रावल समरसिंह जी रणथभ जा पहुंचे। वहा किले के बाएँ तरफ तो पृथ्वराज के डेरे पडे थे और दाहिने तरफ रावल समरसिंह जी के शिविर स्थापित हुए।

एक तरफ से रावल समरसिंह जी की सेना व्यूह बद्द हुई दूसरी तरफ से चदेरीपति पचाइन की और दोनों किले के मैदान में एक दूसरे से जुट पडे। दोनों सेनाएँ एक दूसरे पर इस प्रकार से टूटीं जैसे क्षुधित सिंह मृगसमूह पर टूटता है। दोनों सेनाओं के वीर योद्धा अपने अपने प्रतिपक्षियों पर प्रचार प्रचार कर वार करते और मरने से जरा नहीं डरते थे। यदि एक दूसरे पर तलवार का वार करता तो वह उसके कलेजे में सेल पेल देना। कोई किसी के पजर में खंजर खोंसता तो दूसरा उसके पेट को कटार से विदारता। इस प्रकार मारामार होते होते वह साधारण भूमि रक्त से भर गई। जहा तहा रुड फड़फड़ाने और मुड भडभड़ाने नजर आने लगे, बडे बड़े हाथियों के जो शिथिल होकर मृत प्रायः पडे थे घावों से बहते हुए रुधिर के पनारे पावस के पहाडी झरने से भासित होते थे। योगिनी और वीर वेताल रुधिर मास मज्जा को पान कर आनन्द में उन्मत्त हो कर गान करते थे और घायलों के प्यास की चटक से गले घुटे मरते थे।

निदान इसी प्रकार युद्ध होते होते एक तरफ से चन्देरी पति पचाइन और दूसरी तरफ से रुस्तमखा ने रावल जी को बीच मे दे कर घेर लिया तब तक पृथ्वीराज ने अपने निज सामन्तों सहित आकर शत्रु दल को छिन्न भिन्न कर दिया। उधर किले से राजा भान भी आ पहुचा और तब तीनों सेनाओं ने एकत्रित व्यूहबद्ध हो कर युद्ध आरम्भ किया। राजा पृथ्वीराज हरावल में, राजा भान बाएँ और रावल जी दाहिने पक्ष पर थे। पृथ्वीराज को हरावल में देख कर वीर पचाइन और उसके सहकारी यवन सरदारों ने बडे वेग से तेगा चलाते हुए धावा किया। परन्तु इधर से सामन्तों ने भी अच्छे हाथ किए। ये लोग जिस मीर बन्दे की खोपड़ी पर हाथ मारते थे वह मय टोप और जिरहबख्तर खीरे की तरह चिर कर दो हो जाता था, इस युद्ध के अन्त में सोलह सूर वीर

चहुआन के, तेरह रावल समरसिंह जी के और पांच हजार सैनिक चंदेरीपति के खेत रहे।

दूसरे दिन प्रातः काल फिर से जगी निशान उठे। पृथ्वीराज ने अब की बार अपनी सेना को पांच टुकड़ों में विभक्त किया। शत्रु के सम्मुख संग्राम के लिये सुसज्जित सन्नद्ध सामन्त और सैनिक परस्पर कहते थे "भाइयो, 'यह पंचतत्त्वमय शरीर सदैव रहने का नहीं है। एक न एक दिन मृत्यु होनी अवश्य है और मरने पर प्राकृतिक अथ अपने अपने मूल स्वरूप में लीन हो जायगे, केवल कीर्ति ही संसार में स्थिर रहती है। इस लिये इस समय शत्रु के सम्मुख शूरता से मरना ही श्रेयस्कर है और जो हम तुम चार आदमी इस समय इकट्ठे है फिर भी ऐसे जुड़ेंगे, इस बात की कदापि सम्भावना नहीं। प्यारे भाइयो, इस असार संसार सागर से जीवन रुपी घड़े में कर्तव्यरूपी जल भर कर अखम कीर्ति की बेलि को सींच दो, जिसमें अक्षय आनन्द रूपी मोक्ष फल लग कर सदैव के लिये अपने संतोष का कारण हो।

सुसज्जित पंचअनी सेना के बीच रावल समरसिंह जी इस प्रकार सुशोभि होते थे जैसे सत्ताइस नक्षत्रों के बीच चन्द्रमा। अकाश में अरुण देव की आभा का भास होते ही रावल जी ने आज्ञा देकर समस्त सेना को चक्रव्यूहाकार रच कर शत्रु को चारों ओर से घेरा। यह व्यूह इस क्रम से रचा गया था—प्यादों की कतार के बीच बीच एक एक घुड़ सवार, तिसके अग्रभाग में हाथी और बीच में तीरन्दाजों की भरमार थी। शत्रुसेना को चतुर्दिक से घेर कर जब शस्त्रों की वर्षा होने लगी और उसी के बीच बीच में तोमर, तबल, तेगा, तलवार आदि उज्वल शस्त्र भी चमचमा उठे उस समय ऐसी शोभा भासित होती थी मानों पावस ऋतु के तलातल भरे हुए तालाब में सरजिस समूह के ऊपर हंसों के बच्चे नाच रहे हों। सेना नायकों की आज्ञा होते ही सहज स्वभाव क्रोधी सैनिक योद्धा परस्पर भिड़ पड़े। क्षण मात्र मे उनके चन्द्रमा की किरण से उज्वल शस्त्र रिपु रक्त से सराबोर हो कर लाल लाल देख पड़ने लगे। इधर तलवार लगने से सर दूर जा खड़कता रुंड फड़फड़ाता हुआ लोटने लगता, उधर गृद्धादि पक्षी और शृगालादि पशु एक एक मांस के लोथरे के लिये झगड़ कर और ही अभिनय दिखाते थे। इसी समय रावल जी के इशारे से राजा भान ने हरावल की अनी पर जोर देकर साम्हने का बल बाँधा। यह देख कर चन्देरी की फौज एक दम हरावल के मौके पर जुट पड़ी। तब तक राजा पृथ्वीराज ने तिरछे रुख से धावा कर के क्रम बद्ध व्यूह को विडार दिया। समरसिंह जी स्वयं चन्देरी की फौज की मार काट करने लगे। समरसिंह जी के भाई अमरसिंह ने चन्देरीपति राजा पंचाइन का साम्हना किया और उसे एक ही हाथ में मार गिराया बस फिर क्या था, उसी दम सब फौज तीन तेरह हो कर भाग उठी और खेत पृथ्वीराज के हाथ रहा। खेत की देख भाल होने पर मीरहुसैन और नरनाह कन्ह अगनित घाओं के कारण क्षत विक्षत शरीर घायल पड़े पाए गए। निदान इन दोनों वीरों को डोलियों में लिवा कर सब सेना सहित पृथ्वीराज पानीपत को गए।

वहां एक रात पृथ्वीराज ने स्वप्न देखा कि एक गजगामिनी, मृगनयनी, चन्दवदनी स्त्री जिस की शोभा का समूह साक्षात् बाल सूर्य की किरणों सहित प्रस्फुटित कमल बन की शोभा समूह का तिरस्कार करता था, उसके पास आई। पृथ्वीराज ने उस सुन्दरी के यौवन का आनन्द भी लिया। परन्तु ज्योंही नींद खुली त्योंही न तो वह सुन्दरी थी न वह हास विलास। निदान पृथ्वीराज ने उसी समय अपने सच्चे सखा कविचन्द को बुलाकर सब हाल कह सुनाया जिसे सुन कर कविचन्द ने उत्तर दिया कि वह स्त्री आप की भविष्य प्रिय पत्नी हंसावती है। हे राजन् यदि मेरी बात का आपको विश्वास न हो तो सुनिए मैं उस नव यौवना के सौन्दर्य्य का मानचित्र वर्णन करता हूं। यह कह कर कविचन्द बोला कि वह वय.सन्धि सुन्दरी

साक्षात कामदेव की सी कमान है, उसका प्रशस्त ललाट अनंग अगन, भौंह प्रत्यंचा और चक्षु बाण के समान पैने हैं। उसके सब अंग मुढार यथा-स्थान पीन चीण, हंस की सी चाल, गुलाब से गाल और मनोज के मद से भरे हुए उसके मुख मंडल की आभा अरुणोदय के समान लालिमामय है। वह निष्कपट लज्जाशील बाला मधुर मधुर वचन उच्चार कर मानों अमृत के प्याले पिलाती है।

इस प्रकार बातें हो ही रही थीं कि तब तक राजा भान के भेजे हुए प्रोहित के आने का समाचार मिला। निदान प्रोहित भी सभा में बुलाया गया उसने विवाह के लग्न तिथि की सूचना देकर विदा मांगी। तब तक इधर पृथ्वीराज ने शिकार खेलने की इच्छा से बारूबन की तरफ़ कूच किया।

पृथ्वीराज के बारूबन में शिकार खेलने की खबर पाकर भीमदेव के पुत्र सारंग ने अपने मंत्रियों से कहा कि इस समय मुझे अपने पितृवैर लेने का अच्छा मौका हाथ आ गया है। उसने कहा कि बैर का बदला लेने के लिये राम ने रावण पर चढ़ाई की, सुग्रीव ने भाईचारे का विचार न करके बालि का बध करवाया, वैर का बदला लेने के लिये इन्द्र दैत्यों पर चढ़ाई किया करता है इत्यादि और क्षत्रियों का तो यह मुख्य धर्म है कि पिता का वैर लेवें। आज हम पृथ्वीराज रूपी सूर्य्य को समय पाकर राहु के समान ग्रास कर अनुपम कीर्ति लाभ कर सकते हैं। भाइयो! संसार में मनुष्य शरीर पाकर कीर्ति का सपादन करना ही मुख्य कर्तव्य है, कीर्ति के लिये विक्रमादित्य ने देश विदेश पर चढ़ाई की और राजा जगदेव ने अपने हाथों से अपना माथा काट कर देवी को समर्पण किया। अस्तु, इस समय मेरा तो यही विचार है कि या तो पृथ्वीराज को मार कर पिता का बदला लेकर कीर्ति सम्पादन करूं या इसी प्रयत्न में मारा जाऊं। इस पर उसके मंत्रियों ने भी हां में हां मिला दी। निदान उसी समय नागोद के पास मंगलगढ़ का हाड़ा राजा मार्गिने को भांति कपटक वचन प... पक्का किया गया।

इधर तो मंगलगढ़ में सांग रसय ज्योंनार के लिये भोजन इत्यादि का प्रबन्ध करने लगा उधर हाडा सरदार ने पृथ्वीराज के पास जा कर सवि... नय निवेदन किया, "आज आप और रा... जी मेरे घर को पवित्र कीजिए। पृथ्वीराज ने उ... की प्रार्थना स्वीकार कर ली और रावल जी के सहि... वे मंडल गढ़ को चले। ज्योंही नगर के सिवाने पहुं... कि सिंह के गर्जन करने का भयानक अपशकु... हुआ। इससे रावल जी के दिल में एक प्रकार ... खुटका पैदा हो गया। जब सब लोग किले के अ... न्दर हो गए और जहां तहां सब अपने अपने स्था... पर बैठ कर भोजन करने लगे कि धड धड़ चा... तरफ़ से किले के दरवाजे बंद कर दिए गए, औ... प्रत्येक मकान के कोने में जो पांच पांच सिपाह... पहलेही से सन्नद्ध रक्खे गए थे, सारंगदेव का इशा... पाते ही धरो मरो पकड़ो का शब्द करते हुए राव... जी और पृथ्वीराज पर चारों तरफ़ से टूट पड़े। य... अनयास द्वंद देख कर ये दोनों वीर भी अपने क... तिपय साथियों सहित म्यान से तलवारें निकाल क... खड़े हो गए और सघटित शत्रु दल को काई स... काटने लगे। रावल जी और पृथ्वीराज तो जि... किसी पर वार करते वह ककडी सा कट कर दो ह... जाता, परन्तु इनके शरीर पर किसी का भी वार इ... प्रकार कारगर न होता जैसे मिट्टी के चिकने घ... पर जल के कण नहीं ठहरते।

इधर ये लोग उद्दंड स्वरूप से आत्मरक्षा ... प्रवृत्त थे ही उधर यह समाचार किसी तरह किले के... बाहर पड़ी हुई सेना में जा पहुंचा। निदान वहां से... रामाराय बड़गुज्जर ने किले पर आक्रमण किया। इधर... किले वालों ने उन्हें रोकने के लिये बाणों की वर्षा करनी... आरम्भ की, परन्तु वे कर्तव्यनिष्ठ धर्मरत स्वामि... सेवा में प्रवृत्त साहसी सामंत लोग मार काट करते... किले की दीवार तक जुमक आए और दीवार के... पास हाथी लगा कर पहिले पहल रामराय बड़...

गुज्जर किले के भीतर कूदा, तिसके पीछे एक के बाद दूसरे सूरवीर किले मे धस पड़े। किले के भीतर सकीर्ण मैदान मे खूब मार मची। दीवार, द्वार, कहरी, छत सर्वत्र लाल लाल लोहू के छीटे नजर आने लगे। जहा तहा खून के कुड भर गए और रूड मुंडों के ढेर के ढेर अटे गए। इस युद्ध मे पज्जूनराय के पुत्र ने वडा पराक्रम दिखलाया। वह वीर पुरुष सहस्त्रों शत्रुओ को काटता हुआ धज्जी धज्जी हो कर कट मरा। इस युद्ध मे एक राजा, तीन राव, सोलह रावत और पन्द्रह वडे वड़े योद्धा काम आए। चालुक सारगदेव की तरफ के तेरह तुरव योद्धा खेत रहे। अन्त में रामरेन पँवार ने सारग देव को और प्रसगराय खीची ने हम्मीरहाडा को पकड़ लिया। निदान उन्हें पृथ्वीराज ने छुड़ा दिया। इसी धर पकड के समय मीरहुसैन ने सारगदेव की वहिन को घेर लिया, यह देख कर रावल जी ने उसे ललकारा और चालुका सुदरी को अभयदान दिया। इससे सारगदेव के मन में रावल जी क गौरव की वडी ही श्रद्धा हो गई, उसने वह कुमारी रावल जी को विवाह दी और वह भूमि भी रावल जी को देदी। रावल समरसिंह जी ने नवीन सुन्दरी को चौडोल में विठा कर चित्तौर को भेज दिया।

इधर आधी रात को एक दिन पृथ्वीराज के पास खवर पहुची कि रणथभ के किले पर चन्देल राजा ने फिर भी आक्रमण किया है और पश्चिम का मोरचा तोड़ भी लिया है, परन्तु पूर्व के मोरचे ने उमे परास्त किया। गूड राय और सत्रसाल दो वीर काम आए। चन्देल पकडा गया और राजा भान की जीत हुई।

कुछ दिन के वाद रणथभ के राजा का कुलप्रोहित भी आ पहुचा और नारियल, पुष्प. दूव, रोली, अक्षत आदि मागलीक सामग्री सहित पृथ्वीराज को लग्न का टीका चढा कर चलता हुआ। विवाह की लग्न तिथि भी जब निकट आई तब चहुआन पृथ्वीराज ने हसावती को व्याहने के लिये पुन: रणथभ को जाने की तय्यारी की। सर्वाङ्गसुन्दर, कमल नेत्र, वक्रमुच्छ, रमणी मात्र का मन हरण करने वाला, रीति नीति का ज्ञाता, शहावुद्दीन को वार वार पकड़ कर छोड़ देने वाला, पृथ्वीराज जिस समय रणथभ में पहुचा तो वहा नाना प्रकार के गान वाद्य और उत्सव होने लगे। इस अमित आनन्द उल्लास का सुकुमारी हंसावती के हृदय पर कुछ और ही असर पडा। वह अपने अद्वितीय पति की झाकी लेने के लिये झरोखे से झाका करती थी। अपनी निज सखी सहेलियों सहित उत्तग अट्टालिका पर बैठी हुई हंसावती इस प्रकार सुशोभित होती थी जैसे तारों की काति को कुचल कर कलाधर गिरि के शिखर पर विराज रहा हो। उस मनोजमय मन वारी रतिमूर्ति सुन्दरी के सुढार सरोज ऐसे नेत्र स्वाभाविक लज्जाशीलता और सखियों के कटाक्ष से सकुचित होकर सेनो से ताकते हुए साक्षात् चचला के चापल्य को चूर्ण करते थे। हसावती की स्वाभाविक भावमय मद मद मुसकान देख कर ऐसा भासित होता था मानो पूर्णबिंब चद मंडली मे चचला विराजमान हो रही हो। सहजसुन्दर सुन्दरी हसावती की वह अवस्था थी कि जिसे हम पूर्णतया वयःसन्धि भी नहीं कह सकते, क्योंकि उसके अगों में शैशव का आभास केवल उतनाही था जितना कि अस्तप्राय द्वितिया के चन्द्रमा का उजेला होता है।

जब स्वयवर का समय निकट उपस्थित हुआ तब सखी सहेलियों ने हसावती को वस्त्र विहीन कर के उपटन करना आरम्भ किया। उस समय उसके अनग के रग से भरे हुए सुकोमल अग प्रत्यगों से इस प्रकार शोभा प्रस्फुटित होती जैसे रजनी के अवसान समय जुन्हैया के वूड़ने और सूर्य्य के प्रकाशमान होने से प्रकृति की शोभा होती है। हसावती के गोरे गोरे गात पर भीग कर लिपटी हुई लटें ऐसी शोभा देती थीं मानों चन्द्रमण्डल पर सर्प चढ़ रहे हों और उन केसरसमान सूक्ष्म केशो से वहता हुआ जल ऐसा भासित होता था मानों राहु के भय से चन्द्रमा विष पान करता हो और भूमि उसे कर्षन कर रही हो। इस प्रकार स्नान कराकर जब सखियो ने

उसे, सीस मे सुगंध लगा कर, नवीन वस्त्र पहिनाए तथा सोलहो शृंगार, बारहो आभूषणों मे सुसज्जित कर विवाह मंडप में प्रस्तुत किया उस समय उसकी शोभा अकथनीय थी। हंसावती के सवाँर हुए केशपास के ऊपर दोहरी मोतियो की लड़ी ऐसी भली मालूम देती थी जैसे दो चन्द्रमाओं ने राहु का ग्रास किया हो। सीस पर नगजटित सीसफूल कालिया के फन पर गोविंद के पद पद्म से ज्ञात होते थे ललित ललाट पर रोली की बिन्दी गंगा जमुना के संगम पर तीर्थराज सी आसीन हुई जान पड़ती थी। उसके अनियारे नैन मीनकेतु के से तीर, लालिमामय गोल गोल कपोल गुलाब कैसे फूल, चिबुक पर स्याम बुन्दा चन्द्रमण्डल पर पग रोप कर अड़ा हुआ राहु सा प्रतीत होता था। उसकी जीभ कमल पुष्प की पाखुरी सी और उसके सुढार कबुवत कण्ठ की त्रिवली पर काली पोत का छूटा ऐसा मालूम होता था मानो चन्द्रमा का ग्रास छोड़ राहु आसन मार कर बैठा हो। तदुपरान्त हृदय पर लुरती हुई दोहरी मोतियों की लड़ी चन्द्रमण्डल से निकली हुई अमृत की सी धार, उसके युग उरोज शिव से और सूक्ष्म रोमराजि दीपशिखा सी भासित होती थी। क्षुद्र घण्टिका से सुसज्जित उसकी पतली कमर यौवन के तौलने की तराजू सी जान पड़ती थी। उसके पीन नितंब आधे तुंबा से, जंघा हाथी की सी सूंड और पिंडुलीं मनोज की चारपाई के पाये सी सुशोभित होती थीं। उसकी केसरकलित जावक रलित, एड़िया कुसुम कैसे फूल और पावों में पहिने हुए पाजेब वा घूँघरु से होता हुआ मन्द मन्द शब्द भौंरे की सी गुंजार मालूम होता था। उसकी कोमल कलाई पर नौरत्नी पहुँची ऐसी मालूम होती थी जैसे चन्द्रमण्डल के चतुर्दिक नवग्रह परिक्रमा कर रहे हों। निदान सोलहों शृंगार, बारहों आभूषणो से सजबज कर जब वह चन्दवदनी मृगलोचनी कोकिलबैनी, गजगामिनी कामिनी सर्वाङ्गसुन्दरी हंसावती सखियों के सहित तरुण तरुलता पल्लवों से आच्छादित विवाहमंडप में आई उस समय ऐसा भान होता था मानो नक्षत्रों के बीच एक नव सूर्य का प्रकाश हो उठा हो।

नरनागर चहुआन पृथ्वीराज ने मंडप में प्रवेश किया। पृथ्वीराज के शीश पर नवरत्न जटित मुकुट ऐसा सुशोभित होता था जैसे सकल ग्रहों ने परस्पर का द्वेषभाव छोड़ कर चन्द्रमण्डल पर एकत्र आसन आ जमाया हो। पृथ्वीराज आकर पटे पर बैठे ही थे कि सखियां हंसावती को लेकर आई। जिस समय दोनों आमने सामने हुए और दोनों की आंखें चार हुईं कि बस दोनों मन ही मन घुल गए। दोनों के लालची लोचन परस्पर के छविसुधा को पीकर इस प्रकार मस्त हो गए जैसे कमलकली के अन्दर मकरन्द को बटोर कर भौंरा स्तम्भित होकर रह जाता है। इस चहुआन का चित्त हंसावती ने अंचल में बाँध लिया और उधर चहुआन ने हंसावती के मन को मुट्ठी मे ले लिया। जो पृथ्वीराज सहस्रों शत्रुओं से अजेय था उसे सुकुमारी कुमारी अबला नामधारी हंसावती ने मनसिज की सुसज्जित सेना स्वरूप निज स्वाभाविक सौन्दर्य्य की सहायता से सहज ही जीत लिया।

इधर तो ये विवाह के सुख्सारे हो रहे थे उधर शहाबुद्दीन ने दिल्ली को खाली जान कर सुरतान खां के तहत मे एक बड़ी भारी सेना वहां भेजी। जब यह यवन-सेना-समूह दिल्ली के पास आकर ठहरा और यह समाचार सामंतों को मिला तो उनमें से केवल साठ सामन्तों ने रात्रि को धावा किया और सुसुप्त शत्रु सेना को मार काट करके एक प्रकार से बिल्कुल बलहीन कर दिया। और जब तक वे लोग धरो पकड़ो कहते कटते मरते अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हुए तबतक ये लोग पुनः किले को लौट आए। दूसरे दिन प्रातःकाल सुरतान खां ने अपनी सेना को अर्द्धचन्द्र व्यूहाकार रच कर किले पर आक्रमण किया। इधर से रावल जी के भाई अमरसिंह जी ने मैदान का मुहासरा लिया। दोनों दलों में खूब लोहा बरसा। दोनों तरफ के बहुत से

सूरवीर सिपाही खेत रहे। अन्त में अमर सिंह जी की जीत हुई और यवन सेना भाग निकली। इस लड़ाई में यवन सेना का एक नामी सरदार पीरोज खां खेत रहा और सब एक लाख का रखंत बखस सामंतों के हाथ लगा।

ज्योंही यह समाचार पृथ्वीराज तक पहुंचा कि वह स्वाभाविक वीर समस्त प्रस्तुत रसरंग की सामग्रियों से विरक्त सा हो उठा और उसने उसी समय देहली की तय्यारी कर दी, परन्तु जब तक वह* दिल्ली पहुंचे पहुंचे, तब तक सामन्तों ने स्वय शत्रु का हटा दिया था। पृथ्वीराज ने सब सामतों को एक एक कर के गले लगाया और कहा "हे मेरे भाइयो, मैं तुम्हारी क्या प्रशसा करूं और तुम्हें क्या कहूं। यह दिल्ली का राज्य तो सर्वथा तुम्हारे ही बल भरोसे पर है।" पृथ्वीराज ने अमरसिंह जी की भी बड़ी खातिर की और स्वयं अपने हाथ से उनके सिर पर पाग बांधी।

पृथ्वीराज ने अपने भांजे, समरसिंह जी के पुत्र [1]कुंभा जी के नाम संभर की जागीर का पट्टा लिखा कर उन्हें अर्पण करना चाहा, परन्तु रावल जी ने उसे यह कह कर फेर दिया कि असुर वंश में अवतीर्ण तुम स्वय जैसे लालचीचित्त हो वैसे ही औरों का भी विचारते हो। हम अटूट वंशी किसी के साम्हने हाथ फैलाना नहीं जानते, दूसरों को दान देना जानते हैं। इस पर चतुर चहुआन कुछ उत्तर न देकर चुप हो गया।

---

* मूल पुस्तक में इस बात का कुछ भी स्पष्ट लेख नहीं है कि यवन सेना ने किस स्थान पर चढ़ाई की, परन्तु छन्द २१७ के दूसरे चरण 'सुनि बरनी सों रत्त दिन सत छंडू वर थान" और छन्द २२० के ५ वे पद 'रष्षयो नाम रनि पार दे तुम कधे दिल्ली नयर" से यही अर्थ निकलता है। दूसरे दो लड़ाइयां होने पर भी पृथ्वीराज का शामिल होना नहीं बतलाया गया है, न राजा भाग कर। इससे स्पष्ट है कि सुलतान खां का यह आक्रमण दिल्ली पर था।

(१) तब सिर सुन समर सा तेहि सुन कुंभ नरेस।
सभरि संभरि वार दै सोहन्तौ सोमेस ॥
"तब दिवस मरत बिभर नरेश पर पट्टो" ।२२१॥

तदन्तर दिल्लीपति पृथ्वीराज के मुकुटमणि, छत्रछाया स्वरूप रावल समरसिंह जी तो चितौर को चले गए। और पृथ्वीराज चपल नव वधूटी, नवोढा प्रियतमा राजहंसी हंसावती के साथ काम-मान्ध वृषभ की भांति काम क्रीडा में प्रवृत्त हुआ।

प्रथम समागम की रात्रि को जिस समय सखियां हंसावती को शयनागार में ले गईं और वह शैय्या के पास पहुंची उस समय उसकी विचित्र ही दशा थी। यद्यपि उठते हुए यौवन का उमंग उसे प्रियतम पृथ्वीराज के गले से लगने के लिये उत्तेजित करता था परन्तु स्त्रियोचित स्वाभाविक लज्जा भी तो मानो उसके पैर पकड़ कर पीछे को खींचती थी। इसी ठेलम ठेल में सखियों ने ढकेल कर उसे पलंग पर पवार दिया और आप किवाड़ देकर द्वार पर से कहकही मार कर हँसने लगीं। उधर नटनागर पृथ्वीराज ने सकुचित प्रिया हंसावती को उछंग में उठा लिया और प्यार से पुचकारता हुआ वह आमोद प्रमोद की बातें कर अभिप्राय सिद्धि की घातें करने लगा। उस समय हंसावती तो कमल कली की भांति सकुचित होती हुई सी सी कर आहा और ना ना की पुकार करती थी और पृथ्वीराज मदक्लित कपोल कामान्ध कुंजर की तरह बेकसक होकर काम कलाओं के कृत्य में दत्तचित्त था। निदान इसी प्रकार ज्यों ज्यों दिन व्यतीत होने लगे त्यों त्यों हंसावती के चित्त में लज्जा का ह्रास और कामेच्छा का प्रकाश होने लगा। तमाम दिन तो वह सखियों के साथ इधर उधर की कथा कहानी और पोथी पुराण में बिताती और रात्रि होते ही कन्त के हिये का हार हो जाती। पृथ्वीराज और हंसावती का प्रेम यदि पावस में तमाल और वल्लरी की भांति था तो शरद में शशि और चकोर की भांति हो गया परन्तु इसके उपरान्त जब शीतकाल आया तब तो वे दोनों परस्पर कस्तूरी और कज्जल की तरह एकमय होकर दिन बिताने लगे।



पहाड़राय समय।

[सैंतीसवां समय।]

एक दिन कविचंद की स्त्री ने कहा कि हे पति पहाड राय तूंअर ने यवन बादशाह शहाबुद्दीन को कब, किस प्रकार और क्योंकर पकड़ा सो कृपा कर सब कथा कहिए ?

तब कविचन्द बोला कि सवत् ११४० में[1] चैत्र मास शुक्ल पक्ष की तृतिया के प्रात काल की बात है। बसंत ऋतु की शीतल मद सुगन्धित त्रिविध बयार बह रही थी, भाँति भाँति के तरु लता पल्लव और उनमें रंगबिरंगे प्रस्फुटित पुष्प शोभा दे रहे थे। रसालवृक्ष की मंजरियों पर मलिन्द गुंजार करते थे। उसी समय शहाबुद्दीन ने निज महलों से निकल कर सदर दरबार में पदार्पण किया। उधर उसके सब दरबारी लोग आ आ कर यथास्थान आसन पर आसीन होने लगे। निदान शहाबुद्दीन ने अपने मंत्री तत्तार खा और खुरासान खा से कहा कि कहो तो पृथ्वीराज का क्या समाचार है ? इस पर तत्तार खा ने उत्तर दिया कि वह सहजोर शत्रु अपने समस्त शूरवीर सामन्तों सहित सकुशल राज्य शासन कर रहा है। यह सुनते ही शहाबुद्दीन बोला कि यथासभव शीघ्र ही एक सभा की जाय और उस में विचार करके पृथ्वीराज पर आक्रमण करने का उचित मन्तव्य निर्धारित किया जाय। शाह का इस प्रकार हुक्म पाकर तत्तार खा ने उसी समय सेना में समाचार जाहिर कर दिया और दूसरे दिन प्रातःकाल ही सुसज्जित सेना राजद्वार पर एकट्ठी होने लगी। समस्त सेना के एकत्रित हो जाने पर शहाबुद्दीन भी एक दीर्घकाय हाथी पर सवार होकर पूर्व दिशा को यात्रा करने के लिये तय्यार हुआ। उस दल बल के बीच स्वर्ण के आभूषणों से सुसज्जित हाथी पर जवाहिरात जटित वस्त्र और गहने पहिने हुए शहाबुद्दीन ऐसा सशोभित होता था जैसे समु के बीच मध्य गगन पर अचलरूप से सूर्य विरा मान हो। सेना के आगे आगे मेघस्पर्शी गगन ग निशान वायु वेग से डगमगाते चलते हुए ऐसे सुह थे मानो हवा के झोंके से बाधित बड़ी बड़ी दी शिखाएं हिल रही हों और उनके पीछे पीछे चल हुए सिपाही उन पर प्राण पवारने वाले पत तो थे ही।

गजनी से चलकर दस कोस के ऊपर प डाल दिया गया और वहां पर खुरासान खा, रु खा, वाजीद खा, मनसूर सेर हुजाब खा, महमूद कम्मन खा, जम्मन खा, निसुरत्त खा, ममरेज रनसिंह, सुलतान खा, मारूफ खा, सुरतान इत्यादि मीरों की मंडली एकत्र करके शहाबुद्दीन आगत युद्धप्रबन्ध पर वाद विवाद होकर सुना राय तै की जाने की आज्ञा दी। ज्योंही त खां शाह का उक्त अभिप्राय कह कर चुप हुआ त्योंही मीर वितंड खा अकड़ता हुआ कड़क कर बोला "जहांपनाह के इकबाल से सारी हिन्दू सेना को धूलि धूसित करके पृथ्वीराज को मैं सहज ही बाँध कर बँधुआ बना सकता हूं। प्रबल दल को विदार कर दुश्मन को मार कर नमक को बजाना ही बहादुरों का काम है। अगर ऐसे वक्त पर वह मारा भी जाय तो बिहिश्त का तख्त मिलता है और दुनिया में नाम होता है।" यह सुन कर निसुरत्त खा ने तत्तार खा से कहा कि अगर मुझ से सच पूछिए तो यही कहूंगा कि हिन्दू सेना बडी ही बलवान और पराक्रमशाली है। इस पर वितंड खा गुस्से से लाल होकर मूछों पर ताव देता हुआ फिर बोला कि यह क्या कहते हो, मैं सब हिन्दू सेना को मारूंगा और पृथ्वीराज को पछाडूंगा। तब तो बुद्धिमान निसुरत्त खा से न रहा गया और वह बोला कि तुम्हारा यह गुरूर फुजूल है। रावण और सहस्रबाहु ऐसे योद्धा अपनी मगरूरी के ही कारण मारे गए। और क्या कहूं जिन हिन्दूओं ने कालू ऐसे रणबांकुरे बहादुर को मार डाला उनके साम्हने तुम

---

[1] संवतूसर च्यालीस, मास मधु पष्प धर्मधुर ॥

क्या गे हो। वह फिर भी बोला कि तुम्हारी इस कपोलकल्पना की उस समय सब कलई खुल जायगी जब रणबांकुरे हिन्दू सामतो का साम्हना होगा। परन्तु इससे हमारा यह भी अभिप्राय नहीं है कि भयभीत हो कर डर जाय। जो परवरदिगार राई का पर्वत कर सकता है वही हमारे हुजूर की टेक रक्खेगा। इसलिये उसी का आसरा भरोसा और गुमान करना मुनासिब है। लिहाजा हलकारा भेज कर चहुआन को लडाई का पैगाम दे दिया जाय और तब यहा से कूच किया जाय।

अस्तु यह बात शहाबुद्दीन तथा उसके समस्त उपस्थित सभ्यों ने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर ली और तदनुसार एक खत्री दूत एक पत्री के साथ उसी समय दिल्ली को रवाना किया गया। दूत ने दिल्ली पहुच कर वह पत्र धर्म्मायन को दिया और सब जबानी हाल भी कह सुनाया, जिसे सुनते ही धर्म्मायन अधमरा सा हो गया और बोला "बस मैने जान लिया कि अब शहाबुद्दीन का आयुर्बल क्षीण हुआ"। निदान धर्म्मायन ने दूत को तो वहीं छोडा और आप शाह का खरीता लेकर दर्बार में दाखिल हुआ और मौका पाकर उसने वह पत्र कैमास को देकर उसे पृथ्वीराज के सम्मुख पेश करने को कहा; राजा की आज्ञा पाकर कैमास ने वह पत्र पढ सुनाया जिसमें लिखा था "हमारा तुम्हारा [1]देवासुर सग्राम का पुरातन अवशिष्ट वैर इस समय प्रचण्ड रूप से जाग्रित हो रहा है। हम तुम सग्राम में जैसे वीरता के काम करेंगे वैसे ही कवि लोग हमारा तुम्हारा सुयश गावेंगे। और आखिर को दुनिया मे नामही रह जाता है। मरने पर यह पच भौतिक शरीर पच महाभूतों में लीन हो जाता है हमारे तुम्हारे दोनों के हृदय में सनातन गौरवशाली आत्म-अभिमान का बीज बोया जा चुका है। आत्म-अभिमान ही मर्दों की निशानी है। दुनिया में अगर कोइ कुछ कर सकता है तो इसी आत्म-अभिमान के सहारे से। जो मर्द आत्माभिमानी पीछे मर गए व अपना नाम अमर कर गए। हमारे तरफ पैगबर और आपके तरफ महाभारत के वीरों का यश अमर है। इसी से हमारा ऐसा हठ है।"

शहाबुद्दीन को ऐसा पत्र पाकर पृथ्वीराज ने सामन्तों से कहा, "हे सामन्तो, सुनो! गजनी पति शहाबुद्दीन चतुरंगिनी सेना सज कर दिल्ली पर चढाई करने को आ रहा है और वह सिंध नदी के इस पार आ गया है। अस्तु अब तुम लोग भी आने बाने से दुरुस्त होकर वायुवेग स्वरूप धारण कर यवन दल बद्दल को छिन्न भिन्न कर दो। पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुन कर सामन्त लोग बोले कि यदि वह आता है तो आने दीजिए हमें क्या? जैसे अगाध उदधि को अगस्त एक अजुली से अचै गए, जैसे गरुड ने सर्प समूह को भक्षण कर लिया. वैसे ही हम भी शत्रुओं का नाश करने के लिये सन्नद्ध है।

निदान इधर से पृथ्वीराज भी पच्चीस हजार सेना के सहित शहाबुद्दीन का वार बचाने के लिये दिल्ली से चल पडा। जिस समय राजपूत वीरों का विकट दलबल चलता था उस समय मेदनी काँपती थी और आकाश में आच्छादित सघन धूलि के कारण सूर्य्य अदृष्ट सा हो जाता था। इसी प्रकार कूच दर कूच चलते पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन की सेना से दस कोस के फासिले पर पडाव डाल दिया। उधर शहाबुद्दीन को भी चहुआन के आ पहुचने का समाचार पहुचा और इस लिये वह भी सचेत हो बैठा। दूतों द्वारा बातचीत तै होकर दूसरे दिन प्रातःकाल ही दोनों दलों में द्वन्द होना निर्द्धारित हुआ।

दूसरे दिन दिशाओं में लालिमा की झाँई पडते ही दोनों दलों में नगाडों के गड गड शब्द होने लगे। दोनों सेनाओं के अग्रभाग में फहराते हुए मेघस्पर्शी रगबिरगे निशान ऐसे भान होते थे जैसे पावस के बहुरग बद्दर धरा पर धूम करने के लिये आकाश से अवतीर्ण हो रहे हों। बीच बीच में तुरही की तान लगती और उच्च स्वर से कडखेत कडखे गा गा कर जवानों के जी को दूना करते थे। दोनों सेनाएं अपने अपने शिविर छोड कर

१ सामद देव आदि भी जग्गो। साम वेर पुरातन जग्गा॥

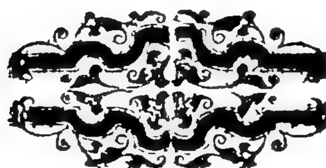
देखादेखी के मेल में था उपस्थित हुई। उस समय दोनों सेनाओं के सूर लोग तो आनन्द के मारे फूले अग नहीं समाते थे पर कायरों का हृदय-सरोवर नीरस होने से उनका तो हंसा हिराना जाता था। शहाबुद्दीन की चतुरंगिनी सेना बराबर चार हिस्सों में विभाजित थी। अग्रभाग पर खुरसान खां और चिम्मन खां, बाएँ मारूफ खां; दहिने सिराज खा और चिम्मन जमराज खा थे। ये सब फौजें दो दो अनी करके अगा पिछी दो कतारों में थी। पृथ्वीराज चहुआन ने अपनी सेना को पांच भागों में विभाजित किया। बीच में आप और चारों तरफ चार अनी थीं। प्रत्येक अनी के अग्र भाग में नंगे खाडे तलवार, पट्टे, बाने, फरसे, कटारी आदि लिए हुए कद्दर जवान थे, बीचोंबीच नेजेबाज घुडसारों की भरती थी और तिसके पीछे हथनार तोपों की कतारें थीं। कैमास और चामुंडराय आठ हजार सेना के साथ हरावल पर—हरावल में घुडसवार और हाथियों की भरती अधिक थी—सात सामन्तों के सहित काका कन्ह दाहने बाजू पर, जैतराव प्रमार चार हजार सेना सहित बाएँ पक्ष पर, और पीछे पीठि सेना अर्थात् चँदावल का स्वामी जामसिंह जदव था, जिसके साथ में पांच पांच सौ कमनेत और साढ़े तीन हजार अग्नि बान चलाने वाले थे। एक दूसरे के विपक्ष में सन्नद्ध दोनों सेनाएँ ऐसी मालूम होती थीं मानों कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरव पाडवों का दल इकट्ठा हो। जिससमय पारथ के पंचजन की भांति दोनों सेनाओं में उच्च स्वर मारू की आवाज हो कर स्वामी आज्ञा की सूचना दी गई उस समय दोनों दलों के योद्धा इधर से अवधूत राजपूत और उधर से मजबूत म्लेच्छ अपने अपने घोड़ों को एड़ें देते और हाथियों को धतकारते मार मार पुकारते एक दूसरे से जुट पड़े। उस अरुणोदय के समय बडे बडे दंतारे दुरद पावस के बदर से और उन पर से बजते हुए गजनार नगारे और कर्नार घनघोर वन से गर्जते थे। दोनों ओर से बरसते हुए छर्रे और बानों की बौछार वारिधारा सी और रुधिर के फौवारे झरने से जान पड़ते थे। कुछ देर के बाद बारूद वाले षण्यास्त्र और बाण बन्द हो गए और लगमेल की मार वाले अनपोरे तथा तीक्ष्ण धार वाले करारे शस्त्र चल पड़े। उधर से चिम्मन खा और इधर से चामुंडराय का मुकाबला हुआ। दोनों ने द्वन्द्व युद्ध करने की इच्छा से अपनी अपनी सवारी छोड़ दी और पैदल होकर परस्पर एक दूसरे को अपना अपना बल और युद्धकौशल दिखाने लगे। वे दोनों बाकुरे वीर बरनी से बराबर तलवार और कटार के वार करते हुए ऐसे मालूम होते थे जैसे लंका के मैदान में मेघनाद और लक्ष्मण युद्ध कर रहे हों। जहां पर नायकों का ऐसा उत्साह हो वहां सहायकों और पायकों का तो कहना ही क्या है। घडी भर में वह सुन्दर शोभामयी भूमि रक्त से तरबोर होकर रसातल का सोपान समुद्र सी हो गई। जहां तहां मुंड लुढकते और रुंड अंधाधुन्ध मार करते थे। तलवार कटार बरछी आदि के लगने से जो जोरावर जवानों का खून फौवारे की तरह ऊपर को उछलता था वह हेलामेल फगुआ का गुलाल सा नजर आता था। कहीं योगिनी ताल देकर नाचतीं, कहीं बेताल भीषण स्वर कर गाते और मांस मज्जा खा कर और ताजे रुधिर की धार पी पी कर अमित प्रसन्नता प्रगट करते थे। सूर वीरों की इस आमोदस्थली युद्ध भूमि में जिस समय कन्ह, चामुंडराय, जैतसी, पज्जून आदि सामंत बिजुली के समान चमकती हुई तलवारों से तमक तमक कर वार करने लगे उस समय मीर बन्दों के मुरदों के अटब लग गए। इधर तो ये वीर पुरुष अपने पराक्रम मय कर्तव्य साधन में दत्तचित्त थे उधर विमानों में विराजमान आकाश से अप्सराएँ और सुरसमूह उन पर पुष्पों की वर्षा करते थे।

इस प्रकार युद्ध होते होते चहुआन सेना के चन्देल चौकसी में से बाहर राय और बीरम देव दो वीर विशेष काम आए और शहाबुद्दीन की तरफ से पुत्र सहित पीरोज खां,

सफदर खां, हाजम खां, सहबाज खां, आदि सरदार काम आए। दोनों तरफ के पन्द्रह हजार सिपाही खेत रहे। तब तक सूर्य्य भगवान अस्ताचलगामी हुए और दिशाओं में अंधेरा छा गया। तब पृथ्वीराज की तरफ से पहाड़राय तूंअर हरावल का नायक नियत हुआ। पहाड़राय तूंअर ने सवारों की सेना लेकर साम्हने धावा किया। नेजे और तलवारों की मार करते हुए वह अगनित यवन योद्धाओं को यमपुर पठाने लगा। वीर पहाड़राय तूंअर स्वयं तलवार के वार कर अगनित शत्रुओं को काट काट कर डारने लगा। वह जिस किसी हाथी पर वार करता उस का भसुंड दाँतों के सहित कट कर दो हो जाता, जिस सवार पर तलवार चलाता वह मय घोड़े के चार हो जाता। पहाड़राय के इस पराक्रम से मुसल्मानों के पैर उखड़ पड़े। तब तक आकाश में जो दुतिया के चन्द्रमा की आभा से कुछ उजेला था वह भी अस्तमित होने लगा। इसलिये दोनों सेनाओं मे फरहरा फिर गया और उस दिन के युद्ध की इति हुई।

दूसरे दिन तृतिया को भी पहाड़राय की सवार सेना ने अतुल पराक्रम दिखाया और यवनों को खूब छकाया। तीसरे दिन चतुर्थी को फिर भी दोनों सेनाओं में घोर संग्राम होने लगा। अनयारे नेजों की अनी मदान्ध कुञ्जरों के कलेजे पार होने लगी, युद्धरंगराते मदमाते योद्धा परस्पर एक दूसरे को खण्ड खण्ड करने लगे, जिनके श्रोनप्रवाह से रसातल पर रक्त के कुंड भरने लगे। उस रक्त सरोवर मे तैरते हुए नव युवक योद्धाओं के सीस कमल कली से और उनपर उड़ते हुए कौवे मधुकर से मालूम होते थे। इसी प्रकार मार करते करते पहाड़राय ने अपना घोड़ा शहाबुद्दीन के हाथी के सम्मुख जा अड़ाया और उसके कुंभ पर तलवार का एक हाथ ऐसा मारा जिससे वह भहरा कर जमीन पर लोट गया हाथी के गिरते ही पहाड़राय ने शहाबुद्दीन को पकड़ लिया और मुस्कें बाँध कर उसे घोड़े के कंधे पर डाल लिया। उधर शहाबुद्दीन के बन्दी होते ही तमाम मीर बन्दे जिधर तिधर तीन तेरह होकर चलदिए।

शहाबुद्दीन को बन्दी करके पृथ्वीराज सेना सहित दिल्ली को आया। वहां कुछ दिन रहकर माघ सुदी ५ बृहस्पति वार को ६ हजार घोड़े, ६ हाथी और एक करोड़ का स्वर्ण दण्ड में लेकर उसने शहाबुद्दीन को सुखपाल में बैठा कर गजनी को भेज दिया।



वरूण कथा।

(अठतीसवां समय।)

चहुआन वंश मे सरनाम राजा सोमेश्वर तलवार की धार और घोडे की टाप के बल से शत्रुओं को पराजित करके नित नव देशों को दबाता समस्त राजसी सुखों से परिपूर्ण स्वतन्त्रता पूर्वक अजमेर का राज्य करता था।

एक समय चन्द्रग्रहण का पर्व्व आया। यह जानकर सोमेश्वर ने अपने साथी सरदारों और माननीय पण्डितों को बुलाकर ग्रहण के समय यमुना स्नान करने की इच्छा प्रगट की। राजा की आज्ञा होते ही विधिवत दान का सामान जुटाया गया। सब सामत सरदार लोग यथास्थान आ आकर बैठ गए उस समय राजा के पास में बैठा हुआ गुरू राम प्रोहित इस प्रकार से सुशोभित होता था जैसे रामचन्द्र के समय में वशिष्ठ।

सायंकाल होतेही एक ओर से पूर्णविम्ब चन्द्रमा का प्रकाश हुआ। ग्रहण की छाया का वेध होते ही प्रफुलित कुमोदिनी मंद दुति होकर सकुचित और चक्रवाक चाकित चित्त होने लगे। विरही जनों के हृदय को विदीर्ण करने वाले चन्द्रमा की कलाएँ कुठित होने लगी। उस समय सारे ससार में ऐसा सन्नाटा छा गया मानो प्राणी मात्र गहरी नींद के ग्रास हो गए हों। केवल कामी पुरुष कामना की सिद्धि के लिये होम जाप यज्ञ करने में और भक्त जन भगवान के भजन में लवलीन थे। ठीक आधी रात के समय जब ग्रहण के वेध की सधि का समय आया तब राजा सोमेश्वर स्नान करने के लिये यमुना के किनारे गए। सोमेश्वर सहित सब सर्दारों ने ज्योंही वस्त्र विहीन हो कर और हाथों में तिल, यव, तदुल, पुष्प, स्वर्ण, कुसा और दूब लेकर स्नान करने के लिये जल मे पैर दिया त्योंही विशाल काय श्यामवर्ण वरुण के जलरक्षक रणधीर वीर विकट गर्जना करते हुए उनके साम्हने आ उपस्थित हुए। उन विकाल आकृति वीरों की आखों में अग्नि ज्वाला के समान जाज्वल्यमान ज्योति प्रज्वलित हो रही थी। उनके नख और ओष्ठ लाल थे और उनके सर के बाल बड़े कडे और खडे थे। उनके शरीर पर कोई वस्त्र नहीं था। ऐसे विशाल और बलवान वीरों के साम्हने किस की सामर्थ थी जो खड़ा भी हो सके।

सामन्त लोग इन वरुण वीरों को अपने पर आक्रमण करते हुए देख कर शास्त्रहीन होने के कारण जल से निकल कर प्रावस्थल पर चले गए। निदान वे वीर उस प्रावस्थल पर उछल उछल कर पानी के भला वर्साने लगे, प्राव की सुलयम बालू पर पडते हुए जल के बड़े बड़े छींटों से ऐसा शब्द होता था मानो ग्रीष्म का पतझाड़ होने पर झाड़ों से पके फल भूपातित हो रहे हों। परन्तु जब सामन्त लोग इससे न डरे तब वीर लोग परस्पर द्वन्द युद्ध करके अनेक प्रकार की आसुरी माया करने लगे। वीरों की माया से जमुना के गभीर जल में कभी धुआँ देख पड़ता, कभी जलती हुई आग की चिनगारी देख पडती, कभी बादल उठते और कभी वरसा होती, कभी वे परस्पर मारामारी करके हृदय को दहलाने वाले घोरतर भयावन शब्द करते, कभी एक दूसरे को उठा उठा कर मारते, पछाड़ते और पछारते थे। परन्तु वीर सामन्त तब भी न डरे। तब वे बोले कि हम लोग स्वभावत: एसे बलवान है कि बड बडे पर्वतों को कानी[1] उँगली से उठा कर फेंक सकते है समुद्र को अँजुली से उचील कर ससार को बहा सकते हैं अथवा अन्यान्य ऐसे अमानुषी काम कर सकते है कि जो कभी किसी ने देखे सुने भी न हों! हे मनुष्यो, तुम घरबार बालबच्चे छोड़ कर क्यों यहां नाहक मरने आए हो। हम लोग जलपति वरुण के दूत है, रात्रि के समय गभीर जल में यथेच्छ विचरना ही हमारा व्यवसाय है। यह हमारा घर है, हमारा स्वराज्य है। तुम यहा से चले जाओ। यह कह कर वे मायावी वीर पुन उत्पात करने लगे। इसी प्रकार होते होते दिशाओं मे लालिमा की झाई

(१) कनिष्ठ।

झलकने लगी तब तो वे निश्चर बलहीन होन लगे और राजपूत वीरों का हियाव बढ़न लगा निदान उन वीरों न अपना अद्वितीय तेज प्रगट करके कुछ ऐसी माया की कि जिससे सब सामन्त लोग मूर्छित होकर रे से गिर पडे और वरुणवीर अन्तर्ध्यान हो गए।

ज्योंही पूर्व दिशा मे प्रभाकर का पूर्ण दर्शन हुआ त्योंही पृथ्वीराज वहा पर आ पहुचा तो देखता क्या है कि राजा सोमेश्वर सकल सामन्तों सहित मृतप्राय मूर्छित पडे है यह देख कर पृथ्वीराज के मन में बड़ी ग्लानि और क्रोध उत्पन्न हुए । पृथ्वीराज नें यमुना जी के सम्मुख हाथ जोड कर स्तुति करना आरम्भ किया। उसने कहा—हे सूर्य्य भगवान की पुत्री, यम की बहिन, बलवीर के वीर श्री कृष्ण को सुखकर, त्रैतापहारिणी, मायामोहविदारिणी सब सुखकारिणी अधमउधारिणी कालिन्दी, तेरे तट के सेवन मात्र से सब दुःख दूर होते है। इस प्रकार ससार में ब्रह्म स्वरूप सरस्वती विष्णु रूप गंगा और शिव स्वरूप (यमुना) तू है—शिव संसार के पालनकर्ता है—इसलिये हे माता कृपाकर मेरे पिता की मूर्छा भग कर के उसे सचेत कर दे—पृथ्वीराज के ऐसी स्तुति करने पर सब सामन्तों सहित सोमेश्वर सचेत हो गए—तब पृथ्वीराज पुन. बोला कि हे माते ! यह पञ्च तत्व मय तनपिंजर आप ही मय है पूर्व्व कर्म्म रूपी अग्नि की ज्वाला के जोर से यह स्थूल शरीर बनता है, यम, नियम और योग से वेष्टित जीव रूपी जल ही में चचल बुद्धि की तरल तरगें उठा ही करती है जहां तहा गभीर जल के गुरुतर आशा रूपी दौहले भरे पडे है और उनके किनार पर हेतु रूपी पची कल्लोल किया करते है। तेरी सुख दुःख रूपी दोनों कगारों के तीर पर जो त्रिगुण रूपी वृक्ष आच्छादित है उनमें मोह रूपी पत्ते और तज्जनित विकार उनके फलफूल है। उन सबका समय समय पर सतोष रूपी बाढ़ के आने से नाश भी हुआ करता है, केवल निर्गुण के आश्रय पर दृढस्थिति पुरुष बचते है। इस संसार में ऐसे जीव विरले ही है जो सौ वर्ष तक जीवित रहते है। इसी के बीच में शाय प्रातः होते हुए बालापन यौवन और वृद्धपन आदि अवस्थाओं और शारीरिक और मानसिक नाना प्रकार की आधि व्याधियों से पीडित होना पडता है सो ऐसे ससार सागर से तारने वाली हे माता तुम्ही हो। इसके बाद सम्पूर्ण मूर्छित मण्डली के लोग अच्छी तरह से चैतन्य और सावधान हो गए। तब पृथ्वीराज ने गधर्व की आराधना की जिससे उन लोगो के शारीरिक ताप का भी नाश हो गया। निदान सोमेश्वर सहित सब लोग राजमहलों को चले गए।

महलों में पहुँच कर पृथ्वीराज ने पिता से कहा कि आप नही जानते कि ऐसे पर्व्व के समय जल थल सब जगह दैवी जीवों का अधिकार हुआ करता है ? फिर आप क्यों गए ! ऐसी अवस्था में विघ्न होने से अपना कृत्य भी भग होता है और व्यर्थ का कष्ट उठाना पडता है। प्रतापी पुत्र के ऐसे वचन सुनकर सोमेश्वर मन ही मन प्रसन्न होते हुए चुप हो गए।



सोमवध ।

(उन्तालीसवां समय ।)

भीम के समान बलवान राजा भीमदेव सोलंकी गुजरात देश पर राज्य करता था । उसके अतुल पराक्रम और उसकी कीर्ति का आतंक चारों ओर इस प्रकार से फैला हुआ था कि कोई भी उसकी राज्य सीमा को चापने का साहस न कर सकता था । यद्यपि वह अन्य सब प्रकार से सुखी और सतुष्ट था, परन्तु सोमेश्वर और पृथ्वीराज चौहान, ये दोनो पिता पुत्र उसके अंतस में सालते थे । चहुआन वंश पर बदला लेने की चिंता में व्यस्त हो कर भीमदेव इस प्रकार से व्याकुल बेचैन और अधीर हो रहा था जैसे हारा हुआ ज्वारी दाव पर दाव लगाने को और पुंश्चली स्त्री यार के पास जाने को हमेशा बेसब्र रहते है।

इसलिये भीमदेव ने एक दिन रानिंगदेव झाला, कन्ह कंठीर, जयसिंह चौरा, वीर धवलग देव, भानसिह चौरा, राजा स्यामास्याम धिरसिंह चहुआन आदि सरदारो को बुलाकर कहा कि हे भाइयो, कल्लोल करती हुई कालिंदी के कूल पर स्थित दिल्ली नगर मे अकटक क्रीड़ा करता हुआ पृथ्वीराज और उसका पिता सोमेश्वर दिन रात मेरे कलेजे पर कॉटे से चुभते है। उसी पृथ्वीराज के कारण शहाबुद्दीन के हाथों मेरा सारंगदेव मकवान ऐसा बहादुर सरदार मारा गया। उसीके कारण जूनागढ में मुझे तत्तार खा के साम्हने नीचा देखना पड़ा। अधिक क्या कहू। सोझत्ती की लड़ाई मे तो जो कुछ बीतक बीता सो सभी को मालूम है। बस येही सब बाते मेरे मर्म पर खटकती है और जबतक उन दोनों पिता पुत्र का धुआँ न देख लूगा तब तक मुझे चैन पडने का नहीं । इसलिये अजमेर पर चढाई करके पहिले सोमेश्वर को धूलि धूसित किया जाय और तब दिल्ली पर चढाई करके पृथ्वीराज को पछाड़ा जाय।

जैसे शायकाल होते ही अगनित तारे इकबारगी निकल पड़ते हैं, नदी की बाढ़ के साथ साथ अगनित रेत कण आगे को ढकेलने है तैसे ही भीमदेव की आज्ञा होते ही अगनित सेना समूह अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर राजद्वार पर जुटने लगा। उधर भिन्न भिन्न प्रदेशों के प्रतिनिधि शासक और अधीनस्थ उमरावों को भी परवाने भेजे गए, और वे भी नियत समय पर पावस की नदी धाराओं के समान दल बल सहित उमड कर आने लगे । भादों के प्रबल दल बद्दल के समान भीमदेव की बलवान सेना के गुजराती जवानों के ओजभरे गुलाबी चेहरे सन्ध्या समय के आसमान से सुशोभित होते थे । कई कतारें विशाल काय कारे कारे सिन्धी जवानों की थी, वे जॅाँघिया पहने बटी हुई पगडी सर पर बाँधे और ललाट पर लाल चन्दन की पैरें लगाए हुए थे। उनके सीने पर तलवार की धार और बरछे की अनी चाहे मुडजाय परन्तु वे मुडकर पीछे देखने वाले नहीं थे । अच्छे अच्छे चंचल कच्छी घोड़ों को कुदाते हुए सवारों के चेहरे पर सूर्य्य का सा तेज विराजमान था। उन घोडों के आयाल आसमान की तरफ उठे हुए और सवारों की टेढ़ी भौहें और लाल लाल आखे बडी भयावनी मालूम देती थीं। वीर लोग सासारिक माया मोह के सनेह और देह के नेह से निपट निरपेच्छ थे। वे सदैव परब्रह्म के चिंतवन मे दत्तचित्त, स्वामिसेवा मे मरना श्रेयस्कर समझते थे । वे मरने से न डरकर सदैव स्वामिसेवा में इस प्रकार से रत रहते थे जैसे दुहागिल स्त्री लज्जा से रहित होकर पति से स्पष्ट प्रीति करने लगती है। वे युद्ध के लिये सदैव इस प्रकार से सन्नद्ध रहते थे जैसे कुलटा कामिनी यार से मिलने के लिये आतुर रहती है। वे स्वाभाविक वीर जिस समय समस्त फौजी सामान जिरह बख्तर आदि से सुसज्जित हो कर राजद्वार पर हाजिर हुए उस समय ऐसा मालूम होता था मानो लंका का किला लेने के लिये रीछ और बन्दर बटुरे हो।

राज नीति के साम, दान, दण्ड, भेद ये चार भेद माने गए है। अस्तु भीमदेव के दरबार में इन

चारो शाखाओं से सम्बन्ध रखने वाले उक्त क्रम से अमरसिह सेवरा, भैरो भट, लीला लञ्छिन ब्राह्मण और देवक्रम चारण चार मंत्री थे। इन सब में अमरसिह की बात को भीमदेव अधिक मानता था। भीमदेव ने उक्त मंत्रियों से कहा कि भाइयो, वास्तव मे मेरा बल तुम्ही लोग हो अब तुम्हारी जो इच्छा हो सो कहो। तब वे मंत्री बोले कि हे महाराज! जिस भूमि के लिये पांडवों ने भाइयों को मारा, दधीच मृगया के व्यसन में व्यस्त रह कर मरा, कैकेयी ने दशरथ से वचन लेकर राम को बनवास दिया, उस भूमि को पाने के उपाय में कृतकार्य्य होना सहज नहीं है। जिस जीवन की रक्षा के लिये ससार के सब रस रग की सामग्री एकत्रित की जाती है, जिसके लिये नाना प्रकार के दुःख सह कर सदा सुख की आशा की जाती है, जिस जीवन की रक्षा के लिये और सुकीर्ति के लिये ही सपूर्ण प्रकार के यज्ञ तप जप होम दान धर्मादि किए जाते है उसी जीवन की आशा को त्याग कर जब कार्य्य किया जाता है तब कहीं भूमि पर अधिकार मिलता है।

बस फिर क्या था "करेला, फिर नीम पर" भीमदेव ने उसी समय कूच का डका बजाए जाने की आज्ञा दी। जैसे भिन्न भिन्न चिनगारिया एक में मिल कर विषम ज्वाला का स्वरूप धारण कर लेती है उसी प्रकार भीमदेव की चतुरगिणी सेना अरुणोदय होते ही एकत्रित हो गई। उधर सोमदत्ती के वैर का बदला लेने का दृढविचार बॉधे हुए भीमदेव भी एक भीमकाय हाथी पर सवार आहुआ और खवास ने उसके शीस पर छत्र आच्छादित किया। सच है विचारने वाले सब कुछ विचारते है; परन्तु वास्तव में होनहार क्या है सो कोई नहीं जानता। मन, बुद्धि, हृदय, इन्द्रियां और पराक्रम इन पाच करके जो साहसी हो, यज्ञ, जप, तप, यम, नियम, यह पाचों सुकृत जो करता हो "तत्त्व ज्ञान में जो पारगत हो"—सोई पुरुष समर में विजयी होता है। भीमदेव की इस सेना में सब से आगे मतवाले हाथियो की भीड तिनके पीछे अश्वारोही और तिनके पीछे बानैत पैदल चलते थे। ये मदश्रवित गडस्थल दतारे दुरद साक्षात् पावस के मेघमाला से सुशोभित होते थे। उनके कुम्भ पर ढुरती हुई ढाले और तिन पर छोटी छोटी जरकसी वैरखे और फुल्ली ऐसीं सुशोभित होती थी जैसे कामरूपी पर्व्वत के शिखर पर अगनित चौर छत्र आच्छादित होरहे हो और उनके किलायों पर अकड कर डटे हुए महावत ऐसे भान होते थे जैसे इन्द्र ने इन मेघो की मस्ती मद करने को लिये उन पर वज्र बैठाया हों। भीमदेव की इस प्रकार की प्रबल सेना जहा हो कर जाती थी वहा की रय्यत बर्बाद और देश दो कौडी का होता जाता था।

निदान जब यह समाचार सोमेश्वर के पास पहुंचा तो वह भी शत्रु का साम्हना करने को सन्नद्ध हुआ। पृथ्वीराज तो दिल्ली में था ही नहीं वह कुछ दिन पहिलेही उत्तर की तरफ चला गया था केवल प्रसगराय पीची, जामराय यद्दव, देवराज बग्गरी, भानराय भोटी, बलभद्र और कैमास और थोडे से सामन्त लोग गढ़ रक्षा के लिये दिल्ली में छोड गया था। जब इन लोगों ने यह समाचार सुना तो वे भी सोमेश्वर के स्वर में स्वर मिलाने के लिये अजमेर जा पहुचे। जब भोला भीमदेव का काल एवं हलाहलवत् प्रबल दल अजमेर के निपट आपहुचा तब सोमेश्वर ने भी अपने सामन्तों को शस्त्र धारण करने की आज्ञा दी।

आकाश में सूक्ष्म लालिमा की झलक मरते ही अजमेर का राजद्वार कुसुम सा फूल उठा। बडे बडे बानेत क्षत्री वीर बरण बरण के बताने बताने से सजकर आ जुटे। भेरी नफेरी बजने लगे, कडखेत उच्च स्वर से कडखों का अलाप कर स्वाभाविक ही सूरों के ओज को और भी उत्तेजना देने लगे। उस समय ऐसा मालूम होता था मानों

(१) दोहा ॥ पच सहस पचो सुक्रम पचो पच प्रकृत ॥ पच दण्डि पचा महे तो भारथ्थ सुजित्त ॥

(२) छोटा छोटा सजावट की झडियो का विरख कहत है।
[३] टाल के ऊपर ये चार फूल से लग रहते हैं।

सोमवध ।

(उन्तालीसवाँ समय ।)

भीम के समान बलवान राजा भीमदेव सोलंकी गुजरात देश पर राज्य करता था । उसके अतुल पराक्रम और उसकी कीर्ति का आतङ्क चारों ओर इस प्रकार से फैला हुआ था कि कोई भी उसकी राज्य सीमा को लांघने का साहस न कर सकता था । यद्यपि वह अन्य सब प्रकार से सुखी और सन्तुष्ट था, परन्तु सोमेश्वर और पृथ्वीराज चौहान, ये दोनों पिता पुत्र उसके नयन में सालते थे । चहुआन वंश पर बदला लेने की चिंता से व्यस्त हो कर भीमदेव इस प्रकार से व्याकुल बेचैन और अधीर हो रहा था जैसे हारा हुआ जुआरी दाव पर दाव लगाने को और पुंश्चली स्त्री यार के पास जाने को हमेशा बेसब्र रहते है ।

इसलिये भीमदेव ने एक दिन रानिगदेव झाला, कान्ह कंठीर, जयसिंह चौरा, वीर धवलग देव, भानसिंह चौरा, राजा स्यामास्याम विरसिंह चहुआन आदि सरदारो को बुलाकर कहा कि हे भाइयो, कल्लोल करती हुई कालिंदी के कूल पर स्थित दिल्ली नगर मे अकटक क्रीड़ा करता हुआ पृथ्वीराज और उसका पिता सोमेश्वर दिन रात मेरे कलेजे पर कॉटे से चुभते है । उसी पृथ्वीराज के कारण शहाबुद्दीन के हाथों मेरा सारंगदेव मकवान ऐसा बहादुर सरदार मारा गया । उसीके कारण जूनागढ में मुझे तत्तार खा के साम्हने नीचा देखना पडा। अधिक क्या कहूं। सोझत्ती की लड़ाई मे तो जो कुछ बीतक बीता सो सभी को मालूम है । बस येही सब बाते मेरे मर्म पर खटकती है और जबतक उन दोनों पिता पुत्र का धुऑ न देख लूगा तब तक मुझे चैन पडने का नही । इसलिये अजमेर पर चढाई करके पहिले सोमेश्वर को धूलि धूसित किया जाय और तब दिल्ली पर चढाई करके पृथ्वराज को पछाडा जाय ।

जैसे शायकाल होते ही अगनित तारे इकबारगी निकल पडते है, वैसे ही रात के साथ साथ अग- [illegible] वैसे ही भीमदेव की आज्ञा होते ही अगणित सेना समूह अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर राजद्वार पर जुटने लगा । उस भिन्न भिन्न प्रदेशों के अधिनिवि शासक और अधीन सरदारों को भी परवाने भेज गए, और वे भी नियत समय पर पावस की नदी धाराओं के समान दल बल सहित उमड कर आने लगे । भादों के प्रबल दल बादल के समान भीमदेव की बलवान सेना के गुजराती जवानों के ओजभरे गुलाबी चेहरे सन्ध्या समय के आसमान से सुशोभित होते थे कई कतारें विशाल काय घोड़ों और सिन्धी जवानों की थी, वे जालिया पहने कटी हुई पगडी सर पर बॉं- और ललाट पर लाल चन्दन की खौरें लगाए हु- थे । उनके सीने पर तलवार की धार और बर्छे की अनी चाहे मुडजाय परन्तु वे मुडकर पीछे देख- वाले नही थे । अच्छे अच्छे चचल कच्छी घो- को कुदाते हुए सवारों के चेहरे पर सूर्य का तेज विराजमान था । उन घोडो के अयाल आ- मान की तरफ उठे हुए और सवारों की टेढी भौं- और लाल लाल आखे बडी भयावनी मालूम दे- थीं । वीर लोग सासारिक माया मोह के सनेह [illegible] देह के नेह से निपट निरपेच्छ थे । वे सदैव परब्र- के चितवन मे दत्तचित्त, स्वामिसेवा में मरना श्रेयस्कर समझते थे । वे मरने से न डरकर सदै- स्वामिसेवा में इस प्रकार से रत रहते थे जैसे दुह- गिल स्त्री लज्जा से रहित होकर पति से स्पष्ट प्री- करने लगती है । वे युद्ध के लिये सदैव इस प्रका- से सन्नद्ध रहते थे जैसे कुलटा कामिनी यार [illegible] मिलने के लिये आतुर रहती है । वे स्वाभाविक वी- जिस समय समस्त फौजी सामान जिरह बख्तर आदि से सुसज्जित हो कर राजद्वार पर हाजिर हुए उस समय ऐसा मालूम होता था मानो लका का किला लेने के लिये रीछ और बन्दर बटुरे हों ।

राज नीति के साम, दान, दण्ड, भेद ये चार भेद माने गए है । अस्तु भीमदेव के दरबार में इ-

रो शस्त्रास्त्रों से सम्बन्ध रखने वाले उक्त क्रम से मरसिंह सेवरा, भैरो भट, लीला लन्छिन ब्राह्मण ार देनक्रम चारण चार मन्त्री थे । इन सब में अम-सेह की बात को भीमदेव अधिक मानता था । ामदेव ने उक्त मंत्रियो से कहा कि भाइयो, वास्तव मेरा बल तुम्ही लोग हो अब तुम्हारी जो इच्छा । सो कहो । तब वे मंत्री बोले कि हे महाराज! नस भूमि के लिये पांडवो ने भाइयों को मारा, 'चीच मृगया के व्यसन में व्यस्त रह कर मरा, केयी ने दशरथ से वचन लेकर राम को बनवास ेया, उस भूमि को पाने के उपाय मे कृतकार्य्य ोना सहज नहीं है । जिस जीवन की रक्षा के लिये ंसार के सब रस रंग की सामग्री एकत्रित की जाती ै, जिसके लिये नाना प्रकार के दुःख सह कर सदा ुख की आशा की जाती है, जिस जीवन की रक्षा े लिये और सुकीर्ति के लिये ही सपूर्ण प्रकार के यज्ञ तप जप होम दान धर्मादि किए जाते है उसी जीवन की आशा को त्याग कर जब कार्य्य किया जाता है तब कहीं भूमि पर अधिकार मिलता है ।

बस फिर क्या था "करैला, फिर नीम पर" भीमदेव ने उसी समय कूच का डंका बजाए जाने की आज्ञा दी । जैसे भिन्न भिन्न चिनगारिया एक में मिल कर विषम ज्वाला का स्वरूप धारण कर लेती है उसी प्रकार भीमदेव की चतुरंगिणी सेना अरुणोदय होते ही एकत्रित हो गई । उधर सोमेश्वर के वैर का बदला लेने का दृढविचार बॉधे हुए भीमदेव भी एक भीमकाय हाथी पर सवार आहुआ और खवास ने उसके शीस पर छत्र आच्छादित किया । सच है विचारने वाले सब कुछ विचारते है ; परन्तु वास्तव में होनहार क्या है सो कोई नहीं जानता । मन, बुद्धि, हृदय, इन्द्रिया और पराक्रम इन पाच करके जो साहसी हो, यज्ञ, जप, तप, यम, नियन, यह पाचों सुकृत जो करता हो "तत्त्व ज्ञान में जो पारागत हो"—सोई पुरुष समर में विजयी होता है । भीमदेव की इस सेना में सब से आगे मतवाले हाथियो की भीड़ तिनके पीछे अश्वारोही और तिनके पीछे बानैत पैदल चलते थे । ये मदश्रवित गडस्थल दतार दुरद साक्षात् पावस के मेघमाला से सुशोभित होते थे । उनके कुम्भ पर ढुरती हुई ढाल और तिन पर छोटी छोटी जरकसी वैरखे और फुल्ली ऐसी सुशोभित होती थी जैसे कामरूपी पर्व्वत के शिखर पर अगनित चौर छत्र आच्छादित होरहे हो और उनके किलायों पर अकड कर डटे हुए महावत ऐसे भान होते थे जैसे इन्द्र ने इन मेघो की मस्ती मद करने को लिये उन पर वज्र बैठाया हों । भीमदेव की इस प्रकार की प्रबल सेना जहां हो कर जाती थी वहा की रय्यत बर्बाद और देश दो कौडी का होता जाता था ।

निदान जब यह समाचार सोमेश्वर के पास पहुंचा तो वह भी शत्रु का साम्हना करने को सन्नद्ध हुआ । पृथ्वीराज तो दिल्ली में था ही नहीं वह कुछ दिन पाहिलेही उत्तर की तरफ चला गया था केवल प्रसगराय खीची, जामराय यद्दव, देवराज बग्गरी, भानराय भोटी, बलभद्र और कैमास और थोडे से सामन्त लोग गढ़ रक्षा के लिये दिल्ली में छोड़ गया था । जब इन लोगों ने यह समाचार सुना तो वे भी सोमेश्वर के स्वर में स्वर मिलाने के लिये अजमेर जा पहुचे । जब भोला भीमदेव का काल एवं हलाहलवत् प्रबल दल अजमेर के निपट आपहुचा तब सोमेश्वर ने भी अपने सामन्तों को शस्त्र धारण करने की आज्ञा दी ।

आकाश में सूक्ष्म लालिमा की झलक मारते ही अजमेर का राजद्वार कुसुम सा फूल उठा । बडे बडे बानैत क्षत्री वीर वरण वरण के बताने बताने से सजकर आ जुटे. भेरी नफेरी बजनें लगे, कडखेत उच्च स्वर से कडखों का अलाप कर स्वाभाविक ही सूरों के ओज को और भी उत्तेजना देने लगे । उस समय ऐसा मालूम होता था मानों

[१] दोहा ॥ पच सहस पचो सुकृत पचो पच प्रकृत ॥
पच रचि पचा महे तो भारथ सुजित्त ॥

(१) छोटा छोटा सजावट की झंडियों का विरख कहत है।
[२] ढाल के ऊपर ये चार फूल से लगे रहते हैं ।

सोमवध ।

(उन्तालीसवां समय ।)

भीम के समान बलवान राजा भीमदेव चौलकी गुजरात देश पर राज्य करता था । उसके अतुल पराक्रम और उसकी कीर्ति का आतंक चारो ओर इस प्रकार से फैला हुआ था कि कोई भी उसकी राज्य सीमा को लांघने का साहस न कर सकता था । यद्यपि वह अन्य सब प्रकार से सुखी और सन्तुष्ट था, परन्तु सोमेश्वर और पृथ्वीराज चौहान, ये दोनो पिता पुत्र उसके अन्तस में सालते थे । चहुआन वंश पर बदला लेने की चिन्ता मे व्यस्त हो कर भीमदेव इस प्रकार से व्याकुल बेचैन और अधीर हो रहा था जैसे हारा हुआ जुआरी दाव पर दाव लगाने को और पुंश्चली स्त्री यार के पास जाने को हमेशा बेचैन रहते है ।

इसलिये भीमदेव ने एक दिन रानिगदेव झाला, कन्ह कंठीर, जयसिंह चौरा, वीर धवलग देव, भानसिंह चौरा, राजा स्यामास्याम बिरसिंह चहुआन आदि सरदारों को बुलाकर कहा कि हे भाइयो, कल्लोल करती हुई कालिंदी के कूल पर स्थित दिल्ली नगर मे अकटक क्रीड़ा करता हुआ पृथ्वीराज और उसका पिता सोमेश्वर दिन रात मेरे कलेजे पर कॉटे से चुभते है । उसी पृथ्वीराज के कारण शहाबुद्दीन के हाथों मेरा सारगदेव मकवान ऐसा बहादुर सरदार मारा गया । उसीके कारण जूनागढ में मुझे तत्तार खा के साम्हने नीचा देखना पडा। अधिक क्या कहूं। सोभत्ती की लडाई मे तो जो कुछ बीतक बीता सो सभी को मालूम है । बस येही सब बाते मेरे मर्म पर खटकती है और जबतक उन दोनों पिता पुत्र का धुऑ न देख लूगा तब तक मुझे चैन पडने का नही । इसलिये अजमेर पर चढ़ाई करके पहिले सोमेश्वर को धूलि धूसित किया जाय और तब दिल्ली पर चढाई करके पृथ्वरिाज को पछाडा जाय ।

जैसे शायकाल होते ही अगनित तारे इकबारगी निकल पड़ते है, वैसे ही चारो के भाग भाग से भिन्न देश [illegible] ही भीमदेव की आज्ञा होते ही अगणित सेना समूह अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित होकर राजद्वार पर जुटने लगा । उन भिन्न भिन्न प्रदेशो के प्रतिनिधि । सामन्त और सर्दारो उमरावो को भी परवाने भेजे गए, और वे नियत समय पर पावस की नदी धाराओं के समान दल बल सहित उमड़ कर आने लगे । भादो प्रबल दल बादल के समान भीमदेव की बलवान सेना के गुजराती जवानो के ओजभरे गुलाबी चेहरे सन्ध्या समय के आसमान से सुशोभित होते थे । कई हजार विशाल काय काले काले सिन्धी जवानो की भी, वे जांघिया पहने कसी हुई पगड़ी सर पर बाँधे और ललाट पर लाल चन्दन की खौर लगाए हुए थे । उनके सीने पर तलवार की धार और बरछे की अनी चाहे गुड़जाय परन्तु वे मुड़कर पीछे देखने वाले नहीं थे । अच्छे अच्छे चञ्चल कच्छी घोड़ों को कुदाते हुए सवारों के चेहरे पर सूर्य्य का सा तेज विराजमान था । उन घोडो के आयाल आसमान की तरफ उठे हुए और सवारों की टेढी भौहे और लाल लाल आखे बडी भयावनी मालूम देती थीं । वीर लोग सासारिक माया मोह के सनेह एवं देह के नेह से निपट निरपेच्छ थे । वे सदैव परब्रह्म के चितवन मे दत्तचित्त, स्वामिसेवा मे मरना ही श्रेयस्कर समझते थे । वे मरने से न डरकर सदैव स्वामिसेवा में इस प्रकार से रत रहते थे जैसे दुहागिल स्त्री लज्जा से रहित होकर पति से स्पष्ट प्रीति करने लगती है । वे युद्ध के लिये सदैव इस प्रकार से सन्नद्ध रहते थे जैसे कुलटा कामिनी यार से मिलने के लिये आतुर रहती है । वे स्वाभाविक वीर जिस समय समस्त फौजी सामान जिरह बख्तर आदि से सुसज्जित हो कर राजद्वार पर हाजिर हुए उस समय ऐसा मालूम होता था मानो लका का किला लेने के लिये रीछ और बन्दर बटुरे हो ।

राज नीति के साम, दान, दण्ड, भेद ये चार भेद माने गए है । अस्तु भीमदेव के दरबार में इन

चारो शाखाओं से सम्बन्ध रखने वाले उक्त क्रम से अमरसिंह सेवरा, भैरो भट, लीला लच्छिन ब्राह्मण और देवक्रम चारण चार मंत्री थे। इन सब में अमरसिंह की बात को भीमदेव अधिक मानता था। भीमदेव ने उक्त मंत्रियों से कहा कि भाइयो, वास्तव में मेरा बल तुम्हीं लोग हो अब तुम्हारी जो इच्छा हो सो कहो। तब वे मंत्री बोले कि हे महाराज! जिस भूमि के लिये पांडवों ने भाइयों को मारा, दधीच मृगया के व्यसन में व्यस्त रह कर मरा, कैकेयी ने दशरथ से वचन लेकर राम को बनवास दिया, उस भूमि को पाने के उपाय में कृतकार्य्य होना सहज नहीं है। जिस जीवन की रक्षा के लिये संसार के सब रस रंग की सामग्री एकत्रित की जाती है, जिसके लिये नाना प्रकार के दुःख सह कर सदा सुख की आशा की जाती है, जिस जीवन की रक्षा के लिये और सुकीर्ति के लिये ही संपूर्ण प्रकार के यज्ञ तप जप होम दान धर्मादि किए जाते है उसी जीवन की आशा को त्याग कर जब कार्य्य किया जाता है तब कहीं भूमि पर अधिकार मिलता है।

बस फिर क्या था "करेला, फिर नीम पर" भीमदेव ने उसी समय कूच का डंका बजाए जाने की आज्ञा दी। जैसे भिन्न भिन्न चिनगारियां एक में मिल कर विषम ज्वाला का स्वरूप धारण कर लेती है उसी प्रकार भीमदेव की चतुरंगिणी सेना अरुणोदय होते ही एकत्रित हो गई। उधर सोमेश्वर के वैर का बदला लेने का दृढविचार बांधे हुए भीमदेव भी एक भीमकाय हाथी पर सवार आहुआ और खवास ने उसके शीस पर छत्र आच्छादित किया। सच है विचारने वाले सब कुछ विचारते है; परन्तु वास्तव में होनहार क्या है सो कोई नहीं जानता। मन, बुद्धि, हृदय, इन्द्रियां और पराक्रम इन पांच करके जो साहसी हो, यज्ञ, जप, तप, यम, नियम, यह पांचों सुकृत जो करता हो "तत्त्व ज्ञान में जो पारङ्गत हो"—सोई पुरुष समर में विजयी होता है। भीमदेव की इस सेना में सब से आगे मतवाले हाथियो की भीड तिनके पीछे अश्वारोही और तिनके पीछे बनैत पैदल चलते थे। ये मदश्रवित गडस्थल दंतार दुरद साक्षात् पावस के मेघमाला से सुशोभित होते थे। उनके कुम्भ पर ढुरती हुई ढाले और तिन पर छोटी छोटी जरकसी बैरखे और फुल्ली ऐसी सुशोभित होती थी जैसे कामरूपी पर्व्वत के शिखर पर अगनित चौर छत्र आच्छादित होरहे हो और उनके किलायों पर अकड कर डटे हुए महावत ऐसे भान होते थे जैसे इन्द्र ने इन मेघो की मस्ती मद करने को लिये उन पर वज्र बैठाया हों। भीमदेव की इस प्रकार की प्रबल सेना जहां हो कर जाती थी वहां की रय्यत बर्बाद और देश दो कौडी का होता जाता था।

निदान जब यह समाचार सोमेश्वर के पास पहुंचा तो वह भी शत्रु का साम्हना करने को सन्नद्ध हुआ। पृथ्वीराज तो दिल्ली में था ही नहीं वह कुछ दिन पाहिलेही उत्तर की तरफ चला गया था केवल प्रसंगराय खीची, जामराय यद्दव, देवराज बग्गरी, भानराय भोटी, बलभद्र और कैमास और थोडे से सामन्त लोग गढ़ रक्षा के लिये दिल्ली में छोड गया था। जब इन लोगों ने यह समाचार सुना तो वे भी सोमेश्वर के स्वर में स्वर मिलाने के लिये अजमेर जा पहुंचे। जब भोला भीमदेव का काल एवं हलाहलवत् प्रबल दल अजमेर के निपट आपहुंचा तब सोमेश्वर ने भी अपने सामन्तों को शस्त्र धारण करने की आज्ञा दी।

आकाश में सूक्ष्म लालिमा की झलक मरते ही अजमेर का राजद्वार कुसुम सा फूल उठा। बडे बडे बानैत क्षत्री वीर वरण वरण के अताने बताने से सजकर आ जुटे. भेरी नफेरी बजनें लगे, कडखेत उच्च स्वर से कडखों का अलाप कर स्वाभाविक ही सूरों के ओज को और भी उत्तेजना देने लगे। उस समय ऐसा मालूम होता था मानों

(१) दोहा ॥ पंच सहस पंचो सुकृत पंचो पंच प्रकृत्त ॥ पंच रंग्ग पंचा मदे तो भारथ्थ सुजित्त ॥

(२) छोटा छोटा सजावट की झंडियों का वर्णन करता है।

(३) ढाल के ऊपर ये चार फूल से लगे रहते हैं।

सोमवध।

(उन्तालीसवां समय।)

भीम के समान बलवान राजा भीमदेव सौलकी गुजरात देश पर राज्य करता था। उसके अतुल पराक्रम और उसकी कीर्ति का आतक चारों ओर इस प्रकार से फैला हुआ था कि कोई भी उसकी राज्य सीमा को चापने का साहस न कर सकता था। यद्यपि वह अन्य सब प्रकार से सुखी और सतुष्ट था, परन्तु सोमेश्वर और पृथ्वीराज चौहान, ये दोनों पिता पुत्र उसके अंतस में सालते थे। चहुआन वश पर बदला लेने की चिंता मे व्यस्त हो कर भीमदेव इस प्रकार से व्याकुल बेचैन और अधीर हो रहा था जैसे हारा हुआ ज्वारी दाव पर दाव लगाने को और पुंश्चली स्त्री यार के पास जाने को हमेशा बेसब्र रहते है।

इसलिये भीमदेव ने एक दिन रानिगदेव झाला, कन्ह कंठीर, जयसिंह चौरा, वीर धवलग देव, भानसिंह चौरा, राजा स्यामास्याम विरसिंह चहुआन आदि सरदारों को बुलाकर कहा कि हे भाइयो, कल्लोल करती हुई कालिंदी के कूल पर स्थित दिल्ली नगर मे अकटक क्रीड़ा करता हुआ पृथ्वीराज और उसका पिता सोमेश्वर दिन रात मेरे कलेजे पर कॉटे से चुभते है। उसी पृथ्वीराज के कारण शहाबुद्दीन के हाथों मेरा सारंगदेव मकवान ऐसा बहादुर सरदार मारा गया। उसीके कारण जूनागढ में मुझे तत्तार खा के साम्हने नीचा देखना पडा। अधिक क्या कहू। सोझत्ती की लडाई में तो जो कुछ वीतक वीता सो सभी को मालूम है। बस येही सब बातें मेरे मर्म पर खटकती है और जबतक उन दोनों पिता पुत्र का धुआँ न देख लूगा तब तक मुझे चैन पड़ने का नहीं। इसलिये अजमेर पर चढाई करके पहिले सोमेश्वर को धूलि धूमित किया जाय और तब दिल्ली पर चढाई करके पृथ्वीराज को पछाडा जाय।

जैसे सायकाल होते ही अगनित तारे इकबारगी निकल पडते है, नदी की बाढ़ के साथ साथ अगनित रेत कण आगे को ढकिलते है तैसे ही भीमदेव की आज्ञा होते ही अगनित सेना समूह अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित होकर राजद्वार पर जुटने लगा। उधर भिन्न भिन्न प्रदेशों के प्रतिनिधि शासक और अधीनस्थ उमराओं को भी परवाने भेज गए, और वे भी नियत समय पर पावस की नदी धाराओं के समान दल बल सहित उमड़ कर आने लगे। भादो के प्रबल दल बद्दल के समान भीमदेव की बलवान सेना के गुजराती जवानों के ओजभरे गुलाबी चेहरे सन्ध्या समय के आसमान से सुशोभित होते थे। कई कतारें विशाल काय कारे कारे सिन्धी जवानों की थी, वे जॅधिया पहने बटी हुई पगडी सर पर बांधे और ललाट पर लाल चन्दन की धौरें लगाए हुए थे। उनके सीने पर तलवार की धार और बरछे की अनी चाहे मुडजाय परन्तु वे मुडकर पीछे देखने वाले नहीं थे। अच्छे अच्छे चचल कच्छी घोडों को कुदाते हुए सवारो के चेहरे पर सूर्य्य का सा तेज विराजमान था। उन घोडो के आयाल आसमान की तरफ उठे हुए और सवारों की टेढी भौहे और लाल लाल आखे बडी भयावनी मालूम देती थी। वीर लोग सासारिक माया मोह के सनेह एव देह के नेह से निपट निरपेच्छ थे। वे सदैव परब्रह्म के चितवन मे दत्तचित्त, स्वामिसेवा मे मरना ही श्रेयस्कर समझते थे। वे मरने से न डरकर सदैव स्वामिसेवा मे इस प्रकार से रत रहते थे जैसे दुहागिल स्त्री लज्जा से रहित होकर पति मे स्पष्ट प्रीति करने लगती है। वे युद्ध के लिये सदैव इस प्रकार से सन्नद्ध रहते थे जैसे कुलटा कामिनी यार से मिलने के लिये आतुर रहती है। वे स्वाभाविक वीर जिस समय समस्त फौजी सामान जिरह बखतर आदि मे सुसज्जित हो कर राजद्वार पर हाजिर हुए उस समय ऐसा मालूम होता था मानो लका का किला लेने के लिये रीछ और बन्दर बटुरे हों।

राज नीति के साम, दान, दण्ड, भेद ये चार भेद माने गए है। अस्तु भीमदेव के दरबार मे इन

चारो शाखाओं से सम्बन्ध रखने वाले उक्त क्रम से अमरसिंह सेवरा, भैरो भट, लीला लञ्छिन ब्राह्मण और देवक्रम चारण चार मन्त्री थे। इन सब मे अमरसिंह की बात को भीमदेव अधिक मानता था। भीमदेव ने उक्त मंत्रियों से कहा कि भाइयो, वास्तव मे मेरा बल तुम्हीं लोग हो अब तुम्हारी जो इच्छा हो सो कहो। तब वे मंत्री बोले कि हे महाराज! जिस भूमि के लिये पांडवो ने भाइयो को मारा, दधीचि मृगया के व्यसन में व्यस्त रह कर मरा, कैकेयी ने दशरथ से वचन लेकर राम को बनवास दिया, उस भूमि को पाने के उपाय मे कृतकार्य्य होना सहज नहीं है। जिस जीवन की रक्षा के लिये संसार के सब रस रंग की सामग्री एकत्रित की जाती है, जिसके लिये नाना प्रकार के दुःख सह कर सदा सुख की आशा की जाती है, जिस जीवन की रक्षा के लिये और सुकीर्ति के लिये ही संपूर्ण प्रकार के यज्ञ तप जप होम दान धर्मादि किए जाते है उसी जीवन की आशा को त्याग कर जब कार्य्य किया जाता है तब कहीं भूमि पर अधिकार मिलता है।

बस फिर क्या था "करैला, फिर नीम पर" भीमदेव ने उसी समय कूच का डंका बजाए जाने की आज्ञा दी। जैसे भिन्न भिन्न चिनगारिया एक में मिल कर विषम ज्वाला का स्वरूप धारण कर लेती है उसी प्रकार भीमदेव की चतुरंगिणी सेना अरुणोदय होते ही एकत्रित हो गई। उधर सोमेश्वर के वैर का बदला लेने का दृढ़विचार बॉधे हुए भीमदेव भी एक भीमकाय हाथी पर सवार आहुआ और खवास ने उसके शीस पर छत्र आच्छादित किया। सच है विचारने वाले सब कुछ विचारते है; परन्तु वास्तव में होनहार क्या है सो कोई नहीं जानता। मन, बुद्धि, हृदय, इन्द्रिया और पराक्रम इन पाच करके जो साहसी हो, यज्ञ, जप, तप, यम, नियम, यह पाचों सुकृत जो करता हो "तत्त्व ज्ञान में जो पारङ्गत हो"—सोई पुरुष समर में विजयी होता है। भीमदेव की इस सेना में सब से आगे मतवाले हाथियो की भीड तिनके पीछे अश्वारोही और तिनके पीछे बनैत पैदल चलते थे। ये मदश्रवित गंडस्थल दतारे दुरद साक्षात् पावस के मेघमाला से सुशोभित होते थे। उनके कुम्भ पर ढुरती हुई ढाले और तिन पर छोटी छोटी जरकसी वैरखे और फुंन्नी ऐसी सुशोभित होती थी जैसे कामरूपी पर्व्वत के शिखर पर अगनित चौर छत्र आच्छादित होरहे हो और उनके किलायों पर अकड़ कर डटे हुए महावत ऐसे भान होते थे जैसे इन्द्र ने इन मेघो की मस्ती मद करने को लिये उन पर वज्र बैठाया हों। भीमदेव की इस प्रकार की प्रबल सेना जहां हो कर जाती थी वहा की रय्यत बर्बाद और देश दो कौडी का होता जाता था।

निदान जब यह समाचार सोमेश्वर के पास पहुंचा तों वह भी शत्रु का साम्हना करने को सन्नद्ध हुआ। पृथ्वीराज तो दिल्ली में था ही नहीं वह कुछ दिन पहिलेही उत्तर की तरफ चला गया था केवल प्रसंगराय षीची, जामराय यद्दव, देवराज बग्गरी, भानराय भोटी, बलभद्र और कैमास और थोडे से सामन्त लोग गढ़ रक्षा के लिये दिल्ली में छोड गया था। जब इन लोगों ने यह समाचार सुना तो वे भी सोमेश्वर के स्वर में स्वर मिलाने के लिये अजमेर जा पहुचे। जब भोला भीमदेव का काल एवं हलाहलवत् प्रबल दल अजमेर के निपट आपहुंचा तब सोमेश्वर ने भी अपने सामन्तों को शस्त्र धारण करने की आज्ञा दी।

आकाश में सूक्ष्म लालिमा की झलक मारते ही अजमेर का राजद्वार कुसुम सा फूल उठा। बडे बडे बानैत क्षत्री वीर वरण वरण के बाने बनाने से सजकर आ जुटे, भेरी नफेरी बजने लगे, कडखेत उच्च स्वर से कडखों का अलाप कर स्वाभाविक ही सूरों के ओज को और भी उत्तेजना देने लगे। उस समय ऐसा मालूम होता था मानों

(१) दोहा ॥ पंच सहस पचों सुकृत पचों पंच प्रकृत्त ॥
पंच रहित पंचा गहे तो भारथ सुजित्त ॥

(२) छोटा छोटा सजावट की झंडियों का वैरख कहते हैं।
(३) ढाल के ऊपर के चार फूल से जो लगे रहते हैं।

साक्षात् ऋतुराज बसत का सेनासमूह इकट्ठा हुआ हो और तिरपट नृत्य करते हुए तत्ते तुपार साक्षात उसके सहचर चचरीक से सुशोभित होते थे। जैसिह का पुत्र जैसिहदेव और कन्ह सेना नायक नियत हुए। इस सन्नद्ध सेना के बीच में स्थित नरनाह कन्ह बोला— हे भाइयो! जिस दिन जन्म होता है इस जीवन के भविष्य का निबटेरा उसी दिन हो चुकता है, परन्तु मोह रूपी आवरण के कारण मुक्ति का मार्ग "निज कर्तव्य" नही सूझता। निश्चय ज्ञानी को कोई कर्म इस प्रकार से नही व्यापता जैसे जल में जल का प्रतिबिंब नही पडता और हे भाइयो क्षत्रियों का धर्म युद्ध मे मरना और मारना ही है।

जिस समय दोनों दल अजमेर में उपस्थित हुए, और दोनों सेनाओं के राजपूत एक दूसरे पर झपटने को उद्यत हुए त्योंही इधर से नरनाह कन्ह की आखो पर से पट्टा हटाया गया। दिखादाव होते ही कन्ह काल की खीस ऐसी तीक्ष्ण तलवार से शत्रु दल को काई सा फाडने एव कड़वी सा काटने लगा। कन्ह की विकट काट कपट के कारण काली कपाली और भूत वैतालों की भूख भाग गई, हजारों हाथी सुड भसुड बिन होकर ढोल से ढलकने लगे अश्व असवार बिन होकर पडे पडे पैर पटकने लगे, सूर वीरों के कटे हुए सर मार मार बकते और रुड रण खेत मे हथयार करते थे। कट कर पड़े हुए अगनित जीवो के खडित अवयव और मास मेदा मज्जा से मासाहारी पशुओं की क्षुधा शान्त होगई। कन्ह के ऐसे पराक्रम के कारण भीमदेव की सेना छिन्न भिन्न होकर पीछे पछलने लगीं तब तो भीमदेव ने कुपित होकर स्वय अपना हाथी आगे को बढ़ाया। भीमदेव के साथ साथ उसके सैनिक भी जान हथेली पर रख कर आगे को झुके। वे गुजराती वीर अपनी टेक पर डटे पीछे हटना मानो जानते ही न थे। और इधर कन्ह उन्हे काट काट कर पाटता जाता था। उस समय वह रणभूमि सुन्दर सरोवर सी भासित होती थी। खून पानी सा, कटे हुए हाथ पैर मगर मच्छ से, बार सिवार से, मां मज्जा कीचड सा, उतराते हुए नव युवकों के मु कमल पुष्प से, और उनके अधखुले चक्षु चातः एव चंचरीक से जान पड़ते थे। जैसे द्वापर युग नन्द के कन्हैया ने यमलार्जुन को नारद के शाप मुक्त किया था वैसे ही कलियुग में कन्ह ने व वीरों को जीवन मोक्ष कर दिया। कवि कहता कि खेत में खडे होकर जब दो भिड़ते हैं तब ए गिरता ही है परन्तु सच्चे सूरवीरों का पराक्रम स सराहनीय होता है।

उधर भीमदेव की तरफ से जामराय यादव ने जोर किया और उसे इधर से खेते खंगार ने आडे हाथों लिया। पहिले तो वे दोनो परस्पर के अधीन स्थ सैनिकों को काट काट कर रक्त के कुड भरते रहे अन्त में दोनो मदान्ध बैल की भाँति भिर कर द्वन्दयुद्ध करने लगे। सोमेश्वरजी की तरफ से बली बलभद्र भी भारी पराक्रम दिखा रहा था। बली बलभद्र स्वेत पोशाक पहने था उसका हाथी भी स्वेत था यहा तक कि घोडे टट्टू जो कुछ था सब स्वेत स्वेत था। गुजराती सेना ने पहिले बलभद्र को घेरा। बलभद्र ने अपने वशभर खूब मोरचा छेड़ा परन्तु अन्त मे अमावस की रात्रि के समान सघटित सिन्धी सेना सीमा पार करने लगी और सोमेश्वर के पास तक जा धमकी। भीमदेव की सेना ने सोमेश्वर को चारो ओर से घेर लिया। यह देख कर चहुआन सैनिक भी डके की चोब पर रणतूर की आवाज करके बडे पराक्रम करते हुए आगे झुके। किंचित् काल के उपरान्त चहुआन और चालुक्य का परस्पर चौनजरा होगया। उस समय दोनों के प्रज्वलित अग्नि ज्वाला से नेत्र खासे खून भरे कटोरे से देख पडते थे। वे दोनों वीर साक्षात् देवगुरु बृहस्पति और दैत्यगुरु शुक्र से सुशोभित होते थे। दोनों ओर के फौजी जवान हथेली पर प्राण रख कर अपने अपने नमक की बजाने में दत्तचित थे। ज्यों ज्यों घोर गर्जना कर रणवाद्य बजते और भूत वैताल नाचते थे, त्यों त्यों सिपाहियो का चित्त चौगुना चग

सा चढ़ता जाता था। कुछ देर खूब लोह झडा, हजारों सिपाही और हाथी घोड़े कट कर लोथो के अटब लग गए, आखिरकार गुजराती फौज ने सोमेश्वर को बुरी तरह से घेर लिया। निदान जब सोमेश्वर ने न लिया कि अब यहा से जीते जागते निकलना ठिन है तब वह भी घोडे को फटकार कर आख चे वार करने लगा। सोमेश्वर केवल पचास अश्वा-हियों के साथ भीमदेव के पाच हजार सवारों में र गया था। उनमें से ३०० सिपाही सोमेश्वर ने य मार गिराए और अन्त में आप भी पच तत्व को ाप्त हुआ। परन्तु चलते चलते चालुक्य को भी स योग्य न छोड गया कि फिर वह खेत मे खडा ो सके। जैसे ही एक तरफ सोमेश्वर गिरा वैसे ही धर भीमदेव भी नीमजा होकर पृथ्वीतल पर पतित ुआ। बस उसके साथी भी उसे डांली मे रख कर त से हटे और इसी पर कलह का भी अन्त हुआ।

जब यह समाचार पृथ्वीराज के पास पहुचा तो ह क्रोध और शोक से विह्वल सा हो गया। परन्तु उसने अपने को सम्हाला और सोमेश्वर का पिंडदान एव श्राद्ध कर्म करने लगा। पृथ्वीराज ने भूमिशैय्या व्रत धारण करके अन्यान्य ब्रह्मचर्य नियमों को पालन करते हुये १२ दिन विताए और इतने में अतुलित धन स्वर्ण का दान किया। उसने आठ सौ गौवें दान की जिनमें प्रत्येक के सींग और खुरों पर बारह बारह भार सोना मढा हुआ था। इसके सिवाय उसने शास्त्रोक्त और भी षोडस दान दिए और श्राद्ध कर्म समाप्त करके प्रतिज्ञा की कि जब तक भीमदेव को मार कर पिता का बैर न भॅजा लूगा तब तक न तो घी खाऊगा और न सिर पर पगड़ी बॉधूगा। ऐसा विषम व्रत करके पृथ्वीराज की तो इच्छा थी कि इसी समय गुजरात पर चढ़ाई की जाय परन्तु मंत्रियों के मत से यह निश्चय हुआ कि पहिले अजमेर का राज्यतिलक हो जाय।

इसलिये तमाम प्रजा मे इस बात की सूचना दे दी गई। इधर महल मे जहा तहां यज्ञ जप तप दान पुण्यादि होने लगे। उत्तम ज्योतिषियों के सशोधित और निश्चित मुहूर्त के आने पर दर्बार की तय्यारी की गई। सब तरह के राजसी साज समानों से सभा मडप सजाया गया। उस समय उस स्थान की ऐसी शोभा थी जैसे साक्षात् इन्द्र का अखाडा पृथ्वी पर उतर आया हो। जहा तहा जडे हुए जरकसी वस्त्र और उनमें लगे हुए सब किस्म के जवाहिरात ऐसे जान पडते थे जैसे आसमान में नवग्रह प्रकाशित हो रहे हों। कहीं कहीं लटकते हुए अच्छे अच्छे स्वच्छ मोतियों के गुच्छे उडगन समूह से ज्ञात होते थे। इस प्रकार के सुसज्जित सभामडप के बीच में स्थापित राजगद्दी पर विराजित राजा पृथ्वीराज साक्षात् सूर्य्य का सा अंश सुशोभित होता था। एक तरफ दधि, दूब, तदुल, गोरोचन, केसर, कपूर और रोली आदि आवश्यक शुभ सूचक सामग्री और पडितों की मडली उपस्थित थी और दूसरी तरफ सोलहो शृगार और बारहो आभूषणों से सुसज्जित मगला मुखी महिलाए ताल स्वर सहित कलकण्ठ से गान कर रही थीं। उनके रग बिरंगे वस्त्रों पर पड़ी हुई पुष्पों की मालाऍ तो मानो देखने वालों के मन मोल लेती थीं। समय आने पर सखियों सहित रानी इच्छनी भी रनिवास से निकल कर सभा मडप मे आई। उसकी अवाई ऐसी मालूम होती थी मानो अन्यान्य अप्सराओं सहित अखाडे पर आ रही हों। इच्छनी रानी भी पृथ्वीराज के पास बाऍ आसन पर आबैठी और दोनो की गाठ जोडी गई। उस समय सब लोग यथावित्त न्योछावरें करने लगे। लग्न का ठीक वेध होने पर पहिले कन्ह ने उसके पीछे निड्डुर राठौर और तिसके बाद अन्यान्य सामन्तों ने बारी बारी से पृथ्वीराज का तिलक किया। उस समय पृथ्वीराज के शीश पर ढुरता हुआ स्वेत चॅवर ऐसा सुशोभित होता था जैसे चन्द्रमा ने चिढ कर रीस से अपनी किरणों को सूर्य्य मण्डल पर जा डटाया हो और सोने की डाडी पर आरोपित रत्नजटित छत्र ऐसा मालूम होता था मानो अन्य पच ग्रह मगल के मंडल पर एकत्र आ विराज रहे हों॥

पज्जून छौंगा नाम।

(चालीसवां समय।)

जब पृथ्वीराज ने सुना कि भीमदेव ने अजमेर पर चढाई करके सोमेश्वर को मार डाला, तब वह तुरन्त उलटे पैर दिल्ली को चला आया। पृथ्वीराज ने पज्जूनराज कछवाहे को निज में बुला कर उसके सिर पर छौगा बाँधा और छत्र दिया और कहा कि हे भाइ! भीमदेव ने घर बैठे उपद्रव उठाया है, यह बात मुझे बहुत ही खटकती है, इसलिये तुम और मलयसिंह अपनी सेना लेकर जाओ और भीम को समझाओ।

भीमदेव उस समय पट्टनपुर न जाकर सोनिंगरा के किले में पड़ा हुआ था। अतएव पृथ्वीराज को दूत द्वारा इस बात का भी पता लग चुका था। इसलिये उसने पज्जूनराय को वहीं पर जा जुडने की आज्ञा दी। निदान पज्जून राय भी चुने हुए योधाओं की फौज लेकर मलयसिंह के सहित भीमदेव पर चढ चला। पज्जूनराय और मलयसिंह दोनों कछवाहे वीर सब हथियारों से सजे बजे तूणीर बाँधे कमान काँध अच्छे अच्छे काच्छियों पर सवार ऐसे सुशोभित होते थे जैसे उत्तरापति अभिमन्यु और अर्जुन कौरव दल का व्यूह भेदने के लिये प्रस्तुत हों। वे दोनों पिता पुत्र बराबर पडाव पर पडाव डालते और शत्रु की सीमा में हलचल मचाते जाते थे। जब उन्हों ने भीमदेव की सरहद के नगरों पर घेरा डालना और राजसी चौकियों को लूटाना शुरू किया तब यह सब समाचार भीमदेव के दरबार में सुनाया गया। इस खबर के सुनते ही भीमदेव पूँछ दबे हुए सर्प की भाँति कुपित होकर सेना सहित चढ दौडा, आते ही रणबाँकुरे मलयसिंह ने उसका मुकाबला किया अभी सिपाहियों की परस्पर चार चोटें भी न हो पाई थी कि पज्जूनराय ने भीमदेव का सिरमउ छौंगा ले लिया और चलता हुआ। पज्जूनराय ज सात कोस निकल आया तब उसे मालूम हुआ कि उसकी चाबुक रह गई है, इसलिये वह फिर उलट फिरा और चौप से चढी आती हुई चालुक चमू में चाबुक लेने के लिये पैठ पड़ा। पज्जूनराय के पहुँचते ही चालुक्क सेना ने धर मार करना शु किया। पज्जून के योधा भी खूब बार बचाने चले मलयसिंह के मुकाबले में गुजराती सेना मनहा होकर ठिठक गई और वे दोनों बाप बेटे भीमदे का सिर छत्र छौंगा लेकर सकुशल दिल्ली आ उपस्थित हुए।

जिस समय पज्जूनराय ने वह छौंगा पृथ्वीराज के साम्हने उपस्थित किया तो पृथ्वीराज बडा प्रस हुआ उसने कहा धन्य है कूरभ! तू बडा पराक्रमी है तू भीमदेव से कहीं सहस गुना अधिक बलवा है—यों कह कर वह छौंगा निसानी की तरह उस को वापस दिया और अपनी तरफ से एक घोड़ा भी दिया।

कवि कहता है कि पृथ्वीराज ने बडी बडी लडाइयों की और उसके यहा एक से एक चढ बढ क अच्छे अच्छे पराक्रमी सामन्त थे परन्तु पज्जूनराय उन सब का सरताज था क्योंकि उसने जैसा यह पराक्रम किया वैसा और किसी ने नहीं किया।



पज्जून चालुक।

(इकतालीसवां समय।)

जब जैचन्द ने देखा कि अब मै सम्मुख चाल करके चहुआन को नही दबा सकता तब उसने सामनीति का आश्रय लिया और अपने भाई बालुका राय को सहायक देकर शहाबुद्दीन की सेना को दिल्ली पर चढाई करने के लिये उसकाया।

निदान बालुका राय और ततारखा दो लाख सेना के साथ दिल्ली पति पृथ्वीराज को दमन करने को लिये चले। जब वे पडाव पर पडाव आगे बढते हुए दिल्ली की सरहद्द दबाने लगे तो दिल्ली के राज दूत ने यह समाचार पृथ्वीराज के दबार में निवेदन किया।

उस समय पृथ्वीराज पिता का मृतकर्म करते हुए अशौच में था। इसलिये उसने विचार किया कि इस समय अपने एवज पर किस को भेजू? अन्त में उसका विचार पज्जूनराय कछवाहे पर स्थिर हुआ क्योंकि पृथ्वीराज भली भाति जानता था कि वह सच्चा स्वामिधर्म्मधारी वीर तन धन त्रिया आदि किसी सासारिक वस्तु का लालची नहीं है वह केवल मेरे काम पर मरना जानता है, इसलिये उसी को भेजना उचित होगा—परन्तु पृथ्वीराज ने एकदम ऐसा करना उचित न समझा, सामन्तों के मन की थाह लेने तथा अपने पर से पीछे कहने सुनने का छप्पर उतारने के लिये पृथ्वीराज ने सब सामन्त एव सैनिकों को एकत्र किया और भरे दरबार में पान रख कर उपरोक्त चढाई के समाचार की सूचना देते हुए कहा कि जो पुरुष उक्त आक्रमण को रोकने के लिये सन्नद्ध हो वह इस बीडे को उठावे और ससार मे सुयश पावे। उस समय रामराय बड़गुज्जर, जैत प्रमार, दाहमा चामड, भाटी, कामधुज्ज, आदि सब वीर उपस्थित थे, परन्तु बीडा उठाने का हाथ किसी का भी न पडा। तब रणबाकुरे कूरम्भराय पज्जून ने अपने आसन से उठ कर बीरा उठा लिया। पज्जूनराय के बीड़ा उठाते ही सारी सभा मे आनन्द ध्वनि और पज्जून वीर की वाह वाह होने लगी। सब लोग कहने लगे धन्य है यही तो पज्जूनराय है जिसने भीमदेव की भरी सेना में से उसका छोगा उतार लिया। पज्जूनराय के पान लेते ही पृथ्वीराज ने अपनी तलवार भी उसे बगस दी। पज्जूनराय दरबार से तलवार बांध कर वैसा ही अपने घर को चला आया और उसने सब समाचार अपने भाइयों से कह सुनाया। निदान बलिभद्र, कन्ह, वीरसिंह, पल्हन आदि उसके सब भाई और निज की फौज सहित मलयसिंह भी उसका साथ देने को सन्नद्ध हुए।

इस प्रकार पचमी रविवार को पज्जूनराय दिल्ली राज्य की समस्त सेना और सामन्तों का सरताज बन कर शहाबुद्दीन और चालुक की सगठित सेना का आक्रमण रोकने के लिये चल पडा। उस सुसज्जित सेना के बीच मे पाचो भाइयों सहित पज्जूनराय ऐसा सुशोभित होता था जैसे भारथ के युद्ध में पांडवों के बीच उनके रक्षक श्री कृष्ण हों। ज्योंही पज्जूनराय की जोरदार सेना समुद्र के ज्वार की तरह दिल्ली के सिवाने से आगे बढ़ी त्योंही भारत के शुभ सूचक शकुन दिखाई दिए। मृग सहित मृगियों का झुण्ड दाहिने तरफ आता हुआ देख पडा। बाएँ तरफ सारस का जोडा बोलता था. उत्तर की तरफ योगिनी शब्द करती थी, और सम्मुख मुँह खोले मृगराज देख पडा जिसे पज्जूनराय ने प्रणाम किया॥

इधर से पज्जूनराय बढता जाता था। उधर से बालुका राय चला आता था। जब हिन्दू मुसल्मान दोनों सेनाओं का आमना सामना हुआ तो तत्तार खा और खुरसानखा ने अपनी सेना को सर्प व्यूहाकार विरचा और पज्जूनराय ने राजपूत सेना को गरुड व्यूह बनाया। इस व्यूहाकार के जामराय यादव और मदनसिंह पडिहार पैर, जैत प्रमार पूछ, भीम भटी पिंड और पाव, चन्द पुण्डीर जाव, चौच

१ इस समय का आखिरी छन्द १९– 'उभय बीस अरु पच दिन न्हाय दान दिये बीर"॥

मुख और जीभ भाईयों सहित पज्जून, गंरदन आजान वाहु लोहाना और स की चोटी बली बलभद्रराय थे। तिथि नौमी शुक्रवार को पांच घड़ी दिन चढा था जिस समय पज्जूनराय गिद्ध एव ऊद रुप होकर कमधुज्ज और शहाबुद्दीन के सेना रुपी सर्प एव पोस्ते के पुष्प को भक्षण करने लगा। दोनों तरफ के योद्धा लोग म्यान से तलवारें निकाल कर मार मार करते हुए परस्पर जुट पडे । झनाझन लोहे की लपेट से आग की चिनगारिया झरने लगी। मय टोप और जिरह बख्तर के कट कट कर ज्वान जमीन पर लोटने लगे। यों ही होते होते बलभद्र ने ऐसा जोर पकडा कि शत्रु सेना में खलबली पड़ गई। यवन दल को दलन करता हुआ पज्जूनराय ऐसा सुशोभित होता था जैसे गहरे सरोवर में केल क्रीडा करता हुआ मदान्ध कुंजर सघन सरसिज समूह का सत्यानाश कर रहा हो।

अन्त में मुसल्मानी सेना ने पीठ दिखाई और पज्जूनराय के हाथ खेत रहा। इस युद्ध में वालुका राय के चार भाई काम आए और पज्जूनराय के पाचो भाई अत्यत घायल होकर अचेत हुए। बलभद्र, कन्ह पचाइन जैतसिंह आदि तो साधारण ही घायल हुए थे परतु पल्हन के शरीर में साठ घाव आए थे। पज्जूनराय ने पहिले तो दोनों तरफ के सब घायलों को मरहम पट्टी का बन्दोबस्त करवाया फिर मुसल्मान मुर्दों को मिट्टी दिलवाई और हिन्दुओं की दाह क्रिया करवाई। तदनन्तर शाही सेना के भंगेडों का सब सामान सग्गडों पर लदवा कर वह दिल्ली को रवाना हुआ।

जिस समय शत्रु दल को विदार कर पज्जूनराय दिल्ली पहुँचा और पृथ्वीराज से मिला उस दिन राजा प्रजा सब ने बडी खुशी मनाई।



चन्द द्वारिका गमन।

(चालीसवाँ समय।)

एक समय कवि चन्द की द्वारिकापुरी को यात्रा करने की इच्छा हुई। इसलिये उसने पृथ्वीराज से छुट्टी लेकर अपना यात्रा सम्बन्धी सब साज सामान दुरुस्त किया कविचन्द के साथ में जाने के लिये सात हाथी दो हजार घोडे सात रथ और आठ सौ धनुर्धारी तयार हुए। साथ ही इसके राजा पृथ्वीराज और सौ सामन्तो ने भी अपनी तरफ से बहुत से घोड़े हाथी और साज सामान कविचन्द को भेट किए। ऐसे सब लावलश्कर के साथ कवि चद आनन्द की दुन्दुभी बजाता हुआ चित्रकोट अर्थात् चित्तौर के पास पहुचा। दो योजन की दूरी से जब चित्तौर का अति उतंग दुर्ग दृष्टिगोचर होने लगा तो कविचन्द ने अपने डेरे वहीं पर डाल दिए।

जिस स्थान पर चित्तौर का किला है वह किसी समय उतग पर्वतों से परिवेष्टित सुन्दर झरनों के निर्मल नीरमय सरोवरों सहित सघन बन आच्छादित सुरम्य स्थल था। चित्रांगद नामक एक मौरि वंशीय राजा ने उस स्थान की रमणीकता से प्रसन्न होकर चित्तौरके "वर्तमान" किले की नीव डलवाई थी और चित्रागद नाम का एक तालाब भी खुदवाया था। कुछ दिनों के बाद जब चित्तौर का किला, बुर्ज, कोट, कगूरा, अटा, अटारी, महल, दुमहला, ओख, गोख, झारि, झरोखा, चित्रसारी, आदि से सुसज्जित हो चुका और जहा तहा हाट, बाट, चौहटे बाग, बाजार, चावर्न्च आदि भी यथा स्थान बनठन कर दुरुस्त होगए, तब वहा पर छत्तीसों वंश के क्षत्री, उन के परिकर के लोग और व्यापारी आदि आ आ कर निवास करने लगे। तब मौरी राजा ने वहा पर गोमुख कुण्ड और आनन्द कानन के समान एक आनन्दमय उपवन भी बनवाया। इसी काम के होते समय, एक पहाड की कन्दरा के खोदन पर वहां एक तपस्वी निकला जिसके सम्मुख उसके शिष्य को एक सिंहनी भक्षण कर रही थी। इस घटना की पूर्व्व कथा इस प्रकार है कि– अयोध्यापुरी में एक कीर्ति धवल नाम का राजा राज्य करता था। वह एक समय शिकार खेलने गया और उसने एक गर्भवती मृगी को बाण मारा। बाण के लगते ही वह मृगी विकल होकर तरफराने लगी। यह देखकर राजा के हृदय में ऐसा वैराग्य उत्पन्न हुआ कि फिर वह लौट कर राजधानी को न गया, अपने पुत्र के साथ वहीं से तीर्थ यात्रा करता हुआ चित्तौर में आकर तप करने लगा। दैवात उसके महल की एक दासी वहा से आ निकली। उसने राजा को पहचान लिया और यह समाचार रानी को जा सुनाया। रानी इस समाचार को सुनकर ऐसी प्रसन्न हुई कि मारे उत्कंठा के जैसी बैठी थी वैसी ही उठ कर चल दी। उसे यह भी ध्यान न रहा कि वह कहा जा रही है। वह ज्योंहीं गोख की खिड़की से आगे बढी कि सैकडों हाथ ऊंचे से ज़मीन पर गिर कर चकनाचूर हो गई–सच है जप, तप, पूजा, पाठ, स्नान, ध्यान, तिलक, छापा, पोथी, पुरान आदि से कुछ भी नहीं होता, ये सब चित्त शुद्धि के साधन मात्र है, मरते समय चित्त में जो वासना स्थित हो उसी के अनुसार पुर्नजन्म होता है निदान उस रानी ने सिंहनी का जन्म पाया और भूलते भटकते उसी स्थान पर आ पहुँची जहा राजा कीर्तिपाल मय अपने सुकुमार कुँवर के तपस्या करता था। वह स्वाभाविक भीषणवेष सिंहनी क्षुधा से तो पीडित थी ही बस उसने आते ही राजकुमार पर हाथ साफ किया, परन्तु ज्योंही उसका मास खाया चहती थी कि उसे पूर्व्व जन्म की सुधि आ गई, बस वह उसी अवस्था में पाषाण की सी मूर्ति स्थिर रह गई और एक महीने पर्यन्त बिना जल–पान के आसू मोचन करते करते उसके प्राण पखेरू पंचभूत पजर से विदा हुए।

जब कीर्तिपाल ने सिंहनी को कुमार को मारते हुए देखा तो वह साहस करके कुमार के पास दौड गया और उसने उसके कान में राम नाम ज.

सुनाया परन्तु राजा को इससे बड़ा दुख हुआ तब उसके गुरु ने समझाया कि तुमने जो गर्भवती हरिनी मारी थी—यह सब उसीका फल है।

'जब किसी स्त्री को नैहर से आए हुए एक साधारण पायक का समाचार मिलता है तो वह उसे पिता के समान प्यार करती है" जब कविचन्द के आने का समाचार पृथाकुमारी के कर्णगोचर हुआ तो वह अगनित दास दासियों को लेकर पालकी में सवार होकर कविचन्द के डेरे पर आई और कविचन्द को भेट देने के लिये एक सहस्र सीतारामी स्वर्ण की थारियों में जरकसी वस्त्र पान अगर और मोतियों की मालाएं लाई। कविचन्द ने पृथाकुमारी के सम्मान को स्वीकार करके उसे आशीर्वाद दिया और किले को विदा किया। पीछे से आप भी नीलकंठ महादेव और भवानी के दर्शन करता हुआ चित्तौर में पहुच कर रावल जी से मिला। अवाईजवाई हो जाने के बाद रावल समर सिंह जी ने कविचन्द को भोजन करने के लिये बुलाया। सब सर्दारों सहित रावल जी और कविचन्द जेवने को बैठे और भांति भांति के षटरस भोजन परोसे गए। भोजन हो चुकने के बाद टीका और पान सुपारी हुआ। तिसके बाद रावल जी ने कविचन्द को बहुतसा धन रत्न और मोतियों की माला दी। जब चन्द चलने लगा तो सजे हुए घोड़े, एक गजमुक्ता और एक रत्नजटित सुखपाल देकर रावल जी ने उसे विदा किया।

कविचन्द चित्तौर से विदा होकर पट्टनपुर होता हुआ पश्चिम पयोनिधि के किनारे पर जा पहुचा। ज्यों ही कविचन्द को रणछोड़जी के देवालय की ध्वजा देख पड़ी त्योंही उसने साथियो सहित सवारी से उतर कर पैदल चलना शुरू किया। और मगनों को दान देता हुआ पहिले गोमती के दर्शन करने गया, वहा से चल कर भगवान रणछोड़ जी के मन्दिर पर पहुचा। वहा देखता क्या है कि मन्दिर का छत्र सर्वाङ्ग मानें में मढ़ा हुआ है और उसमें लगी हुई जहा तहा मोतियों की लड़ी ऐसी सुशोभित होती हैं जैसे अनन्त सूर्य्यमंडल के मध्य में चन्द्रमा की किरणें अपनी कलक कालिमा के काटने को आडटी हों। कविचन्द ने पहिले परिक्रमा करके इस प्रकार स्तुति की। हे गोविन्द तू ही देह है, तू ही मन है, तूही दिगपाल है, तू ही यम है, तू ही द्रौपदी की रक्षा करने वाला है, तू ही त्रिदेव है, तूही ब्रह्माण्ड है, तू ही तीन कूड है तू ही ब्रह्माण्ड के खण्ड है, तू ही ज्ञान समूह है, तूही अप्सराओं का जूह है। हे प्रभु तेरी ही दी हुई शक्ति से गिर पृथ्वी को सिर पर रक्खे है और हर अर्थात् गिर ससार की रक्षा करते है। इसके बाद कवि ने देवी की स्तुति की। उसने कहा—हे ऋषि वरो द्वारा पूजित ससार की सार एव बीज स्वरूप सक्ति तेरा भजन करने से ससार मात्र को सिद्धि प्राप्त हो सकती है। शिशुपाल और कालयमन को नाश करने वाली। हे एक भग्नी और पॉच पतिवाली तुझे नमस्कार है। संसार में ऋद्धि, सिद्धि, काल, कीर्ति, गति आदि, अन्त, स्वर्ग, नर्क, जीव, जन्तु, चारों युग, भूमि, धूम, जल, वायु, तप, ताप, तुषार, भान, मान, मुक्ति, बाल, वृद्ध, युवा, व्याघ्र, सार, बाग, मुड, कुड, छत्र, छत्रधारी, रूप, रंग, राग, भृत्त, वृत्त, बागवानी आदि जो कुछ है सो हे माता चडिके तुही है।

इसके पश्चात कवि ने शास्त्रोक्त विधिवत् हवन करके तुलादान किया और हाथी, घोडे, रथ, अन्न, वस्त्र, स्वर्ण, माणिक, मोती आदि दिव्य पदार्थ दान किए,—कवि कहता है कि जो मनुष्य द्वारिकापुरी में जाकर छापे नहीं लगवाते वे दूसरे जन्म में घोड़े होते है और उनके बाजू और पीठ दागे जाते है * जो भगवान का दर्शन और बन्दना नहीं करते वे जरायुज जन्म पाते है और जो प्रदक्षिणा नहीं करते वे कोल्हू के बैल होते है अथवा रहॅट में जोते जाते है। जो मनुष्य गोमती में स्नान

* [illegible] इस बात का एक अच्छा प्रमाण है कि उस समय भी [illegible] के घुड़सार के घोड़े दागे जाते थे।

करके अपने को शुद्ध नहीं करता वह दूसरे जन्म में [1] जैनयोगी होता है, जिनके केश नोचे जाते है जो कभी मुँह नहीं धोते, स्नान नहीं करते, आंख में आंसू आने से अनेक [2] उपवास करते है, गंगा, गया प्रयाग आदि किसी को नहीं मानते— "फिर कहिए ऐसे अनिस्थिर–मत जीव की क्या गति हो गी।"

द्वारिकापुरी से चलकर चन्द ने भोला–भीमदेव के आचार्य्य अमर सिंह सेवरा से मिलना विचार कर पट्टनपुर के उपकंठ में आकर बसेरा लिया। कविचन्द ने देखा कि पट्टनपुर की बस्ती बडी ही विस्तीर्ण, सब प्रकार के राजसी और व्यापारी सामानों से परिपूर्ण एक अति उत्तम और रमणीक स्थान है। प्रत्येक नगर निवासी मनुष्य के गले में सोने के गुंज गोफ और मोतियों की मालाए पडी हुई हैं। स्वर्ण का दान कोई देने से भी नहीं लेता। कुत्तों के गले में चाँदी के पट्टे पड़े है। हाथियों के दाँतो में जडाऊ मुहालें जडी है। शहर के एक ओर समुद्र की मेघास्पर्श लहरों का शोर होता है दूसरी तरफ छोटी छोटी पहाड़ी और उनके बीचों बीच अच्छे अच्छे बाग बगीचे है जिनमें सब प्रकार के फल फूलदार छोटे बडे बिरवा लहलहा रहे है, बीच बीच में कुंड कुएँ और तालाब है जिनमें पुरैन खिल रही है और हंस, सारस, बतक आदि जलचर पक्षी कल्लोल करते हुए क्रीडा कर रहे है और उन्हीं के तीर तीर सुन्दर सोरहो शृंगार बारहो आभूषणों से सुसज्जित सुन्दरी स्वर्ण कलसो एव झारियों में जल भर भर कर आती जाती है। इस प्रकार गुलजार नगरी देखकर कविचद का चित्त प्रसन्न हो गया।

कविचन्द ने भी एक हरेभरे स्थान पर अपने सुनहले जरकसी तम्बू तनवा दिए–जो शहाबुद्दीन से से छीने गए थे—जहां तहा घोडे हाथी बँध गए और कवि के डेरो का विस्तार आध कोस में हो गया। जब यह समाचार भीमदेव के पास पहुचा तो उसने अपने भाट जगदेव को कविचन्द के पास भेजा और एक हाथी सात घोड़े एक ऊंट और बहुत सा धन रत्न भी कवि को भेंट देने के लिये भेजा। जब कविचन्द ने जगदेव की अवाई का समाचार पाया तो वह एक अजब स्वांग बनाकर बैठ रहा— उसके आस पास दिया, जाल, कुदाली, रक्खे थे और हाथ में पैरी और अंकुश था। जगदेव ने आतेही कविचन्द से पूछा—

यह क्या?

चन्द—सोमेश्वर को किसने मारा?

जगदेव—क्या तुम नही जानते?

चन्द—आबूगढ किस ने लिया?

जगदेव—भीमदेव ने। वह पट्टनपुर का राजा एक असीम सेना का स्वामी और समर में स्वयं असीम पराक्रमशाली है।

चन्द—अच्छा तुम हमारा अभिप्राय तो समझ गए न? यदि नहीं समझे तो दस रोज में आप ही समझ जाओगे।

यह एक स्वाभाविक बात है कि समूह बद्ध होकर भेडें रहती हैं सिंह नहीं। उस पृथ्वीराज को धन्य है जिसने जीता हुआ साज सामान फिर से फेर दिया।

कविचन्द बोला कि यदि यह गुर्जरनरेश है तो वह दिल्लीपति है। उस तेजस्वी पृथ्वीराज ने शत्रुओं का संहार करने के लिये ही पृथ्वी पर अवतार लिया है, पृथ्वी माता ने मानों पृथ्वीराज के लिये चार हाडी गाँव कर चार जगह रक्खी है। जिन में से एक शहाबुद्दीन दूसरा प्रमार और तीसरा

[1] जैन [जीत लिया है जिसने काम क्रोध लोभ मोहादि अजेय शत्रुओं को उस का नाम है जिन भगवान उस जिन की उपासना करने वालो को जैन कहते है] जैनियो के वैसे तो बहुत फिर्के है परन्तु श्वेताम्बर, दिगम्बर और सेवरा ये तीन मुख्य है। श्वेताम्बर वे है जो श्वेत वस्त्र पहिनते है और इसी शुद्धाचारी का आचरण करते है। दिगम्बर वे है जो बिना वस्त्र के रहते है और तप को मुख्य मानते है। तीसरे सेवरे वे है जो मुख पर पट्टी बाधे रहते है और हमेशा मोरपक्ष पास मे रखते है जिससे जमीन झाड कर बैठते है।

[2] जैन जातियो मे शिष्य होने के समय जब शिर चोटी के बाल उखाड़ता है यदि उस समय आंसू आजावें तो तीन दिन अनशन व्रत कर के प्रायश्चित करना पड़ता है।

तुम्हारा स्वामी है* सो हे जगदेव दो तो पृथ्वीराज पा चुका,तीसरा भोराराय शेष है। ध्यान रक्खो। तुम्हारे राज्य के दस लाख योधा भी पृथ्वीराज के दस सामन्तों का सामना नही कर सकते। तब जगदेव बोला कि अच्छा तो जाओ अब तुम अपने पृथ्वीराज को ही लेकर आओ तभी हम तुमसे मिलेंगे। उस समय सब निबटेरा हो जायगा। यह कह कर जगदेव चलागया।

दूसरे दिन भोरा भीमदेव स्वय कविचन्द के पास आया। कवि अगवानी देकर भीमदेव से मिला और उसका यश वर्णन करके उसने यथोचित आशीर्वाद दिया। तब भीमदेव ने कविचन्द का और अमरसिंह सेवरा का विद्यावाद देखने की इच्छा प्रगट की। यह जान कर कविचन्द ने ज्योंही अपने इष्टदेव की आराधना की त्योंही अमरसिंह रथ सहित आसमान को उड गया और एक वृक्ष के शिखर पर जा बैठा और वहा पत्ते पत्ते पर नाचते हुए चहुआन की जै जै कार बोलने लगा। इधर पट्टनपुर की सारी जमीन हिलेनलगी और अँधाधुध आँधी आने के लक्षण देख पड़ने लगे। यह देख कर भीमदेव रथ पर चढ़ कर महलों को चलता हुआ।

तब तक इधर कविचन्द के पास पृथ्वीराज का परवाना पहुचा कि शहाबुद्दीन चढ़ाई करके चला आरहा है सो जहां तक हो सके जल्द आओ। यह समाचार पाते ही कविचन्द वहा से उसी समय कूच दर कूच चलता हुआ दिल्ली आ पहुँचा।

*मूल पुस्तक मे पहिले तो चार हांडी लिखी है परन्तु नाम उक्त तीनों दिए हैं। इस से अनुमान होता है कि चौथे से कवि का अभिप्राय जैचन्द से था। परन्तु उसका नाम स्पष्ट नहीं दिया। सभव है कि छन्द का कोई अंश किसी प्रकार छूट गया हो।



कैमास युद्ध।

(तेतालीसवाँ समय।)

एक दिन शहाबुद्दीन ने अपने मंत्री तत्तार खा और खुरसान खां से पृथ्वीराज पर चढाई करने के विषय मे पूछा। तब तत्तार खा बोला कि एक तो पृथ्वीराज स्वय एक बलवान शत्रु है तिस पर भी उसका वजीर कैमास तो बिलकुल अकल का पुतला है।

अतएव जब कि पृथ्वीराज शिकार खेलने के लिये षट्टू बन मे पडा हुआ था शहाबुद्दीन ने कैमास के पास एक परवाना लिख भेजा और इधर आप अपनी फौज तैय्यार करके सवत् ११४० चैत्र बदि ११ रविवार पुष्य नक्षत्र में दिल्ली की तरफ चल पडा। इस बार शहाबुद्दीन के साथ में तीन लाख सवार चार हजार धनुर्धारी एक लाख पैदल सिपाही और तीन हजार हाथी थे शहाबुद्दीन ने इतनी सेना के साथ कूच करके गजनी से दस कोस के ऊपर आकर पडाव डाला। पारसपुर के घाट पर सिन्धु नदी को पार करके इस पार डेरे डट जाने पर शहाबुद्दीन तत्तार खा मारूफ खा, खुरसान खा, लाल खा, याकूब खां, तेजम खा और ममरेज खां आदि सरदारों सहित दरबार में बैठा। तब तक केदार भाट ने भी आकर आशीर्वाद दिया। शहाबुद्दीन ने केदार से कहा ही था कि अर्थ और गुणों के विषय में कुछ कहो कि तब तक शाही दो दूत जटा जूट बाँधे विभूत रमाए शृगीनाद करते हुए आ पहुँचे। उन्होंने अरदास और धम्मायन की दी हुई चिट्ठियाँ पेश कीं जिनमें लिखा था कि पृथ्वीराज षट्टू बन के पास शिकार खेल रहा है और वहां उसके साथ इतना लाव लश्कर है कि मालवा और गुजरात तक उसकी धाँक बँध गई है। गांव के भूमियाँ थर थर कापने और जहा तहा भागते जाते है।

ऐसे समाचार सुनते ही शहाबुद्दीन का दिल दहल गया। उसने सब मुसाहबों की एक अतरग सभा करके उनसे कहा कि चहुआन की सेना और कैमास के बुद्धिबल के साम्हने इस समय चढाई करने से मेरा जी तो हिचकता है। और चढ़ कर आए है यदि योही लौट जाते है तो भी बड़े शरम की बात है अब करें तो क्या करें? शाह की ऐसी बातें सुन कर याकूब खा बोला कि हम लाल खा,हुसेन खा, मारूफ खा आदि चार भाई है हमारे चार कालिब मगर एक जान है। हम चारों भाई इस वक्त कसम करके कहते है कि यातो अब की बार दुश्मन पर फतह पावेंगे या हम चारो योंहि मक्के को चले जावेंगे, हारकर हूजूर को मुँह न दिखावेंगे। हमारी भारी फौज के साम्हने हिन्दुओं के सामन्त आटे का लोन है। याद रखिए, हम अब की बार पृथ्वीराज को जीता ही पकड़ कर हुजूर की कदमबोसी में हाजिर करेंगे। यह सुनते ही शहाबुद्दीन का चोला चगा हो गया और उसने अपनी सेना सहित उसी समय आगे को कूच किया।

जब यह समाचार पृथ्वीराज के पास पहुँचा तो उसने उसी समय कैमास और चामडराय को बुलाकर सब हाल कह सुनाया। तब कैमास ने उत्तर दिया कि तो अब देर किस बात की है। यथासम्भव शीघ्र ही सेना तय्यार कर के उस यवन शत्रु का सामना किया जाय और अब की बार कलेजे के कटक को नष्ट ही करदिया जाय। इस पर पृथ्वीराज ने उसी समय दस हाथी और सात सौ घोडे कैमास को और तीन सौ घोड़े चामुडराय को दिए। बात की बात में सारी फौज की तय्यारी हो गई और सभरीनाथ पृथ्वीराज की सेना के कैमास, चामडराय, लगरीराय, गोइन्दराय, काका कन्ह, जैत प्रमार, वीर नरसिंह, हरसिंह, रामराय बडगुज्जर, कनकराय सोलकी, निड्डुर कमधुज्ज, और वीर बघेला इत्यादि सामन्त शत्रु पर शस्त्र प्रहार करने के लिये सन्नद्ध हुए।

उधर से शहाबुद्दीन अपने मंत्री तत्तार खां को साथ लिए हुए चटा चला आता था। उसके साथ में रुस्तम खा, आयूब खां (याकूब खा), दरयाव खान

(दरिया खां), कन्दहार खां (जिसके साथ के सिपाही सिगिनी चलाने में दक्ष थे), मलिकखां, मम्मार खा, आलू खा, कम्माल खा, गक्खर मारूफ खा, पहलवान खां पठान, हबीब खा हबसी, समसुद्दीन खा रूमी, गयासुद्दीन चिश्ती और चित्रखान गुरबी आदि सरदार थे। उसकी सेना पाच भागों में विभाजित थी। प्रत्येक अनी के आगे चौसठ हाथी लाल ढाल वाले थे, शेष हाथियों पर हथनार तोपें थीं, बीच बीच में कमनैत जवानों की भरती और प्रत्येक अनी में सात सात सरदार थे। पृथ्वीराज सेना सहित आकर गोइन्दपुर मे पडा था। जब शहाबुद्दीन सारूंडे के पडाव से मुड कर षट्टूपुर की तरफ चला तब इधर चहुआन सेना भी सचेत हुई। उस समय कैमास ने पृथ्वीराज से कहा कि आप षट्टूपुर में रहकर शिकार खेलिए हम लोग जाकर शत्रु को परास्त करेंगे। इस पर पृथ्वीराज ने उत्तर दिया कि हे कुलीन लज्जाशील वीरो, मै जानता हू कि मेरा सर्वस्व तुम्ही हो परन्तु मेरा यहा बैठे रहना उचित नहीं, तुम्हारा साथ देना ही उचित है। इस पर कैमास ने यह प्रत्युत्तर दिया कि तो आप यहा से सायत से कूच कीजिएगा और उसने अपनी सब सेना सहित उसी दम बम् बोलदी।

शहाबुद्दीन का मुकाम लाडून में था, इस लिये कैमास ने अपना पड़ाव पचोसर के पास डाला। एक प्रहर रात्रि रहते ही एक दूत ने खबर दी कि शहाबुद्दीन सवेरे ही यहा आजावेगा। निदान कैमास ने तो उसी दूत को सीधा राजा पृथ्वीराज के पास भेजा और यहा फौज की तय्यारी बोल दी। कैमास ने सब सेना को पाच भागों में विभाजित किया। सब अनीपत सर्दार और सामन्तों के कार्य्य विभाग एवं मोरचे लिख लिए गए और कन्ह हरावल का स्वामी नियत हुआ। दूसरी अनी का नेता कैमास हुआ जिसमें पाच हजार कमनैत (तीरदाज) और पाच हाथी थे, तीसरी फौज कन्ह के तहत में थी जिसमें पांच हजार सवार बखतरिया और एक हजार हाथी थे, चौथी अनी का शासक गोइन्दराइ गहलौत था जिसमें पाच हजार नेजबाज और पाच सौ हाथी थे। पाचवीं फौज जैतराव प्रमार के ताबे में थी जिसमें पाच हजार सवार पाच हजार पैदल और पांच सौ हाथी थे। इधर यवन सेना का मुख्य नेता स्वयं शहाबुद्दीन था। शहाबुद्दीन की अनी में दो लाख सवार और दो लाख पैदल थे। दूसरे ढाई हजार हाथी और डेढ लाख फौज तत्तार खा के साथ थी। तीसरे खुरसान खा के साथ दो लाख सवार और दो लाख में कमनैत पैदल और हथनार तोपें थी। चौथे खदार खा के साथ दो लाख सवार ढाई हजार हाथी और एक लाख कमनैत (तीरदाज) थे। लाल खोल के साथ मे ढाई हजार बखतरिए सवार थे। पाचवी फौज का मालिक कम्माल खा था जिसके साथ में गोर गप्पर तुर्की आदि की सब मिला कर दो लाख फौज की भरती थी और पाच हजार हाथी थे।

ज्योंही यह समाचार पृथ्वीराज के पास पहुचा त्योंही वह हथियार बाँधकर चन्द्रसेन चहुआन को साथ लिए हुए चलपडा और शहाबुद्दीन की सेना केवल दो कोस की दूरी पर थी, कि वह उसी समय अपनी सेना मे आमिला। कवि कहता है कि अपार यवन सेना के साम्हने पृथ्वीराज के साठ हजार सैनिकों को सजा हुआ देख कर मनुष्य की तो बात ही क्या है योगनी भी हँसती थीं।

सवत् ११४० चैत वदी ११ सोमवार को एक पहर दिन चढन पर दोनों सेनाओं का मुकाबला हुआ। कैमास और तत्तार खा की, कन्ह और खुरसान खा की, गोइन्द और खन्दहार खा की, जैत प्रमार और कम्माल खा की बरनी हुई। दोनों तरफ से हथनार कुहकबान, बान, तेगा, तलवार, कत्ती, कटारी, गुरज, नेजा, फरमा आदि हथियार चलने लगे और खूब खचाखच मार होते होते सायकाल हो जाने पर उस दिन का युद्ध खतम हुआ।

द्वादशी के दिन पुनः प्रातःकालही से मार बजने

(१) कन्ह एक तो सब सेना का स्वामी था इसलिये पाहिली और तीसरी दो अनी उसके तहत में थी।

लगा, सूर लड़ने लगे, क्रूर डरने लगे, रुड तरफरने लगे,मुड लुढकने लगे,लोथें पटने लगीं,खून झरने लगा। युद्ध का आनन्द देखने के लिये देवता और देवाङ्गऐँ आकाश मार्ग से आने लगीं, और वीर लोग तनके की तरह तन तज तज स्वर्ग को जाने गे । इसी प्रकार युद्ध होते होते जब दो पहर हो या और चहुआन सेना यवन सेना का हृदय विर्ण करती हुई शहाबुद्दीन के पास जा पहुंची तब थ्वीराज एक जगह अकेला घिर गया । यह देख र वहां चामडराय जा पहुचा । उसने सघटित वन सेना समूह को विदार कर अपने स्वामी को ो निकाल दिया परन्तु आप स्वय फँस गया। द्यपि चामंड राय बड़े बडे गयदों के गरे एक ही ार में गडेरी से उतार देता था, उनके खीसे कड़ कार कंधे से उखाड़ लेता था और मय अश्व के असवार को पछार देता था, उसका तलवार चलाने का दृश्य मात्र कायरों के कलेजे पर चाबुक का काम करता था; परन्तु करे तो क्या कार सौ की सत्ती भी तो बुरि होती है । अन्त में चामड राय को लाल खा, मारूफ खा, हसन खां, याकूब खा, चार यवन सर्दारों ने घेर लिया और चारों ने एक साथ वार किए। लाल खा ने दो बान मारे जिनमें से एक घोडे को और दूसरा चामडराय के सीने पर लगा, मारुफ खां ने शक्ति चलाई जो चामंड की जाघ बेधती हुई घोडे का पजर फोर गई। हसन खा ने तलवार के दो वार चेहरे पर किए और याकूब खां ने गरदन पर कटार चलाई । परन्तु वा हरे चामंड! ये उस पर वार क्या हुए मानो उसके क्रोध रूपी हुताशन मे आहुति दी गई। उस ने जो तमक कर तलवार का वार किया तो एक एक हाथ म तीन मार गिराए, केवल लाल खा बच निकला । लाल खा अपने ढंग का एकही आदमी था । उसका टोप तलवार बाने बख्तर घोडा आदि सब तो लाल लाल था ही तिस पर भी सर के ऊपर एक लाल ध्वजा फहराती थी । लाल खा ने जो पुन तमक कर तेग का वार किया उसे चामड राय ने खाली दिया और एक हाथ ऐसा मारा कि उसके घोडे का सर कट गया जिससे लाल खा जमीन पर लोट गया। इस पर चामड राय ने उसे प्रचारा, इस प्रचार पर ज्योंही उसने वार करना चाहा कि चामडराय ने उसकी घेटी पकड जमीन पर पछार दिया और आप छाती पर पैर रख कर खड़ा हो गया। यह रहस्य देख कर दोनों दल के वीर दग हो गए अन्त में रनधीर वीर चामड ने तलवार से उसका भी सर धड से अलग कर दिया।

तब तक कैमास भी वहां आ पहुचा। उसने चामंडराय को गले से लगा लिया और कहा आहा भाइ तू मेरा छोटा भाई है ! आज तेरे बिना मुझे ससार सूना होता । अहा तू सर से पैर तक रक्त में भीग रहा है । परन्तु धन्य है, तूने अपने शत्रुओं को आप मार लिया। अच्छा अब इस घोड़े पर चढ़ कर यहा खडा रह और दो हाथ मेरे देख। यह सुन कर चामडराय बोला आप मेरे बडे भाई है आप का मुझ पर एसा वात्सल्य उचित है परन्तु क्षत्री होकर क्या मुझे भी यह उचित है कि आप लडे और मै तमाशा देखू ? आइए हम आप दोनो अपने अपने घोडे बढा कर शत्रु का मुँह मोड़ते हुए शहाबुद्दीन को पकड लें तब देखिए दोनो दलो हम दोनों की कैसी वाह वाह करते है।

इतने में खुरसान खा की अनी के ताज खां, वाज सहबाज खा, जाज खां और महबूब खा इन चार सरदारों ने कैमास पर चार तरफ से चार बान चलाए और चारों बान कैमास को लगे भी परन्तु कैमास ने जो बाण चलाए उनसे जाज खा तो घायल होकर गिर पडा शेष तीनों वार बचा गए। निदान ताज खा और सहबाज खा तो तलवार लेकर कैमास के साम्हने हुए और महबूब खा का चामड से मुकाबला हो गया। दुपहर लौटने पर ज्यों ज्यों सूर्य्य का तेज कम होता जाता था त्यों त्यों जवानों का जोर बढता जाता था। दोनों तरफ के योद्धा अपने अपने स्वामियों की आन कर कर एक दूसरे पर शस्त्र चलाते थे । कोई तो पूरा वार खा कर कटकटी

से कट कर दो हो जाते थे, कोई कोई एक घाव लगने पर भी निरस्त्र हो कर खडे खडे मतवारे हाथी से झूमते थे। इधर तो दोनों भाई दाहमा थे उधर चार मीरजादे थे। इन में बराबर के दाव पेच हो रहे थे इतने में जो महबूब खा ने कैमास के सीने पर तलवार चलाई तो तलवार टूट गई और करीब था कि कैमास उसे पकड़ कर पछार दे परन्तु ताज खा ने आडे कर उसे बचा लिया। उधर सेना के सिपाही सिपाही से, सवार सवार से और पैदल पैदलों से जुटे हुए थे। तमाम रण भूमि में रक्त के कुण्ड और लोथो के अटब लगे देख पड़ते थे। कहीं सूड और दात रहित हाथी पडे हुए चट्टानो से देख पडते थे। कहीं कहीं रक्त में उतराते हुए हाथ पैर मगर मच्छ से जान पड़ते थे। सूर वीरों के कर कमल पुरैन के पत्र से, नेत्र भ्रमर से और सीस चक्रवाक से शोभित होते थे।

इस चैत्र वदी १२ मगलवार को इसी प्रकार युद्ध होते होते जब दो घड़ी दिन शेष रह गया तब कैमास ने महबूब खा का सर धड से अलग किया और ताज खां की भी गरदन पकड करके पछाड़ दिया। इतने में सहबाज खा ने चामडराय पर गहरा वार किया। तब तक जाग पडिहार और चक्रसेन चहुआन दो सामन्त और भी वहा आ उपस्थित हुए, जिस से कैमास की बाजी मजबूत हो गई और मुसल्मानों के पैर पीछे पड़ने लगे,। यह देख कर शहाबुद्दीन ने स्वय अपना हाथी आगे बढाया और उसका मत्री तत्तार खा, और मीरमगोल भी सिपाहियों को बाढे देते हुए आगे बढ़े और इस अनी को रोकने के लिये इधर से चक्रसेन की चमकदार तलवार आगे हुई। चक्रसेन की चमकदार तलवार के सामने मुसल्मान सिपाहियों की आखें तलमलाते हुए देखकर शहाबुद्दीन ने अपने धनुष पर सर मधानाही था कि तब तक आलू खा ने एक हाथ ऐसा मारा जिस से चक्रसेन की खोपडी बीच से चिर गई तब शाह का एक बाण तो चामड राय के दाजू पर लगा और दूसरे ने चक्रसेन का सर बेध लिया, परन्तु इस से हानि पहुंचने के बदले उसकी चिरी हुई खोपड़ी जुट गई। इसी बीच में चक्रसेन ने फुर्ती से बाण निकाल कर फेंक दिया और साफे कस कर सर बाँध लिया। उसने यही धराबाधी करते करते खिजल खा बंगसी पर एक हाथ ऐसा मारा कि वह जहां था वहीं समाप्त हो गया। इतने में आलू खां ने कैमास और चामंड के सिर पर एक घाव कर दिया। यह देख कर चक्रसेन ने एक हाथ ऐसा मारा कि आलूखां का सर तुवा सा टूट गया। तब उसके बदले उधर से कासिम खा आया परन्तु चक्रसेन ने उसे भी समाप्त किया। आलूखा का सर तो गिर गया परन्तु कबन्ध मार करने लगा सैकडों असवार और पैदलों को काटते हुए अन्त में उसने चक्रसेन का भी काम तमाम किया। धन्य है इस तलवार रूपी सरोवर मे सच्चे वीर पुरुषो की ही नैया पार लगती है। इधर से चक्रसेन का भी कबन्ध उठा और यवन सेना को काटते हुए शाह के हाथी के पास जा पहुचा। पास ही था कि वह शाह के हाथी पर चढ जावे परन्तु मीर हिंगोल ने आड लिया चक्रसेन के कबन्ध ने शान्त होते होते जद्दा मलिक को फिर भी मार ही लिया यह चक्रसेन बाहरराय का पुत्र था। इस समय उसकी अवस्था केवल सत्रह वर्ष की थी। उस दिन के युद्ध का अन्त यहीं हुआ।

तीसरे दिन त्रियोदसी बुधवार को प्रातःकाल होते होते पुनः सार कटने लगा। दोनों तरफ से मारू बाजा बजने लगा, जिसकी ध्वनि सुन कर कायरों के कलेजे कापने और सूरों के चेहरे पर नूर चढता है। दोनों दलों का मुकाबला होते ही शहाबुद्दीन ने फिर से अपना हाथी बढा कर हिन्दू सेना को एक दम मे दबाना चाहा, शाह का ऐसा साहस देख कर इधर से कैमास और चामुडराय दोनों भाइयों ने घोडे बढाए दोनो भाई मार काट करते हुए शाह के हाथी तक जा जुमके और चामुडराय ने तलवार का एक हाथ ऐसा मारा जिससे हाथी की भसुड से सूड अलग होगई और वह भहरा कर गिर पडा। हाथी

के गिरतेही कैमास ने शहाबुद्दीन का बाजू जा पकड़ा और मुस्कें बांधकर उसे घोडे के कन्धे पर डालालिया

जिस समय कैमास शाह को पृथ्वीराज के सम्मुख लाया उस समय मारे भय और लज्जा के शहाबुद्दीन का मुख सूख रहा था, कलेजा काप रहा था, परन्तु पृथ्वीराज ने सुखपाल (तामजाम) में बिठा कर उसे दिल्ली को भेजे जाने की आज्ञा दी।

इस युद्ध में पृथ्वीराज का भाई चक्रधर रामकृष्ण गहलोत, रावल समरसी का भाई नरसिंह, कैमास का भाजा, सामल और सेखा टाका (चौहान) इतने सामन्त खेत रहे। जो लड़कर मरते हैं वे भी मरते हैं और जो कायर भागते हैं वे भी एक दिन मरते हैं परन्तु करनी करके मरने वालों का संसार में सुयश विस्तृत होता है और उनकी आत्मा अमरपुर में वास करती है।

दिल्ली पहुंच कर पृथ्वीराज ने शाह से १२ हाथी और एक हजार घोड़े दण्ड लेकर उसे छोड़ दिया। पृथ्वीराज ने उक्त दण्ड मे से आधा कैमास को दिया और आधा युद्ध में उपस्थित अन्यान्य सामन्तों को वितरण किया। शहाबुद्दीन छूट कर गजनी पहुंचा, इस लिये वहा बधाई बजने लगी और इधर समान्त लोग जीत की खुशी का आनन्द मनाने लगे।



भीम बध।

[चौंवालीसवां समय।]

जिस दिन से सोमेश्वर की मृत्यु हुई उस दिन से पृथ्वीराज को पल भर भी चैन नही पडता था। भीमदेव उसके कलेजे में कॉटा सा खटकता था। ईर्षा एवं क्रोध रुपी अग्नि से उसका उरअंतर हमेशा जला करता था। पृथ्वीराज रह रह कर हाय की सास लेता था और हर हर कह कर चुप हो जाता था। उसे इस प्रकार दुखित देख कर जैत प्रमार ने कहा, हे राजन! क्षत्रियों का यह धर्म नहीं है कि पिता की मृत्यु पर शोकग्रस्त हों। क्षत्रियों का यही धर्म है कि शत्रु को मारकर ससार मे सुयश कमावें। हे चहुआन चित्त की चिन्ता दूर कर यह निश्चय रखिए कि हम लोग सारे गुजरात देश को उजाड़ कर और पट्टनपुर को जला कर छार कर देगे। भीमदेव की सामर्थ्य ही क्या है कि वह आपके साम्हने ठहर सके! हमारा विचार है कि कुछ फौज तो शहाबुद्दीन के नाके पर रख दी जाय और हम लोग छरीदा चल कर भीमदेव से समझें।

जब पृथ्वीराज सोमेश्वर की श्राद्ध-क्रिया से निश्चिन्त हो चुका तो वह अपने सामन्तो से बोला कि भाइयो भीमदेव तो उसी दिन मर चुका जिस दिन उसने सोमेश्वर पर सेना सजी थी, अब आप लोगों को केवल योगिनीगण को सन्तुष्ट करना शेष है। पृथ्वीराज को भूमि शैय्या पर सयन करते हुए एक ही रात्रि बीती थी दूसरे दिन अरुणोदय से ही दरबार की तय्यारी हुई। खास पास परिकर के लोग और मुतसद्दी मुसाहिब लोग यथास्थान बैठे ही थे कि नरनाह कन्ह आ उपस्थित हुआ, सब लोगों ने नरनाह की पूरी ताजिम की। उसके बाद रामराय जद्दव, बलिभद्र, पज्जूनराय, अत्तताई, लंगरीराय, गोइन्दराय गहलौत, तथा और सब छोटे बडे सामन्त लोग यथाक्रम आने और यथा स्थान बैठने लगे, अन्त में चन्द बरदाई भी आया।

पृथ्वीराज पर तो सोते जागते अहर्निश वही धुन सवार थी। बस उसने कहा "हे सामन्तो गुजरात पर चढाई करके भीमदेव को अनभूत करने के लिये सन्नद्ध हो जाओ। यह सुन कर सामन्तों ने उत्तर दिया कि महाराज ज्योतिषी को बुलाकर चढ़ाई के लिये उत्तम मुहूर्त साधन करवाया जाय। राजा का हुक्म होते ही ज्योतिषी बुलाया गया और उसने प्रश्न के समय के ग्रहों का विचार करके कहा कि हे राजन एक तो यह मुहूर्त ही बड़ा अच्छा है जिसमें सम्मुख योगिनी चक्र होने से मानो सोने में सुगन्ध बनगई है। इसलिये आप इसी समय चढाई कीजिए, आपकी अवश्य ही जीत होगी और भीमदेव मारा जायगा। मै शपथ करके कहता हू कि यदि ऐसा न हो तो मै आज से पत्रा हाथ से न छुऊ। (१)

बस फिर क्या था, बात की बात में सारी सेना अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हो कर सन्नद्ध हो गई चारों तरफ चाहुआन की जयध्वनि होने लगी। रानी इन्छनी अच्छत छोडने लगी तेजोरूप पृथ्वीराज अश्व पर सवार होकर चलने को ही था कि इतने मे अपनी सेना सहित निड्डुरराय भी आ उपस्थित हुआ और यथानियम प्रणाम करके साथ मे हो गया। फौज मे अबतक यह किसी को न मालूम था कि कहा जाना होगा। इसलिये पृथ्वीराज ने शिकार पर चलने की आज्ञा दी। पृथ्वीराज के घोडे की बाग उठाते ही सब कटक पश्चिम दिशा को इस प्रकार से चल पडा जैसे पहाड से टिड्डी निकले अथवा लका पर आक्रमण करने के लिये कपि सेना समूह जा रहा हो।

जब पृथ्वीराज का सेना समूह समुद्र सा उमडता हुआ भीमदेव का मेंडा दबाने लगा तो गुजरात के राजदूतों ने भीमदेव के पास जा कर कहा कि महाराज पृथ्वीराज चौसठ हजार सेना लिए हु

---

(१) केन्द्रीय सासिसोम। भोम पञ्चम अभिकारिय॥
गह वीर अष्टमो। वक्र सत्तम गुह्यारिय॥
अगम यावर धरिय। हलिव तिन नाम सर भर॥
कहै विप्र प्रथिराज। राज पञ्चग पञ्चम गुर॥

इधर ही आ रहा है। उसने पिता का बैर बदलने की प्रतिज्ञा करके घी खाना और पाग बांधना छोड़ दिया है। इसके सिवाय उसके सामन्तों ने भी वार्चन कर कर के प्रतिज्ञाएं की है। इसलिये आप यथासंभव शीघ्र ही सम्हाल रखिए। यह सुनते ही भीमदेव के लिलाट में त्रिवली पड़ गई, भौंह चढ़ गई, मुख लाल हो गया और भुजाएं फड़कने लगी। उसने उसी समय अपनी सब वैतानिक सेना को सजने और शासनाधीन नरेशों को परवाने भेजे जाने की आज्ञा दी। परवाने पाते ही दो हजार पठान जो कि कुहकबान और हथनाले चालने में कुशल थे, तीन हजार कच्छी सवार, डेढ़ हजार तोरठी, कई हजार बान कमान धारी, काकरेची, करूर कोल, झालावार का झाला, कावा नरेश मकुंद, काठियावाड़ का राजा कठीर और और भी छोटे बड़े सब जागीरदार यथासमय हाजिर हुए।

इधर पृथ्वीराज के दूत भी गुप्त रूप से आगे आगे चला करते थे। वे लोग पट्टनपुर में पहुंच कर, सब हाल चाल देख भाल कर चले आए और पृथ्वीराज से बोले कि भीमदेव एक लाख सेना और एक हजार हाथी सजकर मुकाबला करने को तय्यार है। यह सुन कर पृथ्वीराज बोला कि भीमदेव के सेना समूह रूपी सघन वन को मै प्रचन्ड दावाग्नि के समान दहन कर डालूंगा। यदि भीमदेव स्वयं मेरे साम्हने पड़ जाय तो उसे इस प्रकार से पछाड़ूं जैसे भीमसेन ने दुर्योधन को और शक्ति ने महिषासुर को पछाडा था और उसका पेट फाड़कर आंतों में से पिता का बैर निकालूं। यह कहकर शिकार करने की आज्ञा दी। और यमुना के कूल कूल जघन्य क्रीडा करता हुआ सघन वन में जा पहुंचा। शायकाल हो जाने के कारण सब फौज के डेरे पडगए और सरदारों से लेकर सिपाहियों तक सब के डेरे डेरे कलेऊ जल और पान पत्ते पहुंचाए गए। सब सेना तो जमुना के पार उतर गई थी परन्तु पृथ्वीराज कन्ह, कैमास, जैतराव, सलष, चन्द पुंडीर, चामुंडराय, हम्मीर, सारंगदेव, पज्जूनराय, पहाडराय तूअर, लंगरीराय और आजानबाहु लोहाना इन सामन्तो के साथ इसी पार रहा। रात्रि को कन्ह और कैमास पलंग के पहरे पर रहा। सब सेना तो ऐसी गाढ निद्रा में निमग्न थी जैसे मोह के बलवान होने से ज्ञान और विज्ञान सब दब जाते हैं, परन्तु पृथ्वीराज जागता था "कन्ह से यह कह कर कि प्रातःकाल प्रहर रात्रि रहने से हॅकाई की जाय" वह भी निद्राग्रस्त हुआ। अभी कुछ भी समय न बीतने पाया था कि सहसा तीन शब्द हुए जिन्हें कन्ह ने भली भांति सुना और समझा भी। उसी समय भूकंप भी हुआ। प्रातःकाल होतेही सारे लश्कर मे इस बात की खबरी पड गई। जहां तहां लोग ज्योतिषियो से भविष्य पूछने लगे। कोई कोई कहने लगे कि जिस शकुन से भीमदेव अजमेर पर चढ़ा था यह वही सब शकुन है। तब तक अरुणोदय हुआ, पृथ्वीराज भी जाग उठा और कविचन्द ने जाकर उसे आशीर्वाद दिया। पृथ्वीराज आंख मीड़ता हुआ अपने सपने का हाल कहने लगा। वह बोला मैने रात्रि में तलातल भरे हुए तालाबों में कमल के पुष्प खिलते, कुमोदनि को सकुचते और प्रकाशमान सूर्य्य का उदय होते हुए, रसाल वृक्षों पर बेली चढ़ती और उनके टोन पर बैठे हुए पक्षी समूहों को कलोल करते हुए देखा है। इस स्वप्न का फल जानने के लिये सब सामन्त लोग भी उत्सुक हो उठे। तबतक कन्ह बोल उठे भाइ मैने भी कुछ रात्रि में सुना है और वह यह है "न जाने, सो क्या माने, होनी होगी सो क्यों न होगी"। इस पर कविचन्द बोला कि यह सब शीघ्रही घोर घमासान युद्ध होने और सहस्रों मनुष्यों की प्राणहानि होने के लक्षण है पर इतना अवश्य है कि अपने लिये शुभ है।

यह सुनकर नरनाह काका कन्ह बोला "लोग मरना जीना कहते हैं" परन्तु किसी ने किसी को मरते जीते आज तक नहीं देखा, केवल कृत-कर्म-बद्ध जीव माता के गर्भ का आवागवन भोग करता है. शरीर नष्ट हुआ और सब झगडा

ते हुआ। मरने के बाद का हानि लाभ केवल यश अपयश है। जिस दुर्योधन के लिये लाखों मनुष्य चलबसे आज उसका नाम ही नाम शेष है। भूमि भोगी योद्धाओं में दुर्योधन ही श्रेष्ठ है क्योंकि उस ने भारत के युद्ध में सगे सम्बन्धी भाई बन्धु सब गँवा दिए पर सुई के अग्रभाग पर भूमि न दी। युग युगान्तर व्यतीत होते जाते है, बडे बडे युद्ध और सन्धि होते जाते हैं पर इस बिराट जगत का अन्त किसी ने नहीं पाया। समराग्नि में शत्रु के सम्मुख शरीर को होम करनेवाले शूर पुरुषों का अन्तिम सिद्धान्त तो यह है कि जैसे सूर्य्य की किरणें प्रखर होकर मंद पड़ जाती हैं, यमुना का जलप्रवाह बढ़ कर घट जाता है उसी प्रकार नश्वर शरीर की गति है। यह शरीर चाहे जब नाश हो हम तो इस तन पिंजर से निकल कर स्वर्ग की सीढी पर चढेंही गे। कन्ह का ऐसा आध्यात्मिक स्वर सुनकर सब प्रसन्न हो गए और पृथ्वीराज ने उसी समय हँकाई होने की आज्ञा दी। तब तूर तुरही तबल आदि बाजों की वाद्यध्वनि, हाथी के घंटे और घोडों की ठिंयों से सारा वन गूंज उठा। राजा की अज्ञानुसार पछेला हँकाई शुरू हुई, चारों तरफ बाण बर्छे आदि के वार होने लगे और अगनित पशु मारे जाने लगे। यह विषम कोलाहल सुन कर अपने चुल में सोता हुआ एक सिंह जाग उठा, उसके साथ मे सिंहनी और उसके दो छोटे छोटे बच्चे भी थे। एक तो परमेश्वर ने इस जीव को स्वभावही से शोख बनाया है, दूसरे भूखा, तीसरे यह कर्णकटु कोलाहल, चौथे अपने सबसे स्वादिष्ट भक्ष्य मनुष्यों की बास पाकर वह सिंह पूंछ के गुच्छे को शिर पर छहरा कर गंभीर बद्दर की तरह गर्जना करता हुआ बबकार कर उठ बैठा। उसकी दोनों आँखों से आग की सी ज्वाला निकल रही थी और उसके विकराल नख वृंदो की कटार कैसे थे। दोनों बच्चों समेत सिंहनी को तो अन्य सामन्तों ने घेर लिया। परन्तु सिंह दावाग्नि की ज्वाला के समान कन्ह पर आझपटा। उस समय सब पृथ्वीराज के सब लोग हक्काबक्का से होकर हाय हाय करने लगे। सिंह ने कंधे पर पडी हुई कमान के सहित घोडे को चाप लिया परन्तु कन्ह दूर जा छटका। सिंह दूसरा वार करने न पाया कि तब तक कन्ह ने उसे पकड कर कांख में दबा लिया और कटार से उसका पेट चाक कर, दोनों पैर पकड कर उसे पृथ्वी पर पछार दिया, जिससे उस मृगराज की भेजी निकल पडी और हड्डी पसली चूर चूर होगई।

कन्ह का सिंह को पछाड़ देना ही सब के मन में शुभ भविष्य सूचक शकुन निश्चय हुआ। इसलिये उसी समय चढ़ी सवारी पट्टनपुर की तरफ कूच किया गया। इस समय पृथ्वीराज के साथ चौसठ हजार सेना थी। पृथ्वीराज ने कन्ह को सब फौज का सेनानायक नियत किया और आप बीच में रहा। निड्डुरराय को चदावल का सेनानायक बनाया और जैत प्रमार को पीठि सेना का स्वामी नियत किया। चाहुआन सेना इस प्रकार क्रमबद्ध होकर चलने लगी। आगे बढते हुए ज्यों ज्यों पट्टनपुर निकट होता जाता था त्यों त्यों सूरवीरों के हृदय से सासारिक माया मोह कोसों दूर होता जाता था।

जब पट्टनपुर कुछ थोडी दूर पर रह गया तब पृथ्वीराज ने कविचन्द को भीमदेव के पास चिन्नू[1] के चिन्ह स्वरूप एक चोली और एक लाल पगडी देकर भेजा और कहला भेजा कि इन दो में से जो तुम्हारी राजी आवे सो अंगीकार करो, अर्थात् या तो चोली पहन कर स्त्री बनो; तो प्राण बचेंगे, नहीं तो लाल पाग बाधकर साम्हने आओ तो हम भी तुम्हारे सहायकों सहित तुम्हारे खून की नदी बहाकर उससे पिता के नाम तर्पण करें। जैसे रामचन्द्र ने रावण को कुल सहित नाश किया, पार्थ ने पाताल में पैठ कर अपनी पति रक्खी उसी प्रकार मैं भी "हे भीमदेव!" तुम्हारे घर आया हू। अब तुम्हारा बचाने वाला कौन है? कविचन्द ने चलते समय इस परणक और तुर्रा लगाया। उसने गले में जाली और नसेनी डाली, एक हाथ में कुदाली और दाय

1 चिन्नू, चुन्लू = Challenge.

लिया और दूसरे में अंकुश और त्रिसूल। जब कवि पट्टनपुर में पहुचा तो वहा सैकडों दर्शक इसके पीछे हो लिए राजद्वारे पर हजारों आदमियों का हुजूम जुट गया। भीमदेव ने भी जुडते ही पूछा "कवि ये क्या स्वाग रचा है ? तब कविचन्द ने पृथ्वीराज का सदेसा पूरा करके कहा, हे राजन् पृथ्वीराज कहता है कि यदि भीमदेव मुझ से भाग कर जल में जावे तो मैं उसे इस जाल से जा जकडू, यदि वह आकाश पर चढे तो इस नसेनी से काम लू, पाताल में पैठे तो कुदाल से खोद निकालूं और अधेरे में लुके तो दीपक से देख मारू। इस प्रकार उसे पकड कर अकुश से वश में करू और तब त्रिसूल से उसका हृदय विदार डालू,। इस पर भीमदेव बोला। जाल को जला दूगा, नसेनी तोड डालूगा, कुदाल को घन से कुचल दूगा, दीये को हाथ से बुझा दूगा, अकुश को मोड दूगा, त्रिशूल को सिकोड दूगा, और जो मुझे मारने को कहेगा उलटा उसीको मारूगा। अब यह गर्व करते लज्जा नहीं आती। पहिली बात भूल गए ? रे कवि ! आज चूहा बिलार से लड़ना चाहता है, गीध हस के सिर चढना चाहता है, शृगाल शेर से युद्ध करना चाहता है। भला कहीं मेढक ने भी सर्प पर विजय पाई है ? बडे आश्चर्य की बात है !! तुझे बार बार क्या सिखावन दू, तू मुझ गुर्जर नरेश रूपी प्रज्वलित अग्नि ज्वाला के साम्हने अपने पति के प्रताप रूपी दीपशिखा को वथा दिखाने आया है। तुझ से बात वह करे जो भाट पुत्र हो, जा अपने राजा से कह देना कि मै इन ढोंग ढकोसलों से डरने वाला नही हू, उसे जो भरी हो सो करे। भीमदेव की ऐसी बाते सुनकर कविचन्द वहा से फौरन उठकर चला आया और पृथ्वीराज से सब हाल ज्यों का त्यों उसने कह सुनाया।

कवि चन्द के पीठ फेरतेही भीमदेव ने इधर से अपने कवि जगदेव भाट को रवाना किया और कहला भेजा कि मैंने जो कुछ कहला भेजा है उसका क्या उत्तर है। निदान जगदेव ने कवि चन्द के पास आकर, कहा भाइ सोते हुए सर्प की पूछ दबाने से क्या लाभ ? तुम दीया जाल कुदाल आदि का आडमबर कर के गए थे, कैमास चामड राय कन्ह इन में से कोई अथवा पृथ्वीराज स्वयं जाते तो मजा पाते ! यह सुनकर कविचन्द गुस्से होकर बोला। बस तुम्हारे राजा ने बहुत सी कोंस (छीमी) खाई है, मिर्चे चबाने का मजा अब मालूम होगा' यह पृथ्वीराज उन राजाओं में नहीं हैं जिन्हें उसने सहजही जीत लिया। बिच्छी का मत्र न जान कर साप के बिल में हाथ डालना आसान नहीं होता। ऐसा सुन कर जगदेव भीमदेव के पास आकर बोला कि अब आप अपनी तैय्यारी कीजिए चहुआन को आ पहुचा समझिए।

इधर पृथ्वीराज ने निड्डर को बुलाकर अपने बराबर बैठाला और उसके कधे पर हाथ रख कर कहा कि वैसे तो सब सामन्त हैं परन्तु इस समय मुझे विशेष भरोसा तुम्हारा ही है! दैवयोग से आज यह दूसरा भारथ आ उपस्थित हुआ है। बस सब सामन्तों को साथ लेकर ऐसा करो कि बात भी रहे और संसार में सुयश विस्सृत हो। तब निड्डुरराय बोला कि आपके सब सामन्त सच्चे स्वामिसेवी हैं। वे समर के समय तन को तिनके के बराबर समझते हैं। हे राजन् आप किसी प्रकार से चिन्ता न कीजिए। तिस में नरनाह कन्ह का पराक्रम तो अकथनीय है। वे इस समय ऐसे वीर हैं जैसे भारथ के समय भीष्म थे। इतने में पृथ्वीराज ने एक मोतियों की माला जो एक लाख की थी अपने गले से उतार कर निड्डुर को पहना दी। वह द्युतिदार मोतियों की माला तेजस्वी कमधुज्ज के गले में ऐसी सुशोभित होती थी मानो सूर्य्य मण्डल के गिर्द गगधारा प्रवाहित हो रही हो। पृथ्वीराज ने कन्ह को भी बुला कर उसके पैर में पर्वाई[१] पन्हाई। उसे अगीकार करते समय कन्ह ने अत्यन्त लज्जित हो कर कहा। हा ! मेरा जीवन वृथा है, मेरे रहते सोमेश्वर को शत्रु ने मार लिया परन्तु मेरे प्राणों ने

१ पर्वाई पैर के गहने का नाम है।

शरीर न छोड़ा, तब निड्डुरराय बोला इससे क्या तीरदाजही निशाना चूकते हैं। शेसवार ही जमीन चूमते हैं। सुग्रीव अपनी स्त्री की रक्षा न कर सका, दुर्योधन के देखतेही कर्ण मारा गया, रामचन्द्र के रहते ही सीता हरण हो गई। पाण्डवों के साम्हने द्रोपदी का चीर खींचा गया इत्यादि। इसी प्रकार सैकड़ों प्रमाण उपस्थित है 'अतएव इससे, हे कन्ह! तुम्हारा बल या तुम कलंकित नहीं कहे जा सकते। तुम्हारा तेज रूपी मयूर अब भी शत्रु समूह रूपी सर्पो को भक्षण करने में समर्थ है।

तब तक खबर लगी कि भीमदेव सेना सहित इधर को आ रहा है। इस लिये इधर से निड्डुरराय भी डंके पर चोट देकर आगे बढ़ा। परस्पर देखादेखी होतेही दोनों सेनाओं से पहिले हथनार उटनार और कुहकबान आदि अग्न्यास्त्र चलाए गए। दोनों तरफ हरावल और बाजुओं की व्यूह में आगे घुड़सवारों की भरती थी। अग्न्यास्त्रों की एक बाढ़ चलते ही दोनों तरफ से सवार नंगी तलवारें लेकर एक दूसरे से भिड़ पड़े। तब तक कन्ह के पट्टे भी हटा दिए गए। वह वीर अपनी सेना में से शत्रु समूह पर इस प्रकार से तड़पा जैसे घनघने बादलों के बीच बिजली तड़पती है। कन्ह के मुकाबिले में उधर से सारंग मकवान उतरा। इधर से कन्ह की सहायता पर केहर कठीर और लोहाना आजानबाहु जा पहुंचे। बहुत कुछ पराक्रम करने के बाद मकवाना कन्ह के हाथ से मारा गया। मकवान के मरते ही चालुक्य सेना कुछ मनहार सी होगई। सामन्तों का जोर बढ़ उठा, परन्तु सच्चे सूर हार जीत का कब विचार करते हैं उन्हें तो मर कर स्वर्ग जाना सूझता है। जीवन के दिन तो वे सपना समझते हैं। सूर वीरों को ऐसे जघन्य कर्तव्य का कुछ दोष भी नहीं लगता क्योंकि जैसे दावाग्नि वायु के वशीभूत होकर जंगल को जरा-देती है उसी प्रकार वे भी स्वामी सेवा के धर्म को धारण कर शत्रु का विनाश करना विचारते हैं। जब तक चोले में दम है तब तक काम करते हैं और हंस के चल बसने पर सदा आराम करते हैं। दोनों दलों में मार मार होते पहर दिन चढ़ आया और सामन्त सेना के पराक्रम रूपी कगारों के बीच में शत्रु सेना की रुधिर धारा बह निकली। अध-मरे घायल हा हा और शक्ति सम्पन्न सूरवीर बबं बोलते थे। खून के घने घने फव्वारे, अग्नि शिखा से, उज्वल शस्त्र बिजली से, बाणों की बौछार वर्षा सी, और उनसे उत्पन्न सन् सन् शब्द भंगस्वर सा भासित होता था।

इसी समय उधर से सारंगराय खीची ने इस जोर से धावा किया कि चहुआन सेना के दांत खट्टे होने लगे। अच्छे अच्छे हट्टे कट्टे सिपाही जुट्ट बांध कर भी आगे बढ़ने से हिचकने लगे। यह देखकर पृथ्वीराज ने स्वयं घोड़े को एड़ लगाई। उस टेढ़ी टेढ़ी मूंछ वाले बलवान जवान चहुआन ने बाणों की वर्षा करके कुंडलाकार चक्र बांध दिया। एक क्षण मात्र में शत्रु सेना में हाय हाय होने लगी। दशों दिशाएँ और आठो वसु थर्रा उठे और थोड़ी देर में चालुक्य सेना के भी पैर पीछे पड़ने लगे लड़ने से हटना और डटना तो हुआ ही करता पर सच्चे शूरवीर पुरुष सदा प्रशंसा के पात्र होते हैं शूर पुरुषों से सूर्य्य भी भयातुर रहता है क्योंकि सूर्य्यमण्डल को भेदकर ब्रह्म में लीन होते हैं। और क्या कहें, युद्ध में शूर पुरुष उस वामन स्वरूप से भी बड़े है, क्योंकि वामन ने तीन पग में तीन लोक नापे थे और शूर पुरुष एक पग में तीन लोक लांघकर चिन्मय ब्रह्म में मिलकर तन्मय होजाते हैं। जिस समय सच्चे स्वामिसेवी सुपुत्र शूर पुरुष ऊंची बाह करके तलवार की वार करते थे उस समय उसे देखकर देवता भी वाह वाह करते थे। और मय बाजों के स्वर के साथ परस्पर तलवारों की झना झन चांचर का सा स्वर जान पड़ता था उसी लय में योगिनी नाथेइ नाथेइ के ताल पर नाचती थीं

२ सारंग मकवान से यहां उसी मकवान के पुत्र से तात्पर्य है जो मकवान शहाबुद्दीन के हाथों से मारा गया था सारंग सोलंकी और मकवाना उसका पुत्र जैसे सार्दूलदेव।

किसी शव को शृगाल घसीटते और किसी को गृद्ध नोचते थे। दाँत और सुड कटे हुए हाथी बडे भयावने जान पडते थे। हय हींस हींस कर चौकडी भरते और सवार सम्हल सम्हल कर वार करते थे। वह सहस्रों विज्जुछटा की छवि देख कर देवता प्रसन्न होते और देवाङ्गनाओं के मन क्षुभित होते थे।

चहुआन सचिव सच्चे वीर कैमास के तीन वार खाली गए। क्योंकि इधर से ये उधर से वे-दोनों दल के वीर अपनी अपनी वाजी पर वज्र से डटे थे। आखिरकार मार होते होते जब सन्ध्या होने को हुई और वहुत कुछ सैनिकोंके मरजाने पर मैदान में कुछ उकास पड़ा तब पृथ्वीराज स्वय मार काट करता हुआ बढ कर भीमदेव के साम्हने जा पहुचा और बोला हे भीमदेव आ अब तेरा अन्त आगया। इस पर भीमदेव नागिन सी कृपाण खींचता हुआ वोला, अच्छा देख मै तुझे भी सोमेश्वर के पास भेजता हू। इतने मे पृथ्वीराज के पीछे से कन्ह ने लपक कर कहा (इधर देख) और एक ऐसा जनेऊ-उतार हाथ मारा कि भीमदेव कटकर दो हो गया। वाह, वाह, कन्ह की बाकी तलवार क्या थी मानो दूज का इन्दु, निष्कलक चन्द किरण, या दिशाओं का सौरभ समूह था।

भीमदेव के मरतेही चाहुआन सेना में जैजैकार होने लगा। तब तक दिशाओं में अंधेरा भी छा गया और स्वामी विहीन परास्त गुरजर सेना भी पट्टनपुर को लौट गई। इधर उक्त मर्मशाली शत्रु के शमन हो जाने से चहुआन का चोला भी चंगा हो उठा। परन्तु थके मादे होने के कारण सब लोग जहा तहा आराम करने लगे। रणक्षेत्र में रात्रि भर करुणा तथा वीर रस का प्रभाव रहा। अहा धन्य है क्षत्रीवर्ग,जिसे पेट की रोटी और जाति की लज्जा के लिये जान देनी पड़ती है। परन्तु यह कैसी विचित्र खेती है कि मरने के पीछे ही फसल हाथ आती है। इधर अपनी मिट्टी को भूत बेताल काली कपाली कौवे गीध खाते हैं और उधर आप स्वर्ग में अप्सराओं से मिलने जाते हैं।

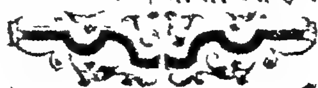
ज्यों त्यों करके वह भयानक करुणा और वीभत्स रसमय रात्रि व्यतीत हुई। तिमिर फट गया, आसमान मे उजेला आगया, देव कर्म होने लगे, चकवी ने विलाप करना छोड़ा, उल्लू अन्ध हुआ, देवालयों में शखध्वनि हुई, और वृक्षों पर पक्षी कलरव करने लगे। ज्यो ज्यों सूर्य की किरणें तेज होने लगीं त्यों त्यो कमल खिलने लगे और यमुना के कचन से स्वच्छ जल में सूर्य की किरणों की आभा विचित्र ही छवि छाने लगी। इस समय सब सामन्तों ने अपने समर विजयी स्वामी को प्रणाम किया। पृथ्वीराज की आज्ञा से उसी समय खेत साफ किया गया। इस युद्ध में पृथ्वीराज की तरफ के डेढ़ हजार घोडे पाच सौ हाथी और पाच हजार सिपाही काम आए और जैतराव प्रमार अधिक घायल हुआ। सच है यह ससार स्वप्न का वस्त्र है। यावत् दृश्यमान पदार्थ एक न एक दिन नाश होते ही है। फिर मनुष्य तो काल रूपी खटीक के घर का बकरा है। वह निर्दयी दयावान और अदय किसी को भी नही छोड़ता। इस लिये सूर वीर सामन्तों का यह मत यथार्थ तत्वमय सत्य और माननीय है कि समय आ पड़ने पर मारने मरने से न चूकना चाहिए।

इसके वाद पृथ्वीराज ने सजमाराय के दोहित्र कचराराय को राजा वनाकर दस बंदरगाह देकर चौंर छत्र भी दिया। शेष ८४ बदरगाह खालसे में रक्खे और भीमदेव के पुत्र को पट्टन राज्य पर तिलक करके कचराराय को साथ लेकर दिल्ली की तय्यारी की। उस दिन पचमी रविवार इन्द्र योग को कोई व्रत था इसलिये सूर्योदय होने ही पाल-परताल रवाने कर दिए गए और दूसरे दिन पृथ्वीराज ने भी वहा से कूच किया।

---

(१) खटीक = हिन्दू कसाई

(१) बन्दरगाहों के लेन देने की बात जिन दोहों मे हैं वे दोहे मो० प्रति मे नहीं है। मो० प्रति का पाठ अधिक प्रामाणिक है।



विनय मंगल नाम प्रस्ताव।

(पैंतालीसवां समय।)

एक समय चंडी देवी ने इन्द्र से कहा कि हे देवपति धरनि पर रुधिर धारा बहाइए क्योंकि मेरी रामायण और महाभारत आदि युद्धों के समय की तुष्टित्रुटि के आपही के द्वारा पूर्ण होने की आशा है। यह सुन कर इन्द्र ने उत्तर दिया कि हे चण्डिके! सुनो, राम और रावण का ऐसा घोर घमासान युद्ध हो गया है कि जैसा पृथ्वी पर और पहिले कभी भी नहीं हुआ था। इस युद्ध में शूर वीरों ने निज तन को तिनका समान जान मार मार कहते हुए प्रतिपक्षियों पर ऐसे करारे वार किए कि जिनकी करनी संसार में अचल हो गई। मृतकों के मांस से थलचर मात्र पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो गए, शूरवीरों के सिरों से शिव की रुंडमाल भर गई परन्तु आश्चर्य्य है कि तू और भूदेवी दोनों की क्षुधा शान्त न हुई।

जिस समय राम ने लंका पर आक्रमण करके त्रिकूट पर स्थित रावण के किले को घेर लिया उस समय निशिचर समूह आत्मरक्षा के लिये उद्यत हो उनसे लड़ने आया। वे राक्षस लोग ऐसे दीर्घकाय थे कि जिनका सिर आकाश को स्पर्श करता था। उनके अत्याचार मय आतंक से तीनों लोक कंपित होते थे। जिस समय वे मायावी नाना भांति के अस्त्र शस्त्र धारण कर युद्ध करने में प्रवृत्त हुए तब दसों दिशाओं में हलचल मचगया। परन्तु प्रतापी राम और लक्ष्मण ने प्रचंड बाणों की वर्षा करके उन सब को स्वर्ग मार्ग बतलाया। उन सब राक्षसों में रावण का पुत्र मेघनाद अत्यन्त बलवान था। उसकी लक्ष्मण जी से बरनी हुई। मेघनाद ने अपनी अद्भुत माया से सुर नर असुर सब को चकितोपित कर दिया परन्तु ब्रह्मचर्य व्रतधारी लक्ष्मण ने अन्त में उसे भी मारडाला। तब रावण ने अपने भाई कुंभकर्ण को जगाया जो कि छः महीने तक बराबर सोता रहता था। वह लंका की राक्षस मंडली में सब से अधिक बलवान दीर्घकाय और भयानकमूर्ति था। वह जैसेही सो कर उठा तैसेही सीधा युद्धभूमि में जा उपस्थित हुआ। जब वह राम पर अस्त्र शस्त्र की वर्षा करता और अपनी माया फैलाता था तो आकाश में स्थित सुर समूह में हाहाकार मच जाता था। अन्त में भगवान रामचन्द्र ने अपने तीव्र बाणों से काट कर उसे खंड खंड कर दिया। तब दशशीश रावण स्वयं गर्व के रथ पर सवार होकर लड़ने आया और उसने भी खूबही पराक्रम दिखाया किन्तु अन्त में बन्दरों ने पत्थर पहाड़ों की वर्षा करके उसके रथ को चकनाचूर कर दिया और रामचन्द्र ने इकतीस बाण संधान कर उसके नाभिकुंड में स्थित अमृतबिन्दु को भी सोख लिया जिससे वह भी धराशायी हुआ।

अन्त में उन उदारचरित राजा रामचन्द्र ने इस प्रकार परिश्रम से जीते हुए लंका के राज्य को उसी रावण के भाई विभीषण को दे दिया। पुरुषों में श्रेष्ठ राजा रामचन्द्र के इस प्रकार अतुलित पराक्रम से ऐसा अद्वितीय रक्त प्रवाहित हुआ परन्तु तू तो भी सन्तुष्ट न हुई। अब तक ढँढी सास भर फिरती है तो अच्छा कन्नौज और दिल्ली राजाओं में वैर हो जाने के कारण अब जो दोनों में परस्पर युद्ध होगा उसमें सब की आश पूर्ण होंगी, चंडिका की क्षुधा शान्त होगी, योगिनियों के खप्पर भरें गे, शिव रुंडमाल नवीन गे और पृथ्वी पर रक्त के नदी नारे भरें गे।

निदान देवेन्द्र ने मतिप्रधान गन्धर्व को बुला कर आज्ञा दी कि तुम मृत्युलोक में जाकर पृथ्वी राज चहुआन और कनवज्ज राज जैचन्द में परस्पर विग्रह का बीज बोकर उन दोनों में युद्ध करवाओ जिससे संसार में उनकी कीर्ति का विस्तार हो। यह सुनकर वह गन्धर्व सुवा का स्वरूप धर कर कन्नौज में जा पहुंचा, वह दो दिन पर्य्यन्त दिन भर तो

१ शक्ति की उस कला की उपाधि चंडी है जो कपाली प्रेम और योगिनी आदि की स्वामिनी और रुधिर मांसादि पदार्थों का भक्षण करने वाली मानी जाती है।

कन्नौज नगर की शोभा निरीक्षण करता और रात्रि को मंदनिका ब्राह्मणी के घर के आँगन मे एक वृक्ष पर बसेरा लेता था ।

उस गंधर्व ने वहां से आकर अपनी स्त्री से कहा कि जैसे सतयुग में काशी, त्रेता में अयोध्या और द्वापर में हस्तिनापुर सब भांति से श्रीसम्पन्न थे वैसे ही आजकल कलियुग में कन्नौज है । यह सुनकर उसकी स्त्री बोली कि हे स्वामी कृपा कर मुझे संयोगिता के पूर्व जन्म की कथा और उसके कन्नौज में जन्म लेने का कारण कह सुनाइए । तब गन्धर्व बोला—

एक समय जटाशंकर नाम शिव स्थान पर एक जरज नाम ऋषि तपस्या करता था । उसने ऐसी कठिन तपस्या की कि उसके नेत्र नाक कान जिह्वा हृदय जंघा त्वचा आदि दसों इन्द्रियां पराक्रमहीन हो सूखकर लकड़ी होगई । उक्त शिवजी के प्रसाद से जिस तपस्वी की आत्मा शिवमय हो रही थी और जो सीधा मुक्तिमार्ग पर चल रहा था वह क्षिमा नामक एक सुंदरी पर मोहित होकर तप के तारतम्य से पतित हो गया। सुन्दरी स्त्रियों के अंग का लावण्य अनंगरूपी अगननुमा है, जिसमें रूप के किनारों से सुरक्षित मोहरूपी जल का ताल भरा हुआ है, उसमें कटाक्षों कीभौरे पडती है और मानसिक योग को भी विध्वस करने वाली प्रेमविस्तार की लहरें उठा करती है, और फिर भी कान्ता की कान्तिरूपी गभीरता में पुरुषों के चित्त को खींचने की ऐसी विलक्षण शक्ति विद्यमान है कि जिसके कारण अच्छे अच्छे विशुद्धमन योगियों की भी जीवननौका पार नहीं तरने पाती । वे मतवारे हाथी की तरह बह कर मछली की तरह तरफराते है । अस्तु वह तपस्वी ऋषि उस विषय रस की मूर्ति लवंगलता सी सुन्दरी के प्रेमपाश में बँधकर बेबस होगया। उसे देखते ही उसका कंठ गद्गद होगया । सारा शरीर काँपने लगा और उसकी नजर से नजर मिला कर वह अपने पूर्व सुकृतों से ऐसा बेसुध होगया जैसे फटा हुआ दूध छाछ को छोड़ देता है; परन्तु जब वह सुन्दरी अन्तर्धान होगई तब तो जरज ऋषि तुपार तोपित वृक्ष की नाईं विकल होकर गिर पड़ा । उसे उसी समय से अपना जप जोग तप सब भूल गया और उसका सर्वस्व क्षिमामय होगया । सोते जागते उठते बैठते खाते पीते सर्वत्र उसे क्षिमा की मोहनी मूर्ति सूझ पड़ती थी इसलिये वह निरन्तर प्यासे पपीहा की भांति क्षिमा, क्षिमा रटा करता था ।

कुछ दिन तो जरज ऋषि का चित्त योंही भृंगी का कीट बना रहा; परन्तु फिर वह आपही आप सम्हल गया इसलिये उसने उस कुत्सित वासना को त्याग कर सत्कर्म में मन लगाया । पहिले समस्त तीर्थों में भ्रमण करके क्षुधा तृषा निद्रा आदि उपाधियां को उसने जीता और सिसिर ग्रीष्म पावस इन तीनों ऋतुओं में तन को तसइया देकर नीरस बनाया और केवल धूम्रपान करके पैर के अगूठों से उलटे टँगे सच्चिदानन्द ब्रह्म का ध्यान करते हुए सौ वर्ष बिता दिए । उसके इस प्रकार कठिन तप के कारण तीनों लोक कांप उठे और इन्द्र का इन्द्रासन डुल पडा ।

इसलिये इन्द्र ने रंभा उर्वसी तिलोत्तमा घृताची मेनिका सुकेशी मंजुघोषा आदि प्रधान [illegible]

(१) मूल पुस्तक में " दंभनिय मवन " पाठ है ।

(१) मूल पुस्तक में " जटा वीरशंकर शिवथान " पाठ है । मुल्क बुन्देलखण्ड रियासत छतरपुर अन्तर्गत खजुराहा एक स्थान है जहां कि किसी समय चन्देल राजाओं की राजधानी थी वहां पर अब भी कुछ समूचे कुछ टूटे फूटे मन्दिर उस स्थान की प्राचीन श्री की सूचना देते है । खजुराहे में एक शिवलिंग है जिसे महोबे के राजा परिमाल का स्थापित किया हुआ अनुमान किया जाता है । उस "मतंगेश्वर" के अग्निकोण मे दो मील के फासिले पर एक पहाड़ी है जिसके आधो आध में एक शिवलिङ्ग स्थापित है । उस शिवलिङ्ग को आजकल 'जटाशंकर" कह कर पुकारते है । उसी पहाड़ी के पास एक गाव भी है जो कि जटकरा कहलाता है । इन शिव जी का शिवालय जीर्ण होकर गिर गया है । यह स्थान बड़ा प्राचीन मालूम होता है । मेरा अनुमान है कि मूल ग्रन्थ में कथित जटा वीर शंकर शिवथान यही स्थान है क्योंकि मूलपाठ 'जटा वीर शंकर" में से केवल वीर निकाल लेने से उक्त शिव लिङ्ग का प्रचलित नाम 'जटा शंकर' होता है ।

मोतियों की आभा प्रस्फुटित होती थी, उसके पैरो में नगजटित नूपुरों का स्वर कलहस के कलरव को मात करता था और उसकी मद मद चाल गयद एव हंसों के हौसले हराती थी। उसके स्फटिक के समान जघा, अर्द्ध तुवाकार बडे बडे नितब, मृगराज सी पतली कमर और उसकी गभीर नाभी साक्षात् काम की सी बावली थी। कमर में रुरती हुई टे किंकिड़ियों से होता हुआ शब्द मणिहारे सर्प फुंकार का काम करता था। उसका एकसा ार त्रिवली सहित सुन्दर पेट, वक्षस्थल पर उठते ़ अनियारे उरोज और बीचों बीच सूक्ष्म रोम राजी ी मालूम होती थी मानो पीठ पर लटकती हुई णी की छाया की छटा छूट रही हो। उसके कलत और श्रीफल को लज्जित करने वाले कमल ली से उन्नत उरोजों पर रुरते हुए पुहुपहार की ोजन पर्य्यन्त सुवास फैलती थी। उसका कंठस्वर ोकिला के समान और चिबुक पर रक्खा हुआ ाला नुकता कमल कली पर बैठा हुआ भ्रमर सा ासित होता था। उसकी तिल प्रसून एव कीर की ोंच सी नासिका में मोतियों मय वेसर ऐसी सुशोभित ोती थी मानो शुक्र और शशि इस जड़ रूप में रिणित होकर शृगार रस का आस्वादन कर रहे ों, उसके सित कमल स्वरूप नेत्रों के कारे कारे तारे भ्रमर से, टेढी भौहें, पञ्च बाण के धनुष सी ललाट पट अर्द्धचन्द्रमण्डल सा और उसपर केसर का तिलक चन्द्रमा सूर्य्य का सा सगम ज्ञात होता था। उसकी ेणी सर्प सी और अग सुवास ऐसी सुखद थी कि उसके आस पास सदैव भ्रमर भन्नाया करते थे। े प्रिये अधिक क्या कहू उस चपक वरनी, सरसिज ुवामिनी, राजीवनेत्री, बिम्बोष्ठी, कलकठी, कुद, कली सी दत पक्ति वाली मनहरणी अप्सरा के सारे शृगार आडम्बर स्वरूप थे क्योंकि जिसे देवता और दैत्यों ने गाढे परिश्रम से समुद्र का उदर विदार कर निकाला उसके लिये एक स्वेत सारी ही वस्त्र े। हे प्रिये जिन अप्सराओं के लिये संसार मे बडे बडे मसर होते हैं सूर और पुरुष सब नाना नेह तोड कर तन को धज्जी धज्जी उडा देते है उसके ऊपर यदि सुमत मोहित हो गया तो क्या बड़ी बात थी।

अस्तु जब वह इस प्रकार से ऋषि के चित्त को चंचल कर चुकी तब उसने योगिनी वेष धारण किया। कानों में स्फटिक मुद्रा पहने सर्वाङ्ग विभूत रमाए जटा जूट बॉधे कठ मे शृगी पहिनें हाथ में डमरू लेकर योग साधनाओं का आडम्बर रचकर बंबं करती और डमरू बजाती हुई सुमंत के पास जा पहुंची। ये सुखमय स्वर सुनतें ही सुमत की ताली टूट गई और वह चाकित चित्त होकर सोचने लगा है ये कौन है? क्या साक्षात् शिव ने ही मुझपर कृपा की है? तब तक योगिनी साम्हने आ उपस्थित हुई, उसे देखते ही सुमन्त ने अर्घ पाद्य देकर आसन दिया और उसका ग्राम नाम पूछा। तब वह बोली कि वैसे सुर नर सभी मेरी मोहिनी मूर्ति पर मोहित थे परन्तु जब मैंने सासारिक व्यसनों से विरक्त होकर घोर तप किया तो इन्द्रासन डोल उठा और सब देवता दुखित होकर मेरी शरण आए, अतएव मैने फिर देवताओं को दुखी न करना विचार कर तप जप तज दिया और अब चिदानन्द ईश्वर के ध्यान में मग्न रहती हू।

वह पुनः बोली कि हे ऋषीश्वर। इस संसार चक्र के चरखे की चकाचौध से जो अपना पराया सूझता है यह सब कुछ भी नहीं है। शुद्ध ब्रह्म की उपासना से मरण जीवन का झझट छूट जाने पर जीव ज्योति उस अनन्त आनन्दमय स्वरूप में इस प्रकार से मिल जाती है जैसे सोने का कोई गहना तोड़ कर सोने के एक बड़े ढेले में मिला देने से फिर उन दोनों में कोई भेद नहीं रह जाता, हे योगिवर उस उपासना की विधि यों है—अर्द्ध मूल को ग्रहण कर ऊर्द्ध स्वासा का सचार करे और नासा के अग्रभाग मे उस ज्योति स्वरूप ईश्वर का ध्यान करे, वक्र नालियों से वायु खींचकर मेरु दंगड को उत्थान दे। तब अनहद शब्द सुन पडता है, ज्ञानी पुरुष उसी

(१) मेरुदड—अन्य योग ग्रन्थों मे कुडलनी या सर्पणी करके लिखा है।

को बुलाकर उनसे कहा "हे कमल नयनी, गजगामिनी, पिकवयनी, सिंहलकी, ताल स्वर ग्राम कला विकलादि सहित संगीत विद्या और नृत्यादि कलाओं में निपुण अप्सराओ! तुम में से एक कोई मृत्यु लोक में जाओ और तेजस्वी तापस सुमन्त ऋषि को छल से तपभ्रंष्ट करो क्योंकि उसके तप के तेज से मेरा आसन डोल रहा है! शिव की ताली खुल गई है, शेष सकित है, स्वर्गवासी सुरों को शंका है और उड़गन समूह नीरस हो रहे हैं। इन्द्र के ऐसे बचन सुनकर वे आठों पुष्पवत कोमल शरीरवाली स्वर्ग वारांगनाए विमानों पर बैठ कर भूलोक में आ उपस्थित हुईं। वे दशों दिशाओं की सौदामिनी की दुतिवत् देहधारी देवाङ्गनाएँ दिव्य शृंगार धारण किए हुए साक्षात् तन धारी मोहनी मन्त्र सी ज्ञात होती थीं। उनके स्वाभाविक रसमय सहज हास विलास हाव भाव कटाक्षादि की छाया से जटिल योगीश्वरों का मूर्छित कामदेव जागृत हो उठना सभव है। वे सब अप्सराए कल कंठ से गान करतीं, दशों दिसाओं की वायु को अपने शरीर की गंध से सुवासित करती हुई उस स्थान पर आईं जहा सुमत ऋषि तपस्या करता था। उनमे से रम्भा चिमा का वेष धारण कर आगे हुई और अन्य अप्सराएं विविध विधि के गान वाद्य करने में प्रवृत्त हुईं। इससे सुमन्त की समाधि कुछ खुली और पलक भी उघरे परन्तु अप्सरी इससे स्वय लज्जित हो सकुचित सी हो रही, वह विचारने लगी कि यदि अब हमलोग आगे साहस करती हैं तो तापस का शाप शिरोधार्य्य करना पड़ेगा और जो यहा से योंही लौट जाती है तो सुरराज का कुपित होना संभव है, क्या करें किसी तरह गति नहीं है? अन्त में रम्भा ने साहस किया और वह पुनः उसी वेष में सुमन्त के पास मे आई।

तब तक यहा सुमन्त गाढी योगनिद्रा की ताली में निमग्न था। वह उलटा टँगा हुआ आखें वन्द किए मूल पवन को रोके वक नालियों मे जल चढा कर हृदय कमल को तल कर रहा था और ब्रह्म तेज स्वरूपी अग्नि की ज्वाला से पापों को जड से जला रहा था। उसके अन्य सब अग निश्चेष्ट थे उसे केवल कानों से अनहद शब्द सुनाई देता था। ऐसे ध्यानावस्थित तपस्वी की ताली तोड़ने के लिये झाँझ, वीणा, मृदग, मुरचंग आदि वाद्यों की झनकार करके अप्सराओं ने उच्चस्वर से श्री राग गाना आरम किया और तदनुसार वे हाव भाव कटाक्षादि सहित लावण्यमय ललित लीलाएँ कर अदाएँ बनाने और अष्टाङ्ग प्रबन्धबद्ध नृत्यों के क्रम से छुटक छुटक कर नाचने लगीं। इन सब स्वरों का शोर सुनकर सुमन्त की समाधि का शमन हुआ, वह चकित चित्त होकर सोचने लगा, क्या मै स्वप्न देख रहा हूं? तब तक नूपुर की धुन सुनकर तो उसकी ध्यान गति का ही अवरोध होगया बस उसकी ताली टूट गई और पलक खुल गए। निदान वह अप्सरी से कहने लगा, हे बाले तू कौन है? कोई अप्सरी है? यक्ष कन्या है? या नाग कन्या है! यह कहकर वह कामातुर हो तप छोड कर उस स्त्री का करकमल पकडने के लिये झपटा परन्तु वह तो न जाने कहां समा गई और सुमन्त मूर्छित होकर गिर पडा, परन्तु कुछ देर मे वह आपही आप चैतन्य हुआ। सौभाग्य वश उसकी ज्ञान दृष्टि भी सजीव हो उठी और इसलिये वह पुनः पहिले की भाति तन मन से तपस्या करने में रत हुआ। उसने इन्द्रियों के उत्तेजक क्षुधा पिपासा निद्रा आदि को जीत कर इन्द्रियों को वश मे किया। नाना प्रकार की योग क्रियाओं के द्वारा उसने ऊर्द्ध पवन को बाँधा और स्वास को बराबर बाए स्वर से पीते हुए और दाहिने से छोडते हुए उसने कुभक पूरक नाडिया सिद्ध करते हुए पुनः ऊर्द्ध मुख हो ध्यानावस्थित रहना आरम्भ किया।

कविचन्द की स्त्री ने पूछा कि हे पति वह अप्सरा कैसी सुन्दर थी। इसपर कविचन्द बोला कि हे प्रिये। उसके चरण तल की अरुणाई बसन्त ऋतु के कमल पुष्प की लालिमा को मात करती थी। उसके नखो से अमृतमय चन्द्रमा ए?

मोतियों की आभा प्रस्फुटित होती थी, उसके पैरों में नगजटित नूपुरों का स्वर कलहस के कलरव को मात करता था और उसकी मद मद चाल गयद एव हंसों के हौसले हराती थी। उसके स्फटिक के समान जघा, अर्द्ध तुवाकार बडे बडे नितब, मृगराज की सी पतली कमर और उसकी गभीर नाभी साक्षात् काम की सी बावली थी। कमर में रुरती हुई कटि किंकिड़ियों से होता हुआ शब्द मणिहारे सर्प की फुकार का काम करता था। उसका एकसा सुढार त्रिवली सहित सुन्दर पेट, वक्षस्थल पर उठते हुए अनियारे उरोज और बीचों बीच सूक्ष्म रोम राजी ऐसी मालूम होती थी मानो पीठ पर लटकती हुई वेणी की छाया की छटा छूट रही हो। उसके कलधौत और श्रीफल को लज्जित करने वाले कमल कली से उन्नत उरोजों पर रुरते हुए पुहुपहार की योजन पर्य्यन्त सुवास फैलती थी। उसका कंठस्वर कोकिला के समान और चिबुक पर रक्खा हुआ काला नुकता कमल कली पर बैठा हुआ भ्रमर सा भासित होता था। उसकी तिल प्रसून एवं कीर की चोंच सी नासिका में मोतियों मय वेसर ऐसी सुशोभित होती थी मानो शुक्र और शशी इस जड़ रूप में परिणित होकर शृंगार रस का आस्वादन कर रहे हों, उसके सित कमल स्वरूप नेत्रों के कारे कारे तारे भ्रमर से, टेढी भौहें, पच बाण के धनुष सी ललाट पट अर्द्धचन्द्रमण्डल सा और उसपर केसर का तिलक चन्द्रमा सूर्य्य का सा सगम ज्ञात होता था। उसकी वेणी सर्प सी और अग सुवास ऐसी सुखद थी कि उसके आस पास सदैव भ्रमर भन्नाया करते थे। हे प्रिये आविक क्या कहू उस चपक वरनी, सरसिज सुवासिनी, राजीवनेत्री, बिम्बोष्टी, कलकठी, कुद, कली सी दन्त पक्ति वाली मनहरणी अप्सरा के सारे शृंगार आडम्बर स्वरूप थे क्योंकि जिसे देवता और दैत्यों ने गाढे परिश्रम से समुद्र का उदर विदार कर निकाला उसके लिये एक स्वेत सारी ही वस्त्र है। हे प्रिये जिन अप्सराओं के लिये संसार मे बडे बडे समर होते हैं सुर और पुरुष सब नाना नेह तोड कर तन को धज्जी धज्जी उडा देते है उसके ऊपर यदि सुमत मोहित हो गया तो क्या बड़ी बात थी।

अस्तु जब वह इस प्रकार से ऋषि के चित्त को चंचल कर चुकी तब उसने योगिनी वेष धारण किया। कानों में स्फटिक मुद्रा पहने सर्वाङ्ग विभूत रमाए जटा जूट बाँधे कंठ मे शृगी पहिनें हाथ में डमरू लेकर योग साधनाओं का आडम्बर रचकर बंबं करती और डमरू बजाती हुई सुमत के पास जा पहुंची। ये सुखमय स्वर सुनते ही सुमत की ताली टूट गई और वह चाकित चित्त होकर सोचने लगा है ये कौन है? क्या साक्षात् शिव ने ही मुझपर कृपा की है? तब तक योगिनी साम्हने आ उपस्थित हुई, उसे देखते ही सुमन्त ने अर्घ पाद्य देकर आसन दिया और उसका ग्राम नाम पूछा। तब वह बोली कि वैसे सुर नर सभी मेरी मोहिनी मूर्ति पर मोहित थे परन्तु जब मैने सासारिक व्यसनों से विरक्त होकर घोर तप किया तो इन्द्रासन डोल उठा और सब देवता दुखित होकर मेरी शरण आए, अतएव मैने फिर देवताओं को दुखी न करना विचार कर तप जप तज दिया और अब चिदानन्द ईश्वर के ध्यान में मग्न रहती हू।

वह पुनः बोली कि हे ऋषीश्वर। इस संसार चक्र के चरखे की चकाचौंध से जो अपना पराया सूझता है यह सब कुछ भी नहीं है। शुद्ध ब्रह्म की उपासना से मरण जीवन का झंझट छूट जाने पर जीव ज्योति उस अनन्त आनन्दमय स्वरूप में इस प्रकार से मिल जाती है जैसे सोने का कोई गहना तोड़ कर सोने के एक बड़े ढेले मे मिला देने से फिर उन दोनों में कोई भेद नहीं रह जाता, हे योगिवर उस उपासना की विधि यों है—अर्द्ध मूल को ग्रहण कर ऊर्द्ध स्वासा का सचार करे और नासा के अग्रभाग में उस ज्योति स्वरूप ईश्वर का ध्यान करे, वक नालियों से वायु खींचकर मेरु दण्ड को उत्थान दे। तब अनहद शब्द सुन पडता है, ज्ञानी पुरुष उसी

(१) मेरुदड—अन्य योग ग्रन्थों मे कुडलनी या सर्पणी करके लिखा है।

स्वर की ध्वनि में सोऽहं मन्त्र का जाप करे। ऐसा करने से नाभि स्थान का आठ दल वाला कमल विकसित होता है और उससे दस अंगुल पर उलटा लटकता हुआ हृदय कमल है जिसकी कान्ति तप्त स्वर्ण के समान है। यह कमल कमल-कली की बनावट का है और शरीरान्तरगत वायु के संचालन की कुंजी स्वरूप है। वायुमूल ऊर्द्ध योग की सिद्धि से यह भी कमल के पुष्प की तरह खिलने लगता है। इसके अन्तर्गत अंगुष्ट प्रमाण आठ भुजा वाले देवता का निवास है। तीसरा अष्ट दल कमल कंठ स्थान पर स्थित है। इसका देवता रुद्र और इसमें सूर्य्य और अग्नि की तेज शक्ति विद्यमान है। इस अग्नि ज्वाला समान तेजोमय कमल के पिष्ट भाग में नारायण का रत्न जटित सिंहासन है जिसमें वह भृगुलता और कौस्तुभमणी संख चक्र गदा पद्मधारी स्वयं विराजमान है। वह ध्यानावस्थित योगियों को दर्शन देता है। अन्त में हजार दल वाला पद्मकोष नाम का कमल मस्तक में है। इसका स्फटिक के समान स्वेत रंग है और इसमें सहस्त्र सूर्य्य का प्रकाश और सहस्त्र चन्द्रमा की शीतलता विद्यमान है इसके समस्त दल स्वेत, लाल, पीले, काले इन चारो रंगों में विभाजित है और वे क्रम से सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग इन चारों युगों से सम्बन्ध रखते है। उस कमल के पिष्ट भाग के मूल पर स्वयं गुरु निराकार देव परमात्मा का वास है। उसी का ध्यान करने से योगी मुक्ति पाते है। हे मुनि! योगी लोग इस प्रकार ध्यान धर कर गीता में कृष्ण के कहे अनुसार विराट रूप की उपासना करें और दिन रात बराबर जागें। इसलिये हे मुनि तुम तपस्या का कष्ट तज कर या उक्त निर्गुण ब्रह्म या विराट रूप सगुण प्रभु का ध्यान करो और यदि सच पूछो तो दस अवतार उसी भक्तवत्सल ब्रह्म के हैं जो कि उसने समय समय पर भक्तों के उद्धार के लिये धारण किए है। मच्छ, कच्छ, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम और बुद्ध ये अवतार तो गत है अन्तिम अवतार कृष्णावतार है जिसमें भगवान ने गोपियों के साथ विहार किया इसलिये उस कृष्ण भगवान को प्रसन्न करनेके लिये स्वयं रसमय होना आवश्यक है। हे मुनि, इधर उधर की भ्रमना में न पडो, सब छल छोड कर रसमय हो जाओ।

यह कपट वेष धारिणी अवधूतनी इस प्रकार छल बल की बातें कर ही रही थीं कि तब तक उसके पीछे एक विकराल काय सिंह गर्जन, करता हुआ आता देख पड़ा। उसे देख कर अवधूतनी भय से कंपित होती हुई, सुमंत की गोद में बैठ कर उसके हृदय से लपट गई। बस वह छल रूपी सिंह तो न जाने कहा विलीन हो गया परन्तु काम रूपी सिंह ने सुमंत का कलेजा धर लिया। उस कामिनी के कुच कमलों का स्पर्श होते ही सुमन्त का सब वैराग्य भूल गया। कामान्धता के कारण उसका सर्वांग रोमाञ्चित और शिथिल हो उठा। तब वह अप्सरी पुनः बोली रे ब्राह्मण इस रूखी जोग जुगति में क्या रक्खा हुआ है। सचक्कन सनेह का आनन्द लेकर अपने पूर्व संचित सुकर्मो का फल भोग क्यों नहीं करता। बस फिर क्या था सुमन्त का मन अत्यन्त ही अधीर होकर काम क्रीडा में रत हुआ। इतने में सुमन्त का पिता जरज ऋषि आ गया। जब सुमन्त ने पिता को आया हुआ जाना तो वह भयभीत और लज्जित होता हुआ जरज के पास आया और प्रदक्षिणा करके उसके पैरो पर गिर पडा। उधर रंभा इस समय अपने असली स्वरूप मे थी। इसलिये जरज ऋषि ने उसे पहचान लिया और उससे कहा। हम ऋषि लोग जंगल मे रहते और कंदमूल खा कर गुजारा करते है, तुम लोग हम को वृथा सताया करती हो, इसलिये तू हमारा यह शाप ले। यह कह कर जरज ने हाथ में कुशा लेकर इस प्रकार शाप दिया "मेरे शिष्य पर यह तेरा तीसरा वार है। जा तू मृत्युलोक मे जन्म ले तेरे कारण जिस प्रकार सुमंत का चित्त व्याकुल हुआ उसी प्रकार तू भी आजन्म बेकल रहेगी, तेरे ही कारण तेरे पति और

(१) अंगुष्ट प्रमाण देव सब्द [illegible] से [illegible] और [illegible] है।

पिता दोनों के वंशों का नाश होगा और अन्त में पति से भी तेरा विछोह होगा" इस शाप से रम्भा ने अत्यन्त डर कर जरज से करबद्ध होकर निवेदन किया कि हे सहज ही सरल हृदय कृपालु महात्मा अब कृपा कर मेरे उद्धार की भी युक्ति बतलाइए। तब जरज ने उत्तर दिया कि तू कन्नौज के राजा जैचन्द के घर जन्मेगी और जब वह यज्ञ करेगा तब दिल्ली के चहुआन राजा पृथ्वीराज से घोर सग्राम होगा। इस प्रकार भूमि का भार उतार कर तू पुनः स्वर्गलोक में आ सकेगी। यह सुन कर मलिन मन रूखे बदन रम्भा विमान पर बैठ कर स्वर्ग को प्रस्थानित हुई। इधर तपस्वी फिर तप करने लगे।

इसके कुछ दिनों बाद की बात है कि एक बार इन्द्र ने अपने यहा कोई बड़ा भारी उत्सव किया जिसके देखने के लिये ब्रह्मा विष्णु महेश ये तीनों देवता भी आए। परन्तु द्वारपालों ने उन्हें अन्दर जाने से रोका। ब्रह्मा बोले, रे मदान्ध द्वारपालो। तुम्हें उस जन्म की खबर भूल गई जब कि सनक सनदन सनत् कुमारों के शाप से तुम लोग तीन जन्म पर्य्यन्त राक्षस योनि भोग करते रहे हो। पहिले जन्म में हिरणाकुश और हिरणाक्ष्य हुए जिन्हें विष्णु ने नरसिंह रूप धर कर मारा। फिर रावण और कुभकर्ण हुए जिनके लिये रामावतार हुआ और अन्त में कंस शिशुपाल हुए जिन्हें आनन्द कन्द श्रीकृष्णचन्द्र ने पछारा। इस प्रकार बातें हो ही रही थीं कि तब तक सची सहित इन्द्र स्वय वहा आ उपस्थित हुआ और विनीत भाव से सस्तुति प्रणाम करके तीनों देवताओ को सादर रगशाला में ले गया।

इनके आसनों पर आसीन होते ही रभा हा हा हू हू आदि वजूधारी गधर्वों को लेकर अष्ट अप्सराओं के समाज सहित सभा मडप में आ उपस्थित हुई। गधर्वों ने साज मिलाकर गत बजाई अप्सरी हुटक हुटक कर नाचने लगी। इसके बाद रभा ने प्रारम्भ में स्वर साधते ही इन्द्र के गुणानुवादों का गीत गाना आरम्भ किया। यह सुनते ही सदाशिव अप्रसन्न हो गए। आप यह कह कर कि तू ने श्रेष्ठ तीन देवताओ को छोड़ कर पहिले इन्द्र की बन्दना की इस लिये तू हमारा यह शाप सिरोधार्य्य कर 'जा तेरा पतन हो तू मृत्युलोक में जन्म ले और तेरे कारण भूमि पर भयानक काण्ड उपस्थित हो'। यह शाप सुनते ही रम्भा डर कर कापने लगी और उसने शिव के चरणों पर गिर कर प्रार्थना की कि हे नाथ अब मेरे उद्धार का उपाय भी बतलाइए। निदान शिव ने भी रम्भा से वही बात कही जो कि उससे सुमन्त के पिता जरज ने कही थी।

शुक बोला कि हे शुकी राजा देव की पुत्री जो कि कन्नौज में व्याही गई थी उसी के गर्भ से रम्भा ने जन्म लिया। वही बालिका इस समय वयःप्राप्त होकर मदन बभनी के यहा पढने गई और उसने उसे विनय मगल पढ़ाने के लिये मुहूर्त निश्चय किया।

कवि ने अपनी स्त्री से कहा हे प्रिये "कन्नौज में कमधुज्ज वशी राजा विजैपाल राज्य करता था एक समय उसने अपनी सब सेना सहित मतिराम और चितविद्या नाम के दोनों बुद्धिमान मन्त्रियों को साथ लेकर दक्षिण की तरफ कूच किया। विजैपाल ने मरु भूमि को छोड़ कर क्रम से पूर्व्व से दक्षिण को यात्रा की।

उस समय पूर्व्वी समुद्र के किनारे सोमवशी राजा मुकुंददेव राज्य करता था। उसकी राजधानी कटक थी। उसके यहा तीस लाख सवार एक लाख हाथी और दस लाख पैदलों की वैतनिक सेना थी। उसने विजैपाल को सात कोस की पेशवाई देकर लिया और बडी पहुनाई साध कर बहुत से धन रत्न और दास दासियों सहित अपनी पुत्री विजैपाल के नजर की। विजैपाल ने उस कुमारी का विवाह अपने पुत्र जैचन्द के साथ कर दिया। निदान जैचन्द पूर्व्वी किनारे से होता हुआ सेतबन्ध पहुंचा। सेतबन्ध से चल कर उसने तैलग कर्नाट मैथिल, कुकान पुलग असेर गुर्जर गुड मगध चन्द काम कालिग आदि देश के हिन्दू और म्लेन्छ नरेशों को

जीतकर भोराराय भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर की ओर पयान किया। उसने चढी सवारी भीमदेव के मुख्य नगर सोनपुर के प्रकोर्ट को तोड कर किले पर दखल जा जमाया और फिर सेत्रुजा में डेरा जा डाला। जब यह खबर भीमदेव को लगी तब तो उसने अपने पुत्र को बहुत से धन रत्न के साथ विजैपाल के पास भेज दिया। विजैपाल ने वह गुजरात से आया हुआ सब नजराना स्वीकार किया और भीमदेव के पुत्र को अपनी तरफ़ से सिरोपाव देकर विदा किया।

इस प्रकार विजैपाल जल थल में सर्वत्र अपना आतंक और अधिकार जमाकर कन्नौज को लौट आया। जल में बड़वानल और थल में केवल अजमेर पति चहुआन ही उससे न जीते जा सके।

विजैपाल के सकुशल कन्नौज में आजाने पर राज्य भर में आनन्द बधाई होने लगी। विजैपाल के पुत्र पतोहू का जुगल जोड़ा सानन्द समय बिताने लगा। जब जैचन्द की उक्त स्त्री की सोलह वर्ष की अवस्था हुई तब उसके गर्भ से चन्द्रमा के समान दीप्तवती एक सुकुमारी कुमारी का जन्म हुआ। यह कन्या दिन दूनी दुइज की जुन्हैया सी बढने लगी। यह वही जुन्हैया है जिसके कारण जैचन्द के अस्सी लाख अश्वारोहियों का नाश हुआ और उसके अर्द्धाङ्ग पृथ्वीराज का अन्तिम पतन हुआ।

इस प्रकार संयोगिता की पूर्व्व कथा कह कर अब कवि उसके आगे की कथा कहेगा।

(१) प्रकोट = शहर पनाह। लयौ सुगढ सोवन्न कोट भज्यौ परिकोटह।



विनयमंगल

(छियालिसवां समय ।)

जरज ऋषि तो क्षमारूपधारिणी रंभा को शाप देकर हरद्वार को चला गया। इधर उसका शिष्य ...न्त शान्ति रस रत्त होकर पुनः तपस्या में प्रवृत्त ...आ।

आनन्द संवत् ११४४ में जब कि राजा जैचन्द राजसूययज्ञ करने का विचार किया तब संयोगिता ... अवस्था १२ वर्ष की थी अर्थात् उसका जन्म ...वत् ११३३ में हुआ था। वह पूर्ण चन्द्रमा के ...मान निर्मल दीप्तमान मुखारविन्दवाली कुलच्छनों ...हीन सुन्दर सुलच्छनों से लच्छित लक्ष्मी समान ...लवनी वाला दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी। ...सका राजसी के बत्तीसो लक्षण युत स्वाभाविक ...ौन्दर्य मानो मकरकेतु की रंगशाला थी और ...सके नित नव उन्नत उरोज उस रंग शाला के छतरी ...ोख कलसा कमानी आदि के समान थे, उसका ...ुन्दर स्वरूप उस रंगशाला की चित्रसारी और छवि का लावण्य साक्षात दीपक की द्युति के समान था। वह अपनी समवयस्का सहेलियों में तारा गणों के बीच चन्द्रमा सी सुशोभित होती थी।

सुवा सारो से बोला कि छत्रधारियों के समस्त सुलक्षणों संयुत कुमारी संयोगिता सुलतान शहाबुद्दीन को बन्दी करने वाले चहुआन पृथ्वीराज के साथ व्याही जावेगी। जैचन्द उसी के लिये यज्ञ करेगा, उसी के लिये द्वापर में रुक्मिणी विवाह के समान इस समय सहस्त्रों छत्रधारियों का क्षय होगा और अन्त में इसके पति और पिता दोनों का वैभव भी भ्रष्ट होगा।

संयोगिता शैशव काल से ही पिता की बड़ी लाडिली थी आठ प्रहर चौसठ घडी सदैव पिता के पास रहती और तोतरी बातें कह कह कर उसका चित्त प्रसन्न किया करती थी। संयोगिता ऐसे दुलार के कारण हठी स्वभाव की हो गई जिसका अन्त में अत्यन्त घोरतर परिणाम हुआ निदान शुक्ल पक्ष पंचमी रविवार को संयोगिता के विद्याध्ययन के आरम्भ का सुदिन विचारा गया। उसकी छोटी बहिन तारा भी उसी के साथ पढने बैठी और उसी के साथ साथ छाया के समान विद्याध्ययन में उसकी अनुगामिनी बनी।

जिस समय संयोगिता साधुवस्त्र पहिना कर पाठिका के पास लाई गई उस समय यद्यपि वह लज्जित सी होती थी परन्तु वास्तव में उन वस्त्रों से वह योगिनी नहीं मालूम होती थी वरन वे योगी आवरण उसकी सुशोभा में और भी अच्छे लगते थे। पाठिका के पास आकर उसने जब सोलहों शृंगार बारहों आभूषणों से सुसज्जित होकर अध्यन आरम्भ किया उस समय उसकी ऐसी शोभा होती थी जैसे सहस्रों कामदेव इस स्त्री के स्वरूप में प्रकाशित हो रहे हों। पाठिका मदन ब्राह्मणी का पति राजकुमारी के हाव भाव लक्षणों को देख कर ताड गया कि इसका भविष्य होनहार ऐसा होगा। संयोगवश एक दिन ब्राह्मणी ने अपने पति से पूछा कि आप ने इस राजकुमारी के विषय में क्या गणित विचारा

(१) आनन्द संवत् का विवरण पहिले समय के १३६ पृष्ठ में देखो।

(२) 'ग्यारह से च्यालीस चव पग राज सुमंडि। बर ...षमि ससि तीय यह जनम संजोग विखंड'। छं० ४ 'आगे" ...रुन्न काल पर्टविद्ध वरख नव मास दिन पंच दर। इसमें संयोगिता के जन्म संवत् का संकेत किया गया है। पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन ने संवत् ११५६ में पकडा उसी समय संयोगिता का शरीरान्त हुआ। इस हिसाब से ४४ और बारह छप्पन होते है। यदि चौवालीस के इस तरफ देखिये तो ३२ और बारह ४४ होते है परन्तु इधर नव मास अधिक है इस लिये इधर १३ का हिसाब रक्खा है। साथ ही इसके यह भी बात है कि मेरे चचा कुँवर रघुनाथसिंह जी जो कि ऐतिहासिकविषयों का अच्छा ज्ञान रखते थे, मुझे बाल्यावस्था में इस रासो के सम्बन्ध की कथा कहनी सुनाया करते थे जो बातें जैसा उन्होंने मुझे आज से १६ या १७ वर्ष पहिले बतलाई थीं आज रासो में मैं उनको यथाक्रम वैसा ही पाता हूं अत एव उन्होंने मुझे संयोगिता का १८ वर्ष की उमर में ब्याह होना और २४ वर्ष की अवस्था में उसका देहान्त होना बतलाया था। सो यह हिसाब भी ठीक पड़ता है— तीसरी बात यह है कि कवि ने इस कथा के सबंध में यथा समय सब संवत दिए है परन्तु कन्नौज समय पर्यन्त संयोगिता के जन्म का और कहीं भी पता नहीं पड़ता।

है सो कहिए। तब ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि यह राजकुमारी अगनित छत्रधारियों की छत्र भग कारिणी उनके रुधिर की प्यासी साक्षात् कंकाली स्वरूप कलहतर नाम से प्रसिद्ध होगी। यह कन्या स्वर्ग की अप्सरा का अवतार है और मैं एक यक्ष हूं जो कि इसके भविष्य होनहार का अंकुर सपक्ष करने के लिये अवतीर्ण हुआ हूं। राजा पग के यज्ञ के समय से ही ऐसे सब सामान एकत्रित होंगे और उनका परिणाम भी शीघ्रही देख पडेगा।

जिस समय संयोगिता मदन ब्राह्मणी के यहां पढ़ने गई उस समय वह अपनी आयु के तेरहवें साल में थी। पाठिका के भवन में एक सुन्दर हिंडोला घला हुआ था। जिस समय संयोगिता उस पर बैठ कर झूलती और पृथ्वी पर पदाघात करके मिचकी मारती उस समय उसके सुकोमल लंबे बालों से गुंथी बेनी उसके पीन नितंब स्थलों को स्पर्श करती हुई ऐसी सुशोभित होती थी मानो उसका यौवन काल जान कर उसके जीवन की बागडोर कामदेव अपने करों से साध रहा हो। संयोगिता की एक बड़ी बहिन और थी जिसे जैचन्द ने दक्षिण के राजा देवग्रह को व्याहा था। पाठिका ने उसे विनय मंगल पाठ पढ़ाया था इसलिये वह सुशील कुमारी अपने पति और पिता दोनों की प्यारी बन कर जीवन बिताती थी। निदान पाठिका ने संयोगिता का भी यौवन काल जान कर उसे विनय मंगल पाठ पढ़ाना उचित समझा। पाठिका जिस विनय मंगल पाठ को संयोगिता को पढ़ाती थी उसका यह तात्पर्य्य है कि उसे पढ़ कर स्त्री सुलक्षणा बने और मुग्धा और प्रौढ़ा इन अवस्थाओं में भी नवोढ़ा की भांति पति की प्यारी बनी रहे।

पाठिका ने संयोगिता से कहा कि हे सुकुमारी कुमारी, स्त्री को चाहिए कि प्रातःकालही शैय्या से उठ कर अपने पति के मुख का दर्शन करे और फिर प्रीति पूर्व्वक उसके पैर छूकर अपनी तुच्छता प्रगट करती हुई विनय पूर्व्वक उसकी स्तुति करे और दर्पण हाथ में लेकर अपना मुंह देखे। पुनः शौचादि से निश्चिन्त हो अपना नखशिख सँवारकर नाना प्रकार के स्वादिष्ट भोजन परिपाक करके पति के सम्मुख परो. और उसे ही अपना इष्टदेव एवं सर्वस्व जान प्रीतिपूर्व्वक जिमावे तिसके पश्चात् रुचिर वस्त्र और आभूषणों को धारण करके अधीनता पूर्व्वक सदा पति की आज्ञा पालन करने को प्रस्तुत रहे। हे कुमारी! कोई स्त्री कैसीही स्वरूपवती क्यों न हो परन्तु जो हठ कर पति के प्रति मान ठानती है उसे उसका पति तुरन्त ही त्याग देता है। इस लिये दूतियों के प्रपञ्च में पड़कर पति से कलह और मान न करे और आत्मेच्छा की सिद्धि के लिये धैर्य्यपूर्व्वक तन मन से सदा पति की अनुगामिनी बनी रहे। स्त्री को चाहिए कि अपने तन, मन, धन हृदय, प्राण, गेह, नेह, देह, सुख, दुख, कीर्ति धैर्य्य, जप, तप, आदि सब का स्वामी अपने स्वामी ही को समझे। हे कुमारी! जो कुछ मैं तुझ से कहती हूं सो निपट ही सत्य जानो। बात केवल इतनी ही है कि विषय कोई हो उसका गुण ग्राहक होना चाहिए-जैसे पवन हिम को स्पर्श करने से शीतल और चन्दन को स्पर्श करने से सुगंधित होती है वैसे ही शास्त्र का भी बुद्धिमान पर अच्छा और मूर्ख पर बुरा प्रभाव पडता है। हे कुमारी जैसे युक्ति के बिना शुभ, शिव की भक्ति के बिना सांसारिक सुख और हरि की भक्ति के बिना मोक्ष नहीं मिलती, वैसेही स्नेहहीन स्त्री का जन्म वृथा है। जल बिना उज्वलता नहीं होती, ज्ञान के बिना निर्वाण पद नहीं मिलता, सुकर्म के बिना कीर्ति नहीं होती, हथियार के जोर बिना भूमि भोग करने को नहीं मिलती और माता के बिना मन्त्र वात्सल्य प्यार की प्राप्ति नहीं होती, उसी प्रकार विनय बुद्धि के बिना जीवन का सुख नहीं मिलता। हे राजकुमारी, मान (अभिमान) बुरा है। मान से परस्पर का स्नेह भंग होता है, सज्जन भी दुर्जन से देख पड़ने लगते हैं, और जुड़ा हुआ नाता टूट जाता है। मान से आत्मिक गुणों का ह्रास होता है इस लिये मान इस जीवन में मदिरा के समान मंद माना

ा है। मान ही जीवन के दुखों का मूल है सो कुमारी तू मान को सर्वथा त्याग कर शील सम्पन्न भाव वाली सुशीला बन। हे कुमारी! जिस प्रकार ,णमात्र पाला पडने मे बडे बडे गहव्र बन एक म मुरझा जाते है उसी प्रकार विनय के आग्रह से ान जनित अमंगलमूलक विषय नष्ट हो जाते है।

हे सुन्दरी संयोगिता, विनय सब भाति सब के लेये कल्याणकारी है। विनय में कदापि कोई दोष नहीं है। विनय द्वारा ही योगीश्वर ईश्वर से मुक्ति पाते हैं–यद्यपि मानमय विनयहीन पक्षी जाति विनयशील वृक्षों के फल फूल खाते और उनके कोमल पल्लवों को कुतर डालते हैं, परन्तु विनयशील वृक्ष पक्षियों के इस अपकार पर जरा भी ध्यान न देकर उनका पालन ही किया करते हैं। विनय से देवता वर देता है। विनय से गुरू विद्या पढ़ाता है। विनय से स्वामी सेवक पर प्रसन्न रहता है। विनय से कंजूस भी दाता बनजाता है और इसी विनय के कारण कत कामिनी के हृदय का हार होता है, इस लिये हे कुमारी करतार स्वरूप विनय ही संसार का सार है। इसलिये वयः वृद्धि के साथ साथ विनय के भार से अपने को निन नव नम्र बनानाही उचित है। चतुरता मे विनय वाक्य उच्चारण करने पर सार हीन हृदय का भी द्रवकर कामनामय होना संभव है। कामाग्नि-सतप्त–हृदय कत को कामिनी यदि कुछ कटु वचन कह भी डाले तो वह उसकी उस समय कुछ भी परवाह नहीं करता, उसे वे वचन दूध शक्कर से मधुर मालूम होते हैं। परन्तु भूलकर ऐसे समय पर भी विनय की बान न त्यागनी चाहिए। क्या जाने कामाग्नि शान्ति होने पर कभी वह मधुरता उसके क्रोध को उत्तेजना देने वाली हो–देखो! किसी समय दो बहिने थीं उनमें से एक बड़ी विनयशील और दूसरी मानिनी थी। सो हे कुमारी विनयशील सुन्दरी का तो सारा जन्म आनन्द मे बीता और मानिनी ने न तो जीवित सुख पाया न मरने पर भी। क्यों कि अन्तिम समय में जैसी मति होती है मरने के बाद वही भोग भोगना पडता है, इस लिये उसको अनेकों जन्म पशु पक्षियों की योनि भोगनी पड़ी थी। हे बेटी जीवन में विनय घर में दीपक के समान है। जिस प्रकार दीपक बिना घर, प्राण बिना देह, प्रतिमा बिना देवालय, कंत बिना कामिनी और लज्जा बिना राजपूत जाति का जीवन सूना है एव जैसे बुद्धि बिना उपभोग का यथार्थ आनन्द नहीं मिलता, वेद की विद्वत्ता बिना ब्राह्मण ब्राह्मण ही नहीं है, बहरे के लिये सत्कीर्ति का होना न होना बराबर है उसी प्रकार विनय के बिना स्त्री का जन्म वृथा है क्यों कि विनयहीन स्त्री का स्वामी उससे सदा अप्रसन्न होकर उसे दुःख दिया करता है। इस लिये तू इस विनय मगल के मर्म को समझकर इसके अनुसार आचरण करने की चेष्टा कर।

जैसे वेद और वैदिक ग्रन्थों में कथित अनुपम गुणमय औषधिया चन्द्रमा से पोषित हुए बिना सब बेकाम है वैसे ही हे सर्वांग सुन्दरी विनय हीन होने से समाज में तू भी शोभा नहीं पा सकती। स्त्रियों की शोभा शृंगार नहीं है बरन सच्ची शोभा लज्जाशीलता है।

हे कुमारी, विनय ही संसार का सार है, क्यों कि यह सब जगत विनय के सूत्र से बँधा हुआ है। विनय ही काल का काल है और संसार में सच्ची शूरता है, विनय के बिना संसार में सुख की आशा न करे क्योंकि विनयविहीन पुरुष के सब शत्रु होते है। राजनीति की चारों शाखाओं का स्थभ विनय ही है। हे सुन्दरी विनय के बिना सब सुख सपने की सपत्ति होते हैं। विनयशील पुरुष से आबाल वृद्ध सब प्रसन्न रहते हैं, इसलिये जिसमें जितना जितना विनय का अंश बढता जाता है वह उतना ही सर्वप्रिय होता जाता है। विनय संसार सागर मे पार उतरने के लिये नौका और साक्षात मोक्ष का मार्ग स्वरूप है। विनय बिना वैराग्य या भक्ति किसी की भी साधना नहीं हो सकती। विनय से निर्गुण गुणवान और औगुणी सद्गुणसम्पन्न होता है। विनयहीन मनुष्य का जीवन ऐसा है जैसे प्रत्यचा बिना धनुष और सुमेर या गुम्बद बिना देवालय

इसलिये यदि तू जीवन का सुख चाहती है तो विनय को धारण कर। विनयशील पुरुष तीनों पन में एक सा सुखी रहता है। विनय इस प्रकार सार है जैसे जीव का सार आत्मा है। जैसे जीवहीन शरीर बेकाम होता है वैसे ही विनय बिना स्नेह का निर्वाह होना असम्भव है। विनय द्वारा जिसे तू अपने को आप अपना देगी वह फिर आपही तेरा हो रहेगा। इस प्रकार हे सयोगिता, विनय द्वारा दो तन एक प्राण किए जा सकते हैं।

हे सयोगिता, विनय का यही लक्षण है कि जिससे पति बस हो। स्त्री पति से नजर न मिलावे। विषय सुख का त्याग करे और जिससे दैव तक वशीभूत हो वही विनय है। इस विनय के कारण तेरा प्रताप दूज के चन्द्रमा की भाँति दिन प्रति बढ़ेगा।

सयोगिता ने प्रश्न किया कि कत किस प्रकार वश किया जा सकता है तब पाठिका बोली, हे बाले! "विनय से"। ज्यों ज्यों विनय का अभ्यास बढ़ता जायगा! त्यों त्यों दाम्पत्य सुख बढ़ता जायगा। जो विनय रूपी जल से सींच कर स्नेह की बेल बढाता है उससे अमृत रूपी फल उत्पन्न होता है इस लिये उसका सदा आदर बढ़ता जायगा। हे सुन्दरी! विनय के बिना एक स्त्री जाति क्या संसार में किसी भी योनि में सुख प्राप्त नहीं हो सकता। हे सुन्दरी, यदि मत्र भी न मालूम हो तो अच्छा सर्प विनय से व हो जाता है। विनय से सुयश मिलता है। विनय सुख और भोग रस मिलते हैं। विनय ही रस खानि और विनयशील आचरण अमृत के समान है यदि पति मानमय हो और स्त्री आधी रात के समय विनय पूर्वक विनती करे तो अवश्य है कि वह मानी पति मान को त्याग कर स्त्री के हिये का हार बन जावे। हे सहज सुन्दरी सयोगिता, इस विनय मन्त्र को गाठ बाँध रख, इससे तुझे जीवन के सब सुख सहज ही प्राप्त होंगे। हे सुन्दरी इस सिखावन के मर्म विनयविहीन पुरुष नहीं जान सकते क्योंकि कहावत प्रसिद्ध है कि प्रसव की पीड़ा को बाझ क्या जाने।

मदन ब्राह्मणी के आगन में जो एक सुन्दर वृक्ष था उसी पर वे उक्त सुत्रा सारो (गन्धर्व गन्धर्वी) बैठे सयोगिता का सब चरित्र देखते रहे। एक दिन सायकाल के समय ब्राह्मण ने ब्राह्मणी से कहा कि कोई ऐसी वार्ता करो जिसमे रात्रि कटे और कुछ काम भी सरे। तब ब्राह्मण बोला कि इस सयोगिता के योग्य नर सभरीनाथ चहुआन राजा पृथ्वीराजा ही है। यों कह कर वह पृथ्वीराज के यश गुण और बल पराक्रम का वर्णन करने लगा। इसी प्रकार होते होते प्रात.काल हो गया और तब सुत्रा सारो वहा से उड कर दिल्ली की तरफ चल दिए।



सुक वर्णन।

(सैंतालीसवां समय।)

पाठिका के सुविस्तृत आँगन में सखी सहेलियों सहित पढ़ती हुई कुमारी सयोगिता इस प्रकार सुशोभित होती थी जैसे तारागणों के समूह में जुन्हैया की छवि छटा छाती है। लड़कपन में तो अपनी ही स्वाभाविक स्वच्छन्दता का आनन्द होता है परन्तु "जवानी में काम क्रीड़ा का आनन्द विशेष माना गया है"। सयोगिता के कानों को स्पर्श करते हुए बड़े बड़े नेत्र ऐसे सुशोभित होते थे मानों वे कानों के पास जाकर उक्त वाक्य के मर्म को पूछ रहे हों कि क्यों क्या यह बात सच हैं?।

इधर जैचन्द के यहा यज्ञ के लिये सामग्री जुटाई जाने लगी और जहा तहा होम जप जाप पूजन आदि आरम्भ हुआ। निदान तब वे दोनों सुवा सारो वेषधारी गन्धर्व उस वृक्ष से उड़ कर देहली की तरफ चले। कुछ दूर जाकर सुवा ने तो ब्राह्मण का वेष धारण कर दिल्ली का मार्ग लिया और सारो ब्राह्मणी का स्वरूप धारण कर संयोगिता के पास पहुंची।

ब्राह्मण ने पृथ्वीराज से कहा कि हे संभरीनाथ हम तीनों लोक में आ जा सकते हैं, परन्तु मदन ब्राह्मणी के घर में पढ़ती हुई राजा जैचन्द की पुत्री का जैसा सौन्दर्य्य मैंने देखा वैसा और कहीं नहीं देखने में आया। उसके साथ में बारह कन्याएँ और भी पढ़ती हैं परन्तु वह सब के बीच में इस प्रकार सुशोभित होती है जैसे तारागणों में चन्द्रमा की शोभा होती है। वह रम्भा अप्सरी का अवतार है। रभा ने परम तेजस्वी सुमन्त ऋषि का तप भ्रष्ट करने की चेष्टा की इसलिये सुमन्त के पिता ने उसे शाप दिया जिससे उसे मानव शरीर धारण करना पडा। इस समय उनका महल गंगा के किनारे सुशोभित है। यह सुन कर पृथ्वीराज ने गुरुराम से कहा कि इसका जन्म समय शोध कर एक जन्मपत्री लिखो। गुरुराम ने छः महीने के बाद जन्म कुंडली रच कर तय्यार की, उसमें उन्होंने दिखलाया कि मगल, बुध, गुरू शुक्र शनि और चन्द्रमा ये ग्रह चौथे स्थान में गोचर पडे हैं। गुरू और केतु केन्द्री और राहु अष्टम है। इसका फल यह बतलाया कि वह अत्यन्त सुन्दरी है, उसके कारण भारी सग्राम होगा और वह आप (सभरीनाथ) को व्याही जायगी। जन्म से पाचवें राहु और केतु का होना यह बतलाता है कि उसका जन्म विशेषतः रक्तपात के लिये ही हुआ है।

उधर ब्राह्मणी पाठिका विनय मंगल समाप्त करके सयोगिता को पृथ्वीराज का इतिहास पढ़ाने लगी। उसने कहा—"दिल्ली में अनगपाल नामक तोमर वशी राजा राज्य करता था। जब उसकी अवस्था ७७ वर्ष की हुई तो उसने, वैराग्य उत्पन्न होने के कारण, अपना राजपाट अपने दौहित्र अजमेर के राजा सोमेश्वर के पुत्र पृथ्वीराज को दे दिया और आप तपस्या करने के लिये बदरिकाश्रम को चला गया। यद्यपि पृथ्वीराज को गोद लेते समय अनगपाल को उसके मत्रियों ने अपना सा समझाया बुझाया और मना किया परन्तु उसने एक न माना। अन्त में परिणाम यह हुआ कि पृथ्वीराज दिल्ली राज्य के सिंहासन पर बैठ कर अपना-पराया करके शासन करने लगा जिससे दिल्ली की प्रजा का दिल दुख गया और सब प्रतिष्ठित प्रजा ने अनगपाल के पास जा पुकारा। यह सुनकर अनंगपाल स्वय दिल्ली को आया। इससे पृथ्वीराज बडे शिष्टाचार से मिला। अनगपाल ने दिल्ली में कुछ दिन मिहमान की भाति रह कर पुनः बदरिकाश्रम का रास्ता लिया और यहा पृथ्वीराज राज्य करने लगा। वह बलवान पृथ्वीराज इस समय पृथ्वीतल के राजाओं में अद्वितीय बलशाली और सुकीर्तिमान पुरुष है। इस समय पृथ्वी पर उनका यश शरद ऋतु का सा चटक चादना फैल रहा है।

इधर ब्राह्मण बोला कि उस चन्दवदनी, मृगलोचनी बाला के उज्वल ललाट पर श्याम भ्रू भाग

इसलिये यदि तू जीवन का सुख चाहती है तो विनय को धारण कर। विनयशील पुरुष तीनों पन में एक सा सुखी रहता है। विनय इस प्रकार सार है जैसे जीव का सार आत्मा है। जैसे जीवहीन शरीर बेकाम होता है वैसे ही विनय बिना स्नेह का निर्वाह होना असभव है। विनय द्वारा जिसे तू अपने को आप अपना देगी वह फिर आपही तेरा हो रहेगा। इस प्रकार हे सयोगिता, विनय द्वारा दो तन एक प्राण किए जा सकते हैं।

हे संयोगिता, विनय का यही लक्षण है कि जिससे पति वस हो। स्त्री पति से नजर न मिलावे। विषय सुख का त्याग करे और जिससे दैव तक वशीभूत हो वही विनय है। इस विनय के कारण तेरा प्रताप दूज के चन्द्रमा की भाँति दिन प्रति बढ़ेगा।

सयोगिता ने प्रश्न किया कि कंत किस प्रकार वश किया जा सकता है तब पाठिका बोली, हे बाले! "विनय से"। ज्यों ज्यों विनय का अभ्यास बढ़ता जायगा! त्यों त्यों दाम्पत्य सुख बढ़ता जायगा। जो विनय रूपी जल से सींच कर स्नेह की बेल बढाता है उससे अमृत रूपी फल उत्पन्न होता है इस लिये उसका सदा आदर बढ़ता जायगा। हे सुन्दरी! विनय के बिना एक स्त्री जाति क्या संसार में किसी भी योनि में सुख प्राप्त नहीं हो सकता। हे सुन्दरी, यदि मत्र भी न मालूम हो तो अच्छा सर्प विनय से वश हो जाता है। विनय से सुयश मिलता है। विनय सुख और भोग रस मिलते हैं। विनय ही रस खाने और विनयशील आचरण अमृत के समान है यदि पति मानमय हो और स्त्री आधी रात के समय विनय पूर्व्वक विनती करे तो अवश्य है कि वह मानी पति मान को त्याग कर स्त्री के हिये का हार बन जावे। हे सहज सुन्दरी संयोगिता, इस विनय मगल को गाठ बाँध रख, इससे तुझे जीवन के सब सुख सहज ही प्राप्त होंगे। हे सुन्दरी इस सिखावन के मर्म विनयविहीन पुरुष नहीं जान सकते क्योंकि कहावत प्रसिद्ध है कि प्रसव की पीड़ा को बाझ क्या जाने।

मदन ब्राह्मणी के आगन में जो एक सुन्दर वृक्ष था उसी पर वे उक्त सुवा सारो (गन्धर्व गन्धर्वी) बैठे संयोगिता का सब चरित्र देखते रहे। एक दिन सायंकाल के समय ब्राह्मण ने ब्राह्मणी से कहा कि कोई ऐसी वार्ता करो जिसमे रात्रि कटे और कुछ काम भी सरे। तब ब्राह्मण बोला कि इस सयोगिता के योग्य नर सभरीनाथ चहुआन राजा पृथ्वीराजा ही है। यों कह कर वह पृथ्वीराज के यश गुण और बल पराक्रम का वर्णन करने लगा। इसी प्रकार होते होते प्रातःकाल हो गया और तब सुवा सारो वहा से उड़ कर दिल्ली की तरफ चल दिए।



सुक वर्णन।

(सैंतालीसवां समय।)

पाठिका के सुविस्त्रित आँगन में सखी सहेलियों सहित पढती हुई कुमारी सयोगिता इस प्रकार सुशोभित होती थी जैसे तारागणों के समूह में जुन्हैया की छवि छटा छाती है। लड़कपन में तो अपनी ही स्वाभाविक स्वछन्दता का आनन्द होता है परन्तु "जवानी में काम क्रीड़ा का आनन्द विशेष माना गया है"। सयोगिता के कानों को स्पर्श करते हुए बड़े बड़े नेत्र ऐसे सुशोभित होते थे मानों वे कानों के पास जाकर उक्त वाक्य के मर्म को पूछ रहे हों कि क्यों क्या यह बात सच है?।

इधर जैचन्द के यहा यज्ञ के लिये सामग्री जुटाई जाने लगी और जहा तहा होम जप जाप पूजन आदि आरम्भ हुआ। निदान तब वे दोनों सुवा सारो वेषधारी गन्धर्व उस वृक्ष से उड़ कर दिल्ली की तरफ चले। कुछ दूर जाकर सुवा ने तो ब्राह्मण का वेष धारण कर दिल्ली का मार्ग लिया और सारो ब्राह्मणी का स्वरूप धारण कर संयोगिता के पास पहुची।

ब्राह्मण ने पृथ्वीराज से कहा कि हे संभरीनाथ हम तीनों लोक में आ जा सकते है, परन्तु मदन ब्राह्मणी के घर में पढती हुई राजा जैचन्द की पुत्री का जैसा सौन्दर्य्य मैंने देखा वैसा और कहीं नहीं देखने में आया। उसके साथ में बारह कन्याएँ और भी पढती है परन्तु वह सब के बीच में इस प्रकार सुशोभित होती है जैसे तारागणों में चन्द्रमा की शोभा होती है। वह रम्भा अप्सरी का अवतार है। रभा ने परम तेजस्वी सुमन ऋषि का तप भ्रष्ट करने की चेष्टा की इसलिये सुमन्त के पिता ने उसे शाप दिया जिससे उसे मानव शरीर धारण करना पड़ा। इस समय उसका महल गगा के किनारे सुशोभित है। यह सुन कर पृथ्वीराज ने गुरुराम से कहा कि उसका जन्म समय शोध कर एक जन्मपत्री लिखो। गुरुराम ने छः महीने के बाद जन्म कुंडली रच कर तय्यार की, उसमें उन्होंने दिखलाया कि मगल, बुध, गुरू शुक्र शनि और चन्द्रमा ये ग्रह चौथे स्थान में गोचर पडे हैं। गुरू और केतु केन्द्री और राहु अष्टम है। इसका फल यह बतलाया कि वह अत्यन्त सुन्दरी है, उसके कारण भारी सग्राम होगा और वह आप (सभरीनाथ) को व्याही जायगी। जन्म से पाचवें राहु और केतु का होना यह बतलाता है कि उसका जन्म विशेषतः रक्तपात के लिये ही हुआ है।

उधर ब्राह्मणी पाठिका विनय मगल समाप्त करके सयोगिता को पृथ्वीराज का इतिहास पढ़ाने लगी। उसने कहा—"दिल्ली में अनगपाल नामक तोमर वशी राजा राज्य करता था। जब उसकी अवस्था ७७ वर्ष की हुई तो उसने, वैराग्य उत्पन्न होने के कारण, अपना राजपाट अपने दौहित्र अजमेर के राजा सोमेश्वर के पुत्र पृथ्वीराज को दे दिया और आप तपस्या करने के लिये बदरिकाश्रम को चला गया। यद्यपि पृथ्वीराज को गोद लेते समय अनगपाल को उसके मत्रियों ने अपना सा समझाया बुझाया और मना किया परन्तु उसने एक न माना। अन्त में परिणाम यह हुआ कि पृथ्वीराज दिल्ली राज्य के सिंहासन पर बैठ कर अपना-पराया करके शासन करने लगा जिससे दिल्ली की प्रजा का दिल दुख गया और सब प्रतिष्ठित प्रजा ने अनंगपाल के पास जा पुकारा। यह सुनकर अनगपाल स्वय दिल्ली को आया। इससे पृथ्वीराज बड़े शिष्टाचार से मिला। अनगपाल ने दिल्ली में कुछ दिन मिहमान की भांति रह कर पुनः बदरिकाश्रम का रास्ता लिया और यहा पृथ्वीराज राज्य करने लगा। वह बलवान पृथ्वीराज इस समय पृथ्वीतल के राजाओं में अद्वितीय बलशाली और सुकीर्तिमान पुरुष है। इस समय पृथ्वी पर उसका यश शरद ऋतु का सा चटक चादना फैल रहा है।

इधर ब्राह्मण बोला कि उस चन्दबदनी, मृगलोचनी बाला के उज्वल ललाट पर श्याम भ्रू भाग

ऐसा भासित होतो है मानो गंगधारा में भुजंग तैर रहे हों। उसकी कीर ऐसी नासिका, अनार के दाने से दाँत, पतली सी कमर, श्रीफल से उरोज और चंपा के समान सुन्दर अंग रंग अजब ही छटा छाते हैं। सो ऐसी सुन्दरी सयोगिता हे पृथ्वीराज आपको पति पाने की इच्छा से दिन रात शिव जी की आराधना किया करती है। हे पृथ्वीनाथ उस कुमारी के शरीर से शैशव के ह्रास और यौवन के प्रकाश की इस प्रकार शोभा हो रही है जैसे बसंत ऋतु में पुराने पत्ते झरने और नवीन कोंपों के कोंपने से वन की शोभा होती है। उसकी अंग आभा इस समय ऐसी सुन्दर मालूम देती है जैसे गोधूली वेला का राकापति। जैसे मकर की संक्राति से दिन बढ़ कर रात्रि को दबाने लगता है, पावस ऋतु में बढ़ी हुई नदियों का जल समुद्र के हृदय में हलचल मचाने लगता है तैसे ही सयोगिता का यौवन उसके बालपन को परास्त कर रहा है। इस समय सयोगिता की शरीर छवि शीतकाल की दुपहरी हो रही है जिसमें कवि घाम और छाँह दोनों का आनन्द पाने की इच्छा करते हैं। सच तो यों है कि उसके स्वभाव में अब लड़कपन की झलक केवल परिवा के चन्द्रमा के समान बिलकुल सूक्ष्म शेष रह गई है। हे राजन् वह सर्वाङ्ग सुन्दरी सयोगिता इस समय वसत ऋतु की फुलवारी बन रही है। जैसे वसन्त के आगम में दिन में कुछ पक्कापन आने लगता है वैसेही सयोगिता कुछ संकोच सहित प्रति दिन निडर होती जाती है। उसका मधुर अलाप मधुकर सा सोहता है वसन्त ऋतु में जैसे शीतल सुगंध वायु मंद मद बहती है वैसे ही उस के चित्त में लज्जा की मात्रा बढ़ती जाती है। जैसे वसन्त में पत्र रहित तरुवृन्द नव पुष्प और फल के भार से नीचे होने लगते हैं वैसेही यौवन के जोर से उसकी सब बातों में भारीपन का आभास आता जाता है। उसके सुढार उदर पर रोमराजि काम किसान की बोई हुई जई सी जम रही है। हे राजन् ! इसी समय जैचन्द ने यह करने के लिये आकाश और पाताल को मंत्र बल से और शेष आठ दिशाओं को मुसलमान सिपाहियों के बल से ... की इच्छा की है। जैचन्द की एक पुत्री और भी थी जिसे उसने देवगढ के राजा को व्याहा है वह भी अद्वितीय सुन्दरी है।

परन्तु संयोगिता संयोगिता ही है। उसका अंग रंग श्रीखंड पकज एवं कुमकुम के समान सलौना है। उसकी पिंडुरी स्वर्ण की बुरादा सी झलकती हैं। और जंघा तो कदली खंभ एवं हाथी के भसुंड की सुढारता को मात करते हैं, उसकी अँगुरियों का अग्रभाग कनैर की सी कली जान पड़ता है। उसके अर्द्ध तुवाकार पीन नितंब, मुट्ठीभर चीते की सी कमर, उस पर सरती हुई सर्पिणी सी बेणी, राजीव लोचन, पपीलका की पलटन सी रोमराजि, हंस शिशु एव मदान्ध गज की सी चाल, नारंगी से युगल यौवन, त्रिवलीयुत कलकंठ, बिंब फल से अरुण ओंठ, वायु विहित दीप शिखा सी नासिका, खजन मद गजन स्वेत कमल से पैने नैन, स्वर्ण के खम्भ पर चढते हुए सर्प ऐसी वेणी आदि उसके सब अवयव देखने ही योग्य है। यह सुनते ही पृथ्वीराज का चित्त रागमय होकर सयोगिता के सच्चे अनुराग में रंग गया। संयोगिता के सौन्दर्य्य का खाका पृथ्वीराज के चित्त में इस प्रकार गाढ होकर खचित हुआ कि उसे अपने सब व्यवसाय भूल गए। उसे सोते जागते चारों तरफ सयोगिता की प्रतिमूर्ति देख पडने लगी। उसने अत्यत विकल होकर ब्राह्मण से कहा कि यदि तुम कृपा करके सयोगिता को मेरी ओर से प्रबोध करो तो मैं तुम्हे अमल्य धन, द्रव्य पुरस्कार दूं।

पृथ्वीराज के ऐसे वचन सुन कर वह ब्राह्मण (गधर्व) दिल्ली से चलता हुआ और कन्नौज पहुंच कर मदन पाठिका के घर जा उपस्थित हुआ। वह वहा सुवा बनकर आपही आप पृथ्वीराज का गुण गान करने लगा। "पृथ्वीराज" शब्द कान में पड़ते ही सयोगिता ने ऊपर आंख उठाकर देखा और कहा "तुम कौन हो और यहा किस लिये आए?"।

यह सुन कर सुवा बोला एक राजा पृथ्वीराज है। इस समय वह अद्वितीय वीर्य्यमान और बलवान पुरुष है। उसने कई बार यवन बादशाह को बन्दी किया। वह अर्जुन के समान अचूक धनुर्धर है। चन्द्रमा के समान तेजवान और एक वाण से सात तवे फोडता है। वह राजा बलि के समान स्वरूपवान गुणवान और लज्जाशील है। धर्म्मराज की तरह सद्वक्ता, अर्जुन के समान धनुर्धर, दुर्योधन की तरह मानी, सूर्य्य के समान तेजवान, चन्द्रमा के समान सुखद, सत्य और विक्रम में विक्रमादित्य के समान, दान, सम्मान में इन्द्र एवं कल्पतरु के समान और काम क्रीडा में रमावल्लभ लक्ष्मीनारायण के समान शक्तिमान है: सुवा सारो की ऐसा वार्तालाप सुन कर सयोगिता के चित्त का चाव चौगुना हो गया। उसे चारों तरफ पृथ्वीराज की प्रतिमूर्ति भासित होने लगी और वह उस चमत्कृत चिन्ता में स्वय चित्र की पुतरी सी बन गई।

सुग्गा फिर बोला। क्या कहू पृथ्वीराज पृथ्वीराज ही है। उसके एक एक गुण में सादृश्य पाने योग्य बहुत से राजा हो गए है परन्तु सर्वथा उसकी समानता का न तो कोई आजलों हुआ है और न होगा। वह शाकाब्द राजाओं में विक्रम के समान, सत्त में राम के समान, बाहुबल में सहस्रबाहु के समान, चन्द्रमा के समाम शीतल, हरिश्चन्द के समान सत्यव्रत धारी और युद्ध कौशल में भीष्म के समान वह दैत्यवंशी वीर इस भूतल पर इन्द्र के समान उपमान पाने योग्य है, इत्यादि मै उसकी किससे उपमा दूं? यह कह कर दोनों ओर परस्पर अनुराग का वीज बोकर सुवा सारो दोनो देव लोक को चल दिए।

जैसे सीता ने राम के लिये, दमयन्ती ने नल के लिये, पार्वती ने शिव के लिये, रुक्मिणी ने कृष्ण के लिये एव जिस प्रकार काली ने वीर वाहन के लिये व्रत धारण किया था उसी प्रकार सयोगिता ने पृथ्वीराज के लिये ध्रुव व्रत धारण किया। उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि एक इस जन्म में क्या यदि दूसरा अवतार भी धारण करू तो भी पृथ्वीराज के सिवाय अन्य पुरुष को पति न स्वीकार करूगी। इसी प्रकार अहर्निशि पृथ्वीराज के गुणों का चिंतवन करती हुई सयोगिता दिनप्रति प्रीति के रग मे रँगने लगी।

इधर वसन्त ऋतु के प्रथम चरण माधव मास के प्रारम्भ होते ही पृथ्वीराज का चित चाव चौगुना हो गया। ज्यों ज्यों वृक्ष प्राचीन पत्रों से रहित होकर नई नई कोंडे फोड़ते, नई नई बेलों में फूल फूलने और उनके पराग से दिशाएँ सुगन्धित होतीं, पुष्प गुच्छों पर भ्रमर पुज छत्राकार आच्छादित होते, कोयल कूकतीं एवं अन्य पक्षी गण कलरव करते, सुहागिनी सुख सेज पर मौज मारती और विरहिनी बेहाल होती, त्यों त्यों पृथ्वीराज के हृदय में सयोगिता के प्रेम रूपी सर्प की विष ज्वाला अधिक अधिक प्राप्त होने लगी। निदान एक दिन पृथ्वीराज एक प्रहर रात्रि गए महलों से निकल कर अकेले जमुना के किनारे विचरने लगा। कुछ दूर जाकर देखता क्या है कि एक अति उत्तम बाग बना हुआ है जगह जगह सुन्दर वृक्षों के कुंज फूल और फलों के भार से नैकर जमीन को छू रहे हैं, उनके आस पास भूमते हुए रसलोभी भैरे उनके गुण गान कर कर अपने उदर को पोषण करने की च्येष्टा करते हैं। चबच्चों में निर्मल जल भरा हुआ है और उनपर धानी रंग का छत्र तना हुआ है जिस पर नाना प्रकार के बेल बूटे गोख झाकी झरोखे बनाती हुई बेलें आच्छादित हैं। यह देख कर पृथ्वीराज ने घोड़े को एड़ लगाई और घोडा एक टपकार में कोट लॉघ कर बगीचे में जा दाखिल हुआ। इनके घोडे की टाप सुनकर बगीचे का रक्षक प्रहरी इनके साम्हने आया। इधर पृथ्वीराज ने भी अपनी पच्चीस-टकी कमान पर वाण चढ़ाया। तबतक एक यक्ष और यक्षनी टहलते हुए वहीं से आ निकले। यक्ष ने पृथ्वीराज से कहा "तुम किसी वृक्ष के नीचे छिपे छिपे तमाशा देखो। मालूम होता है तुम कोई प्रतापी राजा हो।"

(१) हे राजा जिनका महत्व प्रकाशित हुआ हो।

यह कह कर यक्ष यक्षिनी तो आगे चले। इधर पृथ्वीराज ने अपने सेवकों को आज्ञा देकर उस बाग मे समस्त सुख सामग्री प्रस्तुत करवाई। हुक्म होते ही केसर कस्तूरी चूना पान पानी शरबत केतकी कमल केवडा कुसुम मालती जाती चंपक पाडरी आदि के पुष्प और अतर दाडिम दाख केला अखरोट नासपाती अनार नरियर पिंडखजूर बिजौर आदि फल और घी दूध शक्कर युक्त अनेक प्रकार के स्वादिष्ट पकवान बात की बात मे लाकर तय्यार किए गए। थोडी देर में एक गधर्व अपनी नाटक मंडली सहित उसी बाग में आ उपस्थित हुआ। पहिले तो सब गधर्व मडली ने कुकुम युक्त सुगध मय शीतल जल से मुख प्रच्छालन कर पान बीडे चबाए बाद इसके अपने अपने साज सम्हाल कर गान नृत्य सहित नाटक आरम्भ किया। नाटक समाप्त होने पर सब मडली ने प्रस्तुत भोज्य पदार्थ का भोग लगाया। खा पी कर दुरुस्त होने पर उस गधर्व राज ने कहा "अहा आज यह सत्कार किसने किया है" तब वह यक्ष बोला कि यह सब सोमेश्वर के पुत्र राजा पृथ्वीराज की तरफ से है। निदान उस गधर्व ने पृथ्वीराज को सम्मुख आने की आज्ञा दी और जब पृथ्वीराज उसके सम्मुख गए तो उसने उन्हे एक सर्वसिद्धि मत्र दिया और शीस स्पर्श कर प्रीति पूर्व्वक आशीर्वाद देकर बिदा किया।



बालुकाराय प्रस्ताव।

[अड़तालीसवां समय।]

राजसूय यज्ञ में छोटे से लेकर बड़े तक सब काम राजा लोग करते है। इस लिये देश देश के राजाओं को एकत्रित करने के लिये जगह जगह को बुलावे के परवाने और सेनाएं भेजी गई। इधर कन्नौज के राज्यमहल में आगन्तुकों के सत्कार और दान पूजन आदि के लिये नाना भांति की सामग्री जुटाई जाने लगी। एक लाख भार(१) स्वर्ण, साठ भार मोती, एक करोड़ भार चांदी, असंख्य भार अन्य धातुए, अगनित हाथी घोड़े, कपूर केशर कस्तूरी अगर अम्बर आदि सुगंधियां, जरकसी और पाटाम्बर के अमूल्य वस्त्र और और भी कई प्रकार की अगनित आडम्बर की वस्तुएं संग्रहीत की गईं और राज्यग्रह के प्रशस्त आंगन में विविध भांति से यज्ञमंडप की रचना की जाने लगी।

तबतक चारों तरफ से दूत भी लौट लौट कर समाचार देने लगे कि हे राजन् भारतवर्ष के क्या हिन्दू क्या मुसलमान सब राजाओं ने आपका आदेश शिरोधार्य्य किया है। यह सुन कर जैचन्द की चर्गें चढ़ गई। वह मन्त्री से बोला कि अब ऐसा प्रबन्ध करो जिसमें मेरी कीर्ति किसी प्रकार से कलंकित न हो सके। मैंने मंत्र बल से आकाश और पाताल के देवताओं को जीता है और शस्त्र बल से दशों दिशाओं के दिग्पालों को। इस समय पृथ्वी पर के सब शासक मेरा महत्व स्वीकार करते हैं इस लिये यह यज्ञ करना मेरा कर्तव्य है क्योंकि संसार में काल बली है दृष्ट अदृष्ट सब पदार्थ एक न एक दिन काल कवलित होते हैं केवल कीर्ति पर काल का पंजा नहीं पड़ता। जो मनुष्य काल को टल कर कर्तव्य पालन कर लेते हैं उन्हीं का नाम संसार में अमर होता है।

जैचंद बोला कि हे मंत्री सुमंत्र मेरे पिता ने समस्त देश पर विजय प्राप्त करके दिग्विजयी पद प्राप्त किया था। इसलिये आज समस्त हिन्दू राजाओं में समर्थ मेरे मौसेरे भाई पृथ्वीराज के पास दूत भेज कर कहला भेजो कि वह दिल्ली से लगा कर सोरों तक की आधी भूमि मुझे दे दे। हे सुमन्त पृथ्वीराज से कहना कि यद्यपि मातृ पक्ष के विचार से हम तुम दोनों भाई बराबर है परन्तु कमधुज्ज वंश का राज्य अनादि है। चौहानों की आदि राजधानी संभर है इसलिये तुम अजमेर में राज्य करते रहो परन्तु हमारी सार्वभौम राज्यसत्ता के विचार से और भाई चारे के हिसाब से दिल्ली की आधी भूमि हमको दे दो।"

इधर तो राजग्रह में राजसी आडम्बर और राजनैतिक मार पेंच की कार्रवाई हो रही थी। उधर प्रजा में भी घर घर आनन्द का समुद्र उमड़ रहा था। जहां तहां देव स्थानों पर विप्र वृंद वेद पाठ करते थे। द्वार द्वार पर बंदनवार बंधे और मंगल सूचक स्वर्ण कलश रक्खे थे। बड़ी बड़ी हवेलियों के गोखे और झरोखे सब भांति सुन्दरता से सजाए गए थे; रत्नजटित आभूषण और जरतारी वस्त्रों से विभूषित अपने अपने महलों में बैठी हुई मनोहर महिलाएं मंद मंद स्वर से मंगल गीत गा रही थीं। उस समय कन्नौज नगर साक्षात् कैलास के समान मनोहर मालूम होता था।

मंत्री सुमन्त ने स्वामी की सिखावन शान्त भाव से सुन कर सभ्यता पूर्व्वक उत्तर दिया कि(२)

---

(१) भार = अष्टसहस्रतोलकपरिमाणः (शब्द कल्पद्रुम) अर्थात् एक भार दो हजार अर्थात् ढाई मन के बराबर हुआ।

(२) मूल पुस्तक में छन्द २२ से पाठ खंडित है। उसमें राजा के उपरोक्त वचनों पर मंत्री का उत्तर देना इन छन्दों में स्पष्ट नहीं है परन्तु छन्द २५ की पहिली तुक 'पुच्छयो सु वंश कमधुज्ज मन्त्र" से स्पष्ट होता है कि राजा से शायद यह कहा जा चुका है कि वही राजसूय अथवा अन्य कोई यज्ञ कर सकता है जिसके वंश परम्परा से होता आया हो—और ये छन्द नष्ट हो गए हों—यदि ऐसा न होता तो गर्व करके प्रश्न करने का क्या प्रयोजन था? ऐसे समय पर कवियों का विरुदावली पढ़ना उचित है परन्तु गर्व करके प्रश्न करना कार्यविशेष का सूचना देता है।

महाराज यज्ञ करना उचित नहीं। मंत्री के ऐसे वचन सुन कर जैचद ने चारणों को हकार कर निज वश की विरदावली पाठ करने को कहा। वे बोले महाराज जिस राज्यवश ने यज्ञ न किया उन राजाओं का राज्यभोग पूरा नहीं कहा जा सकता, हे राजन्! कमधुज्ज वश के आदि पुरुष कमधुज्ज सूर ने बडा भारी राजसूययज्ञ करके सूर पद पाया था। उनके बाद वाहन नरिंद हुए जिनका अतरिक्ष में रथ चल कर स्वर्ग पर्य्यन्त पहुचा। उनके बाद पुरूर सूर हुए जो कि एक प्रकार से चक्रवर्ती राजा हो गए हैं। उनके बाद सतसिन्धु सूर नील राज आदि नामी राजा होगए हैं। राजा नल भी आपही के पूर्व्व पुरुष हैं जिनकी नैषध चरित चरचा चतुर्दिक चल रही है। हे राजन् छओ जगत प्रसिद्ध चक्रवर्ती इसी कमधुज्ज वंश में होगए है, उनमें से एक राजा जीमूत वाहन है जिन्होने शीश पर चक्र धारण कर ससार में अमर यश पाया। महाराज! ऐसा आपसे कौन कह सकता है कि आप यज्ञ न करें। राजसूय यज्ञ में अगनित हाथी घोडे वस्त्र मणि मोती आदि का दान देने से अनत पुण्य मिलता है। दानियों में राजा बलि प्रसिद्ध है जिसने शरीर भी दे डाला। अस्तु हे महाराज छिति पर के छत्रधारियों को जीत कर आप अवश्य यज्ञ कीजिए।

यह सुनकर राजा ने पुनः प्रधान को आज्ञा दी कि अब शीघ्रही यज्ञ की सामग्री प्रस्तुत कर नाना प्रकार के धार्मिक कार्य्यों के होने और षोडस दान का, उत्तम प्रबन्ध करो। इसपर सुमन्त ने पुनः उत्तर दिया कि महाराज मेरी विनती पर ध्यान दीजिए। न अब वह समय है न अब वह अर्जुन भीम के समान बलवान और प्रतापी पुरुष हैं। कलि युग में यज्ञ नहीं हो सकता। सुमन्त का ऐसा प्रत्युत्तर सुनकर जैचन्द खिसिया कर बोला "क्या व्यर्थ बेसमझी की बातें करता है।"

मंत्री सुमत की बातों ने जैचन्द की बुद्धि पर ऐसे असर नहीं किया जैसे भारी टोर या चट्टान पर तीर असर नहीं कर सकता। उधर तो जहां तहां यज्ञ के साज सामान दिन दूने होने लगे ब्राह्मणों ने यज्ञ तिथि का सुदिन शोधा, इधर स्वामिधर्मधारी सुमन्त स्वामी की आज्ञा पालन करने के लिये मन में तरह तरह के सोच विचार और सकल्प विकल्प करता हुआ संभरीनाथ पृथ्वीराज के पास चला। बुद्धिमान सुमन्त पृथ्वीराज के बल वैभव और उसकी सामन्त मडली के ऐक्य एव उनकी अखण्ड वीरता मय रीति नीति से भली भाति परिचित था। इसलिये उसे बडा भारी विचार इस बात का था कि दोनों व्रत कैसे पलें? "साप मरे ना लाठी टूटे"

मंत्री सुमन्त अपने स्वामी का सच्चा शुभचिन्तक था। जैचंद और सुमन्त दोनों दो तन एक मन थे। जब सुमन्त दिल्ली पहुचा तो पृथ्वीराज ने राज्योचित शिष्टाचार से उसका उचित आदर किया। खान, पान, वसन, सुगध घनसारादि सब सामान सुमन्त के डेरो पर पहुचाए गए। दिल्ली पहुचने के छः दिन पश्चात् सुमन्त ने पृथ्वीराज के दर्बार में जाकर जैचन्द का दिया हुआ पत्र पेश किया और कहा "हे राजन् जैसे हिरण्याक्ष और दक्ष प्रजापति के यज्ञ मे कुबेर पर्य्यन्त सब यक्ष, किन्नर आदि प्रस्तुत थे वैसे ही इस समय मनुष्य मात्र जैचन्द की सेवा में अपना सौभाग्य मानते है, अस्तु इस समय मेरी प्रार्थना है कि जिस इन्द्रप्रस्थ के लिये पहिले बडे बडे गन्धर्व जूझ मरे, जिसके लिये दुर्य्योधन का निधन हुआ उस इन्द्रप्रस्थ के मंडल का आधा हिस्सा कन्नौजराज को दे दीजिए।" सुमन्त के ऐसे बचन सुनकर पृथ्वीराज ने अपने

(१) मूल प्रति में पुरूर सूर पाठ है परतु टिप्पणी में 'सूर" दिया हुआ है। कमधुज्ज वंश के आदि पुरुष का नाम कवि ने कमधुज्ज सूर लिखा है इसके पश्चात् भी अन्य राजाओं के नाम के साथ 'सूर" पद है इससे मालूम होता है कि 'सूर" शब्द कमधुज्ज वश का स्वय निर्धारित पद था प्राय और और इतिहासों मे भी यह बात पाई जाती है कि जिस किसी प्रतापी पुरुष से वश की ख्याति हुई उससे नामान्तक पद भी बदल गया जैसे गुप्त पाल, चन्द, वीर सिंह इत्यादि।

(२) तुम वश भयौ नल राइ भत्र।
नैषद्ध हार रा धन्या वध ॥

मंत्रितन एकमन सामन्तों को बुलाकर उपरोक्त विषय पर उचित सलाह देने को कहा। पृथ्वीराज की इच्छानुसार यह गुप्त गोष्ठी देने के लिये गोइन्दराय गहलौत, सलष प्रमार, काका कन्ह, निढ्ढुर राय, गुरु राम प्रोहित, और कवि ये सात सामन्त प्रस्तुत हुए।

उक्त विषय पर विचार हो ही रहा था कि तबतक यज्ञ का निमन्त्रण देने वाले दूत भी कन्नौज से आ पहुंचे उनकी जाहिरी होते ही पृथ्वीराज ने उन्हें बुलाकर पूछा कि कहो किस अभिप्राय से आए हो? इसपर दूतों ने उत्तर दिया कि राजन् हमारे महाराज कन्नौजराज ने राजसूय यज्ञ आरम्भ किया है उनका निमन्त्रण पाकर देश देश के नरेश कन्नौज नगर में आ उपस्थित हुए हैं। हम लोग आपको निमन्त्रित करने आए हैं सो यह आज्ञा पत्र देखिए और कन्नौज को चलकर कन्नौजराज द्वारा नियत किए हुए अपने दरवान पद पर छडी लेकर काम कीजिए। यह सुनकर पृथ्वीराज तो ऐसा सन्न रहगया जैसे साकरे में फसकर सिंह और गुरुजनों के सम्मुख सुशीला लज्जाशील स्त्री रह जाती है। परन्तु गोइन्दराय बोला "भला ऐसा कौन है जो कालियुग में यज्ञ करने का साहस करे। सतयुग में बलि ने यज्ञ किया था। त्रेता में राजा रघु ने यज्ञ किया जिसमें कुबेर उनके सहायक थे। द्वापर में युधिष्ठिर ने यज्ञ किया परन्तु श्रीकृष्ण भगवान और अर्जुन की सहायता से। ज्ञात होता है तुम्हें गर्व का अजीर्ण होगया है। तुम समझते हो संसार में क्षत्री ही शेष नहीं हैं। ऐसा न विचारो। यह वसुमती निर्बीज नहीं होती। क्या जैचन्द इस कालिन्दी कूल पर आसन्न दिल्लीपति पृथ्वीराज को नहीं जानते, जिसके रुंड पर मुंड रहते यज्ञ करने की इच्छा करना केवल कल्पना मात्र कहा जा सकता है।" इन्द्रप्रस्थपति की सभा में स्वस्वामी प्रति अपमान सूचक बचन सुनकर वे दूत वहां से उठकर ऐसे चुप चाप चल दिए जैसे पंडितों की मंडली में से मूर्ख उठ जाता है। वे लोग परस्पर इस प्रकार वार्तालाप करते हुए कन्नौज को चले "आहा! जब स्यार की मृत्यु आती है तो उसे सिंह से उलझने की सूझती है। निर्बल की मौत आती है तब वह बलवान से बैर ठानता है न जाने इन्हें क्या सूझी है जो इतने बडे पंगराज के बल वैभव की ओर ध्यान भी नही देते। जहां तक अनुमान है इसका यही परिणाम होगा कि पंगराय आक्रमण कर के इनके गर्व रूपी समुद्र को अगस्त की तरह सोख लेगा और इस दिल्ली के दुर्ग पर कन्नौज राज्य का अधिकार होगा?"

ऐसा विचारते हुए वे मलिनमन हतोत्साह कन्नौज जा पहुंचे और उन्होंने यावत् सब वीतक जैचन्द के सम्मुख वर्णन किया। दूतों के बचन सुनकर कन्नौजराज जल गया। उसने सुमन्त प्रधान को बुलाकर सब हाल कहा। तब वह पुनः बोला कि श्रीमान् कलियुग में यज्ञ कार्य्य का पार होना कठिन देख पडता है; परन्तु जो आज्ञा हो सो शिरोधार्य्य है। सुमन्त की सलाह के अनुसार जैचन्द ने युद्ध-विद्या-विशारद बालुकाराय और मुसल्मान सेना के स्वामी खुरासान खां को बुलाया और उनसे कहा कि तुम एक मात्र राज्य की रक्षा का प्रबन्ध करो। यदि मैं इसी समय चहुआन को चूर्ण करने की चेष्टा में चलता हूं तो इधर यज्ञ का समय निकल जायगा, इसलिये मुझे यह उचित जंचता है कि पृथ्वीराज की स्वर्ण प्रतिमा द्वारपाल के स्थान पर स्थापित करा कर कार्य्य आरम्भ किया जाय। उसने अन्य कर्मचारियों को भी यथा योग्य कार्यों पर नियत करके मन्त्री को आज्ञा दी कि पंडित बुलाए जायं और यज्ञ की विधि और संयोगिता के स्वयम्बर का उत्तम मन्दिर शोधन कराया जाय। सुमन्त ने स्वामी की इच्छानुसार सब कार्य सम्पादन होने का उचित प्रबन्ध कर दिया

(१) जमीन से लेकर कान पर्यन्त ऊंची एक लकडी होती है जो चांदी या सोने से मढ़ी होती है—यह छडी राजाओं के द्वारपालों का चिन्ह अथवा राजाओं का दंड समझी जाती है इस समय इस छडी को धारण करने वाले 'नकीब' कहे जाते हैं यह लोग दरबार के समय सब सर्दारों को यथा स्थान बैठाने और सवारी के कतार आदि बनाने का कार्य सम्पादन करते हैं।

और सारे नगर में भी इस बात का शोर होगया।

ये सब समाचार संयोगिता पर भी प्रगट हुए। एक दिन संयोगिता ने अपनी सखियों से मुस्करा कर कहा "मुझे बड़ा आश्चर्य्य है कि मेरे मानसिक भाव और मेरी बुद्धि न जाने क्यों सहसा पलट गई है। यह मलयमारुत पुष्पों का पराग और कोकिलाओं का कलाप कटक मय प्रपंच सा सूझता है। रह रह कर मन में कभी उत्कंठा और कभी शंका का आविर्भाव होता है, गुडियों के खेल में पाणिग्रहण के समय दिल में दाह होती है और उनके सोनारे के समय लज्जा विनय और चाह की अभिलाषा होती है—कन्नौजराज के कंचनमय महलों में मोतियों के बंदनवार ऐसे सुशोभित होते थे जैसे सुमेर के आश्रय में गंगा आ बही हो, अथवा हिमाञ्चल कण कण हो कर सूर्य्य की शरण में जा पहुंचा हो—ऐसे स्थान में विचरती हुई संयोगिता यदि कामेच्छा से रहित न होती तो हम उसे रतिरानी कहते परन्तु इस भोलेपन की सहज लुनाई पर तो स्वयं कोटि रतिरानी आरती उतारती हैं। वह जो छोटे छोटे पालित पशु शावकों को चुगाती और इठलाती हुई सखियों से बताती थी उससे यह भी भासित होता था कि उसके शरीर पर मनसिज की छाया कुछ न कुछ अवश्य पड़ गई है क्योंकि रसीली बातों को सुनकर सकुचना और दिनो दिन नजर का नीचा होना कामदेव के ही कला विस्तार की निशानी है।

संयोगिता की समवयस्का अन्यान्य राजकुमारियां कल्लोलें कर कर कलकंठ से गान करती हुई उसके मानसिक हृदयोल्लास को और भी उद्दीपन करती थीं। वे अठखेलियां करती हुई संयोगिता के चिबुक को स्पर्श कर कर के कहतीं कि अब तो शीघ्रही मात आठ दिन में तेरा पाणिग्रहण होने वाला है। वे किशोर वयस्का सुन्दरी जब परस्पर हँस हँस कर ऐसी बातें करतीं तब संयोगिता कुछ अनख सी मानकर लज्जा से वस्त्राच्छादित कर लेती थी। कोई कोई कहती, कहो तो कौन इसका वर होगा, तब दूसरी उत्तर देती कि इसके योग्य तो वही जोगिनपुरपति पृथ्वीराज ही है।

उस समय संयोगिता सिसिर और बसन्त की संधि के समान ऐन वयःसंधि अवस्था में थी उसके अंग प्रत्यंगों में मधुर मधुमय माधुर्य्य छवि की आभा झलकने लगी थी उसके हृदय सरोवर में कमल कली से युग यौवनाङ्कुर अङ्कुरित होने लगे और उन पर अविक श्यामले सलोने भ्रमर बिन्दु छितर छितर कर और ही छवि छटा छाने लगे थे उसपर घूंघरू स्वर तो ऐसा मालूम होता था मानों भँवरी अपने पति से कह रही हो कि हे प्राणप्यारे उठो ऋतुराज की अवाई हुए विलंब हो चुका।

संयोगिता की अवस्था की बसंत ऋतु से पर्णोपमा वर्णन करता हुआ कवि कहता है "उसके अरुणारे अधरही कुसुमित रसाल पल्लव थे, खंजरीकच साक्षात् मौर की मंजरी और उनपर लटकती हुई काली काली बालों की लटें अलिश्रेणी सी जान पड़ती थी। कंठ स्वर कोकिला को मात करने वाला तो था ही। हिमन्त को हराकर बसन्त जोर पकड़ रहा था। प्रातः वायु भांति भांति के सुगंधित पुष्पों की सुवास को लूट कर संसार को सुखमय कर रही थी। बन बाग उपवन हार पहार सर्वत्र मौरे हुए आमों के मौर प्रकृति पर ढरते हुए काम के से चर ज्ञात होते थे। जहां तहां कोयल कलापती और लाल हरे पीरे पत्र अद्भुत छवि छटा छाते थे। भांति भांति के फूले हुए फूलों की कनारें साक्षात् पञ्चबाण के बाण सी विरही जनों के हृदय बेधने को सन्नद्ध थी। इस सुखमय दृश्य जनित परिरंभन भाव की कृपाण तथा और भी नाना भांति के प्राकृतिक शस्त्रों से बसंत ऋतु ने शिशिर को जीत कर लाल लाल पलास पुष्पों के निशान रोपकर संसार पर अपना आधिपत्य जमा लिया। इसी समय इधर तो संयोगिता के हृदय मंदिर में कामाग्नि उद्दीपित हुई। उसी के स्वयंवर यज्ञ के लिये सुदिन रक्खा गया और उधर पृथ्वीराज ने यज्ञ विध्वंस करने के लिये सेना सजी।

जब पृथ्वीराज के दरबार में समाचार पहुंचा कि जैचन्द ने यज्ञ आरम्भ कर दिया और पृथ्वीराज की स्वर्ण प्रतिमा द्वारपाल के स्थान पर स्थापित की गई है तो सब सामन्त लोग क्रोध के मारे कुढ उठे और पृथ्वीराज से बोले कि "हे राजन् ! अब जीवन की मोह छोड कर मरने पर कमर बाँधिए।" पृथ्वीराज बोला "मेरे रहते जैचन्द ने यज्ञ करने का साहस किया है। यदि मै इस समय यज्ञ विध्वस करता हूं तो देवताओं का द्वेषी होना पड़ेगा और जो प्रजा पर चढाई करता हूं तो भी अभिप्राय सिद्ध होता नहीं देख पडता।" ऐसा विचार कर उसने कैमास सहित अन्य मुख्य सामन्तों से पूछा कि अब क्या करें तब गोइन्द राय बोला कि जैचन्द जानता है कि पृथ्वी पर पृथ्वीराज है ही नहीं, यह नहीं जानता कि यह वसुमती वसुधरा कभी निर्बीज नहीं होती !

उस समय गुरुराम प्रोहित, जैतप्रमार, निड्ढुर राय, जामराय यादव, भौहा चंदेल, कैमास, चंद पुडीर और काका कन्ह ये सब हाजिर थे। कन्ह बोला "बस अब विलंब केहि काज' तुरंत सेना तय्यार करके कन्नौज को लुट पाट कर यज्ञ विध्वंस किया जाय। और भी जो जिसके जी में आया सो सब ने कह सुनाया परन्तु चन्द पुडीर ने कहा कि कैमास से तो पूछिए क्या कहते हैं!। इस बात को सबने स्वीकार किया और सब के सब कैमास का मुँह ताकने लगे' निदान कैमास ने कहा कि कन्नौज पर चढ चलने से नहीं बनेगा। जैचन्द का बल बडा है इसलिये खोखदपुर पर चढाई करके बालुकाराय को मार लिया जाय बस फिर यज्ञ आप ही विध्वस हो जायगा। *

इस प्रकार सलाह पक्की हो जाने पर उस समय दरबार बरखास्त हुआ तीसरे पहर फिर से पृथ्वीराज ने कैमास को बुला कर चला चली के जोर में कुछ बातें की। पंडित से यात्रा के लिये सुदिन पूछा। पंडित ने कहा कि पुष्य नक्षत्र रविवार की साइत अच्छी है। निदान पचमी रविवार के दिन दिल्ली राज्य की समस्त चतुरंगिनी सेना राजद्वार पर आ उपस्थित हुई। पृथ्वीराज ने अच्छे वलिष्ट और अच्छे अच्छे खेत के जात वाले ताजी एक एक सब सामन्तों को दिए। वे सब सामन्त उन घोडों पर सवार होकर सन्नद्ध हुए और पृथ्वीराज आप खुरासानी खेत के श्रृंगारपाट नाम के एक भीमकाय अश्व पर सवार हुआ। उस श्रृंगारपाट की पूछ का गुच्छा अच्छा चौंर सा छहराता और चलते समय उसकी खुरी से धरती धमकती और बिजली कैसी चमचमाहट पैदा होती थी।

ज्योंही बालुकाराय का विनाश करने के लिये पृथ्वीराज ने अपने घोडे की बाग उठाई त्यों ही बंदीजनों ने विरदावली अलापी, जिसे सुनकर सूरों का चित्त चौगुना हो गया और कायरों का कलेजा कँप गया। पृथ्वीराज के साथी सिपाही ऐसे वलवान जवान थे कि यदि एक, हजार को पछारने की हिम्मत रखता तो दूसरा इसको दम की दम में दमन कर देता। यदि एक सौ को साफ करता तो दूसरा लाखों का मुँह मारता था। ऐसे ऐसे वीरों के बीच में स्थित पृथ्वीराज के शीश पर आच्छादित सोने का छत्र समुद्र में बड़वा नल की सी ज्वाला जान पडता था।

पृथ्वीराज ने प्रमुख अनी में तो निड्ढुरराय को प्रेषित किया और समस्त सेना सहित पीछे से आप चला। पृथ्वीराज के चलते समय जगी बाजों की विषम ध्वनि से चारों ओर हलचल मच गया। इस सेना का सेनामुख कन्ह हुआ। उसके पीछे वलिभद्रराय और उसके पीछे पृथ्वीराज था। ज्यों ही इस सेना ने कन्नौजराज्य की सरहद में पैर दिया कि चारों ओर हाहाकार मच गया, जहा तहा गाव के गाव उजाडे जाने लगे और भूमिया (जमीदार) लोग पकड पकड कर बाधे और मारे जाने लगे। चहुआन सेना के इस जघन्य आतंक और उत्पात से दुखित होकर प्रजावर्ग ने बालुकाराय के द्वार जा

* पहिले लिखा जा चुका है कि बालुकाराय जैचन्द का भाई था [illegible] भाई के मरने पर हिन्दू शास्त्रानुसार एक साल पर्यन्त [illegible] के कारण कोई शुभ कार्य नहीं हो सकता।

पुकार मारी। प्रजावर्ग ने बालुकाराय की पौरि पर पहुच गुहार और दुहाई दे, द्वार मार रो रो कर कहा कि हे प्रभू! पृथ्वीराज चहुआन ने चढ़ाई करके सारे देश को उजाड़ कर रक्खा है। बड़े बड़े लखपती साहूकार लूटे जाकर लंगोटी लगाए डोलते हैं। जहां तहा गाव के गाव खड़े जला दिए जाते हैं, सो इस पृथ्वीराज के दल बल रूपी समुद्र को आप अगस्त होकर सोखिए नहीं तो हम सब लोग ढह बह जायगे।

यह समाचार सुनकर जैचन्द का भाई बालुकाराय ललकार कर बोला "है क्या हल्ला हो रहा है ऐसा कौन पुरुष है जो जैचन्द के बल वैभव को न जान कर प्रजा को सताने आया है, अच्छा मै उसकी धृष्टता को नष्ट भ्रष्ट करता हू।" यों कह कर बालुकाराय ने भी अपनी सेना सम्हाल कर चहुआन की चमू का मोरचा मारने के लिये कूच होने की आज्ञा दी। एक तो भाई का स्नेह, दूसरे राजाज्ञा, तीसरे अपने बान की आन मान कर प्रजा की पुकार पर बालुकाराय चहुआन पर ऐसे चढ चला जैसे सुन्दर सुन्दरी का मधुर कठ स्वर सुनकर कामी के मन में कामाग्नि दमक उठती है, घोड़े के गिरते ही जैसे बन्दूक से गोलिया चलती है या बद्दर की गरज के साथ बिजली चमक उठती है

परन्तु विचार करने पर अन्त में यह निश्चय हुआ कि यहा से कूच करना उचित नहीं, शत्रु के यहा आ पहुंचने पर ही वार बचाया जाय। उधर से चहुआन सेना भी किसान की तरह स्यारी सी निरानी भारी उत्पात मचाती चोप से चली आती थी। अस्तु जब चहुआन सेना चलती हुई बिलकुल बगमेल में आगई तो इधर से बालुकाराय के भी निशान उठे। यह देखकर पृथ्वीराज ने अपनी सेना को व्यूहबद्ध होने की आज्ञा दी।

"धन्य है, वीर पुरुषों के दोनों हाथ लड्डू हैं। यदि वे युद्ध में कट मरते है तो परलोक में उत्तम गति पाते है और जो जीते जागते विजयी होते है तो जगत में उनका यश जाहिर होता है।" दिग्वादाव होतेही दोनों दल एक दूसरे से भिड़ पडे और एक दूसरे अपने अपने प्रतिद्वंदियों को पकड पकड़ मारने पछारने और उनका उदर विदारने लगे। इस प्रकार की भयानक रगभूमि में अटल रूप से डटा हुआ बालुकाराय स्वय करारे वार करता और अपने सिपाहियों से कहता था कि पगराज की रत्नमयी भूमि को जो लुटेरे लूटने आए है उन्हें बड़वाग्नि बन कर भस्म करो, शरीर में चेतना शक्ति के रहने पर्य्यन्त बार बार शस्त्र प्रहार करते हुए चत्री धर्म को निवाहो। हे वीरो जैसे नवोढ़ा नारि रात्रि से और कुल कामिनी कुल विहित परिपाटी से डरती है वैसे ही चत्रियों को रन से डरना चाहिए। मन और चर का चलायमान होना भला है परन्तु पर्व्वत और वीर पुरुषों को सदा अचल होना चाहिए। इस शरीर की शक्ति अतरात्मा एव जीव चचल कुलटा कामिनी के समान चपल है, न जाने कब चचला सी चमक कर चट से चल बसे; इसलिये लोह की झार में झिलकर झूठे झगड़े से मुक्ति पाना ही भला है। इस समय मुक्ति मार्ग का द्वार खुला हुआ है पचतत्व रचित प्रपच मय कच्चे पिंड को खडन कर सच्चा आनन्द लेना ही सार है।

बालुकाराय के ऐसे बचन सुनकर सैनिकों ने विचित्र कौशल दिखाया। सारी सेना ने चद मडल एव नाचते हुए मोर के परों की नाई चक्राकार हो कर चहुआन सेना को चारों ओर से घेर लिया जोशीले जवान बढ बढ कर हाथ देते और शत्रु के सिर को भुट्टे सा काट लेते थे। जहा तहा छहराते हुए रक्त के छींटे ऐसे जान पडते थे मानो टेसू के कुजों में दवार लगी हो। जिस किसी हाथी के कुमस्थल पर हाथ बैठता तो पहाड़ी झरने की तरह रुधिर की धारा बह निकलती थी। इसी प्रकार मारामार होते हुए बालुकाराय ने पृथ्वीराज को आ दबाया परन्तु पृथ्वीराज ने बालुकाराय के हाथी को एक हाथ ऐसा मारा कि जिससे वह भहराकर गिर पड़ा बस उसी दम से बालुकाराय की सेना के

(१) टेसू एक लकड़ी होती है जिसका ऊपर का बकला काटा [illegible] आग [illegible] पर वह चिट चिटाता है और चिनगारियां उड़ती है।

कदम पीछे पडने लगे और चहुआन सेना का बल बढ उठा। चहुआन सेना के हरावल में कन्ह और कैमास, दहिने गोयदराय और बाएँ निड्ढुरराय थे। उधर से बालुकाराय स्वय अपने सिपाहियों को बाढे देता हुआ बराबर आगे बढने की चेष्टा करता था।

दोनों ओर के योद्धा अपने अपने ईस (स्वामी एव महादेव) की दुहाई दे दे कर मार करते और मार मार पुकारते थे। रण वाद्यों की भीषण ध्वनि से धरती धसकती और वसु कसमस होते थे। मुड बिन रुड भसुडहीन हाथी दौडते हुए बड़े भयानक देख पडते थे। कटार से पेट या पनर आरपार होने पर कलेजा तिल्ली और फेफडे सहित आते निकल पडती थीं। छुरी बिछुआ कटार बाक बगुरदा आदि बख्तरों पर खड खड होते तो खोपडी पर गुरज का कडाका होने से टोप टूट जाता और भेजी निकल पडती थी. कँधे पर खड्ग का हाथ पडता तो हाड़ कट कर कमर तक वारापार हो जाता था। कटे हुए सिर जमीन पर पडे पडे फुदकते हुए विहार करते जान पडते थे। एक बकारता, तो दूसरा हुकारता था, एक ललकारता, तो दूसरा प्रचारता था, एक हाहाकार करता तो दूसरा पानी पानी पुकार भरता था। यह सब होते हुए भी बानैत वीर अपनी अपनी बान पर डटे कट कट कर पटते जाते पर हठ से हठ कर हटना हराम जानते थे। इसी बीच में कन्ह चहुआन और ब लुकाराय का चौनजरा होगया और कन्ह ने बालुका का सिर काट गिराया। परन्तु उसका कमेध तलवार खींच कर कन्ह पर झपटा जिसे कन्ह ने सेल से ठेल कर अस्व पर से ढकेल दिया।

बालुकाराय के भूमि पर पडतेही उधर तो उसके शीश को शिव ने रुड माल में सादर स्थान दिया और इधर चहुआन सेना की चढ़ लगी। इस युद्ध में चहुआन सेना के सात सौ सिपाही और बहुत से रावत खेत रहे और बालुकाराय के पाच हजार योद्धा काम आए।

बालुकाराय के मारे जाने पर चहुआन सेना ने ग्परबद्ध होकर आगे बढना चाहा मगर खधार खा ने मोरचा बाँध लिया और अब चहुआन सेना की मुसल्मानों से छिडगई। दिन का कुछ थोडा सा अंश शेष था इसलिये उस दिन तो दोनों सेनाए शान्त होगई दूसरे दिन आधी घड़ी दिन चढे से फिर लोहा बजने लगा। जिस समय बहादुर योद्धा युद्ध के लिये सन्नद्ध होते है तब और सब देवता तो प्रसन्न होते है परन्तु ब्रह्मा चिंता ग्रस्त होता है हताहत होकर मरने वाले बीर उसकी सृष्टि से एक दम उठ जाते है और चिन्मय ब्रह्म में लवलीन होकर संसार के आवागमन से सदा के लिये मुक्त हो जाते है—यवनसेना के साथ कन्नौज राज्य की सीमान्तर्गत कुछ और भी सेना आ मिली परन्तु इन सामन्तों के साम्हने कौन ठहर सकता था। शायंकाल् तक खूब मारा मार हुई। सैकडों सूर वीर मारे गए। रक्त की नदी बह निकली। लोथों के अटंब लग गए और मासाहारी जीव मास खाकर और खून पी कर खूब अघागए। दिन भर युद्ध होते होते अत में पंग सेना परास्त हुई और पृथ्वीराज विजयी हुआ।

सम्मुख संग्राम में शत्रु सेना को परास्त कर के पृथ्वीराज ने खोखदपुर को लूटने के लिये बाग उठाई। उसी रात्रि को बालुकाराय की स्त्री ने स्वप्न में देखा कि उसकी सुढार मोटी जाँघें पतली और पतली सी कमर मोटी होगई है। नेत्र साचात कमल के पुष्प और केश सजीव सर्प से हो गए हैं। आगे आगे वालुकाराय और उसके पीछे आप पृथ्वीराज के भय से भाग कर पहाड पर चढ़ती जाती है। इतने में चारों तरफ कूह मच गई कि वीर वर बालुकाराय को मारकर पृथ्वीराज नगर लूटने के लिये चला आ रहा है। यह भयानक समाचार सुन कर नगर निवासियों के तो देवता कूच कर गए। नगर निवासिनी एव महलों की महिलाओं का कलेजा काप उठा और नीवी के बन्धन ढीले हो गए। बालुकाराय की स्त्री की तो यह दशा थी कि उसकी सखी सहचरी उसे हाथ पकड पकड आसू पोंछ पोंछ कर समझाती थीं परन्तु वह बिलख बिलख कर बिलाप करती हुई बार बार यही कहती थी

"हाय प्यारे ने विधाता को वाम करने के लिये पृथ्वीराज से शत्रुता क्यों ठानी थी। जिस भूमि की रक्षा के लिये सहस्रों सिपाही सन्नद्ध थे जो भूमि इन्द्र की उपवन बन रही थी, जहां अनेकों प्रकार के रंग रंग मय पुष्प प्रस्फुटित होते और आनन्द के मकरन्द आच्छादित रहते थे, जहा नित नव सुख सारे के नवीन रसाल पल्लव देख पड़ते थे उस भूमि को पृथ्वीराज रूपी सुग्गों ने लूट पाट काठ छाँट एवं कतर कर कौड़ियों का कर दिया।" इस प्रकार बालुकाराय को मार कर, खोखदपुर को उजाड़ कर कन्नौज राज्य की प्रजा में हाहाकार डाल कर, जैचन्द का यज्ञ बिगाड़ कर,पृथ्वीराज दिल्ली को लौट आये।

इधर वालुकाराय की स्त्री नाना प्रकार के विलाप वाक्य उच्चारण करती हुई कन्नौज जा पहुंची और जैचद के साम्हने सब दुःख रोकर कहने लगी "हा चहुआन से वैर बिसाहने में सर्वनाश हुआ।"



पंगयज्ञ विध्वंस समय।

[उनचासवाँ समय।]

माघ वदि ५ से यज्ञ आरम्भ होकर त्रयोदशी तक एक सप्ताह हो चुका था। एक तो राजसूययज्ञ दूसरे संयोगिता का स्वयवर दोनों आनन्दमय कार्य्यों के कारण समस्त कन्नौज नगर कुसुम सा फूल रहा था। राजमहल का तो कहना ही क्या था। प्रत्येक द्वार द्वारी महराब गोख और झरोखों पर जड़ाऊ बन्दनवार झलमला रहे थे। महल के आँगन मे यज्ञ मंडप स्थापित था; जिसके खम्भे सोने से मढे हुए थे। ललित ललाम तरुलता आच्छादित उत्तंग मंडप पर रग विरगे ध्वजा केतु और पताके फहरा रहे थे और कमलपुष्पों के लटकन और कुसुम के तोरण लटक रहे थे। ऐसे मडप के बीच में बैठा हुआ जैचन्द अपने भाग्य को धन्य मनाता हुआ फूला अंग नहीं समाता था। कहीं कोकिल कंठी नायिकाएं मंगल गीत अलापती थी, कहीं गवैये लोग राग रागनियों को गा रहे थे, कही मधुर स्वर वाले सुरीले वाजे बजते थे और कही धानुक मडली भीम-स्वर बाजे बजाती थी। उस मडप मे नाना भाँति की बेल बूटेदार रोशनी हो रही थी*। और एक तरफ नाना प्रकार के नाच रग नाटक रास इत्यादि के तमाशे भी हो रहे थे। आगन्तुक पाहुने तथा अन्य कर्मचारी गण भी यथास्थान आसीन थे। इसी समय बालुकाराय की स्त्री और उसके साथ वालों ने हाथ बाँध कर जा पुकारा।

"गगा की गल मे मदारो के गीत" सुनकर जैचन्द ने अकुला कर पूछा, क्या है? उन्हो ने उत्तर दिया महाराज पृथ्वीराज ने सर्वनाश कर दिया!! बालुकाराय को मार दिया और खोखदपुर को उजाड दिया। यह सुनते ही जैचन्द के हृदय समुद्र मे क्रोध रूपी बड़वाग्नि की उफान सी आगया। वह लाल लाल आँखे कर त्योरी बाँधकर बोला "पूर्व्व दिशा का देवता इन्द्र है, अग्नि कोण का अग्नि, दक्षिण दिशा का यम और नैऋत का राक्षस है। पश्चिम दिशा का अधिपति वरुण और वायव्य कोण का वायु है उत्तर का कुबेर और ईशान के ईशान अर्थात् देवता है। आकाश मे ब्रह्मा और पाताल में शेष है। अस्तु यदि पृथ्वीराज इनमे से किसी की भी शरण जाय पर वह जीता बचेगा नही। उसे अधिक गर्व हो गया है, परन्तु ईश्वर गर्व प्रहारी है। हनुमान जी को जब द्रोणागिरि के उपारने पर गर्व हुआ तो भरत जी ने बाण मार कर उनके गर्व को गिरा दिया। यदि आज अपना दल बल सज कर पृथ्वीराज को मय उसके सहायक समरसिंह सहित बाँध कर न लाऊ तो मैं अपने पिता विजैपाल का जाया न कहाऊ उसने मंत्री सुमंत को आज्ञा दी कि इसी समय सेना सजी जाय और कहा, मै इसी समय जाकर पृथ्वीराज और समर सिंह दोनो को बाँध लाकर तिल की तरह पेरूंगा, तब मेरे जी में जी आयगा।

इस समाचार के सुनते ही सर्वत्र सन्नाटा छा गया, जैचन्द की रानी जुन्हाई ने सब हाल सुना तो उसने राजा को बुलाकर कहा कि पहिले संयोगिता का स्वयम्बर कर लो फिर पृथ्वीराज को पकड़ना। इस समय स्वयम्बर के लिये सब तरह से सुपास है। देश देश के नरेश उपस्थित हैं। अस्तु बेटी का पाणिग्रहण कराके तब पृथ्वीराज को पकड़िए और फिर निश्चिन्तता पूर्व्वक यज्ञ कीजिए।

जैचन्द का क्रोध करना और रानी का समझाना बुझाना संयोगिता ने भी सुना इसलिये उसने अपनी धा से पूछा कि पिता जी आज किस पर कुपित हो रहे है? तब धा ने उत्तर दिया कि पृथ्वीराज पर, जिसने रग में भग कर सारा सुख सत्यानाश कर दिया। यह सुनकर संयोगिता ने

(१) बाजा बजाने वाले एक नीच जाति के लोग।

* मूल पाठ "आनन्द दल बहु रोशनय [illegible] से ज्ञात [illegible] का भी [illegible] होता है।

(१ [illegible] हाथों के बाल [illegible] को दबाकर दूषित [illegible] करते है।

गन्धर्व के वचन स्मरण करके अपने मन में निश्चय कर लिया कि इस तन पिंजर मे प्राण पखेरू के रहते संभरी नाथ के सिवाय और बर को बरना स्वीकार तो न करूंगी चाहे इधर की धरती उधर हो जाय। ये सब बातें जैचन्द के कान में भी पड़ गईं, परन्तु उसकी रानी ने कहा कि लडकों की बातो पर कान नहीं देना होता।

निदान जैचन्द की आज्ञानुसार उधर तो मंत्री सुमन्त ने सेना सज कर तय्यार की और वह सेना फुटकार होकर दिल्ली की तरफ रवाना की गई,इधर संयोगिता के स्वयम्बर का साज बाज सजा जाने लगा- उधर स्वयम्बर का समाचार पाकर संयोगिता तो बे सुध होकर धराशायी हुई और इधर पग सेना ने दिल्ली राज्य की सीमा में पैर दिया।

इस समय के ४० से लेकर ४१ तक चार छन्दों का सिलसिला आगे के प्रस्ताव से मिलता हुआ है अस्तु हम उस शेषांश को अग्रिम प्रस्ताव के साथ संगठित करके लिखते हैं।



संयोगिता नाम प्रस्ताव ।

[पचासवां समय ।]

खोखंदपुर को उजार कर और बालुकाराय को सहार कर आने पर पृथ्वीराज ने सब सामन्तों से सलाह कर निश्चय किया कि अब यहां ठहरना उचित नहीं है। इस लिये दस सामत तो दिल्ली की गढ रक्षा पर और तीन तीन प्रत्येक नाके पर छोड कर पृथ्वीराज शिकार के बहाने जगल में जा पडा।

बालुकाराय के बध का समाचार पा कर जैचन्द ने दो गुप्तचर उसी समय दिल्ली को भेज दिए थे। उन्होंने सब भेद लेकर जैचन्द से आकर कहा कि महाराज दिल्ली में केवल दस सामन्त छोड कर पृथ्वीराज जगल मे शिकार खेल रहा है। असल बात तो यों है कि वह आपके डर से डर कर भागता फिरता है। इस समय फौज भेज कर उसे जगल ही मे घेर लिया जाय तो बहुतही अच्छा हो। दूतों के ये वचन जैचन्द ने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार किए और कन्ह कमधुज्ज को बुलाकर आज्ञा दी कि वह तत्तार खा की कुमक सेना लेकर पृथ्वीराज को पकड लावे। राजा की ऐसी आज्ञा पाकर कन्ह साठ हजार सेना सहित पृथ्वीराज पर चढ चला।

इस कन्ह की सेना के सिपाहियो ने सब हथियार छिपा कर सौदागरों का भेष धारण किया और जिस जगल में पृथ्वीराज पडा हुआ था उसीके आस पास किसी गाव में वे जा टिके। सायकाल होतेही समस्त सेना की चार टुकडियां हो गई और रात्रि भीजते ही चहुआन सेना को चारों तुगा ने चार तरफ से घेर दबाया। सबसे पहिले धावा करने वाला वाजिद खा था। इस तरफ कैमास इस दिन पहरे पर था। वाजिद ने किनारे किनारे चुपके से आकर पृथ्वीराज की कुमक सेना का मार करना शुरू कर दिया। इस अनायास आपत्ति से घबडा कर सब हिन्दू सैनिक तितर बितर होने लगे परन्तु सामन्त सहसी ने राजा को न छोडा। निड्डुरराय, जामनराय, राय तूंअर, नरसिंह दाहमा, कैमास, रामराय बड गुज्जर आदि सामन्तों ने अतुलित पराक्रम करके राजा पृथ्वीराज को बेदाग बचा लिया और पग सेना को हराकर हटा दिया।

यह समाचार सुनकर जैचन्द ने सुमन्त को सब फौज जुटाने की आज्ञा दी और कहा कि सब से पहिले विषम विष के मूल का ही नाश करना उचित है—कहा है—"न रहे बास न बाजे बॉसुरी" इसपर सुमन्त विनीत भाव से बोला कि महाराज इस समय दूर दूर के सब राजा लोग उपस्थित है इस लिये ऐसा सु अवसर न चूककर स्वयबर कर देना ही उचित है फिर शत्रुओं का सहार करना तो अपने वश की बात है। यह बात जैचद को भी भा गई और उसने उसी समय रानी जुन्हाई के पास जाकर अपना अभिप्राय कह सुनाया और इस विषय में उसका भी उचित मत लिया।

जैचन्द ने रानी जुन्हाई की जबानी संयोगिता का सब हाल सुन तो लिया; परन्तु विमाता भाव के विचार से उसपर विश्वास न किया। इधर दूतियों को बुलाकर उसने आज्ञा दी कि वे संयोगिता के पास जाकर उसका मत लें और उसकी जिद छुडावें। जैचन्द ने जिस दूती को सयोगिता के पास प्रेषित किया था वह साम, दाम, दड, भेद, नीति के सब अंगों में दक्ष समयानुसार विचारमय चतुरता पूर्वक उचित वचन उच्चार करने वाली मनहरण मूर्ति साक्षात मेनिका के समान सुन्दर थी। हाव भाव कटाक्ष कला चातुरी और तरह वजह में तो मुनि जनों के मन को मोह लेने वाली थी। उसकी स्वाभाविक चचलता और चातुरी मय चाल ढाल तो चतुरों के चित्त में चुभने के लिये मानो मनमित्र की बर्छी थी। कलकठ से मधुरस्वर उच्चारण कर अच्छे अच्छे वीरपुरुषों का धैर्य्य हरती और श्रीखड समान मीठे मुख स्वास से वायु मडल को प्रसन्नतामय कर देने

---

(१) नहीं समझने का जाहर।

वाली थी। और भी नाना प्रकार के फरफंद दंद फंद एवं छलछंद करके मूर्छित काम को जगाने वाली थी। मौनधारी मुनियों को हँसाना, विषम व्रतधारी जटिल योगियों का तप नसाना तो उस दूती के बाएं हाथ का खेल था। ऐसी चतुरा चरी संयोगिता के चित्त से अचल व्रत को चलायमान करने के लिये चुप चाप चलती हुई रनिवास में पहुंची।

दूती को देख कर संयोगिता ने उससे सहज स्वभाव परन्तु सादर पूछा कि मेरे पिताजी की क्या इच्छा है और तुम लोग मेरे पास क्या जुटी हो। संयोगिता के ऐसे वचन सुनकर दूती ने कहा कि आपके पिताजी ने आपके स्वयम्बर की सामग्री रची है इस समय पंगराज के दरबार में देश देश के राजा लोग हाजिर हैं उनमे से हे कुमारी! आप किस भाग्यवान् के गले में जैमाल मेलेंगी?

यह सुन, संयोगिता की सेन पाकर, उसकी सखी उस सहचरी दूतिका से बोली "अरी बहिन, कैसी बेसमझ बूझ की बातें करती है। मद के मतवारे को स्पर्श कर गंगा का गुण गान करना, बांझ के साम्हने पुत्र मुख का सुनाना और बहिरे के आगे ज्ञान बखान करना न जाने कौनसी बुद्धिमानी है। देखो! संयोगिता वय:प्राप्त है उससे ऐसी छिछोरी बातें न कर।" संयोगिता भी बोल उठी "जो राजा मेरे पिता का लोन खाकर उसके बँधुआ बन चुके वे मेरे वर बनने योग्य क्योंकर कहे जा सकते हैं। री सहचरी तू दासी होकर कुलीनों की लीक को क्या जाने? सुन! वे लोग जो मेरे पिता को माता पिता समान मानते हैं क्या धर्म्म के नाते मेरे भाई न हुए! या तो मेरा पाणि ग्रहण पृथ्वीराज से होगा या मैं गंगा में निमग्न हो मरूंगी।"

संयोगिता का ऐसा हाल जानकर जैचन्द का जिगर जल उठा। वह मन में सोचने लगा कि मैं जब बरबस अन्य वर से ब्याह दूंगा, तब क्या? परन्तु फिर कुछ सोचकर उसने संयोगिता की धा को बुला कर कहा कि तू जाकर बेटी को समझा और उसका हठ दूर कर।

जब धा संयोगिता के पास पहुंची तो संयोगिता उससे बोली, मैं तुम बडे बूढों के साम्हने कहती सकुचती हूं परन्तु कुसमय पाकर कहना पड़ता है। मैंने पृथ्वीराज से पाणिग्रहण कराना विचारा है। इसपर दाई बोली "बेटा! कैसी बौरी हुई है!! जिसके लिये माता पिता बरजते हैं, जिसके खरे खोटे की परख नहीं उससे सहसा सम्बन्ध स्वीकार करना कैसा? मेरी सीख मानो और मन में समझ लो।" यह सुनकर संयोगिता ने प्रत्युत्तर दिया "क्या कहती हो" चामीकर की चमक और चन्दन की सुगन्ध ही परख है। जिस चहुआन की चरचा चतुर्दिक चरचराटे सी चल रही है उसका परिचय क्या? यह सुन कर सहचरी बोली तू राजकुमारी है और वह लुहार कुल मे उत्पन्न है सो भी तो सोच? यह सुन कर संयोगिता बोली सुन "वह वह लुहार है? जिसने शंकर गढ़ खड़ा जला दिया, जिसकी तलवार ने सारा यज्ञ बिगार दिया, जिसने सांड़सी के युद्ध में भोला भीम का बध किया और और भी जहा जहा काम पड़ा तहा उसने आरनी की आग होकर शत्रु समूह को भस्मसी कर दिया, जिससे अजमेर मे धुंआ हुआ और मंडोवर मे लौ लपटी, मोरारी आदि जिसकी लपट में लिपटे और रनथभ और कालिंजर जिस की ज्वाला से जल गए। अब उसी की चहुआन कृशान रूपी अग्नि गोरी रूपी बडे को पका रही है*" उसकी सखी बोली कि समस्त मरहट्टे नीमच बैराग़र कर्नाट कोंकन आधा मालवा देश जिसने निज बाहु बल

(१) चौड़े मट्टे खैर बरगद की लकड़ी का एक टुकड़ा होता है। जिसपर एक खड़ी लकड़ी मथने से आग निकलती है। पहिले समय में क्षत्रिय लोग इसी आरनी की आग से काम लेते थे अब भी यज्ञादि के लिये आरनी से अग्नि उठाई जाती है॥

* यहां यह बात विचार करने की है कि कुआं खुदने से पहले में जल भर कर आग बुझाई जाती है।

से दबालिया और शाह शहाबुद्दीन को जिसने बिन प्रयास पकड पकड कर छोड दिया है वही पृथ्वीराज संयोगिता का वर होने योग्य है न कि पगराज के अनुचर अन्य राजा लोग।

सयोगिता पुन· बोली कि किसी की सिखावन या आग्रह से मै पृथ्वीराज को कैसे भूल जाऊ! यह कहते हुए उसकी आखो से आंसू निकल पडे। अपना प्रण, जैचन्द का हठ और सखी सहचरियों के समझाने बुझाने पर विचार करने से सयोगिता की जो दशा थी वह बड़ी ही बिलक्षण और विचारनीय थी। क्रोध के कारण उसके आरक्त नेत्रों से जो दो चार जल कण गिरे वे ऐसे भले मालूम होते थे मानों चन्द्रमा को अमृत कुड में पखाने से उसकी कलक कालिमा निकल पड़ी हो। सयोगिता का यह हाल देख कर सहचरी तो चुप हो गई पर सयोगिता सखियों से बोली कि मनुष्य जीवन में बात की बात ही सब कुछ है। यदि बात गई तो जीना किस काम का इस लिये तू मुझे ऐसा उपाय बतला कि जिसमें मेरी बात न बिगडे। यह सुन कर सखी बोली कि चढती जवानी में जवान प्रीतम से मिलना ही सलाह है। जोवन की मजेज ढर जाने पर फिर संसार का सुख कहा!! यह सुन कर सयोगिता बोली चलो चुप रहो। ऐसी बातें उससे करो जो तुम्हारी बराबरी की हों, मै तो तुम्हें तात मात समान समझ कर तुम्हारी लज्जा करती हूं और तुम ऐसी बातें करती हो। इसपर सहचरी ने उत्तर दिया कि यहा तात मात की बात नहीं है, मै सच्च कहती हू यह जवानी आम की सी मंजरी है। चित्त की चोप रूपी कोप एव चतुरता की लहलही ललामी के बीच से उत्पन्न चढती हुई जवानी पकज के पुष्प के समान है जिस पर कादर्प की कोमल प्रभा पडती और रस लोभी प्रेमियो की भौर भौर उडती फिरती है। सो हे सुन्दरी बसन्त ऋतु के समान तेरी जवानी के आलम का यही समय ससार सुख के उपभोग करने का है। इस पर सयोगिता बोली पर सब कुछ है परन्तु इस शरीर में स्वांसा रहते मैं प्यारे पृथ्वीराज के सिवाय दूसरे को न बरूगी! न बरूगी!! मैंने तो अपना मरना निश्चय विचार लिया है! अब तक केवल सभरीनाथ की आशा पर स्वासा चलती है! हिन्दू एव हिन्दुअत्व की हद्द पृथ्वीराज को भूलना भला कैसे हो सकता है? गुरुजनों के प्रत्यक्ष या परोक्ष में जो कुछ है मेरा यही प्रण है। यह सुन कर पुनः सखी बोली अरी राजकुमारी तेरे अग अग में अनग की अवाई से अरविंद की सी अरुनाई आ गई है। चक्रवाक से योवन उठ रहे है और भुजग सी वेणी लटक रही है तेरे सचक्कन सटकारे कारे कारे कच्च चचरीकों की कतार को मात करते है, तेरे पैर के तलवों से रसालपल्लवों की सी लाली झलक मारती है। इस प्रकार तू बसन्त की नवेली वेली बन रही है। तेरा स्वाभाविक चातुरता से मधुर वचन उच्चारण करना तो मधुर मधु से कदापि कम नहीं है। हे सुकुमारी तू पगराज जैचद के घर जन्म पाकर पृथ्वीराज के घर जाना चाहती है, भला विचार तो इसमें कितनी आपत्ति और कितना खून खराबा होगा। इस पर सयोगिता ने पुनः वही बचन कहे "अरी चाहे जो हो। मुझे तो अहिर्निशि सोते जागते उठते बैठते एक मात्र प्राणेश्वर पृथ्वीराज ही प्राणाधार है तुम सब सखी मेरी बात गाठ बाध रक्खो कि जीती जाऊ गी तो जोगनीपति पृथ्वीराज के घर नहीं तो इस घर से मरी निकलूगी।

सयोगिना ने जो कुछ अन्तिम उत्तर दिया वही दूती ने जैचन्द को जा सुनाया, जिसे सुन कर वह गुस्से के मारे लाल हो गया। उसने उसी समय आज्ञा दी कि उसे गगा किनारे के महलों में रख दिया जाय वहीं से पानी में अपनी परछाई देख देख कर रहेगी या वहीं डूब मरेगी। यह कह कर उसने उधर तो संयोगिना को सौ दासियों सहित गगा किनारे के महलों में भेज दिया और इधर पृथ्वीराज को निर्मूल करने का उपाय रचने लगा।

गगा किनारे के मनचाहे महलों में निवास करती

हुई संयोगिता के पास सौ दासियों के सिवाय उस की पाठिका मदनिका ब्राह्मणी भी रहती थी। संयोगिता ने नए महलों में जाकर अन्न खाना छोड केवल पय और पानी के आधार पर रहकर योग साधना से पृथ्वीराज का ध्यान करना आरम्भ किया। ब्राह्मणी ने संयोगिता को सिखावन दी कि सुन– यह प्राण पंखी की तरह अनिस्थिर है अस्तु इसे ब्रह्माड के कमल–चक्र के बीच में स्थिर कर पृथ्वीराज का ध्यान कर। उस कमल चक्र के आठ दल हैं। उसका पूर्व्व दिशावाला दल श्वेत है और उस पर प्राण जाने से शान्त रस की भावना उत्पन्न होती है। आग्नेय का दल लाल और उसका गुण आलस्य और नींद को उपजाना है। दक्षिण दिशा का दल अग्नि शिखा के समान है और वह क्रोध का बीज है। नैऋत का दल नीला और उस पर चित्त जाने से भय का आभास होता है। पश्चिम दिशा का दल श्याम है और उससे हास्य एव अन्य आनन्द प्रमोद की उपज जानो। वायव्य कोण के दल का रग आकाश के समान है और उस पर चित्त जाने से उच्चाट चित्त एव चिन्ता उत्पन्न होती है। उत्तर दिशा का दल पीला है और उसमें नाना भाति के भोग विलास और शृगार बनाव की वासना बसती है। ईशान दिशा का दल गौर वर्ण है और वहा पर लज्जा और शका की समाधि समझनी चाहिए। अस्तु इन सबको छोड़ कर इनके बीच स्थान अर्थात् एक मध्य में ध्यान रख कर उपासना करने से सर्वसिद्धि होती है और कुत्सित प्रपञ्चो का सर्वनाश होता है।



हांसीपुर प्रथम युद्ध ।

(एक्यावनवां समय ।)

जैचन्द की आज्ञानुसार कन्नौज राज्य की फौज दिल्लीपति को दमन करने के लिये बराबर घात में फिरा करती थी । पृथ्वीराज के यज्ञ विध्वंस करने पश्चात् कन्नौज की फौज ने दिल्ली की राज्य सीमा मे उपद्रव मचाते हुए बहुत सी भूमि दबा ली और दिल्ली से केवल पाच कोस के अन्तर पर कई गाव लूट लिए। इस पर पृथ्वीराज ने सब सामन्तो से सलाह कर निश्चय किया कि दस सामन्त तो हासीपुर मे शाही सरहद की नाकेबदी पर रक्खे जाय और दस सामन्तो सहित कैमास दिल्ली की गढ रक्षा पर रहे। शेष सामन्तो सहित पृथ्वीराज को शिकार के मिस जगल पकडना उचित है । तदनुसार कन्ह, भीम, पुडीर, सलषसुत, भान, जैत प्रमार, राम राय रघुवसी, कनकराय बड़गुजर, देवकर्ण मोरी, बग्गरी राय, चामड राय इन दस सामन्तों सहित कैमास को दिल्ली में छोड कर पृथ्वीराज मालवे की तरफ चल दिया और कन्नौज राज्य की प्रजा को लूटता मारता हुआ शिकार करने लगा।

हासीपुर से कुछ थोड़ी दूर पर आसीपुर से शाही सरहद का सिलसिला चलता था । हासीपुर के पहाड़ो मे एक बलोच सरदार रहता था । उसने जब दश सामन्तो के सीमा पर आने का समाचार सुना तो शाह शहाबुद्दीन को लिख भेजा कि यहा हासीपुर मे हिन्दुओं का जोर बढ़ता जाता है यदि आज्ञा हो तो यहा के हम सब पहाडी भूमिया भूमियावट दान दे और हासीपुर की भूमि हाथ कर लें । बेगमो के साथ जो फौज आती है उससे तो बहुत कुछ मदत मिलेगी फिर भी यदि थोडी बहुत जरूरत पड़े तो समय पर सहायता दी जाय । जब यह पत्र शहाबुद्दीन के पास पहुचा तो उसने इस पर अपनी सम्मति प्रकाश की परन्तु उसके मत्री ने कहा कि इस समय जो लोग हांसीपुर में है उन्हे साक्षात् चहुआन का बाहुबल समझिए । इस समय पृथ्वीराज और सामन्तों की ऐसी पटती है कि कुछ कहने की नहीं । राजा प्रजा में भी बडा बन है इसके सिवाय हिन्दुस्तान भर मे सर्वत्र इस समय चहुआन की दुहाई फिर रही है । इस लिये बेगमों को सीधे मक्के जाने दीजिए, किसी के कहे में आकर नाहक की छेड़ छाड न कीजिए । निदान शहाबुद्दीन की माता सात सौ बेगमों के साथ मक्के शरीफ को प्रस्थानित हुई, साथ में बहुत से मुसल्मान सर्दारो और सिपाहियों के साथ नुसरत्त खा प्रेषित किया गया ।

इस समय हासीपुर मे नरवाहन नामक एक नागवंसी सरदार सूबेदार था । वीर नरवाहन बडाही बलवान रणकुशल और युद्ध विशारद पुरुष था। परंतु इसे पृथ्वीराज ने बडे मान पान से दिल्ली में अपने साथ रख लिया था और हासीपुर में पाच सामन्तों सहित चामडराय रहता था । समय पाकर शाह के एक सेनानायक ने आसीपुर को दबा लिया था । परन्तु नरवाहन ने अपने ही बल से शाही सेना को हटा कर पुनः वहा पर अपना अधिकार जमा लिया । तब से पृथ्वीराज ने हासीपुर की सुबेदारी का पक्का पट्टा उसी नरवाहन के नाम कर दिया था ।

गजनी से शहाबुद्दीन की माता बडे लाव लशकर की रक्षा मे बहुत सा धन द्रव्य और दास दासी लेकर मक्के को रवाना हुई । जब उसकी सवारी दिल्ली राज्य की हद के पास पहुची तो बलोच पहारी स्वय सामन्तों के पास हासीपुर को गया और उनसे उसने कहा कि शाही बेगमें मक्के को जा रही हैं उनके साथ में खुरसानखा स्वय है पर जितना रास्ता आपकी सरहद में पड़ता है उसमें उनकी रक्षा का जिम्मा

(१) "हासी पुर सामन्त सुनिय बालोच पहारि' यहां पर 'पहारि" शब्द से नाम से अभिप्राय नहीं है वरन पहाड़ी से पहाड़ का रहने वाला बोध होता है ।

आप लोगों पर है। इस पर सब सामन्तो ने विचारा कि बेगमों का डेरा लूट लिया जाय परन्तु रामराय रघुवंसी ने कहा कि इस समय बली पज्जूनराय तो नागौर मे है और सब सामन्त राजा के साथ है इस समय ठाले बैठे, फिर भी राजा की आज्ञा बिना, वृथा उपद्रव उठाना अच्छा नहीं। इस पर और तो सब चुप रहे पर चामंडराय कब मानने वाला था उसने उलटा रामराय को मूर्ख बना दिया और सब को अपनी बातों में गास लिया। पज्जून राय को भी इस बात की खबर लगी और उसने भी मना कर भेजा, परन्तु हांसीपुर की सामन्त मण्डली ने किसी की एक न सुनी और किले के मालिक बड़गुज्जर से पूछे बिनाही चुपचाप कूच करके बेगमों के डेरे पर डाका जा डाला।

शाही बेगमों का डेरा नदी के किनारे एक उत्तम उपबन में पड़ा हुआ था। आधी रात के ऊपर जब सामन्तों ने छाप मारा तो बेगमों के साथी सिपाही क्या पीनस लेने वाले कहार तक भाग गए बेगमों को अकेला पाकर सामन्तों ने उनकी बुरी दुर्दशा की। यहा तक कि उनके वस्त्र तक खींच लिए। उस समय वे बेगमें बोलीं अरे सामन्तो 'अधर्म न करो। यद्यपि हमारे तुम्हारे भिन्न भिन्न दो दीन हैं पर दोनों का मालिक एकही खुदा है। दुनिया मे खुदा से जुदा है क्या? परन्तु प्रमादी पुरुषों को भेद देख पडता है। ऐसा नहीं है कि तुम हमको दुःख देने से स्वर्ग पा जाओ। सुकर्म का अच्छा और कुकर्म का बुरा हिन्दू मुसलमान दोनों दीनों को एक सा फल मिलता है। इस दुनिया में जो ओछी बुद्धि के होते हैं जिनकी रीति नीति ओछी होती है वेही लोग ओछे कहाते है वे जरा जरा सी बातों पर जमाने भर में टकराते है धक्के खाते फिरते है और अन्त में (संसार सागर में) तिनके की तरह उतराते हुए बह कर मरजाते है, परन्तु जो लोग धीर गंभीर होते हैं वे ही बड़े कहाते है और संसार में कमाल ऐसा अशरत और यश पाते है। सो हे चामण्डराय! ऐसा नीच विचार न कर कि दूसरे दीन को दुःख देने से तू सुख पा जायगा। परन्तु चामण्डराय ने एक न सुनी बेगमों के डेरे डोरे करके लूट लिए और तब वह सब सामन्तों सहित हांसीपुर को लौट आया। उधर अधमरी होकर बेगमों ने शाह के साम्हने सब दुःख रो रो कर पुकार मारी।

बेगमों ने शहाबुद्दीन से कहा "ऐ सुलतान आपको परवरदिगार ने शहंशाह का रुतबा अता फरमाया है। तुझे और तेरे ताबेदारों को माकूल मर्दुमी और कुव्वत हासिल है, मगर लानत है तेरे ताबेदारों को जो खाने के अपने और अचैने के पराए हैं, जिनको न तो नमक का ख्याल है न दीनदारी की मलाल है। हुक्मउदूल नमकहराम नौकरों का न होनाही भला है!! अफसोस जिस मालिक की आन पर नौकर जान न दे वह मालिक भी हुआ न हुआ सा है। आपके जीते जी हमारी (तुम्हारी स्त्रियों की) ऐसी बेइज्जती होना कितनी शरम की बात है।" उसकी मा भी बोली ऐ नूरचश्म लख्तेजिगर बर्खुर्दार बच्चे मैंने तुझे नौ महीने हमल मे रखकर जिस तरह से परवरिश की है वो मै ही जानती हू—हमल के वक्त औरत को क्या तकलीफ होती है सो कोई क्या जाने, जाड़े में जाड़ों गरमी मे गरमी और मौसिम बारिश मे सैकड़ों फितूर बर्दाश्त करने के बाद बच्चा जना जाता है। ऐसी अजब अजीज मा सी चीज से जो औलाद नफरत करती है उसे जमीन पर क्या दोजख मे भी जगह नहीं दी जाती। ऐसे अहसान-फरामोश मर्द का मुँह देखना भी मुनासिब नहीं है। यह कहते हुए उस वृद्धा की आँखों मे आसू भर आए। माता की ऐसी दीन हीन दशा देख कर शहाबुद्दीन से न रहा गया। उसके क्रोध से दोनों नेत्र अंगारे से लाल हो गए, होंठ फड़कने लगे और धुक धुक धक धक धड़कने लगी। उसने उसी समय अपने सब सलाहकार मुसाहिब और मन्त्रियों को बुलाकर सैनिक साज सामान सजने की आज्ञा दी और मंत्री तत्तारखां को सहायकों के नाम परवाने भेजकर उनकी कुमक जुटाने को कहा। शाह की

ऐसी आज्ञा होतेही बात की बात में सब सेना इकट्ठी होगई। तब तत्तार खां ने तख्त के सामने जाकर दाहने पैर के अंगूठे के बल खड़े होकर कोरनिस करके अर्ज किया कि इर्शाद बजा लाया गया। फौज हाजिर है।

शहाबुद्दीन ने अपने मुसल्मान सर्दारों को खिताब दे और सिरोपाव पहिना कर कहा कि जो हासीपुर को लूट कर अपने कब्जे में करे वही मेरी पूर्ण मेहरबानी का हकदार होगा। इस पर सब सर्दारों की एक गुप्त गोष्ठी होना निर्धारित हुआ। निदान उस मजलिस मे शाह ने कहा कि दुश्मन को जेर कर अम्माजान के दिल को राहत देने के लिये जो कुछ मुनासिब हो करना चाहिए। तब खुरासान खां बोला कि बुद्धिमान तत्तार खा जो कहे सो सलाह ठीक। यह सुन कर तत्तार खा बोला कि पहिले यहा से कुछ फौज भेजी जाय जो चढ़ीसवारी हासीपुर को फतह करे और फिर बढ कर दिल्ली पर धावा करे। दिल्ली पर धावा होने के समय शाह का भी शामिल होना शोभा देगा। यह सुन कर शाह बोला 'रे बेवकूफ तत्तार तू क्या बकता है। मै कई बार पकडा गया और तुम लोग भाग भाग आए इसी से ऐसा कहते हो। मै अब की बार कुरान की कसम खा कर कहता हू कि दुश्मनों को नेस्तनाबूद किए बिना न लौटूगा। यह सुन कर तत्तारखा ने उत्तर दिया कि यह कैसा हुक्म होता है हासी की सत्यानाशी करदू और सामन्तों को पकड कर शाह सलामत के साम्हने सात सलामें कराऊ तो मेरा नाम तत्तार खा, नहीं तो नहीं!!! युद्ध में जुटने पर अपना उनका जी एक कर दूगा। तब तक बलोच पहारी भी आ पहुचा और उसने अर्ज किया कि हासी की मुहिम के लिये मुझे हुक्म मिले। उसके प्रस्ताव को शाह ने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया और उसे अपने हाथ से तलवार बँधा कर सब सेना का सिरे सरदार स्थापित किया और तत्तार खा और खिजुरखा को उसकी सहायता के लिये दिया। इस प्रकार सारी सेना चार तुगो मे हो कर जुमेरात (बृहस्पतिवार) को हांसीपुर पर रवाना हुई।

जब शाही फौज सिन्धु नदी को पार करके पहाड़ों की तराई में जा पहुंची, तब वहा से गुप्त चर रवाना हुए। गजनीं से जो चार फौजें चली थी वे इस प्रकार थीं। पहिली सेना का नायक बलोची पहारी था। दो सेनाए जो कि बराबर चलती थीं उन में से एक तत्तार खा के और दूसरी खुरासान खा के ताबे थी। चौथी अनी का स्वामी शहाबुद्दीन आप था। इस समय शाही सेना के सब सिपाही और सर्दार बडे जोश में थे। हर एक का हौसिला चढा बढ़ा हुआ था। जब शाह मीर जमरोज की शरहद मे आया तो वह भी आगे बढ कर शाह से आमिला और सेना सहित शाही लश्कर में शामिल होगया। यहां पर पहाडी रास्तों से रसद आदि का प्रबन्ध करके सब फौज आगे चली और शहाबुद्दीन स्वय सब सेना का सेनानायक हुआ। यह लश्कर दिन दूने रात चौगुने पड़ाव करता हुआ हासीपुर से दस कोस के ऊपर आगया। तब सामन्तों को खबर हुई। परन्तु समाचार पातेही चामुण्डराय ने चट से किले की मोरचे बन्दी करली। मुसल्मानी सेना का बल इस समय बढ़ा हुआ था। यवन सेना की चारो तुगों ने किले को बीच मे देकर सब नाके बाध लिए थे किले में रसद बरदास पहुचने के सब मौके अच्छी तरह बद थे। यहां तक कि किले वाला कोई बाहर के किसी आदमी को सन्देसा तक न पहुँचा सकता था। मुसल्मानी सेना में इस समय हब्सी रूमी खिलची (खिलजी) इलच, खुरेस, बुखारी, मग्गद, सैलानी, सेख, चगत्ताई, पीर, तुरक, बलोच आदि भाति भाति के मुसल्मान जमा थे। एक दिन निस्तब्ध पड़े रहने पर जब सामन्तों की तरफ से कोई सीधा सदेसा न पाया तब उन्होंने व्यूह बद्ध होकर किले पर चारों ओर से आग बर्साना आरम्भ किया। किले से भी उसका जवाब दिया गया। दोनों ओर से खूब आग बरसी, पर किसी ने चिकस्त न खाई। अन्त में कुछ थोडासा दिन शेष रह गया और जब सामन्तों ने जान लिया कि किले में रहकर जान दे

(१) जमीन चूमकर तीन बार सलाम करने को कोरनिस कहते हैं।

देने के सिवाय और कोई यत्न नहीं हो सकता, तब सब ने किले से निकलकर भागना चाहा, परन्तु रामराय ने कहा कि ऐसा करना ठीक नहीं, यद्यपि हमारा जोर कमजोर है परन्तु तारीफ इसी में है कि अब की बार फिर भी बादशाह को बाध लिया जाय। वक्त पड़ने पर हिम्मत न हारना चाहिए। लोहाना भी बोला "हा ऐसाही करो जिसमें सुकीर्ति विस्तृत हो; अपकीर्ति का काम न करना चाहिए" चामडराय बोला माना कि शाही सेना का बल बढ़ा चढ़ा है और हमारा जोर कम है परन्तु कहा है कि 'सड़ी शिकार दाल को पड़ेगी ही'। हम लोग मार तलवारों सारी मुसल्मान सेना छिन्न भिन्न कर देंगे। इस लिये सबेरे मैदान में बढ़ कर हाथ किए जांय। उस दिन दिन के शेषांश भर युद्ध होता रहा सायकाल के समय दोनों सेनाए विश्राम करती रहीं।

प्रातःकाल होतेही अचलेस खीची, गोयदराय, महनसिंह, नरवाहन, नरसिंह समरसी, दोनों भाई महनंग मोरी, देवकर्न सॉखुलासूर, भीमपुडीर, जैतप्रमार, बग्गरी, राय, चामड राय और सब का सर्दार रामराय रघुबसी आदि सामंत कील काटे से सन्नद्ध हो युद्ध में प्रवृत्त हुए। इधर से राजपूत उधर से मुसल्मान सिपाही दोनों में परस्पर मार मच उठी। दोनों दलों में खूब घमासान युद्ध हुआ, रक्त की नदी वह निकली और लोथों के ढेर लग गए। कोई कोई सूरमा पैर कट जाने पर केवल धड मे तलवार लिए लुढ़कता फिरता ऐसा मालूम होता था मानो कोई बौना भीमकाय होकर कहर कर रहा हो। जिन के शरीर में सनाह भेद कर घाव लगे थे वे तो ऐसे मालूम होते थे मानो सफेद चद्दर पर रंगरेज ने महावर के टो ढरे हों इसी प्रकार मार होते होते तत्तार खा की अनी पिछल पडी और सामन्तों की जीत रही। इस युद्ध में शाही सेना का करीब आधा हिस्सा खेत रहा और १०० हाथी मारे गए और सामन्तों की तरफ के केवल २० सिपाही मारे गए, परन्तु शाही सेना मोरचे पर से करीब २५० कदम पीछे हट गई।

दूसरे दिन यवन सेना की ओर से आलीलखा ने अग्रसर होकर आक्रमण किया। उसने कहा कि मै शाही सरहद का प्रकोट हू, मेरे रहते कौन ऐसा है जो शाही जमीन पर दखल कर सके। चहुआन सेना के सामन्त तो विचारे हैं क्या चीज! एक बार जम के भी छक्के छुडा दू तो मेरा नाम!" फिर भी लोहा बजा, पहिली ही उचौनी में सामन्तों ने आलील खा को पाच डोरी पीछे हटा दिया, परन्तु उसने फिर से जोर बाध कर धावा किया और डॅट कर हाथ फटकारे परन्तु अन्त को सामन्त मराडली ने समस्त शाही सेना बिडार दी और हासी का किला बेदाग बचा लिया।



द्वितीय हांसी युद्ध।

[बावनवां समय।]

निदान दूत ने सुल्तान शहाबुद्दीन के सम्मुख जाकर अर्ज किया कि हुजूर हिन्दुओ ने हमारी सब फौज हरा दी और सब रखत बखत लूट लिया है। यह सुनतेही शहाबुद्दीन के नेत्र आरक्त होगए। उसने दीन इसलाम के आदि पैगम्बर महम्मद साहब की दुहाइ देकर जगी तैय्यारी होने की आज्ञा दी। हुक्म होतेही रूमी, हेरेवी, परेवी, भष्वर, गष्वर समरकन्दी, कासकदी, बलोच, तकी तुर्की, मकराव, उजबक आदि नाना भाति के मुसलमान सिपाही सज कर दुरुस्त होगए। इनके सिवाय अराकान के पहाडी लोग भी शाही लश्कर में आजुटे। इन लोगों का रग धूमला और सिर पर बहुत कम वाल थे। वाज वाज लोगों के तो घोडे के से मुँह और सूप से कान थे वे प्राय रोज दो दो दुबे खाते थे। वे लोग मल्लयुद्ध में तो पहाड के समान अटल थे ही साथ ही इसके बाण चलाने में भी विलक्षण दक्ष थे। उनके धनुष पर कई टक की प्रत्यचा चढती और प्रत्येक सौ सौ तीर वाले दो दो तरकस कसे हुए थे। वे लोग बाण की अनी पर बाण मार कर उसे मोड देनेवाले थे, फिर भला उनसे आसमान मे उडता हुआ पक्षी तो बचनाही क्यों। ऐसे सिपाहियो का बडा भारी लश्कर जोडकर शाह ने हांसीपुर पर आक्रमण किया। उसने उसी पहिले पडाव से सब सेना को आठ हिस्सो मे बांट कर आठों दिशाओं को रवाना कर दिया और केवल पचास हजार सवार और कुछ हाथियो के साथ आप स्वय सामहने से हांसीपुर पहुंचा।

शहाबुद्दीन ने दूत द्वारा किले मे कहला भेजा कि या तो इस वक्त लोह लो, या खिडकी के रास्ते से निकल जाओ। शाह का ऐसा सन्देसा पाकर सामन्तों ने परस्पर सलाह की, कि अब क्या करना चाहिए? इस पर किसी किसी ने कहा कि निकल चलना सलाह है। दूसरे की भूमि पर मरने में कौन सी भलाई है, सो नही समझ में आता। इस पर पज्जून राय कूरम बोला, भाइ हम अपना पराया कुछ नहीं जानते हमारा काम तो मरना मारना है! 'कल्ह नहीं तो आज ही सही,' एक न एक दिन मरना अवश्य है फिर क्यों अपकीर्ति लेकर नाम को कलकित करें। निदान चामण्डराय, जैतसी, रामराय पज्जून, प्रसगराय, चन्दपुराडीर, महनग मोरी, देवराव बग्गरी आदि सामन्त लड़ने पर मुस्तैद होगए परन्तु रात्रि होते शाही सेना किले के चारों तरफ अधिक उमड पडी। यह देखकर सब सामन्तों का मत पलट गया, परन्तु एक मात्र देवराव बग्गरी ने हिम्मत न हारी। और तो सब लोग रात्रि को निकल भागे केवल बग्गरी वीर ने सारी रात भगवती के भजन में बिताई। नागौर से जो सामन्त लोग इस समय सहायतार्थ आए थे वे भी भागने में सहमत हो गए, परन्तु वे लोग बाहर थे इसलिये उन्होंने दक्षिण की तरफ से शाही सिपाहियों को काट छाट कर रास्ता साफ कर दिया जिससे किले के सामन्तों को भागने में और भी सुबीता पडा।

सच है, जिसके मुँह पर पानी नहीं रहता और जो मरने से डरता है वही ऐसे मौके से निकलता है। चामण्डराय, सावलासूर, गोयन्दराय, भोंहा चन्देल आदि सब सामन्त निकल भागे परन्तु देवराव बग्गरी न निकला! इस समय जो लोग किले से निकल भागे वे वास्तव मे निकलने वाले नहीं थे, परन्तु होनहार ऐसी होती है कि उस वक्त सब अक्क बक्क भूल जाती है। इसलिये किसी को कायर कहना वृथा है, क्यो कि होनहार प्रबल होती है। रामचन्द्र का स्वर्णमृग के पीछे जाना, भरत का हनुमान जी पर बाण चलाना, विक्रम का जीव रक्षा के लिये कौवे का मांस खाना, इन्द्र का अहिल्या के साथ कुकर्म करना, नल का दमयन्ती को त्यागना, आदि सब घटनाओं पर

---

(१) इस समय यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि यह दुर्ग न [illegible] था। परन्तु अनुमान है कि यह सिन्ध पार [illegible] पर रहा हुआ था क्योंकि सिन्ध नदी तक [illegible] [illegible] बाद फिर बादशाह का [illegible] नहीं किया गया।

मूल होती ही है। फिर किसी को क्या दोष दें !

प्रातः काल होतेही शाही सेना का आक्रमण हुआ। किले में देवराव बग्गरी के साथ कल्हन, कमधुज्ज, साखुला सूर और अचलेस खीची ये सामन्त और भी थे। प्रातः काल होतेही तत्तार खा ने शपथ कर के कहा कि अब दम की दम में किला खाली कराकर छोड़ता हूं। यह कहकर उसने किले पर चारों तरफ से एक बारगी हल्ला बोलने की आज्ञा दी। हुक्म पातेही, मुसल्मान सिपाही चारों ओर से अल्लाह अल्लाह कहते हुए झुक पड़े और किले के ऊपर अग्नि वर्षा करने लगे। इधर से सामन्त भी वार बचाने के लिये उद्यत हुए बारह दिन पर्य्यन्त बराबर लड़ाई होती रही और देवराव बग्गरी अकेला वार बचाता रहा। जब शाह ने देखा कि इस तरह से पेश नहीं पा सकते, तब उसने समस्त सेना के दो दल कर दिए। एक दल लड़ता तो दूसरा विश्राम करता और जब वह श्रम से श्रान्त होता तो दूसरा लोह लेता। इस प्रकार से अब रात्रि दिन बराबर युद्ध जारी रहने लगा। शाही सेना के व्यूह में सब से आगे हाथी लगाए गए और तिन के पीछे पैदल दल चला। होते होते किले के एक हजार सिपाही सांखुला सूर और अल्हन कुमार इन सामन्तों के मारे जाने पर शाही सेना किले में धस पड़ी, तब शेष सिपाहियों सहित बग्गरी राव तलवार से युद्ध करने लगा। तलवार के युद्ध में तो राजपूत वीर एकही थे। उन्होंने मुसल्मान सिपाहियों को काट काट कर अंटब लगा दिए। इधर से ये उधर से वे, जब दोनों एक साथ एक दूसरे पर वार करते तो दोनों गले मिले से रह जाते थे, मानो दोनों ने एक दूसरे की वीरता का पूरा परिचय पाकर भुज-भर भेंट की हो। गीध और चील्ह बड़े बड़े मांस के लोथड़ों को उठा करके आसमान में ले जाते और वहां परस्पर लड़े मरते थे। जवानों के सहजोर वज्र से सीने पर कटार क्या लगती थी मानों प्राण पखेरू के लिये माया मोह रूप पिंजर से निकल जाने के लिये स्वर्ग का रास्ता बनाया जाता था। इसी मारा मार में जब देवराव बग्गरी मारा गया तो अप्सराएं स्थभित होगईं और सूर्य्य के रथ का चक्र अचल होगया। देवांगनाएँ सोचती ही रहगईं और शिवजी ने उसका मुंड रुण्डमाल में पोह लिया। देवराव बग्गरी के शरीर में जब तलवार के चौंआलीस गहरे घाव लग चुके और शरीर से शीस भी अलग जा छटका तब रुण्ड ने कटार से वार किए और तिल तिल होकर मरते तक शत्रु सेना के सहस्रों सिपाही मार दिए। इस प्रकार से भूनिंगराय का पुत्र बग्गरी राय स्वर्गवासी हुआ और उसके साथी भी रानिंग राव दोनों भाई, मोरी सर्दार, साखुला सूर, नाराइन, पज्जूनराय का पुत्र पचाइन, रघुवंसराय, आदि सब लोग मारे गए। धन्य है वीर बग्गरी को! जैसी करनी उसने की वैसी न तो पहिले किसी ने की थी न अब कोई करेगा। यदि कोई वैसा हो तो कर दिखावे। आलीलखा ने किले पर शाही निशान रोप दिया। केवल सौ राजपूत सिपाही बचे थे सो दिल्ली को चल दिए।

चन्द बरदाई कहता है इधर तो यह हाल हो रहा था, उधर एक दिन राजा पृथ्वीराज ने स्वप्न में देखा कि हांसीपुर की भूमि धवल वस्त्र धारण किए हुए उसके पास आई और बोली कि आज दो दिन से मेरे किले पर बराबर गोले गोली चल रहे हैं। आक्रमण कर्त्ताओं के आतंक में आकर सामन्तों ने भी किला छोड़ दिया, परन्तु मैं न भागी। इस पर पृथ्वीराज ने पूछा कि तूं तब भी क्यों न भागी। उसने उत्तर दिया कि वह सामन्त जिसकी मैं बाह बसी थी स्त्री की तरह भाग निकला; परन्तु साखुला सूर और देवराव बग्गरी ने यही कहा कि जिसे जाना हो जाओ हम तो जीते जी राजपूत बाने की लाज न जाने देंगे। तब मैं उन्हीं दोनों की आखें देख रही थी। परन्तु जब वे भी समाप्त होगए, तब म्लेच्छों ने मुझे अपना लिया। इस वीतक की बात विचार कर चहुआन के चित्त की विचित्र दशा होगई। स्वामिधर्मी सामन्तों की मृत्यु पर तो वह पश्चाताप करता और

भुक्त भूमि का जाना जानकर क्रोध की ज्वाला में जल जाता था ; परन्तु भागतों के हावभाव का आभास होतेही उसे हँसी आती थी। उसने उसी समय सामन्त-शिरोमणि कैमास को बुलाकर कहा "इस समय हासीपुर की भूमि शत्रुओं से ऐसी नठी हुई है जैसे बावली * के वक्त हाथी, सोच के सबब से स्नेह, और अच्छे गुणी के संमुख अनूठी विद्याए नठ जाती हैं। इसलिये कुछ ऐसी सलाह विचारो जिसमें हांसी का उद्धार हो। तब कैमास ने उत्तर दिया कि इससे तो ऐसा मालूम होता है कि यह कोई दैवगति है, क्योंकि ये सामन्त सहजही भागने वाले नहीं हैं ! कैमास ने कहा कि महाराज इस समय रावल समरसीजी के पास सहायतार्थ सन्देसा भेजना उचित है, उनके आजुड़ने से सहजही काम बन जायगा। तदनुसार एक दूत चित्तौर को भेजा गया। उस दूत के मुख से ऐसे समाचार सुनते ही समरसीजी हासीपुर को चलदिए।

तबतक हासीपुर से भागे हुए सामन्त लोग भी दिल्ली आ पहुचे। उन्हे पृथ्वीराज ने अपने पास बुलाया और सब से सादर गले मिल कर कहा "भाइ ! हमारा तो बल भरोसा सब आपही लोग हो। बीती बात का विचार न करो, ईश्वरेच्छा से जो होनी थी सो हुई।" तब वे सामत बोले अन्नदाता बात तो यों है कि जिस राजपूत के जीते जी जबर्दस्ती जमीन जीत ली जाय उसका जीवित रहना भी मरे के समान है। इस पर पृथ्वीराज बोला इस से क्या ? 'समय करे सो कोई न करे,' एक समय सुग्रीव स्त्री की रक्षा न कर सका, अर्जुन के साम्हने द्रोपदी का चीर खींचा गया, श्रीकृष्ण कालयवन के साम्हने से भाग निकले, और पाडवों को बनवास भोगना पड़ा। सुनो हे सामन्तो तुम लोग अजेय और महजोर हो, इस लिये ऐसा करो जिसमें बात रहे। यह सुनते ही सामन्त लोग लाल लाल आंखें करके बोले तो बस "अब विलब केहि काज" कूच कीजिए और चढी सवारी धर लीजिए। निदान पेशखेमा लेकर प्रधान और खवास तो उसी दम रवाना किए गए और पचमी को सामन्त मडली सहित पृथ्वीराज ने कूचकिया। पृथ्वीराज धनुषबाण बाधे हुए भारथ के दल में पारथ सा सोहता था। उसके रतनारे नेत्रों में त्रिनेत्र का सा तेज देख पडता था और उसकी भोहों को स्पर्श करती हुई बडी बडी मूछे इन्दु की सी कलाएँ जान पडती थी। सेना समूह के बीच स्थित सभरी नाथ तरैयों के बीच पूनोंकैसा चदा देदीप्यमान होता था। उसके साथी सूर वीर सिपाही अग अग अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित थे, उसके लश्कर के हाथी साक्षात् कज्जल गिरि से और उनके गडस्थलों से झर हुए मद पनार पावस के झरने से जान पड़ते थे। रणवाद्यों का बाजा बद्दर की गरज से कम न था। कहीं जागडा कालिगडा अलापते, कहीं नकीब पदवी कलापते, कहीं बदी विरद गाते और कहीं कवि कवित्त सुनाते हुए ऐसे मालूम होते थे जैसे पावस में मोर और पपीहादि पक्षी बोल रहे हों। घुड़सवारों के नेजों की अनी इतनी घनी थी कि बीच से परेवा पर भी नहीं मार सकता था। कोई कहा तक कहे उस चहुआन सेना के आतक से दसों दिग्पाल सशङ्कित हो उठे और कमठ की पीठ सटपटा उठी।

खबर पाते ही रावल जी तो पृथ्वीराज से भी पहिले चल चुके थे अस्तु वे दिन दूने रात चौगुने पडाव न करते हुए चार पाच नौ दिन में हासीपुर जा पहुचे। साथ में उनके भाई अमर सिंह जी भी थे। जब ततार खा ने रावलजी के आने का समाचार सुना तब मारे खुशी के फूल उठा। रावल समरसिंह जी ततार खा को बहुत खटकते थे अत उन्हें अकेला पाकर ततार की छाती फूल उठी। उसने खुरासान खा की अनी को हरावल में करके तुरन्त ही रावल जी पर हल्ला

(१) यह शब्द कवि ने नहीं लिखा है।

* मतवाला हाथी मैदान में छोड़ दिया जाता है चारों ओर से सवार और सांटमार लोग उसे घेरते हैं वे लोग उसे भाले मार मार मारते हैं और वह उनपर झपटें करता है यह खेल का नाम बावली है यही वही रमना भी बोलते हैं रियासतों में यह खेल अब भी देखने में आता है

बोल दिया । इधर से नाहरराय और अमरसिंह जी ने हरावल का मोरचा लिया । उधर से मुसलमान सेना ने बिसमिल्ला बोला और इधर से अमरसिंह जी ने जै एक लिंगजी कह कर गेटा उठाया । बाग बतलाते ही घोड़ा क्या कंस के सिर का वज्र, आसमान का चील्ह या चिड़िया के सिर पर का बाज हो गया। साथही इसके अमरसिंह की चपला सी चंचल तलवार भी मीर बन्दों को मार मार गिराने लगी। सिपाही सिपाही और सर्दार सर्दार की भी परस्पर ऐसी ठनी कि घना घनी की मार मे परस्पर लोहे की झार से झरती हुई अग्नि बुन्द बर्षा की बहार बतलाती थी। राजपूत सेना ने यवन अनी को आध कोस पछेल दिया। इसी तहर ठेलमेठल रेला पेल युद्ध होते होते अमरसिंह जी की खुरासान खा से ठन गई। बडी देर तक दोनों की बराबरी होती रही अन्त में खुरासान खा के एक हाथ में अमरसिंह जी दो होगए। अमरसिंहजी तो इस असार संसार से चलकर अमरपुरी में जा बसे और यहा कसामसे की रमा मच उठी।

भाई का पतन होते देख रावलजी के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने ऐसी मार की कि सारी यवन सेना क्षणमात्र में जिधर तिधर तीन तेरह हो उठी। सघटित शत्रु सेना को काटते छाँटते हुए रावलजी ने अपने भाई के मारिया खुरासान खां को भी मारलिया। खुरासान खा को खपता हुआ देख, तत्तार खा ने तैश में आकर अपने घोड़े को एड़ लगाई और सिपाहियों को ललकारता, तलवार फटकारता हुआ वह आगे बढ़ा। उसके साथ में पाच सौ तातारी जवान भी तेगा चलाते हुए अग्रसर हुए। इस अवसर पर राजपूत सेना में से पचीस कबन्ध खड़े हुए। समरसिंह इस समय अपनी सेना के बीच में थे। मुसल्मान सेना का ऐसा जोर बढा कि जिसे देख कर समरसिंह जी भी मैदान में आ खड़े हुए। उस समय हिन्दू मुसल्मान दोनों दलों में ऐसी मार म कि आकाश से देखती हुई अप्सराएँ पुष्प वृ करतीं और भूत बेताल ताली दे दे कर नाचते गा नहीं सिहाते थे। समरसिंह जी की सेना के सुबह दो पहर तक केवल १७ सर्दार खेत रहे थे कि त तक पृथ्वीराज भी आपहुंचा। पृथ्वीराज के प चतेही हिन्दू सेना का बल बढगया। इधर से राज पूत सिपाही लम्बे हाथ देते शत्रु सेना में पिल जाते थे उधर से मुसल्मान भी पीछे को पैर दे हराम समझते थे। इस ठसाठसी में घोड़ों की ऐंठदा गरदन नवोढ़ा के घूंघट को मात करती थी। बाने बीर अपनी अपनी पैंज पर ऐसे अटल थे जैसे पनि हारी घड़ा अपने सिर पर के घड़े पर सुरत रखती है ऐसे बीर पुरुषों के कट मरने पर उनकी आत्म चिन्मय ज्योति में इस प्रकार से तन्मय हो जाती जैसे दिये के बुझने पर उसकी ज्योति का पत नहीं पडता। जब कभी टोप फट जाने पर खोपड़ी निकल पडती तो ऐसा मालूम पड़ता मानो चन्द्र का पेट फाड़ कर राहु निकल पडा हो। बख्तर प खाली हाथ पड जाने से धार झरे हुए दुवारे केतकी के पुष्प की पखुरी से नजर आते थे। परन्तु इ समय कायरों की बुरी दशा थी। वे बिचारे दूसरे को मरता देख आप हाथ मोडते हाय हाय करते और झमा खाकर गिर गिर पडते थे।

रावल समरसिंह जी के भाई अमर सिंह जी और उनके खवास दोनो को गहरा घाव लगा था। अमरसिंहजी अब तक जीते थे परन्तु सायकाल होते होते वे चल बसे। और स्वामि सेवी खवास जो अब तक उन्हे कौवे गीधों से बचाए हुए था सो भी निपटा। रावल समरसिंह जी की सेना तो पह लेही से लड रही थी इसी पर सामन्त सेना के आ जाने पर हिन्दू दल की पट लगी। पहिले तो दोनों दलों ने एक मे मिलकर मुसल्मान सेना का मुह मोड़ दिया परन्तु मौका पाकर फिर दोनों दल अलग अलग हो गए और उन्होने यवन सेना को बीच में द लिया। इतने मे सन्ध्या हो गई और दोनों अग्नि

(१) गटा" घोड़े की बाग के उस हिस्से को कहते हैं जहां पर सवार पकड़ता है। उसी के इशारे से घोड़ा चलना, खड़ा होना और लौट फेर करना है।

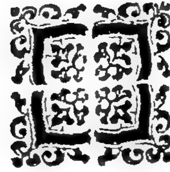
सेनाएं विश्राम करने में तत्पर हुईं। इस युद्ध में तत्तार खा घायल हुआ, खुरासान खेत रहा, छओं भाई हबूसी, बलोच पहारी, महनसिंघ मेर आदि साठ सर्दार मारे पड़े। याकूब खा, मारूफ खा, खूब खां, और तत्तार खा आदि सरदारों ने बड़ी बीरता से युद्ध किया। राजपूत सेना में से महनगराय भट्टी ने विलक्षण बीरता दिखाई।

प्रातः काल प्रभाकर की प्रभा का आभास होतेही प्रत्येक कर्म्म का मानो पुनः सस्कार होता है। चोर चुपके से चल देते है, चकवा चकवी से मिलते हैं, तरुलता पल्लव प्रफुलित हो उठते हैं, जहा तहा भ्रमर भन्नाते हुए भ्रमण करने लग जाते हैं, सौरभित समीर सञ्चालित होती है, और उड़गन अदृष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार और भी जानो। भास्कर भगवान की किरणों की प्रभा पाकर कमल-कली तो मानो सहस्र मुख से मुस्करा उठती है। पूर्व्व दिशा में लालिमा की झलक पड़तेही ससार के कालिमामय कर्म तडाक से कुंठित हो जाते हैं। देवालयों मे आनन्द ध्वनि होने लगती है और पण्डित सुन्दर सीतल जल से स्नान कर पाठ पूजन करने लग जाते है इस प्रकार जगत के जाल रूपी तिमिर को तोडकर एक चक्के के रथ पर सारी पृथ्वी की परिक्रमा करनेवाले जगत के जीवधारी मात्र के प्राणाधार सूर्य्य देव सब का शुभ करते है।

ऐसे सूर्य्य भगावन का उदय होते ही दोनों दल पुन युद्ध के लिये सन्नद्ध होकर रणक्षेत्र में आ उपास्थित हुए। उस समय सेना के बीच में स्थित पृथ्वीराज के मुख पर मध्यान्ह के सूर्य्य की सी प्रभा भासित होती थी। उसके साथी राजपूत वीर भी आतङ्क मे आकर नाना प्रकार के हुंकार हुंकार के शब्द करते हुए कोलाहल मचा रहे थे और क्रोध के मारे उनके नेत्र अंगारे से आरक्त हो रहे थे। इशारा होते ही दोनो दल के असवार पैदल सब लोह की लपट मे लपटने के लिये लपक पड़े। सब से पहिले पृथ्वीराज ने ही यवन हुसैन के एक हाथी को [illegible] से काट दिया। इस समय ऐसा भाव भासित होता था मानो मेघों के बीच बिजली समा गई हो और रक्त के साथ घाव से निकलती हुई तलवार तो कज्जल गिरि से गिरती हुई त्रिवेणी की सी धारा भान होती थी। इस समय पृथ्वीराज भारथ में पारथ सा सुशोभित होता था, और उसका सखा भीमकाय चामंडराय भी भीम से कम न था। उधर से मुसल्मान लोग भी रात्रि भर मत्र सलाह करके और प्रातः काल से कुरान और सीपारे पढ़ कर आए थे। अस्तु दोनों दलों में ऐसी चली कि जैसी कभी किसी ने देखी क्या सुनी भी न होगी। फिर किसी कवि की क्या मजाल है जो उसका यावत् वर्णन कर सके। बानों की सरसराहट गोलियों की झरझराहट और तलवारों की झनझनाहट एव खटखटाहट के कारण अपना स्वर आप को सुनाई नहीं देता था। जहां तहा चमचमाती हुई उज्वल तलवारें ऐसी मालूम होती थीं मानों बिजली ने हजार कला होकर दर्शन दिया हो। यदि एक एक हाथ हाथी का किलाया काट देता, तो दूसरा दूसरों से दांत उखाड़ लेता था। मुसल्मान लोग जुदे पटैती के हाथ फेरते हुए शत्रुओं के शीस कलमों से उतार लेते थे। इस युद्ध में इतना रक्त प्रवाह हुआ कि शेष नाग का सिर भीग गया। कमठ मटपटा उठा और दसों दिशाओं के दिगपाल दहल उठे। देवता लोग दातों उँगली देकर रह गए। इस प्रकार से समस्त दिन सग्राम होते होते अन्त में राजपूतों की जीत रही और यवन अनी परास्त होकर पीछे हट गई। मुसल्मानी सेना के खुरासान खा, रूपराय हिन्दू और भीमसिंह ये तीन भारी सर्दार मारे गए—चाहुआन सेना में से बलिभद्र भट्टी, जगली राव, किल्हन राय और बनवीर ये योद्धा खेत रहे और हुसैन खा का पुत्र बहुत घायल हुआ। इसीपर मुसल्मानी सेना घर भागी और तत्तारखा तो ऐसा तीन तेरह हुआ कि फिर उसका पता भी न पड़ा। खेत साफ कराए जाने पर सब तेरह सामन्त अशक्त घायल पाए गए। हामीपुर का पहिला [illegible] नरनाहन और रूपराय पाया गया। प्रताप

सिंह, सागर सिंह, मानसिंह चन्देल, महनंगमोरी, पूरनराय प्रमार, केसरी सिंह, नाहरराय कन्ह का पुत्र, रघुवंसचद चदेल, नरसिंह का पुत्र हरसिंह और मल्हनराय, इस युद्ध में सब इतने राजपूत मारे गए। किले पर राजपूती निशान रोप दिया गया। घायलों को लाकर उनकी मल्हम पट्टी का प्रबन्ध किया गया और पृथ्वीराज और समरसिंह सब सेना सहित हासीपुर में रहे।

इस प्रकार से हासीपुर के युद्ध में शत्रुओं को संहार कर तवार के मुंह का पानी उतार और गई भूमि को अपनाकर पृथ्वीराज समरसी जी सहित दिल्ली को वापिस आए। वहां पांच दिन पर्य्यन्त रावलजी की सब भांति से उचित महिमानदारी कर के उन्हें सादर चित्तौर को विदा किया गया और पृथ्वीराज आप अपनी राजसी का स्वच्छन्द आनन्द उपभोग करने लगे।



पज्जून महुवा प्रस्ताव ।

[तिरपनवां समय ।]

कविचन्द की स्त्री बोली कि प्यारे जब बालुकाराय सहित शहाबुद्दीन पज्जून राय से परास्त हो चुका तब उसने महुवा नगर पर कैसे आक्रमण किया और फिर पज्जूनराय ने उसे फिर भी किस प्रकार से हराया सो कहिए ? * ।

यह सुनकर कविचन्द बोला ! अच्छा प्रिये सुनो ! शहाबुद्दीन पज्जूनराय से परास्त होकर सब रखत-बखत खोकर मनहार होता हुआ गजनी जा पहुंचा। परन्तु इस बात की उसे विशेष ग्लानि हुई कि मुझे और बालुकाराय दोनों को शत्रु के एक साधारण सामन्त ने हरा दिया । अस्तु उसने अपने मन्त्री तत्तार खाँ से कहा कि अब की बार महुवागढ पर आक्रमण किया जाय । शहाबुद्दीन की ऐसी आज्ञा पाकर तत्तारखाँ निसुरत्त खाँ के सहित एक लाख सवार, कई हजार पैदल और एक हजार हाथी लेकर महुवागढ़ पर चढ दौड़ा उस समय महुवागढ का थानापति निड्डुरराय था । उसने शाही लश्कर की अवाई का समाचार पाकर पृथ्वीराज को पत्र लिख भेजा । पृथ्वीराज ने वह पत्र दर्बार में सब सामन्तों के सामने पढ सुनाया और पूछा कि महुवागढ की रक्षा के लिये किसे भेजा जाय ? तब हाहुलीराय हम्मीर बोला कि एक लाख नेजे की अनी पज्जूनराय के सिवाय और कौन ओड सकता है । इस पर पृथ्वीराज ने रावल समरसिंह जी की तरफ देखा । रावल जी ने कहा तो कुछ नहीं परन्तु सेन के इशारे से उक्त प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया । जामराय जद्दो बोला कि चित्तौरपति रावल जी भली भांति जानते हैं कि पज्जूनराय एक अद्वितीय पराक्रमशाली सूरमा है। उसने जगलूराव को जीता, तत्तार खाँ को कई वार वता बताया, बालुकाराय को हराया, गिरनार पर जाकर भोरा भीम का छागा छीना और अजैपाल के लिये आबू सिखर को खोद बहाया । इन्होने खोखदपुर को खराब किया; देवगिरि पर जै प्राप्त की, जालौर को जीत कर महनसिंह भट्टी को दिया और अजमेर का राज्य तो इन्ही महाशय के बाहुबल पर निर्भर है।

निदान पृथ्वीराज ने भी यह प्रस्ताव स्वीकार किया और तदनुसार पज्जूनराय को हासीपुर के अंतरगत बारह गढ़ों का पट्टा देकर उसे महुवा की रक्षा करने का बीड़ा दिया गया। उस समय पृथ्वीराज ने उसके सहकारी योद्धा कन्ह और किल्हन को भी बहुत कुछ धन रत्न मोती-माला और सिरोपाव देकर सतुष्ट किया और कहा कि शाह के अगवान तत्तार खा और नुसरत खा सिंधु पार कर चुके है अब इधर की लाज आप लोगो के हाथ है । यह सुन कर पज्जून राय ने कूच का सुदिन तक न पूछा और स्वामि-आज्ञा को ही सब शुभ-मूलक जान कर उसी समय बम बोलदी ।

पज्जून राय ने अपने पुत्र मलयसिंह एव और सब भाई बेटों से कहा कि भाइयो इस समय शाह अपने बडे भारी दलबल सहित महुवा पर चढ आया है, अस्तु ऐसा करना चाहिए जिसमें अपने मुंह पर पानी रहे और कूरभकुल की सुकीर्ति विस्तृत हो । पज्जून के ऐसे वचन सुनकर सब कूरंभ राजपूत बात की बात में अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हो कर सन्नद्ध हो गए । दोपहर होते होते पज्जून राय ने चल दिया और महुवागढ पर पड़ी हुई शाही सेना को आड़े हाथों ले लिया । कूरंभराय के इस सहसा आक्रमण से कुल मुसल्मानी लश्कर अकुला उठा और उसने किले का घेरा छोड़ दिया । पज्जूनराय ने इस प्रकार से शत्रु का [illegible] मारकर अमर यश प्राप्त किया इस युद्ध में पज्जून के पुत्र मलय

---

* पज्जून [illegible] नाम प्रस्ताव इक्कावनवें समय का [illegible] है यथा—

[illegible]

(सम्य ५१)

[illegible]

(समय ५३)

सिंह ने विलक्षण पराक्रम किया और याकूबखां के हाथ से पज्जून के भाई बलिभद्र को दो गहरे घाव आए। जब पज्जूनराय महुवा के युद्ध को जीतकर दिल्ली आया और वहां मलयसिंह की वीरता का बखान किया गया तो पृथ्वीराज सहित सब लोग उस किशोर-वयस्क बांके वीर की बहादुरी पर जी जान से मोहित हो गए।



पज्जून पातिसाह युद्ध प्रस्ताव।

(बावनवां समय।)

महुवा का युद्ध जीत आने पर, पृथ्वीराज ने पज्जून राय को नागौर के नाके पर रक्खा और कन्ह, सलख, रामराय बडगुज्जर, निड्डुर पुंडीर, किल्हनदेव तुंअर, बलिभद्र मलयसिंह और पल्हसिह इन सामन्तो को उसकी सहायता के लिये दिया। इस प्रकार से नागौर के नाके का सब भार पज्जून राय के सिर सौप कर पृथ्वीराज स्वय कुछ सामन्तों समेत मालवे की तरफ चला गया।

शहाबुद्दीन पज्जून का एक वार तो स्वय बरदास्त कर चुका था; परन्तु महुवा से तत्तार खा का पीछे हटना उसके दिल पर और भी खटक गया। उसने भरी सभा मे प्रतिज्ञा करके कहा कि अब तो जब पज्जुन का खून पी लूगा तब पाग बाधूगा। सौभाग्यवश उसी समय धर्मायन द्वारा समाचार मिला कि पज्जूनराय को नागौर गढ का थानापति स्थापित करके पृथ्वीराज सेना सहित मालवे के जगलों में पड़े है एव देवास के यादवों के यहा व्याह के सुखसोर मना रहे है। यह सुनते ही शाह की बंबर फूलगई। उस ने उसी समय तीन लाख सवार एक लाख बीस हजार पैदल और अगनित हाथी और ऊटों का लश्कर सजे जाने की आज्ञा दी। गजनी की पैदल सेना में ऐसे ऐसे जबर्दस्त मुहजोर ज्वान थे कि जिनके धनुष पर २० टके भर की प्रत्यचा चढती थी और जो तलवार के एक हाथ मे मय सवार घोडे को चीरकर चार कर देने वाले थे। ऐसी सेना को साथ लेकर शहाबुद्दीन नागौर नगर पर चढ आया और वहा से एक योजन के फासले पर पड़ाव डालकर उसने पज्जून राय के पास एक परवाना लिख भेजा कि मै आया हू। अब या तो किला छोडकर बखैर खुदा चले आओ या मैदान मे आकर जग लो। यह परवाना पाते ही पज्जूनराय ने हँस कर उत्तर दिया "मै पज्जून जीवन की लालसा मे लडाई से डरने वाला नही हू। मै रघुवंश राम नहीं हू! मै वह पज्जून हू कि चाहे धरती लौटपलट होजाय, सूर्य्य पश्चिम में उगने लगे, गगा का प्रवाह स्थिर होजाय, शिव पार्वती को त्याग दे, पर मै अपनी बान से हटनेवाला नहीं हू। शाह तुम चिन्ता न करो प्रसन्नता पूर्वक आओ। पृथ्वीराज ने हमको अपना जानकर राज्य की रक्षा का भार हमारे ऊपर दिया है अस्तु हम क्षत्रियत्व के सत्य व्रत को तिलाजुली नहीं दे सकते। आओ हम अटल होकर डटे है। या तो तुम्हारे कटक को काट कर पाट देगे या हमी तिल तिल होकर कट मरेंगे, पर हटेगे नही। आओ तुम खुशी से आक्रमण करो यहा हम भी अचल होकर डटे हैं!!! दूतों ने ज्यों का त्यों सब समाचार शाह को जा सुनाया जिसे सुनतेही शहाबुद्दीन जल उठा। उसने तत्तार खा को बुलाकर कहा कि देखो यह वही पज्जून है कि जिसके सबब से मुझे दो दफे नीचा देखना पडा है। देखना अब का वार खाली न जाने पावे।

इधर कन्ह बलिभद्र मलयसिंह और पल्हसिंह ने परस्पर गोष्ठी करके विचार किया कि किले से निकल कर आक्रमण किया जाय। परन्तु पज्जून राय ने ऐसा करने की सम्मति न दी और कहा कि शाही सना सबल है, ऐसा करने से सब कट मरेगे और कोइ काम भी न सरेगा, अस्तु किले के ही मोरचे पक्के करना उचित है। पज्जून राय ने कहा " भाइ सुनो, ससार के सब पदार्थ नाशमान है, राजपाट, बापी, कूप, तडाग, महल, मकान, गढ, कोट आदि जो कुछ है सब नष्ट हो जाते है परन्तु मनुष्य की करनी कथनी नहीं मिटती। गए गुजरे की नेकनामी बदनामी की कहानी मात्र म-[illegible] मे [illegible] है इसलिये ऐसा करो जिससे अपने लोगों की [illegible] यश की [illegible] चले" । इधर

---

(१) [illegible] मे [illegible] पर [illegible] वालों का [illegible] करते है। परन्तु यह [illegible] 'बब्बर' है। [illegible] बब्बर [illegible] खुश होता [illegible] है [illegible]।

(१ [illegible] के किले से [illegible]। [illegible]

तो ये बातें हो ही रही थीं उधर शाही सेना ने किले को चारों ओर से घेरकर गोले बरसाना शुरू किया। जिस समय कूरम्भ कुल सूर्य्य तीन लाख नेजे की अनी रूपी राहु के बीच में गस गया उस समय सारे नागौर नगर में सन्नाटा छा गया। शाही सेना के आक्रमण के आतंक से सब सामन्त भी सशंक और चलचित्त हो उठे– "क्या करें सौ की सत्ती बुरी होती है"। भीलों ने जब गोपियों को लूट लिया तब अर्जुन की अकबक भूल गई थी– परन्तु पज्जून राय ने हिम्मत न हारी। उसने सब को ढाढ़स देकर कहा। भाइ घबड़ाने का समय नहीं है राजा पृथ्वीराज का प्रताप बड़ा है मरना जीना तो लगा ही रहता है इससे डरकर कर्तव्य पालन करने से चूकना उचित नहीं।

वह दिन तो जिस किसी तरह से व्यतीत हुआ। रात होतेही सामन्तो ने किले से निकल कर सुसुप्त शाही सेना पर छापा जा मारा। कुछ सैनिकों के साथ केवल बलिभद्र राय किले में रहा। इस छापा मारनेवाली मंडली का अगुआ पज्जूनराय का पुत्र मलयसिंह था। उसने एक मात्र शहाबुद्दीन के खेमे पर आक्रमण कर दिया। उस खेमे के इर्दगिर्द जो एक हजार मुसलमान सिपाही पहरे पर मुस्तैद थे वे राजपूत सेना का मुकाबिला करने लगे। दोनों में परस्पर खूब हथियार चलने लगा। गुल गपाड़ा सुनकर इधर उधर सोते जागते जो जहां थे सब मुसलमान सिपाही शाह की रक्षा के लिये जुटने लगे। उधर तत्तार खां ने सुअवसर जान कर बीस हज्जार गक्खरों के साथ किले पर धावा धर किया किवाड़ तो खुलेही थे, मुसलमान सेना दर्रा मारे किले में पैठ पड़ी, परन्तु किले में पज्जून का भाई बलिभद्र- राय गाफिल नहीं था वह इस होनहार से मानो पहिले ही से सचेत था। उसने गक्खर सेना के भीतर घुस आने पर फाटक बंद कर दिया और इस तरह की मार की कि बीस हजार में से बीस को जीताजागता न जाने दिया।

गक्खर सेना का यह हाल करके शेष राजपूत सेना भी किले से निकल कर मैदान में आई। वीर बलिभद्र राय हुडुरुओं सा खेलता हुआ बड़े अमीर मीरों को मार मार कर पाटने लगा। देख कर पज्जून ने कहा वाह भाइ खूब किया। बिना कौन ऐसा करे। इतने में मलयसिंह ने बढ़कर शहाबुद्दीन के खेमे को अपने कब्जे में कर लिया और शाह को अपना बन्दी बना लिया। फिर क्या था! और सब सेना भी जिधर तिधर नौ दो ग्यारह होगई इस लड़ाई में शाही सेना का जलाल खां नामक एक नामी सर्दार मारा गया। प्रातः काल होतेही मुसल्मानी सेना में से चिड़िया भी पड़ाव पर न रही। पज्जूनराय ने सब माल मत्ता अपनाकर दिल्ली को रवाना किया और फिर आप भी शाह को लिए हुए जा पहुंचा। पृथ्वीराज ने लूट का सब माल तो पज्जून राय को दे दिया और एक हजार घोड़े और पन्द्रह हाथी दंड में लेकर शाह को छोड़ दिया। शहाबुद्दीन को बिदा करते वक्त पृथ्वीराज ने उससे केवल इतना कहा कि "तुम नरनाह शाह कहलाते हो ऐसी निर्लज्जता और ढीठता तुम्हे शोभा नहीं देती"।

शत्रु को पकड़ पकड़ कर फिर फिर छोड़ देना ये राजपूत जाति का ही कलेजा है। राजा पृथ्वीराज ने जो किया सो कविचन्द द्वारा बखान किए हुए उसके सुयश की चर्चा संसार में अचल रूप से चल रही है।

(१ मूल पाठ हुडूहूद है बुन्देलखंड मे हुडुरुआ कहते हैं। लड़कों की बड़ा भारी जमात मिलकर गल हल्ला मचाने गन गाना बकने नाचने कूदने, एक दूसरे से लड़ने भिड़ने आदि में .... आया सो करते हैं उसी का नाम हुड़दंग या हुडुरुआ है।



सामंत पंग युद्ध नाम प्रस्ताव।

[पचपनवां समय ।]

उस समय, पृथ्वीराज पृथ्वीतल पर के सब राजाओं को राहु स्वरूप होकर लगा था। जो राजा उसे सम्मानपूर्व्वक दंड देते एवं उसकी सेवा स्वीकार करते थे तो स्वच्छन्द रहते थे, परन्तु जो उससे ऐंडकी करते वे मारे पडते थे। सब से सबल शत्रु शहाबुद्दीन को बार बार बांधकर छोड देने वाला पृथ्वीराज देव सक्क गंधर्व के समान बलवान और प्रतापी था। ऐसेही उसके शूर शिरोमणि सामन्त सच्चे स्वामिसेवी थे। तात्पर्य्य यह है कि उस समय सबल से सबल शत्रुओं का दर्प चूर्ण करनेवाला पृथ्वीराज अपना सानी न रखता था।

कनौज मे राजा जैचन्द राज्य करता था। उसके तेज एवं प्रताप का आतंक चारों दिशाओं में छाया हुआ था। केवल दिल्लीपति पृथ्वीराज और चित्तौरपति समरसिंह जी का युक्त–युग उससे अजेय था। शेष सब छत्तीस कुरी के राजपूत उसके सम्मुख सिर नवाते थे। जैचन्द एक तो स्वयं भीमकाय बलवान और बडा वीर था, तिसपर उसका दलबल तो साक्षात् समुद्र के समान अगम था। जिस ओर को पंग–दल की लहर उठती उस ओर के बलवान पुरुष तो उसे आराध्य इष्ट मान कर उसी में मिल जाते थे और कायर कायर कहीं के मारे कहीं जाते थे। पंगराज का कोप क्या कराल काल का गाल था। राजा जैचन्द के ऐसे विषम दल [illegible] की चढाई का समाचार पाकर पृथ्वीराज ने कुछ [illegible] दिल्ली में छोडकर आप [illegible] [illegible]

जाता वहां गांव के गांव जल * जाने से आकाश में मेघों के समान धुंआ छा जाता था। इस प्रकार चतुर्मासवत् चतुरंगिनी सेना के आतंक से उसके शत्रु की स्त्रियों की अश्रुधारा की झडी लगजाती थी। सैनिकों के अस्त्र शस्त्र बिजली से चमकते, रणवाद्य बद्दल से गरजते और कडखेत एवं बन्दी जनो की बोली टोली पावस के पपीहा सी प्रतीत होती थी। जब जैचन्द की सेना चलती तब दशो दिशाओं के दिग्पाल दहल जाते थे, बन उजड़ जाते, पहाड़ दब जाते, नदी नद सूख जाते और पृथ्वी उथल पथल होने से शेष का शीस नम्र होने लगता एवं कमठ सटपटाने लगता था। राहु रूपी पंग सेना जिसे ग्रसती उससे दाम एवं सम्मान का दान लिए बिना उसे कदापि न छोडती थी। बात तो यों है कि जैचन्द के समान दूसरा संसार में था ही नहीं जैसे कोई पूर्व्व संचित कर्म्म को अतिक्रम करके जन्म–संस्कार से जै नहीं पा सकता, धरा को हाथ पर नहीं धर सकता न उसे जड से उखाड सकता है, सूर्य्य पर चादर चढ़ा कर उसे कोई छिपा नहीं सकता, नदी के प्रवाह को रोक नहीं सकता और न उत्तर दिशा को जा सकता है वैसेही उस समय जैचन्द से जंग लेने वाला भी कोइ राजा राजपूत नहीं था। ऐसे प्रतापी राजा पंग का दल बल दिल्ली को दमन कर पृथ्वीराज को पकड़ने के लिये चला। पृथ्वी पर ऐसा कौन था जो जैचन्द के विद्रोही को बचा सके, परन्तु वाह रे पृथ्वीराज ! जिस का जैचन्द एक बाल भी बांका न कर सका।

---

* अग्नि रूप पट्ट पंग समुद्र सोषन [illegible] दिल्लिय। [illegible]

वैज्ञानिकों का सिद्धान्त है कि [illegible]

जैचन्द का दल प्रजा को उजाडता हुआ दिल्ली तक गया। परन्तु जब वहा उसने पृथ्वीराज को न पाया तो चुपचाप उलटा कन्नौज को लौट आया। तब राजा जैचन्द ने रावल समरसिंह जी को बलपूर्वक दबाने की इच्छा करके राज्य मन्त्री सुमन्त को बुलाया और उससे कहा कि अब ऐसा करो जिसमें बिगड़ी हुई बात बने अर्थात् फिर से यज्ञ की सामग्री जुटाओ। यह सुनकर सुमन्त बोला महाराज क्या किसी ने आकाश में स्थित तारागण की भी गणना की है ? जप पूजन और मन्त्र आदि की सिद्धि के लिये सब से पहिली बात जितेन्द्रियता है। इसपर जैचन्द कुछ कुरुख होकर बोला "प्रधान का यह धर्म नहीं है कि स्वामी से मुंह जोड़े। सेवक को एक मात्र स्वामी की सुकीर्ति और कार्य्य सिद्धि के लिये ही तन मन से यत्न करना उचित है, इसलिये हे सुमन्त फिर से यज्ञ का प्रबन्ध करके ऐसा उपाय रचो जिसमें निर्विघ्न यज्ञ समाप्त हो और यह कलक का टीका सिर से टले। कुकर्म करने पर कलक कालिमा तो लगीही चाहे परन्तु यह तो नाहक में काला मुँह हुआ। तब सुमत बोला कि महाराज यदि यज्ञ करना ही है तो पहिले पृथ्वीराज को पकड लीजिए और समरसिंह से सन्धि कर लीजिए, नहीं तो जब लों इन दोनों से काम नही हो लेंगे तब लों यज्ञ का पूर्ण होना मुहाल ही समझिए। राजन् ! जो दो कर सकते हैं सो अकेला कभी नहीं कर सकता। दो दिये आमने सामने रखने से दोनों के तले का अंधेरा दूर होजाता है, अतः आपके और समरसिंहजी के मिल जाने से फिर कोई ऐसा नहीं है जो सिर उठा सके।

सुमन्त के इस प्रस्ताव पर जैचन्द राजी हो गया। उसने सौ घोडे, एक हाथी, एक अनबेधा मोती, दस माणिक और मोती की मालाएं समरसिंह जी के लिये सौगात की तरह देकर सुमन्त को उसी समय चित्तौर की तरफ रवाना किया। उसने समरसिंह जी को यह संदेसा भी कहा कि पृथ्वीराज को जीतकर हम तुम दोनों मिल कर यज्ञ करें तो इच्छा हो और इसके पुरस्कार में हम आप को पञ्जाब प्रान्त की आधी भूमि देना स्वीकार करते हैं। जैचंद का कथनोपकथन तो केवल हेतु मात्र था। मंत्री सुमन्त स्वयं बडा बुद्धिमान पुरुष था। वह समय की परख और बातचीत की बनावट में अच्छा निपुण था। उसे मनुष्य की पहिचान का ज्ञान भी अच्छा था। अच्छे अच्छे चतुर पुरुषों की मडली मे भृंगी का कीट होकर पैठ जाना और अपना मतलब निकाल लेना सुमन्त ही का काम था। इस प्रकार से राजनीति के सब मार पेंचों में चतुर होकर भी वह छली कपटी और झूठा नहीं था।

कन्नौज राज्य के मंत्री सुमन्त के आने का समाचार पाकर समरसिंह जी ने उसे सादर दरबार में बुलाया और कुशल प्रश्न के पश्चात्, उससे उसके आने का कारण पूछा। तब सुमंत बोला कि महाराज कन्नौज–राज जैचन्द आपको यज्ञ में और विजित भूमि में भाग देकर आपसे संधि करना चाहते हैं। हे राजन् ! ऐक्य मे बड़ा बल है। जैसे तनिक तनिक से तिनकों का युक्त बल मदोन्मत्त हाथी को बिवस कर देता है, वैसे ही आप दोनों का प्रभाव अन्य सब राजाओं को आपका आश्रित बनाएगा। यह सुन कर समरसिंह जी बोले "रे सुमन्त तेरा किसने सुमन्त नाम रक्खाहै ! तू तो नितान्त कुमत वाला कुमंत नाम के योग्य है। जैचन्द ने आमल हमें रहते न जाना? आज यज्ञ के लिये सन्धि करने की सूझी है ! फिर भी चौहान से विग्रह करके त्रेता और द्वापर में जो यज्ञ देवताओं ने किए थे उन्हें ही करने की आज जैचन्द को समाई है !!! तब सुमन्त ने प्रत्युत्तर दिया कि सतयुग में राजाओं ने यज्ञ किया था. त्रेता में राजा रामचन्द्र ने और द्वापर में पाडुपुत्र युधिष्ठिर ने यज्ञ किया था, अब कलियुग में और तो कोई इस योग्य है नहीं इसी से विजयपाल के पुत्र राजा जैचन्द ने यज्ञ आरम्भ किया है। इस पर समरसिंह ने कहा "बलि ने स्वर्ग की इच्छा से यज्ञ किया था सो पाताल में गए। चन्द्रमा यज्ञ करके कलंकित हुआ। पाडुपुत्र यज्ञ के कारण बनवासी हुए और राजा नहुष को नर

कूप में पडना पड़ा। अब कलियुग में जैचन्द यज्ञ करना चाहते हैं। कहो तो इनके पास यज्ञ की सामग्री भी है ? अश्वमेध, गोमेध, अजमेध,राजसूय, अग्निहोत्र और विधिवत् षोड्स दान सहित वाजपेय-ये यज्ञ, ग्रहस्थाश्रम का यावत निर्वाह और सन्यास की धारणा कनिष्ठबध और बडबध ये नौ काम कलियुग में हो ही नहीं सकते। मुझ से यदि सच पूछो तो यही कहूंगा कि अपना वित्त देखकर काम करना चाहिए। अभीतक अकेले चहुआन के मारे यह हाल हुआ है आगे न जाने क्या हो। इस लिये ऐसा साहस करना वृथा है। तुम मंत्री हो, जैचन्द को ऐसा समझाओ जिसमें पीछे फटो फटो न होती फिरे। आगे तुम जानो तुम्हारा काम जाने ! हम तो तुम्हारे यज्ञ में समिलित न होंगे। और भी, सुनो ! जब जैसी कुछ होनहार होती है तब आदमी की तैसी गत मत भी हो जाती है। ईश्वर गर्वप्रहारी है। इस तुच्छ मनुष्य जीवन मे देवताओं की समसरी करने की इच्छा करना अच्छा नहीं।यज्ञ में बालि ने तीनों लोक दान किए,रामचन्द्र को युद्ध में पराजित होना पडा और पांडवों के यज्ञ मे यदुवीर कृष्ण और कुबेर सहायक थे, परन्तु तब भी पूरा न पड़ा। यह सुनकर सुमन्त बोला श्रीमान् सुनिए। बलि ने यज्ञ तो किया परन्तु क्षत्रीधर्म का विचार न किया। रामचन्द्र जी दिग्विजय के समय राजनैतिक चाल चूक गए और नघु ने क्रोध मे आकर ब्रह्महत्या की, इसी से कुछ का कुछ हुआ। समझ रखिए कि इस समय तक पृथ्वीराज के सिवाय अन्य सब राजा जैचन्द की आन मानते है।

तब समर विद्या में निपुण सुरशिरोमणि समरसिंह जी बोले, सुमन्त हम योगबल से भूत भविष्य वर्तमान तीनों काल की जानते है। हमारी मति तुम्हारी तरह मोहग्रस्त नहीं है। होगया और हो रहा है सो तो सभी जानते हैं परन्तु हम यह भी कह सकते है कि आगे क्या होगा। इस कारण है कि यह यज्ञ पूरा नहीं होगा। मुनि देव पितृ ब्राह्मण सब जन इन सबको सन्तुष्ट करना सहज नहीं है। तुम्हारे पेटे इतनी पूंजी कहा से आई है-जब पांडवों के यज्ञ पूर्ण होने पर बंदीजन उसका बखान करने लगे तो वहीं से एक नकुल ने सहसा प्रगट होकर कहा कि आगे जब इसी भूमि पर भारी अकाल पडा था तब यहा के राजा ने व्रत पूर्वक ब्राह्मणों को भोज करवाया था। उस समय ब्राह्मणों के पैर धोने से जो जल बहा उसमें लोटने से मेरा आधा अंग सोने का हो गया था आधे के लिये तुम्हारे यज्ञ मे आया था सो एक बाल भी पीला न हुआ ! जाओ अपने राजा से ऐसाही कहदेना। यज्ञकर्म तपोबल से होता है। जैसे विश्वामित्र ने छ सौ यज्ञ किएथे। तुम किस गुमान में भूले हो "हो किस खेत की मूली" ?

सुमन्त अपने स्वामी प्रति ऐसे अपमानित वचन सह न सका। उसने कुपित होकर कहा "आह ! क्या आप जैचन्द के बल प्रताप को नहीं जानते, जिसका दल चलने से धरनी धसकती है और धूलि उडकर सूर्य्य को आच्छादित कर लेती है, जिसकी सेना के भय से पृथ्वीराज घरबार छोडकर बनवासी बना बन बन भटकता फिरता है (इस देश की) चार खूंट पृथ्वी पर जैचन्द का प्रताप रूपी ताप तप रहा है। यदि वह चाहे तो पृथ्वीराज सहित शहाबुद्दीन को भी क्षण मात्र में नाश करदे और देखिए ऐसाही होगा ! आपभी सम्हले रहिए ! अब बाधकों का विनाश करके ही यज्ञ किया जायगा।

एक समय महान तेजोरूप यज्ञ पुरुष नारद ऋषि के पास आया। नारद ने उससे पूछा कुशल तो है ? दुर्बल क्यों हो ! तब वह बोला क्या कहूं मेरा सम्पूर्ण अंग तो राजसी में गया, सम्मान पंडितों ने लिया, गौरव और विद्या विद्वानों ने ली, लक्ष्मी ब्राह्मणों ने ली, रात्रि का सुख स्त्री संभोगियों ने लिया, निन्दा और नीचता अभिमानियों ने ली, सत्कर्म आचरण इष्ट ने लिए और सब कुछ देवताओं ने लिया तब कहो कैसे दुर्बल न हूं। यह सुन कर नारद ने उत्तर दिया कि [illegible]

सो किया जायगा जिसमें तेरा दुःख दूर हो *

मन्त्री सुमन्त ने चित्तौर से आकर जचन्द से सब हाल ज्यों का त्यों कह सुनाया और कहा कि इस चढ़ी चोट पर चहुआन को चाहे बचाकर चित्तौर को ही चपाना उचित है। हे राजन् विचारिए तो सही! वह मन्त्री कैसा जो पराई भूमि को न अपनावे संसार में ऐसा कौन सा गुणी है जो तेरे काल व्याल रूपी क्रोध की फुंकार से बचकर जीता रह सके। मन्त्री के ऐसे बचन सुनकर जैचन्द ने उसी समय सेना सजीजाने की आज्ञा दी। आज्ञा होतेही जैचन्द का समुद्र के समान अचल दल बल इस तरह से चढ चला जैसे प्रत्यंचा से छूट कर तीर एवं मोचंग के तार पर से स्वर दिशाओं में गूंजने लगते हैं। वह दल ज्यों ज्यों आगे चला जाता था त्यों त्यों उसके सहायक सरित सरिताओं की भांति आ आ कर आप उसमें मिलते जाते थे जैचन्द की चमू के कूच के समय के धौंसों की धुंकार सुनकर धीरज छूटता था। हाथियों के झेलों का घना ठनठन शब्द अनहद बाद्य की याद दिलाता था अम्मारियों पर लाल लाल बैरखें शिव के क्रोध के कारण कैलाश शिखर पर अग्नि कण से छिटके नजर आती थीं। न्यारे न्यारे विविध रंगवारे बड़े बड़े ध्वजा पताका धरातल पर उतरे हुए सूर्य्य चन्द्रमा एवं अष्ट ग्रहों के बसीठ से जान पड़ते थे। लाल लाल बैरखों पर सोने की कलसिया माणिक मणि कैसी मजगी भान होती थीं और धूलि उड कर जो आकाश में छा रही थी उसमें तो ऐसा मालूम होता था मानो आज अंधकार ने उजेले को निगल जाने का विचार किया हो हाथियों पर बैठे हुए बांके वीर बिमान में विराजित देवता से ज्ञात होते थे। उस समय सूरवीर पुरुषों के मुख कमल-कली से प्रफुल्लित हो रहे थे और कपूत कायर कुकमोदिनी की तरह मुरझा रहे थे। निदान जैचन्द का ऐसा दल बल दो दलों में होकर एक चहुआन पर और दूसरा चित्तौर पर एक ही साथ चला।

सेना से आगे एक दूत ने दिल्ली को जाकर जैचंद का अभिप्राय जाहिर किया। परन्तु उधर से सामन्तों ने उत्तर दिया कि यह वही भूमि है जिसके लिये महाभारत का युद्ध हुआ था और इसे अनंगपाल ने पृथ्वीराज को दिया है। यदि मरा हुआ मुर्दा जी सकता है तो जैचंद भी इस भूमि को पा सकता है। गोयंद राय ने कहा रे दूत! यह बसुमती वीरभोग्या है यह उसीके पास निशंक रहती है जो सच्चा वीर है। जिसे वीर बाने की लाज है और जिसकी भुजा में बल है वही इस भूमि का भोग कर सकता है। छलबल से तिलभर भूमि हाथ नहीं आती। कोई मर कर जीता नहीं, टूटा हुआ तारा फिर आकाश मे नहीं जाता, मुँह से निकली हुई बात फिर नहीं पलटती, केवल पछतावा रह जाता है, तब भला वीरों की बरी हुई स्त्री और भोगी हुई भूमि कौन पा सकता है। जैचंद को यदि मातुल बनने की हवस है तो भाडचारे का व्यवहार करे, मरने मारने की बातें क्यों कर रहे हैं।

दूत ने जैचन्द के सामहने ऐसी ही जा कही। तब सुमन्त बोला बस वे दुर्बुद्धि न मानेंगे। अब उन्हें बल करके ही मनाना उचित है। यह सुन कर दिल्ली की तरफ सेना भेजने की आज्ञा दी गई। चन्देरी के राजा शिशुपाल के पुत्र डाहलराय के कुल में उत्पन्न

---

* छन्द ६३ का सारांश स्पष्ट नहीं है इसी से मूल छन्द उद्धृत कर दिया जाता है

कवित्त—अग्र खंड नृपराज मान खंडनाति विप्र वर।
गुरु खंडन गुरु विदुर लच्छि खंडन बानिक घर॥
नीति खंडन नियराज मुनिनि खंडन अभिमान।
क्षत खंडन उर ईश भाग्य खंडन सुर थान॥
इनो खंड कीने हुते नदींस दुःख जग जरतनह।
जानै न इन दैवत्त गति सुगति विष्ट त्रिभुवन चनह॥

† छन्द ६४ से लेकर ६८ तक का भी अभिप्राय स्पष्ट नहीं है।

(१) जब योगी जन आधी रात्रि के समय समाधि साधकर एकाग्र चित्त करके चिन्मय स्वरूप का ध्यान करते हैं तो उन्हें आकाश में एक ऐसा शब्द सुनाई देता है जैसे बादल से मलार और घंटे बज रहे हैं। इसी शब्द का नाम अनहद नाद है।

सिंहराव का पुत्र जैसिंह सेनापति स्थापित किया गया। वाह! पग का दल क्या चला मानो इन्द्र से लड़ने के लिये दैत्यों का दल चला। इस सेना के भार से भौचक होकर फनीस का फूंसना भूल गया। घोड़ों की टापों से जमीन खुदकर गड्ढे हो गए। इस प्रबल दल के बीच जैसिंह द्रोणाचार्य्य सा मालूम होता था। उधर दिल्लीपति पृथ्वीराज तो पाडु पुत्र पार्थ की उपमा पाने योग्य था ही।

जिस जगह होकर यह फौज निकल जाती थी वहां की भूमि उथलपथल होकर जल की जगह थल और थल की जगह जल होजाता था। यह उसी जैचन्द की सेना थी जिसका हिन्दू मुसलमान दोनों दीन पर समान प्रभाव था। उसके आतंक से पृथ्वी तूफान में पड़ी हुई तरनी की तरह डोलती थी। दिग्पाल धजवैर की नाईं डगमगाते और शत्रु का प्रताप वायु से बिदारे हुए बद्दलों की तरह लुप्त होजाता था। जो वीर पुरुष जैचन्द से जीते जाकर अब तक चुप चाप थे इस अवसर पर पुनः आतंक में आकर नए से हो गए। नए ज्वानों के चेहरों पर एक नई तरह की अनोखी दीप्ति दिपने लगी। निदान आधी रात पर सारस की बोली सुनते ही सेना ने कूच किया और जंगल पहाड़ उजाड़ती हुई पड़ाव दर पड़ाव इस प्रकार से आगे बढ़ने लगी जैसे पूर्व्व सञ्चित कर्म्मों का परस्पर का संयोग नित नव कर्म्मों का विकाश करता है। परन्तु सामन्त सेना में भी ऐसे ऐसे सिपाही और सरदार थे कि हाथों से हाथी के दांत उखाड़ लेना उनके लिये कुछ बात न थी। वे वज्रवत शस्त्र प्रहार करके बज्र से वज्रहृदय को भी बिदार सकते थे, निदान वे इस सूर्य्यवंशी जैचंद रूपी सूर्य्य की चढ़ाई से ऐसे प्रसन्न चित्त थे जैसे सूर्य की प्रतिमा पाकर कमल कलियां कुसुमित होने लगती हैं। इस पग दल रूपी समुद्र की बाढ़ रोकने के लिये सामन्त सेना अचलाचल पर्व्वत से कदापि कम न थी। क्यों कि अनेकों किले कोटों को ढहाती हुई पग सेना दिल्ली तक तो पहुंची परन्तु उस से आगे कदापि न बढ सकी।

जैसे राज्य सेवा के कारण आपसी का सलूक और आख का शील टूट जाता है, विद्या और ज्ञान से सारे कुटिल कर्मो का नाश हो जाता है; वैसे ही पगदल के दबाव से पृथ्वीराज निज राजधानी से हट कर बन मे विचरने लगा। दिल्ली के गढ़ और रय्यत की रक्षा का भार मंत्री कैमास के सिर था। सामन्त मंडली में शिरोमणि कैमास जैसा बुद्धिविशारद और चतुर था वैसा ही वह बलवान निर्भय और समय पर महान भयानक भी था। कन्ह चौहान, अत्ताताई, पहाड़राय तोंअर, पज्जूनराय, निड्डुरराय रठौर; बग्गरी राय बावरा, प्रसगराय पीची, दाहमा चामड, जज्झौनराय और रामराय ये दस सामन्त कैमास के सहायक थे। जैचंद की सेना जमुना उस पार आन पड़ी थी, निदान आधी रात होतेही रातोरात जमुना पार करके, बीहड़ बन के किनारे किनारे देवपुर को दाहिने देती हुई पग सेना दिल्ली का दुर्ग नियराने लगी। जमुना किनारे के बीहड़ भूभाग में घनघोर बाजों का रव सुनकर पृथ्वीराज तो एक ओर को चल दिया और यहां सामन्तों ने पंग सेना का मुंह मारने के लिये जंगी तय्यारियां की। धन्य रे सूर सामन्तो!! यह उस पग सेना से जंग लेना था जिसकी हांक से उस समय जहान कांपता था।

इन्द्रप्रस्थ अर्थात् दिल्ली के किले को पगदल रूपी राहु ने चारों ओर से ग्रस लिया। सेनापति की आज्ञा से किले पर बाण वर्षा की जाने लगी। किले से भी उसके उत्तर में नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र चलने लगे। एक दूसरे को प्रचार प्रचार एवं ललकार कर ये उनपर और वे इनपर [illegible]

---

(१) पञ्ज यानी निशान लेनेवाला। [illegible]

(१) स्मरण रहे कि [illegible]

बाण बर्साते थे तो पावस की झड़ी का मजा आता था। आपस में हथियार खडखडाते, वायु में सन सन बान सनसनाते, ठन ठन हाथियों के घटा ठनठनाते और गड गड नगाडे गडगडाते इत्यादि इस मिश्रित कोलाहल के मारे कान नहीं दिया जाता था। पंग सेना के नेजों की अनी इतनी घनी थी कि भू पर राई डारी नहीं जा सकती थी और यदि ऊपर से रकाबी फेंकें तो इस पार से उस पार तक निकल जाय। दोनों दलों के योद्धा अपने अपने मालिकों की दुहाई दे देकर करारे वार कर रहे थे। यदि सिर कट जाता तो कमंध खड़ा नाचने लगता और जो तीर से पंजर वारपार हो जाता तो पिंजरे से उडे हुए हंस की तरह हँसता हुआ हंसा स्वर्ग में जाबसता और इतर मिट्टी मिट्टी में जा मिलती थी। इस समय भी कन्ह की तलवार अजब करामात कर रही थी। उसकी तलवार से कट कर गिरे हुए शव तरफराते हुए ऐसे नजर आते थे जैसे जलमानस हेलुवा खेल रहे हों। कबन्ध टूट जाने पर खून की सेंट जोर से उछलकर जमीन पर गिरती ऐसी नजर आती थी, जैसे बढ़नी हुई बेली निराश्रित होकर लटक पड़ी हो। कुंभस्थल फूटने पर रक्त की धारा के साथ छोटे छोटे मुक्ताकण अजबही छटा छाते थे। हाथी के दाँतो पर पडता हुआ तलवार का वार ऐसा मालूम होता था मानो हसनी मृणालों को तोडरही हो। ऐसे वीर सामन्तों के वार सहना पंग सेना का ही काम था जिसमें पृथ्वीराज और समरसिंह दोनों को एकदम दबाने का दम था। प्रातःकाल से युद्ध होते होते मध्यान्ह होगया। उस समय जैचन्द रूपी सूर्य्य के किरण रूपी सिपाही क्रोध से आरक्त मुख हो उठे। उस समय ऐसा मालूम होता था मानो प्रलय करने के लिये साक्षात् योगमाया ने पंग सेना का स्वरूप धारण करलिया हो। ज्यों ज्यों परस्पर अस्त्र शस्त्रों के खटखटाने का स्वर होता था त्यों त्यों भूत वैताल और योगिनी ताथेई ताथेई के ताल पर नाच करती थीं। शेषनाग का शीश डुल उठा, पृथ्वी डगमगा उठी और निडर सामन्तों का भी छाक छूटने लगा।

दिन भर युद्ध होने के पश्चात् सायंकाल को सेना ने जमुना किनारे के बीहड बन के निकट का पक्का नाका बांध कर, युद्ध बन्द किया। इधर कैमास ने पृथ्वीराज को एक पत्र लिख भेजा कि आप तो निकल कर चले गए यहां मामला बेढब है। सब रास्ते नठे हुए हैं और लेने के देने पड़ रहे हैं। गढ़रक्षा की क्या कहें सब को अपने अपने जी के लाले पडे हैं। अबलों जो कुछ बनी है सो केवल काका कन्ह और निड्डुर की करतूत के यत्न से समझिए। यहां तो कोई यहा तक कह उठे हैं कि आप तो गद्दी छोडकर जंगल में जा पडे और हमको फँसा दिया। हमारा क्या अटका पडा है जो बकरे की मौत मरें। उधर तो साँझ होतेही उक्त पत्र भेजा गया इधर किले में कैमास, कन्ह, गोइन्दराय, रामरेन प्रमार और गुरुराम प्रोहित आदि ने मिलकर सलाह की कि यारों किला नहीं छोडना चाहे बोटी बोटी कट जाय। जैचन्द भी क्या कहेगा कि किसी से काम पडा था। इस समय पूनो नहीं दूज के चन्द्रमा बन जाओ जिसे हिन्दू मुसल्मान दोनों दीन सिर झुकाते हैं।

उक्त पत्र पाकर पृथ्वीराज के नेत्र आरक्त होगए, भुजा फडकने लगीं और मूँछें सिंह की पूँछ के समान कानों को स्पर्श करती हुई थर्रा उठीं। उसने उसी समय अपनी सब सेना को सज कर दिल्ली की तरफ कूच कर दिया और जंगल ही जंगल आकर चढ़ीसवारी पंग सेना पर धावा कर दिया। पंग सेना को देख कर पृथ्वीराज

---

(१) किले की लड़ाई में तलवार की तारीफ बेजा है परन्तु इसका विचार न करके हम यही लिखते हैं जो कुछ मूल पुस्तक में है। किले पर तलवार की लड़ाई तब हो सकती है जब या तो किला तोड लिया जाय या किले वाले मैदान में आकर हथियार करें, परन्तु यहां दो में से एक का भी मौका नहीं था।

(२) सनवर्ण मत्स्यों के साथ जल क्रीडा करना। हाथ हेलुवा खेले हैं जमुना के बीच तक बुन्देलखण्डी गीत)

के सिपाही उसपर ऐसे झपटे जैसे तीतर पर बाज, एव मछली की बोटी पर चील्ह झपटती है। पग सेना भी इस आपत्ति से अकुला कर अस्त्र शस्त्र सम्हाल कर युद्ध करने में तत्पर हुई। जैसे उच्च के सूर्य्य के प्रकाश में कुमोदिनी जर से जर जाती है वैसे ही यहा कायरों का तो पता न पडा केवल कुल कमल सपूत शत्रु सेना रूपी विरहिनी का हृदय विदारने को उद्यत थे। एक तरफ से पृथ्वीराज मार कर ही रहा था दूसरी तरफ किले से निकल कर सामन्त मडली ने भी हथियार चलाए। बाकी मूछों वाले बाके बाके जवान जब बांके तेगों के बाके बाके हाथ करते थे तो मय टोप बख्तर कटने में बधिया बाकी न रहती थी। कुछ देर तो जैचन्द के सिपाहियों ने खूब पराक्रम किया, पर दो की दाव बुरी होती है अन्त में सब तीन तेरह होकर भाग उठे। इस प्रकार से पग सेना परास्त हुई और दिल्ली के किले का बाल बाका न हुआ। इस जुद्ध में, पूरनराय प्रमार, नारेनराय के दोनों भाई, दो पुत्र बाघसिंह के, हरसिंह गौरी, हरिया राय बग्गरी ये योद्धा खेत रहे और भीम भट्टी नाराइन राव, जैतसिंह, जोगा जघारा, कन्ह छोंकर, आदि बीरों के शरीर में घने घाव आए। जैचन्द के जो सिपाही मारे गए उनकी तो गिनतीही नहीं पर ६४ रावत् अत्यन्त घायल हुए और केहरि कठेर और कन्ह भी कन्नौज को अधमरे वापिस गए।

धन्य है! सूर सामन्त समर में प्राण तजकर सहज ही जो गति पाते है वह बडे बडे योगियों को भी दुर्लभ है। हजारों वर्ष उलटे टंग कर हर हर करने पर जिस पद से भेंट नहीं होती उसे शूर वीर एक झपाटे मे पा लेते है। कवि कहता है कि भाइयो क्षत्री तन धर कर इस तन को तिनूका की तरह तजने से तनिक न हिचकना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से केवल आगा ही नहीं बनता वरन पीछे के भी सब कर्म-पाप नाश हो जाते हैं।।।



समर पंग युद्ध नाम प्रस्ताव।

[छप्पनवां समय।]

---o---

समस्त दिल्ली प्रदेश में हलचल मचाने के पश्चात् जैचन्द की चतुरंगिनी चमू ने चित्तौर की तरफ कूच किया। अनहद नाद की नाईं भेरी न-फेरी, और धौंसा धमकाती हुई पंग सेना के कूच मुकाम के आतंक से दिशाओं में कुहरा सा छा गया मानो जैचन्द की सुकीर्ति ने इसी स्वरूप से संसार की सैर करने का अनुष्ठान किया हो। बड़े बड़े गरबीले लोगों का गर्व गिरानेवाली इस पंग सेना की चढ़ाई का समाचार चित्तौरपति रावल समरसिंहजी ने भी सुना।

शाबास! शूर शिरोमणि समरसिंहजी ने शत्रु के सम्मुख आने का समाचार पाकर प्रसन्न मन होते हुए हुक्म दिया कि जंगी तय्यारियां की जांय और इधर प्रजा के दस प्रतिनिधि राज्यकर्मचारी और सगे सम्बन्धियों को बुलाकर वे प्रस्तुत प्रबन्ध के लिये सलाह करने बैठे। रावल समरसिंहजी ने सब से कहा "आप लोग हम से वय बुद्धि सब बातों में बड़े हैं। इसलिये सोच विचार कर ऐसी सलाह दीजिए जो इस अवसर पर काम आवे"। रावलजी के इस कथन पर जिसकी जैसी बुद्धि थी सो बोल उठे। कोई बोले लड़ाई लेनी चाहिए और कोई बोले महाराज यह जीवन है तो सब कुछ है। किसी ने कहा मुक्ति में सब परे हैं किसी ने कहा इस संसार सा-गर में जिसकी लाज का जहाज न डूबा सोई सुखी है। किसी किसी ने फिर भी यही कहा "आप मरे जग डूबा" जौलों जीते हैं तौलों सब कुछ है, आब सिंची फिर कौन देखता है कि किसका भला किस का बुरा। अन्त में सबने यही कहा कि हम सब [illegible] चूंकि आप जो आपको श्रेय [illegible] [illegible] जीवन में [illegible] [illegible] है। [illegible] मानना ही सार है जिसमें दोनों हाथ

लड्डू है। माना कि यदि (कर्त्तव्यपरायण पुरुष) जीवन मुक्त न भी हो तो वह नर्क में भी सुखी रह सकता है। यदि वह पुनः जन्म भी पावे तो धन्य है उस पुरुष को जिसके घर वह जन्मे। क्योंकि सद्गुरु की कृपा से फिर तो उसे यह संसार स्वप्न-वत होता ही है। लोगों के देखने दिखाने को चाहे जैसा हो पर अन्तःकरण में बोध होजाने से अन्त में आपही त्याग उत्पन्न हो जाता है।" अन्तः रावलजी बोले। कि शत्रु को शस्त्र प्रहार से ही परास्त करना उचित है।

रावल समरसिंह जी बोले 'सुनो इस प्राण वायु के वायु मंडल में लीन हो जाने का ही नाम मुक्ति है। यह पंचतत्व मय तन पिंजर जिसमें यह पंचे(१)-प्राण-रूपी-पंछी जीव निवास करता है, पाँचे(२) दरवाजे का है। ज्ञान द्वारा संशय का नाश होने से तो जीव जीवनमुक्त हो जाता है और इसके बिना अज्ञान के कारण चंचल मन के चरखे पर चढ़ा हुआ पाँचो दरवाजो में चक्कर लगाया करता है, परन्तु अनहद शब्द रूपी किवाड़ों के कारण निकल नहीं सकता। इस लिये गुरु की बतलाई हुई शास्त्रोक्त योग युक्ति से चित्त को एकाग्र कर के अनहद शब्द के सुनने का अभ्यास करे और काम क्रोध लोभ मोह आदि विकारों से रहित होकर ब्रह्मरंध्र में स्थित उज्ज्वल वर्ण प्रकाशमान ब्रह्म का ध्यान धरे अर्थात् योगासन मारकर मन को एकाग्र कर अपनी दोनों भौंहों के बीच नजर स्थिर कर अंगुष्ट प्रमाण लिंग शरीर का ध्यान करे। पहिले पहिल गुरु की बतलाई हुई युक्ति से एक मोती बराबर बिन्दु पर ध्यान जमाया जाता है, किंचित काल में यह मोती अंडाकार देख पड़ने लगता है फिर उसी से अखंड प्रकाश का दर्शन होने लगता है। इस प्रकार से उस अनन्त प्रकाश का द[illegible]

---

(१) पंच प्राण – प्राण अपान, समान [illegible] उदान।

(२) कान नाक मुख लिंग गुदा ये पांच [illegible] पांच दरवाजे माने गए हैं।

होने पर संकल्प विकल्प एवं संशयों का नाश हो-जाता है और अन्त में मोक्ष पद प्राप्त होता है।

तब रावल जी का मंत्री विनीत भाव से बोला कि अन्नदाता इस कलिकाल की माया बड़ी प्रबल है। एक छिन भी मनुष्य का मन ठिकाने नहीं रहता। घरी में इधर तो घरी में उधर। कभी खुशी से फूल-कर कुप्पा होजाता है तो कभी शोक से सूखकर काटा होजाता है। कभी ऐसा त्याग बैराग उपजता है कि ससार का कुछ भी नहीं सुहाता और कभी मोह की प्रबलता के कारण दुनिया भर की बला अपने सिर लेने की सूझती है।

रावल जी बोले सुनो! इस पंचतत्व रचित शरीर के बहत्तर कोठे हैं, जिनमें अस्सी प्रकार की वायु वास करती है। हे मन्त्रिवर! यह शरीर समुद्र के समान है जिसमें हमेशा बुद्धि रूपी तरंगें उठा करती है। इसमें नाना प्रकार के तर्कवितर्क रूपी मत्स निवास करते हैं और भाति भाति के भेदाभेद ही मानो भौंर पडा करती है। शीलरूपी नीले जल में क्रोध का खारापन भी विद्यमान है और विद्याही इस मे रत्न हैं। ऐसे शरीर के अन्दर जीव नाम से आत्म स्वरूप परमात्मा का बास है। उस चिदानद परमात्मा की त्रिकाल बन्दना करने से मनुष्य शीघ्रही त्रिकालज्ञ हो सकता है। उसे इसका भी ज्ञान हो जाता है कि मेरी कब मृत्यु होगी और वह मृत्यु के समय समाधि स्थित होकर पीतपटधारे घनश्याम का स्मरण करते हुए मौत को बर सकता है। सन्ध्या के समय गोधूली बेला मे धवल एवं धूम्रवर्ण का ध्यान धरना चाहिए और प्रात. काल के समय [illegible] ज्योति के मध्य भाग की प्रभा पर ध्यान जमाना चाहिए। उसमें प्रथम दूज फिर [illegible] और फिर अष्टमी के चन्द्रमा का सा [illegible] होने लगता है। तब काल [illegible]

स्वरूप के दर्शन होने लगते है। परन्तु इस सब का मूल रेचक कुभक पूरक इन तीनों नाडियों की साधना से होता है। यही योग का जतन है। इस लिये इस समर रूपी समुद्र में तलवार की धार रूपी लहरें उठा कर सुकीर्ति रूपी कलानिधि को प्राप्त करना उचित है।

कनकराय रघुवंशी ने कहा "मुझे एक बात का बडा संदेह है कि कभी तो चित्त मे अतुलित आनद की उमगे उठा करती है और कभी सहसा शोक उत्पन्न हो जाता है। कभी योग की इच्छा होती है। तो कभी शृंगार रस की वासना श्रेष्ट हो जाती है। कभी दीनता और दरिद्रता का भाव प्रधान हो जाता है। और कभी हितू से भी अनिच्छा और विग्रह उत्पादक विचार उत्पन्न होने लगते है। इसपर रावल समरसिंह जी बोले "वास्तव में इस बासना भेद में विलक्षण भेद भरा हुआ है—कंठगत-प्राण होने के समय जो वासना चित्त में बसी रहती है उसी के अनुसार गति मति होती है अर्थात् दूसरे जन्म में उसी के अनुसार भोग भोगना पड़ता है। सुनो जो कुछ मैं कहता हूं उस पर ध्यान दो और विश्वास करो! पूर्व्व, दक्षिण, उत्तर, पश्चिम अग्नेय, वायव्य, नैऋत, ईशान, ये आठ दिशाएं हैं। इस सुख दुःख रूपी शरीर सरोवर में एक अष्टदल कमल प्रफुल्लित है। उस कमल का पूर्व्व दिशा वाला दल लाल वर्ण का है, मन मकरद के उस पर जा बसने मे गौरव वृद्धि कल्याण और दान इत्यादि शुभ कर्म्मो की इच्छा उत्पन्न होती है। अग्नेय दिशा की पखुरी नीलवर्ण है, उस पर मन रमने मे त्रिदोष की वृद्धि होकर मरण पर्य्यन्त परिणाम होता है। उत्तर दिशा का दल पीत वर्ण है उसमें भोग का त्याग होकर जोग में अनुराग कराने की शक्ति है। नैऋत दिशावाला दल धूमले रंग का है और उसकी वा-सना से [illegible] की उत्पत्ति जाने। पश्चिम दिशावाला दल [illegible] है और उसमें [illegible] की वासना का वास है। [illegible] दिशावाला दल [illegible] है और [illegible]

[illegible]

शान्ति रस की उत्पत्ति होती है। ईशान दिशावाला दल विलक्षण मिश्रित रंग का है उस पर मन जाते ही भ्रमण में पड जाता है और उच्चाट चित्त होने से कहीं भी दिल नहीं लगता। उसी कमल का प्रकोष्ट यानी मध्य भाग ब्रह्ममय है। यह चचल चित्त कृत-कर्मों के वशीभूत होकर वायु बाधित दीप शिखा की तरह डुलता फिरता हुआ उसी कमल के प्रत्येक दलों पर दौडा करता है। अस्तु एक अकेले इस मन को हाथ में करने से सब साधनाएं सहज हो जाती हैं। भाइ इस मन को ही सब प्रपचों का मूल समझो। यह मनही लिप्त होता है और यही घर घर अवतार धारण करता है। यही कर्म बधन में फसाता है और यही कर्मो से उबारता है। यही इधर उधर भ्रमता है और यही सुखी दुखी होता है। अन्तरात्मा का तो इतर प्रपचों से रच भी लगाव नहीं है; अतः सद्गुरु की कृपा से जो यह मन अज्ञान से रहित होकर ज्ञान में रग जाय तो सब दुःख दूर हो जाय और मुक्ति मार्ग भी सहजही मिलजाय। इसलिये मन को रोककर युद्ध के लिये सन्नद्ध होजाओ। एकाग्र चित्त होकर युद्ध में मरने से मुक्ति मिलती है परन्तु वासना लिप्त होने से फिर भी कर्म बधन में पडना पडता है।

ढुंढरह राय ने कहा महाराज आप तेजपुज सूर्य्य वंश में उत्पन्न हैं। आप वीर हैं और अपने कुल की लीक के अनुसार आचार विचार और साहस भी आप में विद्यमान हैं। तदनुसार आप युद्ध के लिये सन्नद्ध होनाही सलाह समझते हैं, परन्तु राज्य की रक्षा करना भी तो राजा का परम धर्म है। सबल से बैर बिसाहने में धन और जन दोनों की हानि है। इस पर रावल जी ने उत्तर दिया कि भाइयो शीत रूपी भीतिता को भगा कर गरबीले ग्रीष्म का वेष धारण करो और शत्रु दल का दाह करने में प्रवृत्त हो जाओ। यह कहकर रावल जी ने अपने अतरग मित्र सु-मंत प्रमार की ओर देखा। तब सुमत बोला कि भाइयो ढील ढाल कुछ नहीं तेज ही माननीय है। एक गरुड सहस्रों सर्पों के समूह का विनाश कर सकता है। एक अगस्त इतना बडा उदधि अचै गया। एक राहू उडगन समूह के होते हुए भी चन्द्रमा का ग्रास करता है और सिंह हाथी का शिकार करता है। इसी प्रकार रावल जी भी पर ऐसे प्रबल शत्रु को परास्त करने में सहज समर्थ हैं। अवसर पाकर सिंह प्रमार बोला कि शत्रु प्रबल है इससे रात्रि को धावा करना उचित होगा, बात की बात रहेगी और सब प्रकार की हानि से भी बचेंगे। परन्तु यह प्रस्ताव समरसिंह जी ने स्वीकार न किया। उन्होंने कहा उज्ज्वल अशुमाली भगवान के उजेले में उज्ज्वल मन से उज्ज्वल इष्ट देवों की आराधना करते हुए उज्ज्वल अस्त्र शस्त्र सम्हालो और उज्ज्वल कर्तव्य-धर्म पालन करके उज्ज्वल दिशाओं में अपनी उज्ज्वल सुकीर्ति का उजेला प्रकाशित करो। उज्ज्वल हृदय से उजेले में युद्ध करने से ही वीरों का मुख उज्ज्वल होता है। और भी सुनो! यह मनुष्य शरीर सुकीर्ति विस्त्रित करने के ही लिये दिया जाता है इस लिये सुकीर्ति के लिये तन तजना जरूरी है। जो होनहार है सो अमिट है। लोग कहते हैं, ये मेरा ये तेरा, पर अन्त समय पर कोई भी काम नहीं आता। इस लिये इन दुखद प्रपचों का विचार छोड कर समर में तन तज कर ससार की सार वस्तु मुक्ति से मुख मोडना शुभ नहींहै। इस दुःख मय जीवन में सुख की आशा करना बडी भारी भूल है।

रावल समरसिंह जी के ऐसे बचन सुनकर सुर वीर सिपाहि सन्नाह चढा कर और अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर पर सेना से जग लेने के लिये सन्नद्ध हो बैठे। उनके कान्ति मय उज्ज्वल शरीर पर झूमले बख्तर ऐसे मालूम होते थे मानों राहु ने सूर्य्य को सर्वाङ्ग ग्रास करलिया हो। शृंगीनाद के भीषण स्वरसे अथवा अन्यान्य जगी बाजों के बजने दिशाओं में दुहचाल सा मचगया। और शूरवीरों के चेहरे सूर्य्य से दिप उठे। छत्तीसों प्रकार के शस्त्रों बानों से सुसज्जित होकर चित्तौरपति की चतुरगिनी चमू सैचन्द का मोरचा मारने के लिये

चली। इस सेना को साम्हने आते देखकर जैचन्द ने अपनी तलवार सम्हारी और हाथी से उतर कर वह अपने माणिक नाम घोड़े पर सवार हुआ। वह भीमकाय घोडा क्या आग का पुतला था। जैचन्द को पीठ पर लिये चौकड़ी भरकर चलता हुआ द्रोनागिर को लिए हनुमान जी सा जाता जान पडता था। उसकी पूछ का भौंर चन्दन कीसी चौर छहरा रहा था और उसके नाल दूज की सी जुन्हैया चमचमाते थे। वह पखी की भांति फरफराता हुआ घोड़ा उच्चैश्रवा का सा जोडा जान पडता था। उस की कलँगी से तो मयूर का धोखा होता था।

उस दिन चैत्र सुदि * पूर्णिमा सोमवार था। समरसिंह और पंग सेना का प्रथम युद्ध खारीनद के पास दुरगापुर के मैदान में हुआ। दोनों दलों का दिखादाव होते ही इधर से रावल समरसिंह जी और उधर से जैचन्द ने अपने अपने घोडों की बागें उठाई। रावल जी के साथ में उनके सरदार कन्ह, जैत, नारेन, मानसिंह, मल्हनदेव, अमरसिंह, प्रतापसिंह बलिभद्र आदि ने भी अपनी अपनी अनी कनी सेना सहित शत्रु सेना पर धावा किया। तीर तुबक की तो किसी ने बात ही न पूछी दोनों ओर के राजपूत योद्धा चपला सी चमचमाती हुई तलवारें निकाल कर वार करने लगे। रण वाद्यों के रव और हाथियों के घंटो की ठनठनाहट के मारे कान नही दिया जाता था। दोनो दलों का जुड़ाव पावस के युगल बदलों के जुटाव से कम न था। पल भर में लोहे के झलाझल छींटे वर्षा कर वर्षा की बहार दिखाने लगे। हाथी के कुंभस्थल में पैठती हुई तलवार बादल में बिजली सी समाती जान पड़ती थी। और हाथियों के फ़िलाए पर देटे महावत सिंह से देख पडते थे। रावल जी के सिपाहियों ने पग दल को खूब दबाया परन्तु एक जगह रावल जी बुरी तरह से गस गए। उस समय पग सेना चारों ओर से दब गई और रावल जी ने बाग उठाई। पग दल के सिपाहियो ने बडे वेग से मार मचाते हुए समर सिंह जी को पकड़ लेना चाहा, परन्तु उस समय समरसिंह ने विकट वाराह रूप होकर समस्त दल बल को विदार दिया और हाथ उठा कर अपने सिपाहियों से कहा "देखो भाइयो ऐसा सुअवसर फिर न मिलेगा, जैसे ग्रीष्म की दुपहरी में जल पिलाने से ज्यादा और कोई पुण्य नहीं है वैसेही युद्ध मे प्राण देने के अतिरिक्त मुक्ति सुद्वार का भी अन्य कोई सरल मार्ग न जानो। इतना सुनतेही वे सूर वीर सिपाही जिनके हाथ तो थक गए थे परन्तु मन न थके थे, बडे वेग से बढे और शत्रु सेना को काट काट कर पाटने लगे। सायंकाल होजाने के कारण उस दिन का युद्ध बन्द हुआ।

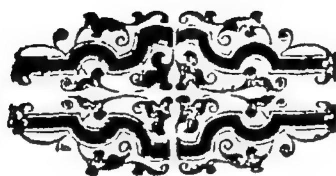
दूसरे दिन पुनः प्रातः काल से छिड़ा। पहिले दिन के युद्ध में पगसेना बहुत पीछे हटगई थी। दूसरे दिन का युद्ध उसी जगह पर हुआ जहा से गुजरात का राजा भीमदेव हार कर भागा था। एक तरफ से पग दल दूसरी तरफ से समरसिंह जी की सेना ने फिर से युद्ध के लिये कमरें कसीं। अपने अपने स्वामियों की जै की अभिलाषा करने वाले वीर तमक तमक कर तलवारों के वार करने लगे। दो पहर होते होते दोनों ओर के दो हजार सिपाही और उन्नीस सर्दार खेत रहे। परन्तु अन्त में अवसर पाकर समरसिंह जी ने पग सेना को चारों ओर से घेर लिया और नाके बांध कर मार मचाई। उस समय एक के ऊपर एक पड़ी तड़फड़ाती हुई लाशें ऐसी जान पड़ती थी जैसे थोड़े पानी में मछली तड़प रही हो। कन्ह, जैत, जैसिंह, सामन्त सूर, रूप राम, नारायण, मोहनसिंह, आदि और खेत रहे पर अन्त समरसिंह जी की हुई और पग सेना हार गई। जैचन्द का [illegible]

(१) सूर्य के रथ का सात मुंहवाला घोड़ा जो समुद्र से उत्पन्न हुआ माना जाता है।

* [illegible]

अधिक घायल हुआ था इसलिये उसे डोली में लिवा कर जैचन्द कन्नौज को उलटा गया और चित्तौर में जीत के नगारे बजने लगे।

धन्य भगवन ! जिस संयोगिता के लिये यह सब खून खराबा हुआ वह समय पाकर पृथ्वीराज के हाथ लगी पर लगी।



कैमास वध समय।

(सत्तावनवां समय।)

दिल्लीपति पृथ्वीराज शस्त्र बल से शत्रु समूह को शमन कर स्वच्छन्दता पूर्व्वक राज्य श्री का सुख भोग कर रहा था। उसका पुत्र राजकुमार रेणुसिंह भी अश्व पर सवार हो अहर्निशि अहेर के फेर में फिरा करता था। राजकुमार रेणुसिंह और चामंडराय का परस्पर घनिष्ट स्नेह था। वे दोनों मामा भाजे एक दूसरे के बिना क्षण भर भी नहीं रहते थे। खाते पीते सोते जागते दोनों एक दूसरे मे घरी भर के लिये भी विलग नही होते थे। उन दोनों का ऐसा स्नेह चंदपुडीर से न देखा गया। उसने एक दिन अवसर पाकर राजा पृथ्वी-राज से कहा कि चामड राय ने राजकुमार पर अपना विशेष प्रभाव जमा रक्खा है। मुझे तो कुछ 'दाल में काला' मालूम होता है। क्या जाने क्यों। यह कलिकाल का समय है और राज्य का प्रलोभन बुरा होता है!! चदपुडीर के ये वचन चहुआन के चित्त में चुभ गए। उसने उस समय तो कुछ न कहा पर उस के दिल में गाठ पड गई।

सवत् ११५१ आषाढ़ सुदी ९ वीं की बात है। पूर्व दिशा में कुछ धूमले वर्ण का चन्द्रमा दिखाई दे रहा था। राजा पृथ्वीराज ने शतरज खेलने की इच्छा की। शतरज बिछाई गई। एक बाजी पर राजा स्वय था और दूसरी पर राज्यमंत्री कैमास। राजा के दाहिने पार्श्व में पज्जूनराय और चद सेन, बाएं पार्श्व में जैतराव और सामहने निढ़ुर और कान्ह बैठे हुए थे। इनके सिवाय सलख लक्खन विझराज आदि और भी दस पांच सामन्त इधर उधर बैठे थे और कविचद कवित्त पढ़ रहा था। बदली देखने का कुछ रग देख कर राजा ने प्रातःकाल वन विहार के लिये जाने की इच्छा की। [illegible] दूसरे दिन [illegible] सबेरे से सब लोग [illegible] परन्तु [illegible] और घटाके की घाम निकल पड़ी इसलिये उस समय तार मुल्तवी हो गया। सबेरे से दोपहर पर्य्यन्त तो घाम रहा, परंन्तु दोपहर के बाद चारों ओर से कारे कारे बद्दल झुक आए। अस्तु राजा पृथ्वीराज, कैमास, कन्ह, पज्जून राय, चन्द्रसेन, चामड राय, निढ़ुरराय, सलख, लष्खन बघेला, विंझराज आदि सामन्तो सहित हदफ खेलने के लिये जंगल की तरफ निकल गया। सध्या होते ही रिमझिम मेह भी बरसने लगा। इसलिये राजा ने समाज सहित घर की ओर प्रस्थान किया। राजा महलों को आए और सब सामन्त लोग अपनी अपनी हवेलियों को चले।

राजा पृथ्वीराज का खास हाथी शृंगारहार मदे लगा हुआ था। यद्यपि वह किले के भीतर बड़े बन्दोवस्त के साथ बँधा हुआ था परन्तु जिस समय आषाढ़ का बदर गरजा और टिपकारी बड़ी बड़ी बूँदें पड़ने लगीं तो हाथी साकल तोड़ कर चल दिया। भालेवर्दारों और महावतों के हजार हजार उपाय करने पर भी हाथी थिर न रहा और शहर के बड़े बड़े मकान ढहाता हुआ मनमाना डोलने लगा। एक सकरी गली में चामडराय और शृंगारहार का आमने सामने मुकाबला होगया। चामडराय को देखते ही हाथी ने चीड़ भरी। परन्तु चामडराय क्या हाथी के सामने पीछे पैर दे। यदि दे भी तो हाथी की सीध से बचकर जाय कहां? उसने भी म्यान से तलवार निकाल ली और ज्योंही हाथी मेर में आया कि उसने एक ऐसा हाथ मारा जिससे मय दातों के भसुड से सुड अलग हो गई और शृंगारहार एक चिक्कार मारकर वहीं मर गया।

जब यह बात पृथ्वीराज ने सुनी कि चामडराय ने हाथी मार डाला तो वह मारे क्रोध के कांप उठा। उसी समय उसे चदसेन पुडीर की बात भी स्मरण आई। बस फिर क्या था उसने पडित गैसदेव को

---

(१) हाथी के सुड उठाकर [illegible] करने को [illegible] भरना कहते हैं।

(२) यह बड़ा हाथी था जिसे [illegible]

(३) [illegible]

बुला कर कहा कि जाओ चामंडराय के पैरों में बेडी भरो, यदि इस समय तुमने मेरे सम्बन्ध के बड़प्पन का विचार करके जरा भी आनाकानी की तो तुम अपनी भी कुशल न जानो। इतने में हाहुलीराय हम्मीर और पज्जूनराय भी आगए। उन्होंने कहा कि ठीक तो है। आज हाथी मारा कल्ह और कुछ कर बैठें, क्या ठिकाना! स्वामी की इच्छा के विरुद्ध कार्य्य करना सर्वथा नीतिविहित है। हांसीपुर के मैंडे से पूँछ दबा कर भागे थे, यहां हाथी पर सूरवीरी सूझी। परन्तु पृथ्वीराज ने कहा कि चामंड राय मारा न जाय ऐसा करने में बडा अपयश होगा। गुरुराम के साथ में लोहाना आजानबाहु को देकर कहा कि तुम दोनों जने जाओ और समझा बुझाकर चामंड के पैरों मे बेड़ी भर आओ।

जब यह चर्चा चामंडराय के कान पड़ी तो वहां उसके दो हजार भाई बेटे (दाहिमवशी राजपूत) बात की बात में अताने बनाने से सजकर दुरुस्त हो बैठे। परन्तु चामंडराय ने सब को समझा कर शान्त किया और कहा भाई सेवक का यह धर्म नहीं है कि स्वामी के सम्मुख हथियार पकडे। जिसका अन्न खाया, जिसे देवता करके माना, भला उससे लडना कैसे बनता है। ऐसा करने मे न तो लोक में यश है न परलोक में सुख है। गुरुराम ने चामंडराय के सम्मुख जाकर राजा की आज्ञा कह सुनाई और बेड़ी साम्हने रख दी। स्वामिभक्त चामंडराय ने चुपके से अपने ही हाथों अपने पैरों में बेडी चढ़ा ली। जैसे मतवाला हाथी अंकुश की अनी को और भारी भारी सर्प गरुड की आन को मानते हैं वैसेही नीतिवान चामंडराय ने बिना आनाकानी किए स्वामी की आज्ञा को प्रसन्नता पूर्व्वक सिरोधार्य्य कर लिया। धन्य हैं! वह समय तो गया परन्तु चामंडराय के शील की चरचा अबलों चल रही है और चलेगी। होनी थी सो तो हो गई परन्तु यह बात खटकी सबको!

सच है! बड़े से बैर बिसाहना बुरा होता है *

जैचंद के डर से पृथ्वीराज दो दिन भी दिल्ली में नहीं रहता था। समस्त राज्यकार्य्य कैमास के हाथ मे छोड़ कर आप जंगल में शिकार खेलता फिरता था। निदान चामंडराय को बेडी पहना कर पृथ्वीराज फिर भी दुरगा-बन को शिकार खेलने चला गया और कुछ सामन्तों सहित कैमास दिल्ली में रह कर सावधानी के साथ राज्यकार्य्य करने लगा।

भादों बदी १० गुरुवार की बात है। कोई एक घड़ी दिन चढ़ा होगा। आकाश में अंधाधुन्ध बादल छाए हुए थे। मोर शोर मचा रहे थे, मेंढ़क टर्रा रहे थे और बगुले श्रेणीबद्ध होकर बदरों के नीचे नीचे उड़ रहे थे। दसों दिशाओं में अन्धेरा सा छा रहा था और बदरों की गर्जना से तो ऐसा भान हो रहा था मानों प्रकृति पर विजय पाकर पावस स्वयं अपने निशान बजा रहा हो। उसी समय कैमास कतिपय सामन्तों और सिपाहियों सहित घर से राजमहल को आया। इधर जोबन की मजेज में भरी हुई कर्नाटकी दस पाच दासियों सहित सजीबजी बैठी प्रकृति का आनन्द ले रही थी। दैवयोग से कैमास की और उसकी नजरें चार हो गई। नजरें चार होते ही दोनों के हृदय पर मार की मार सी पड उठी और दोनों एक दूसरे के हिये का हार होने के लिये बेहाल हो गए। स्त्रियाँ तो स्वाभाविक ही चचलचित्त होती है तिस पर दासी और फिर भी राजा का महलों में न होना, इन सब कारणों से कर्नाटकी का चलचित्त होना एक प्रकार से उचित भी हो सकता है, परन्तु होनहार बश बुद्धिमान कैमास भी इस समय रसवश होगया। क्या कहें! इस संसार की रीति, भाति कुछ विलक्षण ही है, जैसे भौंरी का चित्त तो भ्रमर में बसता है परन्तु भ्रमर कुसुम रस की आशा में व्यस्त रहता है अथवा जैसे परब्रह्म प्रत्येक पुरुष मे रमकर उसे शक्तिमान बनाए है परन्तु पुरुष अधर्म में रत रहता है। तैसे ही पृथ्वीराज तो सब तरह मे कैमास के बलभरोसे था परन्तु कैमास कर्नाटकी के रस में फँस गया। कैमास या कर्नाटकी को क्या दोष है, होनव्य प्रबल होती है।

* समत राज आखेट रत भय। पट रानी कैमास सत रय।

समस्त दिन राज्य कार्य्य करके शायकाल होते ही कैमास घर को गया। ज्यों ज्यों रात्रि भीजती जाती थी त्यों त्यों कैमास का हाल बेहाल होता जाता था। इधर कर्नाटकी का भी यही हाल था। जब से उसकी कैमास से नजर मिली तब से उसे पलभर भी कल नहीं पड़ती थी। प्रहर रात्रि जाते जाते कर्नाटकी अधीर हो उठी और उसने उसी समय एक दासी को कैमास के पास भेजा। कैमास तो आप पडा तड़फ रहा था, कर्नाटकी की दासी को देखकर दंग हो गया। उसने उसी समय दासी के कथनानुसार स्त्री-वेष धारण किया और दासी के साथ हो लिया "जो कैमास अपनी बुद्धिमत्ता के लिये जहान में जाहिर था, जो कैमास साक्षात् दिल्ली राज्य की ढाल था, हा! उसका ऐसा लपटपन! उसकी ऐसी नीच करतूत, धन्य है! दैव बलवान है" कैमास दासी के हाथ में हाथ दिए महल के अन्दर हो गया। यद्यपि चारों ओर से खूब घनघोर बद्दर चढा हुआ था, हाथों हाथ नहीं सूझता था परन्तु चन्दन की महक और पैर के भारीपन की आहट से पटरानी इछिनी के मन में सन्देह हो गया, इस लिये वह खिडकी से झॉक कर देखने लगी। तब तक बिजली भी चमचमा उठी तो इछिनी देखती क्या है कि कोई स्त्री वस्त्रधारी पुरुष कर्नाटकी की अटारी की सीढियॉ चढरहा है। यह देख कर रानी सन्न होगई। तब तक उसका सुगा बोला, देखा आज कौआ कस्तूरी खा रहा है। जानती है! कर्नाटकी के घर में कौन है!! नहीं जानती तो जान ले। वह कैमास है!!!

कैमास तो कर्नाटकी के पास पहुंचते ही मानो संसार को क्या अपने को भूल भी गया। इधर रानी इछिनी ने एक सखी के हाथ पर काजल से सन्देसा लिख कर उसे पृथ्वीराज के पास प्रेषित किया। दासी घोड़े पर सवार होकर दो घड़ी में राजा के पड़ाव पर जा पहुंची। उसने घोड़े को तो एक पेड़ से बॉध दिया और आप राजा के शिविर में गई तो देखती क्या है राजा पृथ्वीराज अपनी तीर कमान बगल में रक्खे पडा हुआ बेसुध सो रहा है और उसके सखा सामन्त लोग भी उसी तरह घोर निद्रा में निमग्न हैं। यह देखकर दासी ने मन में कहा, जिसने जैचन्द का यज्ञ भंग करके उससे बैर बिसाहा, जो बादशाह को पकड़ कर बार बार छोड़ देता है, जिसके चारों ओर शत्रु चील्ह से मड़रा रहे हैं वह पृथ्वीराज इसतरह पडा हुआ बेसुध सो रहा है। ईश्वर इसकी रक्षा करे। ऐसा विचारती हुई दासी आगे बढी। यद्यपि उसके नूपुर की ध्वनि से राजा कुछ सचेत सा हो गया परन्तु उसे अपना भ्रम समझ कर उसने ऑख न खोली, किन्तु जब दासी ने पास जाकर छाती पर हाथ रख दिया तब तो वह चटपटाकर उठ बैठा और दासी की गदेली पर का लिखा हुआ सँदेसा पढ कर पूछ दबाए हुए सर्प की तरह गुस्से में भर गया। लिखा हुआ यह था "आप तो वातूल से बाधित तिनके की तरह इधर उधर मारे मारे फिरते हैं यहा की भी खबर है क्या हो रहा है?" कच्ची नींद से जगे और गुस्से से भरे पृथ्वीराज का मुखमडल मंगल ग्रह की भांति जाज्वल्यमान होरहा था। दासी तो देखकर मारे डर के थरथर कॉपने लगी, परन्तु जब राजा ने कहा कि डर मत कह बात क्या है? तब दासी बोली, क्या कहूं इस समय आपका मंत्री कैमास दासी कर्नाटकी के साथ रम रहा है।

दासी की बात सुनते ही पृथ्वीराज बिना किसी से कहे सुने तरकस कस, कमान हाथ में लेकर अश्व पर सवार हो चट से रफूचक्कर हुआ और रानी इछिनी के महल में आ पहुंचा।

पृथ्वीराज ने आते ही पूछा "क्या है?" रानी इछिनी बोली दासी कर्नाटकी के महल में कोई पुरुष है। मैं नहीं कह सकती कि वह कौन है, कोई देवता है या गन्धर्व है या यक्ष है? अब तक यह हाल दासी रानी इछिनी और पृथ्वीराज के सिवाय और किसी को भी मालूम न था—रानी इछिनी ने राजा के साथ होकर कर्नाटकी और कैमास को दिखा दिया। देखते ही पृथ्वीराज [illegible]

[illegible]

है। रानी इछिनी तो उँगली से बताकर दूर हो गई और राजा का हृदय क्रोध से काँपने लगा। उसने कुछ सावधान होकर सोचा "दासी तो नीच है उसे क्या कहूँ, पर कैमास का ऐसा कर्म ? योंही सोचते विचारते राजा ने बाण संधाना, परन्तु अँधेरा अधिक होने के कारण निशाना लक्ष करना तनिक कठिन था, दैव योग से उसी समय चपला ने चमक कर मानों कैमास के बध में स्वयं सहायता दी। चपला के चमकते ही पृथ्वीराज ने बाण छोड़ा परन्तु क्रोध के अधिक आवेग के कारण मूठ डुल जाने से निशाना चूक गया। पीछे खड़ी हुई इछिनी से दूसरा बाण लेकर राजा ने ज्यों छोड़ा त्यों ही कैमास डाल से चूके हुए बन्दर की तरह गिर पड़ा " हा ! अर्जुन और राजा दशरथ तो इस लोक में है ही नहीं, स्वामी पृथ्वीराज तो आखेट में रम रहे है इस बाण का चलाने वाला तीसरा और कौन है।" यही सोचते सोचते कैमास इस असार संसार से सदा के लिये विदा हो गया।

कैमास के कलेजे में बाण लगते ही रुधिर की धार निकल पड़ी और चित्रसारी की सारी भूमि लाल हो गई। बद्दल बड़े जोर से तड़तड़ाता और कहीं गाज भी गिरी। ललाट पट में लिखे हुए अक्षर अमिट है, एक दासी के कारण पृथ्वीराज के हाथ से कैमास का मारा जाना ! जिस कैमास ने खट्टू वन का असंख्य धन खोद निकाला जिस कैमास ने पड़िहारों को हराकर साम्हर पर कब्जा किया, जिस कैमास ने शाह शहाबुद्दीन को कई बार बाँधा, जिस राज्य मंत्री कैमास की नीति चातुरी के कारण चातुर्दिक चील्ह से मंडराता हुआ प्रबल शत्रु दल दिल्ली राज्य को आज लों कोई हानि न पहुँचा सका और जो कैमास सदा पृथ्वीराज के चित्त में बसा रहता था आज उसी कैमास की यह दशा ? राजा रामचन्द्र के सिवाय और कौन पुरुष जितेन्द्रिय हुआ है ? नरनाह काका कन्ह, चामंडराय, हरसिंह, रामराय मल्लन, कनकरायबड़-गूजर, इन सबके घर दो दो स्त्रियां थीं और सब प्रायः परस्त्रीगामी थे, कैमास यदि दासीरत हुआ तो क्या ? जिस कैमास ने तोमरों से दिल्ली का राज्य लिया, जिस कैमास ने बालुकाराय को मार कर जैचंद का यज्ञ विध्वंस किया, जिस कैमास ने गुजरात के राजा भीमदेव को जीता और जिस कैमास ने छः बार शहाबुद्दीन को कैद किया, वही कैमास होनहार के वश होकर कर्नाटकी के कारण कालकवलित हुआ। हा ! इश्वरेच्छा बलीयसी। कोई किसी बात का गर्व करे तो वृथा है। पृथ्वीराज ने कैमास की लाश को तो उसी समय जमीन में गाड दिया और कर्नाटकी को एक गोख में चुन दिया। इतना करके पृथ्वीराज दो घड़ी पाँच पल रात्रि रहे महलों से शिकारगाह को लौट गया, परन्तु प्रातःकाल मालूम हुआ कि नटखट कर्नाटकी गोख से निकल भागी।

इधर तो यह हाल हुआ उधर कविचन्द ने स्वप्न मे देखा कि मानों उससे कोई कान में कह रहा है कि सोता क्या है राजा ने कैमास को मार डाला। यह सुनते ही कविचन्द अकबका कर उठ बैठा और चकित चित्त होकर सोचने लगा "है! मैने क्या सुना, अपने बाल सखा और सच्चे सेवक कैमास को राजा क्यों मारेगा। है ! हो ही क्योंकर सकता है कैमास तो दिल्ली में है और राजा शिकारगाह मे पड़ा है। है ! मुझे यह हृदय विदारक संवाद किसने सुनाया कृपा कर मेरे साम्हने प्रगट होकर कहो वास्तव में बात क्या है "। कविचन्द इस प्रकार से सोच समुद्र में गोते लगा रहा था कि देखता क्या है कि उज्ज्वल स्वेत वस्त्र धारण किए मोतियों की माला पहिने वीणा बजाती हुई हंस पर सवार विद्या वरदायिनी सरस्वती उसके सम्मुख आकर प्रगट हो गई। उस जगद्विमोहिनी मूर्ति के कारे कारे घुँघरारे केश थे और स्वर्णपट्टिकावत ललाट पटल पर चन्दन की रेख बाल चन्द्रमा सी सुशोभित थी। उसके कपोलों की प्रभा उगते हुए पूनो के चन्द्रमा की भाँति थी और बुलाक का मोती तो ऐसा ही मालूम होता था मानो सुआ सीप चुन

रहा हो दोनों भौंहें राहु कैसी किरचे और चिबुक विन्दु घन श्याम कीसी आभा भासित करता था।मन्द स्मिति से दिखाती हुई दन्त पक्ति देखकर ऐसा मालूम होता मानों पके अनार का दाना खिल रहा हो। कबुवत कण्ठ में मोतियो की माला सुमेर गिरि की परिक्रमा करती हुई गगा सी जान पडती थी। उन्नत वक्षस्थल, किसु के पुष्प से अरुण नख, सूक्ष्म कटि, सुढार जंघा, सचक्कन पिडुरी और कुसुम सी आरक्त एंड़ी अजब ही छटा छाते थे। ऐसी सब भाँति से सेवकों का मनोरथ सफल करने वाली वाणी ने कविचन्द से कहा। आज मदन की मजेज में निर्लज्ज होकर कर्नाटकी ने कैमास को बुलाया। कैमास भी काम कटाक्ष में बिधकर कर्नाटकी की दासी के साथ महल में जा पहुँचा। जिस समय कैमास कर्नाटकी की चित्रसारी की सिढ़िया चढ़ रहा था कि उस पर पटरानी इछिनी की नजर पड गई। उसने अपनी दासी के हाथ राजा को पत्र लिख भेजा कि आप तो वहा पड़े है यहा कागा कास्तूरी चुनता है। दासी उसी दम घोड़े पर सवार होकर शिकारगाह में पहुँची—राजा पडा हुआ सो रहा था दासी ने सीधे जाकर उसकी छाती पर हाथ रख दिया, जिससे राजा चौंक कर उठ बैठा और उसने उसको इस अकस्मात् आने का कारण पूछा। तब दासी ने सब हाल कह सुनाया, जिसे सुनते ही पृथ्वीराज किसी को बिना जताए केवल धनुष बाण लेकर वहा से अकेला चलपडा और रानी इछिनी के पास आया। रानी ने राजा को लिवा जाकर कैमास को दासी के साथ रमते हुए दिखा दिया, जिसे देखते ही पृथ्वीराज जल उठा, परन्तु फिर उस ने सम्हल कर बाण सन्धाना और बिजली के उजेले मे लक्ष करके बाण छोड़ा। परन्तु यह वार चूक गया इस लिये उसने फिर दूसरा बाण मार कर कैमास का काम तमाम किया। कैमास को मारकर उसने धरती मे गाड़ दिया और दासी को एक गोख की ओर मे छुपा कर, दोनो को रानी इछिनी के सुपुर्द कर दिया और आप फिर से डेरों पर चला गया। नटखट दासी कर्नाटकी तो किसी प्रकार से निकल भागी परन्तु राज मत्री का शव अब भी धरातल में गड़ा पडा हुआ है।

इतना कह कर सरस्वती तो अन्तर्ध्यान हो गई और चिन्तित चित्त कविचन्द चकाचौंध होकर चट से उठ बैठा। तो देखता क्या है कि प्रातःकाल हो गया है जहां तहा देवालयो मे शंखझालर की झकार से दिशाएं गूंज रही है आकाश में उज्ज्वलता का प्रसार हो रहा है, धर्म और मुक्त मानो कमलकली के स्वरूप में हँस रहे है। और पाप पुज मानों कमोदनी बन कर म्लान मुख हो रहे है। भास्कर भगवान की किरणों का आभास होते ही उद्यमी जीव जहा तहा अपने व्यवसाय में तत्पर हुए है और मलिन मन हो जँभाई लेने लगे है। चकवा चकवी का मिलाप हुआ, चन्द मन्द दुति हुआ और और भी प्रकृति में अनेक प्रकार के हेर फेर हो गए।

राजा पृथ्वीराज ने लौटकर महल में सभा का साज सामान होने की आज्ञा दी। आज्ञानुसार बात की बात में सब सामान दुरुस्त हो गया। उचित उच्च स्थान पर राजा की राजगद्दी और उसके अगल बगल सामन्त सरदारों की बैठक के मूढा गादी आदि सजे गए। सामन्त मण्डली के बीच मे बैठा हुआ पृथ्वीराज अष्ट ग्रहों के बीच सूर्य्य सा देदीप्यमान हो रहा था। उस तेजस्वी महाराज पृथ्वीराज के शीश पर रत्न जटित स्वर्ण की डाँडी वाले चौर और छत्र छहरा रहे थे और गद्दी के पीछे परिकर के लोग हाथ बाँधे चुपचाप खडे हुए थे। एक कैमास के सिवाय अन्य सब सामन्त उपस्थित थे और यह किसी को खबर भी न थी कि बिचारे कैमास की क्या गति हुई है। पृथ्वीराज ने सगर्व प्रश्न किया कि कहो तो (मेरे सिवाय) और भी किसी ने शाह को परास्त किया है? तब तक कविचन्द भी आन पहुँचा और राजा को आशीर्वाद दे कर यथास्थान अपने आसन पर आसीन हुआ। उसने राजा को आशीर्वाद देते हुए कहा "हे नृसिंह के समान तेजस्वी! हे अद्वितीय धनुर्धारी हरि के समान

तेजवान रयनकुमार के पिता, सूर सामन्तों के स्वामी सत, रज, तम, तीनो गुणों सयुक्त इस सभा मण्डप में विराजमान चाहुआन तेरी जय हो!" इसके पश्चात् वह उपस्थित सामन्तों की विरद पढ़ने लगा। उसने कहा "राजा के दक्षिण पार्श्व में विराजमान लक्खन और कन्ह आप रण आगन में ध्रुव के सामन अटल हैं। वामपार्श्व में विराजमान हरिसिंह और वीरसिंह प्रमार तो महाराज के साक्षात वाम बाहुही है। नरनाह काका कन्ह तो पृथ्वीराज के सर्वाङ्ग रक्षक सनाह के समान हैं। इनके सिवाय उसने विझराज परमाल, चदेल वाहरराय, अचलेस भट्टी, निड्डुरराय, लक्खनराय, चामडराय, गोइन्दराय गहलौत, पहारराय, तोंअर, रामराय बडगुजर, कूरम्भपति, पज्जूनराय, अनगोरपति नरसिंह आदि सब सामन्तों की कीर्ति पढ़कर कहा कि चहुआन वंश में राजा माणिक राय के दस पुत्र थे। उनमें से जराजित नाम का राजकुमार सम्हर की गद्दी पर बैठा। शेष नौ राजधानी छोड कर अन्यान्य देशों को चले गए। उसी राजा जराजित की गद्दी पर राजा पृथ्वीराज है जिसकी पचीस टंकी कमान पर तीन जर्जार की प्रत्यचा चढती है और जिस के प्रकोप मात्र से सारा जहान थरथर कापता है। ऐसे राजा पृथ्वीराज की कीर्ति का यदि पाच दिन पर्य्यन्त लगातार बखान किया जाय तो भी अन्त न आवे। इसपर राजा का रुख पाकर नकीव ने कवि को पुकार कर कहा।सदैव आनन्द स्वरूप दरिद्र दुःख दमन असहायों के सहायक उन्नतों के नत मस्तक करने वाले सुकीर्तिवान के सुत माहाराज संभरीराव कविचंद को समक्ष होने की इच्छा करते है। यह आज्ञा सुनकर कविचद राजा के पास गया और आज्ञा पाकर समुख बैठ गया।

कन्ह ने कविचन्द से कहा कि मानिकराय के शेष नौ पुत्र किस कारण राज्य से निकाल दिए ग और जराजित राज्य का स्वामी क्यों हुआ सो क कहो। तब कविचन्द बोला कि चाहुआन वंश में प्रसि राजा माणिकराय ने तक्षकपुर के सोलकी राजा क बेटी से विवाह किया। दैव योग से उस सोलकि रानी के गर्भ से बालक के स्थान में एक हाड क टुकड़ा प्रसव हुआ। इस अद्भुत घटना से चकि चित माणिकराव जी ने आज्ञा दी कि यह प्र अस्थिखण्ड जगल में फेंक दिया जाय, परन्तु सु वत्सला प्रसूता रानी ने राजा की यह आज्ञा अ कार की तब राजा ने रानी को भी निकाल बा किया। महलों से निकाली जाकर रानी साम्हर भी के उपकण्ठ में कहीं रहने लगी। शनैः शनै अस्थिखण्ड बढ़ने लगा रानी ने अपने कुछ प्र भेज कर किसी राठौर वंश के राजा की बेटी से अस्थिखण्ड का व्याह भी कर लिया। जब भेद खुला तो सब लोग जहा तहां आश्चर्य्य में गए।

उसी समय गज़नी के बादशाह ने माणिक र जी पर चढ़ाई की। वह म्लेच्छ दल का मालि गजनीपति शाह नौलाख बलवान सेना के साथ प्र को उजाडता और गावों को जलाता हुआ करेंचा त आगया। इधर से पचीस हजार सेना के साथ माणि राव जी ने भी सबल शत्रु का वार बचाने के लि किले से कूच किया। माणिकरावजी का पहिला पड चालुकपुर पर पड़ा। उस त्याज्य रानी ने स सैन्य रा का आतिथ्य सत्कार किया। निदान दूसरे दिन ज्यों चाहुआन सेना सजकर आगे कूच करने को हुई अं रणवाद्य बजाए गए कि त्योंही वह अस्थिखण्ड फ पडा और उसमें से एक षोडस वर्षीय सुन्दर राजकुम निकल पड़ा। वह राजकुमार प्रचण्ड भुज दण्डा महाबलवान साक्षात् नृसिंहजी के समान जाज्व

---

(१) चाहुआन कुल के आदि पुरुष चतुर्भुज मान जी से मानिक राय ४६? वीं पीढ़ी में हुआ (बूंदी राज्यवंशावली)।

२ 'जराजित की गद्दी पर' इससे यह मतलब नहीं है कि उसी संतान में आगे यह चला आया है कि जराजित या अस्थिपाल अपने सब भाइयों में छोटा होने के कारण गद्दी का हकदार नहीं था। कारण विशेष वश उसे पाट बैठाया गया था। सम्भव है कि समय पाकर ज्येष्ठ वंश ने अपना [illegible] छोड़ दिया हो क्योंकि पृथ्वीराज मूलशाखा में माना गया है।

आन तेजोमय देख पड़ता था। वह सर्वाङ्ग सनाह कुंडल और छत्तीसो वीर बानों से सुसज्जित था। उस राजकुमार ने अपने पिता (माणिक रावजी) के सम्मुख जाकर उनके चरणों पर सिर रख दिया और फिर अश्व पर सवार होकर शत्रु सेना पर चढाई करने चला। उस राजकुमार ने ऐसा पराक्रम किया कि नौ लाख शाही सेना क्षण भर में छिन्न भिन्न होकर भाग उठी और खेत माणिकराव जी के हाथ रहा। बादशाह पकड़ लिया गया और सत्तर हजार हाथी दण्ड में लेकर तब उसे घर जाने दिया गया।

माणिकराव जी ने उस राजकुमार को निज राजधानी सम्भर में लाकर बडा उत्सव मनाया, बड़े समारोह के साथ निजकुल देवी आशापूराजी का पूजन किया और उक्त राजकुमार का नाम कर्ण किया। उसका नाम ऊर्ध्वपाल और विरद हाडा हुआ

माणिक राव जी सेंभरा देव के बडे भक्त थे। एक दिन उसने प्रसन्न होकर रावजी को वर दिया कि आज तू घोडे पर सवार होकर जितनी भूमि की परिक्रमा कर आवेगा वह सब चाँदी की हो जायगी। तदनुसार राजा ने घोडे पर सवार होकर बारह कोस की परिक्रमा लगाई परन्तु होतव्य वश उसे पीछे की तरफ देख आया। जिससे वह सब भूमि चाँदी के स्थान में ऊसर या नमक की खान होगई * इस घटना का राजा के चित्त पर ऐसा प्रभाव पडा कि वह उसी दिन से मन मलीन रहने लगा। अन्त में इसी सोच में संसार से चल बसा। उसके पश्चात् अपने भाइयों को निकाल कर जराजित पाट पर बैठा। जराजित के पाट बैठने पर राज्य से निकाले गए जराजित के भाई लोग कंदहारी लोगों की कुमक लेकर चढ आए। अस्तु इधर से जराजित ने भी भूमि के लिये लडना मरना क्षत्री धर्म जानकर कमर कसी और घोर युद्ध करके उन्हें विवश कर दिया। परन्तु अन्त में अपने ही गोत्र की क्षय की आशंका जानकर उसने सबको जाने दिया।

* कविचन्द के यह कथा कह चुकने पर पृथ्वीराज बोला हे कवि किस किस देश के नरेश कैसे कैसे शूरवीर हो गए हैं उनकी रीति नीति और आचार विचार का वर्णन करो! कौन कौन राजा कैसे कैसे मानी और अभिमानी हुए और उन में से किस ने किसका दर्प चूर्ण किया? कौन कौन राजा कैसे कैसे गुणग्राही और यशस्वी हो गए हैं और उनके इस समय क्या क्या चिन्ह वर्तमान हैं? हे कवि माई के लाल सच्चे शूर वीर ऐसे वीर पुरुष-श्रेष्ठ राजाओं का वर्णन करो। इस पर कवि ने प्रत्युत्तर दिया। इस वसुमती एवं रमा का रस आश्वादन करने की लालसा में लिप्त सहस्त्रों नरेश रसातल को गए और बहुतेरे यश की ही आशा में काल कवलित हुए। इस संसार चक्र में भ्रमते हुए सभी जब तब नाश को

(१) छन्द १६६ से लेकर छन्द २१० तक हाडा (चाहुआन) वंश की उत्पत्ति वर्णन की गई है। इस ग्रंथ के अनुसार तो यह स्वयं सिद्ध है परन्तु बूंदी राज्य वंशावली के विरुद्ध पड़ती है जिसे किसी चारण ने वंश भास्कर के आधार पर रचा है। उसमें माणिकराव जी के बहुत कुमार होना लिखा है उनमें से ज्येष्ठ कुमार गुहकर्म जी का सम्भर राज्य का स्वामी और शेष नौ से सिंध के धुंधेरिए या धंधेरे टांक खीची आदि शाखाओं की उत्पत्ति लिखी है उसी के अनुसार चाहुआन जी से १७० वीं पीढ़ी में पृथ्वीराज का होना और इसके कई पीढ़ी पश्चात् हाडावंश की उत्पत्ति बतलाई गई है। बूंदी राज्य चरितावली के रचयिता चौहान रघुनाथ सिंह जी ने इसी बात को माना है।

* इस खान का नमक साम्भरी नमक कहलाता है यह खाने में बड़ा स्वादिष्ट और पुष्टिकर होता है। साम्भरी झील में कई प्रकार के नमक होते हैं परन्तु सब से उत्तम होता है पहिचान इसकी यह है कि डली में नीलापन झलकता है। उपवास के दिन इस नमक का खाना निषिद्ध माना गया है। इसका कारण यह है कि जो कुछ इस खान में डाल दिया जाता है वह सब नमक हो जाता है और आस पास के गांव वाले मरे हुए जानवर या अन्य कूड़ा कर्कट इसी जगह डाल देते थे या डाल देते हैं।

* छन्द १७१ से छन्द २१६ तक पृथ्वीराज के दर्बार का वर्णन और हाडा वंश की उत्पत्ति की कथा क्षेपक मालूम होती है क्योंकि छन्द १७१ और २१६ तक में कोई भी पाठ भेद नहीं है और छन्द १७१ के पहिले कवि दर्बार का संक्षेप वर्णन कर चुका है बाद इसके छं० २१६ के बाद नाटक आरम्भ होता है इसकी कार्यवाही यथाविधि छन्द १७१ से ठीक आता है।

प्राप्त होते हैं पर इस का आदि अन्त कोई नहीं जानता। मोह के फन्दे में बँधा हुआ चित्त निन नए धंधों के प्रबन्ध में बिधा रहता है और अन्त में यह पंचतत्वरचित शरीर इसी मोहजनित ज्वाला से जल कर भस्मीभूत हो जाता है। हे राजन्! हम कवि हैं। हमारा कर्म ही यशस्वियों का यश गान करना है परन्तु सच पूछिए तो सच्चे सुखी वेही कहे जा सकते हैं जो शिव की कृपा से योग युक्ति जान कर जहान से किनारा कर गए है। तब पुनः पृथ्वीराज बोला यह तो हुआ, परन्तु यह बतलाओ कि कैमास कहाँ है। आज सन्ध्या होने को आई परन्तु उसका कहीं पता भी नहीं है। मुझे कैमास के बिना सब सूना सूझता है। कविचद बोला कैमास किसी नाग लोक या सुरलोक में होगा, यहा कहा अब। उस बूँद से भेंट होने की नहीं। इस पर पृथ्वीराज कुछ चिढ़ कर बोला, नाग लोक या देव लोक की बातें छोड़ो या तो कैमास का पता बतलाओ या आज से वरदाईपन छोडो। जो तुमको दुर्गा ने वर दिया है और तुम सच्चे वरदाई हो तो कैमास का ठीक ठीक पता बतलाओ नहीं तो वरदाई न कहाओ। यह सुन कर कवि बोला अन्नदाता! ये कैसे वचन!! जो शेषनाग पृथ्वी को त्याग दे, शिव विष को त्याग दे, और सूर्य्य ताप को त्याग दे तो मैं भी देवी के वर को त्याग दू, आप वृथा साँप के सम्मुख उँगली न उठाइए। परन्तु राजा ने फिर कहा "तुम तीनों लोक की जानते हो इस समय तुम्हे तो बतलाना होगा कि कैमास कहाँ है। इस पर कवि बोला राजन्! मुझसे पूछकर अपनी ढँकी बात न उघारिए; ऊसर की खेती सींचना बुद्धिमानी नहीं है। शेष के सिरपर धरी हुई धरा पर कैमास कहीं भी क्यों न हो मैं सहज में बता सकता हू। परन्तु कहने न कहने दोनों में आपत्ति है कहिए तो कहने लगूँ। कवि को नम्र होता देख कर राजा ने हठ पूर्व्वक कहा, कहो कवि कैमास कहा है तब कविचद बोला आपने कैमास को मारा क्यों पहिले यह बतलाइए। कविचन्द की बता सुन कर राजा पृथ्वीराज सन्न रहगया उस की आंखें नीची हो गई और उसके दिल में यह बात खटक गई कि किया हुआ कुकर्म छिपता नहीं। कविचन्द ने कहा देखिए जब कैमास पर आपने पहिला बाण चलाया और वह चूक कर काँख के नीचे से निकल गया तब आपने दूसरा बाण सन्धान कर कैमास का कलेजा वेध दिया और कहीं भाग न जाय इस भय से उसके सिसकते हुए रक्त प्लावित शव को गड्ढे में गाड दिया; कहिए इससे आपको क्या मिला? कवि का कथन सुन कर पृथ्वीराज तो सूर्य्य से उत्तापित कमोदिनी एव आग की झार से झुरसे हुए तमालपत्र की तरह मुरझा कर मन ही मन गुस्सा मार कर रह गया और सब सामन्त मण्डली पर तो मानो वज्रपात हुआ। कन्ह तो करम पर हाथ मार कर वहा से उठ कर घर को चल दिया और सब लोग चुप चाप दाँतों उँगली दाबकर रह गए। सब अपने अपने मन में सोचने लगे आज आधी रात को राजा शिकारगाह में था यहाँ कब आया। किस कारण वश कैमास को मारा और यह सारा हाल कवि ने कैसे जान लिया। कोई कोई राजा के मुख की तरफ देखते थे कोई कविचन्द की चेष्टा अवरेखते थे, कोई कोई आपस में ही परस्पर आँख के इशारे से बातें करते हुए मन ही मन अपनी अपनी समझैं लडा रहे थे, पृथ्वीराज अत्यन्त कुपित होकर बोला "कविचन्द मैने कैमास को कर्नाटकी के कारण मारा है" यह सुनकर सब सामन्त लोग उठ कर अपने अपने घर को चले गए परन्तु राजा पृथ्वीराज उसी विकल अवस्था में बैठा रहा और कविचन्द भी अपने आसन से न हटा। सब के चले जाने पर उसने कहा राजन् अब लक्षण अच्छे नहीं देख पड़ते। आपके इस अपकीर्त्ति के मारे कान न दिया जायगा। मित्रद्रोह का कलङ्क सिर लेकर किसे मुह दिखलाओगे। यह कहकर कविचन्द भी चलता हुआ।

पृथ्वीराज गद्दी पर से उठ कर अपनी एकान्त अगशाला में सुसज्जित एक पलग पर जा लेटा।

(१) अगशाला = एकान्त गृह। का स्थान।

और उसने ड्योढीवालों को आज्ञा दी कि बिना मेरी परवानगी के परिन्दा भी पर न मारने पावे। इधर सारे शहर में भी समाचार फैल गया और घर घर शोक समूह की बौछारें छुटने लगी। समस्त राग-रंग मय आनन्द बन्द हो गए और सर्वत्र सन्नाटा छागया। इसी प्रकार तीन दिन व्यतीत हो गए,

चौथे दिन प्रातः काल ही कैमास की स्त्री कविचन्द के घर पहुची। उसने कविचन्द से कहा कि हे बरदाई इतना कीजिए कि मुझे अपने पति की लाश दिला दीजिए, जिसमें मै उसके साथ सती होकर संसार से पार हो जाऊं। यह सुन कर कवि बोला 'यह बात है तो कठिन, पर क्या कैमास के लिये यदि राजा मुझे मार भी डाले तो भी मुझे मंजूर है। यह कह कर कवि कैमास की स्त्री के साथ राजमहल को जाने के लिये तय्यार हुआ। जब कविचन्द की स्त्री ने यह हाल जाना तो वह तुरन्त दौड कर पति के पास आई और उसका अञ्चल * पकड कर बोली 'क्यो पराई मौत अपने सर लेते फिरते हो, जिसने अपने परम हितैषी बालसखा कैमास का शील नहीं रक्खा वह आपको क्या समझे? हे पति जिस जीवन की रक्षा के लिये समस्त धर्म कर्म किए जाते है, जिस जीवन के लिये यावत वित्त स्वाहा कर दिए जाते है, जिस जीवन के लिये जर, जमीन, घोड़े, हाथी सब दे डाले जाते है और जिस जीवन के लिये लोग ग्रहों का जप दान और पूजन करके घडी घडी की कुशल मनाते है उसी को आप हथेली पर धरे फिरते है। भला [illegible] तो कौन किसका साथ देता है? कहावत है कि "आप मरे जग डूबा" हे प्यारे! यह स्वाभा-[illegible] प्राण-पखेरू आशा के वश में पड़ा हुआ [illegible] के दिन पूरे करता है। पूर्व्व [illegible] वासना [illegible] अनुसार [illegible] [illegible] नाना प्रकार के [illegible] [illegible]

---

* [illegible]

बसता है। मरण के पश्चात् केवल यश और अपयश की कहानी मात्र शेष रह जाती है, इस लिये किसी की मौत पर दुखित होना बृथा है। यह जीव मर कर भी माता के गर्भ मे पडता है और तब जन्म लेकर नितान्त अबोध और असहाय अवस्था में पड़ा पड़ा रोया और हँसा करता है। समय पाकर जवानी की मजेज में जमीन आसमान एक करने का हौसला करता है परन्तु जरा अवस्था आने पर जब सब अंग शिथिल और पुरुषार्थहीन हो जाते है तब चित्तभंग और तृष्णा के ताप से उत्तापित होकर फिर चल बसता है। हे कन्त पराए के लिये कुछ मॉग कर क्यो अपने प्राणों पर आपत्ति लेते हो।

परन्तु कविचन्द उसकी ओर कुछ भी ध्यान न देकर देवी की आराधना करने लगा। [illegible] उत्तर मे उसे हुंकार शब्द सुनाई पड़ा जिससे कवि ने अपने कार्य्य की सिद्धि निश्चय जान ली और शरणागत कैमास-पत्नी के सहित राज्य महल को चला। कवि-चद बिना किसी रोकटोक के राजा के पास जा पहुचा तो देखता क्या है कि ग्लानि, क्रोध और लज्जा में निमग्न राजा पृथ्वीराज एक विलक्षण ही अवस्था में बैठा हुआ है। कवि को देखते ही उसके नेत्र नीचे होगए। कविचन्द ने नजर जुड़ते ही आशीर्वाद दिया। उसने कहा हे धात्री-कुल-कमल सावधान! परन्तु पृथ्वीराज ने कुछ उत्तर न दिया। तब कवि बोला हम कवियों का यह धर्म नहीं है कि मुँह देखी कहें इसी से कहता हू कि आप के इस कार्य्य से आपकी विमल कीर्ति में बड़ा बट्टा लगा। भला जो हुआ सो तो मिटने का नहीं, अब कृपा करके कैमास की लाश उसकी स्त्री को दे दीजिए। इस पर राजा ने कहा "रे कवि कैमास का कर्म मेरे कलेजे पर खटकता है" तब कविचन्द ने प्रत्युत्तर दिया कि "हे राजन् राम ने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

क्या सुयश पाया। इस समय न तो वंशाग्नि कुरुपति दुर्योधन है,न शकाब्द वीर विक्रमादित्य है केवल उनके यश अपयश की वार्त्ताए वर्त्तमान है। हे राजन् इस कलक कालिमा के कारण लोग आपको क्या कहेंगे,सो भी तो विचारिए। एक दासी के लिये क्या स्वामि द्रोह के लिये भी कैमास ऐसे बुद्धिमान मत्री के साथ ऐसा क्रूर व्यवहार करना उचित न था। उसीने असंख्य द्रव्य से आपका खजाना भरा, उसीने भोलाराय भीमदेव के हाथ से नागौर की भूमि बचाई, सो उसकी इन बातो पर विचार करके उसकी लाश निकाल दीजिए। आप के बाल सखा मंत्री कैमास की स्त्री केवल उसकी लाश के लिये हाथ जोड़ प्रार्थना कर रही है। यह सुनकर राजा ने कैमास की लाश निकलवाए जाने की आज्ञा दी और कविचन्द ने कैमास के पुत्र का हाथ राजा को पकड़ाया। राजा ने कैमासपुत्र नरसिंह के शीश पर हाथ रख कर कहा कि कविचन्द मैंने हांसीपुर का परगना और कैमास का सब धन मान इसे दिया।

उसी दिन शुभ सुदिन जानकर राजा ने दर्बार होने की आज्ञा दी। राजा की आज्ञानुसार जब तक इधर दर्बारी साज सजने लगा तबतक पहरे वाले ने कैमास की लाश भी लाकर राजा के सम्मुख प्रस्तुत की। गुरुराम के वास्ते भी बुलावा गया था सो वह भी हाजिर आगए। तब पृथ्वीराज बोला कि आप दोनों अच्छे अच्छे प्रवीणपण्डित और कवि हैं मुझे कुछ ऐसी युक्ति बतलाओ कि मैं जैचन्द का दर्बार देख सकू और यह भी कहो किन किन बातों से हानि और अपमान होते है और किन बातों से मूल हानि या अपमान का बदला पूरा हो सकता है? इस पर कविचन्द और गुरुराम बोले कि आपके प्रश्नों के उत्तर में हम कलियुग की रीतिनीति वर्णन करते है सो ध्यान देकर सुनिए—राजा का सब राजकाज प्रधान एव मत्री के बल चलता है, इस लिये राज्यमत्री को बल, बुद्धि,तेज, और पराक्रम में राजा के समान होना चाहिए। जैसे अहंकार के कारण यज्ञादि उत्तम कर्म नष्ट भ्रष्ट हो जाते है, और दुश्शीला स्त्री के कारण ग्रहस्थी सत्यानाश हो जाती है, उसी तरह अन्याय के कारण राज्य निर्मूल हो जाता है। उद्यम हीन राजा प्रातः काल के चन्द्रमा के समान मन्दद्युति हो जाती है। कपट से स्नेह का, और लोभ से घर भर का सर्वनाश होता है। युद्ध के समय मोह और व्यवहार में लज्जा करना महा मूर्खता है। अधर्म को त्याग कर धर्म का आचरण करना, साधु पुरुषों की सेवा करना और स्त्री को राजनीति मे भाग न देना येही नीति के तीन मुख्य गुर है। मादक द्रव्य के सेवन और चचल चित्त होकर पराई स्त्री पर नियत डुलाने से तो देह गेह नेह, और समस्त पुण्य पुञ्ज स्वाहा हो जाते हैं। अन्त दान लेने से जैसे ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व नाश हो जाता है वैसे ही परस्त्री पर चित्त जाने से चत्री का चात्रियत्व नाश होजाता है। हे राजन् फिर आप कन्नौज को जाने की बात क्या पूछते है?। जम्बू नरेश हाहुलीराय*हम्मीरराव बोला आपके पूर्वज जराजीत और माणिक राव ऐसे प्रतापी पुरुष हो गए है जिन्होंने शाह से दण्ड लेकर छोडा आप भी उन्ही का अनुकरण कीजिए और फिर भी शाह से दण्ड लीजिए। भिन्न भिन्न देशों के दुर्गम दुर्गों को जीत कर शत्रुओं को नीचा दिखाइए और उनके पुत्र पौत्रों को अपने की भांति पालिए। देशकाल के अनुसार नीति का आचरण करना और स्त्रियों के बॉके कटाक्षों के वशीभूत न होना चाहिए। देख परख कर ऐसा भृत्य रखना उचित है जिससे नित नव विभूति बढ़े और प्रजा का हित हो—सेवक को ऐसा चाहिए कि यदि वह स्वामी का चित्त जरा भी दुचिता देखे तो तुरन्त उसकी शान्ति का उपाय करे। ऐसा सेवक स्वामी के लिये सदा हितकर होता है जो अपना धर्म विचार कर

---

* मूल पाठ में नाम नहीं दिया है केवल "हम्मीराव जम्बू नरेश" पाठ है। परन्तु आगे के ताज [illegible] किया गया है कि जम्बू का राजा हाहुली हम्मीर था और कांगड़ा होशियारपुर के जिले की सारी भूमि उसी के अधिकार में थी।

कार्य्य करे परन्तु मुँह जोड कर उत्तर न दे। राजा की इच्छा या अन्य राज्य कार्य्य सम्बन्धी प्रबन्ध किसी पर भी प्रगट न होने दे। सब प्रकार के राजसी परिकर की पूरी जॉच परताल रक्खे और अपने मन का मर्म मन ही में रक्खे। राज्य सम्बन्धी सब लोगो के दान मान और सम्मान का उचित विचार रख कर सब को सदा प्रसन्न रक्खे और स्वामी (राजा) के साथ सदा भृगी का कीट बना रहे। सो हे राजन् ऐसे सेवकों के साथ सावधानता पूर्वक राज्य कीजिए; जान बूझ कर जलती आग मे हाथ डालने का साहस न कीजिए एव उत्तम रत्न रूपी कर्तव्य कर्म को त्याग कर कॉच के टुकड़े पर चित्त न चलाइए।

यह सुन सुना कर पृथ्वीराज बोला कि हे कवि मै कैमास की लास तभी दूगा जब कि तुम मुझे जैचन्द के दर्बार में ले चलने की प्रतिज्ञा करो। राजा के ऐसे वचन सुनकर कविचन्द बोला, भला यह क्योंकर हो सकता है? तब पृथ्वीराज बोला कि हम तुम्हारे साथ सेवक बनकर चलेंगे। यह सुनते ही कविचन्द बोला, तब तो ऐन बनेगी गगा के किनारे मरने से लोक परलोक दोनो सुधरेंगे। कविचन्द के ऐसे वचन सुन कर पृथ्वीराज बोला हे कवि मरना जीना तो हुआ ही करता है मुझे तो अपनी बान की बान पडी है। विचारो तो सही दुनिया में हलके होकर जिए भी तो किस काम के। कैमास की लाश उसकी स्त्री को सौपो सो वह सती हो और इधर कन्नौज को चलने की तैय्यारी करो। मुझे जैचन्द का दर्प चूर्ण करते हुए मरना सोहता है परन्तु यह उपहास मय जीना स्वीकार नहीं। यह कहकर पृथ्वीराज ने कैमास की लाश उसकी स्त्री को दिलाई और उसके पुत्र के सिर पर हाथ फेर कर उसे अपने पास बैठाला-जोकि उस समय केवल पाच बर्ष का था।

दूसरे दिन दो घड़ी पांच पल दिन चढ़े नियम पूर्वक दर्बार लगा। सब सूर सामन्त मुसाहब मुतसद्दी आदि दरबारी लोग हाजिर हुए। राजा ने कैमास की मृत्यु की कथा स्वय आद्योपान्ता कह सुनाई और सब सामन्तों से क्षमा प्रार्थना की। पृथ्वीराज ने काका कन्ह से कहा कि अब मुझे आप तलवार बँधाइए। अस्तु कन्ह ने वैसाही किया। उसी समय सारे नगर में भी समाचार फैल गया। घर घर की हरतालें खुल गई और पूर्ववत् आनन्द प्रमोद होने लगा। सब लोग जहां तहां अपने अपने धन्धे में लग कर समय बिताने लगे परन्तु कैमास की सुधि किसी को क्षण भर न भूलती थी। पृथ्वीराज का तो यह हाल था कि उसे उठने बैठने सोते जागते चारों ओर कैमास ही कैमास नजर आता था।



दुर्गाकेदार समय।

[अट्ठावनवाँ प्रस्ताव।]

—o—

अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मार कर पृथ्वीराज बहुत पछताया। न तो उसे गोख के झरोखे में चैन पड़ता था और न अन्तर महल के अन्दर। उसे सोते जागते अहर्निशि कैमास की ही प्रति मूर्ति आखो देख पड़ती थी। सामन्त मण्डली के साथ चौगान[1] खेलते समय, राजसी रसरंग का आनन्द लेते समय, जल क्रीडा के समय अथवा अन्य प्रकार के राजसी आहार बिहार के समय जब पृथ्वीराज को सामन्त शिरोमणि सच्चे सखा कैमास की सुधि आजाती तो उसके कलेजे पर लकीर हो जाती थी। तिस पर भी विशेष बात यह थी कि थी अपनीही करतूत कहै तो किससे कहै "अपनी जाँघ उघार कर आपही लज मरना था" इस लिये हाय साँस लेकर मनही मन मसूस कर रह जाता था।

परन्तु राजा की इस अवस्था से उसके सामन्त लोग कदापि अनभिज्ञ न थे। अतः एक दिन कन्ह ने जैतराव प्रमार, प्रसगराय खीची, चन्द्रसेन पुंडीर, गोयन्द राव गहलौत, लोहाना आजानबाह, रामराय बडगुज्जर इन सब लोगों से कहा कि भाइ कुछ ऐसी तदवीर विचारनी चाहिए जिसमें राजा का मन बहले। निदान सब की यही सलाह पक्की हुई कि राजा को शिकार खिलाने के लिये ले चलना उचित होगा। तदनुसार कन्ह ने तो पृथ्वीराज को साधा और इधर शिकारी सामान दुरुस्त किए जाने लगे। नियमित तिथि को अपने सब वीर बाँकुरे सामन्तों और कतिपय सनाह-सेना[2] के साथ पृथ्वीराज शिकार खेलने चला। उसके साथ में कुछ हथनार, उटनार, और बानगीर[3] अर्थात् अग्निबाण चलाने वाले भी थे। उसके साथ में नौ सौ बड़े तेज और शिक्षित घोडे और ताजी घोंटा झब्बा बदाही, पहाड़ी और शेरदहां आदि अनेकानेक जाति के नौ सौ कुत्ते थे जिनमें से पाँच सौ कुत्ते तो ऐसे थे जिनके आगे से शेर भी नहीं जा सकता था और दौड में वे पवन से बाजी लगाने को तय्यार थे। उनके पैरों के तलुए, मुख और नाक के अग्रभाग ईंगुर से लाल और बड़े मुलायम थे। वे सब बीस बीस या सोलह नख वाले थे और झब्बे कुत्ते गुच्छेदार पूँछ के लच्छे को उठाकर मचलते भालू से चलते हुए बडे भले मालूम देते थे। उनके दाँत और नख बड़े ही तीक्ष्ण थे, बाजू सीना और नितम्ब भारी थे, कपोल मुलायम, माथा चौड़ा और कमर पतली थी और उनकी आँखो से साक्षात् सिंह का सा तेज जाज्ज्वल्यमान होता था उनकी आँखों पर जरतारी पट्टे चढ़े थे और प्रत्येक कुत्ते को दो दो मजबूत जवान साधे हुए थे। इसी प्रकार सामन्तो के भी निज के दो दो चार चार कुत्ते थे। इसके सिवाय ढाई सौ चीते थे जो कि

---

(१) घुड़ सवारी का पोलो (Polo) का खेल चौगान का ही रूपान्तर है।

(२) सनाहसेना—अंग रक्षक सिपाही (Body guard)

(३) एक तीन हाथ लम्बे बाँस के टुकड़े में पेंदे की तरफ एक चमड़े का थैला ताँत से कसा जाता है। इस थैले की लम्बाई एक फुट से लेकर डेढ फुट तक और गोलाकार मुंह की चौड़ाई दो से तीन इञ्च तक होती है। इसमें करीब एक सेर बारूद धाँस धाँस कर भरी जाती है और ऊपर से ताँबे, लोहे, सीसे और काँच के छोटे छोटे टुकड़े भर कर मुँह बन्द कर दिया जाता है और बाँस की नली के भीतर से एक बारूद का भीगा धागा आर पार लगा रहता है। बाँस के ऊपर सिरे पर एक झण्डी रहती है। बारूद के धागे में आग देने से थैली की बारूद अनार दान की तरह शब्द करके लौ छोडने लगती है। जब जोर पर आता है तो चलाने वाला बाँस को हाथ से छोड़ देता है उस समय यह हाथी को भी बेध डालता है और जहाँ तक उसका थैला फट नहीं पड़ता वहाँतक साधा जाता है फिर आपही आप बड़े जोर से चक्कर खाने लगता है। यह के उर्ध मील भर पर्य्यन्त स्थिर कर सैकड़ों आदमियों को बेकाम कर देते थे। आग यह किले और मैदान दोनों ही लड़ाई के काम में आता था। इसी को कुहक बान भी कहते हैं।

बहेल पर चलते थे। घोड़ों की पीठ पर चलने वाले तीन सौ श्रीगोप, दो सौ फन्दैत हिरन और जुर्रा, बाज, कुही, खेदा, तरिया आदि अनेक प्रकार के शिकारी पशु पक्षियों को साथ में लिए हुए राजा पृथ्वीराज एक गहन और विषम बन मे शिकार खेलने लगा।

शहाबुद्दीन के कलेजे पर पृथ्वीराज तो अहिनिशि काँटा सा खटकता था। उसके चित्त पर निरन्तर यही चिन्ता सवार थी कि कब अवसर पाऊं और पृथ्वीराज को धर दबाऊं। इसी चिन्ता मे उसका असन बसन सब भूला हुआ था। एक दिन उसने अपने एक चतुर चर को आज्ञा दी कि तू दिल्ली जाकर समाचार ला कि इस समय पृथ्वीराज का क्या हाल है। उसी के हाथो एक पत्र धर्म्मायन को भी भेजा कि वह वहा का सब बिविवार हाल लिख भेजे। दूत ने दिल्ली जाकर वह पत्र धर्म्मायन को दे दिया और धर्म्मायन ने तत्क्षण ही यहा का सारा हाल लिख कर उत्तर का पत्र उसी दूत के हवाले किया। दूत ने जब गजनी पहुंच कर वह पत्र शाह के सम्मुख पेश किया और पेशकार ने उसे पढ़कर सुनाया तो सारे अमीर उमरावों के चेहरे खिल पडे और शाह के भी सूखे हुए होठों पर लाली झलक आई।

एक दिन रात्रि के समय केदार कवि ने अपनी इष्ट देवी चण्डी का ध्यान धर कर सम्मुख दर्शन पाने की प्रार्थना की। आधी रात्रि के समय भगवती ने अन्तरिक्ष मे प्रगट होकर पूछा तुझे क्या चाहिए? तब केदार बोला कि माता! मे कविचन्द से विद्यावाद मे विजय पाना चाहता हू। इसपर भगवती ने उत्तर दिया कि कविचन्द और तुम दोनों मुझे एक से [illegible] अन्तर केवल इतना है कि वह तुम्हारा [illegible] है और तू उससे छोटा है। इस लिये [illegible] को सिवाय और तू जिसे चाहे परास्त कर [illegible]। तब पुन कवि ने विनीत भाव से कहा कि वास्तव में मेरी पृथ्वीराज के दर्शन करने की इच्छा है, यदि आप की आज्ञा हो तो बादशाह से सीख माँगू। तब देवी ने कहा "एवमस्तु" शाह तुम्हे रुखसत देगा; तुम प्रसन्नता पूर्वक पृथ्वीराज से मिलो वह तुम से सब भॉति प्रसन्न रहेगा और सौ घोडे तीस हाथी और बहुत सा धन रत्न बिदाई में देगा। इस समय पृथ्वीराज पानीपत के जगल मे शिकार खेल रहा है।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही केदार कवि सानन्द शैय्या से उठा और नित्यक्रिया से निश्चिन्त होकर दरबार को चला। शाह के सम्मुख पहुंच कर उसने सादर सलाम किया; और अपने आसन पर बैठ गया। शाह के दर्बार में बडे बडे डील डौल वाले रग बिरगे तेजस्वी मीर मुसाहब यथास्थान डटे बैठे थे। अवकाश पाकर केदार कवि ने कहा "यदि सीख मिले और आज्ञा हो तो मे दिल्ली जाना चाहता हू यह सुनते ही राज्यमंत्री तत्तार खा अत्यन्त कुपित होकर बोला 'रे भाट तू हमारा नमक खाकर एक ऐसी जगह माँगने को जाना चाहता है जहाँ हम बार बार बधन मे पडे। एक जानी दुश्मन से मिलना और माँगना तो दूर रहा जहाँ जरा भी हकनलफी हो जाय उस तरफ आँख उठा कर भी देखना मुनासिब नहीं। मुमकिन है कि वह तुझे बहुत इनाम दे लेकिन इसमे उसकी तारीफ और हमारी तौहीन है अगर अब भी इरादा मुस्तकिल हो तो जाओ। शहाबुद्दीन भी हँसकर बोला "शाबस कविचन्द को कि जिसने ख्वाब मे भी इस तरफ आने का इरादा न किया बादशाह के वचन सुनते ही केदार कवि की तो साँप छछुन्दर की सी गति हो गई चुपचाप शाह के मुख की ओर देखता रह गया। इसी तरह जब एक घड़ी भर बीत गया तब शहाबुद्दीन ने कहा मुझ से क्या कहते हो जहाँ तुम्हारा जी चाहे जाओ।—

दोहा।

तिन ते तुम मैं तुल्य स, [illegible] ।
[illegible] ॥

(१) [illegible]
(२) [illegible]

शाह के ऐसे बचन सुन कर केदार कवि दर्बार से चल कर घर पहुँचा और उसने उसी समय दिल्ली को प्रस्थान करने की तय्यारी की। चलते समय केदार कवि के पिता ने कहा "बेटा यह बात स्मरण रखना कि जिसके पास जाता है वह दाता तो बडा है परन्तु अपने स्वामी का शत्रु भी है जैसा कि शाह स्वय कह चुका है। निदान उक्त अभिलाषाओं से परिपूर्ण अत्यन्त मग्न मन होता हुआ केदार कवि प्रख्यात उदार सोमेससुत राजा पृथ्वीराज का दर्बार देखने को चला। पडाव दर पड़ाव चलता हुआ केदार कवि ढाई मास में पानीपत आन पहुँचा।

यहाँ पृथ्वीराज एक अति उतग पर्व्वतों से परिवेष्टित, सुन्दर तरुलताओं से आच्छादित झरनो के झिलमिले जल से परिपूर्ण एक घने जगल म आखेट करता था। वहा उस दिन के शिकार में एक सौ अकेला * वराह, छै सौ साधारण सूअर, दो सौ मृग और और भी नाना प्रकार के अगनित पशु पत्नी मार गए थे, अत: एक सुन्दर वृक्ष की छाया मे बैठा हुआ पृथ्वीराज अपने सेवको और सखाओ के जघन्य कौशल के प्रतिफल का निरीक्षण परीक्षण कर रहा था। दैवयोग से एक घनी झाडी में से अकस्मात् एक सिंह निकल पडा। उस समय ऐसा मालूम हुआ मानो आकाश या पृथ्वी को फाड कर नृसिंह स्वरूप का आविर्भाव हुआ हो। उसके बडे बडे गाल और नोकदार दाँतो के बीच लपलपाती हुई लाल लाल जीभ चचला सी चमचाती थी, उस के दोनों नेत्र वृहस्पति और शुक्र के से तारे दम-दमा रहे थे वह विकराल सिंह एक बाग़ी राजकुमार पर झपटा, यह देख कर कुमार के पास में खडे हुए खवास ने सिंह के शीस पर सिंगी का वार किया परन्तु वार खाली गया और सिंह ने उसे भख लिया लेकिन उसी क्षण मे रेणु कुमार ने तलवार का एक ऐसा हाथ मारा कि सिंह बीच से कटकर दो हो गया। पृथ्वी पर पडे हुए मृत सिंह के खण्ड ऐसे मालूम होते थे मानों कृष्ण भगवान ने कस के मल्लशाला में दो मल्लों को पछाडा हो, अथवा रामचन्द्र ने रावण के शीस छाँट कर डाल दिए हों। इस भयानक घटना के सघटित होने पर नरनाह कान्ह, कन्ह, जामराय यादव और चन्द पुडीर ने पृथ्वीराज से कहा कि हम लोग बहुत थोडे जने है और यह पहाडी स्थान महा भयानक है इस लिये यहा से चल कर पानीपत के मैदान मे डेरे डाले जावें और वहीं मैदानी शिकार खेला जावे। यह बात राजा ने भी स्वीकार करली और वहाँ से उसी समय कूच होकर पानीपत के मैदान मे डेरे आन पडे।

पानीपत के मैदान मे पडाव पड जाने पर पृथ्वीराज ने गोठ की सामग्री रची जाने की आज्ञा दी, तदनुसार नाना प्रकार के पकवान और भोज्य भक्ष चर्वण आदि अनेक व्यजन बनाए गए। राजा पृथ्वीराज अपने सखा सामन्तो सहित एक बट की छाया मे बैठा हुआ था, जहाँ तहाँ थाले सजाए जा रहे थे कि तब तक उक्त कवि केदार भी वहीं आ उपस्थित हुआ उस दिन दिन के समय भी कवि के साथ में सात प्रज्वलित दिये एक हाथ मे नसैनी और एक हाथ में अकुश थी। उसके शीस पर सोने का छत्र भी था जिस पर एक सर्प का चिन्ह खचित था। भाड भाट बहुरूपिए इन लोगों की रहन सहन और पोशिश का क्या ठिकाना ये लोग हवा के माफिक आडबर प्रिय हुआ करते है

परन्तु इसमे क्या एक सच्चे कवि की पहिचान तो यह है कि जिस समुद्र रूपी अगाध वाणी

* मूल पाठ 'एकल' जो सूअर ज्वान होकर अपने झुण्ड से अलग रहने लगता है उसे एकला या अकेल कहते हैं। ऐसे ही कोई कोई भारी सूअर जो पूंछ से कान पर्यन्त शायद विलक्षण लम्बा होता है उसे वराह या वाराह कहते हैं।

(१) आजकल इसे भाड भी कहते हैं यह [illegible] [illegible] की हँसी करना चाहते और [illegible] जाति [illegible] जाता है [illegible] का [illegible] [illegible] की [illegible] भी [illegible] जाता है [illegible] और [illegible] नाना काम [illegible]।

है नित नव उक्तियों की तरंगें उठा करती हों युक्ति रूपी जल सदा तलातल्ल ठिला रहता हो और तली में तर्क वितर्क रूपी नर रहते हों। ऐसे रत्नों की परख केवल वेही सच्चे जौहरी कर सकते हैं जो काव्य रूपी कला विकला शुभाशुभ अक्षर और चौरासी प्रकार के रूपकों का ज्ञान रखते हों। अर्थात् वे पुरुष जो काव्य रचना में स्वयं प्रवीण हों। गण अगण लघु दीर्घ उक्ति युक्ति सब भाँति के शुभाशुभ का विचार कर सरल और सरस वाणी का उच्चारण करने वाला पुरुष ही कवि की उपाधि पाने योग्य है।

केदार कवि ने पृथ्वीराज के समुख आकर आशीर्वाद दिया। उसने कहा "हे इन्द्रप्रस्थ पति आजानबाहु चालुक्य रूपी तूल के लिए प्रज्ज्वलित ज्वाला, परिहारों को परास्त करने और जैचन्द के प्रबल प्रताप रूपी चन्द को मन्द द्युति करने वाले, वेद कथित राजसी आचार विचारों में चतुर और समस्त धर्म्मों में धुरंधर। हे शत्रुओं के शाल और शाह को सदा बेहाल रखने वाले चाहुआन कुल शिरोमणि अद्वितीय तेजस्वी राजा पृथ्वीराज तेरी जै हो! राजा विक्रमादित्य के पश्चात् तू ही एक साकेवाला हुआ है, मैं तेरे दान, मान और सम्मान का बखान सुन कर तेरे दर्शनों को आया हूं। हे पृथ्वीतल के उग्रवीरों को राहु के समान ग्रास करने वाले वीराधि वीर शूर सामन्तों के शिरोमणि सुलतान शहाबुद्दीन को बार बार बाँध कर छोड़ देने वाले, हिन्दुस्थान की हद्द रखने वाले, छत्रपति महाराज पृथ्वीराज तेरी सदा जै हो॥

केदार कवि की ऐसी वाणी सुनकर सब लोग प्रसन्न हो गए। पृथ्वीराज का मक्खन सा मुलायम चित्त तो पिघल कर घी हो गया, राजा की आज्ञानुसार प्रतिहारी यानी नकीब ने कवि को उचित आसन दिया। भोजन प्रसाद होते रहे, दोनों कवि परस्पर सरस वाणी उच्चारण करते रहे और सब आनन्द पूर्वक चित्त से सुनते रहे, दूसरे दिन फिर [illegible] लगा। केदार कवि भी आ उपस्थित हुआ उसने आते ही पृथ्वीराज से कहा कि मैं श्री दर्बार के कवि कविचन्द से विद्यावाद करना चाहता हूं। तब तक कविचन्द भी आ पहुँचा और राजा को आशीर्वाद देकर यथास्थान स्थानापन्न हुआ। पृथ्वीराज ने कहा इस समय तुम दोनों बरदाई कवि उपस्थित हो, मेरी इच्छा है कि तुम लोग अपने अपने इष्ट का स्मरण कर परस्पर विद्यावाद करो और अपने अपने काव्य चातुर्य्य की चासनी चखाओ। निदान कविचन्द बोला हे राजन् जिसे लोग इन्दु चन्द या विधु कहते हैं वह मेरे ज्ञान तो मनसिज स्वरूपी बाज का नाल या नागफनी नावक के तीर की गासी है। कभी कभी शृंगार समर की तलवार या दिशारूपी सुन्दरी के नख की उपमा भी जँचती है कभी मालूम होता है कि मनमथ के चक्र का टुकड़ा, नवोढा वधू के अधर का बिम्ब, विरह रूपी सिंघ का नख अथवा कामिनी के बाके कटाक्ष का काँटा है। इस पर केदार कवि ने कहा पुराने पत्र झरते हैं नई कोंपें अकुराती हैं डहडही डाली लहलहाती हैं केकी कीर कोयल कलापते हैं जहाँ तहाँ भ्रमर भी अलापते हैं और त्रिविध बयार बहती है इस प्रकार से कभी कभी बिना बसन्त ऋतु के भी बसन्ती आनन्द आस्वादन करने में आता है। इसके उत्तर में कविचन्द ने एक छन्द पढ़ा जिसका आशय यों है "सत्य है जब ऐन वय सन्धि अवस्था प्राप्त होती है तो शैशव रूपी सिकदार का अधिकार स्वयं घटने लगता है। उसकी शिशिर स्वरूपी शासन प्रणाली में एक दम लौट फेर हो जाता है और यौवन काल रूपी राज्य में सर्वत्र (अंग प्रत्यंग में) महाराज मकरकेतु की दुहाई फिर जाती है। कमल कली से कुचों पर भ्रमर सी श्याम आभा उभड़ आती है और दीप शिखा सी छवि पर रसिक जन पतिंग से प्राण प्रवारने लगते हैं (दोनों कवियों की मूल कविता का जो मर्म है वह मूल छन्दों से मालूम हो सकता है) कुकवि लोगों की कविता टूटे हुए हार के मोतियों की भाँति है जिस का न ओर है न छोर परन्तु सुकवियों का

काव्य सुघडता से पोहे हुए सुढार मोतियों के हार की भाँति है उसे जिस ओर से देखिए सुन्दर मालूम होता है।

इस प्रकार से किंचित काव्य चातुर्य्य की परीक्षा हो चुकने पर दोनों कवि अपनी अपनी तान्त्रिक कलाएँ प्रगट करने को उद्यत हुए। केदार कवि ने कविचन्द से कहा सावधान हो कर मेरी कला देखिए। यों कह कर उसने एक सौ छिद्र वाला मिट्टी का घडा दरबार के बीच में रख दिया और ज्यों ही मंत्र पढ उसके मुँह पर वस्त्र डाला कि उस के प्रत्येक छिद्र में से जाज्ज्वल्यमान ज्वालाएँ प्रज्ज्वलित होने लगीं और प्रत्येक ज्वाला में से अनेक प्रकार के छन्द प्रबन्धो की ध्वनि प्रगट होने लगी। घडे के मुँह से तो छओ भाषाओ मे छओ शास्त्रों और वेद की ऋचाओ का उच्चारण स्पष्ट होने लगा। परन्तु ज्योंही कविचन्द ने मंत्र पढा कि उस घडे में से एक हुंकार शब्द उत्पन्न हुआ और अग्नि शिखा के स्थान मे जलधारा द्रवी भूत होने लगी। केदार कवि ने कहा ' हे चन्द मै एक मास के बालक को मुँह बुला सकता हू, इस पर कविचन्द ने उत्तर दिया कि मै हाल के जन्मे बच्चे से छओं भाषाओं का उच्चारण करा सकता हू। यह सुनते ही केदार कवि ने सम्मुख खड़े हुए राजा के घोडे पर अक्षत पढ़ कर मारे जिन से उसने शिर झुका कर राजा को आशीर्वाद दिया परन्तु जब चन्द कवि ने उसी घोडे के सिर पर एक पुष्प रख दिया तो उसने एक इतिहासार्थात्मक गाथा पढी जिसका अर्थ यह है—जो महाभारत में पार्थ के सारथी हुए जिन्होंने गर्भ मे परीक्षित की रक्षा की और जिन्होंने प्रह्लाद भक्त को भी बचाया वेही भगवान कृष्णचन्द्र, हे पृथ्वीराज, आप की रक्षा करें *। इस पर केदार कवि ने एक ऐसा मंत्र पढ़ा जिससे एक बडी भारी चट्टान जगम की नाईं द्रुत वेग से चलने लगी। तब कविचन्द ने मंत्र द्वारा अपनी अगूठी मारकर चट्टान की गति बन्द कर दी, कविचन्द ने अपनी अगूठी वहा से वापिस भी लेनी चाही परन्तु यह नहीं हो सका। केदार कवि ने कविचन्द के मंत्र बल को काट दिया। तब कविचन्द ने एक मंत्र पढ़ कर जो फूंक मारी कि सारी चट्टान पानी होकर बह गई और उसकी अगूठी हाथ मे वापिस आगई। कविचन्द की इस कला पर केदार कवि ने एक विलक्षण कला की। वह यह कि उसने एक लडके का धड से सर जुदा कर दिया। सो मुण्ड तो नाना प्रकार के छन्द प्रबन्ध पढने लगा और धड इधर उधर कल्लोल करता हुआ फिरने लगा। यह अद्वितीय अभिनय देख कर समस्त दर्शक मंडली भौचक सी रह गई और कविचन्द स्वयं सहम गया। उसी समय अन्तरिक्ष मे एक वाणी सुनाई दी कि हे कविचन्द तू मुझे विशेष प्रिय है तेरी जिव्हा से जो कुछ उच्चारण होता है उसे साक्षात् मेरी ही वाणी समझना चाहिए। मै और कवियो के कंठ मे तो कला विकलाओ से वास करती हू पर तेरे मे सम्पूर्ण कलाओं से रहती हू, तू सदैव विजयी है। यह सुनते ही कविचन्द का चेहरा तो चमक उठा, परन्तु केदार कवि कुछ मन मलीन हुआ। तब समस्त दर्बारियों सहित पृथ्वीराज ने कहा "केदार कवि हम तुम्हारे काव्य चातुर्य्य और तान्त्रिक प्रयोग दोनो से खूब प्रसन्न हुए आपकी समस्त विद्या सराहनीय है और आप एक सुकीर्तिवान कवि हो।

कविचन्द ने सरस्वती का ध्यान धर कर स्तुति की कि हे भगवती इस संसार की उत्पादिनी और लयकारिणी तू ही है। मुक्ति की आशा से यद्यपि अनान्य सब देवी देवताओं की सेवा पूजा की जाती है परन्तु सब देवों का सार स्वरूप एक तेरी ही ज्योति है। संसार सुख की सामग्री के द्वारा पदार्थों की देने वाली अष्टसिद्ध नवनिद्धि तेरा ही कल्याण है संसार के समस्त प्रपंच माया मोहादिक तू ही है और [illegible] की [illegible] मुक्त सीमा भी तू ही है

* गाथा। जिन सारथ्य साज पथ्थौं जिन रख्यौ गर्भ उत्तरस्य। जिन रक्षा प्रहलादौ सो कृष्ण रक्षा राज पथिराज।

यावत् अगाध गुणों की सार-स्वरूप मेरी जिव्हा पर बसनेवाली भवानी मैं तुझे बार बार प्रणाम करता हूं; क्योंकि तेरी भक्ति के बिना कोई काव्यशक्ति कदापि पाही नहीं सकता। अस्तु मैं एक मात्र तेरे ही चरण-कमलों का आश्रय करके आशा करता हूं कि इस समय विद्यावाद में विजयी होऊं। इस पर सरस्वती ने अंतरिक्ष में उत्तर दिया कि हे पुत्र! तू किसी बात की चिन्ता न कर। तेरे सर पर सदैव मेरा हाथ रहता है। जहां तू है वहां मैं हूं, जहां तू नहीं वहां मैं नहीं अथवा जहां मैं हूं तहां तू है और जहां पर मैं नहीं वहां तू भी नहीं। तू अभय हो, मैं तेरी सहायता करूंगी अत जो कुछ तू कहेगा वही होगा। जो जो गुण तू चाहेगा वे मैं तुझे दूंगी। तू मेरा प्रतिनिधि एवं यंत्र स्वरूप होकर कार्य्य कर।

केदार कवि बोला हे! कविचन्द अब तक तुमने पाखण्ड से काम लिया है। इस प्रकार के दृष्टबन्ध प्रयोगों से इष्टसाधना का परिचय नहीं पाया जाता। अच्छा अब जो मैं कहता हूं उसका उत्तर दो। यदि एक पाषाण की पूतरी आपही आप भगवती के सम्मुख खड़ी होकर स्तुति करे तो समझूं कि आप पक्के बर्दाई है। इस पर कविचन्द ने कहा। हां जिसको आप पाखंड कहते है वह आप भी कर दिखाइए। मैं एक अंगूठी फेंक देता हूं उसे आप मंगा दीजिए। इसके बाद केदार कवि ने एक वयःसन्धि नायिका पर और एक बाल चन्द्रमा पर दो कवित्त और पढ़े और कहा देखिए पावस की बहार दिखलाता हूं। केदार कवि के इतना कहते ही जोर से पवन चल उठी और बदल गड़ गड़ाने लगा. देखते ही देखते अन्धाधुंध कारी कारी घटा उठ आई, बिजली चमकने लगी और रिमझिम मेह भी बरसने लगा। उसी समय सहसा एक [illegible] प्रगट हो गया जो कि नाना प्रकार के तरु-[illegible] पल्लव और पुष्पों से परिपूर्ण था और जहां [illegible] शोर करते और झिल्ली झनकारती थीं। [illegible] मन्त्र [illegible] ने [illegible] कवि-[illegible]

समस्त सामग्री जहां की तहां समाप्त हो गई और वसन्त का समा बंध गया। बद्दल छिन्न भिन्न होकर प्रकृति निर्मल हो गई। जहाँ तहाँ आम के बौर और पतझाड़ पलासों पर लाल लाल पुष्पों के लहलहे झौर देख पड़ने लगे। झिल्ली के स्थान में थान थान पर भौंरों की गुंजार होने लगी और मोरों के घोर शोर कोयल के बोलो में बदल गए। इसी प्रकार केदार कवि ने जो जो कलाएँ कीं उन सब को कविचन्द ने काट दिया। अन्त में केदार कवि ने कविचन्द से कहा कि यदि तू इस साम्हने पड़ी हुई शिला को गला दे तो मैं तुझे सच्चा बर्दाई जानूं। यह सुनतेही कविचन्द ने दुर्गा का ध्यान धर कर जो एक मन्त्र पढ़ा तो वह शिला पिघल कर पानी सी हो गई और गले हुए हीरे की तरह दमदमाने लगी। तब कवि ने उसमें अपनी अंगूठी गाड़ कर केदार कवि से कहा कि अब तू इसमें से मेरी अंगूठी निकाल दे तो मैं तुझे सच्चा इष्ट वाला कवि जानूं और तुझसे हार मानूं। केदार कवि ने नाना प्रकार के जंत्र मन्त्र पढ़ कर अपना सा उपाय किया परन्तु वह उस अंगूठी को न निकाल सका। तब तो वह कविचंद के गोड़ों लग गया और कहने लगा कि आप जीते मैं हारा। इस प्रकार पराजित होने पर भी केदार कवि ने एक कला और कर दिखाई। उसने एक सौ छिद्र वाले घड़े को मन्त्र बल से जमुना की ओर प्रेषित किया और उसमें जल भर मँगाया। यह देख कर सब दर्बारी बड़े प्रसन्न हुए और पृथ्वीराज ने कहा कि तुम दोनों कवि बराबर हो तुम कोई भी एक दूसरे से कम नहीं हो। यों कहकर पृथ्वीराज ने केदार कवि का बड़ा सत्कार किया और उसे पांच दिन पर्यन्त अपना मेहमान रक्खा। पांच दिन पर्यन्त केदार कवि का विधिवत उचित आदर सत्कार किया गया और चलते समय तीन हाथी [illegible] घोड़े, [illegible] के [illegible] बहुत [illegible] और [illegible] नकद मुद्रा [illegible] में दिए [illegible]। [illegible] समय केदार कवि ने पृथ्वीराज को आशीर्वाद दिया।

1 [illegible]

श्लोक

यावच्चन्द्रो दिवानाथ यावत् गंगातरंगयो ।
तावत् पुत्र प्रपौत्रस्य दुर्ग ग्राम विलोकयेत् ॥

पृथ्वीराज ने कहा हे कवि यदि कुछ अपराध हुआ हो तो क्षमा करना। तत्पश्चात् कविचन्द ने भी केदार कवि की बड़ी प्रशंसा की और सब तरह से उसे प्रबोधा। आशीर्वाद स्वीकार कर के पृथ्वीराज ने दस गाव का पट्टा भी केदार कवि को दिया जिसे पाकर उसने एक कवित्त पढ़ा जिसका आशय यों है—"हे पृथ्वीराज तू सब प्रकार की जीनकारी और दान देने में एक ही है। तेरे कृपा कोर के देखने से ही दो सौ का दान प्राप्त होता है। यदि तू केवल वचन से बोल दे तो पाच सौ की प्राप्ति होती है। जानपहचान होने पर हजार और परस्पर वार्तालाप होने पर लाख की प्राप्ति होती है। यदि सौभाग्य वश किसी गुणी को अपना गुण दिखाने का अवसर प्राप्त हो तो उसके पुत्र प्रपौत्र तक का दरिद्र दूर हो जाता है। सो हे सोमेस सुत पृथ्वीराज मै हृदय से आशीर्वाद देकर अपने छोटे पुत्र को भी आपकी सेवा में समर्पण करता हूं उसे अपनाइए।

इस प्रकार दान मान सम्मान सब भाँति से सतुष्ट हो मन ही मन प्रसन्न होता हुआ केदार कवि गजनी को रवाना हुआ। उसके साथ में गजनी से आए हुए गुप्त दूत भी लौट चले जो कि सदा उसके साथ में जोंक की तरह रह कर पृथ्वीराज का भेद लेते रहते थे। इन गुप्तचरों ने यथासम्भव शीघ्र ही गजनी पहुंच कर शहाबुद्दीन से सब समाचार जा कहा और धर्म्मायन का लिखा हुआ कूट-पत्र भी पेश किया। तत्तारखा ने जब वह पत्र पढ़ा तो समस्त मीर मुसाहब मारे खुशी के फूल कर कुप्पा हो गए। शहाबुद्दीन ने आज्ञा दी कि इसी समय जगी तय्यारी की जाय और सहायक सेनाओं को जुटाने के लिये जहा तहां परवाने भेजे जाय। शाह की आज्ञा होतेही बात की बात में सब सामान दुरुस्त हो गए। नियत तिथि को सब सेना सहित शहाबुद्दीन गजनी से कूच कर दस कोस पर आन पड़ा। यहा पर उसने एक अन्तरंग सभा की जिसमें सब मीर मुसाहब उपस्थित थे। शहाबुद्दीन ने सब को सुना कर कहा। अय मेरे अजीजो! इस वक्त मुझे अपने जासूसों के जरिये से जो खबर मिली है उससे तो फतह की पूरी उम्मेद है मगर फिर भी आप लोगों को निहायत मुस्तैद रहना मुनासिब है क्योंकि राजपूत बच्चों से लड़ना लोहे का चना चबाना है। यह सुनकर खुरासान खां और तत्तारखां बोले "हुजूर हर्गिज फिक्र न करें ये रोजे रमजान के दिन हैं और नमाज का वक्त है, हमारे दिलों में पूरी उम्मेद है कि हम लोग फतह-याब होंगे और दुश्मन जेर होकर लाचार होगा"। इसके सिवाय और और सर्दारों ने भी अपने अपने हथियार छूकर और बाहें उठाकर कहा कि हम लोग कुरान शरीफ की रू से कहते है कि अब की बार हम जरूर ही पिथौरा को कैद करके छोड़ेंगे और साथही ये शर्तें भी करते है कि अगर ऐसा न करें और शिकस्त खा कर मैदान जग से भाग आवें तो आपको इख्तियार है कि आप हम लोगों को जिन्दा दफन करा दें। इस तरह कौल करार हो चुकने पर आगे की तय्यारी हुई और बराबर कूच दर कूच चलता हुआ शाही लश्कर सोनपुर के पड़ाव पर आगया। सोनपुर के घाट नदी पार कर के नगर के दक्षिण पार्श्व में खेमें जमे। एक दिन रह चुकने पर दूसरे दिन फिर से अतरंग सभा की तय्यारी हुई। सब मीर मुसाहब यथास्थान आ बैठे। शहाबुद्दीन अपने आसन पर आसीन हुआ ही था कि केदार कवि के आ पहुँचने की इत्तला हुई। शहाबुद्दीन ने तुरन्त ही केदार कवि को अपने पास बुलाया और कुशल प्रश्न पूछकर उसे उचित आसन पर बैठने की आज्ञा दी। अभी शहाबुद्दीन केदार कवि से ही बात कर रहा था कि तब तक चार छद्म-वेषधारी योगी अर्थात् गुप्तचरों के आने का समाचार मिला। शाह ने उन्हें भी सम्मुख आने की आज्ञा दी और केदार कवि से बातें करना छोड़ कर उनकी सुनने लगा। उन अंग विभूति रमा

मृगछाला सिंगी सेली मालाधारी दूतों ने शाह के संमुख आकर अदब से सलाम किया और प्रसन्न मन होते हुए वे बड़े चाव से बोले। हुजूर का इकबाल बड़ा है। जो दुश्मन आप के मन में खटक रहा था उसने अपनी बर्बादी का सामान आप तय्यार कर रक्खा है। उसने अपने वजीर कैमास को खुद मार डाला है इसी से उसके सब बहादुर सरदार उससे बेदिल हो रहे हैं। उसने अपने नामी सिपहसालार चामडराय को बेडियों में डाल रक्खा है और वजीर की मौत की वजह से आप खुद ऐसा गमगीन रहता है कि उसे दिन को आबदाना और रात को नींद आना हराम हो रहा है। इस वक्त वह कुल तीस हजार सिपाहियों के साथ इधर उधर शिकार खेलता हुआ पानीपत के मैदान में आ पड़ा है। वहाँ पर पडे हुए उसे दस दिन हो चुके है और करीब दस दिन अभी और भी वहीं रहेगा। यह समाचार सुनते ही शहाबुद्दीन की कली खिल गई। वह अपने सिपहसालार सर्दारों को सबेरे ही वमें तय्यार करने की आज्ञा देकर आप शयनागार को चला गया।

यह हाल चाल देख कर केदार कवि का पिता दुर्गा कवि बोला "रे केदार जिस दानी राजा पृथ्वीराज से इतना दान सम्मान पाकर आया है उसी पर यह सेना सजी जा रही है। होनहार तो सब विधाता के हाथ में है पर देख इस समय अपने कुल को कलंक लगता है। एक तो पहिले माधव भाट ने ऐसी करतूत की कि जिससे राजाओं का चित्त भाटों की ओर से फिर जाना सम्भव है फिर अब यह घटना अनायास आ उपस्थित हुई है। इस लिये इस समय राजा पृथ्वीराज को सचेत कर देना उचित है। पिता के ऐसे वचन सुन कर केदार कवि ने अपने छोटे भाई दास कवि से कहा कि तू इसी समय पानीपत जाकर पृथ्वीराज को सूचित कर दे कि आप पर शाही सेना चढ़ी आती है। सोनपुर के पास पुल [illegible] कर शाही सेना सिन्धु पार हो चुकी है और [illegible] मुसलमान सर्दारों ने [illegible] कर [illegible] प्रतिज्ञा की है कि चाहे जो हो अब की बार पृथ्वीराज को बिना पकडे न छोडेंगे। बड़े भाई की आज्ञा मान कर दास कवि वहाँ से उसी समय बिदा हुआ और तेजी से चलता हुआ वहा का छूटा पानीपत में जा पहुँचा।

एक प्रहर रात्रि जाते जाते, दास कवि पानीपत के मैदान में पृथ्वीराज के शिविर के सम्मुख जा उपस्थित हुआ। इत्तला पाते ही पृथ्वीराज ने उसे अपने पास बुलाया और पूछा क्या है? तब वह बोला अन्नदाता गजनीपत शहाबुद्दीन आप पर चढ़ा चला आता है, सो मै अपने भाई का भेजा हुआ आपको यही सूचना देने आया हू। शाह के आ पहुचने में देर नहीं है, सभा सबेरे उसे आया ही समझिए। यह सुनतेही पृथ्वीराज ने लाल लाल आखे करके एक नजर से अपने सामन्तों की ओर देखा। वहा क्या! वे रणोन्मत्त सूर सामन्त सदा युद्ध के लिये उत्सुक रहते थे। उक्त समाचार पाते ही सामन्तों के सीने फूल उठे, मोढ़े फड़क उठे मूछें धर्रा उठीं और उनके ऐन जोशीले चेहरों पर अग्नि ज्वाला का सा तेज जाज्वल्यमान हो उठा पृथ्वीराज ने सामन्तों से पूछा कि इस समय पैदल युद्ध किया जायगा या घोडों पर से? इसके उत्तर में कन्ह चौहान बोला कि यह स्थान घुडचढ़ी लडाई के योग्य नहीं है। साम्हने तो घने जंगल से परिपूर्ण बडी बीहड भूमि पडती है; पीछे और बाई तरफ गम्भीर जलाशय है इस लिये आधी सेना तो घोडों पर रह कर दाहनी ओर उचित समय पर सहायता करने के लिये सन्नद्ध रहे और आधी सेना पाय पैदल होकर आगत यवन दल बल को दलन करने के लिये प्रस्तुत रहे।

रात्रि व्यतीत होने पर प्रात काल ही पृथ्वीराज की सेना में [illegible] नगाड़े बजने लगे और सूर सामन्त एक [illegible] [illegible] करने लगे। [illegible] योद्धाओं ने अपने [illegible] कर [illegible] व्यूह की रचना की और [illegible] सैनिक [illegible] पर सन्नद्ध होकर सहायता के लिये सन्नद्ध रहे। सामन्त कन्ह चौहान,

गोविंदराय गहलोत, जैतसिंह, बलिभद्र, रामराय बड-गुजर दोनों भाई और बाप बेटे दोनों हाड़ा हम्मीर उक्त कमल व्यूह की पाँखुरी हुए ! बग्गरी राय, पज्जूनराय, नाहरसिंह और पीप पड़िहार उसके पराग हुए। राज्यमंत्री जैतराव प्रमार उक्त पुष्प की नलिका एवं मृणाल हुआ और पृथ्वीराज सबके बीच में सजा। इसके सिवाय जामराय यादव भोंहा चन्देल और विंझराज आदि सामन्त घुड़चढ़ी सेना के सहित दक्षिण अवकाश पर सन्नद्ध रहे।

जहां से शहाबुद्दीन सिन्धु पार हुआ था वहा से और पानीपत से पचास कोस का अन्तर बैठता है। परन्तु मुसल्मानी सेना वहा से रात दिन कूच करती हुई इस वेग से आई कि सचमुच सबको आश्चर्य्य सा होगया। इधर राजपूत सेना में जहा तहां प्रबन्ध होही रहा था कि शाही सेना की अवाई की धलि उड़ती हुई देख पडने लगी। शाही सेना में मुस्तफा खा और दलेज खा दो नामी सरदार पीठ सेना और प्रकोट सेना के स्वामी थे, शाह स्वयं सब सेना का सेनापति था। बेला टलजाने के कारण राजपूत सेना से एक योजन के अन्तर पर शाही लश्कर के भी डेरे पड गए। रात्रि को तत्तार खा ने शहाबुद्दीन से कहा कि हिन्दू लोग मैदान जंग का मौका देख कर पैदल लडाई करने के लिये तैय्यार हैं। इस लिये इस वक्त हम लोगों को भी पैदल लडाई करनी मुनासिब है, लिहाजा पचास हजार पैदल सिपाहियों को साथ लेकर मैं तो दुश्मन से जंग लेता हू और बाकी पचास हजार घुडचढ़ी फौज के साथ आप मदत के वास्ते मुस्तैद रहिए। शहाबुद्दीन ने तत्तार खा का यह प्रस्ताव प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया और उसी के अनुसार मुसल्मान सेना को हुक्म भी सुना दिया गया।

दूसरे दिन आकाश में उजेले की आभा पड़ने ही दोनों दलों में जोर जोर से घनघोर ध्वनि हुई सुरीले रणवाद्यों का स्वर सुन कर सूरवीरों के तो सीने दूने होने लगे परन्तु कायर पुरुषों के कलेजे कांपने लगे। दोनों सेनाओं के अग्रभाग में हथनार कुहकबान और जंबूर आदि अग्न्यास्त्रों की भरती थी इस लिये दिखादाव होते ही दोनों ओर से अग्नि वर्षा होने लगी जिससे उस सघन बन मय पहाड़ी स्थान में इस प्रकार धुआं भरगया कि दोनों दल के लोग कुछ देर के लिये अन्धे हो गए। परन्तु धुआ धक्कड की सफाई होतेही दोनों ओर के वीर बाकुरे योद्धा एक दूसरे पर अनयारे बान बरसाते हुए ऐसे टूटे जैसे कामातुर करी किसी करिनी पर टूटता है। इधर के राजपूत वीर राम राम रटते और उधर के मीर पीर अली अली पुकारते एक दूसरे पर पिलते हुए दोनों दल परस्पर ऐसे हिलमिल गए जैसे खिचड़ी मे घी। यदि एक दूसरे के कंधे पर तलवार का वार करता तो तीसरा उसके खोपडे को खाड से फार देता था, कोई किसी के कोख में खंजर खोसता तो कोई किसी के सीने में सेल धसा देता था, किसी का धड से सर अलग जा छटकता तो किसी की आँते निकल कर उसी के पैरों में लिपट जाती थीं, किसी का सर नहीं तो किसी के हाथ पैर नहीं-इसी प्रकार से सहस्रों सूरवीर मरते कटते हुए पटते जाते थे परन्तु अपनी अपनी बाजी पर से हटते नहीं थे, उनका ऐसा विकट रणकौशल देखकर आकाश मार्ग में स्थित देवाङ्गनाएं पुष्पों की वर्षा करतीं और रण क्षेत्र मे रक्त पीती हुई योगिनी वीर योद्धाओं के गुणगान करती हुई, फूली अंग नहीं समाती थीं। इसी बीच में दो यवन सर्दार राजपूत सेना को काटते पाटते पृथ्वीराज के पास तक आ पहुंचे और पासही था कि वे राजा पर बेकसर वार करें, परन्तु वीर बाकुरे पृथ्वीराज ने उन्हें इसका अवसर न देकर ऐसी सेल फटकारी जो उन दोनों मीर बन्दों के कलेजे पार गई और वे दोनों घोडों पर से गिर कर आसमान देखने लगे। अपने स्वामी का यह शौर्य्यकौशल देख कर राजपूत सिपाही प्रसन्न हो गए और और भी जी खोल कर हाथ करने लगे। मौका बेढब देख कर उधर से पीठ सेना भी खेत में आगई जिससे मुसल्मानी बाजी मजबूत हो गई इस समय इस जोर शोर से लोहा भभ्गने लगा कि

सूर वीर लोग अपना पराया भूल गए।

लोहे की झार की झपेट बुरी होती है। उसे देख कर साधारण सुकुमार लोगों को तो जूडी का बुखार चढ़ आता है; परन्तु सच्चे सूरवीर उसी के उजेले में आत्म ज्योति का दर्शन करते है या आकाश मे स्थित अप्सराओं का हाथ जा पकड़ते है। उधर से मुसल्मानी दल का बल बढा देख कर इधर से आजान बाहु लोहाना और लगरीराव खेत में उतर पडे और आगे बढ कर उन्होंने शाही सेना को आडे हाथों ले लिया। इन दोनों वीरों के रण कौशल से समस्त शाही सेना मनहार होने लगी और राजपूतों का जी बढ उठा। खॉडे, तलवार तबल, बाने, पट्टे: दाव बिछुआ. बाक, बगुरदा, छुरी, कटार, पेशकब्ज आदि हथियारों के ऐसे करारे वार हुए कि घडी भर के लिये देवता लोग भी क्षुभित हो गए। दम की दम में सैकडों बिना सवार के घोडे इधर उधर अनाथ से दॉत काढतेहुए हींसते फिरने लगे। भसुंड से मुड विहीन हाथी प्रचड स्वर से चिक्कार मारते हुए इधर उधर लुढ़कते फिरने लगे और उनके शरीर से बहता हुआ रक्त पहाडी झरने सा झरने लगा। इसी तरह युद्ध होते होते मुसल्मानी सेना के पैर पीछे पडने लगे यह देख कर शहाबुद्दीन ने अपने सिपाहियो को कसम देकर पुकारा और आप स्वय जान हथेली पर रख कर राजपूत सेना में पैठने को अग्रसर हुआ। इस पर मनहार मुसल्मान सिपाहियों का फिर से दिल हरा भरा हो उठा। वे लोग अल्ला अल्ला का हल्ला करके दीन की दुहाई देते हुए बडे वेग से तेग चलाते हुए झपटे परन्तु अटल राजपूत बच्चे एक पैर भी पीछे न हटे। ज्यों ज्यों उधर से मुसल्मान बढते आते थे त्यों त्यों राजपूत उन के सिर कुलाल के से चक्र उतारते जाते थे। वार उन युद्ध करते हुए बांकुरे वीरों के अंगों में घने घने घावों से बहता हुआ रक्त कुसुम सा फूला जान पड़ता था। जब किसी के सिर पर [illegible] की [illegible] भर गरज [illegible] तो उस [illegible] पड़ [illegible] था। [illegible]

सब हथियारों से हीन होने के कारण कोई कोई आपस में छुरी कटारी के ही मार पेंच के वार कर कर अपना रणकौशल दिखाते थे परन्तु जिनके पास यह भी नहीं वे बिचारे परस्पर मल्ल युद्ध करके ही अपने मन का हौसला पूरा करते थे।

दोनों दल के रण बॉकुरे वीरों की मारा मार के कारण समस्त रणभूमि लोथों से पट गई। तत्तार खां खुरसान खा रुस्तम खा आदि यवन वीरों ने अपना सा पराक्रम किया परन्तु राजपूत योद्धाओं से पार न पा सके। एक लाख मुसल्मान सेना बीस हजार राजपूतों का बेग न सह सकी और दो पहर बीतते ही सब मुसल्मान सिपाही तीन तेरह होकर भाग उठे। यह आपत्ति देख कर शहाबुद्दीन स्वयं भागने को विवश हुआ और घोडे पर से उतर कर हाथी पर सवार हुआ ही था कि उसपर पहाड राय तूअर की ऑख पड गई। अस्तु वह रामराय जादव, भौंहा चदेल, लोहाना आजान बाहु, पज्जून राय और विंझ राय इन पाच सामन्तों सहित शाह को घेरने के लिये चढ दौडा। मालिक पर आफत आते देख कर उधर से बीस मुसल्मान सर्दार शाह की रक्षा के लिये उतरे और इन छः सामन्तों से जुट पडे। बडी देरतक दाव पेंच होते रहे परन्तु अन्त में वे बीसो सर्दार काम आए और भौंहा राय चन्देल ने हाथी के मथार पर भाला जा मारा। जब तक हाथी उसपर झपट करे कि लोहाना आजानबाहु ने एक ऐसा तलवार का हाथ दिया कि हाथी का मुंड रुंड से अलग ही हो गया। तब तक पहाड राय तूअर ने घोड़े को एड देकर हौदे के बराबर जा लगाया और शहाबुद्दीन का हाथ पकड़ कर उसे अनाथ की तरह खींच लिया। बादशाह का यह हाल होते देख कर और भी मुसल्मान सिपाही जो जहां थे सो सब तीन तेरह हो कर भाग गए। शाही खजाना सब राजपूतों के हाथ लगा। इस युद्ध में [illegible] हजार मुसल्मान सिपाही और पांच सौ [illegible] शहाबुद्दीन की तरफ के [illegible] और तीन सौ [illegible] रहे।

इस प्रकार से मुसल्मान सेना को परास्त करके और शाह शहाबुद्दीन को बंदी कर राजा पृथ्वीराज आनन्द के नगाड़े बजाता हुआ सानन्द दिल्ली को लौट आया। वहां पर उसने एक मास पर्य्यन्त शाह को बड़े आदर भाव से मेहमान की तरह रक्खा और फिर आठ सौ घोड़े और बहुत कुछ धन रत्न दं में लेकर उसे सादर गजनी को विदा किया बादशाह से दंड में पाए हुए द्रव्य का आधा भा पहाड़ राय तूंअर को दिया गया और आधा अन्याः सब सामन्तों को।



दिल्ली वर्णन।

उनसठवां समय।

इस देश के अन्तिम हिन्दू सम्म्राट महाराज पृथ्वीराज के समय में दिल्ली नगर की छवि छटा कुछ विलक्षण ही थी। राजा पृथ्वीराज के दरबार का एक निज मुसाहब एवं उसका बाल सखा छओ भाषाओं में परम पारांगत विद्वान अद्वितीय कवि चन्द बरदाई कहता है कि उस समय दिल्ली नगर साक्षात इन्द्र की पुरी के समान शोभायमान था। राजद्वार पर निरन्तर नाना प्रकार के मन हरण स्वर मय सुन्दर बाजे बजा करते थे और साक्षात् काम देव की कलाओं के से अवतार आठ सौ मतवारे हाथी सदा ड्योढी पर घूमा करते थे नगर के बाहरी प्रान्त में जमुना के किनारे पर स्थित निगमबोध स्थान की बहार तो कथनशक्ति से बाहर थी। वहा पर बारहो महीने बसन्त ऋतु का वास रहता था। वहा पर जहा तहा भिन्न भिन्न प्रकार की क्यारियों में भाति भाति के तरु लता और गुल्म लहलहाते थे। सीतल मन्द सुगन्ध त्रिविध बयार बहती थी, केसर कुकुम जाती मालती गुलाब चपा चमेली कुद कदब आदि के मधु की सौधी सुगन्धि से समस्त वायु मडल सुवासित रहता और अनार दाख बदाम श्रीखड पिडखजूर आम अनन्नास जिमूरी विजौरे शहतूत अखरोट लीची नारियल आदि नाना प्रकार के फल मय वृक्ष भी सपत्ति के भार से नम्र होकर सदा मतवालों की तरह झोंका लिया करते थे।

वसन्त ऋतु के दिनों में प्रातःकाल के समय महाराज पृथ्वीराज का दरबार खास प्राय इसी स्थान पर हुआ करता था, जिसमे नाना प्रकार के मधुर स्वर वाले बाजे बजते थे और गायक गण समयोचित स्वर से उत्तमोत्तम राग रागनियों की अलापचारी करते थे। अबीर और गुलाल के झोंकों से सर्वत्र लाली छा जाती थी। बीचोबीच महाराज पृथ्वीराज का राज्य सिंहासन लगता और आस पास उसके सखा सामन्त लोग बैठते थे। राजा के सिर पर आच्छादित रत्न जटित छत्र और अगल बगल ढुरते हुए मोरछर ऐसे भले मालूम देते थे जैसे साक्षात् मधुमास ही राजा पर छाया किए हो। पृथ्वीराज के वाम पार्श्व में गोइन्दराय, निड्डुर और सलख प्रमार बैठते और दाहने में सोमेश्वर का सगा भाई कन्ह चौहान बैठता था जिस की आखों पर सदा पट्टी चढ़ी रहती थी। गादी के पीछे साक्षात ब्रह्मा के समान विद्वान गुरुराम प्रोहित का आसन रहता और सम्मुख कविचन्द बैठता था। इसके सिवाय चन्दपुण्डीर, चामडराय, लक्खन बघेला आदि सामन्त लोग यथास्थान अपने अपने आसन पर अदब से आसीन रहते थे।

जिस स्थान पर किल्ली ढिल्ली होने के कारण इस नगर का नाम ढिल्ली या दिल्ली पड़ा उसी स्थान पर राजा पृथ्वीराज का राजमहल था। दिल्ली नगर इन्द्र की पुरी था तो राजा पृथ्वीराज के सत खन्ने महल इन्द्र के ही महल थे; जहा पर निरन्तर अनेक प्रकार के आमोद प्रमोद मे एक अनुपम चहल पहल रहा करती थी। राजा पृथ्वीराज के पराक्रम से विजित राजा लोग सदा महलों की पौरि पर हाजिर रहा करते थे। महलों के पार्श्व ही में नरनाह काका कन्ह का निवास स्थान था। जिस प्रतापी पृथ्वीराज के कारण अस्सी लाख सवारों का स्वामी कनौजराज जैचन्द हलहल कापता था और गज्जनीपति शहाबुद्दीन को जिसके सामन्त लोग बार बार बांध लाते थे उसकी विभूति और राजश्री का कहा तक बखान करें। पृथ्वीराज के दरबार के फर्श पर अच्छे अच्छे मुलायम गिलम गलीचे और गादे तकियों की भरमार रहती थी। चांदनी चँदेवा सब जड़ाऊ के थे और दीवारों में जड़ी मरकत की तरह सच्चे [illegible] [illegible] पुखराज और

---

(१) जमुना के किनारे निगम बोध करके रेती का एक मैदान सा है इसी के सम्बन्ध में सुनाई जाता है कि यह पहले एक प्रधान तीर्थ स्थान था।

नीलम आदि अनेक रत्न जड़े हुए थे।

मध्यान्ह काल में भोजन का समय होने पर अटाले का मालिक बनवीर परिहार सभा में आकर सादर हाथ जोड़ कर निवेदन करता। घणीखमा रसोई तय्यार है। तब दरबार बरखास्त होता और अपने सब सामन्तों सहित राजा पृथ्वीराज भोजन करने बैठता, जहां नाना प्रकार के सौंधे और स्वादिष्ट भोजन परोसे जाते थे। अन्नादि षटरस व्यजनों के सिवाय नाना प्रकार के पकवान और तरह तरह का मास(गोश्त) भी नित्त थाले में लगाया जाता था। भोज्य पदार्थों में पड़े हुए केसर अगर कपूर आदि की सुगधि से सारा महल महक उठता था। सब सखा सहेलरों के साथ भोजन करके किंचित विश्राम करने पश्चात् राजा पृथ्वीराज पुन.सभा भवन (दरबारे आम) में आ विराजता था। जरदोजी, जरीबाफ्ता कीमखाब वगैरह से मढे हुए और अन्यान्य राजसी आडंबरों से सुसज्जित सभा भवन के बीच में बैठा हुआ राजा पृथ्वीराज देवताओं के समूह में इन्द्र एव ग्रहों के बीच में सूर्य्य सा सुशोभित होता था और आश्र्व पार्श्व में डटे हुए सामन्त उस भानुवत् हिन्दू सम्राट की रश्मि से देदीप्यमान होते थे। सभा मडल के मध्य में गद्दी के समुख बैठे हुए दसोंधी और गधर्व लोग मधुर स्वर से बाजे बजाते और भ्रू निक्षेप कर कर भाव बताती हुई नृत्यकी गण कलकठ से गान करती और नाना प्रकार के नृत्य करती हुई चपला सी चमकती थीं। जिस समय वे रतिरानी की सी कलाएं एव कोक की सी कारिकाएं नृत्यकी अनेकों कलाए करके नाचतीं और कलकंठ से गान करतीं उस समय ऐसा प्रतीत होता कि इन्हे देखकर तो वल्कलधारी वैरागियों का भी चित्त क्षोभित हो जाना सम्भव है।

राजा पृथ्वीराज इस प्रकार से दिन भर तो अपनी मित्र मडली के साथ बिताता और रात्रि को अन्तरमहल में जाकर पटरानियों के सहवास मे जीवन की मौज उड़ाता था। राजा पृथ्वीराज की नव रानिया थीं।

न	रानी का नाम	पिता का नाम	नैहर	विशेष
१	रानी इछिनी	सलख प्रमार	आबू	जेष्ट पटरानी
२	... .	परिहार राजा	मंडोवर	
३	चन्द्रावती	पुंडीर कुल		चन्दपुडीर की बहिन
४	....	दाहरराय	”	चामडराय की बहन रेनकुमार की जननी।
५	शशिवृता		देवागिरि	२६ वा समय देखो
६	इन्द्रावती			३३ वा समय देखो
७	भानमती	....	....	....
८	पज्जूनराय	....	.. ....	.... ..
९	हसावती	....	. . . ..	३६ वा समय देखो

सूर्य्य रश्मियों को आच्छादित करने वाले सतखन्ने महलों के बीच में बिचरता हुआ राजकुमार रेणसी नाना प्रकार की बाल क्रीड़ाए करता था। कुछ बडा होने पर अपने समवयस्क सखा सामन्तपुत्रों के साथ यमुना के किनारे भी खेलने जाया करता था। अच्छे अच्छे रंग बिरग रेशमी वस्त्र और रत्न जटित आभूषण पहिने हुए रेणकुमार बडाही प्यारा और भला मालूम देता था। एक दिन जमुना किनारे खेलता खेलता राजकुमार रेणसी एक गुफा में घुस गया तो अन्दर जाकर देखता क्या है कि साक्षात् शान्ति रस का अवतार स्वरूप एक तेजस्वी तपस्वी ध्यानमग्न बैठा हुआ है। उसके शरीर पर बमीठे लग गए थे और कर्ण कुहरो में कपोत पर मुर्गों ने घर बना लिए थे। लड़कों के ताली पीट पीट कर कोलाहल करने से ध्यानावस्थित मुनि की समाधि भग होगई। तब कविचन्द के पुत्र ने जटाजूट धारी अग्नि के समान जाज्वल्यमान तेजधारी मुनि के साम्हने साष्टाग प्रणाम करके पहिले राजकुमार का और फिर अपने सब साथियों का परिचय दिया। इस पर मुनि महाशय ने सबको आशीर्वाद

देकर कहा हां मै समझा तुम ढुढा के कुल में हो जो कि अजवन में स्थापित अजमेर नगर का राज्य करता था। उसी ढुढा के अश से उत्पन्न पृथ्वीराज इस समय दिल्ली नगर का शासक है। यह दिल्ली की भूमि बडी विलक्षण है। यह किसी मुनि करके शापित है इसलिये इस पर कोई एक छत राज्य नहीं कर सकता। पहिले तो इस भूमि के लिये पाडवों ने कौरवों को मार कर अपना राज्य जमाया; पर वह भी न रहे तो तोमर राजा हुए और वे भी किल्ली ढिल्ली करके चल बसे तब अब चहुआन है। परन्तु इनके पश्चात् अब शीघ्रही मेवाती लोगों का राज्य होगा।

राजकुमार रेणसी गुफा से चल कर अपने सब बाल सखाओं सहित राज महल को रवाना हुआ। सब सामन्त बच्चे घोडो पर और उनके बीच में हाथी पर सवार राजकुमार रेणसी ऐसा सुशोभित होता था मानों देवताओं की मडली में एरावत पर सवारी किए हुए इन्द्र चला जा रहा हो। राजकुमार रेणसी के साथ में जो अन्यान्य सामन्तों के कुमार थे उनकी नामावली नीचे लिखी जाती है।

सामन्त कुमारों की नामावली।

०	कुमारों का नाम	पिता का नाम	विशेष
१	ईसरदास	कन्ह चौहान	खट्टपुर का जागीरदार
२	चन्द्रसेन	निड्डुर राय राठौर	
३	करनसिंह	जैतराव प्रमार	
४	सामन्तसिंह	गोयन्दराय गहलोत	
५	प्रतापसिंह	दाहिमा कैमास (राज्यमत्री)	
६	[illegible] सिंह (धीरपुंडीर)	चन्दपुंडीर	
७	तेजपुंज	पीपा परिहार	
८	पहित हरिदेव	गुरुराम प्रोहित	
९	[illegible] सिंह	हाहुलीराय हम्मीर	
१०	[illegible] सिंह		
११		[illegible]	
१२	[illegible]	[illegible]	
१३	राजसिंह	सिंह प्रमार	
१४	रनधीर सिंह	रामराय बड़गुज्जर	
१५	जल्हन कुमार	चन्दवर्दाई	
१६	पातल सिंह	हरसिंह	
१७	देवराज	विंझराज सौलकी	
१८	अचलेस कुमार	देवराज बग्गरी	
१९	पहार राय	पज्जूनराय	
२०	हरदार	नरसिंह हाड़ा	
२१	अमर सिंह	प्रसग राय खीची	
२२	तेज डोड	सुमेर सिंह	
२३	सिवदास	जघारा भीम	
२४	कविदास कुमार	केहर कंठेर	
२५	आरेन कुमार	अत्ताताई	
२६	....	परिमाल चन्देल	

बसन्त पचमी का उत्सव आया हुआ जानकर महाराज पृथ्वीराज ने आज्ञा दी कि बसन्त के दरबार का सामान सजा जाय। आज्ञा पाते ही सेवकों ने उस ओर परिश्रम करना आरम्भ किया। वसन्त पचमी के दरबार के लिये नियत स्थान सजा जाने लगा। इधर प्रधान को आज्ञा दी गई और वसन्त के उत्सव पर आवश्यक समस्त सामग्री जुटाई जाने लगी। बात की बात में मनों अबीर गुलाल लाकर हाजिर किया गया। केसर कस्तूरी अगर चन्दन कपूर आदि सौंधी सुगन्धि हरे हरे तरु लता पल्लव और वदनवारें आदि और नाना प्रकार के पुष्पों से यथाविधि सभा मडप सजाया गया। सूती रेशमी जरतारी और तरह तरह के बसन्ती वस्त्रों की भी यथा स्थान उचित सजावट की गई। ऐसे सुसज्जित सभामण्डप के बीच में श्री गोपाल लाल जी का सिंहासन स्थापित किया गया। बसन्त पूजा का समय होते ही ढोल, [illegible], [illegible], [illegible], शहनाई, [illegible], [illegible], [illegible], डिंडिम, आदि नाना प्रकार के आनन्द बाजे बजने लगे। [illegible]

बुलाए गए। कन्ह, निड्डुर, गोयद राय, पज्जूनराय, अत्तताई, और सब सामन्तों सहित पृथ्वीराज भी श्री गोपाललाल के सिंहासन के पास आ बैठे। गायकों ने गाना आरभ किया नर्तकों ने नाचना आरम्भ किया और नट लोगों ने श्री भगवान कृष्णचन्द्र जी की नाना प्रकार की लीला विहार के नाटक खेल कर दर्शक मंडली को मुग्ध कर दिया। आधी रात के उपरान्त दरबार बर्खास्त करके राजा पृथ्वीराज ने सब लोगों को इनाम देकर विदा किया और वह आप भी अन्तर महल में विश्राम करने चला गया।

इसी प्रकार नाना भांति के रासरंग और आमोद में समय विताता हुआ राजा पृथ्वीराज दिल्ली राज्य की राज्यश्री का सम्पूर्ण रूप से सुख भोग कर रहा था।



जंगम कथा।

(साठवां समय।)

एक समय की बात है कि राजा पृथ्वीराज समस्त शूर सामन्तों सहित सभा में बैठा हुआ राजसी रसरंग का आनन्द आस्वादन कर रहा था। संगति विद्या और नृत्य कला में अत्यन्त निपुण, हाव भाव कटाक्ष और अन्यान्य स्त्रियोचित कला चातुर्य्यों में चित्र रेखा को भी चुटकियों चलाने वाली, एक अनुपम स्वरूपवती वेश्या ताल के तारतम्य से बँधी हुई लै में, ऊंची नीची चल फिर और आडी सीधी लौट फेर करती हुई, समयोचित स्वर से अच्छे अच्छे राग रागनियों में मनोहर गीत गाती और बात बात पर भाव बताती हुई राजा पृथ्वीराज के सहित समस्त उपस्थित सभासदों का चित्त चुरा रही थी।

उसी समय कन्नौज से आया हुआ एक जंगम आ पहुंचा। उसके आतेही पृथ्वीराज ने सौ स्वर्ण मुद्रा और एक घोडा इनाम में देकर वेश्या को तो विदा किया और दरबार बर्खास्त करके आप उस जंगम से वार्तालाप करने लगा। पृथ्वीराज ने उक्त जंगम से पूछा। कहो क्या समाचार लाए? तब वह बोला महाराज सुनिए। कन्नौजराज जैचन्द के यज्ञ में निमंत्रित हजारों राजा उपस्थित थे। अतः उसी समय सुअवसर देखकर जैचंद ने संयोगिता का स्वयंवर भी रच दिया। आपकी स्वर्ण प्रतिमा दबा लिए हुए द्वारपाल के स्थान पर स्थापित तो थी ही बस उसी यज्ञ मंडप में निमंत्रित राजा लोग आ आ कर बैठने लगे। मुहूर्त आने पर संयोगिता भी चौंसर हाथ में लिए हुई सभा में लाई गई। कन्नौज का राजकवि आगे होकर एक एक राजा के नाम ग्राम और उनकी कीर्ति करतूत कहने लगा। इसी तरह होते होते जब उस [illegible] आपकी प्रतिमा के पास आकर आपका नाम लिया और यश बखान किया तो संयोगिता उसी के गले में चौंसर पहिना दी। यह समाचार पाकर जैचन्द ने कहा! नहीं, बेटी चूक गई फिर से फेरी की जाय। निदान ऐसा ही किया गया पर फिर भी संयोगिता ने अन्य किसी राजा की ओर आंख उठा कर देखा भी नहीं और स्वर्ण प्रतिमा पर जैमाल मेली, परन्तु फिर भी पंग ने न माना और तीसरी फेरी फेरी जाने की आज्ञा दी, इस बार कवि लोगों ने भी अपनी सी चतुराई करने में फेर न लगाया उन्होंने अन्यान्य सब राजाओं के बढ़ बढ़ कर बखान किए और आपका केवल नाम कह दिया पर फिर भी संयोगिता ने उसी स्वर्ण प्रतिमा को वरा।

यह हाल देख कर राजा जैचन्द मोह क्रोध ग्लानि और ईर्षा से अत्यन्त व्यथित होकर बेहोश सा हो गया। वह उसी समय सभा से उठकर अन्तर महल में चला गया और होनहार को प्रबल जान छाती पर घूंसा मार कर चुप रह गया। उसे ऐसा बेहाल देख कर उसके मंत्री ने कहा "हे राजन् होनी अमिट होती है उस पर किसी का चारा नहीं चलता। होनहार के ही कारण दक्ष प्रजापति का यज्ञ भंग हुआ। होनी के कारण राजा पांचाल का यज्ञ बिगडा और इसी होनहार के कारण राजा नघु को नर्क में पडना पडा। कहते हैं कहत बावरा और सुनता सावधान, सो हे राजन् यद्यपि चतुर लोग विद्याओं के बल से भूत भविष्यत वर्तमान तीनों काल की बात विचार करके कार्य्य करते हैं परन्तु सचमुच भविष्यत होनहार क्या है सो कोई नहीं जानता, इस लिये, बीती ताहि बिसार कर आगे की सुधि ले इस पर जैचन्द ने कुछ सचेत होकर संयोगिता को गंगा के किनारे के महलों में रहने की आज्ञा दी। जब से संयोगिता को गंगा के किनारे के महलों में रहने की आज्ञा दी गई तब से [illegible] और नाना प्रकार के [illegible] और [illegible]

(१) [illegible]

करती और अहर्निशि आपही का स्मरण किया करती है। राजा पृथ्वीराज बडी सावधानी से ये सब बातें सुन रहा था। तब तक एक सूफी फकीर भी आ पहुंचा और कुछ ऊपर से नमक मिर्च मिला कर उसने भी यही कथा कह सुनाई।

उक्त जगम और सूफी फकीर ने कन्नौज की कथा कही मानो पृथ्वीराज के जले हुए कलेजे पर नमक मल दिया। पृथ्वीराज एक क्षण भर के लिये छटपटा गया परन्तु कुछ सोच विचार करके शान्त हो गया और अपने चचेरे भाई ईसरदास और भूपतसाह को बुला कर इधर उधर की बातें करने लगा। तबतक मध्यान्ह काल का समय होने को हुआ। इस लिये पृथ्वीराज ने निर्मल गगाजल से स्नान करके मध्यान्ह काल की सध्या की और वह भोजन करने के लिये अटाले में चला गया, परन्तु लगी के मारे योंही लिए दिए भोजन करके अपनी एकान्त रङ्गशाला में जा लेटा। लगी बुरी होती है। वह लगी काहे की जिसमें आख लगे। फिर भी ऊपर से बसन्त की बहार जो कि विरहाग्नि की ज्वाला को जर्जरीभूत करने के लिये आहुति से कम नहीं है। बन बाग उपबन सर्वत्र फूले हुए नाना प्रकार के पुष्पों की पराग मिश्रित त्रिविध बयार और जहा तहा वृक्षों पर उच्चस्वर से कोकिलों की पुकार पृथ्वीराज को अत्यन्त असह्य होने लगी।

उस दिन सवत ११५१ फाल्गुण[1] कृष्णा नवमी थी। दो पहर से सध्या हो गई कुछ अन्धेरा भी हो गया परन्तु न तो पृथ्वीराज को निद्रा आई न उसने अपनी ध्यानमुद्रा खोली। इसी प्रकार आगा पीछा सोचते सोचते जब प्रहर रात्रि होने को हुई तब उसने कविचन्द को बुलाया। थोडी देर में कविचन्द भी आ पहुंचा। पृथ्वीराज ने सादर आसन देकर उससे कहा "हे कवि तुम जानते हो कि जैचन्द ने मेरी कितनी अप्रतिष्ठा की है। मुझे ऐसा तिरस्कृत जीवन तो भार मालूम होता है तिस पर भी तुर्रा यह है कि सयोगिता ने मुझे बरने का प्रण लिया है। सो भी तुम जानते हो। इस लिये अब जैसे कुछ बन पडे सो कन्नौज के चलने का विचार करो। यह सुन कर कविचन्द बोला "महाराज शास्त्र की आज्ञा है कि किसी को कहीं जाते समय रोक टोक न करनी चाहिए परन्तु आपने पूछा है इसीसे कहता हू। आप जैचन्द के बल को जानते हैं अभी हाल की बात है उसकी किंचित् सेना ने आपके सारे राज्य में हलचल मचा रक्खी थी। हजारों गाव खड़े जला दिए गए और सारा देश लूट पाट कर उजाड दिया था। मैं नहीं समझता कि जान बूझ कर किसी सहजोर के साम्हने जा जुडना कौन सी बुद्धिमानी है। भला विचारिए तो सही! कोई ताल ठोक कर जमराज की जिह्वा पर जाता है? कोई मतवारे हाथी से हाथ मिलाता है? कोई समुद्र को पैर कर पार करना चाहता है? अथवा कोई सुमेर शिखर को भी हथेली पर रखने की हिम्मत कर सकता है? यही सब सोच समझ कर कन्नौज जाने की इच्छा कीजिए। होता तो वही है जो होनहार होती है परन्तु अपना आगा पीछा विचार कर काम करना बुद्धिमान का कर्तव्य है। इसी प्रकार और भी कविचन्द ने बहुत कुछ कहा सुना परन्तु पृथ्वीराज ने सब अनसुना कर दिया और कहा कविचन्द कन्नौज को कब चलोगे? कविचन्द ने अपने बसभर सब तरह से समझाया परन्तु पृथ्वीराज ने एक आख न मानी दोनों को बैठे बैठे जब रात्रि का तीसरा प्रहर हो गया तब कविचन्द को विवश होकर हा करनी पडी। हा कहा कर तब राजा ने कवि को छुट्टी दी और तभी आप सोया।

किञ्चिन्मात्र रात्रि शेष रहते गुणीजनगायक लोग राजपौरी पर हाजिर हुए और अपने नित नियमानुसार वीणा बजा कर कलकठ से गान

(१) मूल पुस्तक में महीनों का नाम नहीं लिखा है परन्तु आगे शिवरात्रि के शिवार्चन से मालूम होता है कि फाल्गुण मास था।

करने लगे। आकाश में तारागणों के फीके पडते ही वे लोग चुप हो गए और उनके स्थान में वन्दी और कवि लोग विरद पढ़ने लगे। वादियों ने कहा पृथ्वीतल पर अद्वितीय तेजस्वी राजा पृथ्वीराज को धन्य है। जब वह अपनी सभा में विराजमान होता है तो इन्द्र एव कुबेर सा सुशोभित होता है। इस पृथ्वीतल पर जो जो प्रतापी पुरुष हो गए है उनमें से अब एक भी नहीं है। न हयहय वंशी सहस्रावाहु है न कालिया का नथैया कन्हैया है, न राजा वलि है न लंकापति रावण है। बस इस समय यदि कोई प्रतापी पुरुष है तो अनलकुल में उत्पन्न सोमेश्वर का सुत महाराज पृथ्वीराज है। तब तक भास्कर भगवान का प्रकाश हो आया। राजा पृथ्वीराज शय्या से उठा और नित्य क्रिया से निश्चित होकर शिकार खेलने को जाने के लिये तैय्यार हुआ। जामराय यादव, बलिभद्र राय, विंझराज, महनासिंह, पीपा पाडिहार, लगरी राय का भाई, रामराय बड गुज्जर, लोहाना आजानवाहु, अचलेस भट्टी और हाहुलीराय हम्मीर ऐसे दस पाच सामन्त भी राजा के साथ हो लिए। सब लोग चलते चलते दिल्ली से पाच कोस के अन्तर पर एक सघन वन में जा पहुंचे। वहीं पर एक बनरखे ने खबर दी की एक खोह में एक बड़ा भारी बाराह पड़ा हुआ सो रहा है। यह सुनते ही पृथ्वीराज मौका बॉध कर जा खडा हुआ। उसने आप तो तुवक छाती चढ़ाई और बनरखे को हुक्म दिया कि सुअरों को हाके। बनरखे की आहट पाकर वह सुसुप्त सूअर बिजली सा तड़प कर भाग चला। उस दीर्घकाय भयानक बाराह की खीसें जादू की सी [illegible] सी देख पड़ती थी। सूअर का हाक कर [illegible] से निकालना और राजा का फेर कर- ना [illegible] हुए। गोली सूअर के ठीक टीके पर [illegible] जिससे वह एक उछाल मार कर तत्काल [illegible] हो गया। सब लोग राजा के निशाने की वाह वाह करने लगे और उस दिन का शिकार [illegible] पर समाप्त हुआ।

इस प्रकार शिकार खेल कर राजा पृथ्वीराज महलों को चला गया। दूसरे दिन प्रातःकाल शिवजी का पूजन करने गया। धन्य है उस सर्वव्यापी आशुतोष सदाशिव को जिसे नर नाग असुर सुर गन्धर्व इत्यादि सब पूजते है। उस देवताओं के देवता महादेव के शीश पर सुशोभित जटा जूट और उज्वल गगधारा के दर्शन मात्र से पुरातन पाप पंतिगे भस्म हो जाते हैं। उसके ललाट पट में चन्द्रमा और उसी के पास जाज्वल्यमान तीसरा नेत्र सुशोभित है। पचमुखी शिवजी के शीश पर लसत पंच स्वर्ण मुकुट ऐसे सुशोभित होते हैं जैसे गगा के उपकठ में सुमेर शिखर स्थित हो। ऐसे भोलानाथ के गले मे कालिया सर्प लिपटे और हृदय पर रुडमाला रुरती है व्याघ्रचर्म का कोपीन और गज चर्म का आसन जिनका। यावत तीनो लोकों के त्रिविध ताप नाश करने वाली त्रिशूल जिनके बाए हाथ में है और डिम डिम शब्द करने वाली डमरू दहिने हाथ में। ससार की शक्ति स्वरूप अर्धाङ्गिनी पार्वती जिनके वाम पार्श्व में विराजमान रहती है और स्यामकार्तिक और गणेश सुमुख। एक मात्र एक बूढा बैल है वाहन जिनका ऐसे उस कैलाशवासी शिव के स्मरण मात्र से समस्त सासारिक पाप पलायमान हो जाते हैं। ऐसे शिवजी के शिवालय के दर्शन करतेही पृथ्वीराज का चित्त प्रसन्न हो गया। उसने दूरही से माथा नवाया और विनीत भाव से मनही मन प्रार्थना की कि हे शिव मेरी रक्षा कर।

इस प्रकार मन ही मन वदना करते हुए पृथ्वीराज ने पुन गगाजल मे स्नान किया और दिव्य वस्त्र धारण कर शिवार्चन के लिये सन्नद्ध हुआ उस समय वह ऐसा भला मालूम होता था मानो हरिद्वार में [illegible] कोई दिव्य [illegible] हो। [illegible] पृथ्वीराज शिवालय में पहुंचा और शिवजी को [illegible] कर पूजन करने बैठा, [illegible] [illegible]

एक हजार घड़े दूध एक हजार घडे दही, पांच सौ घड़े शहत और पाच सौ घडे काश्मीर, इस तरह नो हजार घडे से शिव जी के प्रथम स्नान करवाए । फिर केसर कस्तूरी कुकुम आदि सुगंधिमिश्रित सौ घट गुलाबजल से स्नान कराए, तत्पश्चात् चन्दन चावल और वेलपत्र चढ़ा कर मन्दार मालती पचजाती इत्यादि अनेक प्रकार के पुष्प माला चढाए। पान सुपारि, धू दीप, नैवेद्य आदि सब तरह से विधिवत शिवार्च करके उसने विनीति भाव से अस्तुति की, प्रदोष कथा सुनी और नाना प्रकार के दान देकर ब्राह्म को सन्तुष्ट किया। पूजन हो चुकने पर कविचन्द ने कहा कि अब महलों को चलिए और तद सार पृथ्वीराज शिवस्थान से घर को आए।

———:o:———

कनवज कथा ।

[इकसठवां समय ।]

षट ऋतु वर्णन ।

उस मायावी सुग्गे की कही हुई सयोगिता के रूप गुण की गाथा पृथ्वीराज के अंतस में बस गई। तिसपर भी जैचन्द का बैरभाव तो उसे और भी बेचैन किए हुए था। उसने एक दिन कविचन्द से कहा क्या तुम आगामी ग्रीष्म में मुझे कन्नौज दिखलाओगे ? देखो वहा चलने से एक तो दूसरा दरबार देखने को मिलेगा, दूसरे अपना अद्वितीय बल पौरुष प्रगट करने का अवसर हाथ आवेगा, जिस में लोग अपनी सुकीर्ति बखानेंगे और उसे सुन कर अपने को सुख होगा। तीसरे यह बात है कि जो अपने को ढींढ़ता * हो उसकी बात रखना भी क्षत्रियों का परम धर्म है। यार ! है क्या ज़िंदगानी में पानी भरी खाल है। इस लिये दिल की भरी निकाल डालना ही अच्छा है। यह सुन कर कविचन्द ने कहा "परन्तु यह तभी हो सकता है जबकि आप शूरवीरी ताक में रख कर छद्म वेष धारण करें। कविचन्द की यह बात राजा को गुड़ भरा हसिया होगई "न लीले बनें न उगले" पृथ्वीराज चुप रह गया।

वसंत ।

इस प्रकार कविचन्द का रुख लेकर पृथ्वीराज रानी इछिनी के महलों में गया और उससे बोला प्रिय ! मै कन्नौज को जाना चाहता हू। तुम्हारी क्या इच्छा है ? यह सुनते ही रानी इछिनी का मन भर आया और हिचकी बंध गई, परन्तु उसने [illegible] केवल बार गद्गद कंठ से उत्तर दिया। उसने [illegible] प्राणनाथ डालि डालि तमाल, के लाले पत्ते निकल रहे है, डहडही कोंपों के बीच से रसभरी लहलही कलिया मुकुलित हो रही है और सीतल मद सुगधित त्रिविध बयार सहज ही दिल को बेहाल कर रही है। कामाग्नि की उद्दीपक कलकंठी कोयलें कूकू कलाप करती हुई मानो कह रही है कि हे सयोगी जनो वसन्त की रातों मे मजे से सेज पर मौज मारो। देखिए तो ये आम बौर रहे है, कदम्ब फूल रहे हैं और उन पर लदे हुए वृंद के वृंद मकरन्द लोभी मलिन्द मदान्धों की तरह आनन्द से मन्द मन्द झूल रहे हैं। रात्रि सम है, वायु निर्दोषहै, और वृक्षों में लगे हुए लाल लाल पत्ते दमारि से देख पडते है। इस लिये हे नाथ नेक मेरी ओर निहारिए और विचारिए कि बहते पानी की तरह जवानी के दिन जो गए सो गए। प्यारे ! मार्तण्ड का ताप अधिक हो जाने पर जब जगलों में धुँवाधार अंधौवा चलने लगता है तब भौंरा अपनी सदा सघातिनी कलियों को छोड कर कमल कली पर कल्लोल करने जाता है। रस का लोभ उसे कमल कली में धसने को कहता है पर फँसने के भय से झिझकता हुआ अपनी भौंरी के महित ऊपर ही ऊपर भन्नाया करता है। बलहीन भौंरे तो योंही भटक कर चले जाते है भोगी अपनी भौंरी का साथ नही छोडते परन्तु अमल रमिया कली में धस जाते है और फस जाते हैं। बस फिर उसकी स्नेह रूपा भौंरी उसी कमलकली पर भ्रमती हुई तलप तलप कर रात्रि बिताती है। प्रात काल जब कली खिलती है और भँवरा निकलता है तो भौंरी उसके साथ होकर आनन्द के गीत गाती हुई फूली अग नही समाती है।

इस बसन्त ऋतु में [illegible] [illegible]

---

* [illegible]

[illegible]

सखा वसन्त एक मात्र सयेगिता को सुख देता है। अस्तु हे कंत इस वसन्त में अनत कहा जाते हो मेरे साथ एकान्त में सुरतान्त का सुख लुटिए। यों कहते कहते रानी इंछिनी के चातक से सलोने नेत्रों में नीर भर आया, जिसे देख कर पृथ्वीराज का भी दिल अधीर होगया और वह वसन्त ऋतु भर इंछिनी के साथ रहा।

ग्रीष्म।

वसन्तऋतु रानी इंछिनी के साथ बिताकर ग्रीष्म का आरम्भ होते ही सदैव कामातुर राजा पृथ्वीराज रानी पुंडीरनी * के पास गया और उस से भी वही बात कही कि सयोगिता का प्रण पालने और जैचन्द का दर्बार देखने के लिये मैं कन्नौज को जाना चाहता हू। यह सुन कर रानी पुंडीरनी बोली इस गरबीली ग्रीष्म की गर्मी में भी कोई घर से वाहर होता है? चारों और धुवाधार धूलि उड़ रही है ऐसे में कैसे रास्ता सूझ पड़ेगा? आज कल दिन तो इतने बड़े होते हैं कि काटे नहीं कटते और रात जाते नहीं जानी जाती। प्रखर वैस्वानर द्वारा समस्त जल कर्षित हो जाने के कारण रस नीरस हो रही है। चकवा चकवी प्रसन्न चित्त है। तनिक सा दिन चढते ही आग की सी झार लू चलने लगती है जिसके स्पर्श से मनुष्य के शरीर का उत्तापित होना तो बातही क्या है बडे बडे ताल तलैयों का कीच निकल आता है और उनमें पड़ी हुई मछलिया तलफ तलफ कर तन तोड़ती हैं। पतझाड हुए भए बडे बडे वृक्ष दिगम्बर से खडे देख पड़ते हैं। ऐसे विपत्ति सूचक समय में कहा फिरिएगा। आह! दिन में दिवाकर के दर्शन क्या होते है साक्षात् अग्नि देव का प्रकोप देख पड़ता है। आकाश में अच्छादित सघन धूलि के कारण दिशाओं का भी ज्ञान नहीं रहता। आ के अत्यन्त ताप से बन तो इस तरह तपता है। सर्वाङ्ग, चन्दन चुपरने से भी चैन नहीं पडता। वस की शीतल मद सुगन्धित पवन का अब पता। नहीं है। उसके स्थान में जहा तहा बगरूडे औ अँधौवा चलते हैं। कामाग्नि जनित विरह व्यथा कारण हाथी बेहाल होकर बन बन डोल रहे हैं और फौजों के यूथ के यूथ जो जहा थे सो तह रह गए है। पाथिक बधूटियां पिया का मुखच देखने की चाह में देहरी द्वारा ताकती रहती हैं भला देखिए तो जब लोग वाहर से आ आ क घर में रहते है तभी आप अपनी प्रिया को विरह के मुह में डाल कर वाहर जाना चाहते हैं! एक तो इ गरमी में आप खून सुखता है ऊपर से वियोग की झार! विचारिए तो मेरी क्या दशा होगी! उध ताल तलैया नदी नालों में जल नहीं, सर पर क ड़ाचूर धूप पड़ना ऐसे समय आधी राव में मजल करना आप को भी अत्यन्त कष्टसाध्य होगा; बस मेरी यही विनती है कि इस समय घर न छोडिए देखिए तो कैसी गरमी पड़ रही है और तो क्या शरीर के पहने हुए गहने भी हाथ से नहीं छुए जाते। रह रह कर चित्त ऊब उठता है और शरीर से पसीने के पनाे चल रहे हैं ऐसे में पग का दरबार देखकर क्या कीजिए गा।

रानी पुडीरनी के ऐसे बचन सुन कर पृथ्वीराज क्षण भर के लिये अपने को भी भूल गया। रानी भी पावस के आरम्भ की सी बेलि पृथ्वीराज के गले से लिपट गई। बात की बात में सावन का सामान सज गया *। रानी सोलहो शृंगार और

* चामंडराय की बहिन राजकुमार रेणसी की जननी।

(१) ईशान जलधर 'वैसनर' वैसनर शब्द प्राकृत है इसी का संस्कृत पाठ वैश्वानर है। पजनी भाषा में बैसुन्नर या सुन्नर भी कहते हैं वैश्वानर शब्द का मूल अर्थ शोधक अग्नि है। वैश्वानर सूर्य का एक नाम भी है।

* यहा अन्योक्ति अत्युक्ति या विरोधाभास आदि अलंकार न समझिए। एक वास्तविक बात का कथन किया गया है। पहिले समय मे राजमहलों मे खासखास कमरे बनाए जाते और ऐसे जरूरी सामानों से सजाए जाते थे कि उनमें जाते ही वर्त्तमान ऋतु का विरोधभाव भासित होने लगे। पावस वाला कमरा प्राय जमीन के अन्दर तहखाने में होता है। उसमें मोके से नाना भांति के बेली विहार फुलवारी आदि सजाए जाते हैं फुहारे से पानी बरसाया जाता है और उसकी छत पर बड़े बड़े पत्थर के गोले लुढ़का कर बादल गड़गड़ाया जाता है।

बारहो आभूषणों से सजकर सखियों सहित मलार गाने लगी। सुगंधित कुसवी रंग के मंद मंद बुंद भी बरसने लगे। रानी के कानों के जडाऊ ताटंक बिजली का काम देने लगे और कटि की मेखला और पैर की पाजेब का शब्द पावस के पक्षिओं का सा रव भासने लगा। तात्पर्य यह कि चतुर्दिक लहलहे वेलिवितान और घनसार अगर केसर पान आदि की रचना से रानी पुडीरनी की चित्रसारी साक्षात् पावस की पिटारी बन गई। इस प्रकार पृथ्वीराज ग्रीष्म भर रानी पुडीरनी के साथ रहा।

पावस।

ग्रीष्म का अवसान और पावस का प्रारंभ होते ही पृथ्वीराज रानी इन्द्रावती के पास विदा मांगने गया। पिया प्यारे का मुखारविंद देख कर इन्द्रावती का दिल दंग हो गया परन्तु चलाचली का समाचार सुनते ही तो वह सन्न रह गई। उस सुन्दरी के सलोने नैनों के कोयों में अश्रुकण झलक पडे। अश्रुकण क्या झलके मानों उसके आंतरिक क्रोध का ऊफान ऊपर आगया। वह पृथ्वीराज से बोली। प्यारे! देखिए तो सही ये आठों दिशाओं से कारे कारे धुआंधार बद्दल घुर आते हैं। दादुर दम नहीं लेते, मोर शोर करते हैं और पपीहा पीऊ पीऊ पुकार रहे हैं, वसुन्धरा की शृंगार स्वरूप स्वच्छ सलिलमय सरिताएं समुद्र से मिल कर कल्लोलें करती है, रात और दिन दोनों इस समय बराबर है। भला ऐसे पावस में भी कोई पथिक घर से बाहर होता है? कीच और कांदे के कारण रास्ता सूझ नहीं पडता। दशों दिशाएं धूंधली हो रही है। रात दिन बद्दल छाए रहते हैं और नाना भांति की नवीन तरुलताओं पर कोमल बेलियों से भूमि भरी हुई है। प्रस्फुटित [illegible] बेलिया बडे बडे वृक्षों से लपटी हुई और [illegible] आकाश का आलिंगन करती हुई मानो [illegible] को शिक्षा देती है कि [illegible] घनधारी घरघराहट के कारण पलभर सुचित्त होकर नींद नहीं आती। तलातल भरे हुए ताल तलैयों को देख कर सहजही हृदय बेहाल होता है और रात दिन पानी की झडी लगी रहती है, ऐसे में कोकिल भी कू कू करती हुई मानो पांच बाण के बाण छोडती है। आह! आकाश में अम्बर के आडम्बर और यह लगातार मूसलधार वर्षा देख कर दिगम्बर भी देहरी के बाहर कदम नहीं देते। जिस समय जोर से बादल तड़कता है और उसके बीच में मृग सावक के नेत्रों की तरह चपला चमचमा जाती है, पपीहा पीउ पीउ की पुकार करते हैं, बेलिया आलिंगन का स्मरण कराती है उस समय विरहनी के हृदय पर कैसी बीतती है सो वही जानती है। इस समय कुसुमसरधारी मकरकेतु ने मानों दसो दिग्गजों को दबा कर प्रकृति पर अपनी पताका रोप दी है और विषय रस राते इन्द्र ने भी उसकी सहायता के लिये अंतरिक्ष में धनुष चढ़ा रक्खा है।

नाना प्रकार के नवीन पेड पौधों को फूल पत्तियां और जडी बूटियों से परिपूर्ण और हरी भरी भूमि को देखकर दिल दंग हो जाता है। वृक्षों की शाख प्रतिशाख मे लिपटी हुई बेलिया हवा के झोंकों मे मन्द मन्द झूलती है और उन पर बैठी हुई कलकंठी कोयलें रात दिन कूकें दिया करती है, जहां तहां ताल तलैया तन कर भरे हुए हैं और उनमें सुन्दर कुमोदिनी खिल रही है। नदिया आरपार चढी जोर शोर करती हुई बहती हैं और किनारे पर मेंढक टर्राते हुए मानों दद्दरों की नकल करते है। कभी रिमझिम मेह बरसता है और मेघ की बिजली लपकती है। कभी मेह की कडी झडी लग जाती है, जोर से बद्दल कडकडाता तडतडाता और गडगडाता है। जहां तहां पहाडों से झरने झरते हैं और [illegible] भूमि पर नाना प्रकार के [illegible] करते है। [illegible] है और [illegible] है, [illegible]

[illegible]

होकर कल्लोलें करते है और मौज से पर झाड झाड कर बोला करते है, ऐसे पावस की बहार में प्रवासी बन, बन बन भटकना अच्छा नही। सुख से सयोग का रस लीजिए, श्रावण भादव गुजर जाने दीजिए, फिर आपकी मौज आवे सो कीजिए। देखिए जो बिजली अंधेरी रात मे दमक कर और के लिये उँजेला करती है वही बिजली विरहनी की आखो पर सलाई का काम करती है। ये मेह वुन्द जो मन्द मन्द बर्ष कर त्रिलोक का ताप हरते है सो विरहनी के हृदय पर अगारे का काम करते है, इस तरह से इन दिनों विरही वियोगी का पल पल कल्प सा व्यतीत होता है परन्तु सयोगिना तो मानो साक्षात् रस के सरोवर मे गोते लगाती है। बस मेरी विनती यही है कि मुझे अकेले छोड कर पावस में प्रयाम न कीजिए नही तो मै समझूंगी कि प्रीति प्रतीत सब तुच्छ है।

शरद।

पावस भर इन्द्रावती के साथ रह कर शरद ऋतु का आरभ होते ही पृथ्वीराज ने पुनः प्रस्थान करने की इच्छा की। इस बार हसावती से मिलने गए और उससे कहा, हे प्रिये मै कन्नौज को जाने की इच्छा करता हूं। राजा के ऐसे वचन सुन कर वह बोली, हे प्राण नाथ! मैं आपकी इच्छा में विघ्न नही करती परन्तु केवल इतनी अर्ज करती हू कि शरद ऋतु की चटक चॉदनी चार दिन की है गई सो फिर आने की नहीं। इस समय या तो वे सुखी है जो अविवाहिता है और पिता के घर रह कर बालक्रीड़ा में समय बिताती है, या वे जो अपने प्रीतम चन्द्रमुख को चूम चूम सयोग रस रूपी सुधा का स्वाद लेती है। राजा महाराजा एवं छत्रधारी लोग अपने अपने छत्र सज कर दसों दिशाओं में दौरा करने के लिये राजधानियों से चल पडे है। सोधी सुगन्ध वाले स्वेत स्वेत पुष्प खिल रहे है और उज्वल जुन्हैया सब रात जगमगाती है। बस और क्या कहू मेरी इतनी विनती मानिए कि मुझे इस शरद के दुख दरद से बचाइए।

प्यारे! इस शरद की चटक चांदनी रात्रि मे उन्हीं की मौज है जिनके मन से लज्जा निकल गई और जिन्हे दाम्पत्य सुख का नित नव चाव रहता है। देखिए तो पृथ्वी आकाश दोनों पर कैसे फूल फल रहे है। मान सरोवर मे हसों के कलरव के कारण कान नही दिया जाता। हा ये निर्मल जल मे खिले हुए कमलपुष्प शीत काल के लगते ही जल का जल ही में विलीन हो जायगे। इसमे भी बढ कर दशा उन वियोगिनी स्त्रियों की है जिनके पिया परदेश मे है अहा कैसा उज्वल आकाश है दर्पण की तरह दमदमा रहा है। चन्द भी सुधा की धारें बर्षा रहा है। समुद्र सर सरिता आदि सब का जल ऐसा उज्वल है उन में जहा तहा कमल और कुमोदिनी पुष्प प्रफुल्लित हो रहे है और बागो मे फूले फूले लता पत्रो पर आठो दिन भ्रमर अजब ही छटा छाते हैं। इन दृश्यो से मानो सहसा कामज्वाला प्रज्ज्वालित होकर नस नस में बस जाती है और अपने स्नेह भाजन को गले लगाए बिना वह तन की तपन कदापि नहीं बुझती। यह सुठि सुन्दर सोहावनी शरद ऋतु सत् रज तम तीनों गुणो की समान उद्दीपक है। घर घर अच्छे दिए जगमगा रहे है और जैजैकार शब्द हो रहे है। स्त्रियो के परस्पर झुड के झुड मिलकर नाना प्रकार के व्रत और पूजन विधान करते है और सन्ध्या सबेरे कलकण्ठ से सुन्दर गीत भी गान करते है। चकवी चकित चित्त है, चकोर चन्दा मे चित्त लगाए रात्रि भर उसी की ओर आँखे लगाए रहता है। ब्राह्मण वृन्द के वृन्द चन्दन पुष्प धूपादि सहित षोडश सामग्री से जहा तहा देवार्चन करते है और घर घर दिव्य कार्य्य आरम्भ हो जाते है। क्वारी कन्याए * नौरता नहाती है और प्रज्ज्वलित

---

(१) [illegible]

*नारता—क्वार के शुक्ल पक्ष में नवरात्र का आरम्भ होते ही क्वारी कन्याए नवरात्रि भर बराबर प्रातःकाल स्नान करके

दीपयुक्त झंझरी सिर पर रखकर गाती हुई गैल गैल परिक्रमा लगाती है। देवी के मंदिरों में पंडित और ओझा लोग दुर्गा पाठ करते हैं और क्षत्री लोग महिष और अज आदि का बलि प्रदान करते हैं। इस समय चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण कलाओं से अट्ठारहों प्रकार की बनस्पति एवं जड़ी बूटियों को अमृत से पोषण कर रहा है इस लिये इन शरद काल की कामोद्दीपक निर्मल रात्रियों में स्त्री के साथ सो करही समय बिताना शुभ है।

इस तरह से अविवाहिता स्त्रियाँ तो नौरता उठे लेने की ध्वनि में नित नव आमोद कर कर शरद के दिन बिताती हैं; परन्तु वे बडभागिनी जो पिया का मुखचन्द देख चुकी हैं स्वयं शरद की प्रतिमा स्वरूप होकर समय बिताती है। सुहागिनों के पिया का मुखचन्द चन्द तो है ही उनके युग पावन कमल एवं कुमोदनी से, दोनों मनरंजन अनमय नेत्र खंजन से हैं और चन्द्रमा से अवित स्वाति बुन्द के कारण जो मोती उत्पन्न होता है सो उनके सीप से उज्ज्वल श्वेत आवरण में उनके आनंदमय मन मोती नित नए रंग दिखाते हैं। परन्तु यदि आप मेरी बात को कुछ भी समझें अथवा आपको यदि चतुर चित्त की कुछ भी रीझ हो तो कृपा करके इस शरद में मेरे दिल को दरद देकर देहरी बाहर होने की इच्छा न कीजिए।

हेमन्त।

शरदऋतु का अवसान होतेही पृथ्वीराज ने पुनः कन्नौज को कूच करने की इच्छा की और इस बेर रानी कूरम्भी के महल में जाकर उसकी आज्ञा चाही। चला चली की चरचा सुन कर रानी कूरभी बोली "आर्य्य पुत्र! इस हेमन्त में दिनदिन दिनछीन हो रहे हैं। दिवाकर का दर्प मन्द पड रहा है और असह्य शीत के साथ साथ रातें बढ रही हैं। इन दिनों तो अर्द्धाङ्गिनी को आलिङ्गन कर गुदगुदी शैय्या पर सोने में जो मौज है सो किसी में नहीं है। यदि ऐसा न हुआ तो सहज सुकुमार स्वभाव की स्त्री वियोग की आँच में ऐसे जरती है जैसे शीत से सरसिज समूह एवं कुमोदिनी जल कर जलमय हो जाती है। मेरी विनती मानिए इस समय मुझे निरावलम्ब छोड कर कहीं न जाइए। विलक्षण समय है ज्यों ज्यों रात्रि बढ़ती जाती है त्यों त्यों स्त्रियों के कुच जंघा और नितम्ब भी पीन होते जाते हैं और शीत की सहजोरी से ज्यों ज्यों सूर्य्य की गरमी एवं दिन दबते जाते हैं त्यों त्यों कमर पतली होती जाती है। गहन वन में स्थित पहाडों की गुप्त कंदराओं में समाधि साधे हुए साधु जन जो मौज लेते हैं वही इन दिनों स्त्री प्रसंग में मिलती है। इस संसार सागर में मनुष्य के लिये केवल दो बातें सार हैं। या तो वे किसी पर्व्वत की कन्दरा में [illegible] ध्यानावस्थित हो योग का आनन्द लेना या किसी कोमलाङ्गी को [illegible] [illegible] आनन्द लेना। [illegible]

[illegible] (नौरत का कुछ दध हुए धान है। [illegible] को [illegible] पर घोला [illegible] पूजा करती हैं। [illegible] पूजन खतम होता है उस दिन रात्रि को [illegible] में दिया [illegible] कर [illegible] फिरती हैं। [illegible] उनके [illegible] [illegible] [illegible] नाश करता है। इन नौरते [illegible] इलाहाबाद [illegible] [illegible]

[illegible]

दाव घातों को अच्छी तरह समझना हो और सबसे बडी भारी शर्त यह है कि अधर्म का धन न लेता हो यानी रिश्वत खोर न हो।

गुरुराम ने कहा अच्छा जो इच्छा सो कीजिए परन्तु जरा राज्य मत्री से भी तो पूछ लीजिए। तब तक सब सामन्तों सहित जैत प्रमार भी आ पहुचा। पृथ्वीराज ने उसे ओर छोर से सब हाल कह सुनाया और कहा कि मै भेष बदल कर कविचन्द के साथ कन्नौज को जाना चाहता हूं। राजा के ऐसे बचन सुन कर सलख प्रमार बोला "महाराज कहीं बदली से सूर्य्य और वस्त्र के आवरण से अग्नि कण छिपते ह। अथवा कोई दरिद्री यदि रुपयों की ढेरी कर परख करने वैठ जाय तो उसकी भी असल अवस्था कहीं छिप सकती है। कवि पडित गुणी विद्वान घोडे का सवार राजपूत और राजा ये लोग लाखों में नही छिप सकते चाहे किसी भी अवस्था में क्यों न हों उन की स्वाभाविक दीप्ति उन्हें आप बतला देती है। यदि यों भी वात मान ली जाय तो छरीदा चलना उचित नही है। पूरी तय्यारी के साथ चलना चाहिए। कवि लोगों के साथ में सजी हुई सेना और राजसी रखत बखत होते नहीं। ऐसे समय पर आडवर ही काम देता है। यदि आप न मानें तो हमारी भी कुछ हानि नहीं। हार जीत की राम जाने हम जैचन्द का यज्ञ धूल में मिला देंगे। पर जो कहीं जैचन्द ने जान लिया तो हम तो सब वहीं कट मरेंगे परन्तु आपको वह मार या छोडे सो आप जानें! इस लिये मेरी सलाह तो यही है कि साज सामान के साथ चलना चाहिए।" तब गोयदराय गहलौत बोला-आप का ऐसा कहना उचित है परन्तु यहा शहाबुद्दीन भी तो हमेशा घात में रहता है इस लिये दिल्ली को सूना छोड जाना भी बडी भारी भूल है। निदान अन्त में यह ते हुआ कि समस्त सेना के सहित रामराय रघुवंशी दिल्ली की रक्षा पर रहें और भिन्न तन एक मन अन्य सौ सामान्तों सहित पृथ्वीराज कन्नौज को कूच करें।

इस प्रकार सलाह हो चुकने पर सभा विसर्जित हुई। सब सूर सामन्त अपने अपने घर गए। और पृथ्वीराज भी शयनागार में जाकर सुख में हुआ। सारी रात गहरी नींद सोता रहा। भोर के पहर देखता क्या है कि सहसा सहस्रों बिजली सा तेज देदीप्यमान हो गया और एक राक्षस उसके साम्हने आकर उसे कुवाच्य कहने लगा। उसके पहिले बचन पर राजा ने धनुष बाण हाथ में उठा लिया। दूसरे पर बाण सन्धाना। तीसरे पर गोसा ताना और चौथे बोल पर बाण छोड़ दिया जिससे वह राक्षस मर कर गिर गया, इतने में चार की घडी बजी और राजा की आख खुल गई, देखता क्या है कि कहीं कुछ भी नहीं। तबतक नित्त नियमानुसार कविचन्द भी आ पहुचा और पृथ्वीराज ने उससे अपने सपने का हाल कहा उसने उत्तर दिया कि सब शुभ है आप शीघ्र ही अपने शत्रु को परास्त कर सब तरह से सफल मनोरथ होंगे और चारो ओर आपकी सुकीर्ति फैलेगी परन्तु कुछ और भी है जोकि मैं स्पष्ट कह नहीं सकता। इसपर पृथ्वीराज ने कुछ भी ध्यान न दिया और हुक्म किया कि साथ में चलने वाले सब लोगों को कूच की तय्यारी का हुक्म सुनाया जाय।

निदान सवत् ११६१ * चैतवदी ३ रविवार के दिन ग्यारह सौ सवार साथ में लेकर पृथ्वीराज ने कन्नौज को कूच किया। उसके साथ के वे ग्यारह सौ सवार एक लाख सिपाहियों का मुँह मोडने को लिये बहुत थे। वे अच्छे अच्छे डील डौलदार जोरावर राजपूत सिपाही ऐसे हट्टे कट्टे और मजबूत

(१) अधर्म द्रव्य नन लयदे।

* मूल पाठ "ग्यारहस इक्यानवे चैत तीज रविवार" है इससे पक्ष स्पष्ट नहीं होता परन्तु हमने अनुमान से कृष्ण पक्ष लिया है क्योंकि सम्भव है कि नव रात्रि की तिथियों को पृथ्वीराज कन्नौज प्रस्थान न करता और आगे वर्णन से कृष्ण पक्ष ही सिद्ध होता है।

जवान थे कि उनके वज्र से सीने पर वजूही चाहे बिखर जाय पर बात क्या कि उनके सीने में सास हो जाय। युद्ध के समय पर वे रुद्रवेष योद्धा तृण रूपी शत्रु समूह को भस्म करने के लिये साक्षात् अग्नि शिखा से थे। महाभारत के समय से लेकर आज लों न तो कोई ऐसा बीर हुआ न होने की आशा है। सभरीनाथ पृथ्वीराज भी उस समय एकही था। प्रथम तो उसकी वीरता की बातें ही देश भर मे कानो कान हो रही थी तिस पर उसके गजनीपति शहाबुद्दीन को बाँध बाँध कर छोड़ देने और कैमास के मारडालने न तो उसके आतंक को और भी चढा बढा दिया था, ऐसा अद्वितीय तेजस्वी दिल्लीपति राजा पृथ्वीराज चहुवान ग्यारह सौ सवार सौ सामन्त छ निज सूरमा और कविचन्द को साथ में लेकर राज्य महल से चल पड़ा और नगर से बाहर यमुना के किनार जा ठहरा।

चलते समय जब पृथ्वीराज ने हर हर शब्द उच्चारण करते हुए पाइरे पर पैर दिया तो उसके साथी सामन्त लोग भी शिव सरस्वती काली गणेश भैरव हनुमान इन्द्र नृसिंह सहस्रबाहु बटुक कृष्ण और भगवान रामचन्द्र आदि अपने अपने इष्ट देवों का स्मरण करते हुए उसके पीछे हो लिए। सिपाही सवारों का तो हाल आप सुनही चुके पर ये सामन्त वैसे सौ सौ सिपाहियों के बराबर एक एक थे। सहस्रों शत्रुओं को मार कर पार देना और मतवारे हाथियों के खीसे मूली से उखार लेना उन्ही सामन्तों का काम था। उनके समुख मनुष्य क्या एक बार जीभ निकाले हुए यमराज भी क्यों न आजाय पर वे पीठ दिखाने वाले नहीं थे। उन राजपूत योद्धाओं के जैसे अस्त्र शस्त्र उज्ज्वल थे वैसे ही उनके हृदय भी कपट कालिमा से रहित सूर्य्य की किरण जैसे उज्ज्वल थे। उन सूर और सामन्तों का पता एक छन्द में कविचन्द इस प्रकार लिखता है—

नम्बर	नाम	बिरद	विशेष
१	कन्ह	नरनाह	पृथ्वीराज का चाचा सोमेश्वर का सगा भाई ।
२	गोइन्दराय	गहलोत	
३	सेनचन्द		मडलीक का पुत्र जो कि शहाबुद्दीन की पहली लड़ाई में मारा गया था।
४	लगरी राव		सयमाराय का पुत्र जो कि महोबे की लड़ाइ में बड़ी वीरता से काम आया था
५	देवराज	बग्गरी राय	
६	जाजराय		बग्गरी राय का पुत्र।
७	रणवीर प्रमार		जैतप्रमार का कोई भाई बेटा।
८	जैत प्रमार	सलखराय	आबू का राजा रानी इच्छिनी का [illegible] था।
९	[illegible]	[illegible]	
१०	[illegible]		
११	[illegible]		[illegible]
१२	[illegible]		[illegible]
१३	[illegible]		

नं०	नाम	विरद	विशेष
१४	निड्डुर राय	कमधज्जराय	कन्नौज के राजा जैचन्द का भतीजा।
१५	रामराय	बड़ गुज्जर	
१६	अत्ताताई		यह महादेव जी के वरदान से स्त्री से पुरुष हुआ था यह कथा आगे इसी समय में है।
१७	गम्भीर सिंह		हाहुली हम्मीर का भाई।
१८	नरसिंह		दाहिमा वंशी कैमास के भाई बेटों में से त्रिशूल चलाने में बडा निपुण था।
१९	जघारभीम	जोगी जघारा	उदंड ब्रह्मचारी और शिव भक्त।
२०	उद्दिगपगार		
२१	चन्द्रसेन	चदपुडीर	पृथ्वीराज का साला रानी पुडीरनी का भाई
२२	वीर सिंह	नृसिहवीर	चहुवान।
२३	हरसिंह		
२४	सारंग राय	चालुकराय	एक सोलंकी सरदार।
२५	विझराज		सारग राय का भाई।
२६	नागर राय	गौर राय	गोर या गौड क्षत्री।
२७	दाहर राय		
२८	गमेरन		प्रमार
२९	रूपराय या रुवराय		दाहिमा
३०	भोंहा राय	धीर भोंहा	चन्देल
३१	कनकराय		राम राय के घराने का कोई सरदार।
३२	कनकराय		दूसरा।
३३	मालचन्देल		
३४	भानराय	भान भट्टी	
३५	सामलासूर	कमधुज्जराज	
३६	नृसिंह राय		मोहिल्ल राय का भाई।
३७	देवराज	देवरा राय	पृथ्वीराज का भाई।
३८	मंडली राव	महामडली	
३९	धनूराव		पुंडीर वंश का कोई वीर।
४०	पहार राय	तूअर राय	इसने शाह को पकड़ा यह डील डौल में सब सामन्तो से सबल था-देखो पहाड़राय समय।
४१	जल्ह राय	जावलो जल्ह	सोलंकी सरदार।
४२	खेना खगार	बग्गरी राव	महोबा फतह होने पर यही बुन्देलखंड का सूबेदार नियत

नम्बर	नाम	विरद	विशेष
			हुआ था इसी से वहा खगारों के राज्य की जड़ जमी जिसे बुदेलों ने उखाडा। खेता के वश के अब भी हजारों आदमी बुदेलखंड में है पर वे बुन्देलें राजों के साम्हनें छडी लेकर चलते हैं अर्थात् नकीब है।
४३	वीरम राय		दूसरा परिहार।
४४	रूपराय		
४५	सारग राय	सारंग गाजी	यह दूसरा सारगराय है।
४६	भोजराज	वीरजादों	यादव वशी।
४७	साखुला सिंह	सॉखुलासूर	
४८	सामले सिंह	सामलासूर	
४९	विक्रम राय		कमभुज्ज।
५०	सादल्ल राय	सादल्लमोरी	मोरी चत्री या मौर्य्या वशी
५१	ठठरी राय		टांका चाहुवान (चहुवानों की चौवीस शाखाओं में से एक टाका है)
५२	सारन राय	सारन मोरी	
५३	जयसिंह	सिंघ चन्देल	
५४	बारू राय	बारू कठीर	केहर कठीर का भाई वेटा कोई।
५५	भीम राय	भीमजादो	
५६	पीपा राय	पीपपडिहार	इसने एकवार शाह को पकडा था।
५७	देवराज		दूसरा।
५८	अचलेस राय	अचलेस	खीची।
५९	बाचरा राय		पट्टनपुर के भोला भीम का पुत्र।
६०	नाहर राय		परिहार।
६१			
६२	मदन सिंह		
६३	भीम सिंह		मोरी।
६४	लखन राय		आरजराय [illegible] का पुत्र।
	पृथ्व राय		बघेला।
६५	तेलज राय	डोडियाराय	परनराय [illegible] का पुत्र जिसका नाम [illegible] समय मे आया है।
६६	अचलेस नट्टी		
६७	चन्द्रसेन		परिहार।
६८	[illegible] सिंह		
६९	[illegible] चंदेला।		दूसरा [illegible]।
७०	[illegible]		[illegible] का पुत्र।

नम्बर	नाम	विरद	विशेष
७१	लक्खन राय	चाच राय	
७२	रंघरी राय		(दूसरा) प्रमार।
७३	जैसिंह कमधुज्ज	पुंडरि वशी।	
७४	पुजपहार		
७५	भारथ राय		
७६	जागर राय		मल्हनास केहरी का पुत्र यह पहाडी किले की लडाई में बडा होशियार था।
७७	टाक चाटा		
७८	रावत राय		
७९	हरी देव		
८०	जाज राय		
८१	अहट्टी राय		दूसरा (यादव वशी)
८२	हाहुली राय	हम्मीर	गम्भीर हम्मीर का पुत्र। स्मरण रहे कि जत्रू में सूर्यवशी राजा राज्य करते हैं सभव है कि हम्मीर भी सूर्य वशी हों वे हाडा चौहान नहीं हो सकते क्योंकि उनकी बेटी को भी पृथ्वीराज का व्याहना भी लिखा है। जम्बू और कॉगड़े परगने (कश्मीर) का राजा था।
८३	पुहकर राय		
८४	कन्हराज		दूसरा
८५	जंगली राव		दाहिमावंशी।
८६	पंचाइन राय		चाहुवान।
८७	रणवीर राय	रण राय	पहार राय का पुत्र।
८८	छग्गन		नरनाह कन्ह का एक सेवक।
८९	देवती राय		

इस सूचीके अनुसार १७ सामन्तों का फर्क पडता है क्यों कि कुल सख्या १०६ होनी चाहि० यहां केवल ८९ होते हैं।

पृथ्वीराज ने यमुना के किनारे पर एक मुकाम करके गुरुराम प्रोहित और प्रधान कर्मचारी मधुसाह को बुला कर आज्ञा दी कि सेना सहित वे दोनों दिल्लीगढ़ की रक्षा करें। निदान गुरुराम तो दिल्ली में रहा और उसका भाई बीठल देव राजा के साथ चला। सब सूर सामन्त तो राजा के साथ में थे ही तब तक सबके दस दस पाच पांच भाई बेटे भी सज बज कर पड़ाव पर आ गए। वहीं-पर कविचन्द सबका अगुवा बना और राजा सहित सब सामन्त और सिपाहियों ने वेष बदल कर उसका अनुयायी होना स्वीकार किया। उसी समय अटाले के मालिक रनवीर परिहार को आज्ञा दी गई कि वह पेशखेमा लेकर आगे आगे चले और दूसरे पड़ाव के लिये अमुक स्थान पर भोजन पान का उचित प्रबन्ध कर रक्खे। राजा ने हयशाला के अफसर यानी रिसालदार जगमाल को हुकुम दिया कि वह सब सामन्तों की सवारी के लिये अच्छे अच्छे घोड़े हाजिर करे। निदान जगमाल ने भी मौका समझ कर सब सामन्तों को बिल्हान खेत के घोड़े दिए। इस प्रकार राज्य-रक्षा का उचित प्रबन्ध करके दूसर दिन एक प्रहर रात्रि रहते तय्यारी का डंका बजा और कविचन्द और सब सूर सामन्तों सहित पृथ्वीराज नाव पर से यमुना पार हुआ।

पृथ्वीराज के नाव पर सवार होते ही एक तो बड़ा भारी अशकुन यह हुआ कि सम्मुख छिद्रमय काला कलश देख पड़ा और जब वह जमुना पार होकर नाव पर से उतरने लगा तो उसे दूसरा एक अद्भुत और भयानक चरित्र और भी नजर आया। वह यह था कि एक अर्द्धंगी प्रतिमा सहसा सम्मुख आ खड़ी हुई। उसके मुख में तो मुस्कराहट थी, परन्तु क्रोध के कारण उसके नेत्र अंगारे से लाल हो रहे थे, और उसके हृदय पर कमल कनेर और [illegible] के फूलों की माला लटक रही थी। उसके [illegible] आभरण सोने के थे परन्तु दाहिने [illegible] आभरण लोहे के थे। उसके [illegible] हुआ था पर [illegible] खुले हुए थे। जूडे वाले भाग पर मोतियों की माला रुर रही थी और खुले केशों पर लोह की सांकर लटक रही थी। उसकी दाहिनी आंख में कज्जल लगा हुआ था पर बाईं में कुछ भी नहीं और उसके नथनों से सर्प की सी फुकार निकल रही थी। उसके बाएं अंग का आवरण तो पीत पट था परन्तु दहिने अग का वस्त्र कौवें से भी काला था। उसके बाएँ पैर में जेहर और पायजेब पहिना हुआ था और उस पैर से वह मत्त गयंद की चाल चलती थी परन्तु दाहिने पैर में लोह की साकल थी और उसका वह पैर कदापि थिर नहीं रहता था। इस प्रकार कभी हँसती कभी रोती, ताडव नृत्य करती उस भयानक भेष अर्द्धाङ्गी प्रतिमा को देख कर अत्यन्त आश्चर्य्यान्वित होकर पृथ्वीराज ने कविचन्द से पूछा कि कहो तो इसका क्या तात्पर्य्य है। तब कविचन्द बोला कि सम्भरीनाथ यह आपको देवी के दर्शन हुए हैं और इस अर्द्धाङग स्वरूप से यह अभिप्राय है कि आप शीघ्रही शत्रु का दर्प चूर्ण करके अपनी प्रिया संयोगिता के पति होइएगा।

पृथ्वीराज ने कहा कविचन्द तुम चौदहो विद्याओं में दक्ष देवी से बरदान पाए हुए बर्दाई कवि हो। इस समय तुम मुझे यात्रा के सब शुभ अशुभ तो कह सुनाओ। इस पर कविचन्द बोला महाराज सुनिए दाहिने हो अथवा बाएँ परन्तु समतल पर बैठी हुई देवी सदैव शुभ है। उसके दर्शन से यात्री सहज ही सफल मनोरथ होता है। यदि वह दाहिने बाजू के किसी वृक्ष पर बैठ कर दो या तीन आवाजें दे तो मानो वह पथिक की यात्रा में स्वयं बाधा देकर उसे जाने से रोकती है। यदि वह [illegible] बाट कर [illegible] और रास्ता काट कर बाएँ से दाहिने जाए तो शुभ है और

---

(१) [illegible]

नम्बर	नाम	बिरद	विशेष
७१	लक्खन राय	चाच राय	
७२	रघरी राय		(दूसरा) प्रमार।
७३	जैसिंह कमधुज्ज	पुंडरि वशी।	
७४	पुजपहार		
७५	भारथ राय		
७६	जागर राय		मल्हनास केहरी का पुत्र यह पहाडी किले की लडाई में बडा होशियार था।
७७	टाक चाटा		
७८	रावत राय		
७९	हरी देव		
८०	जाज राय		
८१	अहट्टी राय		दूसरा (यादव वशी)
८२	हाहुलो राय	हम्मीर	गम्भीर हम्मीर का पुत्र। स्मरण रहे कि जबू में सूर्यवशी राजा राज्य करते हैं सभव है कि हम्मीर भी सूर्य वशी हों वे हाडा चौहान नहीं हो सकते क्योंकि उनकी बेटी को भी पृथ्वीराज का व्याहना भी लिखा है। जम्बू और कॉगड़े परगने (कश्मीर) का राजा था।
८३	पुह्कर राय		
८४	कन्हराज		दूसरा
८५	जगली राव		दाहिमावंशी।
८६	पचाइन राय		चाहुवान।
८७	रणवीर राय	रण राय	पहार राय का पुत्र।
८८	दुग्गन		नरनाह कन्ह का एक सेवक।
८९	देवनी राय		

इस सूचीके अनुसार १७ सामन्तों का फर्क पडता है क्यों कि कुल सख्या १०६ होनी चाहिए यहा केवल ८९ होते हैं।

पृथ्वीराज ने यमुना के किनारे पर एक मुकाम करके गुरुराम प्रोहित और प्रधान कर्मचारी मधुसाह को बुला कर आज्ञा दी कि सेना सहित वे दोनों दिल्लीगढ़ की रक्षा करें। निदान गुरुराम तो दिल्ली में रहा और उसका भाई वीठल देव राजा के साथ चला। सब सूर सामन्त तो राजा के साथ में थे ही तब तक सबके दस दस पाच पाच भाई बेटे भी सज बज कर पड़ाव पर आ गए। वहीं पर कविचन्द सबका अगुवा बना और राजा सहित सब सामन्त और सिपाहियों ने वेष बदल कर उसका अनुयायी होना स्वीकार किया। उसी समय अटाले के मालिक रनवीर परिहार को आज्ञा दी गई कि वह पेशखेमा लेकर आगे आगे चले और दूसरे पड़ाव के लिये अमुक स्थान पर भोजन पान का उचित प्रबन्ध कर रक्खे। राजा ने हयशाला के अफसर यानी रिसालदार जगमाल को हुकुम दिया कि वह सब सामन्तों की सवारी के लिये अच्छे अच्छे घोडे हाजिर करे। निदान जगमाल ने भी मौका समझ कर सब सामन्तों को विल्हान खेत के घोडे दिए। इस प्रकार राज्य-रक्षा का उचित प्रबन्ध करके दूसरे दिन एक प्रहर रात्रि रहते तय्यारी का डंका बजा और कविचन्द और सब सूर सामन्तों सहित पृथ्वीराज नाव पर से यमुना पार हुआ।

पृथ्वीराज के नाव पर सवार होते ही एक तो बड़ा भारी अशकुन यह हुआ कि समुख छिद्रमय काला कलश देख पडा और जब वह जमुना पार होकर नाव पर से उतरने लगा तो उसे दूसरा एक अद्भुत और भयानक चरित्र और भी नजर आया। वह यह था कि एक अर्द्धंगी प्रतिमा सहसा समुख आ खड़ी हुई। उसके मुख में तो मुस्कराहट थी, परन्तु क्रोध के कारण उसके नेत्र अंगारे से लाल हो रहे थे, और उसके हृदय पर कमल कनेर और सिरस के फूलों की माला लटक रही थी। उसके बाएँ अंग के सब आभरण सोने के थे परन्तु दाहिने अंग के सब आभरण लोहे के थे। उसके आधे सिर के केशों का जूड़ा बंधा हुआ था पर आधे बाल खुले हुए थे। जूडे वाले भाग पर मोतियों की माला रुल रही थी और खुले केशों पर लोह की सांकर लटक रही थी। उसकी दाहिनी आंख में कज्जल लगा हुआ था पर बाईं में कुछ भी नहीं और उसके नथनों से सर्प की सी फुकार निकल रही थी। उसके बाए अंग का आवरण तो पीत पट था परन्तु दहिने अंग का वस्त्र कौवे से भी काला था। उसके बाएँ पैर में जेहर और पायजेब पहिना हुआ था और उस पैर से वह मत्त गयंद की चाल चलती थी परन्तु दाहिने पैर में लोह की साकल थी और उसका वह पैर कदापि थिर नहीं रहता था। इस प्रकार कभी हँसती कभी रोती, ताडव नृत्य करती उस भयानक भेष अर्द्धाङ्गी प्रतिमा को देख कर अत्यन्त आश्चर्य्यान्वित होकर पृथ्वीराज ने कविचन्द से पूछा कि कहो तो इसका क्या तात्पर्य्य है। तब कविचन्द बोला कि सम्भरीनाथ यह आपको देवी के दर्शन हुए हे और इस अर्द्धाङ्ग स्वरूप से यह अभिप्राय है कि आप शीघ्रही शत्रु का दर्प चूर्ण करके अपनी प्रिया संयोगिता के पति होइएगा।

पृथ्वीराज ने कहा कविचन्द तुम चौदहो विद्याओं में दक्ष देवी से वरदान पाए हुए वर्दाई कवि हो। इस समय तुम मुझे यात्रा के सब शुभ अशुभ तो कह सुनाओ। इस पर कविचन्द बोला महाराज सुनिए दहिने हो अथवा बाएँ परन्तु समतल पर बैठी हुई [१]देवी सदैव शुभ है। उसके दर्शन से यात्री सहज ही सफल मनोरथ होता है। यदि वह दाहने बाजू के किसी वृक्ष पर बैठ कर दो या तीन आवाजें दें तो मानो वह पथिक की यात्रा में स्वयं बाधा देकर उसे जाने से रोकती है। यदि वह मंडल बांध कर उड़ती हो और रास्ता काट कर बाएँ से दहिने जाय तो शुभ है और

(१) "देवी" एक चिड़िया का नाम है। आज कल इस चिड़िया को होना का स्याम कहते हैं। इस का पेट से बिलकुल काली होती है उसका पेट लाल और चोंच बारीक होता है। शिकारी और डाकू लोग यात्रा में इस चिड़िया की बोली से बड़े सगुन निकालते हैं।

उसी समय एक से तीन तक जितने शब्द करे उतनी ही अधिक कार्य्यसिद्धि समझनी चाहिए। परन्तु यदि कहीं दहिने से बाएँ जाय तो महान अशकुन जानिए। उस अवस्था में उसका बाई ओर बोलना घात सूचक है। यदि कहीं तीन बोली लगातार बोले तो समझनी चाहिए कि यात्री की अवश्य मृत्यु होगी। परन्तु यदि ऊंचे स्थान पर बैठी हो तो उतनी ही अधिक कार्य्य-सिद्धि समझनी चाहिए। उसका बाई ओर होना अरिष्ट या द्वेष सूचक है पर दहिनी ओर सिद्धि सूचक है। यदि वह थूहड़ सेंहुस पाफनी आदि काटेदार वृक्ष या कोयले के ढेर अथवा किसी सूखे हुए वृक्ष के ठूठे पर बैठ कर शब्द करे या उससे उतर कर बोले तो समझना चाहिए कि कोई खेद की बात तो नहीं पर कार्य्य सिद्धि की भी कोई आशा न रखनी चाहिए। यदि हो भी तो ऐसी वैसी।

यदि तीतर, खर, नाहर, जम्बुक, सारस, चील्ह, चातिग, उलूक, बन्दर, मोर, सुआ, बाए मिलें तो शुभ है, परन्तु यदि दहाड़ता हुआ सिंह दहिने हो तो अत्यन्त शुभ सूचक समझना चाहिए। परन्तु कार्य्य में भय की सम्भावना अवश्य होती है। यदि तीन पाच या सात मृगी मृग के साथ चरती हुई दहिनी ओर मिलें तो परम शुभ है परन्तु यदि सूर्य्यास्त के समय काला मृग अकेला मिले तो उसे साक्षात् यम का स्वरूप समझना चाहिए। यदि काम सफल भी होगया हो तो भी सब चौपट हो जाय और यात्री की जान पर आबने। इसी प्रकार बाई ओर गर्जना करते हुए और यदि दोनों हाथ में घड़े लिए गधे पर चढ़ा हुआ कुम्हार बिलकुल नगे सिर या सिर पर बोझ लिए हुए मिले तो समझना चाहिए कि अवश्य कुछ न कुछ फिसाद खड़ा होगा। यदि चलते समय श्याम वर्ण बिना तिलक का ब्राह्मण, विभूत हीन योगी साम्हने आजाय तो तुरन्तही यात्रा बन्द करदे। सिर पर दहिनी तरफ कोई पक्षी बोले और बाएँ स्यार बोले अथवा साम्हने शव की रथी आती मिले तो सर्व सिद्धि समझनी चाहिए। भरे हुए कलस, उज्ज्वल वस्त्र वाला, दिया, अग्नि, मछली, यात्रा के समय नजर पड़ जाय तो इस से भला और शुभ क्या होगा। और भी सजी हुई राजा की फौज, दहाड़ता हुआ सिंह, खुरी करता हुआ मृग दाहिने देख पड़े तो भी अत्यन्त शुभ समझिए। सिर पर शब्द करते हुए बदलों को फाड़कर सूर्य्य निकल रहा हो तो उस समय अवश्यही यात्रा या अन्य कोई कार्य्य आरभ करे उसके सिद्ध होने में कदापि सदेह नहीं इत्यादि।

कविचन्द यों ही कह रहा था तबतक राजा ने हँसकर पूछा क्यों और यदि मद सहित साम्हने आता हुआ कलार मिले तब? कविचन्द बोला कि तब क्या रक्तपात हो, सैकड़ों मारे पड़ें और सैकड़ों विजय का डका बजाते हुए घर बैठ कर आनंद उड़ावें। इसी बीच में राजा को सहसा कैमास का स्मरण आगया जिससे उसका चित्त विह्वल सा हो गया। वह एक हाय मारकर चुप रह गया। उसके मुँह से केवल इतने शब्द निकले "हा" इ...

ही दूर चला होगा कि साम्हने मौर बांधे हुए दुल्हा मिला इसके साथ में उसकी नव दुलहिन भी थी। सूर्य्योदय होतेही यह शकुन देख कर सब का दिल दग हो गया। यहा पृथ्वीराज घोडे पर से उतर पडा और एक दो घडी के लिये सब लोग एक जगह बैठ गए। साथ के जागडे लोग सिन्दूरिया राग की अलापचारी करने लगे। इसके बाद ज्योंहीं राजा ने चलने की इच्छा करके रकाब पर पैर दिया कि बाई तरफ श्यामा ने शब्द किया और वृक्ष पर से उतर कर पृथ्वी पर आन बैठी। यह देखकर सबके मन में एक प्रकार का सशय सा हो गया। तब तक साम्हने एक काला मृग भी देख पडा, जिसे राजा ने बाण से मार गिराया। इस पर राजा दो घड़ी के लिये और ठहर गया। परन्तु ज्योंही फिर से चलने को तय्यार हुआ कि साम्हने एक योगिनी के दर्शन हुए। उस योगिनी के एक हाथ में त्रिशूल और एक में खप्पर था। पृथ्वीराज ने उसे देखतेही कुछ स्वर्ण उसके खप्पर में डाला और उसे विनीत भाव से प्रणाम करके आगे को यात्रा की। तदनुसार उसके सामन्तों ने भी घोड़ों की बाग उठाई। निदान प्रहर दिन चढ़ते चढ़ते पृथ्वीराज ने दिल्ली से ३२ कोस पर भूसाम नामक स्थान पर दूसरा मुकाम जा किया।

कहने को दूसरा पड़ाव था परन्तु दिल्ली से बाहर होने पर यह पहिला ही पड़ाव था। ज्यों ही पृथ्वीराज पडाव के पास पहुंचा कि सिर पर पाच घडा रक्खे हुए एक स्त्री मिली। पृथ्वीराज को देख कर वह स्त्री जैजैकार करती हुई दाहिने से बाए को चली गई। दस कदम आगे चलने पर बाई ओर गर्जता हुआ सिंह मिला। मास का लोथडा लिए हुए चील्ह और बाई ओर बोलता हुआ सारस का जोडा भी नजर पडा। गांव के पासही एक छोटा सा गाव था। उसी गाव में एक नट नजरबन्द तमासा कर रहा था। वह नट सब के देखने देखते बास पर चढ गया, वहा से उसके अंग प्रत्यग कट कट कर गिरने लगे थोड़ी देर में उसका धड़ भी पृथ्वी पर गिर कर थर थर कापने लगा। यह चरित्र देख कर सब सामन्तों के मन में शका और भय ने स्थान पा लिया।

खास खास लोगों के सिवाय और सिपाहियों को यह अबतक मालूम न था कि कहा जा रहे है। एक कहता किसी तीर्थ को जा रहे है। दूसरा कहता भाई कहा है वह तीर्थ, वहा किस देवता के दर्शन होंगे? तब तक नरनाह कन्ह ने जैत राव से कहा "तुम राजा को रोको" जैतराव बोला "मै क्या करू, मै पहिलेही अपना सा सिर पीट चुका हू।" पज्जूनराव बोला "भाई साहब यह सब भटवा की करतूत है कन्नौज पहुच कर देखना यही दृश्य सच्चा होकर आगे आवेगा। तब कन्ह ने कहा "सुनो कूरंभ राव! सोच विचार करने से क्या होता है जो कुछ होनहार होगी सो तो अवश्य ही होगा। सब ने हजार समझाया पर युधिष्ठिर ने एक न माना और दुर्योधन के साथ जुआ खेला पर खेला। लक्ष्मण के रोकते हुए भी रामचन्द्र स्वर्ण मृग के पीछे दौड़ गए; मंत्रियों के मना करने पर भी रावण ने सीता को रामचन्द्र जी को वापिस न दिया। यदुवशियों ने जान बूझकर दुर्वासा ऋषि का शाप लिया इसी प्रकार इस पृथ्वीराज ने कैमास ऐसे मन्त्री को मार कर और चामडराय के पैरों में बेडी भरकर सब सामन्तों का जी खट्टा कर दिया। इससे स्पष्ट होता है कि कोई विशेष होनहार की घड़ी आ पहुची है और वही होनहार राजा के चित्त में बस कर उससे यह सब अनर्थ करवा रही है। इन सगुन असगुनों को राजा क्या स्वय नहीं जानता। जानता है। पर होनहार के वश होकर उसके विरुद्ध कुछ कर नहीं सकता। चलते समय ही हमने सबने अपना सा कहा सुना पर किसी की न मानी और चल पडा। हम लोगों को क्या। इस नश्वर शरीर को सदा नहीं रहना है यदि इस तरह से काम आवेंगे तो उधर हमारी आत्मा परमात्मा में मिलेगी इधर कवि लोग सुयश बखान करेंगे। हम फिर क्या आप मेरे जग हुए। राजा की राम जाने

उसी समय एक से तीन तक जितने शब्द करे उतनी ही अधिक कार्य्यसिद्धि समझनी चाहिए। परन्तु यदि कहीं दहिने से बाएँ जाय तो महान अशकुन जानिए। उस अवस्था में उसका बांई ओर बोलना घात सूचक है। यदि कहीं तीन बोली लगातार बोले तो समझनी चाहिए कि यात्री की अवश्य मृत्यु होगी। परन्तु यदि ऊंचे स्थान पर बैठी हो तो उतनी ही अधिक कार्य्य-सिद्धि समझनी चाहिए। उसका बाई ओर होना अरिष्ट या द्वेष सूचक है पर दाहिनी ओर सिद्धि सूचक है। यदि थह थूहड़ु सेंहुस पाफनी आदि काटेदार वृक्ष या कोयले के ढेर अथवा किसी सूखे हुए वृक्ष के ठूठे पर बैठ कर शब्द करे या उससे उतर कर बोले तो समझना चाहिए कि कोई खेद की बात तो नहीं पर कार्य्य सिद्धि की भी कोई आशा न रखनी चाहिए। यदि हो भी तो ऐसी वैसी।

यदि तीतर,खर,नाहर,जम्बुक,सारस,चील्ह,चातिग, उलूक,बन्दर,मोर, सुआ,बाएं मिलें तो शुभ है, परन्तु यदि दहाड़ता हुआ सिंह दहिने हो तो अत्यन्त शुभ सूचक समझना चाहिए। परन्तु कार्य्य में भय की सभावना अवश्य होती है। यदि तीन पाच या सात मृगी मृग के साथ चरती हुई दहिनी ओर मिलें तो परम शुभ है परन्तु यदि सूर्य्यास्त के समय काला मृग अकेला मिले तो उसे साक्षात् यम का स्वरूप समझना चाहिए। यदि काम सफल भी होगया हो तो भी सब चौपट हो जाय और यात्री की जान पर आबने। इसी प्रकार बाई ओर गर्जना करते हुए सिंह का भी फल जानना चाहिए। यदि कहीं चात्रक, बगुला, बाज, भारद्वाज, चौर, छत्र, बजती, हुई वीणा, दूर्वा, दही, गगाजल,धनुष, कलार, वेश्या, हाथी, सारस, चूहा, करभ, गोधह, सर्प, अंगारे वा भस्म, गुड, लवण, मठा, प्रवरज्ज, अधा, खुले केश, माला या गधे पर चढा हुआ पुरुष आदि दहिनी ओर मिलें तो उन्हें पाच प्रणामें कर ले बस फिर सब सिद्ध है। वनबिलाव, घूघू, पटत परेवा, पडूक, या पिंडुकी ये चिड़िया दहिने मिलें तो अशुभ है और यदि दोनों हाथ में घडे लिए गधे पर चढ़ा हुआ कुम्हार बिलकुल नंगे सिर या सिर पर बोझ लिए हुए मिले तो समझना चाहिए कि अवश्य कुछ न कुछ फिसाद खड़ा होगा। यदि चलते समय श्याम वर्ण बिना तिलक का ब्राह्मण, विभूत हीन योगी साम्हने आजाय तो तुरन्तही यात्रा बन्द करदे। सिर पर दहिनी तरफ कोई पक्षी बोले और बाएँ स्यार बोले अथवा साम्हने शव की रथी आती मिले तो सर्व सिद्धि समझनी चाहिए। भरे हुए कलस, उज्ज्वल वस्त्र वाला, दिया, अग्नि, मछली, यात्रा के समय नजर पड जाय तो इस से भला और शुभ क्या होगा। और भी सजी हुई राजा की फौज, दहाडता हुआ सिंह, खुरी करता हुआ मृग दाहिने देख पड़े तो भी अत्यन्त शुभ समझिए। सिर पर शब्द करते हुए बदलों को फाडकर सूर्य्य निकल रहा हो तो उस समय अवश्यही यात्रा या अन्य कोई कार्य्य आरंभ करे उसके सिद्ध होने में कदापि सदेह नहीं इत्यादि।

कविचन्द योंही कह रहा था तबतक राजा ने हँसकर पूछा क्यों और यदि मद सहित साम्हने आता हुआ कलार मिले तब? कविचन्द बोला कि तब क्या रक्तपात हो, सैकड़ों मारे पडें और सैकडों विजय का डका बजाते हुए घर बैठ कर आनद उडावें। इसी बीच में राजा को सहसा कैमास का स्मरण आगया जिससे उसका चित्त विह्वल सा हो गया। वह एक हाय मारकर चुप रह गया। उसके मुँह से केवल इतने शब्द निकले "हा" इस जीतब में क्या है? मरनाही सार है। क्षण एक में उसने कुछ सम्हल कर कहा मेरे सामन्तों इस में तो कोई सन्देह नहीं कि तुम सच्चे परोपकारी हो मेरे काम पर प्राण न्योछावर करने को उद्यत हो तिस पर भी गगा के किनारे धारा क्षेत्र में प्राण देना परम कल्याण कारी है। राजा का ऐसा कुछ दुचिता चित्त देख कर कविचद ने उसे बातों में लगा लिया। चैत्र मास के कुसुमित वन की शोभा का आनन्द लेते हुए सब लोग रास्ता ते करने लगे। पृथ्वीराज थोड़ी-

ही दूर चला होगा कि साम्हने मौर बांधे हुए दुल्हा मिला इसके साथ में उसकी नव दुलहिन भी थी। सूर्य्योदय होतेही यह शकुन देखकर सब का दिल दग हो गया। यहां पृथ्वीराज घोड़े पर से उतर पड़ा और एक दो घड़ी के लिये सब लोग एक जगह बैठ गए। साथ के जागड़े लोग सिन्दूरिया राग की अलापचारी करने लगे। इसके बाद ज्योंहीं राजा ने चलने की इच्छा करके रकाब पर पैर दिया कि बाईं तरफ श्यामा ने शब्द किया और वृक्ष पर से उतर कर पृथ्वी पर आन बैठी। यह देखकर सबके मन में एक प्रकार का संशय सा हो गया। तब तक साम्हने एक काला मृग भी देख पड़ा, जिसे राजा ने बाण से मार गिराया। इस पर राजा दो घड़ी के लिये और ठहर गया। परन्तु ज्योंही फिर से चलने को तय्यार हुआ कि साम्हने एक योगिनी के दर्शन हुए। उस योगिनी के एक हाथ में त्रिशूल और एक में खप्पर था। पृथ्वीराज ने उसे देखतेही कुछ स्वर्ण उसके खप्पर में डाला और उसे विनीत भाव से प्रणाम करके आगे को यात्रा की। तदनुसार उसके सामन्तों ने भी घोड़ों की बाग उठाई। निदान प्रहर दिन चढ़ते चढ़ते पृथ्वीराज ने दिल्ली से ३२ कोस पर भूसाम नामक स्थान पर दूसरा मुकाम जा किया।

कहने को दूसरा पड़ाव था परन्तु दिल्ली से बाहर होने पर यह पहिला ही पड़ाव था। ज्यों ही पृथ्वीराज पड़ाव के पास पहुंचा कि सिर पर पानी का घड़ा रक्खे हुए एक स्त्री मिली। पृथ्वीराज को देख कर वह स्त्री जैजैकार करती हुई दाहिने से बाएं को चली गई। दस कदम आगे चलने पर बाईं ओर गर्जता हुआ सिंह मिला। मांस का लोथड़ा लिए हुए चील्ह और बाईं ओर बोलता हुआ सारस का जोड़ा भी नजर पड़ा। शहर के पासही एक छोटा सा गांव था। उसी गांव में एक नट नजरबन्द तमाशा कर रहा था। वह नट सब के देखते देखते बांस पर चढ़ गया, वहां से उसके अंग प्रत्यंग कट कट कर गिरने लगे थोड़ी देर में उसका धड़ भी पृथ्वी पर गिर कर थर थर कांपने लगा। यह चरित्र देख कर सब सामन्तों के मन में शंका और भय ने स्थान पा लिया।

खास खास लोगों के सिवाय और सिपाहियों को यह अबतक मालूम न था कि कहां जा रहे हैं। एक कहता किसी तीर्थ को जा रहे हैं। दूसरा कहता भाई कहां है वह तीर्थ, वहां किस देवता के दर्शन होंगे? तब तक नरनाह कन्ह ने जैतराव से कहा "तुम राजा को रोको" जैतराव बोला "मैं क्या करूं, मैं पहिलेही अपना सा सिर पीट चुका हूं।" पज्जूनराव बोला "भाई साहब यह सब भटवा की करतूत है कन्नौज पहुंच कर देखना यही दृश्य सच्चा होकर आगे आवेगा। तब कन्ह ने कहा "सुनो कूरम राव! सोच विचार करने से क्या होता है जो कुछ होनहार होगी सो तो अवश्य ही होगा। सब ने हजार समझाया पर युधिष्ठिर ने एक न माना और दुर्योधन के साथ जुआ खेला पर खेला। लक्ष्मण के रोकते हुए भी रामचन्द्र स्वर्ण मृग के पीछे दौड़ गए; मंत्रियों के मना करने पर भी रावण ने सीता को रामचन्द्र जी को वापिस न दिया। यदुवंशियों ने जान बूझकर दुर्वासा ऋषि का शाप लिया इसी प्रकार इस पृथ्वीराज ने कैमास ऐसे मन्त्री को मार कर और चामडराय के पैरों में बेड़ी भरकर सब सामन्तों का जी खट्टा कर दिया। इससे स्पष्ट होता है कि कोई विशेष होनहार की घड़ी आ पहुंची है और वही होनहार राजा के चित्त में बस कर उससे यह सब अनर्थ करवा रही है। इन सगुन असगुनों को राजा क्या स्वयं नहीं जानता। जानता है। पर होनहार के वश होकर उसके विरुद्ध कुछ कर नहीं सकता। चलते समय ही इससे सबने अपना सा कहा सुना पर किसी की न मानी और चल पड़ा। हम लोगों को क्या। इस नश्वर शरीर को सदा नहीं रहना है यदि इस तरह से काम आवेंगे तो उधर स्वर्ग आत्मा परमात्मा में मिलेगी इधर कवि लोग सुयश बखान करेंगे। इस लिए क्या [illegible]

पर इतना हम फिर भी कहेंगे कि इसकी होनहार कुछ बुरी है।"

पड़ाव पर बनवीर पडिहार ने रसोंई की सामग्री तथा अन्य सब आवश्यक सरजाम प्रस्तुत कर रक्खा था। सब साथियों सहित पडाव पर पहुंच कर राजा ने स्नान ध्यान किया और भोजन प्रसाद करके वह फिर से चल पडा। यहा से सेना की चाल नियम बद्ध की गई और सब सूर सामन्तों को अपनी अपनी हुकूमत और काम का हिस्सा बांट दिया गया। प्रत्येक सामन्त के तावे में सौ सौ सवार किए गए, दस सामन्तों प्रति एक एक वीर और दो दो वीर पर एक एक जितेन्द्रिय शूर नियत किए गए। पृथ्वीराज स्वयं सब सेना का अगुआ हुआ। आगे आगे पृथ्वीराज वाराह सा और उसके पीछे सब सैनिक * दार से चले जाते थे। प्रचण्ड चण्डी, उन्मत्त स्वरूप दण्डधारी भैरव और उसके साथी कविचन्द के सिद्ध किए हुए ५२ वीर चौसठों योगिनी और और भी अनेकों भूत प्रेत वेतालादि नाना प्रकार के भयावन और वीभत्स शब्द करते हुए गाते बजाते नाचते और ताल ठोकते हुए पृथ्वीराज की सेना में चले जाते थे। उसके सिपाही और सामन्त लोग भी तो एक प्रकार के निर्भय भूत ही थे। उन्हे सासारिक माया मोह से मानो कुछ प्रयोजन ही न था। एक दम मरना मारनाही उनका व्यवसाय था. अस्तु सूर्य्य के समान तेजस्वी राजा पृथ्वीराज के पीछे वे लोग किरणों की तरह चले जाते थे। शत्रु रूपी अंधकार को विदार देने के लिये पृथ्वीराज साक्षात् सूर्य्य के समान था, तब उसके सामन्त सिपाही सूर्य्य किरण हुआ ही चाहें। निदान रात्रि-भर में उन्होंने बीस कोस की मंजिल ते की और सूर्य्योदय के समय वे अपने मंडे से अड़र कर कन्नौज राज्य की सरहद में जा पहुंचे।

रात्रि का शेषांश वहीं पर बिताया गया। प्रातः ज्यों ही अरुणोदय हुआ कमलों की कली खुली, देवालयों में शंख झालर बजीं कि इधर फिर से सामन्तों के घोडे सजे गए। पूर्व दिशा में भास्कर भगवान के दर्शन होतेही पृथ्वी और आकाश पर सर्वत्र एक विलक्षण आनदमय आभा छा जाती है। जलाशयों में पुरैन के पत्ते जल से विलग होने लगते हैं, कमल कली से निकल कर भ्रमर अपनी भौरियों से मिलते है, लंपट पुरुष मन मलिन होते हुए शैय्या से उठते हैं और तमचर समूह व्यवसाय से रहित हो कर निद्रा में प्रवृत्त होते हैं। हालही में छिटके हुए कमल पुष्पों के पराग मय क्लान्त चित्त पुरुषों को भी आनंद देने वाली मन्द मन्द वायु बहती है और संयोग सुख में मग्न मन चक्रवाक् कल्लोलें करते हुए कल कल शब्द करते है। इसी समय सामन्तों सहित राजा पृथ्वीराज ने घोड़े की बाग उठाई। उस राजपूत सेना के अश्वों की खुर खेह से उड़ती हुई धूलि आकाश में आच्छादित होकर बदली सी उनै आई और प्रातःकाल की त्रिविध पवन वेग मय होकर सरसराटे भरने लगी।

पृथ्वीराज पडाव पर से अभी दस कदम भी न गया होगा कि सम्मुख एक देव के दर्शन हुए। वह देव सर्वाङ्ग विभूति रमाए और जटा लटकाए हुए था। उसके साथ में इधर उधर चलते हुए बहुत से कुत्ते भी थे। उसके दोनों नेत्र आग के से अगारे दबदमा रहे थे और हृदय पर गुंजा की माला लटक रही थी। उसका हृदय लाल काला नीला और पीले रंग का था। उसके बाहु कुछ सिन्दुरिये और शर्वती थे। उसकी कम्बुवत ग्रीवा ऐन पीली थी उसके कान स्वेत थे, भौहे भूरी थीं और उसके ललाट पट से केसरिया रंग की आभा झलकती थी। इसी प्रकार उसके पैर भी चार रंग के थे और उसके नखों से श्याम घन की सी नीलमा दमदमा रही थी

* जगली सुअरों के ऐसे झुंड को जिसमें नर मादा बच्चे वगैरह सब हों "दार" कहते हैं। प्रत्येक दार का मुखिया एक बड़ा जंगी सुअर होता है जिसे वाराह कहते हैं। जिस तरफ को वाराह जाता है उसी के पीछे पीछे दार के सब सुअर चले जाते है। मजा यह है कि अगर वाराह कूए में गिर पडे तो दार के सब सुअर उसी कूए में गिरते जायंगे जब तक कि कुआ भर कर पट न जाय।

इस देव का यह चित्र विचित्र स्वरूप देख कर सब सामन्त और पृथ्वीराज तो चुप रह गए । परन्तु कविचन्द ने आगे बढ़ कर उसके सम्मुख शीश नवाया और उसने कवि को आशीर्वाद दिया। मुस्करा कर आशीर्वाद देते समय सबने देखा कि उसकी जिव्हा भी दो रग की थी। कविचन्द ने उस देव से बड़े नम्र भाव से पूछा हे समस्त भूत प्रेत और बैतालों के स्वामी आज कहा को यात्रा हुई है । इस पर उसने उत्तर दिया कि सतयुग में मेरे पिता ने कुपित होकर त्रिपुरा सुर से युद्ध किया था, त्रेता में राजा राम ने लका पर आक्रमण किया था, द्वापर मे परशुराम और सहस्रावाहु से युद्ध हुआ था । अब कलियुग में चहुआन और कमधुज्ज कुल का संग्राम होनेवाला है। रानी जुन्हाई के गर्भ से जन्मी हुई जैचन्द की कन्या सयोगिता साक्षात् कलहप्रिया नाम से प्रख्यात हागी। उसके हेतु उसके पति और पिता दोनों का वश नाश होगा। इस समय उसी का पाणि ग्रहण होनेवाला है सो मै वही देखने जा रहा हू। वहा से सच्चे शूर वीर राजपूत योद्धाओं के सिर लाकर शिव जी को दूगा और मैं वहा के अभिनय का प्रत्यक्ष आनन्द लूंगा । देव के ऐसे वचन सुन कर कविचन्द और पृथ्वीराज दोनों एक दूसरे की तरफ देख कर मुस्कराए।

पृथ्वीराज ने कहा आज भोर के पहर की बात है। मै खूब गहरी नीद में था कि पूर्व्व दिशा में मुझे एक प्रकाश देख पडा। चरणेक में वह प्रकाश पश्चिम दिशा में जाकर सहसा लोप होगया। वस मेरी नींद खुल गई परन्तु सर्वथा नहीं कुछ उनींदी अवस्था में था तो देखता क्या हू कि एक कुसम सरीखे लाल केशोंवाली कामिनी मेरे सम्मुख आ उपस्थित हुई । सुघनता से सवारी पटियों पर पड़ी हुई दुलरी मणियों की दावनी ऐसी मालूम होती थी मानो चन्द्रमा सर्प का ग्रास किए हो और उसके ललाट पर के केशर का तिलक और रोली की आड शोभित थी। उसके कानों के कुडल सूर्य्य की सी झलमला रहे थे और उसकी वक्र भौहें साक्षात् मीनकेतु की सी कमानें थी। उसके बड़े बडे चचल नेत्र ऐसे देदीप्यमान थे जैसे स्वेत कमल की कली में मकरन्द कल्लोलें कर रहा हो। उसकी सुग्गे की सी नासिका में झूलता हुआ बुलाक का मोती शुक्र एव सोम का सा रस भासित होता था। उसके काम के केलि-आलय से कपोलों पर लटकती हुई लट सर्पिणी सी और मृदुमुसक्यान से उसके उज्ज्वल अनार के दाने से दात साक्षात् दामिनी से दमकते थे उसकी चिबुक पर का तिल गदूले के फूल पर अलिशावक सा बैठा हुआ जान पडता था। उसकी कंबुवत् ग्रीवा चंपकली सी अगुलिया गुलाब से नख अद्भुत छवि छटा छाते थे। उसके कमल कली से नवीन उरोंजो वाले वक्षस्थल पर हिलता हुआ मोतियों का हार हरद्वार में गगा जी की सी वहार देता था। उसकी शेर की सी पतली कमर स्वर्ण खम्भ से जघा सुढार पिंडुली और नारगी सी एडी इत्यादि उसके अग प्रत्यग की शोभा सहजही देखने वाले का दिल लुभा लेने वाली थी । मैंने देखतेही उससे पूछा ? तुम कौन हो ? किसकी लड़की हो ? और किसकी स्त्री हो। इस पर उसने उत्तर दिया कि मैं कन्नौज के राजा जैचन्द की जाई हू और तुम्हारे पास आई हू। मैं पूर्व्व जन्म की मंजुघोषा अप्सरा हू, सुमत ऋषि के शाप वस मुझे मनुष्य शरीर धारण करना पडा है। मेरा नाम कलहप्रिया है क्योंकि मैं पिता पति दोनों का वश नाश करके तब स्वर्ग को जाऊगी। इसमें जरा भी असत्य न समझिए। मैंने आपसे यह अतीव गुप्त भेद कह दिया है । इसपर कविचन्द ने उत्तर दिया सत्य तो है जो कुछ उसने कहा वह सब विश्वसनीय है।

कलह केलि के लिये सदैव सन्नद्ध अपने भार से शेष नाग को शकित करने वाली कन्नौज को जाती हुई चहुआन सेना में एक से एक बानैत राजपूत थे। वे सब लोग अपने अपने इष्ट देवताओं का स्मरण करते हुए अपने शीश योगिनियों के हाथ में देने के लिये और अपने रुधिर से उनके खप्पर भरने

के लिये तन मन से तैय्यार थे। उपरोक्त देव के मुख से भविष्य की होनहार जानकर उनका जराभी मन मैला न हुआ । वरन वे इससे और भी प्रसन्न थे कि एक तो स्वामि सेवा में गगा के किनारे मरना दूसरे संसार में अमर यश स्थापित हाना एक पथ दो काज बस फिर हमें चाहिए क्या । एक राजपूत बच्चे के लिये इससे अधिक आनन्द प्रद और क्या बात होगी। पृथ्वीराज की सेना के साथ चलते हुए भूत वैतालों के राजा उस देवने कविचन्द को आशीर्वाद दे कर एक बाण भी दिया और कहा कि इसे पृथ्वीराज को दे दो। वह इस बाण क बल से शत्रु समूह का नाश करके सकुशल संयोगिता से व्याह कर सकेगा। यह वही बाण है जिससे भगवती ने महिषासुर को मारा, राम ने रावण को सहारा, पारथ ने भारथ का युद्ध जीता और शिवजी ने त्रिपुरासुर का नाश किया ।

इतना कहकर देवता अन्तर्ध्यान हो गया । और उस बन प्रान्त को कंपायमान करती हुई चतुरंग सेना आगे बढी। तब तक देखते क्या है कि दुष्टों को दड देकर आरतों के त्राणकर्त्ता त्रिनेत्र त्रिपुरारी श्रीशिव जी सर्वाङ्ग विभूति रमाए बडे बडे जटा लटकाए बूढा बैल पर चढे हुए चले आरहे है । उस भव के भव विभव पराभव कारी विभूति प्रिय विश्वंभर भोलानाथ के शीश पर गगा थी, गले में गरल था और उनका अग आवरण एक गज चर्म था। शिवजी को देखतेही सबके सब घोडों पर से उतर पडे और पृथ्वीराज दौड कर उनके पैरों पर साष्टाग पड गया। इस पर शिवजी ने उसके पीठ पर हाथ रक्खा और कहा कि पृथ्वीराज तू अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा । यह कहकर और विभूति दे कर शिवजी अन्तर्ध्यान हो गए। शिवजी के विदा होने पर चार पैड भी न चलें होंगे कि एक अत्यन्त तेजस्वी ब्राह्मण नरनाह कन्ह के सम्मुख आकर खडा होगया। उसे देखते ही कन्ह की आखों के पट्टे आपही आप खुल पड़े । कन्ह उस उज्ज्वल मूर्ति ब्राह्मण के चरणों पर गिर पड़ा । उसने कन्ह के सिर पर हाथ फेर कर कहा युद्ध विद्या में अद्वितीय दक्ष, सदा यशस्वी मेरे अश में उत्पन्न कन्ह अब मेरा तेरा साक्षात् सूर्यमडल में होगा । इतना कह कर वह ब्राह्मण भी अन्तर्ध्यान हो गया। इसके बाद पृथ्वीराज कोई एक योजन मात्र गया होगा कि एक घन एव पर्व्वत क समान भीष्म काय विद्युत के समान तेजमान नाना रग की बैरखें और झडियों से विभूषित एक बडी भारी देवमूर्ति देख पडी। उसके साथ में भिन्न भिन्न बाजों की ध्वनि से मुखताल बजाते हुए अगनित भूत बैताल भी थे। यह देख कर पृथ्वीराज ने राजमन्त्री जैनराव की तरफ देखा। तब कविचन्द बोला "यह हनुमान जी हैं" यह कह कर कविचन्द आगे हो कर बोला "हे कपिवर आपके स्वरूप और बल का कौन पार पा सकता है। हम मन्द बुद्धि मनुष्य आपकी महिमा को क्या जाने । कृपा कर साधारण स्वरूप धारण कीजिए।" हनुमानजी के अन्तर्ध्यान होतेही स्वर्ण के सहस्र भुजावाले धूम्रवर्ण सहस्रबाहु की प्रतिमूर्ति के दर्शन हुए। उसके नेत्रों से अग्नि की सी चिनगारियाँ छूट रही थी उसकी हजार हथेरी साक्षात् शेर के से पजे थे। कधे पर धनुष और शीश पर ध्वजा फहरा रही थी-उसके साथ में एक ओर डाकिनी और एक ओर शेर शोर कर रहे थे। निदान उसने भीमकाय लंगोट बन्द लगरीराय के पास जाकर उसके शीश पर हाथ दिया और आशीर्वाद देकर वह भी अन्तर्ध्यान हो गया। वहा से एक योजन आगे जाने पर उज्ज्वल वर्ण सात सूडें और हजार दात वाले भद्र जाति के एरावत नामक दती पर सवार सूर्य्य के समान तेजधारी इन्द्र ने आकर गोइन्दराय के सिर को स्पर्श किया और कहा कि अब मै तुमसे स्वर्ग में मिलूगा। कुछ दूर और आगे जाने पर एक बावली के किनारे एक बट वृक्ष मिला। इस बट वृक्ष में एक खोंग थी जिसमें से सूर्य्य के समान एक अद्वितीय तेज

(१) तुम हम मडल रवि मिलन यहा पर दिखलाया गया है कि कन्ह का सूर्य्य का इष्ट था। इसी तरह आगे चार भी सब सामन्तो के इष्ट देवों की सूचना दी गई है। "

प्रकाशित हो रहा था। कविचन्द ने आगे जाकर उस विवर की विधिवत पूजा और स्तुति की तब उसमें से सिंह पर सवार श्री भगवती ने प्रगट हो कर दर्शन दिए और कहा कि कविचन्द चिन्ता न कर पृथ्वीराज सकुशल सयोगिता का पाणिग्रहण करेगा परन्तु सौ मे से ६४ सामन्त खेत रहेंगे।

दिल्ली से चले हुए पृथ्वीराज को तीन दिन तीन रातें पूरी होने में तीन पहर बाकी थे अर्थात् पंचमी मंगलवार * को एक पहर रात्रि गई थी। अतः सब सामन्त और सिपाही सहित पृथ्वीराज ने उसी स्थान पर घोड़ों से उतर कर देवी की पूजा की और स्तुति की और फिर सबने कुछ आराम लेने के लिये कमरें खोलीं। दूसरे दिन पाच घडी रात्रि रहे से फिर कमर कसी गई और भोजन के समय मुकाम शंकर पुर के पडाव पर डेरे पडे। भोजन प्रसाद हो चुकने पर पृथ्वीराज ने सब सामन्तों को अपने पास बैठाया और सबकी यथोचित प्रशसा करके उनसे कहा "भाइयो मैं कविचन्द की छागर लेकर जैचन्द का दर्बार देखने जा रहा हू। परन्तु यह सब हिम्मत आपही लोगों के भरोसे पर है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि समय पर तुमलोग मेरा पूरा साथ दो गे। प्यारे भाइयो अधिक क्या कहू मेरा निस्तार तो आपही लोगों से है। मुझे क्या मेरी चिन्ता तो तुम्हे चाहिए। इसी प्रकार बातें होते होते दो पहर लटक गए और तीसरा पहर हो आया। सामन्तों के बीच में बैठे हुए पृथ्वीराज ने फिर कहा "कहा को जा रहे है क्या होना है सो सब जानही लिया अब लाज तुम्हारे ही हाथ है * तीज को बाइस कोस चौथ को चौबीस कोस, पंचमी को छत्तीस कोस और आज षष्ठी को अडतीस कोस की मजिल तै हो चुकी है। अब यहा से कन्नौज केवल दो योजन यानी आठ कोस की दूरी पर है। जो बात बरसों से दिल में बसी हुई थी उसे अब सबेरेही साक्षात् देखेंगे। पर भाइयो केवल तुम्हारे भरोसे पर। इस पर पुनः राज्यमत्री जैतराव ने कहा राजन् सूर्य्य और चन्द्रमा बदली की छाह में नहीं छिपते, भेष छिपाए भूप, और बहुमूल्य वस्त्र पहिने हुए करीब नहीं छिप सकता। नेह के नैन, सुगंध की चोरी, और कुलटा के हावभाव आपही आप प्रगट हुए जाते है। युद्ध के समय सूर और सभा में चतुर पुरुष एवं कवि कदापि नही छिपते। जैतराव की बात सुनकर पृथ्वीराज बोला। चाहे जो हो हम तो दिल्ली से जैचन्द के महल देखने के लिये चले हैं अब जैसा जानो वैसा करो तुम्हारी खुसी। राजा की आखिरी बात सुन कर सामन्त लोग समझ गए कि बस अब हम लोगो की अन्तिम घडी आन पहुची है परन्तु उसमे उनका मुख मलिन न हुआ वरन उनके चेहरों पर एक विलक्षण तेजमय आभा आ गई। उनके सब शरीर के रोगटें खड़े हो गए और बाहु फडकने लगे। कन्ह, गोयदराय, पज्जून, सलख, निढ्ढुर, चदपुडीर, पहाडराय, जामराय, सिंहप्रमार, अत्तताई, बलभद्र, प्रसंगराय, कनकराय, और रामराय, आदि सामतों के बीच में बैठा हुआ देव के समान राजा पृथ्वीराज कुछ ढीली निगाह करके सब के मुह की ओर देखने लगा। यह देख कर सब सामन्त एक स्वर मे बोल उठे "धणीखमा अन्नदाना कोई चिन्ता नहीं।

बस फिर क्या था! दरबार बरखास्त हुआ। सब सामन्त अपने अपने डेरों पर आराम करने लगे, इधर पृथ्वीराज भी अपने शिविर में पड़ा करवटें बदलने लगा। इस समय गंगाजी के किनारे पर डेरे पड़े थे इस लिये पृथ्वीराज भूमि पर पड़ा था। सब लोगों ने स्नान करके जैसे तैसे रात घड़ी रात्रि बिताई ... पर ... चार घड़ी रात और गई कि शिविर में ... के नगाड़े ...

---

* मूल पाठ मे "सोमवर्ष्वा जाम एकं हनिस चित्तिव" पाठ है। परन्तु द्वितिया रविवार के बाद सोमवार का पंचमी होन हो सकता है। मान लिया गया कि तिथि की हानि हुई बाकी सोमवार के पडाव का वर्णन पहिले हो चुका है। सम्भव है कि भाम के स्थानमे भूलसे सोम लिख गया हो।

* छन्द १०१- मे "तीस कोस दुअ अग्गरौ त्रिदी ... मुकाम' पाठ है परन्तु मालुम होता है कि बाइस अग्गरो के स्थान मे तीसदुव अग्गरौ भूल से हो गया हो।

और सब सामन्त लोग अपने अपने बताने बताने से सजे। तय्यारी के समय सब सामन्तों से यह भी कह दिया गया कि वे सब अपना वेष बदल लें जिसमें वे सहजही पहचाने न जा सकें। निदान सब ने ऐसा ही किया और सब ने ऐसे रूप छिपाए कि आठ पहर साथ रहने वाला भी उन्हें न पहिचान सके। आधी रात के पश्चात सप्तमी वृहस्पति वार की सन्धि मे पृथ्वीराज ने घोडे की बाग उठाई। ग्यारह सौ सवार और सौ सामन्त भी क्रमानुसार नियम बद्ध होकर चलने लगे। सब सेना के आगे आगे सहनाई और नफीरी के स्वर छिड़ते जाते थे तिसके पीछे सब सैनिक और बीच में कविचन्द और पृथ्वीराज थे। कविचन्द गगाजी की महिमा बखान करता जाता था। और पृथ्वीराज उसे बडे चाव से सुनता जाता था। ज्यों ज्यों कन्नौज की सरहद नियराती जाती थी त्यों त्यो सामन्त और सिपाहियो के दिल से भय भागा जाता था और आनन्द से उनकी छाती फूली आती थी। वे भी परस्पर बातें करते जाते थे। कोई कहता कि मै पाताल लोक का राजा हूगा, तो दूसरा कहता मै इन्द्रासन लूगा, तीसरा कहता मैं सूर्य्यमंडल में मिलूगा तो चौथा कहता मै उसे भी पार करके चिन्मय ब्रह्म में लीन होकर तन्मय हो जाऊगा। अपनी ध्वनि में सब ऐसे मस्त थे कि जाना था उत्तर को और हो गए सीधे पूरब को। चलते चलते जब देर हो गई तारा चढ़ आया हिनी उग आई, दिशाओं में सफेदी झलक आई वृक्षों के पत्ते हिलने लगे रात छूट गई, पौ फट गई रतिप्रीता मोतियों का हार उतार कर कत से लिपट गई और संसार से प्रायः प्रभा समिट गई और तब भी कन्नौज के राजमहल के कलसे नजर न पडे तब मालूम हुआ कि रास्ता भूल गए हैं।

घड़ी एक में अरुणोदय हो आया और अंधकार का मानों एक प्रकार से सर्वनाश होगया। सूर्य्य भगवान की कोमल किरणों का स्पर्श पातेही जैचन्द के महलों के सुनहले कलसे झिल मिल झलकते हुए देख पड़ने लगे। तब सब कह उठे, वाह कन्नौज तो यहा से उत्तर है निदान स ने उसी समय घोडे की बागें मोड दी। कविचन्द बोला सभरीनाथ, समस्त चत्रीवश और छ धारियो मे श्रेष्ठ, असख्य सेना के स्वामी अतुलि बाहुबल वाले धर्मधुरधर पृथ्वी या इन्द्र के समा यशस्वी कमधुज्ज कुलकमल कन्नौज राज महाराज जैचन्द के महलों के कलसे यही तो है। इसके साम्ह छत्तीसों वश के छत्री सिर झुकाते है और दरबार छओं भाषा नवों रस चौदहो विद्या चौसठों कला आदि देह धरकर विराजती हैं। इतने में सब लोग गगा की ऐन कगार पर आगए तो देखने क्या है कि कहीं पर मतवार हाथियों के झुड के झुड ख झूम रहे हैं। कहीं पर सुन्दर किशोर वय राजकुमा घोडे फेर रहें है, कहीं पर भीमकाय पहलवान लोग जोर कर रहे हैं, कहीं पर योंही दस पाच यार दोस्त बैठे मनकी मौज उडा रहे है कोई ग रहे है तो कोई बजा रहे है। कहीं वेद पाठी ब्राह्मण लोग स्नान करके ध्यान में बैठे सध्या कर रहे है कोई कोई प्रात. वायु के स्पर्श से मगन मन होक अपनही सरोदे में नाच रहे है। कहीं पर धनिक जन स्नान करके रत्न और स्वर्ण का दान कर रहे है, कहीं पर सिद्ध लोग समाधि साधे बैठे है, कहीं कहीं पर औघड़ लोग अनाप सनाप बक रहे है— कहीं पर कवि लोग कवित पढते है तो कहीं पर कलकठी महिलाएँ वृन्द की वृन्द मिल कर मगल गीत गाती है इत्यादि इत्यादि ऐसे मनमोदकारी चरित्र देख कर दर्शकों का चित्त चैतन्य हो गया।

पृथ्वीराज ने कविचन्द से पूछा गगाजी का स्नान करने से क्या फल होता है दर्शन से क्या फल होता है और जलपान करने से क्या फल होता है सो कहो। इस पर कविचन्द ने उत्तर दिया कि जो फल गंगा जल के दर्शन से होता है सोई फल गगा स्नान से होता है और सोई फल एक चुल्लू जल पीने से होता है। इस तरह से स्नान ध्यान मज्जन पान सब प्रकार से पापों का नाश करने वाली गगा के जल को स्पर्श करके है

राजन् अपने कलेवर को पवित्र कीजिए। एक समय की बात है गंगातट पर विहार करती हुई राजा अंबुज की कन्या को देख कर शिव जी उस पर मोहित हो गए। इससे उनका वीर्य्य स्खलित हो गया जिससे बहत्तर हजार कुमार उत्पन्न हुए। वे राजकुमार गंगाजी की ही रेणुका में पले और बड़े हुए। इस समय वे सबके सब रत्नजटित आभूषण कुंडल कवच धारण किए हुए दिव्य रथों पर सवार सूर्य्य मंडल के द्वार पर वहां के चौकसीदार होकर विराजमान है। एक समय एक मकरंद लोभी मलिन्द एक कमल कली के बीच में बन्द हो गया। होतव की बात उस कमल कली के मुकुलित होने के पहिले ही उसे एक अप्सरी ने उतार लिया और शिवजी को चढ़ा दिया। उसी समय किसी ने शिव जी पर गंगाजल चढाया। बस फिर क्या था वह कीट तत्क्षण शिवमय हो गया। और भी किसी समय किसी नदी में एक हिरण पानी पी रहा था उसे एक सर्प ने डस लिया जिससे वह मर कर नदी की धार में गिर गया। उस नदी से बहता हुआ वह गंगाजी में आगया। गंगा किनारे साधारण बैलस्वरूप में नदी फिर रहा था। अस्तु उसने उस की मृगछाला और सींग कैलाश को लेजाकर शिवजी को दिए। हे राजन् गंगाजी का महत्व ऐसा है। श्री विष्णु भगवान के चरण कमलों से उत्पन्न हुई त्रिलोकी के त्रिताप एवं परंपरा पापहारिणी शिवप्रिया गंगाजी को साक्षात् शिव जी का हृदय स्वरूप और दोनों किनारों को धर्म स्वरूप जानिए। ऐसी स्वर्ग की [illegible] सुरसरी का सलिल स्पर्श करने की सुर नर [illegible] अप्सरी आदि सब इच्छा करते है। कलिकाल के काष्ठवत पाप पुंजों को भस्म करने के लिये [illegible] स्वरूप ब्रह्मा के कमंडल से निकल कर [illegible] को वापस न करके नीलकंठ की जटाओं [illegible] है। पावन जगत के जंजालों को जला [illegible] जान्हवी सदैव वंदनीय है। [illegible] [illegible] तामसी प्रकृति का कोई क्यों न हो पर गंगाजल का स्पर्श होते ही वह सतोगुणी हो जाता है। अस्तु हे राजन् इस भवसागर से पार उतरने वाली गंगाजी में मज्जन कीजिए। निदान पृथ्वीराज चीरोदक पहिन कर स्नान करने लगा और कविचन्द गंगा जी की स्तुति पढ़ने लगा। उसने कहा—"हे शिव के सीस पर लसित जटाजूट में विहार करने वाली पापनाशिनी गंगा तेरी तरल तरंग अंग से स्पर्श होते ही जन्म जन्मान्तर कृत पापपुंज जल जाते है। किन्नर और गन्धर्वादि प्रसन्नता पूर्वक तेरे गुण गान करते और तेरी जयजयकार करते हुए कहते हैं; हम मन्द बुद्धि तेरी प्रसंशा क्या कर सकें तेरे जल से स्पर्श हुए शरीर के पास जमराज के दूत कदापि नहीं जा सकते। वसुन्धरा की शृंगार स्वरूप हिम ऋतु की प्रतिपालक हे विधिवाले तेरे दर्शन मात्र से जमराज के पास जाने का भय जाता रहता है। हे पाप पहारों को विदार कर आनन्द की धारा प्रवाहित करने हारी करुणा रस की मंजरी स्वरूप शरणागतों को सुखप्रद और दुष्ट दल दमन करने वाली मात गंगे तेरी जय हो।

उसी समय जैचन्द के महल की कुछ दासियां गंगाजल भरने आई हुई थीं उन्हें देख कर कविचन्द ने हँसते हुए पृथ्वीराज से कहा राजन् देखिए "गोरस बेंचन हरि मिलन एक पंथ दो काज" आपके लिये यहां मुक्तितीर्थ पर भी कामतीर्थ प्रस्तुत है अस्तु दोनों हाथ बढा कर दोनों फल लीजिए।

उन जड़ाऊ जेवर और जरवीले कपड़े पहिने हुए गंगा के किनारे पर जुटी हुई दासियों को देख कर ऐसा आभास होता था मानो शिवजी के कामदेव को भस्म कर देने पर दिव्य देवांगनाएं करुणार्द्र हृदया गंगाजी से फरियाद करने आई हों।

झकोर कर झोंके से जल भरते समय पानी में घड़े की परिछाई ऐसी [illegible] होती थी जैसे राहु और चन्द्रमा लड़ रहे हों और [illegible] विचार कर रहा हो. * स्नान करते समय उन

* [illegible]

मंगलमुखियों के गुलाबी गाल और जाडऊ तिलकों की ऐसी शोभा होती थी जैसे पूनों का चन्द्रमा उदय होकर शनै शनै ऊपर को चढ रहा हो। गङ्गा के किनारे उन स्त्रियों को देखकर प्राय: भ्रम होता था कि है यह मुक्तितीर्थ है या कामतीर्थ।

पृथ्वीराज बोला—आश्चर्य्य है राहु और चन्द्रमा, धनुष और मृग, कीर और बिंबाफल, गज और मृगराज आदि एक दूसरे के सनातन शत्रु इस समय परस्पर मित्रभाव में एकत्रित विराजमान है। विशेष आचर्य्य तो यह है कि दो स्वयभू शंभु भी एक ही आसन पर आसीन देख पडते है। इस पर कविचन्द ने दासियों की ओर दृष्टि करके कहा कि यह जैचन्द के राज्य का प्रताप है। देखिए तो सही चतुरों का चित्त चुराने वाली इन चचललोचना पनिहारियों की पैर की अँगुली चम्पा की सी कली जान पडती है। उन की अनङ्ग की रङ्ग से भरी हुई सकोमल और सुढार पिंडुरी और जघा, पतली सी कमर में नीली साडी और उस पर केसरी चूनरी, उसके भीतर मनोज की मौज भर युग जोबन देखने वाले के मन को बेमोल मोल लेते हैं। ऊची बाह करके पानी भरा घडा सम्हालते समय अचल के अन्दर हृदय पर रुरता हुआ मोतियों का माल एक अजब ही बहार दे जाता है। उनके सचक्कन कपोल सिंहलद्वीपी मोती को भी बेपानी करते है। उनके अर्द्ध अरुण ओष्ट, कीर की सी नासिका मोती एवं दाडिम के दाने से दात बडे ही सुन्दर मालूम होते है। किंचित लज्जा से लोचन के कोये को सिकोडना और हँस हँस कर गरदन मरोडना तो और भी गजब करता है। वाह उनके कमल कली से मुख मण्डल पर जडाऊ आड इन्दु सी सुशोभित होती है।

की तरह सफेद होती है। जल में डूबा हुआ घडे का भाग अपने ऊपरी भाग की छाया के कारण काला मालूम होता है। किसी प्रकार से जल का हिलना मे उनके झाँई या बिंब ऐसी ऊपर नीचे हिलने लगती थी मानो जल का हिलाने वाली वस्तु से टक्करें करती हो। यहां पर कवि ने यही भाव झलकाया है और स्त्री के हाथ को शेषनाग या सर्प माना है

पृथ्वीराज ने मुस्करा कर कहा, वाह कविचन्द खूब चूके, जैचन्द की दासी के शीस पर केश ही नहीं। इस पर कविचन्द बोला सुनो सम्भरीनाथ यह नख शिख है। अलि की श्यामता को मात करने वाले बालों की बेणी स्वर्ग के खम्भ पर चढते हुए सर्प की उपमा पाने योग्य है। सम्भरीनाथ जिनको आप सुन्दरी कहते हैं वे पनिहारी हैं। कन्नौज नगर की सुन्दरी महिलाए यहा क्या करने आवेंगी। वे सदा सतखने महलों पर रहती हैं। कभी पृथ्वीतल पर पैर नहीं देतीं। उनके मुखकमल को या तो सूर्य ही देखता है या उनके पति। उन सुन्दरी महिलाओं के मुखारविंद के दर्शन होने दुर्लभ हैं उनका दर्शन केवल उन्हींको हो सकता है जिन्होंने पूर्व्वजन्म में शिव की सेवा करके अनन्त पुण्य संचय किया है।

महाराज! इस नगर के महाजनों की महिलाएँ ऐसी सुन्दर है कि मै आपसे क्या कहू। उनके श्याम सचक्कन सटकारे कारे कारे केशों की अलकें ऐसी सुशोभित होती हैं जैसे जन्मेजय के यज्ञ के भय से भागे हुए भुजग उनकी पीठ पर आश्रय पा रहे हों और माग पर रुरती हुई मोतियों की लरें उनके आहार के लिये दूध की सी धार जान पडती है। ललाट पर जगमगाता हुआ जडाऊ तिलक चन्द्रमा की गोद मे विराजमान रोहनी सा जान पडता है। दोनों भौंहें काम के कर की कमानें सी और नासिका निर्वात दीप शिखा सी भान होती है। दोनों कानों के मणिजटित कुडल उदित एव अस्तामित राका और अर्क से झलझलाते हैं। दोनों अमोल गोल गडस्थल, गम्भीरी कैसी झोलें, चीर कर चार लाल रङ्ग में रँगे हुए चन्द्रमा एव बिंबाफल से अधर मोती एव विज्जुमाला सी उज्ज्वल दतपक्ति और गुलाब से गोरे गालों पर लटकती हुई मोतियों की लटें शिव के सिर पर गगधारा सी बहती हुई जान पडती है। कोकनद कनक कुंभ एव पर्व्वत शिखर से युग योवन और उनके

नैवे रोमराजि सहित उदर की त्रिवली त्रिवेणी की बहार देती है। पीन नितम्ब, पतली कमर, सुढार नवा, कदम एव नारगी सी रगदार सुढार पिंडुली, केसर के रग भरे कुमकुमे सी एडी पुष्प पाखुरी से मुलायम पैर और उनके नखों से दर्पण की सी द्युति दीप्त होती है।

पृथ्वीराज को देख कर उधर उन स्त्रियों का भी जल भरना भूल गया। ज्योंही ये जल भर घडे को भोंक के साथ सिर पर रखने लगीं कि उनका घूघट पट खसक गया और अचल उघर गया, परन्तु क्या करें; दोनों हाथ बिंधे हुए थे इस से वे अत्यन्त लज्जित हो रतिरलित हथिनी की तरह गरदन दबा कर चल दीं। यह देख कर पृथ्वीराज बोला वाह कैसी सुन्दर मनहरण मुख प्रभा है। कुमोदिनी से यौवन सूक्ष्म रोमराजि और शैवाल से केश कलेजे पर चोट करते हैं पीला पीला पट देख कर इद्र धनुष और उनके गोरे बदन को देख कर विद्युत प्रभा का स्मरण होता है।

इस प्रकार से कन्नौज नगर के उपकठ में गगा स्नान करके राजा पृथ्वीराज सेना सहित चार कोस पश्चिम को चला गया और उस दिन यहीं पर डेरा पडा। उस दिन तिथि षष्ठी थी। डेरे पर पहुच कर पृथ्वीराज ने बहुत सा अन्न धन रत्न और स्वर्ण ब्राह्मणों को दान दिया और नित्त नियमानुसार सध्या वन्दन और शिवार्चन करके सब साथियों सहित भोजन करने बैठा। भोजन करके सबने यथास्थान विश्राम किया और रास्ते की थकावट उतारी—उस दिन और रात भर उसी स्थान पर पडाव रहा।

यह रात्रि सब की इसी सोच विचार में कटी कि देखें अब सवेरे क्या होता है। घरी पहर गिनते गिनते सवेरा भी हो गया। पूर्वदिशा मे भास्कर भगवान ने अपनी कोमल किरणों का प्रसार करके ससार से अन्धकार को मार भगाया। इधर पृथ्वीराज के पडाव पर कूच का नगाडा बजा और दम के दम में सब लोग बोल बाटे से दुरुस्त होकर बम बोलने को सन्नद्ध हो गए। पृथ्वीराज भी घोडे पर सवार होकर सब सेना के बीच में हो गया। गोइन्दराय गहलोत, नरसिहराय दाहिमा, चन्द सेन पुडीर, सारगराय सौलकी, पज्जूनराय कछवाहा, आजान बाहु लोहाना और लगरीराय, लक्खनसिह बघेला, कनकराय बडगुजर, और बार सिंह इतने सामन्त राजा के आगे थे और सब सेना पीछे। कविचन्द और पृथ्वीराज सब के बीच में थे। इस प्रकार व्यूहबद्ध होकर कुछ थोडी दूर चले होंगे कि पृथ्वीराज स्वय घोडे पर से उतर पडा और सब लोग मिल कर नरनाह काका कन्ह चहुआन के पास गए और उनसे कहा—"नरनाह एक कन्ह के बिना ये सब कौतुक होरहे है। क्या कहे कवि महाशय भूस में आग लगा कर अलग हो गए। अब जो कुछ बीतना है सो हम और आप पर बीतेगी। यह जैचन्द का दर्बार बडा जबर्दस्त है। यहा से बेदाग बच निकलना जरा टेढी खीर है, इस लिये अब यहा यही बात करनी उचित है जिसमें पति रहे। अस्तु हे क्षत्रीकुलकमल म्लेच्छ दलदलन कन्ह चहुआन आप अपनी आँख की पट्टी खोल डालिए क्योंकि जिस मर्याद रक्षा के लिये पट्टी बधी थी वह बात तो यहा है नहीं। आपकी पट्टी देख कर सभव है कि कन्नौज नगर के लोग सदिग्ध हो जाय। यह सुन कर कन्ह ने पट्टी खोल दी और कहा भाइयो अब सोच विचार करने से क्या होता है जो होनी होगी सो देखी जायगी।

कन्नौज नगर के बाहरी प्रान्त में वहीं पर एक देवी का मन्दिर था जिस पर मोतियों की झालर वाला सोने का छत्र ठहरा रहा था। द्वार पर एक प्रशस्त बलि स्थान था जहा पर सैकडों भैंसे रोज बलि दिए जाते थे। उस देवी के मन्दिर में नित्य सैकडों ब्राह्मण पूजन पाठ करते, सैकडे बजा करतीं और गायक गण ढोल और मान के सग स्तुति गान किया करते थे। उस देवी के मंदिर के सन्मुख जाकर कविचन्द ने हाथ जोड कर और नम्रता पूर्वक

मस्तक नवा कर कहा "सहस्त्रों सूर्य्य के समान प्रभामय साक्षात् अग्नि ज्वाला के समान जाज्वलायमान और उज्ज्वल शक्ति स्वरूप माते भगवती तू ही इस ससार की उत्पत्तिकारिणी है। इस जगत के यावत् जड चैतन्य पदार्थ, सातों पाताल, दसो लोकपाल, पृथ्वी, अप, तेज,वायु,आकाश, पाचों तत्व तेरी ही सत्ता से उत्पन्न हुए और स्थिर है। हे जगत की कल्याणधारिणी चंडी यह तेरा दास कविचन्द बार बार बन्दना करता हुआ तुझसे यही वर मागता है कि पृथ्वीराज की जीत रहे।" इस पर आकाश वाणी हुई ऐसाही होगा परन्तु नगर को दाहिने देते हुए प्रवेश करना। यह वर पाकर पुनः कविचन्द ने कहा "स्वर्ग और पाताल के सब देवताओं में अग्रगण्य पुस्तकधारिणी जगत की कल्याणकारिणी जोगमाया असार ससार से पार होने के लिये मुझे एक तेरा ही आसरा है। दुष्ट दैत्यों का दलन करने वाली क्षत्रियों की छाया के लिये छत्र स्वरूप माते सरस्वती इस समय चहुआन की रक्षा करने वाली एक मात्र तू ही है। लज्जा की मर्यादा और हवि एव हुतासन स्वरूप स्मरण मात्र से सिद्धि और जयदायिनी मै हाथ जोड़ कर बार बार यही विनय करता हू कि महाभारत के जुद्ध में जिस प्रकार पाडवों की रक्षा की थी उसी प्रकार इस समय सोमेससुत संभरी नाथ पृथ्वीराज की रक्षा कर। धन्य भगवती! युद्ध विद्या में निपुण जो क्षत्रिय तेरा स्मरण करके रण में जाता है वह सहस्रों शत्रुओं को नष्ट करके सदा जय पाता है।"

तत्पश्चात् कविचन्द बोला कि हे बीर वर सामन्तों महाराज पृथ्वीराज कन्नौज नगर में प्रवेश करने की इच्छा करते है सो चलिए दक्षिण प्रदक्षिणा देते हुए चलें। निदान सबने बहुत अच्छा कह कर इष्ट देवों का स्मरण करते हुए घोडों की बागें उठाई। प्रात' काल के समय राजा जैचन्द के महलों के नक्कारखाने पर बजती हुई नौबत भादों में बद्दल जैसी गरज रही थी। उसी के साथ में उच्च स्वर सहनाई और नफीरी पपीहा एवं कोयल से बोल बोल कर दिल्लीपति पृथ्वीराज के दिल को बेहाल करते थे। आश्चर्य है कि पृथ्वीराज और कन्ह चौहान शत्रु की श्री देख कर भी चुप रहे परन्तु इस समय नीति के अनुसार उन्हें यही करना उचित था। इसीसे दोनों जिस किसी तरह मनही मन मसूस कर रह जाते थे। कुछ थोड़ी दूर आगे जाकर पृथ्वीराज देखता क्या है कि श्यामा बाएँ बोल रही है और भरा हुआ कलस बाएँ जा रहा है। बाँई ओर मगरे पर बैठा हुआ कौआ टॉटॉं कर रहा है। दो बैल भी बाँई ओर लड रहे हैं और दहिनी ओर लुहार की भट्ठी जल रही है। यह सब अशुभ देख कर कविचन्द का रक्त सूख गया। परन्तु कुछ कडा जी करके बोला; धणी क्षमा! कुशल के लक्षण नहीं देख पडते, यह देखिए बिलारी भी बाएँ से दाएँ रास्ता काट गई। वाह आपही आप आग की सी चिनगारियों नजर आती है और असमय बद्दर गरज रहे है। यह सुनकर पृथ्वीराज ने हँस कर कहा "अब का सोचत बार बारा" चलो जो होगा सो देखा जायगा, नाई के बाल आप आगे आवेंगे।

पास ही राजा जैचन्द का एक बाग था जो कि बीस कोस के घेरे म विस्तृत था। उस बाग के चारों ओर प्रथम तो पक्का कोट था, तिसके बाद थूहड सेहुँडा आदि कोटदार वृक्षों की बारी थी इसके बाद नारंगी और दरमें के दरख्तों की कतारें सुशोभित थी। उसी के किनारे पास पास नाली कुड चावचे ताल पोखरे आदि सुविस्तृत बन बास थे। उस निर्मल जल में लाल लाल अनार दाने और नारगियों की झाई ऐसी भली मालूम देती थी मानों कलिकाल के क्रूर और कपटी लोगों के कलह से कुपित होकर नवों निद्धि आठों सिद्धि उसी जल में जा पड़ती हों। उस पार बेर और इस पार चपे के पेड़ों की कतार थी। अस्तु चपे की कलियों का समुदाय तो ऐसा मालूम होता था मानों कामदेव ने जल में दीपावली रची हो और

जल की लहरों में झकार मकार होती हुई झाँई ऐसी भासित होती थी मानो सुरीली तानका मारा कोई तड़प तड़प कर प्राण दे रहा हो। उस बाग में कहीं कहीं पर तो आकाश से बातें करते हुए बड़े बड़े वृक्ष खड़े फूल और फलो के भार से नम्र हो रहे थे और उन पर लिपटी हुई भाँति भाँति की लोनी लताएँ ऐसी सुन्दर लगती थी मानो निराव-लम्बियों को सबल के सहारे से उन्नत पथ पाने की शिक्षा दे रही हो और कहीं कहीं बीच बीच में रकम रकम की काट छाँट दार क्यारियों मे बरन बरन की फुलवारियाँ लगी हुई थीं। प्रातःकाल के रसालमंजरी के पास बैठी कूक करती हुई कोयल दिल को बेबस करती थी। एक ओर जंभीरी नीबू बिजौरे सेब आदि अनेक प्रकार के खट्टे मीठे फल लटक रहे थे और एक ओर सेवती गुलाब कुंद कदब मौलसिरी आदि सुगन्धित पुष्प फूल रहे थे और उन पर बैठे हुए रस पीते मस्त मन मकरन्द वृन्द आनन्द से गुजार करते हुए मौज से झूल रहे थे। कभी कभी मोर भी एकाधी धीमी आवाज कस देते थे जिससे मालूम देता था मानो मदन के दबाव में पड कर कोई विरहनी बाला काँख रही हो कहीं कहीं कुंज के कुंज कदली वृक्ष मन्द मन्द वायु से मस्त गयद से झुक रहे थे। कहीं मेघस्पर्शी ताड वृक्षों में लगे हुए फूल मानो बतला रहे थे कि इस असार संसार मे कुछ भी नहीं है, मनुष्य जन्म पाकर भी यदि कुछ कर न गुजरे तो जमीन के रहे न आसमान के। परन्तु पिंड खजूर ऐसे जान पड़ते थे जैसे आकाश से उतर कर नवग्रह गोष्ठी कर रहे हों—इत्यादि इत्यादि उस बगीचे का वर्णन कहां तक करें। कविचन्द ने पृथ्वीराज से कहा कि अशकुन मिटाने के लिये थोड़ी देर इस बाग में ठहर लीजिए फिर नगर में पैठेंगे। पृथ्वीराज ने कवि-चन्द की बात मान ली और सेना सहित बाग में जाकर थोड़ी देर के लिए विश्राम किया।

यहां से चलकर * पट्टनपुर के प्रकोट में पैठते ही कविचन्द ने कहा देखिए कुकर्म का फल ऐसा होता है। ये लोग जो कोपीन कसे हुए झूले से भटक रहे है अपना सब धन माल जुए में हार चुके है और ये लोग बात बात पर कसमें खाते है सो अपने पक्के जुआरी होने का परिचय दे रहे है। जिन्होने पूर्व्व जन्म में साधु सेवा तो की पर कपट से इस समय नायिकाओं के निकटवर्ती भेंडुए हुए है वे लोग जो वेश्याओं से स्नेह रखते है सो देखिए कौडी के तीन तीन होते फिर रहे है और जिनकी दासियों से आशनाई है वे बगुला भगत बने हुए उसकी आशा में सब काम धंधे छोड़े हुए बैठे है और कितनेक लोग तो ऐसे है कि इन नायिकाओं को देखकर जिनका मन हाथ से चला जाता है। ये देखिए अपनी अपनी अटारियों पर बैठी कुछ उँनीदी सी बसन फटकारती ऐंडाई लेती और जंभाती हुई वेश्याएं अपने अपने चीर सँभाल रही हैं और कोई कोई तानपूरा या सारंगी के सुर में मन्द मन्द सुन्दर रागिनी अलाप रही हैं। इनके स्वाभाविक हाव भाव और कटाक्ष देखकर ऐसा जान पड़ता है मानों आकाश में नृत्य करती हुई अप्सराएँ यहां पर श्रम दूर करने के लिए आय बैठी हों। *

वाह उस पट्टनपुर की शोभा का क्या कहना है जहा पर सैकड़ों करोडपति महाजन निवास करते थे। उन करोडपति महाजनों और राजाओं के महल भी जहा तहा सुशोभित थे। उन महा-

---

* प्राचीन समय में प्रायः महल हमेशा शहर से अलग हुआ करते थे परन्तु राज्य सेवा या कर्मचारी लोग भी उन्हीं महलों के आस पास रहते थे इसी से वहां पर एक भिन्न बस्ती हो जाती थी और उन बस्तियों का कुछ भिन्न नाम भी होजाता था। जैसे पृथ्वीराज के महल का स्थान निगमबोध कहलाता था उसी प्रकार जयचन्द का यहां इस स्थान पट्टनपुर नाम से प्रसिद्ध था। मुद्राराक्षस में भी महानन्द की राजमहल के स्थान का नाम कुसुमपुर दिया हुआ है।

* स्मरण रहे कि पहिले समय में [illegible] और [illegible] नाच पेड़े के लिए नगर की बाहरी प्रान्त में [illegible] थे। अस्तु यहां पर कवि ने पट्टनपुर के [illegible] [illegible] [illegible] जहां पर वेश्याओं का निवास स्थान होता है वहां पर [illegible] इस प्रकार के [illegible] पुरुषों का निवास होता है।

जनों और राजाओं के निवास स्थानों से आती हुई केसर, उसीर और मृगमद की सुगन्धि से सारा वायु मडल सुवासित हो रहा था। वहा की सजावट बनावट और सफाई देखकर शृगार रस के नेता घनश्याम तथा कामदेव का भी मोहित होना सम्भव था, कहीं पर गुणी गायकगण राग रागिनियों को गाते और उपग वीणा आदि बजाते थे और कहीं पर अग अनग के रग से भरी गरबीली गणिकाएँ कलकठ से मगल गीत गाती और हाव भाव बताती हुई नाना भाति की कलाए कर कर नृत्य करती थीं। इसी तरह और भी सब प्रकार महल प्रति महल आमोद प्रमोदमय चहल पहल की कहल सुन कर ऐसा मालूम होता था मानो यहा घर घर इन्द्रासन और इन्द्र विराजते है। ऐसे आनन्दमय नगर पट्टनपुर के प्रत्येक महल और हवेली पर सोने के कलसे चढ़े हुए थे और द्वारों पर मोतियों की झालरदार जड़ाऊ तोरण बँधी हुई थी। उज्ज्वल स्वर्ण की जगमगाहट के कारण समस्त पट्टनपुर में दिन रात दिन सो फूल हुआ देख पड़ता था।

आगे बाजार में जाइए तो कुछ औरही मजा था। कहीं तमोलियों की दूकानों पर छैल छबीले ज्वान खडे पान खा रहे थे। कहीं पर मालिनें बेला, चमेली, चपा, सेवती आदि सुगधित पुष्पों के अच्छे अच्छे लच्छेदार हार गूथ कर खड़े मोल पैसा देनेवालों के गले में पहिना रही थीं। कहीं पर दो चार यार दोस्त जुट कर बीणा पखावज आदि बजाते और मनमानी अलापचारी कर के मन की मौज उडाते थे। कहीं पर विद्वान पडित कथा पुराण कहते और कहीं पर दस पाच समझदार जुट कर ज्ञान चर्चा उच्चार किया करते थे। बजाज लोग अपनी अपनी दूकानों पर सजे ब बैठे बैठाए नाना भाति के बहु मोल और थुर मो पदार्थ क्रय विक्रय करते थे। एक तरफ आटे, दाल घी, चीनी, चावल, चना, चूरा आदि परचून अटव लगे थे। एक ओर सूती, ऊनी, रेशम पशमीनी, जरदोजी, जडाऊ, लदाऊ और मखमल आदि भाति भाति के बहुमूल्य और आबदा वस्त्रों की दूकाने थीं। एक ओर जौहरी बाजा में हीरा, मोती, माणिक, मूगा, पन्ना, पुखराज फीरोजा, गोमेदक, लहसुनिया आदि नाना प्रका के रत्नों से जटित सोने चादी के बहुमूल्य गहे बिक रहे थे। वे जडाऊ गहने ऐसे आबदा उज्ज्वल और प्रभामय थे कि उनकी औ सूरज की ज्योति एक हो रही थी। एक ओ जड़िया लोग डाक पर नग को टाक कर किनां के कुदन के ओच रहे थे और एक ओर सुना जन्त्री में से तार खींच रहे थे। जौहरी लोग तकिया से टिके बैठे ऐसे नाना भाति के गहे कटिया पर जोख कर महाजनों को देते थे औ उनसे ढेर की ढेर जमा गिना कर घर में धर लेते थे इस तरह के माल बजार की बहार लेता हुआ कविचन्द राजा तथा जैचन्द के महलों के दरवा जा पहुचा।

वहा देखते क्या है कि महलों में आने जा वाले मनुष्यो की भीड के मारे राई डाली भी नहीं जा सकती थी। सदर दरवाजे पर नौबत झड रही है। हाथियों के घण्टों के ठनठनाहट और घोड़ की हिनहिनाहटके कारण कान नहीं दिया जाता थ बडे बडे रजपूत राजा लोग मेघवत दीर्घ का हाथियों पर कोई बाहर से भीतर जा रहे है औ कोई भीतर से बाहर को आ रहे है। राजा जैचन्द का दुर्ग ऐसे मार पेंच का बना हुआ है कि साधारण अवस्था में उसमें छोटे बडे सब सरलता से आ जा सकते है। परन्तु मौके पर अच्छे अच्छे रण कुशल योद्धाओं का भी पास फटकना कठिन है। ऐसे सुगम दुर्गम दुर्ग की रक्षा के लिये जैचन्द के पास

(१) मनों दुग दिवस फूलिय सझ "अधिकतर बरसात में और प्राय: कभी कभी सध्या की चार बजे के पश्चात् जब पत्र पर इकबारगी पीलापन छा जाता है उसीको दिन फूलना कहते है।

अस्सी लाख * फौज थी तिस में से एक लाख आग्न्यास्त्र चलानेवाले गोलन्दाज और तुपकची, तीन लाख सवार और एक लाख पैदल सदा डेवढ़ी पर हाजिर रहते है और एक लाख राजपूत सदा दरबार में हाजिर रहते हे । एक ओर बरसात के बद्दलों के बद्दलों की तरह गर्जना करते हुए और शख बजाते हुए शंखध्वनि योद्धा अस्त्र शस्त्रों की साधना करते और परस्पर जोर आजमा रहे हैं । कोई कोई खम्भ ठोंक कर मलखभ पर उलटी सीधी कैंची लगाता है, कोई सौ सौ मन वजनी लोहे के गोले को उछाल उछाल कर कभी कलाई पर कभी भुजदड पर और कभी सीने पर लेता है। कोई बान विद्या की साधना में दत्तचित्त होकर अष्ट-धाती लोह खभ या मोटे मोटे तवों को बाण से बेध रहा है। कोई कोई पचास मन की जोड़ी भाजता है और कोई वडे बड़े वृक्षों मे लिपट कर जोर करते हुए अपनी सीना सहजोरी जना रहे हैं। कोई यों ही खड़े जोड के जोड परस्पर बॉह कर रहे है।

इन लोगों का यह बल पौरुष देख कर पृथ्वीराज का दिल दहल गया। वह बोला कविचन्द देखो तो यह क्या कौतुक है। इन लोगों के सिर से पैर तक सर्वत्र मोर पख सजे हुए हैं इन अवधूत तपस्वी पुरुषों के नेत्रों से सिंह का सा तेज प्रस्फुटित हो रहा है। और इनके भुजदण्ड साक्षात हाथी जैसी सुड है। मेरे जान जैचन्द की अस्सी लाख सेना का जो तो यही दस हजार योद्धा हैं। कविचन्द ताड गया कि राजा कुछ मनहार हुआ है अस्तु उसने सामन्तों को भी इस बात की सूचना और उत्कर्ष देते हुए कहा "इनकी तो कोई फिकर नहीं इन सब की मौत तो अत्ताताई के हाथ है पर फिर भी जैचन्द का दल बल प्रबल है। भिन्न भिन्न भाषाओं के बोलनेवाले देश देश के योद्धा यहां हाजिर हैं।" कविचन्द की ऐसी बात सुनकर कोई कोई सामन्त कहने लगे "कोई महाराज आज सबेरेही नौबत बजी। देखो जाय तो जैचन्द की फौज कैसी ?" तब कविचन्द बोला रे सामन्त कुमारो क्यों जान बूझ कर आग में हाथ डालते हो ? आटे का लोन भी तो नहीं हो, जैचन्द के द्वार पर तीन लाख योद्धा सदा सन्नद्ध रहते हैं। देखो काल पाकर कृष्ण भगवान जरासन्ध के साम्हने से भाग गए। राजा रामचन्द्र ने पतिव्रता सीता को त्याग दिया । पाचो पाडवों के देखते द्रौपदी का चीर खींचा गया और सब चुप रहे । समय पाकर सब करना पड़ता है । बुद्धिमानी की यही निशानी है कि जैसा देश वैसा भेष; तात्पर्य्य यह है कि इस समय सान दिखाने मे नहीं बनेगा चुप चाप काम साधो। यह सुनकर पृथ्वीराज और सब सामन्त चुप होगए।

इसी तरह चलते चलते कविचन्द राजा जैचन्द के द्वार पर जा पहुँचा । वहाँ देखता क्या है कि सब द्वारपालों का सरदार हेजम कुमार रघुवंशी एक ओर बडे शान से बैठा हुआ है और कई एक अच्छे अच्छे डील डौलदार सुन्दर युवा द्वारपाल हाथ में सोने की छडी लिए हुए खडे है। जो राजा रईस या महाजन लोग दर्बार में जाने की इच्छा से आते है उनको वे लोग उचित आसन देकर इत्तला करने जाते है और फिर दर्बार में पहुंचा आते हैं। कविचन्द को देखकर उन सब ने बडे नम्रता पूर्वक प्रणाम करके पूछा कहिए कहां से आना हुआ है, कहां जाइएगा और आप यहां किस अभिप्राय से आए हैं ? इस पर कविचन्द ने कहा कि मैं इस शिरोमणि दिल्लीपति महाराज के दर्बार का कवि हूँ और मेरा नाम कविचन्द है । द्वारपाल बोला सब

(*) कन्नौज के राजा जैचन्द के पास अस्सी लाख फौज का होना पढ़ कर आपको आश्चर्य होगा और आप इसे कवि का अत्युक्ति समझेंगे, परन्तु यह अस्सी लाख फौज कैसी थी सो सुनिए। उस समय जिस किसी [illegible] राजा के माहे में जितने राजपूत होते थे वे सब उन राजा के सैनिक समझे जाते थे। और यही बात [illegible] है और एक पजाब छोड़ कर सारे हिन्दुस्तान में जैचन्द की दुहाई फिरती थी। इस समय इंग्लैण्ड के [illegible] मिलाकर एक करोड़ का आद से अधिक [illegible] राजाओं का कुल स्थानिक फौज ४० वा ५० [illegible] से अधिक न होगा पर [illegible] फौज मे [illegible] है।

है मगन को किसी की संधि और विग्रह से क्या ! धन्य है महाराज जैचन्द को जिसके वचन मात्र से दुनिया का दरिद्र दूर होता है और जिसके प्रधान सब से दण्ड लेते हैं। ऐसे राजा जैचन्द के समान जोरावर न तो कोई हुआ है न होगा; जिसकी आन हिन्दू मुसलमान दोनों दीन मानते हैं। इस पर कविचन्द ने हँस कर कहा ठहरो तो कल्ह मालूम पड़ता है कि कौन कैसा सहज्जोर है।

द्वारपाल ने इस पर कुछ उत्तर न देकर उसे सादर आसन दिया और कहा कि आप जरा देर ठहरिए। मै अभी आपकी खबर करता हू परन्तु द्वारपाल का स्वामी हेजमकुमार बाला ऐसा तो नहीं है कि राजसूय यज्ञ देखने और यहाँ का भेद लेने दिल्ली से आए हुए आप कोई बसीठ हों। इस पर कविचन्द बोला कि कवि लोग बसीठी नहीं करते ऐसा करने से भेद खुलने पर हमारी सारी इज्जत मिट्टी में मिल जाय। यद्यपि हम मागते है पर पृथ्वीराज के दान से तृप्त होकर हमें धन पाने की भी विशेष लालसा नहीं है। हमारा तो सब राजाओं के दर्बार देखना ही एक नियम है इसी से आए हैं। तब हेजम कुमार बोला हा आप मगन है पर आपके साथी मगन नहीं है। इस पर कविचन्द ने मुस्करा दिया और हेजमकुमार ने कहा आप तो राज काज के नियम स्वयं जानते है घरीक बिरमिए मैं अभी जाकर आपकी जाहिरी करता हू।

कविचन्द से यह कहकर हेजम कुमार दर्बार में गया और जैचन्द के सिंहासन के सम्मुख हाथ जोड़ गरदन नीची करके खडा होगया। जैचन्द ने उसकी ओर दृष्टि की तो उसने सिर झुका कर बड़ी नम्रता से प्रणाम किया और विनीत भाव से कहा "महाराज दिल्ली के दर्बार का राज्य कवि कविचन्द वर्दाई श्रीमान के दर्शनों की अभिलाषा से आया है वह बड़ा अच्छा कवि जान पडता है उसकी बात बात मे रस भरा हुआ है उसकी बाणी समुद्र के समान है, जिसमें उक्ति रूपी अपार तरंगें उठती हैं, जो युक्ति रूपी सीमा से बाहर कदापि नहीं होतीं और उसका वचन चातुर्य्य ही उसके काव्य समुद्र का रत्न है। वह पुरुष जैसा गुणी है वैसाही मानो आडम्बर युक्त भी है। अस्तु उसे मै ड्योढ़ी पर रोक कर श्रीमान् के चरणों में सूचना देने आया हूं। जैसी आज्ञा हो ?

ईश्वर जिस जो पद या वैभव देता है उसीके अनुसार उसे बुद्धि और विचार विवेचना भी देता है। हेजमकुमार की बात सुनकर जैचन्द ने दसों[illegible] को बुलाकर आज्ञा दी कि वह जाकर कविचन्द [illegible] मिलें और देखें यदि वह दर्बार में आने योग्य [illegible] तो उसे यहा लावे नहीं तो वहीं का वहीं विदा क[illegible] दिया जावे। जैचन्द ने कहा मैंने चार प्रक[illegible] के कवि सुने हैं, ब्राह्मण, मुनि ब्रह्मचारी और ठ[illegible] इनमें मे तीन तो कवियों के ही भेद है परन्तु चौ[illegible] वे हैं जिन्हे काला अक्षर भैंस बराबर होता है, का[illegible] कला, ज्ञान, विज्ञान, अर्थ, अनर्थ, सरस, निरस आ[illegible] वे कुछ भी नहीं जानते। इधर उधर से चार छ[illegible] सीख लिए और कवि बन गए। यदि कविचन्द भ[illegible] कोई ऐसाही हो तो कुछ दे दिवा कर दूर करो प[illegible] यदि छहो भाषाएँ, नवो रस, ज्ञान विज्ञान और साङ्ग[illegible] पाङ्ग काव्य का जानने वाला कोई विद्वान औ[illegible] बुद्धिमान कवि हो तो खुशी से उसे मेरे पास लाओ[illegible] इस प्रकार जैचन्द की आज्ञा पाकर जब वे दसौं[illegible] और कविलोग कविचन्द के पास आए और उ[illegible] से बातें कीं तो उनका हजार जान से दिल खुश ह[illegible] गया। वे कविचन्द से क्या मिले मानो किसी भूखे को दूध भात का भोजन मिला।

जैचन्द के दसौंधी ने जो जो प्रश्न किए कवि चन्द ने उनका यथार्थ उत्तर दिया। प्रश्नोत्त[illegible] होते होते दसौंधी ने कहा कि हमारे महारा[illegible]

[१] एक नीच जाति के लोग। इस समय ये प[illegible] लिखे नहीं होते केवल गाने बजाने का रोजगार करते [illegible] परन्तु कोई कोई अब भी राजदर्बारों के आश्रित है [illegible] या तो रडा या गवैय लोगों की जाच परख का काम करते हैं और नाजिर कहलाते हैं। या सवारी शिकारी में कड़ख[illegible] गाते हैं और जॉनड़ कहलाते हैं।

श्रीधर का इष्ट रखते हैं कुछ इस विषय में भी कहिए। तब कविचन्द बोला कि श्रीमानों में श्रेष्ठ श्रीधर श्री सदा जिसके हाथों में रहती है वह श्रीधर और साक्षात् श्री का स्वामी श्रीपति वसुधा का भार हरने हारा द्रौपदी का चीर बढ़ाने वाला विमल विट्ठल भगवान श्रीकृष्णचन्द आनन्द कन्द सदा स्मरण करने योग्य है। उस भक्तभयहारी मुरारी ने गज को ग्राह से बचाया, राजा भान का मान रक्खा और विप्र को विप के बदले स्त्री दी। उसने महाभारत में अर्जुन का रथ हाँक कर अठारह अक्षौहिणी कौरव दल का नाश किया और इस पर जब अर्जुन को गर्व हुआ तो उसने समस्त भारत का भविष्य उसे अपने मुख में दिखा कर उसका गर्व दूर किया। वह अविनाशी गोलोकवासी भगवान सारी सृष्टि का हरता करता और धरता है। वह स्वयं प्रकृति पुरुष है और जग की जंजाल रूपी माया उसके चरणों की दासी है और उस भारत पुरुष के मुख में निवास करनेवाली भारती से इन छहो भाषाओं और नवो रसों की उत्पत्ति है। उस भारती भवानी के कमल स्वरूपी मुखारविन्द दाडिम के दानेवत रत्न, अचंचल चारु लोचन, सुकनी की सी नासिका, केसर के समान सूक्ष्म और सचक्कन कारे सटकारे केसों से गुथी सर्पणी सी वेणी और इन्दु के समान उज्ज्वल ललाट आदि छः अंगों से ये छः भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं।

कविचन्द के ऐसे वचन सुन कर कन्नौज के राज्यकवि और दसौंधी का चित्त प्रसन्न हो गया। उन्होंने कविचन्द को सादर उच्च आसन देकर बड़े प्रेम से पूछा आप दिल्ली छोड़ कर पृथ्वीराज के पास से क्यों चले आए? कहिए घर में सब कुशल तो है। इस पर कविचन्द ने उत्तर दिया कि आप इसकी क्या पूछते हैं पृथ्वी तल पर [illegible] विचरन और सज्जन दुर्जन की परि-[illegible] करना ही हमारा व्यवसाय है। जिस [illegible] को देखकर इन्द्र का गर्व गिरता है और जिसे एक पृथ्वीराज के सिवाय और सब क्षत्री नवते हैं मैं दिल्ली से उसीका दर्बार देखने आया हू और कुछ नहीं है। तब दसौंधी बोला सो सत्य है पर आप महाराज जैचन्द को किस प्रकार से प्रसन्न कर सकते हैं क्या आप कुछ अदृष्ट भी वर्णन कर सकते हैं? इस पर कवि कुछ उत्तर न देकर कुछ सोचता सा रह गया। तब दसौंधी ने फिर कहा कि कविचन्द यदि आप सरस्वती के सच्चे वर्दाई हैं तो पंगराज की सभा का कुछ अदृष्ट वर्णन कीजिए। यह सुनकर कविचन्द बोला अच्छा सुनिए मैं सभा का सविस्तर छन्दोबद्ध वर्णन करता हू आप लोग मेरी काव्य प्रणाली पर पूर्ण ध्यान रखिए। कविचन्द का ऐसा कथन सुनकर और दस पाच पंडित लोग कह उठे भाइ देखी सुनी बात पर सब कोई काव्य रचना करता है पर अदृष्ट प्रबन्ध पर आशु छन्द कथन करना कठिन काम है।

कविचन्द वर्दाई बोला कि कन्नौजराज महाराज जैचन्द एक बहुमूल्य रत्नजटित गंगाजमुनी सिंहासन पर विराजमान हैं, उनके शीश पर सुमेरु गिरि की शृंगों के समान जाज्वल्यमान उज्ज्वल सोने का क्रीट सुशोभित है। उनके सिंहासन के दाहने और बाएँ पार्श्व में देश देशान्तर के राजा लोग बैठे हैं जिनके ऊपर श्वेत रजत छत्र छहरा रहा है। सिंहासन के सम्मुख विद्वान पंडित और कवि लोगों का आसन है और उनके पीछे नर्तकी और गायकगण बैठे हुए हैं। राजा के ऐन पीछे चाँदी की डाँडी वाला छत्ता लिए हुए एक खवास खड़ा है और उसके अगल बगल दो चौर लिए खड़े हैं। दाहिनी बगल का मोरछल वाला है और तिसके पीछे अन्यान्य खास परिकर के लोग और खासबरदार लोग खड़े हैं। उन अद्वितीय तेजस्वी महाराज जैचन्द का मुख मण्डल साक्षात् बाल प्रभाकर के समान दमक रहा है, समस्त अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित [illegible] सब उनके हृदय के [illegible] है [illegible] एक [illegible] पूर्वदिगन्त [illegible]

कविचन्द बर्दाई को काव्य कला सम्बन्धी सब प्रकार की परीक्षाओं में उत्तीर्ण पाकर दसौंधी सहर्ष दर्बार में वापिस गया और मगल, बुध, गुरु शुक्र, शनि तथा अन्यान्य नक्षत्रों के बीच में चन्द्र के समान सुशोभित राजा जैचन्द से बोला " कविचन्द बर्दाई बडा ही विद्वान और अद्वितीय चतुर पुरुष है, वह छहों भाषा नवों रस और काव्य के अन्यान्य सब प्रकरणों में सागोपाग दक्ष है। वह त्रिकालदर्शी कवि दृष्ट अदृष्ट सब प्रकार की काव्य रचना करता है। तात्पर्य्य यह है कि वह श्रीमान् की सेवा में उपस्थित होने के योग्य है। कवि की ऐसी प्रसशा सुनकर जैचन्द ने उसे दर्बार में बुलाए जाने की आज्ञा दी। प्रतिहारी कविचन्द के पास पहुँचा ही था कि तब तक महल की एक दासी जल का घडा लिए हुए निकली। उसे देखते ही कवि बोला आह आश्चर्य है। चन्द की सहायता होने पर भी इस मुखचन्द पर भी ये दद फद, एक अरविन्द पर दो मलिन्द द्वन्द करें-मृग मृगबाहन से लरें और सरासर दिन को भी श्रृगार श्रोत के आर पार बैठे चक्रवाक चौका करें। सूर्य्य के प्रकाश में कमोदिनी प्रफुल्लित है और योगी हो कर भी काम क्रीड़ा में उन्मत्त है। इसी प्रकार से और भी उक्ति युक्ति मय बातें करते सबको हँसाते हुए कविचन्द मजयोरिया में जा पहुँचा। वहा से दर्बार साफ देख पड़ता था। कविचन्द देखता क्या है कि पूर्व्व दिशा में उदित अशुमाली भगवान के समान प्रतापवान जैचन्द अपने सब मुसाहिबों के बीच में सुमेरु सा अचल डटा बैठा है। उस यशस्वी महाराज जैचन्द के शीश पर आच्छादित रजत छत्र ऐसा सुशोभित होता था जैसे शरद के चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब या धर्म का समूह पर्व्वताकार होकर छहरा रहा हो तथा क्षीर निधि की आभा, मोतियों की प्रभा, कल्पतरु के पुष्प सहस्त्र दल वाले श्वेत कमल, हिमांचल ने जैचन्द की सुकीर्ति का सहायक होकर उसकी छाया करने को छत्र स्वरूप धारण किया हो।

महाराज जैचन्द की आज्ञा पाते ही हेजमकुमार ने कविचन्द को सिंहासन के सम्मुख जाने का आदेश किया और तदनुसार कवि ने दर्बार में जाते ही दोनों हाथ उठा कर राजा को आशीर्वाद दिया; आशीर्वाद देते हुए कहा " जैसे सब ग्रहों में सूर्य्य और चन्द्रमा, रत्नो में लाल, देवताओं में नारायण, विषयी लोगों में कामदेव, सब गुणों में शील, वर्णों में उक्ति, समस्त इन्द्रियों में चचल चित्त श्रेष्ट है उसी प्रकार पहुमी पर के भूपतियों मे श्रेष्ट महाराज दल पंगुरे को कविचन्द आशीर्वाद देता है।

तत्पश्चात् उसने कहा। इस दर्बार में विराजमान अन्यान्य राजा लोग मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि आदि ग्रहों के मंडल एव दिगपाल से सुशोभित होते है और उनके मध्य में महाराज जैचन्द दिग्पालों के स्वामी से प्रतीत होते है; अहा! इस राजसी आडंबर को देख कर इन्द्र का चकितचित्त होना सम्भव है। मै कहूं तो क्या कहूं। धन्य है! इस सभामंडप में विराजमान महाराज जैचन्द को देखकर ऐसा आभास होता है मानों परमात्मा ने पृथ्वी पर दूसरा इन्द्र सिरजा हो, जहाँ तहाँ रग बिरंगे गलीचों की आभा बरसात के बहुरंग बद्दरों को मात करती है। ये रेशमी और ऊनी रोएँ जो सुनहरी तार पटी से गुँथे हुए है ऐसे मालूम होते है मानों पृथ्वी सूर्य्य की किरणों के साथ साथ चल रही हो, बीच में जडी हुई नीलम और माणिक की नन्ही नन्हीं चुन्नी ऐसी भली मालूम होती है मानो समुद्र में रकम रकम की मछली पैर रही हों। महाराज के बाजुओं पर ढुरते हुए चौर ऐसे प्रतीत होते है मानो सूर्य्य की प्रखरता देख कर चन्द्रमा ने आन की हो और सीस पर जडाऊ छत्र तो साक्षात ऐसा सुशोभित होता है मानो नवग्रह परस्पर विरोध भाव छाड

---

(१) दरबारगृह और पौरि क बीच वाला एक ऐसा मुकाम जिसमें दरबार के शनि जाने वाले लोग किंचित विश्राम ले लेते है।

कर महाराज की छाया के लिये छत्राकार हो गए हैं और करोड़ो काम की कलाओं के समाज दिव्य द्युतिधारी महाराज की तो मैं क्या प्रसंशा करूं।

राजा जैचन्द कविचन्द की इस काव्यकला पर तब मन प्रसन्न हो गया। उसने कवि की प्रशसा करते हुए उसे उचित आसन पर बैठने की आज्ञा दी। यह देखकर और और दर्बारी लोग भी "वाह वाह के पुल बाँधने लगे" जैचन्द ने कहा कविचन्द मै तुमसे पृथ्वीराज के विषय में कुछ प्रश्न करना चाहता हूं। क्या तुम सत्य सत्य उत्तर दोगे। यह सुनकर कविचन्द बोला जिसके अचल दल बल के आतंक से फनीशपति सटपटाता है और कमठ की खोपड़ी खड़ खड़ सी है जिनके दल के चलने से आकाश में आच्छादित धूलि के कारण सूर्य्य प्रच्छन्न हो जाते है और जिसके डारे से दसों दिग्पाल वायुबाधित दीप शिखा से डगमगाते हैं उस नरश्रेष्ट राजा जैचन्द के साम्हने किसकी सामर्थ है जो असत्य कह सके। श्रीमान् जैसी बात होगी वैसी कहूगा।

तदनन्तर कवि राजा जैचन्द की विरदावली बखान करने लगा। उसने कहा जिसने अपन आसन के आगे पाए सर्वाङ्ग सन्नाह से सुसज्जित ठट के ठट शूर वीरों के बल से पृथ्वी और धर्म के बल से दसो दिशाओं के दिग्पालों को जीत लिया है, जिसने शाह के सहित अन्यान्य सब राजाओं की श्री हीन करके सब पर अपना आतक जमा लिया है, जिसने तिरहुत में अपना थाना बिठा दिया, जिसने तब समस्त दक्षिण देश अपना लिया, कर्ण डाहल को दो बेर बाँधा, सिद्ध चालुक्य को कई बार परास्त किया, तिलगाना और गोलकुंडा पर अपना निशान रोप दिया, गुड जीरा को बांध कर छोड दिया, बैरागर को ले लिया और शाह जिसका मित्र होकर अपने भाई निसुरत्त को जिसके दरबार में दूत बनाकर रखता है ऐसे विजैपाल के पुत्र जैचन्द के प्रकोप से सारा जहान थर थर कापता है पर केवल पृथ्वीराज ही एक ऐसा है कि जो जैचन्द को भी कुछ नहीं समझता। कवि के मुँह से भरी सभा में शत्रु की ऐसी प्रसशा सुनकर जैचन्द क्रोध के मारे लाल हो गया। वह छूटते ही बोला भला जिसे ईश्वर ने ही मँगना बनाया उसका दरिद्र जाय तो क्योकर जाय। राजा या धनी लोग दान द्वारा सदा धन रत्न की वर्षा किया करते है परन्तु जिनके सिर पर दरिद्र का छत्र आच्छादित होता है उन पर एक भी बूँद नही पड़ती।

राजा जैचन्द ने कविचन्द पर ताना मारते हुए कहा, मुँह का दरिद्री घास खाने वाला कृशतन पशु जगली राव (भिल्ल) की शरण में रह कर भी दुबला क्यों है * तब कविचन्द बोला कि उस जंगली राव पृथ्वीराज चौहान ने घोड़े पर चढ़कर दूर दूर के देशों में अपनी दुहाई फेर दी। निबल तो उसके आश्रित हुआ है पर जो लोग अपने को सबल समझते थे वे भी उसके आतक से डर कर काप गए। उनमें से बहुतेरे तो वृक्षों के मूल में मूड डाल कर रह गए और बहुतेरे दात मे तिनका दाब कर उसके आगे आए। इस तरह से राजा पृथ्वीराज के शत्रुओं ने सब घास उजाड़ दी अब बरद क्या खा करके हृष्ट रहे। यह सुन कर जैचन्द बोला कि मोती न पाने से न्याय सम्पन्न हस दुर्बल होता है। गजराज की गर्दन का रक्त न पाने से सिंह दुबला होता है, नाद

(१) कहावत भी है कि राजा के सिर पर सदा छत्र की छाया रहती है।

(२) "अर नीर तिलंगा गोलकुंड"

* मुंह दारिद्र ग्रह तुच्छ तन [illegible] राव [illegible]।

[illegible] पशु [illegible], क्यों [illegible] बरद॥

इस दोहा का अर्थ है बरद = बरदाई और बैल दोनों पर लगता है। मुँह दरिद्र = [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

के कारण बंधन में पड़ा हुआ मृग दुबला होता है छैला लोग मन की मौज न पाने से और स्त्री अपने यार के बिना दुबली होती हैं परन्तु बैल के दुबले होने के जो कारण होते है उनमें से इस समय एक भी उपस्थित नहीं हैं। देखो न तो आषाढ़ का महीना है जिसमें सूखी घास और भूसा खाने को मिले और रात दिन जुताई पड़ती हो, न रात दिन पुरवट (चरखी) खीचनी पडती है, न किसी गमार के पाले पडा हैं कि वह मनमाना बोझ लाद कर नाथ खींचता हो और ऊपर से डडे जमाता हो, न रहट में चलाया जाता है, न रथ में जोत कर अरई लगा दी जाती है तब कहो वरद फिर भी दुबला क्यो है। इस पर कविचन्द ने प्रत्युत्तर दिया कि महाराज सुनिए जिसके स्वामी के यहाँ सहस्रों हाथी घोडे उपस्थित हों वह रथ में कधा क्यों दें, क्यों पुरवट खींचे, क्यों रहट में जुते और पीठ पर भार ढोवे। बात यह है कि पृथ्वीराज के शत्रुओं पर सदा शोक की घटा छाई रहती हैं अस्तु अपने स्वामी के सुयश बखान रूपी कुसिया से उसका हृदयरूपी क्षेत्र जोतने में रात दिन लगा रहता है उधर वे लोग सब खर खा लेते हैं इसी से वरद दुबला है। देखिए पहिले नागोर में शहाबुद्दीन बाँधा गया। फिर साभत्ती में भीमदेव सौलकी परास्त किय गया, फिर मेवाती मुगलों का मुँह मोड़ा गया- इसी प्रकार और भी जानिए। बस इन सब विजित शत्रुओं ने दात में तिनके दाब दाब सब घास चौपट कर दी अब भी वरद दुबला न हो तो क्या हो।

कविचन्द का ऐसा कथन सुनते ही जैचन्द के सिर से पैर तक आग लग गई। उसके ललाट में त्रिवली पड़ गई भौंहे चढ़ गईं आखें ईंगुर सी लाल हो गई और होठ फड़फडाने लगे। उसने दाँत पीसते हुए छाती पर हाथ रख कर एक ठढी सांस ली और शत्रु की प्रशंसा करने वाले कविचन्द की तरफ शेर की तरह देखते हुए एक एडाई लेकर कहा 'हां यदि पृथ्वीराज मेरे साम्हने आवे तो बताऊ।' जैचन्द की यह दशा देख कर कविचन्द बोला त्रिलोकी के मालिक कैलाशपति शिव बैल पर सवार हैं उनके गले में सर्पों का हार है और सर्प के शिर पर यह पृथ्वी है जिस पर सातों समुद्र और सुमेरु शिखर स्थित है। सप्तपुरी और ब्रह्म पुरुष भी उसी पृथ्वी पर हैं अतः यह मेरे अहोभाग्य हैं कि महाराज दल पगुर ने मुझे वरद (बैल) की उपाधि प्रदान की है। कवि की यह उक्ति सुनते ही जैचन्द का गुस्सा ठढा पड़ गया उसने कहा वाह कविचन्द बहुत अच्छे। क्या करूं पृथ्वीराज मुझे मिलते ही नहीं। उनके पिता मेरे पिता के मामा * होते थे उन दोनों में परस्पर जैसी चाहिए वैसी पटती रही। जब सोमेश्वर जी का दिल्ली में व्याह हुआ है तब उन्होंने बहुत सा धन रत्न दिया था। तब से फिर अब तक कुछ नहीं लिया दिया। तुम जानते हो कि ज्यों ज्यों दिन बीतते जाते हैं त्यों त्यों दान का ऋण अधिक होता जाना है सो हम और कुछ नहीं चाहते जैसे और सब राजा लोग इस दर्बार में आते हैं वैसे वे भी आवें उनका घर है।

यह सुन कर कविचन्द बोला कि आपका जो हुक्म होता है सो ठीक है पर वे अपनी कैसी करते ही जाते हैं। एक बार की बात है जब कि आप दक्षिण देश को विजय करने गए थे तो इधर कन्नौज राज्य को सूना जान कर गजनी का यवन बादशाह चढ़ आया परन्तु सामतों के स्वामी सभरीनाथ ने उसे इस तरफ बढ़ने भी न दिया; वहीं आगे बढ़ कर सरहद पर जा लिया और मार कर उलटा भगा दिया। और यह बात भी है कि चौहान आपके दर्बार में कभी नहीं आए हैं। आपके बडे रघुवस राय ने जब यज्ञ किया था तब भी मानिक राव जी न आए थे अब आपके यज्ञ में

* बालुकाराय समय के २० वें छन्द से भी यही बात पक्की होती है कि पृथ्वीराज जैचन्द के मामेरे कुल में थे। यथा.—धुक्कल दून गरभथ काज, मातुलह वस पृथ्वीराज राज।

राजा पृथ्वीराज आवें सो क्यों कर आवें। इस पर जैचन्द बोला कि मुझको खबर नहीं है कि गजनी शाह कब चढ आया था और चौहानो ने कब मेरा राज्य बचाया था। इस बात को सविस्तर कहो।

तब कविचन्द बोला कि संवत ३४ की बात है जब कि उधर आपने पूर्व्व में समुद्र के किनारे तक दिग्विजय करके दक्षिण देश पर चढ़ाई की तब इधर गजनी पति शहाबुद्दीन ने कन्नौज राज्य को सूना समझ कर अपने मीर मुसाहबों से सलाह की कि इस समय चढाई करके यदि कन्नौज पर दखल कर लिया जाय तो अच्छा हो; अव्वल तो असंख्य धन धान्य हाथ लगे दूसरे सारे हिन्दुस्तान पर अपना कब्जा हो जाय। निदान तत्तारखा निमुरत्तखा और मारुफखा आदि मुसाहबों ने उसकी आज्ञा सिरोधार्य्य करके तीन लाख फौज सजी। जिस समय आषाढ़ के मेघों की भाँति धौसा घमकाती हुई शाह की चतुरंगिनी सेना हिन्दुस्तान की तरफ चली तो उसके आतंक से सब हिन्दू शासक दबक कर रह गए। शाही सेना के आगे आग चौकी चलती थी और उसके पीछे सेना सहित शाह स्वयं चला आता था अस्तु जब शाही चौकी कुदनपुर के पास पहुँची तो वहा के बघेल सरदार ने हथियार पकडे और शाही चौकी के सिपाहियों को मार कर भगा दिया। जब शहाबुद्दीन को यह समाचार मिला तो उधर से तत्तारखा एक लाख सेना लेकर कुदनपुर पर चढ़ धाया। इधर राय रनसिंघ बघेला भी अपनी सेना सहित मैदान में आ डटा। हिन्दू मुसलमान दोनों दलों की परस्पर खूब लडाई हुई प्रातः काल से लोहा बजते बजते जब मध्यान्ह काल होने को हुआ तो बघेला सरदार और तत्तारखा की परस्पर बरनी ठन गई। दोनों [illegible] अपनी अपनी तलवारें निकाल कर एक दूसरे पर अपनी अपनी दाव घात तक कर वार करने लगे। इतने में शहाबुद्दीन ने एक बाण ऐसा मारा कि राय रयनसिंह के कलेजे पार हो गया। इस [illegible] तो उसी दम धराशाई हुआ पर तत्तारखा की खोपडी पर भी एक ऐसा हाथ मार कर मरा कि जिससे वह भी खेत में खडा न रह सका।

राय रयनसिंह के मरने पर राजपूत सेना तो फिर बेदूलह की बरात ठहरी कब तक थम्हे। निदान मुसल्मानी सेना ने कुदनपुर के किले पर अपना थाना जमा दिया और वहा से गाव के गाव लूटते पाटते और प्रजा को उजाड़ते हुए मुसल्मानी लश्कर आगे बढा। निदान जब वह मुसल्मानी लश्कर आल्हन सागर तक आ गया तब पृथ्वीराज को समाचार मिला। उस समय राजा पृथ्वीरज नागौर में पडे हुए थे। उक्त समाचार पाकर काका कन्ह, चहुआन राय, बीरसिंह, लक्खन बघेला, लोहाना आजानबाह, चन्द पुंडीर, रामराय बड़ गुज्जर, विझराज चालुक और हाहुलीराय हम्मीर आदि सामन्तों को बुलाकर कहा कि देखो यह म्लेच्छ कन्नौज पर चढ़ा जाता है। यदि इसने कन्नौज राज्य पर हाथ डाल पाया तो कोई क्या कहेगा कि हिन्दू राजाओं में कोई भी ऐसा न निकला जो अपनी मर्य्यादा की रक्षा करता इस लिये मेरी इच्छा है कि शहाबुद्दीन को इधर बढ़ने ही न देना चाहिए। राजा की ऐसी मर्जी पाकर रणोन्मत्त सामन्तों ने उसी समय अपनी अपनी सेना तय्यार की और राजा के साथ हो लिए, उक्त सामन्तों को साथ लेकर पृथ्वीराज तो चल पड़े और मुझे कैमास और चामण्डराय को बुलाने के लिये भट्टू पुर को भेजा। पृथ्वीराज ने दिन दूनी रात चौगुनी मंजिल मारते हुए मारुगंड में डेरा डाला। वहा खबर मिली कि शाही सेना वहा से सात योजन यानी अट्ठाइस कोस के फासिले पर है वहा से आगे चलने की तय्यारी हो ही रही थी कि तब तक चामण्डराय भी आ पहुचा और चलती मिलती में राजा के साथ हो लिया। मारुंड से एक पड़ाव आगे चल कर [illegible] के [illegible] में डेरे पड़े। यहां पर पृथ्वीराज ने [illegible] सामन्तों से पूछा कि शाही सेना [illegible] है और हम लोग [illegible] हैं। [illegible]

ठहरा इस से रात को पसर की जाय तब बात ठीक उतरेगी।

चामण्डराय की बात सब ने स्वीकार की और तदनुसार सात घड़ी दिन रहते से बम बोली गई। चलते चलते कोई पहर रात्रि गई होगी कि शाही सेना की वही अग्रगामिनी चौकी आवड में पड़ गई और राजपूत सेना ने चढ़ी सवारी उसी पर पसर कर दी। वहा क्या था दस पाच सौ सिपाही थे सो मार काट डाले गए उन में से दस पांच जो बच भागे उन्होंने तत्तारखा को खबर की। अस्तु जब तक राजपूत सेना नजदीक पहुंचे कि तब तक मुसल्मानी सेना सब प्रकार से सचेत और सन्नद्ध हो रही परन्तु रात का मौका ठहरा और राजपूतों को उस मैदान के सब घाट घाट और मौके मालूम थे इस लिये उन्होंने ऐसे मोरचे बाँध कर धावा किया कि हजार हाथ पांव मारने पर भी मुसल्मानी सेना उनसे पेश न पासकी। दोनों दल के सिपाही अपने अपने तेग, तलवार, कटार, छुरी, बगुरदा, पेशकब्ज, बाने, सेल सॉग आदि शस्त्र निकाल कर एक दूसरे से जूझ पडे। घड़ी भर में लोहू की नदी बह निकली और जहाँ तहाँ लोथों के अटम्ब लग गए। सौभाग्य वश उसी समय कुछ चन्द्रोदय हो गया जिससे चामण्डराय ने शहाबुद्दीन के हाथी को नजर में दे लिया और मार काट करते हुए उसके पास तक पहुच कर उसने एक ऐसी सेती चलाई कि हाथी के कलेजे में तिहाई डट गई, बस हाथी तो हौदा भाड़ कर भाग गया और शाह वहीं पर गिर पडा। उसका गिरना हुआ कि चामण्डराय ने उसके गले में कमान जा डाली और उसका बाजू जा पकड़ा।

इस प्रकार से तीन लाख मुसल्मानी लश्कर का मुँह मोड़ कर और शहाबुद्दीन को बन्दी बनाकर राजा पृथ्वीराज ने उस जगह से पाच कोस पर दरपुर में मुकाम किया। और दो दिन बाद आठ हजार स्वर्ण मुद्रा दण्ड में लेकर शाह को सादर गजनी को विदा किया। इस युद्ध में आठ हजार मुसल्मान मारे गए थे पर राजपूतसेना की थोड़ी कुछ थोडी सी क्षति हुई थी।

यह सुनते ही राजा जैचन्द ने हँस कर पूछा कि उस पृथ्वीराज के पास ऐसी कितनी सेना है और उसमें कितने सूरमा है जिनका तू ऐसा बखान करता है। इस पर कविचन्द बोला कि महाराज मैं उन सभरी नरेश के दल बल का क्या बखान करूं कि उनके दरबार में कितने छत्रधारी हैं। उनके परिकर में कितने हाथी घोडे हैं; अथवा उनकी सेना में कितने सूरमा हैं और वे कैसे कैसे बलवान और पराक्रमी हैं। बस इसीमें समझ लीजिए कि तमहर की तरह तेजस्वी पृथ्वीराज जिस तरफ को आँख उठाकर देख देता है उस तरफ तिमिर की तरह उसके शत्रुओं का पता नहीं पडता। प्रथम तो उस के दरबार में ऐसे ऐसे सामन्त है कि जिनका नाम जहान में जाहिर हो रहा है, दूसरे वे स्वयं ऐसे बलवान है कि जब हाथी पर तलवार का हाथ करते है तो वह ककरी की तरह कट कर दो हो जाता है और हाथों से हाथी के खीसे मूली की तरह उखाड लेते है। अधिक कहां तक कहू जब तक कोई शत्रु उन पर एक हाथ उठावे कि तब तक वे पचास हाथ मार जाते है। क्या कहूं महाराज पृथ्वीराज सरीखा दुनियां में कोई दूसरा है ही नहीं। अब पटतर दू तो किसकी दूं और आपको बताऊं कि पृथ्वीराज ऐसा है। जैचन्द बोला कि छत्रधारी के लक्षणों संयुक्त यहां इतने मुकुटबन्ध राजा बैठे है किसी की सिन्धी मिलती हो तो कहो। कविचन्द बोला कि बत्तीसों लक्षण संयुक्त छत्तीस वर्ष की वयवाला राजा पृथ्वीराज ऐसा तेजस्वी है कि बड़े बडे ताप से प्रतापी राजाओं पर वह रवि होकर लगता है। कोई उसे पृथ्वी देते है कोई धन देते है कोई उसकी सेवा में तन और मन देते हैं कोई इधर उधर भाग निकलते है और कोई छाँह भी नहीं दाबते। महाराज वे पृथ्वीराज इस उन

(१) पृथ्वीराज कविचन्द के सेवक के वेष में था

हार के हैं। वे राजा पृथ्वीराज ऐसे है जैसे गोकुल में कन्ह, पार्थ के पुत्र अभिमन्यु, लंका में रावण और अयोध्या में दशरथ सुत रामचन्द्र हो गए है।

कविचन्द का हाव भाव देखकर जैचन्द के हृदय में दमारि सी लग गई। उसके कान, नाक, मुँह और आँखें और गाल लाल होगए। उसने चवडी बॉध कर गेंदरी मीजते हुए कहा ऐसा राजपूत का बेटा कौन है? कविचद बहुत चपचप चावे न चलाजा नहीं तो यहीं खडा खुदवाकर गड्वा दूंगा। जैचन्द को इस तरह गुस्से में देखकर पृथ्वीराज का शरीर भी गुस्से से भर गया। उसने अपने को बहुत दबाया और आँखों की रंगत बदल ही गई। भला एक गायरे पर दो सिंह या एक हथिनी के साथ दो हाथी भी कहीं रह सकते है। ऐसे रग ढग देखकर जैचन्द के जी मे कुछ सदेह हो गया पर उसने बात टालकर कहा "कविचन्द तुमनें पृथ्वीराज की सुकीर्ति तो खूब बखानी और कोई अच्छे अच्छे कवित्त कहो।

गभीर हृदय और बुद्धिमान राजा जैचन्द मन ही मन विचारने लगा कि पृथ्वीराज ऐसा प्रतापी पुरुष कविचद की छग्गर लेकर मेरे दरबार में क्यों आने लगा। खैर जो हो अभी विना समझे अधीर न होना चाहिए। यह सोच कर उसने कहा कविचद देखो कहा सुनी में वृथा बात बढ़ जाती है कुछ और की और हा जाती है, यदि पृथ्वीराज मेरे साम्हने आवे तो इसी समय हम दोनों का फैसला हो जाय पर न जाने क्यों वे मुझ से मिलते ही नहीं। इस पर कविचन्द ने कहा कि महाराज पृथ्वीराज कोई [illegible] ऐसे पुरुष नहीं है। वे वडे नीतज्ञ है, जैसी आप [illegible] अपनी बात की वान पडी है तैसी उन्हें भी अपनी बात की वान है। राजा पृथ्वीराज चक्रवर्ती राजा अनंगपाल के निज दोहित्र है; उन्होंने जब अपने हाथों तिलक काढ़ कर दिल्ली राज्य दे दिया तब इसमें किसी का क्या उन्होंने वह राज्य किसी छल छिद्र से नहीं पाया है जो किसी से दब कर रहें। तब जैचन्द बोला कि सुनो भाई, मैं पृथ्वीराज से दिल्ली के राज्य पर से नहीं चिढ़ा हुआ हूं यदि ऐसा होता तो जब अनगपाल शहाबुद्दीन की सहायता लेकर दिल्ली पर चढ़ आए थे तब मैं मुसल्मानी सेना का मोरचा मार कर पृथ्वीराज का ही पक्ष क्यों करता। मुझे तो गुस्सा इस बात पर है कि उन्होंने ठाले बैठे उपद्रव करके मेरा यज्ञ विगाड़ दिया इस पर भी मैने उन्हें हिन्दू जानकर बचा दिया नहीं तो मजा चखा देता कि जैचन्द से बैर बिसाहना ऐसा होता है। इस पर कविचन्द बोला महाराज भला ऐसा कौन है जो जानबूझ कर किसी के छल में फॅस जावे, पितृद्रोही पर भी दया करे, सांप के मुँह में उँगली डाले और अपने पैर पर आप कुल्हाड़ी मारे। अपने बस भर सब उपाय दाब करने पर भी कोई चारा नहीं चलता तब कहने लगते हैं कि हमने तो बचा दिया। कहावत है कि नामर्दी तो खुदा ने दी पर मार मार वर्राना ही है।

कविचन्द से राजा जैचन्द ने हँस कर कहा कवि तुम बड़े जानकार पुरुष हो, क्योंकि तुमने बहुत से दर्बार देखे हैं कहो तो इस समय अपनी समयानुसार राजा अपनी रीति के लिये कौन सा मर्त्र श्रेष्ठ माना जा सकता है। देखो कविचन्द संसार में जो कुछ है सो नीति ही है। जो लोग यह समझते है कि नीति का केवल राज्य कार्य्य से सम्बन्ध है वे बड़ी भारी भूल करते है। सामाजिक या धार्मिक व्यवहारों का ढंग भी इसी नीति पर बना हुआ है। छोटे से लेकर बड़े तक सब काम इसी नीति के द्वारा पूरे पड़ते है। पर हां इतनी [illegible] है कि जो राजा नीति विहीन होकर राज्य करता है [illegible] कुल [illegible] जाता है। इस पर कविचन्द ने उत्तर दिया कि,

---

[illegible] हुए पीछे खड़े थे। तब क्या अब भी कवि लोग [illegible] कहते समय हाथ उठाकर [illegible] का भाव [illegible] है परन्तु कविचन्द ने अपने पीछे खड़े पृथ्वीराज [illegible] हाथ उठाकर बतलाया था कि 'पृथ्वीराज [illegible]'। 'दानहार' शब्द का सम्बन्ध और देखना [illegible] इससे स्पष्ट ध्वनि निकलती है कि स्वयं [illegible] पृथ्वीराज।

धम्मावतार, यह भी तो बतलाइए कि इस कलिकाल में कहीं राजसूययज्ञ होता है; अब की क्या पहिले भी देखिए, राजा बलि ने यज्ञ किया सो बाँधे गए। चन्द्रमा ने कलंक काटने के लिये यज्ञ किया था सो उसका सारा शरीर जर्जर हुआ। राजा नघु ने यज्ञ किया था सो नर्क में पडे। हा सीता के त्याग से दुखी होकर जब विचारवान रामचन्द्र ने यज्ञ किया था तब कुबेर स्वयं उनका सहायक था, द्वापर में पाडवों ने यज्ञ किया था सो उनकी सहायता पर श्रीकृष्ण भगवान थे, इस कलियुग में राजसूययज्ञ कौन कर सकता है। सतयुग में राजा कवल के पुत्र ने यज्ञ किया था सो इतनी लुटाई हुई थी कि स्वर्ण का दान लेते लेते ब्राह्मणों के हाथ थक गए थे। उसके पश्चात् राजा मरुत ने यज्ञ किया था जिसका दान पाकर मगनों ने जो फेक दिया था उससे सोने का एक पहाड़ बन गया था। उसके पश्चात् राजा ऐल ने यज्ञ किया था जिसने इतना साकिल्ल होम किया था कि अग्नि उसको भस्म भी न कर सकी। यह सुनकर जैचन्द बोला कि किसी की समसरी जोडने से क्या जिसकी जितनी श्रद्धा होती है सो करता है अपनी अपनी अवस्था के अनुसार सभी अपनी सुकीर्ति स्थापित करके अपना नाम चलाना चाहते है।

इस पर कविचन्द बोला महाराज यही तो बात है। यही बात की बात तो पृथ्वीराज के गले पड़ गई है। महाराज राजनीति हँसी खेल नहीं है इस में भ्रगी का कीट होकर जन्म निवाह ले जाना बडा कठिन काम है। परन्तु यह काम मत्री का है कि दोनों व्रत पाले अर्थात स्वामी का रस भी रहे और जो कार्य्य हो उचित हो। देखिए, यह राजनीति न जानने का ही कारण है कि पृथ्वीराज की जो स्वर्ण प्रतिमा स्थापित की गई "सो जैसा बोया वैसा लुना" यह सुनतेही जैचन्द की चोटी से भार निकल गई। उसके कान, नाक, आँख, मुँह, गाल मंजीठ एव कुसुम की तरह लाल होगए। वह मन ही मन सोचने लगा क्या करू क्या न करू बडे विकट कलहतर कवि से काम पड़ा है"।

कुछ ठहर कर जैचन्द ने कहा कविचन्द तुम्हारे लिये जो कन्याए रनिवास से पान ला रही हैं उनका कुछ वर्णन करो। यह सुनकर कविचन्द बोला महाराज आपके रनिवास में जहा परिन्दा पर नहीं मार सकता वहा का हाल मैं कैसे कह सकता हू पर हा जो मरजी होती है तो कुछ थोडा बहुत कहता हू सुनिए। आपके महल की दासिया वे सब पोडस वर्षीया बालाए ऐसी सुन्दर हैं जैसे सुरपति की रानी सची की सहचरी हों। उन सुकुमारी स्त्रियों के शरीर से सदा केसर की सी सुगन्धि आती है। उनकी एड़ी और पैरों के तलुवे ऐसे लाल हैं जैसे पूनों का चन्द्रमा हो। उनके नखों से उज्ज्वल दर्पण की सी आभा झलकती है और उनके पैर के नूपुर और पाजेब का छन छन शब्द क्या होता है मानों हंस के बच्चे कल्लोल में बोलते हैं। उनकी सचक्कन पिंडलियों से ऐसी सुरखी झलकती है जैसे खोल काल कर ईंगुर भरा हो। उनके ताल वृक्ष की पीड़ से सुढार जंघा, मदन के दल से नितम्ब, अजबही काट छांट के बने हैं। उनकी मुट्ठी भर पतली सी कमर देख यह उपमा आती है जैसे धर्म ने काम और लोभ को कपट कर उनपर अपनी धजा जमाई हो। उनके उदर पर सूक्ष्म रोम राजि और पीठ पर बड़ी बेनी देखकर यह भाव मन में आता है मानो उनके हृदय दुर्ग पर चढ़ने के लिये ये कामदेव ने दोहरे कमंद लगाए हों। उनके सीने पर नारंगी से युग योवन उठ आए हैं जिनके भार से पतली सी कमर तीन तीन बल खाती है। उनके कंबु कठ में जडाऊ चौकी और पोत का छूटा दोनों एकत्र ऐसे सुशोभित होते हैं जैसे राहु और चन्द्रमा दोनों परस्पर का विरोध भाव तज यहा मित्र होगए हों। उनकी ठोढ़ी पर का तिल कमल पर मलिन्द सा कल्लोलता मालूम होता है। उनके सचक्कन कपोल कुंदकली सी दन्तपंक्ति दीप शिखा एव काममञ्जरी सी नासिका और कमान सी वक्र भौंहें देखकर दिल बेदिल होता है। उनके दुतिहार जडाऊ, नरकुलों पर लटकती

हुई काली काली घुँघराली लटें तो अजबही छटा छाती हैं। उनके मधुर मधुर सुरीले बोल तो कोकिला के गले को भी वे मोल लेते है इत्यादि कहाँ तक कहूं। उनका सौन्दर्य्य यदि रच रच कर वर्णन कर चलूं तो इस प्रपंच में सारी जिन्दगी चली जाय।

जब तक दस पाच सहेलियों के साथ हिली मिली कर्नाटी पानों की थाली लिए हुए दर्बार में आ उपस्थित हुई और ज्योंही उसने पृथ्वीराज को देखा कि झट से अपने सीस पर अचलपट डालकर घूँघट घालने लगी। यह देखकर सारी सभा में सन्नाटा छा गया। सबके मन में सन्देह हो गया कि कविचन्द के साथियों में कहीं पृथ्वीराज है अवश्य, सारी सभा में इस बात की सुग बुग होने लगी, और सब लोग परस्पर काना फूसी करने लगे कोई कहता यही खवास पृथ्वीराज है कोई कहता कि नहीं उसके साथियों में से कोई है। दीवान रयसिंह और कढ़िढया राय तो स्पष्ट कह उठे कि घर आए शत्रु को छोडना क्यों; पकडना यारो जाने न पावे, परन्तु जैचन्द ने कहा ठहरो। जल्दी न करो देखो जाता कहा है। इतने में कविचन्द ने कर्नाटी को हाथ के इशारे से समझा कर कहा। वहा से कैमास के प्राण लेकर यहा आई अब क्या राजा को भी फँसावेगी। कवि का इशारा समझ कर कर्नाटी ने झग हाथ झट से सिर पर का पट उतार लिया जिसे देखकर जैचन्द सहित सारी सभा के लोग भौचक से रह गए; उस समय सभा में नवों रस सन्देह विराजमान थे, नटखट कर्नाटी के घूँघट पट की लौट पलट में पडकर अत्यन्त आश्चर्य्यन्वित हो जैचन्द अद्भुत रस में रँगा हुआ था और पृथ्वीराज स्वयं हास्य रस में पगा हुआ था। दासी के हृदय पर करुणा रस ने अधिकार किया। इस ऐंचा तानी ने कविचन्द को रौद्र रस की मूर्ति बना दिया। जो लोग पृथ्वीराज को पकडने पर उद्यत होने पर दबा दिए गए थे उनके मुख पर मुर्दनी छा जाने से बीभत्स का आभास होता था और दरबार में उपस्थित वीर सामन्त तो वीर ही थे। गोख और झरोखों से झाँकती हुई स्त्रियाँ साक्षात शृंगार रस का श्रोत थीं। अखंड शैव सामन्त लगरीराय स्वयं शान्त स्वरूप था। तब तक दासी ने आकर राजा के साम्हने पान ला हाजिर किए और प्रश्न किए जाने पर उसने उत्तर दिया कि कविचंद पृथ्वीराज के अंतरग सखा है इससे मैं उनकी आधी लज्जा करती हूं। अन्त में राजा जैचन्द ने कविचन्द को सादर पान दिए और कहा कि कविचन्द तुम सकोच न करना जो कुछ तुम माँगोगे सो कल्ह मैं तुम को दूगा।

यह कह कर राजा जैचन्द ने अपने रावण नामक एक सरदार को आज्ञा दी कि वह कविचन्द के साथ में जाकर नगर के पश्चिम प्रान्त में उसका डेरा करावे और उसके आतिथ्य सत्कार का पूरा प्रबन्ध रक्खे। इस प्रकार स्वामी की आज्ञा पाकर एक हजार सिपाहियों को साथ लेकर रावण कविचन्द के साथ हो लिया और उसे सादर जनवासे तक उसने पहुँचाया। कविचन्द के लिये वह जनवासा ऐसे आडम्बर से सजा हुआ था कि जिसे देखकर आँखों में चकाचौंधी आती थी। हर एक शिखर के ऊपर कुंदन किए हुए कलसे लगे थे और उनके भीतर नाना प्रकार के रग बिरंग गिलम गलीचे और पलग लगे हुए थे। उन पलगों के पाए और पाटी, भाँति भाँति के नगों मे जडे हुए थे और उन पर रेशमी सेज बन्दी मे कसे हुए मखमली तोशक पडे हुए थे। यह सब कुछ था पर जनवासे के बाहर चारों ओर चौकस चौकी बैठी थी कि वहाँ से यदि चींटी भी चाहे कि चली जाऊ तो कठिन था।

डेरे पर पहुंच कर इधर तो, नित्त की तरह राजा पृथ्वीराज एक उच्च सिंहासन पर बैठा और कविचन्द सहित सब सामन्त लोग उसकी अर्दली में बैठ कर जो कुछ देखा सुना था उसकी बातें करने लगे। इधर राजा जैचन्द ने निज रानी और

(१) कैमास के मारे जाने पर कर्नाटी दिल्ली से भाग कर कन्नौज मे आरही थी। यह बात कहना सर नहीं हो सकती उसका कहना था कि पृथ्वीराज के सिवाय मैं दूसरे पुरुष का मुँह देखना हीं नहीं।

सुमन्त, सेना नायक मुकुंद परिहार और श्रीकंठ प्रोहित को बुला कर आज्ञा दी कि तुम लोग कविचन्द के डेरे पर जाकर मिजवानी ले जाओ और उसके खान पान और रहन सहन का ऐसा उचित प्रबन्ध कर आओ जिसमें उसका चित्त किसी प्रकार से अप्रसन्न न होने पावे। निज स्वामी की ऐसी आज्ञा पाकर वे तीनो जने भाति भाति के व्यंजन पकवान और पान सुपारी लौंग इलाइची वगैरह लिवा कर कवि के डेरे पर गए। उनके पास पहुँचते ही दरवान ने उन्हे रोका और जब खवास ने अन्दर जाकर जाहिरी की तब वहा से आज्ञा पाने पर वे भीतर बुलाए गए। वहां जाकर वे कविचन्द से मिले और मिजवानी साम्हने रखकर इधर उधर की दस पांच शिष्टाचार की बातें की, पर डेरे के अन्दर का रोबदाब देखकर उनकी नसें ढीली पड़ गईं। वहां से लौट कर वे योंही धूरे पैरों जैचन्द के पास गए और कहा कि महाराज कवि तो कवि ही है पर उसका खवास कोई विलक्षणही पुरुष है और भी उसके डेरे के ठाट बाट और राहु सी अदब मर्य्यादा देख कर यह कहे बिना नहीं रहा जा सकता कि उसके साथ में जितने नौकर चाकर हैं सब एक से एक बढ़ कर तेजस्वी और पुरुषार्थी पुरुष है; उन लोगों के मुँह की बातें सुनकर जैचन्द मनही मन कुछ सोच समझ कर चुप रहगया। पर उसके जी में इस बात का निश्चय होगया कि कविचन्द के साथ में पृथ्वीराज हैं और फिर हैं।

इस असार ससार का अंधकार समूह नाश कर प्रकाश स्वरूप श्री भाष्कर भगवान की किरण से उत्पन्न हुई एक कन्या कैलाश शिखर पर एक मेघस्पर्शी वृक्ष से झूला झूल रही थी। उसे देख कर राजा पग उस पर आशिक्त होगया और उसकी प्राप्ति के लिये उसने एक पैर से खड़े होकर तपस्या करनी आरम्भ की। उसकी तपस्या से संतुष्ट होकर वशिष्ट ऋषि ने वह कन्या सूर्य्य से राजा को दिलवा दी। वही कन्या इस समय रानी जुन्हाई के नाम से प्रसिद्ध थी।

अस्तु जब रानी जुन्हाई ने सुना कि राजा पृथ्वीराज के दर्बार का कवि कविचन्द आया हुआ है तब उसने गुनमजरी गुनबेली मदनावती गुनकेलिका मालनी लीलावती कलावती आदि सहचरियों और भी दस पाच मुँह लगी सखियों को बुला कर उनसे कहा कि मेरी इच्छा है कि तुम लोग मेरी तरफ से कविचन्द के डेरे पर कलेऊ भोजन प्रसाद की सामग्री लेजाओ इसलिये और सब लोग तो इधर मेवा मिठाई पकवानादि पदार्थों का उचित प्रबन्ध करो और एक सखी जाकर महाराज से अर्ज करो कि वे तुम लोगों के साथ जाने के लिये कुछ सिपाहियों का प्रबन्ध करा देवें।

राजा जैचन्द के उस स्वर्णखचित रत्नजटित सुविस्तीर्ण रनिवास में काम की सी कलाएँ अनेक नवयौवना महिलाएँ थीं। वे सब चित्रनी और पद्मिनी जाति की एक से एक सुन्दर और मनोहर थीं, परन्तु राजा का जुन्हाई रानी पर विशेष प्रेम था। अतः रानी जुन्हाई का सँदेसा पाते ही राजा जैचन्द ने कहा अच्छी बात है और उसी समय एक हजार सैनिकों के सजे जाने की आज्ञा दी। जब तक वे सिपाही पीनसें और कहार वगैरह सज बज कर दुरुस्त हुए तब तक उधर रनिवास की दासियों ने भी रानी की आज्ञानुसार दो हजार सोने के थारों में सब तरह की मिठाई और पाच सौ थालों में पान सुपारी कपूर केसर कस्तूरी दारिम बिजौरी आदि सामान लगा कर रक्खा। उन दो हजार थालियों में से पाच थाली में अगर रस की बरफी, पाच सौ में कपूर के लड्डू, तीन सौ में साफ खोवे की मिठाई, चौसठ थालों में तबक चढ़े हुए पान बीडे और शेष थालों में और सरजाम था और प्रत्येक थाल बहुमूल्य दो दो पीताम्बरों से ढके हुए थे। इस सब स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ और अन्य बहुमूल्य मिजवानी के साथ एक रत्नजटित सोने के थाल में अत्यन्त मूल्यवान रत्नों का बना हुआ कल पुर्जों का हस भी था जो कि आपही आप राजा का यश बखान करता था।

यह सब सामान ले लिवा कर जो दासियाँ कविचन्द के डेरे पर गई थीं उनका भी हाल सुनिए। वे सब एक तो स्वाभाविक ही स्वय ऐसी सुन्दर थीं कि जिन्हें देख कर इन्द्र की अप्सराएं भी लज्जित होती थीं, तिस पर भी जब वे सोलहों शृंगार बारहों आभूषणों से सुसज्जित हो रग बिरंगे बहुमूल्य रेशमी और जरतारी वस्त्र पहिन कर बडी बडी आँखों में बारीक कज्जल लगा कर और पान बीड़े चबा कर चलने को तय्यार हुईं तो उनकी अदा बना और चमक दमक देख कर शरद का चन्द्रमा नजर में न चढ़ता था। उनके शीश पर मोतियों की लरें लटक रही थीं, कान में जड़ाऊ ताटंक पड़े हुए थे हृदय पर जड़ाऊ हार बहार देते थे और कमर में पहिने हुए मंद स्वर वाले मेखला तो हंस एव चकोर के बच्चों की बोली को मात करते थे। निदान वे रति की सी कलाएँ कुसमायुध की सी कमानें वचनचतुर चतुरों का चित्त चुरानेवाली और। भी अन्य सब कलाओं में प्रवीण, मृगलोचनी गजगामिनी कलकंठी सर्वाङ्ग सुन्दर षोडसवर्षीया दासियाँ अच्छी अच्छी सजी सजी पीनसों में सवार होकर बडे ठाट बाट के साथ कविचन्द के डेरे पर आईं। एक समय जब कि ब्रह्म निद्रा लेने को पलग पर लेटे कि इतने में दैत्य दल ने प्रबल होकर उत्पात मचाना आरभ किया अस्तु ब्रह्मा ने वहीं पडे पडे एक ऐसी सुन्दर स्त्री रची कि जिसे देखकर सब असुर मोहित होकर किं-कर्त्तव्य-विमूढ़ हो गए। इसी तरह वे दासियाँ क्या आईं मानो पृथ्वीराज का चित्त चुराने के लिये जैचन्द की भेजी हुई माया की मरीचिकाएँ आईं।

दासियों के द्वार पर पहुँचते दरबान ने अन्दर जाकर कविचन्द को इत्तला की इस पर उधर तो [illegible] सिंहासन से उतरे और सब ठाट बदला गया [illegible] दरबान ने दासियों से कहा चलिए। दासियों [illegible] पर्दे में जाकर सब सामान कवि को नजर [illegible] और कहा है सब विद्याओं और कलाओं में [illegible] काल के जाननेवाले चतुरानन के दरबार के चतुर कविचन्द बर्दाई रानी जुन्हाई ने आपको प्रणाम कह कर आपका कुशल प्रश्न पूछा है; इसके उत्तर में कवि ने कहा कि मेरा भी महारानी को आशीर्वाद कहना और कहना कि दीर्घजीविनी हो और प्रसन्न रहो। यह कह कर कविचन्द ने उन्हें विदा किया। वहाँ से चलकर वे दासियाँ रानी जुन्हाई के पास गई और उसके पैर छूकर विनीत भाव से बोलीं कि हम लोग श्रीमती की आज्ञा का पालन कर आई। महारानी जी अपराध क्षमा हो। और तो हुआ सो हुआ परन्तु हमने कवि चद के खवास को जैसा देखा वैसा कोई दूसरा आदमी भी आज लों नहीं देखा। यह सुन कर रानी ने उन दासियों को तो योंही बाहरी भीतरी समझा कर लौटा दिया पर वह अपने मन में समझ गई कि पृथ्वीराज वही है।

दासियों के पीठ फेरते ही यहा फिर राजा पृथ्वीराज सिंहासन पर जा बैठा। आस पास सब सामन्त और बीच में कविचन्द बैठ गया, लीजिए फिर ज्यों का त्यों सब दरबार जम गया। पृथ्वीराज ने कहा भाई कविचन्द कल्ह स्नान करते समय की गगाजी की छटा अब तक ज्यों की त्यों मन में बसी हुई है इस समय फिर भी कुछ गगा जी का गुण गान करो। कविचन्द बोला कि महाराज उन पापप्रहारिणी गगाजी का कोई क्या गुण गान करेगा, उनकी महिमा बड़ी है। सुर नर और नाग आदि भी उनका गुण गान कर के पार नहीं पा सकते। श्री गंगाजी विष्णु भगवान के चरणों से उत्पन्न हो कर ब्रह्मा के कमडल में आई और वहा से आकर श्रीशिवजी की जटाओं में समानीं। फिर शिवजी की जटाओं से जो [illegible] निकलीं सो इस पृथ्वी पर आकर [illegible] के लोगों को तरन तारन कर रही है। इस पृथ्वी पर जितने भर त्रिकालज्ञ और पवित्र [illegible] है सब गगाजी के कूल में कुटी [illegible] रहते हैं और वहीं कुछ दिन में [illegible] और [illegible] [illegible] किया करते हैं। [illegible]

होकर गंगा के किनारे जा पहुँचते है वे क्षण मात्र में सब पापों से मुक्त होकर निर्मल मन हो जाते हैं। संसार भर के जीवधारी मात्र की स्वासा और सत रज तम तीनों गुणों की मूर्ति उस गंगा महारणी को धन्य है। इस पृथ्वी पर जब अधिक पाप होने के कारण भूमि के भार से शेष का शीश हिलने लगता है तब श्री गंगाजी ही पापों का नाश करके शेष को सहारा देती है। पुण्यपुंज एवं शान्ति की क्यारी स्वरूप माता गंगाजी की तरंगे स्पर्श करने से अद्वितीय प्रसन्नता प्राप्त होती है, स्वर्गवासी तेतीस कोटि देवता सदा गंगाजी का गुणगान किया करते है। स्वर्ग में तो उनकी सहस धाराएँ है पर यहा पृथ्वी पर केवल एक धारा ने बडे बडे पर्व्वतों को तोड कर समुद्र का हृदय विदार दिया है। कैसाही पुराना पापी क्यों न हो और वह गंगाजी के महत्व को भी न जानता हो पर किसी तरह किनारे पर आजाय तो वह बिन प्रयास तर जाता हैं। पापी रावण का नाश करने वाली सती सीता, महिषासुर को नाश करने वाली सिंह बाहिनी शक्ति, महाभारत के युद्ध की भूर द्रौपदी, शुंभ निशुभ आदि असुरों का संहार करने वाली कालिका श्री शिवजी की अर्द्धांगिनी गिरा और विद्यावरदायिनी सरस्वती आदि इन्ही मात गंगाजी के स्वरूपान्तर मात्र है। तात्पर्य्य यह कि समस्त संसार की कर्तृ धर्तृ मात गंगा इस वारि धारा स्वरूप से स्वय अपनी सृष्टि का निरीक्षण परीक्षण और उद्धार कर रही है।

अधिक क्या कहू श्रीगंगाजी में स्नान करने या गंगाजल को पान करने की इच्छा करने से ही मानसिक वाचिक और कार्मिक तीनों प्रकार के पाप ताप नाश हो जाते है। राजन् इससे अधिक और क्या हो सकता है कि जो सहज शृंगारों सहित स्नान किए जाते हैं वे सब शृंगार भी संसार से शीघ्रही मोक्ष पा जाते हैं। देखिए केसर से गंगाजी की शिवार होती है, अंजन से कस्तूरिया मृग जन्म पाता है, चूडियों से कछुए उपजते हैं, मिहदी और महावर नागबेल होते है और स्वेद कण समुद्र में सीप होते हैं।

नरनाह काका कन्ह चौहान जैसा सब सामन्तों में सिरे तेजस्वी और वीर था वैसाही अधिक क्रोधी और शुद्ध हृदय था किसी का छल प्रपंच तो मानो उसे छू नहीं गया था। अस्तु कविचंद की कही हुई गंगाजी की महिमा सुन कर बडे प्रेम से ध्यान-मग्न हो कन्ह बोला 'धन्य महारानी, जो लोग तेरे किनारे पर उत्पन्न होते हैं रहते हैं और आठ पहर तेरा जलपान करते हैं उनके अहाभाग्य हैं। तब पृथ्वीराज बोला काकाजी हममें ऐसे पुण्यात्मा तो एक निढ्ढुर राय है। इस पर निढ्ढुर राय ने तो कुछ न कहा कविचंद बोला सो है ही। देखिए आप यहां आतेही पनिहारी को देख कर भ्रम में पड गए। और जब प्रतापी जैचन्द के दर्बार में गए तो छगगर लेकर खड़े होने की नौबत आई न? यह सुनते पृथ्वीराज तो घायल सूअर की तरह पलट पडा। वह बोला हरे कृष्ण मैने बडी भूल की। अब सवेरा होने दो अपने असल स्वरूप से ही जैचंद का दर्बार देखू तो सही! यह हाल देख कर कन्ह से न रहा गया उसने लाल लाल आंखे कर के कहा 'रे भटवा तू जो कुछ करे से सब थोडा, बाप दादे खाये न पान दात निपोरे कद्द पिरान, तू तो आशीर्वाद दे दिवा कर दूर हो जायगा। यहां हम लोगों के सिर पडेगी। बस भुस में डाली आग महाजन दूर खडे। तब कविचंद बोला। महाराजा एक समय रावण ने एक ऐसा यज्ञ रचा कि जिससे वह सब देवताओं को वश में करले। यह देख कर इन्द्र ने कौंवे का रूप धारण किया और यज्ञ शाला में जा कर साकिल्य को जूठा कर दिया जिसस वह यज्ञ पूरा न हो सका तब कहिए क्या इन्द्र कौंवा हो गया। इतने में वनबीर परिहार आया और उसने कहा कि भोजन तैय्यार है, इस पर इधर तो पृथ्वीराज ने उठने की मुद्रा की उधर गायन्द राय ने कन्ह का हाथ पकड़ कर कहा चलिए भोजन कीजिए जो होगा सो देखा जायगा। उखली में सर दिया तो मूसलों का कौन डर।

निदान जब तक सब लोग भोजन कर करा कर निपटे तब तक संध्या हो गई। दिन भर के थके मादे तो थे ही, सब सामन्त जहां तहां अपने अपने बिस्तरों पर जा लेटे। राजा पृथ्वीराज भी पैर पसार कर पलग पर पड़ रहा और कत्थक लोग कथा कहानी कहने लगे। पृथ्वीराज तो यहा थोड़ी देर में सुख की नींद सो गया परन्तु जिन स्त्रियों ने पृथ्वीराज को देख पाया था उनकी राम राम कर के रात कटी मानों पृथ्वीराज उनके साथ पड़ा हुआ उन्हें नींद न लेने देता था।

जब एक प्रहर रात जा चुकी तो राजा जैचन्द का भेजा हुआ एक दूत कविचन्द के पास पहुँचा। उसने कवि से कहा कि औरस अर्थात् महफिल देखने के लिये दरबार से आपका बुलौवा है सो चलिए और छरीदा चलिए। यह सँदेसा पाते ही कविचन्द राजा पृथ्वीराज को यों ही सुख में छोड़कर पगराज की ड्योढ़ी पर जा पहुँचा, कविचन्द के आने की खबर पाकर राजा जैचन्द भी महलों से निकल कर नाट्यशाला में आ बैठा। जब कविचन्द नाट्यशाला में पहुँचा तो देखता क्या है कि केसर कस्तूरी कपूर अरगजा अबर आदि की सुगंधि से समस्त नाट्यशाला महक रही है, दस हजार मन तेल और सात मन अगर के फुलेल से भरे हुए सात हजार सोने की मसालें और कई हजार जड़ाऊ दीए जल रहे हैं। कुल मिला कर एक हजार चाँदनी और पाल तने हुए हैं जिन पर नाना प्रकार के जरतारी बेल बूटे और श्रीगोस, गैंडा, हाथी, बन्दर, हिरन और शेर आदि भांति भांति के जानवरों के चित्र खचित हैं। उन्हें देखकर ऐसा मालूम होता था मानों वे [illegible] जंगली जीव जन्तु भी जैचन्द के राज्य में [illegible] की असमंजस त्याग कर मेल का मजा ले रहे हों।

[illegible] उठते ही कविचन्द ने देखा [illegible] जैचन्द की नाट्यशाला में सोलहों [illegible] तरहों आभूषणों से सजी हुई सैकड़ों वेश्याएँ बैठी थीं। जिस समय वे सब की सब उठ कर खड़ी हुई तो ऐसा मालूम होता था मानों महादेव जी को विजय करने के लिये कामदेव ने अपनी सेना सजी हो। ताल और लय के साथ उनके पैरों के मंद मंद नूपुर क्या बजते थे मानों मकरकेतु महाराज के निसान बज रहे थे। उन वेश्याओं के शरीर पर सर्वांग जड़ाऊ गहने देख कर तो यह उपमा आती थी जैसे कामदेव नवग्रहों को और नवग्रहों ने कामदेव को अपना अपना प्रताप और पौरुष जताया हो और अन्त में वे दोनों दल मिल कर एक हो गए हों। उनकी कमर में रुरती हुई क्षुद्र घंटिकाएं देखकर पिनाक का स्मरण होता था और हृदय पर लटकता हुआ मोतियों का हार गंगधारा की बहार दिखाता था परन्तु उस हार के मोतियों में जो उनके मुख की प्रतिभा देख पड़ती थी उससे कुएँ के लहराते हुए उज्ज्वल जल में चन्द्रमा के प्रतिबिंब की सी झलक जान पड़ती थी।

साटक ॥

दीपांगी चन्द्रनेत्रा अति नलिन मिली, नैनरंगी कुरंगी।
कोकांगी दीर्घनासा ससुर कलिरवा, नारिंगी मारदंगी।
इन्द्रानी लोलडोला चपल मतिधारा एकबोली अमोली।
पुहपावानी विशालासुभगा गिरवरा, नैनरंभा सु बोली॥

उन सब वेश्याओं ने पहिले उक्त नाटक में श्री सरस्वती जी की स्तुति करके बाएँ हाथ को पद्मांजलि मुद्रा करके उसे ऊपर को उठाया और दाहिने हाथ से गुरु को प्रणाम करके मंद मंद नर्तन प्रारंभ किया। कवि कहता है उन [illegible] वेश्याओं को देखकर मुझे तो ऐसा भ्रम हुआ कि ये मानती हैं अथवा मदन दीपावली की दीप शिखाएँ हैं।

उन्होंने नृत्य के आरम्भ में [illegible] की वन्दना करते हुए गाना कि हे [illegible] [illegible] नरेश! हमारे महाराज जैचन्द [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है!

तत्पश्चात् उन्होंने थोड़ी देर गत थानी लहरा नाच कर अलाप चारी आरम्भ की और स्वर से लेकर शनैः शनैः पचम और फिर सप्तम तक तान ले गई। उनके साथ के सफरदाई भी हाहा हूहू गन्धर्वों की भाँति वाद्य विद्या में निपुण नाना प्रकार के ठेका, तोड़ा, मुखडा, और परनों के हाथ झाडते हुए बराबर सम पर सम देते जाते थे। क्या कहें ताथेई तत थेई थेई थेईया, धुगधिगा धुगधिका ताताथुना ना, और थाथा धित्ता, चिकिटधा धित्ता, तिटकित दिगगिन धा आदि गत और पखावज के विराम और उसीके साथ नूपुर मेखलाओं की झुड झुड झुननननन्झा और ऊपर से-स रे ग म प ध-नी सा२ स-नी ध. प. म ग रे. सा. सानी. ध प प म म ग रे सा सरगम और त्रोम त्रोम तन दिरना, ओ दिर दिर दिर दीम, दीम तननतनन -ननन् ओ्वन तान तन दिरदा, तान्य दिरना ए तिरा-ना सुन कर मन कुछ और का और ही होता था। भला उनके ताल स्वर सम और नाच गान की क्या बात कहें, वे सब दारुण देश की शिक्षा पाई हुई थीं जो कि इस बात का घर कहा जाता है। जिस वक्त वे ताल पर तिरप तिरप कर और तिरपट हो हो कर अदा के साथ भाव बतातीं तो उनके चमकीले चचल लोचन कुमोदनी पुष्प में खेलते मलिन्द से जान पडते थे। वे ऐसे ऐसे तरह वजहदार गहनों से सजी हुई थीं कि देखनेवाले को यह कहना कठिन था कि वे गहनों से ऐसी दिप रही हैं या गहने उनसे ऐसे दिप रहे है। इतना ही नहीं वे उसी ताल सम में नाचते नाचते मयूर मृग सिंह हस चक्र कमल आदि की आकृति बन कर उनके सांगो पाग भाव बताती थीं, बीच बीच में कुदलनी एव सर्पणी को साध कर जो ऊर्द्ध स्वासा चढातीं तो उनके उरोजों पर [illegible]जता हुआ मोतियो का हार ऐसा सुशोभित होता जैसे हस के बच्चे सच्चे मोती चुन रहे हों अथवा जब कभी बैठ कर समाधि साधने की मुद्रा करतीं तो ऐसा मालूम होता मानो श्री शिव जी ने ही गोपिका रूप धर कर तारणी लगाई हो और वे मृदग मोर्चग टपगादि वाद्य तो बिलकुल अन वाद्य का मानचित्र खींच दिखाते थे।

इसी प्रकार से नाच गान और नाना प्रका नाटक होते होते तीन प्रहर व्यतीत हो गए। रात्रि का चौथा चरण आया अर्थात् धर्मराज की [illegible] हुई देवालयों में झालरें झकारने लगीं और कुक्कुट बाँग देने लगा अतएव उधर तो उन चद्रमुखी मृगलोचनी कलकंठी काम की सी कलाएं वेश्याओं के मुख पर आलस की झाई पड़ने लगी इधर महाराज जैचद को भी सुखसेज की इच्छा हुई तब नाटक बद किया गया और दरबार बर्खास्त हुआ। निदान कविचद को सीख देकर राजा जैचद तो अपनी चित्रसारी में जा लेटा और कवि डेरों पर आकर सुसुप्त राजा पृथ्वीराज के पास पहुंचा और यह कहकर "हे शाह को बार बार बंदी करनेवाले सभरीनाथ सबेरा होगया" पृथ्वीराज को जगा दिया।

शय्या से उठकर शौचादि से निश्चिन्त हो सूर्य के समान तेजस्वी राजा पृथ्वीराज अपने आसन पर आ बैठा। उसके सूर सामत भी उसे घेर कर उसके आस पास बैठ गए। उस समय उसके पास सूर्य के समान तेजस्वी कन्ह चहुआन, मुगलों का मुख मोडने वाला गोइन्दराय, खुरासान खाँ को बाँधने वाला दाहिमा नरसिंह, हाँसीपुर की रक्षा करने वाला पज्जूनराय, मोतियों के बीच माणिक के समान सुन्दर सारंगराय सौलकी, स्वामी की सुकीर्ति रूप अकेला टट्ठाराय को समुद्र तक ठेलने वाला आल्ह राय, गंभीर हृदय बीर चदपुडीर, देव गिरि पर लोहा लेने वाला भौंहाराय, सुरतान खा को परास्त करने वाला नारेन बीर और जाजुल्यमान जावला जल्ह इत्यादि सामन्त बैठे थे और बीच में राजा पृथ्वीराज के ऊपर चौर ढुर रहा था।

उसी समय राजा जैचन्द का भेजा हुआ एक गुप्तचर आया और यह सब हाल चाल परच गया। उसने जैचन्द से कहा कि महाराज अकेले कवि के भरोसे न रहिए साक्षात् पृथ्वीपुर इंद राजा पृथ्वीराज बैठा हुआ है। यह समाचार सुनते ही जैसे सबेरे के

समय सरोज, सन्ध्या को कुमोदनी वैसेही जैचद के जी की कली खिल उठी एव जैसे दुस्सासन को देख कर भीमसेन, द्रोनागिर उपारते समय हनुमान, गिर-गोवर्द्धन पर्वत को उठाते श्रीकृष्ण प्रसन्न हुए थे उसी प्रकार पृथ्वीराज को घर में आया हुआ जान अपने पूर्व वैर भँजाने का सुअवसर जान कर जैचन्द तन मन प्रसन्न हो गया।

राजा जैचद ने उसी समय शिकार सेना के तय्यार होने की आज्ञा दी तदनुसार ज्यों ही पहिला निसान (नगाडा) बजा कि जहा तहा हाथी घोडे ऊट और हिन्दू मुसल्मान सब सिपाही अपने अपने कील काटे से सजकर दुरुस्त हो गए। दूसरे निशान की आवाज पर सब लोग महलों के दरवाजे पर हाजिर हो यथानियम श्रेणीबद्ध होकर खडे होगए और तीसरा डका बजते ही राजा जैचन्द स्वय महलों से निकल कर दरवाजे पर आगया। उसने देखा कि दिग्गजों का मद दलन करने वाले बडे दैतारे गयद, वेश्याओं की तरह खमदम से खुरी करते हुए सुनहरे और जडाऊ साजों से सुसज्जित अश्व और अच्छे अच्छे सहजोर जबरदस्त फौजी जवान दरवाजे पर हाजिर हैं। इसके सिवाय उसके आश्रित सैकडों छत्रधारी भी अपनी अपनी अनी कनी सेना सहित सेवा में प्रस्तुत हैं। राजा जैचन्द के असवारी पर सवार होते ही धानुक लोग बाजे बजाने लगे, कडखेत कडखे गाने लगे और सुनहरी रुपहली गगाजमनी और जडाऊ छडी लिए हुए नकीब लोग सलामी की आवाजें कसने लगे। राजा जैचद के आस पास उसकी सुकीर्ति के सौरभ स्वरूप ही स्वच्छ अच्छे [illegible] चौर दुर रहे थे और उसके शीश पर उसका प्रताप स्वरूप छत्र छहरा रहा था।

जिसके दल बल के आगे दसों दिशाओं के दिग्गज दहलते थे ऐसे प्रतापी राजा पग ने अपने [illegible] सुमन्त को पास बुला कर आदेश किया कि मैं कविचद को बिदा करने के लिये जाना चाहता हूं। इसलिये तुम यथासम्भव शीघ्रही बिदाई का सामान [illegible] का प्रस्तुत करो और [illegible] का [illegible] हट किया जाय। उसने मंत्री से कहा, सुमंत तुम जानते हो कि सुकीर्ति की वृत्तबेलि इन्हीं कवियों द्वारा सिंचित होकर बढ़ती है इसलिये कविचद को ऐसा दान दिया जाना चाहिए कि जैसा हिन्दू मुसल्मान किसी राजा ने कभी किसी मँगते को दिया ही न हो जिसमें पृथ्वीराज को भी मालूम पड जाय कि मेरे कवि को किसीने दान दिया और कविचद भी जाने कि हां कहीं से दान पाया। तब सुमंत बोला कि महाराज की मरजी हुई सो ठीक ही है पर देखिए राजा वीर विक्रमादित्य ने बेताल कवि को पचास हजार मन सोना, इकतीस मन मोती, तीस मणिजटित साज से सजे हुए हाथी और इकतीस परम सुन्दरी वेश्याए दान की थीं इससे पराई समसरी से क्या अपने वित्त के अनुसार जो आज्ञा हो सो लगा दूं। इस पर जैचंद ने कहा कि अच्छा जो तुम जानो। तब मंत्री सुमंत ने अच्छे अच्छे तीस हाथी, जडाऊ साजो सहित दो सौ कोतल घोडे, सौ मन सोना, अमूल्य मणि माणिक और मोतियों से भरे हुए दो बडे बडे हंडे और जडाऊ जरी बाफ्ता कमखाब कसब और गुलब-दन आदि अनेक प्रकार के बहु मूल्य कपड़े कविचद की बिदाई के लिये लगातार राजा के साम्हने हाजिर किए।

तीस करी मुत्तिय सवन द्व से तुरंग बनाय।
दव्य वरद बड सँग लिय भट्ट ममप्पन जाय॥

अस्तु ज्यों ही उपर्युक्त सामान साथ लिया कर राजा जैचद कविचद के डेरे पर चलने को हुआ कि साम्हने सीसमाल पहिने हुए योगी, पख झाडता हुआ गीध, ऊपर का चौंच उठाता हुआ चात्रिक, चोंच में साप को खाकर चीत्कार कर के उडती हुई चील्ह आदि अनेकों विग्रह एव युद्धसूचक असगुन देख पड़े। यह देख कर जैचन्द [illegible] और भी निश्चय हो गया और उसने अपने [illegible] के खास खास सरदार और [illegible] को [illegible] कर कहा कि कविचन्द के साथ में पृथ्वीराज है [illegible] तुम लोगों को ऐसा करना उचित है [illegible] [illegible] [illegible] दे और [illegible] [illegible]

उसने सेनापति रावण को बुलाकर आज्ञा दी कि पहिले तुम कविचन्द के डेरे पर जाकर उसे मेरी अवाई से सचेत कर दो।

स्वामी की आज्ञानुसार रावण ने वैसाही किया और फिर वहा से आकर जोरावर राठौर राजपूतों की एक जमात के साथ जैचद के साथ हो लिया। वे राठोर राजपूत सिपाही ऐसे डालडौलदार और सहजोर थे कि बड़े बड़े वृक्षों को जड से उखाड सकते थे और प्रत्येक जवान रोजाना चार चार बकरों की अखनी खाता था। शत्रु के सामने से नजर नीची करना और पराई स्त्री की तरफ आँख उठाकर देखना तो मानो वे जानतेही न थे। ऐसी विकट वीरमंडली के नेता रावण को साथ में लेकर जैचन्द कविचन्द के डेरे पर पहुँचा। जैचन्द को आते देख कविचन्द ने आगे बढ़कर उसकी आगवानी की और डरे के बीच में सुसज्जित एक ऊँच सिंहासन पर उसे सादर विठाया। तत्पश्चात उसने कहा कि मेरे अहोभाग्य हैं जो आप ने शिकार का जाना छोड़कर यहा आने की कृपा की। श्रीमान मैं भी राजा पृथ्वीराज का कवि हू और अबतक तेरे सिवाय और किसी के द्वार पर नहीं गया।

तत्पश्चात् और भी दो चार शिष्टाचार की बातें होने के बाद कविचद ने अपने खवास वेष-धारी राजा पृथ्वीराज को इशारा किया कि वह जैचन्द को पान दे। कवि की आज्ञा पाकर पृथ्वीराज ने फौरन पान लेकर जैचन्द के साम्हने किया पर बाएँ हाथ से *। यह देखते ही जैचन्द मन ही मन जल भुन गया पर ऊपर से प्रसन्नता प्रगट करते हुए बड़े गौर के सा, पृथ्वीराज की ओर देखता रह गया। उस समय ऐसा मालूम होता था मानों बहुत दिनों के बाद घर से बाहर होने की छक पाकर कोई [illegible]टा अपने पुराने यार को घूर रही हो। पृथ्वीराज ने पानदान को हाथ तो बढ़ाया पर नीचा हाथ कर के पान लेना चाहता था। इस जिद्दम जिद्दा पर जब कवि ने जैचंद की तिवरी चढ़ी देखी तो उसने बड़ी युक्ति के साथ कहा।

श्लोक—तुलसाय विप्रहस्तेषु विभूति श्रिय जोगिनां।
तांबूल चडिहस्तेषु त्रयो दानेश आदर॥

यह सुन कर राजा जैचद ने पान लेने के लिये हाथ बढाया परन्तु पृथ्वीराज ने ठेलकर पान दिया। इतनाही नहीं पान देते वक्त जैचंद के हाथ को पकड़ कर ऐसे जोर से उसने अगूठा गड़ाया कि जिससे उसके करपल्लव अर्थात् गदेरी में खून निकल आया। फिर क्या था जैचद की तो उस समय यह दशा थी कि मानों पृथ्वीराज को अभी कच्चा खा जायगा परन्तु लज्जा वश कुछ कर नहीं सकता था। उसे अब भी इस बात का आगा पीछा था कि मैं कुछ कर बैठू और पृथ्वीराज न हो तो मेरी बडी हँसी होगी। वह मन ही मन सोचने लगा कि मुझे तो जुडते ही सभा में संदेह हो गया था कि यह खवास नहीं कोई और है पर अब तो और तौर की भी बात नहीं है इसकी यह हिम्मत देख निश्चय हो गया कि पृथ्वीराज है।

इसी प्रकार सोच विचार करता हुआ राजा जैचद वहा से उठ कर महलों को चला गया और जाते ही मत्री सुमंत को बुला कर उससे कुपित होकर कहने लगा कि पृथ्वीराज को पकड कर जान से मार डालो जिसमें संयोगिता की भी आशा टूटे। आप अपना भी कंटक दूर होय 'न रहे बास न बाजे बासुरी' तब सुमत बोला पृथ्वीनाथ कैसी मरजी होती है। भला राजा पृथ्वीराज और कविचद का खवास बन कर आपके दर्बार में आवे! उसकी ऐसी क्या अटकी पडी थी! मै न मानूगा। उसने आपको धोखा देने के लिये किसी सामत सरदार को भेज दिया होगा। महाराज विना सोचे विचारे कुछ कर बैठना अच्छा नहीं। वह जो कोई हो कवि के साथ में है, कवि और वसीठ (राज्यदूत) सदा अभय हैं। ऐसा न हो कि एक कटक टालने का उपाय करें और दूसरा अमिट कलक

* बाएँ हाथ से ठेल कर पान शत्रु को दो दिया जाता है

माथे चढ़ जाय। अगर कुछ बन बिगड़ जायगा तो घर घर लोग यही कहेंगे कि इतना बड़ा दरबार पर राजा दीवान सब 'अछिया के ताऊ' निकले इसलिये ऐसा कीजिए कि कविचंद को बुला कर उसीसे पूछ लीजिए। जहा तक मेरा अनुमान है वह झूठ न बोलेगा।

यह बात जैचद के जी में भी आगई। उसने उसी समय कविचद को बुला कर उसे आदर आसन और बडे सम्मान से पान देकर कहा कि अट्ठारहों पुराण छओ शास्त्रों के जानने वाले छओं भाषाओं में प्रवीण कविचद बरदाई मैं तुम से एक बात पूछता हूं सच सच बताना, यदि कहीं झूठ बोले तो याद रक्खो जीते जागते घर न जा सकोगे। इस पर कवि ने कहा आप पूछिए भी तो। तब जैचद ने पूछा कि क्या तुम्हारे साथ में पृथ्वीराज है?

कविचद ने उत्तर दिया हा महाराज जिसके दाहने पार्श्व में सूर्य्य के समान तेजस्वी सदा आँखों पर पट्टी बँधी रखने वाले पट्टमपुर के राजा भोरा भीमदेव के मारने वाले अद्वितीय पराक्रमी [illegible]धारी विकट वीर काका कन्ह चहुआन और बाएँ पार्श्व में राठौरकुलकमल सदा निडर वीर निड्डुरराय सदा विराजमान रहते हैं वह छत्रधारियों में श्रेष्ठ पृथ्वीपुर इंद सोमेससुन राजा पृथ्वीराज इस समय यहीं विद्यमान है। दो बार गज्जनेस को गिरिफ्तार करने वाले गोयदराय गहलौत, [illegible]मलानी सेना के साल सलखकुलकमल [illegible] नरेश जैतराव, बडे करारे वीर दोनो भाई [illegible] नरसिंह, बालुकाराव का वध करने वाला [illegible] राय झाला, असख्य द्रव्य का मालिक [illegible] चहुआन, महोबे का राजा परमाल [illegible], बहुत से सवारों का स्वामी बारडराव, साँभर [illegible] को परास्त करनेवाला अचलेस भट्टी, [illegible] बार गहने वाला पीपा पडिहार, पहाडराय [illegible] को मारने वाला पज्जून [illegible] का सूबेदार नरसिंहराव, जालौर को जीतने और कागुरे के गढ़ को ढहानेवाला सलख प्रमार, मेवाती मुगलों को मारने वाला धीर प्रमार, विपुल भूमि को दबा लेने वाला जामराय यादव और प्रसगराय खीची, काँगड़े का राजा हाहुली राय, साक्षात् देहधारी वीररस स्वरूप जोगीजधारा, भीम का नाशक सारंग राय मोरी, सदा एक तलवार का बाँधनेवाला बांका परिहार राना जजल डोड, शाह के भाई का घातक गुजरात धनी गौर सरदार, कालिञ्जर का किलेदार साक्षात् भीम के समान बलवान अत्ताताई चौहान, पानीपत में प्राण देनेवाले भौंहा चंदेल का भाई, आलील खा की जान लेने वाला राम राय बडगुज्जर, पर्व्वत के समान भीमकाय और सूर्य्य के समान तेजस्वी माल चदेल, एक मात्र एक त्रिसूल बाँधने वाला मडलीक राव बघेला, पृथ्वीराज का अत्यन्त अतरंग सखा भावर राय धीर शाह को कई बार मार मार कर भगा देने वाला हाडाहमीर, रावतराम सूर जिस की नजर से नजर मिलाना कठिन है, रणतूर के इकतीस रावतों को बाँध लेने वाला जावलाजुल्ह, एक हजार नलीबद ज्वानों का नेता चालुक राय, रिनथंभ में अतुल पराक्रम करने वाला सिंह के समान क्रूर खेतें में खँगार, वरुनराय को मारने वाला सग्राम साह दाहिमा, सुभट राजा भीम को मारने वाला चन्द्रसेन मडलीक, स्वप्न में भी शत्रु के साम्हने से पीछे पैर न देने वाला साम[illegible], [illegible] का जीतकर पृथ्वीराज से एक हजार गाव पानेवाला कनक राय प्रमार, ध्रुव के समान अटल और इन्द्र के समान देदीप्यमान चाटागपटोका चहुआन, एक हजार धनुर्धारियों का स्वामी [illegible] को जीतने वाला विक्रमादित्य राठौर, दो हजार [illegible] सेना का स्वामी भोजराय, काठियावाड का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

का पुत्र तारनराय, बखनौर का रहने वाला मल्हनाश केहरी, एक अकेला हजार सिपाहियों का काम करने वाला जाजराय यादव, दिल्ली का निवासी पहकरराय कन्हराय दाहिमा, एक हजार नेजेबाज सवारों का स्वामी पंचाइन चहुआन, सदैव रन के लिये उद्यत अत्यन्त क्रूर स्वभाव धीरसिंह परिहार, आदि ये सब सौ सामतो के सहायक एक हजार सहजोर सैनिकों के साथ राजा पृथ्वीराज कन्नौज में विराज रहा है। महाराज पृथ्वीराज के साथ के ये ग्यारह सौ राजपूत ग्यारह लाख को चुटकियों में उड़ा देने वाले हैं।

यह सुनतेही राजा जैचन्द यह कह कर कि अच्छा देखता हू उठ कर अदर चला गया और हुक्म दिया कि कविचद के डेरे के गिर्द दस लाख सिपाहियों का कडा पहरा बिठा दिया जाय, उसने मंत्री से कहा खबरदार पृथ्वीराज निकल कर भागने न पावे। सब फौज को हुक्म दिया जाय कि कमर कस कर लैस हो जावे। देखू जाता कहा। है आज पृथ्वीराज को नग नग उतार लूं तो सही।

इतनी अवान होते ही कविचद के डेरे के चारों ओर राठौर सेना के पहाड़ लग गए। जैसे पावस के धुआधार बद्दर चद्रमा को आच्छादित कर लेते हैं वैसेही जैचंद की फौज ने कविचद के डेरे घेर लिए। यह कौतुक देख कर इधर सामंत लोग कहने लगे चलो अच्छा हुआ यह भी जाना जायगा कि कौन कितने मे है। काका कन्ह चौहान बोला भाइ अब सब लोग कील कॉटे से दुरुस्त हो रहो देर नहीं है।

पृथ्वीराज के पूर्व पुरुषों में पप्पयराज नाम का कोई प्रतापी पुरुष हो गया था। उसके दो पुत्र थे जिनमें से एक के सतान में पृथ्वीराज का पिता राजा सोमेश्वर था और दूसरे का संजम राय था जिसका पुत्र लगरीराय था। अतएव जिस समय भादों के बद्दलों की भाँति गड़बड नगाडे बजाते और धरो मारो पकड़ो का रव मचाते हुए जैचद की सेना के तीन लाख सिपाही पृथ्वीराज को पकडने के लिये बढे तो इधर से लगरीराय ने लोहा लिया। राजा पृथ्वीराज लगरीराय का बड़ा सम्मान करता था, वह उसे सगे भाई से भी अधिक मानता था यहा तक कि उसे आधी गद्दी का आसन देता था * अस्तु इस अवसर पर सदा के लिये नमक से उऋण होना विचार कर लगरी राय ने तलवार पकड़ी और पृथ्वीराज को जुहार करके वह पग सेना के साम्हने हुआ। उधर से राजा जैचद का भाजा राजकुमार सहसमल तीन हजार राठौर राजपूत और चालीस मतवार हाथियों की बीड़ में गसा हुआ मार मार करता चला आता था। सहसमल स्वय फूल कनक नामक एक बडे भारी हाथी पर सवार था। लगरीराय ने उसके साथियों में से दो हजार सिपाहियों को बात की बात में मार गिराया और उस कनक फूल के कुभस्थल पर ऐसे दमक गया जैसे कस को पछारने के लिये कृष्ण उसके स्वर्ण सिंहासन पर जा चढ़े हों। अस्तु लगरी राय के एक ही हाथ में सहस मल का वारा न्यारा हो गया पर उसके एक हाथ में लगरीराय भी बीच से चिर कर दो हो गया। अपने हिस्से का आधा धड तो लंगरी राय का वहीं पडा रह गया और आधा धड़ मार मार करता हुआ जैचंद के महलो की तरफ बढा। ड्योढ़ी पर जाते ही उसे (लगरीराय के आधे अग को) सात हजार दरवानों ने आडे हाथों ले लिया पर उनका किया कुछ भी न हो सका। सात हजार दरवानों को मार काट कर वह महलों में धसने लगा। तब राज्यमत्री सुमत ने तलवार की मूठ पर हाथ डाला और पहरेदार सिपाहियों को ललकारा, फिर क्या था आनन फानन में तीन लाख सिपाही टूट पड़े। वह धड एक दरवाजा लॉघ चुका था इसलिये यों कहना चाहिए कि महलों के पहिले चौक में रक्त की कीच मच उठी, सारे महलों में हाय हाय मच गया। रनिवास

* महोबे की लडाई में जब सजम राय ने अपने शरीर का मांस गीध को देकर पृथ्वीराज के प्राण बचाए तब सजमराय के मरने पर राजा ने लंगरी राय को आधा राज्य का सत्वाधिकारी मान कर उसे अपने बराबर का मान दिया था।

की सब स्त्रियाँ गोख और झरोखों से तमाशा देखती थीं सयोगिता ने अपनी माता स पूछा "मा यह क्या कौतुक है। यह एक आँख एक कान एक पैर और एक हाथ वाला आधा अग जिस तरफ को झपट करके तलवार का वार करता है उस तरफ सफाई होहो जाती है। सहस्रो सिपाहियों के सीस कट कर भूँइ से गिरते जाते हैं।"

उस समय साक्षात् शृगार रस के सरोवर राज्य महलों के आँगन में वीर एवं वीभत्स रस की सरिता उमड रही थी। लाल लाल लोहू के जल में काले काले बाल सेवार से; और सिपाहियों के हाथ पैर मगरमच्छ से, अगुली इत्यादि छोटे छोटे छिन्न भिन्न अवयय झिगुर से और ढालें अथवा हाथी के कपाल अच्छे कच्छे से मालूम होते थे। ऐसी सरिता में किशोरवय शूरवीरों के शीश कमल काली मे और उनके नेत्र दस रस लोभी अली से जान पडते थे। ऐसे सरोवर में कालह केल करता हुआ मत्त मतग स्री लगरीराय अच्छे अच्छे के छक्के छुडा रहा था। इसी तरह घोर घमासान मार काट होते होते लंगरीराय और सुमंत का साम्हना होगया। दोनों में भर जोर बांह भरी। दोनों के हाथ एक साथ एक दूसर पर पडे और दोनों का एक दम वारा न्यारा हो गया। निदान सुमत तो घायल होकर गिर पड़ा लगरीराय के शव का विचित्र कौतुक हुआ अर्थात् उसके शीश का तो पता ही न पड़ा कि कहा गया और उसके धड के जमीन पर गिरते ही एक चील्ह उसे ले उड़ी और उसे लेजाकर पृथ्वीराज के पास जा पटका। इधर जैचद के तोपखाने की तोपें आप से आप चल उठीं, सारी पृथ्वी थर थर कापने लगी मानो बडा भारी भूडोल आया हो। धन्य रे लंगरी राय [illegible] वीर हो गए पर तेरा सा युद्ध न किसी ने [illegible] किया न करेगा। आधे धड से तीन लाख [illegible] सिपाहियों का मुँह मारना सहज नहीं है।

[illegible] युद्ध मे जैचद की तरफ के तीन लाख [illegible] [illegible] हजार घोडे और कई सौ हाथी काम [illegible] [illegible] पृथ्वीराज की ओर से लगरी राय और खेते खँगार खेत रहे। धन्य रे लंगरी राय तुझसा एक तूही था, तूने आधे अग से जैचद की चौकी रोकी आधे अग से महलो के आगन मे हडकप मचा दिया पंगराज के अस्सी लाख में हाहाकार मचा दिया, मत्री सुमंत को स्वर्ग मे बसा दिया और ससार को आश्चर्य्यचित कर अद्वितीय शौर्य्य कर करिसमा दिखा दिया। वाह खूब किया! तू उसी संजम राय का तो पुत्र है जिसने महाबे में अपना मास देकर पृथ्वीराज के प्राण बचाए थे। सच है सिंह के सिंह ही होते हैं।

एक तो सगे भाजे सहसमल का मारा जाना दूसरे राज्यमत्री सुमत का सदा के लिये चल बसना ये दोनो बातें राजा जैचन्द को बहुत खटकीं। हाय! शत्रु के एक सामत ने इतना कर दिखाया। इसी सोच विचार में पडकर जैचद विकल हो उठा। जैसे किसी तेजस्वी तपसी के कारण इन्द्र का इन्द्रासन डुलने लगता है वैसेही जैचन्द के जी को चैन नहीं था। उसने उसी समय नगर कोतवाल रावण को बुलाकर कहा कि तुम मुसल्मानी सैनिकों को लेजा कर पृथ्वीराज को अच्छी तरह से घेरो चाहे जो हो पर वह निकल कर जाने न पावे मैं स्वय उसे पकडने के लिये आता हूं। खबरदार। सावधान।

रावण ने राजा जैचन्द की ऐसी आज्ञा पाकर फौरन अपनी फौज में हुक्म सुनाया। उसने कहा कि महाराज जैचन्द पृथ्वीराज को पकडने के लिये स्वय सज रहे है और मुझे आज्ञा है कि तुम लोगों को साथ लेकर गगा किनारे घेरा डालूं। रावण के ऐसे वचन सुनकर उसके सिपाही बात की बात में अपने अपने हथियारों से सज कर इस तरह आ जुटे जैसे किसी योगी की समाधि भंग करने के लिये रम्भादिक अप्सराएँ उत्सुक होकर पृथ्वी पर आने को उद्यत होती है। [illegible]

[illegible]

आकाश को जीतने के लिये पृथ्वी में सहस्त्रों मगल ग्रह अजे हों। जैसे वायु के वेग से बद्दल छिन्न भिन्न हो जाते हैं, अत्यन्त शोक तथा मद की झोंक में सब होश भूल जाते हैं और राज्यमद में आकर अपने पराए एव न्याय अन्याय का ज्ञान नहीं रहता वैसे ही उन सिपाहियों के रणगगा स्नान करने से कलक एव पाप पुञ्जों का पता नहीं रहता। धर्म से अधर्म और यश से अपयश मिट जाता है अथवा जैसे वीर लोग अहिंसा धर्म को, भ्रमर चपे की सुगंधि को और तपस्वी सब प्रकार के भोग विलासों को त्याग देते हैं वैसेही रावण और उसके साथ के सिपाही उस समय जीवन की आशा छोड़-कर पृथ्वीराज को पकड़ने के लिये चल पड़े।

आगे आगे रावण और उसके पीछे पीछे राजा जैचंद इस तरह चले जाते थे जैसे अरुणोदय के पीछे सूर्य्य और बाणों की बौछार के पीछे धनुर्धर अर्जुन का रथ उसकी सेना के बड़े बड़े दँतारे हाथी तो ऐसे मालूम होते थे जैसे अनहद नाद हो रहा हो और बीच बीच में लोह की खडखडाहट स्वर्ग मे देवताओं के देवालयों की घरियार बज रही हो। हाथी सुंडें उठाकर घनघोर गर्जना करते और चिघाडें मारते, अत्यन्त तेजपुज अचचल अश्व खुरी करते, ठीं देते और बन्दर की तरह छलागें मार मार कर वायुवेग की खबर लेते थे। उन पर अकड कर बैठे हुए सहज स्वभाव क्रोधी बलवान जवान सवार भी लाल आखें किए फूले अग नहीं समाते थे, पर कपूत कूर कायरों के तो कलेजे बेकाम हुए जाते थे। जैचद के साथ के राठौर राजपूत योधा एक तो सहज स्वभाव ही से अत्यन्त क्रोधी थे पर इस समय तो मानो जलती हुई अग्नि में घी डाल दिया गया। एक बडे भारी हाथी पर बैठा हुआ राजा जैचंद बार बार यही कह रहा था कि भला यह पृथ्वीराज रूपी शत्रु राठौर कुल को हरा कर जाने न पावे। उसकी ऐसी बातें सुनकर सैनिक लोग जैजेकार शब्द करते हुए धरो मारो पकड़ो आदि पुकारते थे। उस कर्कश रव के मारे यहा पर कान देना कठिन था।

घर छोड परदेस में थे। आरंभ में ही आधा अग लगरीराव मारा गया, चारों ओर से हजारों शत्रु मार मार करते चढे चले आरहे थे इत्यादि यह सब कुछ था पर वाहरे पृथ्वीराज! जिसके कान पर अब भी जूँ नहीं रेंगती थी। उसने हँस कर कहा "कवि-चन्द यह तो बतलाओ इतना बडा राजा जैचन्द यह पंग क्यों कहलाता है। इस पर कविचंद ने उत्तर दिया कि महाराज जैसे पग अर्थात् लगडा मनुष्य बिना फिगुरी के सहारे कदापि चल फिर नहीं सकता वैसेही गगा यमुना के द्वाब पर स्थापित राजा जैचन्द का दल अचल है, एक बार फिगुरी स्वरूप दोनों नदियों की बाढ़ से इसका दल आध कोस तक वह गया तभी से यह दल पगुरा या राजा पग कहलाने लगा।

जैचंद की आज्ञानुसार रावण ने सब रास्ते तो इस तरह से नाथ रक्खे थे कि कहीं से हवा के निकलने का सांस नहीं था। उधर से साठ हजार मुसल्मान बहुत से राजपूत और कई हजार मतवारे हाथियों की भीड़ लिए हुए जैचद पहुचा। यह देख कर सच्चे स्वामिसेवी सामत सेना में से सलख प्रमार, कनक राय रघुबंसी, लक्खन बघेला, पहारराय भाटिया, और पचाइन चहुआन ये पांच सरदार अग्रसर हुए। उस समय यद्यपि जैचद के साथ में तत्काल मत्री पद पर स्थापित हुआ उसी का भतीजा कन्हराय भी उपस्थित था और उसीने पहिली पसर करने की इच्छा की पर जैचंद ने उसे रोक दिया और पहार खा गोरी सर्दार को आज्ञा दी कि वह सात हजार मुसल्मान सिपाहियों के साथ धावा

(१) वह लकड़ी जिसके सहारे लँगड़े लोग चलते हैं। इसे आज कल बैसाखी कहत है।

(२) पाठकों! पहार खां, इस नाम पर आश्चर्य न कीजिएगा। जैचन्द की सेना के मुसल्मान तुर्किस्तान या अफगानिस्तान से आए हुए नहीं थे-वे यहीं पर मुसल्मान हुए थे।

को और शेष मुसलमान सेना उनकी सहायता पर रहे। स्वामी की ऐसी आज्ञा पाकर वे वृक्ष के समान बड़े बड़े डील डौल वाले नमकहलाल मुसल्मान जवान दर्पण के समान चमकते हुए शस्त्र निकाल कर अल्ला अल्ला का हल्ला मचाते हुए टिड्डी दल की तरह उलट पड़े। इधर से अपने अपने घोडो को एड़ें देकर वे रणोन्मत्त पाचो सामत भी उनको रोकने के लिये आगे हुए। सोमेश्वर के सुपुत्र राजा पृथ्वीराज रूपी सूर्य्य पर यह पग सेना साक्षात् राहु स्वरूप थी। पृथ्वीराज के साथी लोग अपने स्वामी की रक्षा करने पर तन मन से उतारू थे; पर सच पूछिए तो उस समय उनका रक्षक एक मात्र मोर-मुकुट वाला ही था।

उस घमासान के समय वह युद्धस्थल साक्षात् नवो रसों का नौचौकिया महल हो रहा था, जहाँ नाचते हुए भूत बैताल अद्भुत स्वरूपधारी कविचद रौद्र रस मे रँगा और कायर भयानक रस मे डूबे थे। हाय हाय करते हुए घायल करुणा और परस्पर वार करते हुए शूर रुद्र रूप थे। उस समय भी खुशी मे हँसता हुआ सलख प्रमार हास्य का और पड़े हुए घायल वीरों के पजर से निकाला हुआ मास मज्जा वीभत्स रस का रूप दिखलाते थे। मर कर मुक्ति पाए हुए योद्धा शान्ति रस के स्वरूप थे, और आकाश से पुष्प वर्षा करती हुई अप्सराए तो साक्षात् शृगार रस की मूर्ति ही थीं।

उधर तो जैचद का दल बादलो की तरह चढ़ा [illegible] रहा था। इधर पृथ्वीराज ने अपने [illegible] से कहा कि भाइयो यदि आप थोड़ी देर [illegible] पग सेना का मुकाबला करो तो मै जाकर [illegible] नगर को तर ओरसे देख आऊ। यह [illegible] कर सामन्तो ने कहा कि हम यहा शत्रु [illegible] लड़ेगे, पर हमारा यह धर्म नहीं है कि [illegible] हम आपको अकेले जाने दे। तब [illegible] आप लोग इस [illegible] की चिन्ता न [illegible] है जिसने यह [illegible] [illegible]

चर अचर पदार्थों में व्याप्त है। तुम लोग इधर की सम्हाल रखना मै जरा गगा जी का दर्शन कर आऊं। यह सुन कर काका कन्ह चौहान से न रहा गया। वह खिसिया कर बोला "रे मूर्ख! यदि तुझे इसी तरह अकेले फिरना था तो हम लोगों को किस लिये साथ मे लाया। अरे क्यों जान बूझ कर हमारे माथे कलक का टीका लगाता है। यदि वहीं कुछ बन बिगड़ गई तो तेरा तो क्या सभरीवश की बदनामी होगी।" इसका पृथ्वीराज ने कुछ भी उत्तर न दिया। सब लोगो के समझाने बुझाने और इतने बड़े पग दल के दर्बार के भय ने राजा पृथ्वीराज के हृदय पर इस प्रकार कुछ असर न किया जिस प्रकार चिकने घोड़े पर पानी की बूँद नहीं ठहरती। सबके रोकते रोकते पृथ्वीराज घोड़े पर सवार होकर अकेला ही कन्नौज नगर के दक्षिण प्रान्त की तरफ चल दिया और घूमता फिरता एक ऐसे स्थान पर जा पहुचा जहा गगा के किनारे एक ऊचे महल के छज्जे पर दस सुदर कोमलाङ्गी स्त्रियाँ जैचन्द के दल के जुझाऊ बाजो का रव सुन कर उत्साह मे उझक उझक कर देख रही थीं कि कहा क्या हो रहा है।

इधर तो चहुआन घोड़े पर चढ कर चलता हुआ, इधर जैचद की फौज ने कविचन्द के सिरायचा को चारों ओर से घेर लिया। उस समय पग सेना की सजावट का तमाशा देख कर सुरेश भी शाकित हो रहा था। पैदल और धनुर्धर सिपाहियों की कौन गिनता करे। उस सेना में अस्सी लाख सवार और अस्सी हजार हाथी थे। उनके बीच में विराजित राजा जैचद बार बार यही कह रहा था कि सब सामन्तो [illegible] पृथ्वीराज [illegible] पकड़ लिया जाय। [illegible]

[illegible]

जैचद की सेना की ठोकर राजा पृथ्वीराज के सामन्तों के सिवाय और कौन मोड सकता था। इस अस्सी लाख सेना ने दस दस लाख के आठ भाग होकर चहुआन के सामन्तों को आठों दिशाओं से घेर लिया। इस थोडी सी जगह में इतनी बडी फौज इस तरह ठुस कर व्यूहबद्ध हुई कि सिपाहियों के आपस में ही हाथों से हाथ पावों से पाव और बालों से बाल उलझ रहे थे विशेष कसमस के कारण परस्पर घिस घिसा कर सैकड़ों हाथियों के भेले चूर चूर होकर धूल में मिल गए। अधिक कहां तक कहें दस कोस पर्य्यन्त हाथी के खोसों की कतार के सिवाय और कुछ भी नहीं देख पडता था। उस समय उस शोभायमान महतपुर की हजारों हवेलियां धूल में मिल गईं बाग बगीचे उजड़ गए, जल के स्थान में स्थल, और थल की जगह जल हो गया।

उस समय दसों दिशाओं के दिग्पाल पृथ्वी को दाँतों से दबाए हुए थे। अधिक भार के कारण शेषनाग की गरदन टूटी जाती थी। सूर्य्य दृष्टि से लोप हो रहा था, कमठ सटपटाता हुआ गरदन सिकोड़ कर रह गया था और सुमेरगिरि चूर चूर होकर गगा की धूल और रेणुका बन रहा था, वह रेणुका शिव जी की जटाओं से झर कर उनके गले में डोलते हुए सर्प के सिर पर पडी। सर्प ने जो फन उठा कर फुफकार भरी तो चद्रमौलि के चन्द्रमा से अमृत झर पडा। वह अमृत विन्दु उनके आसन के व्याघ्र चर्म पर पडा जिसमे वह सजीव होकर दहाड उठा। सिंह की दहाड़ सुन कर बूढ़ा बैल भाग खडा हुआ जिससे भूतनाथ सदा शिव की समाधि भग हो गई। अस्तु उन्होंने जब क्रुद्ध होकर तीसरा नेत्र खोलने की इच्छा की तो तीनों लोक चौदहों भुवन और इक्कीसों ब्रह्माड में महा हाहाकार मच गया। सुर मुनि गंधर्व अप्सराएँ और यक्षादि आकाश से पुकार कर कहने लगे हे जैचंद ऐसा उत्पात क्यों करता है। देख तेरी सेना के आतक से तीनो लोकों में त्राहि त्राहि हो रहा है। दुर्गम गिरि दब कर चूर चूर हुए जाते हैं। धरती धँसी जाती है। समुद्र सूखा जाता है। वाराह भगवान खीसे पर नजर लगाए हुए हैं और कमठ बड़ी कठिनता से घडी पल पूरे कर रहा है। वाह तेरी चढ़ाई क्या है मानो प्रलय का नमूना है। नहीं! नहीं!! सब तरह से प्रलय के सामान प्रस्तुत हैं। यदि तेरी विकट सेना के आतक में आकर दिग्गजों ने दांत उठा लिए तो वाराह अपने एक खीसे पर सब भार कदापि न सह सकेगा। जो वाराह ने पृथ्वी को छोड़ दिया तो शेष को भी बस गए गुजरे समझ लो। रहा अकेला कच्छप सो वह भी विचारा पानी में गोता लगा जायगा। बस लीजिए प्रलय हो चुका! इसलिये हे जैचंद जरा शान्त हो। तेरा घेरा हुआ पृथ्वीराज जायगा कहां!

जैचद की सेना के साथ साथ अन्यान्य राजाओं की बनी ठनी सेना तो ऐसी मालूम होती थी जैसे पूर्व दिशा में टिड्डी दल उमड़ रहा हो। उन राजकुमारों के अत्यन्त तेज और फुरतीले घोडे ऐसे मालूम देते थे जैसे अभी सूर्य के रथ में से खोल कर लाए गए हों। उनकी तेजस्विता के कारण उन्हें हरिण से उपमान दे सकते थे क्योंकि हरिण एक बनैला पशु है। उनके सवार दुधारा झेलने वाले थे। खिंची हुई बाग होने के कारण उनकी गरदन का घूँघट गुने की तरह गोल बन रहा था। फेन गिराते हुए उनका उमंग से हिनहिनाना ऐसा मालूम होता था मानों सैकड़ों मोर्चगे या एकतारे बज रहे हों। सर्वाङ्ग लोहे की पाखरों से मढ़े घाट औघट सर्वत्र हवा से बात करते हुए वे बहुत भले मालूम देते थे। उनमें अरब के अरबी, काठियावाड़ के कठील और कच्छ के कच्छी आदि सब तरह के अच्छे अच्छे खेत वाले चार हरिया, सुरग, कुम्मैत, कुल्ला, समद, अबलख, सिरगा आदि नाना रग के घोड़े थे। वे हजार रोकने पर भी धरे बाँधे नहीं रहते थे। जहाँ कहीं जरा देर के लिये खड़े हो जाते थे वहाँ की जमीन में खुरों से

खोद कर खड्ढे कर देते थे और बिजली की तरह हाथी की किलावों पर लाफ जाना तो उनका सहज करतब था। ऐसे घोड़ों की पीठों पर बैठे हुए कमल की गुलाबी और खंजन सी बड़ी बड़ी आँखों और चन्द्रमा से चमकदार सुन्दर चेहरे वाले किशोर वय राजकुमार तो ऐसे सुशोभित होते थे मानों कन्नौज नगर में आज साक्षात कामदेव ने अवतार धारण किया हो। ऐसे सैकड़ों छत्रधारी और राजकुमारों के बीच में स्थित राजा जैचंद का दल बल पारावार रहित समुद्र के जल के ऐसा जान पड़ता था। उस पंग सेना में एक साथ बजते हुए सोलह हजार निशानों का स्वर ऐसा जान पड़ता था जैसे दसों दिशाओं में घन घोर मेघ गरज रहे हों, और सबेरे के समय सूर वीरों के शरीर पर के सनाह तथा उनके अस्त्र शस्त्र तो ऐसे चमचमा रहे थे जैसे साक्षात् सौदामिनी हो अथवा गंगा स्नान करके सूर्य्य भगवान स्वयं किनारे पर खड़े हों।

ऐसी बड़वाग्नि रूपी पंग सेना में अद्वितीय वीर लंगरीराव तो पहिलेही आहुति हो चुका था। उसके बाद पहिले कहे हुए पांच सामन्त आगे हुए थे, परन्तु जब देखा कि पंग सेना का दल बल अचल एवं कठिनता से जेय है तब चंदपुंडीर का भाई पहाड़राय तूंअर अपने भाई और बेटों के सहित, भानराय कछवाहा, सांखुला सूर और कहरराय मांगी ये सरदार और भी मैदान पकड़ गए। जिस समय ये सामन्त म्यान से तलवार निकाल कर मार मार करते हुए शत्रु सेना पर टूटे उस समय अच्छों अच्छों की अक बक भूल गई। सैकड़ों सिपाहियों के सिर धड़ से अलग हो कर गिरने लगे, लाश पर लाश पड़ने लगी जहां तहां रक्त के कुंड भर गए, किसी का सिर कट गया और कबंध मार मार करता, किसी का पेट फट गया और आंते निकल पड़ी तो वहीं फिर चला कर वे धन हो रहे। और कोई [illegible] मूर्छित होकर मरे पर भी पीछे पैर न देते

सामन्त लोग जिस किसी मतवाले हाथी के मथार पर हाथ मार कर उसे बीच मे कलीदा मा फाड देते थे तब ऐसा जान पड़ता था मानो चंद देव ने वीरों के लिये मुक्ति का मार्ग खोल दिया हो। इसी तरह घमासान मार होते होते पंग सेना में से रुद्र प्रताप नामक एक बड़ा भारी सरदार काम आया। और पंग सेना का एक कोट भी टूट गया जिससे सारी सेना में हलचल मच गई पर सामंत बच्चे बाण से बाज न आए, सारे दिन युद्ध होते होते सध्या होने को हुई पर धारा नरेश राजा भान बराबर उसी तरह करारे वार करता रहा। घड़ी इधर तो घडी उधर, इसी तरह लोह पर लोहा बजाता हुआ चौरंग चाचर सी खेलता रहा। जब बराबर बारह घंटे के परिश्रम से श्रान्त होकर सूर्य्य भगवान अस्ताचल को प्रयाण करने लगे तब इधर राजा भानु ने भी समर में शीश देकर भानु भगवान को अपने जीव का दान देकर यहां से विदा किया।

उस समय कन्नौज नगर रूपी उपवन में रण रञ्जित पंग सेना ने वसन्त ऋतु का समा बाँध रक्खा था। मतवाले हाथियों के गंडस्थलों मे झड़ता हुआ मद कुसुम सौरभ सा बह रहा था। कायर कपूत पीले पड़ कर पुराने पत्तों की तरह पलायमान हुए जाते थे। वीरों के रतनारे नेत्र और कर पल्लव मानों कोपलें निकल रही थीं। घावों में भर भर चलता हुआ रुधिर मानो भौंरों का गुंजार था, कड़खे गाते हुए वीर ऐसे जान पड़ते थे मानों कू कू कर कोयलें बोल रही थीं। सयानों के रंग बिरंगे वस्त्र वही भाँति भाँति के फूल फूल रहे थे और समस्त पंग सेना में ही त्रिविध वायु थी।

सायंकाल का युद्ध बन्द हो जाने पर राजा जैचन्द के पुत्र ने अपने पिता के [illegible] विविध प्र[illegible] किया और [illegible] हुआ। जैचन्द ने उससे पूछा कि क्या हुआ तब उसने उत्तर दिया कि [illegible] युद्ध हुआ कि कुछ [illegible] नहीं। [illegible]

सामन्त लोग तो ऐसे पराक्रमी है कि जैसे महाभारत मे पाण्डव लोग हो गए है। तीन घडी पर्य्यन्त तो ऐसा युद्ध हुआ कि मुझे अपना बिगाना नहीं सूझा। परिणाम यह हुआ कि न तो अपना दल बिचला न सामन्त लोग पराजित हो सके। अपनी तरफ के कुल बारह हाथी और दो हजार योद्धा खेत रहे पर पृथ्वीराज की तरफ के कुछ थोडे से सिपाही मारे गए है। यह समाचार सुन कर जैचन्द के क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने उसी समय मत्री को बुला कर कहा कि मै स्वय चढ़ाई करूगा, देखो रात भर पहरे में कोई गड़ बड़ न पड़ने पावे।

इधर तो मार काट हो रही थी उधर राजा पृथ्वीराज चहुआन मछलियो का तमाशा देखने मे लगा हुआ था। सयोगिता की एक दासी उससे कहने लगी कि हे राजकुमारी कबिचन्द के साथ में यहॉ पर पृथ्वीराज आया हुआ है और यह बात राजा जैचंद को मालूम हो गई इस लिये उसने सुमत को आज्ञा दी कि वह जाकर पृथ्वीराज को पकड़े। स्वामी की आज्ञा पाकर सुमन्त ने सहस्त्रों शूर वीर सिपाही हाथी घोडे रथी पदाती और धनुर्धारी आदि चतुरगिनी सेना लेकर कबिचद के डेरे जा घेरे और एक दल ने पृथ्वीराज को पकड़ने के लिये पसर की। अतएव उधर से सामन्तों ने अपने बचाव का उपाय किया। सब लोग तो घन व्यूह होकर एक जगह जम कर रह गए पर एक लगरीराय नामक सामन्त तलवार फटकारता हुआ पग सेना पर झपटा। इधर से भी नौबत नगारे और सहनाई बजाते और मार मार करते हुए बीर लोग बढ़े, लगरीराय घिर गए। परन्तु उस बाके बीर लगरीराय ने ऐसा पराक्रम किया कि जिसको देख कर देवता भी चकित हुए। घड़ी भर मे पग सेना के सहस्त्रों सिपाही काम आगए। जब उसका ऐसा पराक्रम देखा तो मत्री सुमत स्वय घोडे पर से उतर कर उसके साम्हने जा पहुचा। दोनों ने अपना अपना अच्छा रण कौशल दिखाया। होते होते सुमत के एक हाथ मे लगरीराय ढेर होकर गिर गया। परन्तु सुमन्त को भी इस योग्य न छोड गया कि वह खेत में खडा रह सके, इसलिये पग सेना के सिपाही मत्री सुमन्त को उठा कर मोरचे पर मे चल दिए। यह सब समाचार जानकर जैचद ने राजकुमार कन्ह को आज्ञा दी कि वह स्वय सामन्तों पर पसर करे और जिस तरह से हो सके पृथ्वीराज को पकड लावे। अस्तु जब वह राजकुमार स्वय बडा भारी दल बल लेकर सामन्तों पर चढ आया तब इधर ग्यारह सामन्त अग्रसर हुए और सारे दिन उन्होने ऐसी मार की कि इतनी बडी सेना उन थोडे से सामन्तों के जुट्ट को फाडने में भी समर्थ न हो सकी। उनका पराक्रम देखकर अपने अपने बिमानों पर चढे देवता भी आकाश से जयध्वनि करते हुए पुष्पों की वर्षा कर रहे थे।

जब राजा पृथ्वीराज डेरे से निकल कर अलकापुरी के समान सुसज्जित और सुखमय कन्नौज नगर मे पहुँचा तब देखता क्या है कि सब साचे में ढले हुए एक से एक बढ कर सतखडे मकान आकाश से बातें कर रहे है। जिनकी साम्हनी सलामी पर नाना प्रकार के गुबज लगे है, और गोप महाराबें झारवी झरोखे और जालिया कटी हुई है। जिनके बडे बडे दरवाजे बडी बड़ी कुर्सिया और बडे बडे सुविस्तृत ऑगन ह। उनके छज्जों पर तथा आगन आदि में जहा तहा मौके से बेले छाई है, फुलवारी के गमले रक्खे हैं और सुन्दर स्वच्छ जल से भरे फौवारे झरने के समान झर रहे है। आस पास तबेले भी है जिनमें हाथी घोडे बैल तथा और भी किस्म किस्म के पालतू जानवर बंधे हुए है। पहिला खड साधारण विस्तार के लिये, दूसरे खड मे बैठक है और तीसरे मरातिब मे चित्रसारी है। चित्रसारी के द्वार की किवाड़ी पर की जाली और महराबो पर सोने की सच्ची नक्काशी की हुई है और जहा तहा बीच बीच मे नग भी जडे हुए है, जालियों में जडे हुए हीरे ऐसे भले मालूम देते है जैसे कन्नौज नगर की सुखमा का आनन्द लेने के लिये आकाश

से तारागण उतर आए हों। उन गोखों और झरोखों में बैठी हुई मृगनैनी स्त्रियां मोती भर कर मांगे सम्हार रही है। उन आनन्द मग्न हंसती खेलती और सहज स्वभाव से इठलाती हुई महिलाओं के सब भाव मुख से कहे नहीं जा सकते है, उनके जडाऊ जेवरों और रग बिरंगे वालों की चमक दमक देख कर आंखों में चकाचौंधा आती थी। वे रति कीसी कलाएं सुन्दर महिलाएं, बेल बूटे युक्त किनारादार रेशमी साडी पहिने थीं माथे पर झबिया झूम रही थी। गले में दोहरी पोते के छुटे और चम्पकली खुल रही थी, कमर में क्षुद्र घाटिका और पैरो मे पैजनी पहने हुए थी।

ऐसे विचित्र चरित्र देखता हुआ राजा पृथ्वीराज तो गगा किनारे जाकर मछलियों के तमाशे में भूल रहा परन्तु राजा जैचन्द को पृथ्वीराज का पकड लेना कब भूलता था? राजा पृथ्वीराज कन्नौज नगर की शोभा देखता भालता हुआ नगर के दक्षिण प्रान्त मे गगा किनारे पर स्थित संयोगिता की चित्रसारी के पास जा पहुँचा और गगाजी की तरल तरंगों का आनन्द लेने लगा। इसी बीच में घोडे के किसवार का एक मोती टूट कर गगा में जा गिरा, उसके ऊपर बहुत सी छोटी छोटी मछलियाँ टूट पडी और आपस मे लडकर चोटें खाती हुई कभी उसे ऊपर ले आती कभी नीचे लेजाती थी। यह तमाशा देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने घोडे की किसवार के मोती तोड तोड कर गगा मे फेकना शुरू किया।

इधर यहा दासी की कही हुई कथा सुनकर जब संयोगिता ने जाना कि पृथ्वीराज यहा आगया है तब आज यह दोहरा सूर्योदय कैसा? नफीरी शहनाई रणतूर आदि जगी निशानो का रव सुनकर उसी समय पृथ्वीराज ने भी गरदन उठाई, तब देखता क्या है कि गज पर सिंह, सिंह पर पर्वत, पर्वत पर भ्रमर भ्रमर पर चन्द्रमा, चन्द्रमा पर सुवा, सुवा पर मृग, और मृग पर दो चाप चढाए हुए मनसिज स्वय विराज रहा है, तात्पर्य्य यह कि संयोगता और पृथ्वीराज की आँखे चार होगई और दोनों का मन एक दूसरे पर ऐसा जा लगा जैसे चुम्बक पर लोहा जा चिपकता है।

जो वय बुद्धि उस समय संयोगिता की थी उसी वय बुद्धि की उसकी सहेलिया भी थी सब पन्द्रह पन्द्रह सोलह सोलह वर्ष की चचल नेत्र और चचल मनवाली थी उनके रोम रोम में चपलता भरी हुई थी। उनमें से कोई भी खेली खाई और जमाने की देखी भाली प्रौढा नही थी। अस्तु जो गति संयोगिता की थी सो उन सबकी थी। वे बडी देर तक तो टकटकी लगाए पृथ्वीराज को देखती रही फिर कोई कोई कहने लगी "अहा कैसा सुन्दर पुरुष है! मानो भानु भगवान की कला है" कोई कहती, नहीं री कामदेव का अवतार है, कोई कहती यह तो मनुष्य है नहीं कोई दिव्य योनि नाग या गन्धर्वों में से है, कोई कहती चलो बैठो दुनिया में एक से एक बढ कर पड़े है। ऐसे ऐसे सुन्दर सैकडों मनुष्य पड़े होंगे। कोई कहती अरी मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि यह कहीं वही राजा पृथ्वीराज न हो जिसके प्रण पर संयोगिता प्राण न्योछावर कर रही है। उन सहेलियों ने और जो कुछ कहा वह सब तो संयोगिता ने सुना हो

लगीं और दोनों आखों के ऊपर की पलकों की बरौनी तो भोहों से ऐसी लग कर रह गई जैसे किसी ने उन्हें वहीं चिपका दिया हो। बड़ी देर लोथिर रहने के कारण गढ़ों पर भी पानी झलकने लगा। अस्तु संयोगिता का यह सब हाव भाव उसकी सहेलियों ने परख लिया कि यह पुरुष वही पृथ्वीराज चौहान हैं जिस पर संयोगिता जी जान से मर रही थी। वे कहने लगीं "हाय हम अनजान क्या जानें। प्रेमियों के मन परस्पर एक दूसरे को आप पहिचान लेते हैं। धन्य है भगवान प्रेम का पथही निराला है।"

उनमें भी जो कुछ सयानी और समझदार थीं वे सयोगिता से बोलीं कि हे राजकुमारी आपका हाव भाव देखकर हमें तो ऐसा मालूम होता है कि आपका मनहरण राजा पृथ्वीराज यही है। यहा कोई गुरुजन भी नहीं है जिसकी लज्जा करना हो कहिए तो पुछ पठवाया जाय कि आप कौन है। यह सुन कर सयोगिता सहम कर रह गई कुछ ठहर कर उसने कहा क्या करूँ इस समय माता पिता की बात स्मरण आती है और हृदय की वेदना तो जैसी है सो जीही जानता हैं। हाय न जाने इस करम में क्या लिखा है। मेरी तो इस समय सॉप छछूँदर की गति होरही है। तब सखियों ने उत्तर दिया "अरी वीर क्यों बावरी हुई है? धीर धर जो करम लिखी होगी सो तो होगी ही फिर हाथ की बिल्ली छोड़ कर म्याओं म्याओं क्यों करना? यह सुनकर लम्बी सास लेते हुए सयोगिता बोली "सच तो कहा यदि यही वह चित चोर है तो जीते जी उससे दो बोल बोल भी तो लू।"

छप्पय।

दष्ट फंद संजोगिदास खिलवार हथ्थ दिय।
मुगबन्धन चहुआन पुब्ब आयान खेद किय॥
पुब्व रूप गिद्धीव मद्ध मनमथ्थ सम्भारिय।
भय मृग पग नरिन्द चन्द बन्धन बन डारिय॥
हक्कैतिहक्क हाका सखिय मूर गौप अपबन्धासिख।
बेधन्त आनि ब्राहन भुअल भृगुकसीस कामग इख॥

निदान सयोगिता ने एक थाल में मोती भरकर एक दासी को दिया और कहा कि तू स्वयं कुछ न बोलना यदि वह पृथ्वीराज है तो तुझ से आपही पूछेगा। सयोगिता की ऐसी आज्ञा पाकर वह दासी चुप चाप पृथ्वीराज के पीछे आखड़ी हुई और वहीं से मुट्टी भर भर मोती उसके हाथ में देने लगी। देते देते थाल के सब मोती चुक गए तब उसने गले का हार तोडकर मोती देना आरम्भ किए परतु जब वे भी चुक गए तब उसने गले का छूटा तोड़ कर मुट्टी भर पोत राजा के हाथ पर रखदी। ज्योंही राजा ने पोत देखी कि वह बड़े आश्चर्य में पड़ गया। उसने चकित चित होकर जो पीछे देखा तो एक नवयौवना स्त्री खडी है। पृथ्वीराज ने उससे पूछा क्या तू अप्सरी है अथवा कोई नाग कन्या या देव कन्या है? उसने कहा नहीं मै पगराज के रनिवास की दासी हू और इस समय उस राजकुमारी सयोगिता की टहलनी हू जिसने सम्भरीनाथ राजा पृथ्वीराज चौहान पर तन मन न्योछावर कर रक्खा है। महाराज वह चन्द बदनी मृग लोचनी किशोर वयस्का राजकुमारी रात दिन उसी सम्भरीनाथ के ध्यान में मग्न रहती है। यह कहकर ज्यों ही दासी ने संयोगिता की ओर हाथ का इशारा किया कि वह वह है त्योंही पृथ्वीराज की भी वही दशा होगई जो पल भर पाहिले सयोगिता की थी। पृथ्वीराज के होठ कॉपने लगे उन्हें जॅभाई आने लगी और उनके नेत्रों में जल भर आया। दासियों सहित संयोगिता तो यह सब चरित्र पाहिले से देख रही थी बस इस समय यद्यपि दोनों के शरीर दूर दूर थे पर दिल एक में मिल गए थे। यह हाल देख कर जब और सहेलियॉ सयोगिता की इच्छा जानने के लिये चौकन्ना होकर इधर उधर देखने लगीं तो वह आपही आप बोली क्या कहूँ कुछ कहते नहीं बन आती। मेरे गले में तो गुड भरा होसिया है! सयोगिता का इतना कहना था कि चट से दस दासी दौड़ पडी और उन्होंने पृथ्वीराज को चारों ओर से घेर लिया। उस समय ऐसा मालूम होता था मानो रुद्र को वस

करने के लिये कामदेव ने धावा किया हो। जब उन्होंने पृथ्वीराज को घेर लिया तब सब एक स्वर से बोली वाह विधाता बडा सुघड है, कैसा हंस का सा जोड़ा मिला दिया, जिसके लिए संयोगिता आज बरसों से तरस रही थी सो आप घर बैठे आगए।

हमारे पूर्व्व महर्षियों ने जो इस संसार की सागर से उपमा दी है और स्त्री को उसका एक नमूना माना है सो बहुतही ठीक है। हमारे इस अभिनय के सम्बन्ध में संयोगिता का स्नेह ही सरोवर का अगम जल था। हाव भाव कटाच्छादि सुख दुःख के हेतु स्वरूप सरोवर के आवर जावर थे, उसके मीठ मीठे वचनही सिवाल, कुच तट पर क्रीडा करते हुए चक्रवाक थे, बडे बड़े नेत्र कमल और भ्रमरस्वरूप और प्रीति का झीना तार सोई मृनाल था जिसमें बड़े बडे वीरों से अजेय राजा पृथ्वीराज रूपी मत्त मतंग सहजही बँध गया।

पृथ्वीराज के चित्रसारी में पैरं देतेही फौरन ब्याह की तयारी होने लगी। पर वहा उन सखी सहेलियों के सिवाय कोई था भी नहीं जो विवाह करावे और विवाह की साची दे। अस्तु वे सहेलियाँ परस्पर कहने लगीं यहाँ किसी की आवश्यकता भी नहीं है अन्तरिक्ष में स्थित देवता ही हमारे साची हैं, और प्रीति की रीतिही कुछ दूसरी होती है, ऐसे दम्पति विवाह सदा गन्धर्वविवाह होते हैं। जैसे पहिले रुक्मणी और गोविन्द का, नल और दमयन्ती का गन्धर्व विवाह हो चुका है उसी प्रकार पृथ्वीराज और संयोगिता का गन्धर्व विवाह होजाय। सखियों की ऐसी बातें सुनकर दोनों के चेहरे ऐसे खिल उठे जैसे चन्द्रमा को देखकर कुमोदिनी खिल उठती है। बस फिर देर क्या थी संयोगिता ने राजा का हाथ पकडा, राजा ने संयोगिता का हाथ पकड़ लिया और उसे अपने बाएँ पार्श्व में बैठा लिया और सखियों ने गोठ जोड दी और बैठ कर मंगल गान करने लगी।

इस प्रकार से विवाह हो चुकने पर गोठ छोड [illegible] राजा पृथ्वीराज डेरे पर जाने को तय्यार हुआ कि राजकुमारी संयोगिता के शरीर में काटो तो खून नहीं। उसने निराशा भरी नजर से पृथ्वीराज के मुख की ओर देखते हुए विदाई का पान दिया और आपही आप बोली "हा दुर्दैव! जिसके लिये बरसों से बाट जोह रही थी आज वह हाथ में आकर भी चला जाता है, यह कहकर उसने अपनी छाती पर घँसा मारा और लम्बी साँस लेकर यह कहती हुई कि हाय स्त्री का जन्म कुछ भी नहीं संयोगिता पछाड खाकर पलग पर से इस प्रकार गिर पड़ी जैसे निराश्रित होकर नई वेली लटक पड़ती है। उससमय संयोगिता का सारा शरीर पीला पड गया और वह पडी पडी थर थर काँपने लगी। परन्तु उसकी दृष्टि पृथ्वीराज पर थी। उसे देखकर ऐसा जान पडता था मानों योग निद्रा मग्न होकर वह अपने प्यार के पूर्व्व सस्कार का ध्यान कर रही हो। उस की ऐसी दशा देखकर पृथ्वीराज भी प्रतिमा की तरह स्थिर रहगया। सच है पृथ्वीराज तो मनुष्य था इस काल में तो वज्र का भी मोम होजाना सम्भव है। उस की सखियाँ भी कह उठीं क्या करे वेचारी जिसे चातक की तरह स्वाति की बूँद मान कर ताक रही थी उसे भर आँखो देखने भी न पाई, जी खोल कर दो बातें भी न कर पाई और वह चलने को कमर कस कर तैयार है। एक तो संयोगिता स्वयं पृथ्वीराज के दिल में बस रही थी उस पर आंखों के सामहने उसकी यह दीन दशा तीसरे ऊपर से और चार औरतों के ताने इत्यादि सब कारणों से पृथ्वीराज की आँखें भी डब डबा आई और वह तुरन्तही दक्षिण से अनुकूल होकर बैठ गया। पर उसे ये बातें भी चैन नहीं लेने देतीं थीं कि मेरे सामन्त पर सेना से घिरे हुए हैं! अस्तु वह बडे सोच विचार में पडा हुआ था कि क्या करूँ क्या न करूँ।

तब तक सामहने गुरुराम आते हुए देख पड़े। इन्हें देखकर पृथ्वीराज के जी में जी आ गया। उसने उसी समय [illegible] को आज्ञा दी कि वे [illegible] गुरुराम के लिए लावें। [illegible]

कता फिर रहा था और मनही मन सोच रहा था कि क्या करूँ कहाँ जाऊँ किससे पूछूँ इत्यादि, तब तक दासियां पहुँच गई और उन्होंने उसे अपने साथ लाकर राजा के साम्हने खडा कर दिया। राजा पृथ्वीराज को देखतेही गुरुराम ने दोनो हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया और कहा "धन्य राजन! वहा वालों को न यहा की खबर है न आपको वहा की खबर है। दोनो ओर का हाल जानने वाले एक मात्र अन्तरिक्ष वासी देवता है। यहा शृगार रस का श्रोत बह रहा है। वहा वीर रसका बाण बरस रहा है। महाराज पगराज के प्रधान सामन्त को मारकर लगरी राव मारे गए। इसके सिवाय इन्दमन, कूरम्भ, दुरजन राय, सलखसिह प्रमार, प्रतापराय तूअर, भीमराय रघुबंसी, जैसिह बघेला और धारा धनी राजा भानुराय इत्यादि कई वीर काम आ चुके है। इस समय और सब कथा कहने का समय नहीं है बस इतने मे समझ लीजिए कि ये सामन्त फिर फिर न मिलेंगे बस देर न करिए चलिए। यह कहकर गुरुराम ने काका कन्ह का लिखा हुआ पत्र राजा के हाथ में दिया और आप एक दासी को बीच में देकर संयोसे बोला "शूर वीरों को समर रूपी सरोवर में स्नान करने का सुअवसर सौभाग्य से हाथ आता है इसमें गोता लगाने से हाल का दुःख तो रहे कई जन्म जन्मान्तर के दुःख दूर होजाते है। इसके तट पर भूत बेताल योगिनी और रम्भादिक अप्सराए सदा निवास करती है। सूक्ष्म केश वही सिवार है और सुकीर्ति रूपी भ्रमर चारों ओर उड उड कर सुकृत की कमाई रूपी कमल कली का रस लिया करते है अस्तु ऐसे सरोवर मे स्नान करने से शूर वीरो का तन मन सब निर्मल हो जाता है।

काका कन्ह का पत्र पढ कर पृथ्वीराज वहा से चट चलही दिया और घोडा बढाते हुए डेरे के पास आ पहुँचा। परन्तु यहा तो कहीं से भी जाने का मार्ग नहीं था चारों ओर पग सेना बारीसी गसी हुई थी। पृथ्वीराज को देखतेहि धरो पकडो करते हुए सैकडों सिपाहियों ने उसे घेर लिया। यह देखकर चहुआन चौकन्ना होगया और उसने अपनी तीर कमान और तलवार सम्हाली और घोडे को एड लगाई कि एक सपाटे में ही पल्ले पार होजाऊँ पर मुसलमान जमात से सात मीर सरदार पृथ्वीराज के घोडे के साम्हने आगए। गुरुराम प्रोहित जो अब तक राजा के पीछे पीछे आता था झपट कर आगे आगया। यह देखकर पृथ्वीराज ने कहा "क्षमा गुरु जी, यहा आपके आगे होने का काम नहीं है आप का आशीर्वाद ही मेरे लिये काफी है।" परन्तु गुरुराम ने यह कहते हुए कि यहाँ हमारा आपका स्वामी सेवक का नाता है पृथ्वीराज के आगे आए हुए सब मीरों को मार गिराया। पीछे मे राजा ने कमान पर बाण चढाया और बात की बात में जल्लाल खा और पीरोज खा दो खानों को मार गिराया। राजा का तीसरा वार खाली गया और ज्योंही चौथा बाण चढाने लगा कि प्रत्यचा टूट गई। तब राजा ने तलवार निकाली और संघटित मीर दल को काई के समान काटने लगा। पृथ्वीराज ने पल भर में मीर दल के सैकडों सिपाही और हाथी घोडे काट डाले और सकुशल अपने सामन्त समूह से जा मिला।

स्वामी का सकुशल देखकर सब सामन्त अत्यन्त प्रसन्नता के कारण हँस पडे। उस समय स्नेह और शौर्य्य के कारण पृथ्वीराज के दोनों नेत्र गुस्से से भरे मतवाले हाथी की तरह लाल होरहे थे। राजा का ऐसा वीर वेष देखकर वे सामन्त लोग इस लिये और भी प्रसन्न थे कि आज हम अतुल पराक्रम करके या तो शूर शिरोमणि स्वामी को प्रसन्न करेंगे और अथवा चल बसे तो अप्सराओं को आलिंगन करेंगे। वाह आज हमारा पराक्रम देखकर सुर नर नाग सब प्रसन्न होंगे। सब सामन्त राजा के आस पास खडे हुए थे। काका कन्ह ने जो साम्हने से आकर देखा तो देखता क्या है कि राजा के कर मे कङ्कण बँधा हुआ है और ललाट पर टीका लगा हुआ है पर गले में मोहनमाला नहीं है। इस पर कन्ह ने मुस्कराकर पूछा "यह बात क्या है।" काका जी के ऐसे वचन सुनकर पृथ्वी-

राज ने नीचा सर करके उत्तर दिया क्या कहू केवल उसी का प्रण नही था मेरी भी प्रतिज्ञा थी और यहा आकर भी प्रतिज्ञा पालन न करता तो क्या कहलाता । परन्तु मुझे तो आप लोग आखें दिखा रहे थे इसी मे उसे वहीं रोती हुई छोड कर चला आया हू । यह सुनतेही काका कन्ह कडक कर बोले, खूब किया । पर यह क्या किया जो बहू को वहीं छोड आए अरे धिक्कार है कोई अपनी स्त्री को भी इस तरह छोड़ता है क्या चिन्ता थी, हम सौ में से जब तक एक भी जीता रहेगा तब तक तुम्हारा कोई बाल बाका नहीं कर सकता । और तुम दोनों को सकुशल दिल्ली पहुँचा देगें । हरे कृष्ण हम सौ राजपूत बच्चे और तुझे अकेली एक स्त्री सहित दिल्ली तक न पहुँचा सकें । सासारिक समृद्धि की शोभा स्त्रियों से है, सुख की साधना योग में है, जम के त्रास में दुःख है और स्नेह से चल चित्त होता है । कामदेव से शोभा बढती है और समर में सुकीर्ति होती है और भय से भीत होता है अस्तु मनुष्य इसी भ्रमनाओं में पडा रहता है । इस समय ससार सुख की मूल स्त्री और सुकीर्ति साधक समर दोनों तेरे साम्हने उपस्थित है फिर भी ऐसी स्त्री जिसका जीवन मरन एक तेरे ऊपर निर्भर है उससे यदि विमुख होजायगा तो लोग क्या कहेगे कि शत्रु के घर मे स्त्री को छोडकर चल दिए इसलिये चाहे जो हो संयोगिता को साथ ले लेना उचित है । पृथ्वीराज का तन मन तो स्वय संयोगिता के स्नेह मे सना हुआ था, काका कन्ह का मिलादन सुनकर वह दग होगया ।

इधर जब से पृथ्वीराज ने पीठ फेरी तब से संयोगिता थोडे पानी में मछली की तरह तलफ रही है । उसकी सहेलियो ने शरीर में चन्दन पोत कर [illegible] भाल कर ज्यों त्योंकर उसे सचेत किया [illegible] बेहाल हो उठी । कभी गोख में झॉकती तो [illegible] पर पड़ी तड़फड़ाती थी । सखिया उसे [illegible] दृष्टी पर वह [illegible] [illegible] किसी तरह न मानी [illegible]

कोई कोई कहने लगीं अरी राजकुमारी तूने भी तो ऐसे को दिल दिया जिसे तेरा पिता तेल में होकर दखता है उसके लिये कहॉ तक कलपेगी जिसके ऊपर हजारों हाथ उठे हुए है । यह सुनतेही सयोगिता ने हाथों से मुँह मूँद लिया और ढाढ मारकर रोती हुई बोली अरी सखियो क्यो जले पर नमक लगाती हो मरे को गाली देने से क्या हाथ आएगा। अन्धा आदमी नहीं देख सकता, गूगा बातं नहीं कर सकता, बहरा सगीत का स्वाद नहीं पा सकता और न निर्बल सबल पर जय पा सकता है । इसी तरह करम लिखी के साम्हने किसी की बुद्धि विद्या एक नही चलती । मैने जो कुछ किया सो गन्धर्व गन्धर्वी के कथनानुसार और मुझे यह भी निश्चय है कि उनकी वाणी फलेगी । हाय गुरुजनों की इच्छा के विरुद्ध माता पिता के मना करते हुए भी जो कार्य्य किया जाता है उसका परिणाम कदापि अच्छा नहीं होता । यह कह कर सयोगिता सिसकती हुई शरद के चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब समान चित्र लिखी सी रह गई। क्षणेक निस्तब्ध रह कर फिर वह [illegible] प्रकार के विलाप वाक्य उच्चारण करती हुई गोख की जाली मे सिर मारने लगी । [illegible] गोख की जाली में तडप तडप कर सिर मारती हुई सयोगिता ऐसी सुशोभित होती थी जैसे पूर्णिमा का चन्द्रमा अग्निशिखा मे युद्ध कर रहा हो । उधर से राजा पृथ्वीराज भी सौ सामन्तों से सजा हुआ [illegible] को चला आ रहा था । वह तो यह तमाशा देख कर मनही मन सोचने लगा, हे यह क्या हो रहा है अग्निशिखा के बीच मे चादनी का प्रकाश कैसा ! [illegible] के [illegible] मे पड कर क्या चन्द्रमा तडप रहा है अथवा मृगतृष्णा देखकर मछली तडप रही है ।

सयोगिता [illegible] [illegible]

[illegible]

है।" तब तक पृथ्वीराज भी आ पहुँचा और बोला "नही दो में से एक भी नहीं है। री मूर्खा क्या कहती है? हम एक नहीं एक लाख है और ऐसे है कि हाथी के दाँत मूली से उखाड ले. उठो चलो' एक घडी पहिले जिसके लिये हाय हाय कर सिर मार रही थी उसे इस तरह कहते हुए साम्हने खडा देख कर सयोगिता सहम गई। वह बोली मै आपके साथ कैसे चलू आपके साथी बहुत थोडे है यदि कहीं मुझे छोड कर भाग गए तो मै दोनों दीन से गई। यह सुनकर राजा पृथ्वीराज ने हँस कर कहा "अच्छा देर न करो और जो इन्ही थोडे से साथियों से समस्त पग सेना को नाश कर दू तब तो प्रसन्न होगी।" इस पर सयोगिता बोली "हे नाथ आपके सब सामन्त मेरे पिता की सेना के साम्हने दाल में नोन है। मुझे आश्चर्य्य है कि आप फूंक से पहाड उडाया चाहते है। मै आपसे पल भर भी अलग नहीं रहना चाहती पर अन्देशा मुझे इतनाही है' यह कह कर सयोगिता सहम कर रह गई और आपही आप कहने लगी हाय मै बडी पापिन हू जो स्वामी की निन्दा करती हूं पर क्या करू समय ऐसा ही है इससे बेबस हू। उस समय साचात् शृगार रस स्वरूप संयोगिता अपना आगा पीछा सोच कर मनही मन मुस्कराती हुई हास्य रस की मूर्ति होगई। उसके वचनों से करुणा रस चुआ पडता था पर उसका वाक्य विलास अद्भुत रस का उद्दीपक था, उसकी हार्दिक दृढता ही वीर, और पिता के भय का आभास भयानक रस का भण्डार था। समर के दृश्य का मानचित्र वीभत्स और सामन्तों के पराक्रम के भाव उसके चित्त मे आश्चर्य्य उपजाते थे पर इन सब बातों से उकता कर जब होनहार के भरोसे ईश्वर को टेक कर रह जाती तब वह साक्षात् शान्ति रस की प्रतिमूर्ति बन जाती थी। कुछ ठहर कर सयोगिता बोली " आर्य्यपुत्र मेरे पिता का दल बल बड़ा है, जब उनकी सारी सेना सजती है तब पृथ्वी उथल पथल होने लगती है। घोडों की टाप मे उडी हुई धूलि आकाश मे इस तरह से आच्छादित होजाती है मानो स्वय सूर्य्य भगवान ने शकित होकर ऊपर से छाता तान दिया हो। बडे बडे नदी नाले और ताल तलयो का कीच निकल आता है और पहाड गई गई होकर धूल में मिल जाते है पग सेना के चलते समय दिग्पाल दहल जाते है और फनीस फुस फुस कर फन फटकारने लगता है।"

यह सुनकर गोयन्द राय गहलौत से न रहा गया वह कहने लगा, ' हे कनउज्ज कुमारि क्या कहती है। मै अकेला सारी सेना सहित जैचन्द को मजा दिखा सकता हू। राजा पृथ्वीराज का रुख रूखा होने पर सब सामन्त एक साथ बदल पड़े तो न जाने क्या हो। कितने ही भेडियों की भीड क्यों न हो पर क्या वे अकेले सिंह का कुछ कर सकते है? तू चिन्ता न कर मैं अकेला तुझे दिल्ली तक सकुशल पहुँचा दूगा"। यह सुनकर सयोगिता बोली "हां ठीक है पर जब पंग दल चलता है तब पाताल तक में हल चल मच जाती है और शेष नाग को कस कर कुंडली मारनी पडती है। पंग सेना के भार के कारण जब शेषनाग एक फन पर पृथ्वी का बोझ नहीं सभाल सकते तब वे अपने दस सहस्र फनों पर इस तरह से हेर फेर करने लगते हैं जैसे स्त्री अपनी कोमल अँगुलियों से गरम बरतन को पकडती है। यह सुनकर हाहुलीराय हम्मीर बोला "सुन रानी, हममे से कोई अकेला एक सामत तेरे पिता के असी लाख को मार सकता है। तू है किस फिक्र में?" तब पुन: सयोगिता बोली कि मेरे पिता के यहा बीस हजार बखतरिये है, सोलह हजार निशान हैं, सत्तर हजार हाथी है और तीस लाख अन्य दुधारा और नेजेवाले सवार है और पैदलों की तो गिनती कौन करे ऐसे सेनसमूह मे फँस कर तुम सौ सामन्त क्या करोगे सो मेरी समझ मे नही आता। तब चन्द पुडीर बोला हमारा सब दल बल देखा हुआ है। जब हम लोगो ने यज्ञ विध्वस कर दिया तब क्या ये सब ओसफ नहीं थे? यह सुनतेही सयोगिता की हठ की गाठ छूट गई।

नरनाह काका कन्ह महाशय तो सदा के मुँह तोड़ कहने वाले थे, उनसे यह सब बकवाद न सुनी गई. वे आँखें गुरेर कर बोले "यारो धिक्कार है ऐसे क्षत्री पुत्र को जो स्वामी की निन्दा कानों से सुनकर जीता रहे। और हमारे तुम्हारे रहते ये संयोगिता ऐसी बातें करे, इधर उधर का कोई भी हमारी शरण आ जाय तो तन में सांस रहते उस की रक्षा करने से कदापि न फिरें फिर ये तो अपने घर की बहू हैं।" उसने संयोगिता से कहा हे पृथ्वीराज की अर्द्धाङ्गिनी जब तक कन्ह चहुआन के चोले मे दम है तब तक तू किसी बात की चिन्ता न कर। मुझ से क्रम से सुर नर नाग असुर आदि सब परिचित है। मनुष्य की क्या काल की भी मजाल नहीं जो मेरी तलवार के साम्हने ठहर सके। हे सुन्दरी ! मै अपनी भुजाओं के बल से सारी सेना सहित कन्नौज को गंगा में बोर सकता हूं और तुम दोनों को दिल्ली के तख्त पर स्थापित कर सकता हूं। देख तो सही ये सौ सामंत ऐसे वैसे नहीं है इस भारत भूमि के श्रृंगार स्वरूप हैं इन अतुलित बली पराक्रमी और तेजस्वी सामन्तों के प्रताप से संसार परिचित है। ये सौ तन पर एक मन है और स्वामिसेवा के लिये तो सदा हाथ पर सिर लिए हुए हाजिर रहते हैं इस लिये अबलापन छोड़ कर कलेजा पक्का कर और चलने को तय्यार हो जा।

गोयंद राव गहलोत बोला "हाथ कंगन को आरसी क्या ? क्या अभी हम में से एक लंगरीराव का हाथ नहीं देखे। लड़ते लड़ते कट कर दो होगया [illegible] फिर भी राज मन्त्री को मार गिराया और सारी [illegible] लाख सेना की अकबकी भुला दी।" चन्दपुंडीर [illegible] "सुनो पगली। सूरवीर घर घर नहीं होते और [illegible] हथियार बाँध लेने से ही शूर वीर होता है। [illegible] अग्नि शिखा में ऐसे देखे सहस्रों सिपाही [illegible] तरह आहुति होजाते हैं और किस के [illegible] निहत्थाय को देख।" यह सुनकर कन्ह [illegible] बोला "[illegible] है सुरतान सब है,

साम्हने काल का बल नहीं चल सकता। राम नाम के स्मरण करते ही पाप पहाड़ आप जल जाते हैं। जल का स्पर्श होते ही मैल धुल जाती है। सच्चे गुणी के साम्हने अताई की कार्रवाई नहीं चलती। सिद्ध के साम्हने सिद्धियां बेकाम होती हैं इसी प्रकार अष्ट ग्रह और उडगण समूह के रहते हुए भी राहु सूर्य्य और चन्द्रमा को ग्रस लेता है" तदनन्तर अल्हन कुमार बोला "सुनो रानी जिस शरीर में उस सर्व व्यापी परब्रह्म परमात्मा की चिन्मय शक्ति के विशेष भाग का वास या अभ्यास रहता है वही पुरुष वीर होता है और यही कारण है कि शूर वीर पुरुष तन त्यागने पर सांसारिक बंधनों से रहित हो ब्रह्म मे जा मिलता है। अस्तु जब वह शत्रु समूह के सम्मुख समर मे खड़ा होता है तब उनके बल और सिपाहियों की शक्ति भी उसी की शक्ति मे मिलकर तन्मय होजाती है जैसे गंगाजी में नदी और इसी से शूर पुरुष सदा विजयी होते हैं। ऐसा विचारकर पक्की गांठ बांध लो कि ये सौ सामंत जिनमे एक तुम्हारा भाई भी है तुम्हें दिल्ली पहुंचा सकते हैं।

सलख प्रमार बोला "हे सुन्दरी जिस प्रकार उस अनादि अनन्त ब्रह्म का किसी ने पार नहीं पाया उसी प्रकार शस्त्र बल का भी कोई पार नहीं पा सकता। यह योगविद्या रूपी मेघ मनुष्य तन रूपी वायु में मिला हुआ सदा घनघोर गर्जना किया करता है और जब पाखण्ड रूपी पाप का प्रचण्ड प्रचार होता है तब यह मेघ की धारा बांध कर धरा पर प्रलय कर देता है [illegible] यह पृथ्वीराज मेघ कन्नौज का प्रलय करेगा।" इस पर देवराज बग्गरी ने कहा "[illegible] के प्रलय में सुन्दरी संयोगिता सहित [illegible] इस तरह से सुरक्षित [illegible] बादल।" तदनन्तर [illegible]

प्रतापी तेरे पिता का के प्रेरित मूसलधार रूपी सेना समूह से तुझे वृज भूमि की भाँति बचा लेंगे।" तत्पश्चात् पल्लहनदे कूरम बोला "हम लोग बात की लाज पर प्राण देने वाले पानी वाले छत्री है, हमलोगों के पचतत्व रचित तन पिंजर में पच प्राण रहते हुए राजा को आच नहीं आ सकती। यदि हममे से एक भी हो तो तुझे दिल्ली तक पहुँचा सकता है फिर यहा तो हमलोग सबके सब उपस्थित हैं तब चिंता किस बात की है। ऐसे ऐसे एक क्या हजार पंग दल क्यों न सजे पर हम सामत लोग चलचित्त होने के नहीं।"

तब सयोगिता बोली "किसी गहन बन में एक तालाब था जिसमे नाना प्रकार के कमल फूले हुए थे। किसी एक कमल कली में एक रस लोभी मलिंद आन बैठा और सध्या समय पाकर वह कली बंद हो गई। उसने विचारा की चलो रात्रि तो मौज से कटेगी सवेरा होतेही उड़ चलेंगे। पर सूर्य्योदय होने के पहले ही दैवात् एक हाथी आया और उस कमल कली को तोड़ कर निगल गया।" यह सुन कर दाहिमा नरसिंह बोला कि "रानी देर करना वृथा है आप चलें, जब पग सेना के बीच में पहुंचना तब देखना कि क्या तमाशा होता है हम सामत लोग भागने वाले नहीं है।" सारगराय बोला कि "हे पगकुमारी हम लोग सदा खड्ग धार की नाव पर से ससार के पार होने को तय्यार है। पृथ्वीराज रूपी सूर्य्य चला होगा और हम लोग सुमेर शिखा की तरह अचल रहेंगे (सयोगिता की) तेरे किरण रूपी प्रताप से हजारों कायर लोग मारे पडेंगे। यदि कहीं राहु रूपी राजा पग ने चहुआन कुल सूर्य्य को ग्रास करने की च्येष्टा की तो हममे से एकही कोई उसे सपरिवार नष्ट कर देगा।" कनक राय रघुबसी ने कहा कि "हम लोग निष्कलक छत्री कुल में उत्पन्न है, हमारे (छत्री) कुल की यही लीक है कि बोटी बोटी क्यों न कट जाय पर पीछे फिर कर न देखना, यह तेरे दीन वचन हमारे कलेजे पर बज्र से लगते हैं। पगराज है क्या चीज? हमारी तलवार के साम्हने यदि यमराज आवे तो उसे भी दोनों पसीना आजाय।" भोंहाराय चदेल बोला "संयोगिता तू बत्तीसो लक्षणो से युक्त एक कुलीन राजकुमारी है पर तू मति की बड़ी ओछी है यही तुझ में एक ऐब है। कहते तो जाते हैं कि यह तो राजा जैचद है यदि इन्द्र भी चढ़ आवे तो हम लोग उसका मुँह तोड दें। हमलोग सब एक सौ छै सामत हैं और दिल्ली यहा से केवल पचानवे कोस है। यदि प्रति कोस एक एक सामत कटता जावे तो भी दिल्ली तक तेरे साथ को ११ बचे रहेंगे।" चद पुडीर बोला "सयोगिता हम लोगों को लौ न समझ हम एक एक सामन्त लाख लाख का मुंह तोडने वाले हैं पग सेना रूपी घास के लिये हमको तू आग समझ। राजा पृथ्वीराज सारी पग सेना को इस तरह छिन्न भिन्न कर देगा जैसे कि मल्लशाला में कृष्ण बलराम ने बडे बड़े भटों को पटक पटक कर मारा था।"

तब निड्डुरराय सब सामन्तों से और पृथ्वीराज से बोला कि "इन व्यर्थ की बातों में क्या रक्खा है कि हम ऐसे है वैसे हैं जो है सो आपही मालूम हो जायगा। अपने मुँह मियां मिठ्ठु भगवान न कहावें सो बात की बात यह है कि चलना हो तो जल्दी करो नहीं तो दिल्ली की दिशा को अर्घ दो। मैने तो सच्ची कही, न बनी हो तो जीभ मेरी काट डालो।" यह सुन कर सब सामतो की तरफ से गोयंदराय ने कहा कि "हे पग कमधुज कुमारी देर करने का काम नहीं है उठो चलो जल्दी करो हम सब सामन्तों की यही बात पक्की है कि अपने जीते जी आप दोनों पर आच न आने देंगे जैसे कुछ बन पड़ेगा तुम्हें दिल्ली तक पहुचावेंगे"।

एक तरफ गुरू जनों की लज्जा और कुल की लीक का विचार कर दूसरी तरफ नेह का निबाह विचार कर संयोगिता सकुच कर ऐसे रह गई जैसे जाव उघर जाने पर कोई कुल बधू लज्जा कर रह जाय। वह सोचने लगी कि मेरा तो पूर्व सस्कार पूरा हुआ। देवताओं के कार्य साधन के

लिये जो ऋषि का शाप सिर पर लिया था उसके मोक्ष का समय आ गया। पर हाय ! पछतावा यही है कि मेरे कारणसभरीनाथ चहुआन की भी मृत्यु होगी और ये सब अद्वितीय पुरुषार्थी सामन्तों का भी संहार होने वाला है। खैर जो हो पर इन लोगों की अचल कीर्ति अवश्य स्थापित होगी' तब राजा पृथ्वीराज ने कविचंद की कने मागी जिसे समझ कर वह बोला "इसका सोच विचार क्या करते हो मरना जीना तो लगाही रहता है किसी को भी इस संसार मे एक सा नही रहना केवल सुकीर्ति की कहानी रह जाती है।" इस पर संयोगिता फिर विचारने लगी कि जब पहिले मैंने प्रण लिया तब नहीं सोचा। भाई बधुओं ने बहुत धिक्कारा गुरुजनों ने समझाया पिता का यज्ञ बिगडा सारे जमाने ने जिसके जो मुह आया सो कहा। तब नहीं सोचा अब सोचने स क्या होता है। जो स्वामी को पाकर भी छोड देती हू तो दोनों दीन से जाती हू। यह विचार कर संयोगिता कटाक्ष से पृथ्वीराज की ओर देखती हुई उठ खडी हुई और पृथ्वीराज ने संयोगिता का बॉया हाथ पकडा। उस समय वे दोनों रतिकाम की जोडी के ऐसे थे।

यही सब आगा पीछा सोचते हुए संयोगिता की आखों म आसू भर आए। तब तक पृथ्वीराज ने हाथ खीच कर उसे घोडे के पुट्ठ पर बिठा लिया। घोडे पर बैठा हुई संयोगिता और पृथ्वीराज ऐसे सुशोभित होते थे जैसे उच्चैश्रवा पर दो बाल सूर्य्य विराजमान हो। और आंख मे उठी हुई घोडे की पेट मानो [illegible] के छत्र के समान देख पडती थी। संयोगिता के घोडे पर सवार होतेही सामतो ने पृथ्वीराज को चारो ओर मे घेर लिया। ईशान में काका [illegible] केहर कठीर, पूर्व मे निडडुरराय, अग्नि [illegible] प्रमार, लखन बघेला और जैतराव, [illegible] राय तुअर गोहा चदेल और अल्हन [illegible] मे दलसिंह दाहिमा और [illegible] दिशा मे [illegible] और [illegible], [illegible] और पश्चिम में [illegible]

कुरम और जामराय जदव थे। इस प्रकार व्यूह बद्ध होकर संयोगिता सहित राजा पृथ्वीराज चलने को हुआ और पग सेना ने चारो ओर से उसे घेर लिया। उस समय राजा पृथ्वीराज साक्षात नारायण और संयोगिता लक्ष्मीस्वरूप थी क्यो कि उन्होंने उस समय समर सरोवर में स्नान करने वाले सहस्त्रों वीर पुरुषों को सहजही मुक्ति प्रदान की।

जब राजा पृथ्वीराज सुंदरी संयोगिता को साथ लेकर चलने लगा तब एक तरफ संयोगिता का अनन्य स्नेह दूसरी तरफ शत्रु से समर करने का उत्साह दोनों की खींचा तानी में पड कर उसका दिल अग्नि ज्वाला की झार से लस हुए कमल पुष्प की भॉति व्याकुल हो गया। स्नेह और शौर्य्य दोनों के आन्दोलन से उद्विग्न होकर वह कभी तो अपनी प्रिया के चन्द मुख का चकोर बना रहता और कभी कट्टर सामत मडली को देख कर सिंह स्वरूप हो जाता था। इस समय पृथ्वीराज की दो स्त्रियों के खसम की सी दशा हो रही थी। मानो उसके हृदय का एक हाथ विषय वासना के हाथ में था और दूसरा लज्जा के। विषय वासना कहती थी दिल्ली को चल और राजपूती वाने की लज्जा कहती थी नहीं पग दल को दलन कर ले तब चल। विषय वासना कहती स्वादिष्ट भोजन, सरस मसाले वाले पान, और नवयौवना सुंदरी संयोगिता का उपभोग कर। इस पर लज्जा कहती ऐसा नहीं ऐसा कर जिसमें लोक परलोक दोनों बने। इस कुभार्य्या के कहे मे आने से जन्म भर की कमाई कीर्ति पर पानी फिर जायगा। लोग कहेंगे बडे बहादुर और दक्ष बने फिरते थे पर पग दल मे दब कर दुम दबा कर चल दिए। इस पर विषय वासना ने [illegible] और कुछ न [illegible] [illegible]

[illegible]

जाह रहेहैं उन्हें देख। यह सुननेही पृथ्वीराज ने विषय विलास की ओर से मुह फेर लिया और लज्जा को सादर हृदय में स्थान दिया। तब तक कविचन्द बोला कि "हे राजन्! इस विषय पग दल के मुहँ में पड़ना उचित नहीं है। सुकुमारी सुन्दरी संयोगिता को लेकर घर में मौज उडाओ।" यह सुन कर पृथ्वीराज ने उत्तर दिया कि कविचन्द यह क्या कहते हो इस समय मेरे सब सामत साथ में है। मैं पृथ्वीराज कैसा जो मार कर इन सब के धुर्रे न उडादूं। जाओ और पग दल में पुकार कर कहो कि जिस पृथ्वीराज को तुम पकडना चाहते हो वह खुले मैदान खडा हुआ है जिसे सामर्थ्य हो वह चला आवे।

यह कह कर पृथ्वीराज सामतों सहित व्यूह बद्ध हो धीरे धीरे चलने लगा और कविचन्द ने पंग-सेना के बीच में पहुँच कर कहा कि किसके लिये यह आडबर है इसपर उधर के नकीब ने उत्तर दिया कि कविचद के साथ में राजा पृथ्वीराज छिपकर आया हुआ है उसी को पकडने के लिये यह सेना सजी है और उसी पर यह बाजे बज रहे है। तब कविचंद ने हाथ उठा कर कहा कि "वह राजा जैचद का यज्ञ विध्वस करने वाला राजा पृथ्वीराज सुंदरी संयोगिता का पाणिग्रहण करके खड़ा है और वह पंग पुत्री विदाई में युद्ध का आभूषण माँगती है सो आकर उसे सतुष्ट कीजिए।"

यह सुनते ही सोलह हजार निशान बजाती हुई सारी पग सेना चारो ओर से इस तरह से घिर आई जैसे पुरवाई हवा का रुख पाकर भादों के बादल गडगड़ा कर चढ आते हैं। उस समय और की तो क्या कहें महादेवजी की भी ताली खुल गई और वे सुर में सुर मिलाते हुए डमरू बजाने लगे कमठ के सटपटाने से समुद्र में हलचल मच गई, शेष नाग कुडली कसने लगे, सारा ब्रह्माण्ड डगमगा उठा और ब्रह्मा सोच समुद्र में गोते मारने लगा कि क्या करूं क्या न करू। जैसे रावण पर राम ने, महिषासुर पर शक्ति ने और शिशुपाल पर कृष्ण ने कोप करके चढाई की थी उसी प्रकार पग दल ने पृथ्वीराज को घेर लिया। घोडों के टाप की धू के कारण सूर्य्य प्रच्छन्न हो गया, धरती धमने ल और दसों दंती दाँत पीसने लगे। पग सेना के सब सिपाहियों को कौन कहे उसमें तो इतने छत्र ध थे कि जिनके छत्रों की छाया से कोसों तक भू आच्छादित हो रही थी। उनके शरीर पर की झिल गगा जल सी झिल मिला रही थीं और उज्वल टोप बग पात को मात करते थे। कोई कोई गुरु गोरखनाथ की सी बगली और ऊपर से झुके झोल झिलमिली से सजे थे और उनके भीतर छत्तीसो बाने कसे हुए थे।

पृथ्वीराज के कविचंद को पग सेना को प्रचारने के लिये भेजने के बाद बहुत कुछ सोच विचार करके वय विलास कुछ कहने को थी कि तब तक पग सेना ने आकर चारों ओर से घेर लिया और सु अवसर पाकर लज्जायुत बोली कि "हे राजा पृथ्वीराज! अब मुँह जली विषय वासना का मुँह भी न देखिए इस अवसर पर बढ बढ कर हाथ दीजिए और पल्ले भर भर कर सुकीर्ति लीजिए जिसमें आपका क्षत्री जन्म सफल हो।"

पंग सेना के तबल तिदूर ढोल और मृदग इस ताल से बज रहे थे जैसे नारद जी के नृत्य के लिये दक्षिण देश के उपग बज रहे हो। अलगोजे और बंसियों के स्वर से तो सहजही मृग मोहित होते थे। गुर्डीर सखे की ध्वनि तो ऐसी मधुर मालूम देती थी जैसे शिव की जटाओं से पतित भागीरथी में अप्सराए मज्जन कर रही हों। सूर सामतों के चित्त में चौगुनी चाह उपजाने वाले सिंधू सहनाई और नफेरी के स्वरो से तो ऐसा जान पडता था मानो इन्द्र के अखाडे में अप्सराएँ नाच रही हो और इन सब स्वरों के ऊपर सिंगी नरसिंह रणतूर झाझ और घटों की भीषण ध्वनि तो कलेजे कँपाती थी इन बाजों का शब्द सुन कर एक सहस शखध्वनि वीरों ने भी जयकार किया। उनका ओज देख कर ऐसा मालूम होता था मानो बन्दरों की सेना ने लंका पर हल्ला बोला हो, पर इस समय बाका वीर पृथ्वी-

राज हो रघुकुल कमल राम की उपमा पाने योग्य था जिसने थोड़े से सामतो से इतने बड़े पग दल मे हलचल मचा दिया है।

पग सेना की हरावल में हाथियों की भीड थी जिन पर अच्छे अच्छे छत्रधारी छत्री सवार थे और उनके सिरों पर उज्ज्वल छत्र और स्वच्छ गुच्छेदार चौर ढुर रहे थे। वे वायु के समान वेग गामी और पर्व्वत सरीखे भीमकाय सिहलद्वीपी और दक्षिणी खेत के दतारे हाथी ऊपर को सूड उठाए हुए बड़े जोर शोर से चिंघाडते गडगडाते और गर्जते थे और अकुस की चोट खा कर चिक्कारते हुए बढे चले आते थे।

ऐसे हाथियों पर बाजू से बाजू सटा कर बैठे हुए बड़े बड़े मल्ल दीर्घ शरीर वाले राजा लोग साक्षात देवता से प्रतीत होते थे। बैरखो और कलमियों से सजे हुए हौदे और अम्बारी विमान से जान पड़ते थे और जहाँ तहाँ मोतियों के लच्छे बिजली से चमचमाते थे। उन सुमेर शिखर को भी सूड से ढहा देने वाले मतवाले हाथियों के कपोलों मे मद धारें बह रही थीं और झुड झुड भौंरे उनपर छत्राकार आच्छादित थे। उनके कुभ पर जरतारी और रेशमी सिरी पड़ी हुई थी और मसूड नाना प्रकार के रग बिरगे बेल बूटे से रँगे हुए थे। उन हाथियों के चलते समय ऐसा आभास होता था मानो वन और पर्वतो को लिए हुए वनदेव आ रहे हो। अधिक बकवाद कौन करे उस समय उनके त्रास से सूरों का भी शकित होना संभव था।

इस प्रकार बहुत से हाथी घोडे ऊट और पैदलो की चतुरगिनी सेना ने चारो ओर से बाजे बजाते और धरो पकडो का हल्ला मचाते हुए सा[illegible] सहित राजा पृथ्वीराज को घेर लिया। उस समय पग दल रूपी समुद्र मे शूर वीरो से टोप कलम वालो से टक्कर पहने थे और राजाओ के छत्र [illegible] से लहरा रहे थे। अनेक मत बैताल निशाचर [illegible] समय को [illegible] और क्रीडा करते थे और [illegible] हर हर [illegible] प्रसन्नता प्रगट कर

रहे थे। निदान राजा जैचंद के आश्रित सब सरदारों और राव राजाओ ने उसके सम्मुख प्रस्तुत होकर पृथ्वीराज को पकडने के लिये बढने की अनुमति चाही। परन्तु राजा जैचन्द ने मीर जमामखा और कमाम खा को आज्ञा दी कि पहिली वार तुम करो। स्वामी की ऐसी आज्ञा पाते ही बलवान मुसल्मान सेना चारो ओर से इस तरह से चढ चली जैसे चकवा चकवी में बिछोह डालने के लिये रात्रि की अधेरी झूमने लगती है। पग सेना मे लाल बैरखे बसन्त ऋतु मे वृक्षो की नई कोंडे से लहलहा रहें थे। बाजे बादल से गरज रहे थे और कडखे और जागडों के गान तो ऐसे जान पडते थे मानो वीर रस स्वयं शरीर धारी होकर मौज से तान लगा रहा हो। लाल नगों से जडी हुई उज्ज्वल लोहों की सिरी हाथियो के कुभ पर ऐसी सुशोभित होती थी मानो हेम कूट को विदार कर पारस का पहाड लिए हुए गगधारा बह रही हो और घोडो के सीस पर की उज्ज्वल सिरी जान पडती थी मानो राहु ने सूर्य्य के कलेजे में कटार भोंक दी हो।

राजा जैचन्द के आज्ञानुसार रावण ने सारी सेना में हुक्म पुकारा कि पृथ्वीराज राजकुमारी सयोगिता को हरण किए लिए जाता है इसलिये पगराज की आज्ञा है कि सारी सेना सुसज्जित होकर उसे पकडे। निदान सेना के इकट्ठे होजाने पर जब जैचन्द मीर जमाम और कमाम खा को आज्ञा देने लगा तब रावण ने निवेदन किया कि मीर दल को आज्ञा हुई सो ठीक ही है पर राव बनसिह, राव बनवीर और केहर कठीर इन लोगों को भी आज्ञा दीजिए कि ये भी पसर करे। यदि सच पूछिए तो उन के [illegible] दूसरा कार सत्री तो है ही नहीं। तब जैचन्द ने उत्तर दिया बहुत अच्छी बात है पर तूने इस दल के आरम्भ में क्यों न बतलाया [illegible] [illegible] कुछ नहीं, [illegible] केहर [illegible] और [illegible] सिह इन लोगो को हुक्म दि[illegible] कि ये सब [illegible] सहित पृथ्वीराज के [illegible] [illegible]

राज यह बात झूठी है मीठा मीठा हप्प कडुआ कडुआ थू। आप जानते नहीं है कि वह जुग्गिनपुर राव राजा पृथ्वीराज है और उसके साथ में ये रण बाकुरे सामत हैं जिनके आतक से दुनिया थर थर कॉपती है। उन्हें पकड लेना दिल्लगी नहीं है। यह सुनकर जैचन्द ने और मीर जमाम और कमाम को ही हुक्म दिया कि तुम जाओ और पृथ्वीराज को पकड लाओ मुझे तुम लोगो का बडा भरोसा है। आशा है कि तुमलोग भी अपना नमक अदा करोगे।

रावण ने फिर जैचन्द से पूछा कि महाराज यदि ऐसा ही है तो कृपा करके आप स्वय कमर कसिए तब ठीक होगा। कहावत है कि बिना अपने सीझे सरग नहीं देख पडता। यह सुनकर जैचन्द झल्लार बोला रे कुटवार क्यो व्यर्थ हठ कर रहा है तेरा काम है चोर तस्कर लपट और दुराचारियो को पकडना बाँधना त इन राजकाज के मामलों और युद्ध की बातों को क्या जाने। बिच्छू का मन्त्र जानकर सर्प के बिल में हाथ डालता है। तब रावण पुनः बोला कि अन्नदाता ठीक है। ऐसे ही तो सोच विचार बिना यज्ञ का ठान ठान दिया और कुछ खबर न की, जब उसने यज्ञ विध्वस कर दिया और घर से आकर बेटी को लिए जातहै तब भी आप नहीं चेतते और सन्देसो खेती करवाते है। हाराज ऐसे मौके पर न चूकें। जाये लडके को भा लक्कड समझ कर व्यवहार करना होता है फिर वह तो शत्रु है। इस पर जैचन्द ने गुस्से होकर उत्तर दिया कि चुप रहो मुँह में लगाम लगाओ, जाओ अपना काम देखो छोटे मुँह बडी बाते मत करो।

अपने आगा का आयसु पाकर दो दो दुम्बे खानेवाले खुरासानी खा खाडे खड खडाते हुए पृथ्वीराज को पकडने के लिये दौड पडे। उन खानों की खोपडियों पर जरा जरा सा बाल था। वे सब झोल झाल अँगरखे और सूथने पहने हुए गीध की सी आँखे नेढ़े सरीखे मुँह वाले बडेही भयानक भेष में थे। वे सब तुर्की फारसी और पश्तो बोलते थे और मालिक का हुक्म पातेही खाँडें की बिल्ली तौलते थे। राजा जैचन्द की सेना में ऐसे साठ हजार खाँ नौकर थे। अस्तु आगे आगे खानों की जमात थी और उस के पीछे बाघ सिह बघला और मेघसिह बिजुली ये राजपूत वार हाथियों की भीड लेकर चल रहे थे इस पग सेना के बीच में थे सौ सामन्त ऐसे जान पडते थे जैसे कोट के बीच में मुनारें खडी हों।

रावण फिर बोला महाराज आप जो सामन्तों सहित राजा पृथ्वीराज को पकड लेने की इच्छा करते है सो झूठ है। इसका परिणाम यही होगा कि आपकी सारी सेना कट मरेगी। महाराज ब्याज के लालच में मूल न गमाइए। भारी भीड भडक्का देखकर डरपोक डरते है सामन्त सच्चे सूरवीर हैं वे जो सब दल को मार काट कर निकल जायगें और आप हाथ मलते रह जायगे। केहरि कठीर ने भी कहा कि जो रावण कहते है उसमें सन्देह नहीं। ये लोग महा कहर हैं इस तरह सीधी उँगलियों घी नहीं निकलेगा। उन से युद्ध करने की आज्ञा दीजिए। शत्रु पर विजय पाने का यही एक उपाय है दूसरा नहीं। यह सुनकर कन्ह कमधुज्ज भी बोला कि स्वामी पर संकट पडने के समय सेवक को उचित है कि वह साम दाम और भेद का विचार करके स्वामी के उचित सलाह दे। जो ऐसा न करके मुँह देखी बातें करता है वह सात जन्म नर्क में पडता है। इस समय आपके सब सुभट युद्ध की इच्छा करते है सो आप आज्ञा दीजिए। यह सुनकर कन्ह और कठेर राजा जैचन्द को जुहार करके आगे बढ चले, पीछे से चतुरागिनी सेना से घिरा हुआ राजकुमार कदर्पकेतु भी था। चहुआन दल रूपी बादल को विदारने के लिये पगसेना पवन स्वरूप होकर चढ चली।

पंग दल के और सब सरदार और सहायक राजा लोग तो जहा तहा अपने अपने मोर्चों पर थे परन्तु कंदर्प के समान सुदर राजकुमार कदर्प-केतु पर्वत के समान भीमकाय पर्व्वतराय, चदेरी का राजा पचाइन, कर्णाट देश का किल्हण, नरेश कन्ह चन्देल, भौंमपाइक वाका वीर बगरी राय, इन्द्र के समान तेजस्वी इन्द्रराय और वीरसिंह राय, मालवी पचाइन राय, मोरी देवदत्त दाहमा सिरदार और सारी

न्यान सेना का अफसर खुरासानखां-ये सरदार ना जैचन्द की खास अर्दली मे थे।

शेष ने जब धरा को शीस पर धारण किया तब धरनीधर कहलाया और भार अधिक होने से उसने कुंडली कसी तो उसका कुंडलेश नाम ा, सिर से भूमि गिर न पडे इस भय से जब वह अह ह करने लगा तो अहि कहलाया, डर कर नाग शरण लेने से नाग, चित्त भ्रम होने से चित्रक और ायमान होने से कपस कहलाया, इस प्रकार पग ना के दबाव से शेषनाग के अनेक नाम पड गए न्तु ऐसे सबल पग दल को देख कर सामन्त लोग न ही मन हँसते थे और एक दूसरे से परस्पर कहते कि यारो संसार से पार होने के सुपथ और विपथ यह दो रास्ते है। विपथ यह है कि धन धरती और ी के लिये सोते जागते सदा मरना मारना विचारे और दूसरा सुपथ वह है कि स्वामी के काम के लिये सदा सिर हथेली पर लिए रहे। यही दूसरा पथ सर्व ष्ठ है क्योंकि इसमे सदासुकीर्ति मिलती है। वाह ीरों जाति का कैसा अनोखा धर्म है कि चोले मे ण रहते वह मरने मारने से नही चूकती।

सहज भयानक अर्द्धरात्रि के समय रणतूर और ारिया का भीषण नाद करते हुए पग दल ने सामंत गण को घर लिया। उस समय शूर वीर पुरुषो के ंग बाल प्रभाकर एवं चमीकर से चमक रहे थे। प्राप्तसिद्धि और वय सन्धिप्राप्त बाला के मख जिस समय सब सिपाहियों के दल इकट्ठे होने लगे उस समय ऐसा जान पडता था मानों वीर रस की नदिया उमड कर समर समुद्र से मिलने जा रही हो। सिपाहियो के अस्त्र शस्त्र तरंगे थीं और सुकीर्ति की आशा ही उस नदी की फेन थी। ऐसी जन्म जन्मान्तर के कर्म्मबन्धनो से मुक्त करदेनेवाली नदी के आतंक से दिग्पाल डगते और सुरसमूह और गन्धर्वादि उसे देखकर प्रसन्न होते थे।

राजा जैचन्द की फौज का जोड तोड देख कर अबाल वृद्ध युवा सब यही कहते थे कि आज पृथ्वीराज का पानी इश्वर नही बच सकता। जैचन्द के दल के हाथी तो ऐसे जान पडते थे मानो पर्व्वत पैर वाले होकर उसकी सेवा में उपस्थित हुए हों। पुरन राव सोलंकी हम्मीरराव प्रमार और गोयंद राव बघेला ये तीन राजपूत सरदार पगदल की दरेसी के अफसर थे। अस्तु जब हाथी घोडा सहित सब सेना सज कर दुरुस्त होगई तो उक्त दोनों सरदार सारी सेना को लेकर जैचंद के सम्मुख हाजिर हुए और उसकी आज्ञा सिर पर रख कर वे लोग मार्ग सेना सहित घेरे मार्ग पकडो जाने न पावे आदि भयानक रव करते हुए पृथ्वीराज को पकडने के लिये बढ चले। उस समय आकाश मे सुर्य्य का रथ स्थिर होगया। देवता लोग तमाशा देख कर स्थंभित हो रहे और मार्ग अंगुश्रम भयान रस में सन गई।

से चल बसे। होते होते मीर हमाम खाँ का साम्हना हो गया। उसने जुडते ही गोयद राय के सीने पर तोमर का वार किया और चाहा कि कमान से सिर बिंधा कर उसे जमीन चुमा दे परन्तु गोयद राव छटक कर अलग हो गया। इस पर उसने बालीक का वार किया, दो मर्मभेदी हाथ खाकर भी राजपूत वीर मीर हमाम पर ऐसा झपटा जैसे सिहनी पर सिंह, पर उसने उसी बीच मे नेजा कलेजे पार कर दिया। इस पर गोयन्द राव केवल कुत का एक वार कर सका कि मीर ने तलवार से उसका माथा उडा दिया। सर तो गिर गया पर रुड ने कटार का पार करके मीरिया को मारही गिराया और चार मीर और भी मारे। इतने मे आरास खा का जबूर कलेजे मे लगा और गहलोत वीर का रुड भी शान्त हो गया। इस तरह से एक पहर पर्य्यन्त अतुल पराक्रम करके जब गोयद राय गहलोत स्वर्ग को चला गया और मीर सेना सीना सहजोर होकर आगे को बढ़ी तब इधर से पज्जून राय ने बिल्ली खोली। उसके मुकाबले में उधर से पाच सौ मुसल्मान सिपाही छूट निकले। यह देख केहर राय, कठेर प्रमार, पीपा राय पडिहार, भोहाराय चन्देल, भूप कच्चा राय चालुक्क और दाहिमा नरसिंह राय ये पाच सामन्त पैदल होकर पज्जुनराय की सहायता पर चले। निदान उधर से मुसल्मान जवान मुसल्लिम ईमान यानी दीन इस्लाम पर दृढ़ हो कर और इधर से ये राजपूत जातीय लज्जा मे रंजित हो कर एक दूसरे को ललकार ललकार और प्रचार प्रचार कर खाडे तलवार कटार छुरा छुरी बिछुआ और सेल साग शक्ति आदि से दोनो में घमासान युद्ध हुआ। अन्त में पज्जून राय का सिर कटकर अलग जा पडा पर धड ने वह पराक्रम किया कि जिसे देख कर देवता भी उसकी स्तुति करने लगे। उसने क्षण भर मे सारी खुरासानी सेना को छिन्न भिन्न कर दिया।

पज्जून राय के पार होते होते दिन का तीसरा पहर व्यतीत हो गया। उधर से बाघ राय बघेला और मीर कमोद खा विषम कोलाहल करते हुए सामंत समूह पर टूटे। उन्हे आडे हाथो लेने के लिये इधर से चद पुडीर ने हथयार सम्हाले और मार मार पुकारता हुआ फटकारता हुआ वह पर दल में इस तरह से पिल पडा जैसे मतवाला हाथी किसी स्वच्छ जल से भरे हुए कमल वन के सरोवर मे पैठ पडे। हजारों मीरो को मारते काटते हुए जब वह मीर कमोद खा के आगे पहुचा तो उसने दूर से देखते ही पुडीर पर भाला चलाया। इधर से इसने भी सेल घाली। दोनों के वार एक दूसरे पर भरपूर बैठे और उसी दम वे दुनिया से चल बसे। चद पुडीर के पर्ते पर्ते सूर्य्य भगवान अस्त होने को हो गए पर दो दल में से बलहीन कोई भी न रहे। चद पुडीर के गिरते ही इधर से कूरभ राय ने और उधर से बाघ राय बघेले ने बाने सम्हाले और दोनो लगूर से उछल कर एक दूसरे के साम्हने आगए। पहिले तो दोनो तलवारो से लड़ते रहे परन्तु जब दोनों की तलवारें टूट गईं तो उन्होने कटार से युद्ध किया और दोनो एक दम एक दूसरे का उदर वारपार फोरफार हथयारो के वार करने लगे। बडी भर रक्त भर जाने से वसुंधरा लाल हो उठी और यो गिनी रक्त पी पी कर डकारें लेने लगी। खूब खचा खच मार करते हुए पज्जून राय का सेरन मीर से साम्हना होगया। सेरन मीर ने जुडते ही पज्जून राय के कलेजे में नेजा पेल दिया जिससे पज्जून राय मुर्छित हो कर गिर पडा परन्तु गिरते हुए भी सेरन मीर पर तलवार को एक वार करता गया। पज्जून राय को गिरता देख कर नरसिंह राय दाहमा सेरन के साम्हने आया। सेरन ने पहिले तो उस पर बाण चलाया पर बाण को जब उसने न माना तब उस ने तलवार का वार किया। इधर नरसिंह का भी वार साथ ही हुआ जिससे दोनों का साथही वारा न्यारा हुआ। नरसिंह राय का सिर तो गया पर दोनो अपने अपने बाएँ हाथ एक दूसरे के गले मे डाल कर इस तरह से रह गए जैसे बहुत दिनों से बिछुरे हुए दो मित्र मिल रहे हो। कूरभ राय के मरतेही उसका

सगा भाई पल्हसिंह खेत मे उतर पडा और पग दल बद्दल से बरसते हुए अस्त्र शस्त्र रूपी जलधारा की जरा भी परवाह न कर के करारे वार करने लगा, वरन यों कहना चाहिए कि पग दल रूपी बद्दल जो पृथ्वीराज रूपी प्रजा को बोर देने के लिये आया था पल्हसिंह ने आडे आकर उसकी बौछार भी पृथ्वीराज पर न आने दी। पज्जून राय उसके भाई और पुत्र इन कूरभ कुल कमल सपूत राजपूतों ने ऐसा पराक्रम किया कि पग सेना के अगनित सिपाही काट कर पाट दिए, अंत म आप भी टूक टूक हो कर कट मरे। उनका हंसा तो रवि मंडल को भेद कर साक्षात चिन्मय ब्रह्म मे लीन होगया और उनके शीश शिव जी ने रुंड माला मे पोह लिए।

कह चुके है कि चंद पुंडीर के मरते तक तीसरा प्रहर हो चुका था और जब पल्ह सिंह भी मर चुका तो पज्जून राय का पुत्र मलै सिंह चार तलवार बाँध कर पग सेना मे पिल पडने को उद्यत हुआ। कूरभ कुल के दो चार भाई बेटे और भी उसके साथ में थे, वे भी चार चार तलवारें लेकर लपक पडे। इस किशोर वयराज कुमार सिंह ने ऐसा अद्वितीय पराक्रम दिखाया कि और तो क्या पग सेना के लोग भी उसकी प्रशंसा करते थे। [illegible] उचक कर जिस सवार पर हाथ देता वह मय [illegible] बख्तर के कट कर काडी सा लुढक जाता [illegible] ऐसे सगठित पग दल में मलै सिंह का [illegible] तरह दौडा दौड काम देता था जैसे भरे [illegible] में मछली तैरती हो। पग सेना के बीच मे [illegible] कर उसने अपने साथियों से कहा कि यारो [illegible] दिन मरना है फिर क्षत्रियों को ऐसी [illegible] में मिलती है। बहुत जिएंगे [illegible] [illegible]

तरस कर मरें—ईश्वर ने राजपूत जाति में जन्म दिया है हाथ मे तलवार दी है और ऐसा सुअवसर भी साम्हने है आओ इस तरह से मरें कि हिन्दू मुसल्मान सब जान जाय। कौन देखता है कि कौन किस का बाप और कौन किस का बेटा है। यह कह कर वह दो हाथ दुधारे चलाने लगा और शत्रु से नाको कडवी सी काटने लगा। उसके मारे सारी पग सेना मे हल चल मच उठा। पग सेना के सिपाहियों को मालूम होता था कि एक नहीं कई एक मलैसिंह मार कर रहे है। वह एक ही हाथ मे कई एक जबरदस्त जवानो की गरदने काट देताथा उसकी वीरता देख कर इधर से सामंत उधर से मीर सरदार सब उसकी तारीफ करते थे। घायल पज्जून राय भी पुत्र का पराक्रम देख कर फूला अंग नहीं समाता था अस्तु जब मलै सिंह के शरीर में अत्यन्त गहरे साठ घाव आचुके तब वह मूर्छित हो कर गिरपडा और तब तक भी सूर्य भगवान भी अस्ताचल की ओट मे हो गए। इस प्रकार से जब सूर्य्य स्वरूप राजा पृथ्वीराज पर पंग दल का ग्रहण पडने के समय कूरंभ-कुल-कमल पज्जून-पुत्र मलै सिंह युद्धक्षेत्र के शस्त्रसरोवर मे स्नान [illegible] का दान देकर ससार से [illegible] हो गया। तब रावण ने हाथियों के आगे बढाए। [illegible] की आज्ञा दी। रावण की आज्ञा पाकर [illegible] ने हाथियों के कुंभ पर अंकुश लगाया कि वे पर्वत के समान दीर्घ काय मदान्ध दतार दिग्गज [illegible] चिक्कारते [illegible] हुए सामंत [illegible] के लिये बढ [illegible]। [illegible]

में खडा होकर अपने पट्ठो को जोर कराता हो। कभी लपक कर किसी के कुभ को फलीदा सा फार देता। कभी हिये में सेल पेल कर चिटा सा विदार देता था। कभी भसुड से सुड काटकर अलग कर देता और कभी दोनों दात पकड़ कर मूली से उखाड लेता था। कन्ह की तलवार का घाव खा कर वे बज्रवत शरीर वाले हाथी मेघों की तरह गरजते थे। जब कभी काका कन्ह सिर पर सेल की अनी पेल कर जोर से ठेलदेता तो थर थर कापता दो पैर से खडा हुआ हाथी ऐसा भासित होता मानो हनुमान ने द्रोणगिरि या कृष्ण ने गोबर्द्धन को उठा लिया हो। काले काले हाथियों के कुंभ पर कन्ह की तलवार भादों के बादलों मे बिजली सी विलीन होती जान पड़ती थी। शरीर के घावों से रक्त के झरने झर रहे थे, हाथियों की सुडे मगर सी लोटती और ढाले कछुए सी उतराती फिरती थी, वीरों के सिर कमलकली से सोहते और गिद्धों की चोंच मे दबी हुई आतों की माला म्रणाल सी लहराती थी। धन्य है। ऐसे समर सरोबर में सच्चे स्वामीसेवी राजपूत बच्चे ही पैर कर पार हो सकते है। ऐसे वैसे दिल के कच्चे तो किनारे पर जाने से हिचकते है। इधर कन्ह तो हाथियों के ठेले में कहर कर रहा था उधर सारग राय सोलकी सिपाहियो के सिर तन से जुदा कर रहा था। वह वीर जिस मीर की खोपडी पर हाथ देता उसका खोपडा मय टोप के खरबूजा सा कट जाता था, कधे पर हाथ पड़ने से कटौवा सा कट जाता था और भडार पर हाथ लगने से हलुआ सा बिथर जाता था। इतने में कई एक सिपाहियों ने मिल कर सारग राय को मार लिया, पर मजा यह हुआ कि कन्ह के पराक्रम के कारण हाथियों का दल विचल उठा जिससे पगदल को भारी हानि पहुची, सैकडों सिपाही दब कर चूर होगए।

इतने मे अँधेरा अधिक होगया इसलिये हथियार चलना बन्द किया गया। इस अष्टमी की लड़ाई में पग दल के सात हजार मुसलमान सिपाही, दो हजार घोडे और बहुत से हाथी मारे गए और वहीं पर चाहुआन के केवल सात सामन्त काम आए। धन्य रे सामन्तो, इसमें सन्देह नहीं कि तुम इस भारती माता के सच्चे सपूत और राजपूत कुल की मर्य्यादा स्वरुप थे तुमने थोडे से होकर भी इतने बड़े पग दल को इस तरह से दहला दिया जैसे तूफान तरनी को हिलाता है। तुम तो अक्षय पराक्रम कर के चल बसे पर तुम्हारी सुकीर्ति ससार में अचल होकर बस रही है तुम लोग डेरों की तरफ हेरे भी न और ब्रह्म में जा मिले। तुम्हारे शीश शिव ने रुडमाला में पोह लिए।

रात्रि को युद्ध बद होने पर जब लाशें उठाई गई और नरसिह राय दाहिमा, गोइन्द राय गहलोत, चद पुडीर, सारग राय सोलकी, पल्हन राय सामला, सुरमले सिह, आदि कूरमों के शव लाकर रक्खे गए तो पृथ्वीराज रोता हुआ पज्जून राय से लिपट गया। गोयद राय भी अब तक ससकता था। एक तरफ राजा पृथ्वीराज पछताता और दूसरी ओर जैतराव सिह पीट पीट कर रोता और कहता कि हाय देव-दल-गंजन चामंड राय को क्योंकर छोड आए। राजा पृथ्वीराज तो अपने मृत सांमतों की लाश पर लोट लोट जाता था पर और लोगो को दीन दुनिया की खबर न थी। वे अपनी इसी ध्वनि में मस्त थे कि कब बिहाना हो और कब हम भी पग दल पर हाथ साफ कर के अपने पराक्रम का कौतुक दिखावें।

इधर जब राजा जैचद पर जाहिर हुआ कि अपनी सेना के सहस्त्रों सिपाही मारे गए पर सामन्त समूह मे से केवल सात सरदार खेत रहे है तब क्रोध और लज्जा ने उसके दिल में खलबली डाल दी। उसने रावन को बुला कर आज्ञा दी कि आज आधी रात तक तो चाँदनी है बाद इसके रात अँधेरी होगी उसी समय तुम कन्नौज से दस कोस तक बराबर कोस कोस के फासले पर चौकी बिठा दो और इधर इन लोगो को भी इस तरह से घेरे रहो कि कहीं से निकलने को सास न पा

सकें। स्वामी की ऐसी आज्ञा पाकर रावण ने इसी हिसाब से चौकी बिठा कर घेरा डाल दिया गया हो। राजा पृथ्वीराज वाराह और उसके सौ सामंत अकेले हजारों से किसी तरह कम न थे जिन्होंने अपने शस्त्र रूपी खीसों से पंग दल रूपी दल को विदार कर चहला मचा दिया।

ज्योंही भगवान चन्द्रदेव अस्ताचलगामी हुए कि इधर सामंत भी चौकन्ने हो बैठे। उन्होंने राजा पृथ्वीराज को बीच में दे लिया और आप सब आस पास हो गए। जैसे शरद ऋतु में सब तारागण चद्रमा को घेरे रहते है, समुद्र बडवानल को उदर में रखता है, कमल की पखुरी पराग को घेरे रहती है और स्वरूप को जैसे स्नेह लपट रहता है उसी प्रकार सामंतों ने राजा को अपनी मंडली के बीच में रक्षित रक्खा। निखग आधी रात के समय जब कि मित्र द्रोही पुरुष का हृदय आपही आप उबलने लगता है पथिक की वधु अपने पति की राह पर आंख लगा कर रह जाती है युवा पुरुष युवतियों को आलिंगन कर उनका सारा शृंगार बिगार देते हैं और सारस के जोडे सरोवरों में कल्लोल करते हैं वैसेही सब सामंत व्यूह बद्ध हो कर आगत मरण मुहूर्त के लिये प्रोग्राम बनाते बैठे।

निड्डरराय कमधज्ज, भोहाराय चन्देल और जैतराय प्रमार राजमंत्री आदि सब लोग एकट्ठे बैठ कर परस्पर बातें करने लगे कि भाई जो कुछ अनुमान किया था वही आगे आया, क्या कहें जिस दिन [illegible] मरा उस दिन से सभी बातों का काया [illegible] हो गया है। खैर और तो जो हुआ सो हुआ [illegible] भाट के कहे में आकर राजा ने यह तो ऐसा [illegible] बनाया कि न जमीन के रहे न आसमान के। [illegible] और भी दस पांच सामंत आए और कवि- [illegible] आगया। कविचंद ने कहा अब जो कुछ [illegible] हो चुकी, आगे को क्या करना है [illegible] मेरे विचार से तो [illegible]

पंग दल को दलन कर अक्षय कीर्ति लाभ करें। उस समय वीरों के लिये वह गति सहज है जो योगियों को हजारों वर्ष के परिश्रम से नहीं मिलती। निदान यह सल्लाह पक्की हो चुकने पर सबने गुरु राम से कहा कि वह जाकर राजा तक इस बात की खबर करे। गुरु राम ने पलका के पहरे पर बैठे हुए काका कन्ह के कान में जाकर कहा कि रात तो जैसे तैसे गई सबेरे क्या होगा?

यह सुनते ही काका कन्ह झल्लाकर बोला कि कल्ह क्या होगा इसके लिये भको तुम और भट्टा जिसके साथ राजा आया है। सच है पज्जुन राय कहते थे सो वही बात हुई। इस असुर बुद्धि ने भाट के कहे में आकर वह काम किया कि कुछ कहते नहीं बनता। इस औघट की नाव को ईश्वर ही पार लगाने वाला है। हम तो यह जानते हैं कि जहां सूर वीरों के थट का जगमोहन बना है, सुकीर्ति के कलस रक्खे हैं, युद्ध विद्या की चेतवर लिखी है और पृथ्वीराज और संयोगिता लक्ष्मीनारायण स्वरूप में विराज रहे हैं ऐसे देवालय में वीर जय करते हुए शत्रु के शीसों के पुष्प चढ़ा कर मौज में पूजा करो। हमारी क्या पूछते हो हम तो दोनों हाथ लड्डू हैं। कन्ह की ये सब बातें संयोगिता ने सुन लीं और उसने पृथ्वीराज को जगा दिया। पृथ्वीराज शैय्या से उठकर क्रोध से कांपता हुआ बाहर निकल आया और वहां जा पहुंचा जहां सब सामंत जुड़े बैठे थे।

सामंतों ने पृथ्वीराज से कहा कि हम लोगों की यह सल्लाह पक्की हुई है कि आप तो [illegible] सहित दिल्ली को चलें और हम लोग [illegible] के पंग दल का [illegible] [illegible]

चाहते । इस समय हमारी सब की यही आन्तरिक इच्छा है कि हमारा स्वामी हमारी बाहु बल रूपी नौका पर चढ कर पग सेना रूपी समुद्र से पार हो जाय। आपके प्रताप से हम लोग जीवन के सब सुख भोग चुके हैं, अब इसे तिलाजुली देकर आपको दिल्ली तक पहुचाना ही हमारा अभीष्ट है । यह सुन कर पृथ्वीराज बोला क्या तुम्हारी अकल पर पत्थर पड गए है जो मुझे मरने से डरवाते हो, बिना मौत के कोई किसी का मारा नही मरता । काका साहब आप इसी घमड मे भूल रहे है क्या, जो आपने भीमदेव को मार लिया, मै हिन्दू मुसलमान दोनों दीन का राजा राजा पृथ्वीराज हू जिसे तुम आज अपना आश्रित बनाना चाहते हो । यह सुनकर सामत बोले कि सूर वीर सदा स्वामी की शरण में होते है पर जब स्वामी के साम्हने जाकर कुछ बनी बिगडी की विनती करनी हो या गाव का पट्टा लिखाना हो तब स्वामी काल दुकाल मे रक्षा करे। जब कोई अनाकचीती आपत्ति ऊपर आन पड़े तो स्वामी रक्षा करे, पर युद्ध के समय तलवार पकड़ कर जब खडे होते है तब राजा राजपूतों की शरण मे होता है ।

इस बात पर चाहुआन और भी चिढ गया । वह बोला कि मैने देश भर के दुर्गम दुर्गों को जीतकर अपना करलिया, बडे बडे राजा लोग मेरी आन मानते है, नौखड पृथ्वी पर मेरा यश जाहिर है । मै अपने मुँह से कहाँ तक क्या कहू मैने अच्छों अच्छों को नाकों चना बिनाकर छोडा है और आज मै भाग कर निकल जाऊं। देखू कौन भागता है? तब सामत बोले महाराज यह बात नहीं है कि हमलोग आप पर अपना अहसान चढाते हों। जैसे सिह बन को रखता है और बन सिह को रखता है, शेषनाग पृथ्वी को रखता है और पृथ्वी शेषको रखती है । कुलनि कुलबधू की रक्षा करते है और कुलबधू कुल की लीक को पालती है, मेह से जल बरसता है और मेह जल से बनते है और जन्म से मरन तथा मरन से जन्म होना है उसी प्रकार राजा रावतो को और रावत राजा को रखते है, यह परस्पर व्यवहार की बात है इसमें अनख या प की बात नहीं है । हे मानराय मर्दो और दुश्मनखा को और पहाड़राय को शरण म रख कर उनका प्रतिपालन करने वाले, तोंअर तनार पहाड़राय और मेवाती मुगलों को दड देने वाले और दिल्ली के दुर्ग की रक्षा करने वाले राजा पृथ्वीराज, इस समय मौका और है जो कुछ हमलोग कहते है उसपर ध्यान दीजिए और आज्ञा दीजिए कि हमलोग अपनी सलाह के अनुसार ही आगे मे अड़े । उन सब सामन्तो की साहस भरी बात सुन कर कविचद मनही मन कहता था वाहरे सपत राजपूतो ! मौत से सब डरते हैं पर आज से तुमलोग मौत के पीछे पडे हुए हो । एक सबल शत्रु को मेल के लिये अपना कलेजा खोल रहे हो, आपने स्वामी से कहते हो कि आप जाइए और आप इहा से तिल भर भी नहीं हिलना चाहते । वाह तुम्हें मरजाना मंजूर है पर अपने कुल की लीक से हटना मजूर नही। एक बार नहीं हजार बार धन्य है राजपूतो। तुम्हारे सिवाय और किसका ऐसा जिगरा होसकता है ।

सामन्त लोग पुन बोले बगाक्षमा अन्नदाता पचो मे परमेश्वर बसता है। कहा है—पाच पच मिल कीजे काज, हारे जीते होय न लाज, सो इस समय हम सब पचो की यही सलाह है कि आप तो यहा से क्षेम कुशल निकल चलें और हमलोग एक एक कर के कट मरे । हे शहाबुद्दीन गोरी का गर्व चूर कर हिन्दुस्तान की हद रखने वाले, भीमदेव सोलकी को सहारने और रणथभ के यादवों की रक्षा करने वाले राजा पृथ्वीराज, बात इतनी है कि यदि यहा पर कुछ बन बिगड गई तो जैचद की आन रह गई और जो आप सयोगिता सहित बेदाग बचकर दिल्ली जा पहुँचें तो आपकी बात रहेगी और जैचन्द की हेठी हो जायगी ।

पृथ्वीराज बोले कि सुनो सामतो जैसे सच्ची लज्जा से कुलबधू की, फौज से राजा की, बाणी मे कवि की, ध्यान से योगी की, आपति मे मित्र की, और आत्म-अतर-बोध से ज्ञान की परख होती है

वैसेही ऐसे अवसर पर सूर वीरों की परख होती है। फिर तुम यह बात कैसे कहते हो कि तुम लोग लडो मरो और मैं भाग जाऊं। जैसे मेघ वायु से, पृथ्वी जल से, लोभी संचय से, दानी देने से, साहसी सत्त से और मागने वाले कुछ पाने से प्रसन्न होते है उसी प्रकार सूर वीर पुरुष मरने का मौका पाकर प्रसन्न होते हैं। इसलिये इन्ही सिद्धान्तों पर दृढ होकर परसेना से युद्ध करते करते मरना ही मुझे स्वीकार है। इसपर सामतो ने कहा कि ऐसा हम चाहते ही है इसीपर कमर कसे खडे है पर अपनी तरफ भी तो देखिए यदि ऐसा हुआ तो घर घर लोग तालिया देगे। इस समय अपनी बात तो इसी मे है कि आप सयोगिता को लेकर क्षेम कुशल दिल्ली जा पहुचे।

पृथ्वीराज पुन. बोला कि भाइयो इस क्षत्रीतन का मरने मे ही मगल है इसीमे इसका सुयश है इसीमे इसकी मुक्ति है और इसीमे इसकी सब करनी कथनी है। एक क्षत्री पुत्र के लिये समर में मरने से अधिक सुख की बात और क्या हो सकती है। फिर दिल्ली को पहुचने की आशा से शत्रु को पीठ दिखाना कितने कलक की बात है। यारो [illegible] काल की डाढ मे दबे हुए है पल भर का [illegible] नही फिर जान बूझ कर अपकीर्ति का [illegible] क्यों मत्थे पर लो। माया मोह लोभ क्रोध [illegible] आदि विकारों से वाछित इस जीवन मे हजारों [illegible] झेलने पडते है इस लिये इस टटे को [illegible] ही भला है। और सुख भी क्यो न हो और [illegible] भी क्यों न जिए पर पग से जग लेने से [illegible] न हटेगे।

[illegible] पर सामत बोले जैसी इच्छा आपकी पर [illegible] मर कर सुख करते है अपने जीते [illegible] अनिष्ट नही देखा चाहते। तब पृथ्वीराज [illegible] अपनी अपनी [illegible]

अपयश मे भी हिस्सा नही ले सकता। मुझे तुम्हारे बल पराक्रम पर भी पूरा भरोसा है इसीसे कहता हू कि पर सेना से लडो लडते लडते तुम्हारे मर जाने पर यदि मेरा कुछ हो भी तो तुम्हे कोई क्या कह सकता है। मरना मारना हम क्षत्रीपुत्रो का व्यवसाय है इसमे किसी का क्या, पर छाती फुला कर बात न करो। देखो भाइयो यदि हम लोग इस तरह से लड कर मर भी गए तो मगल कार्य्य के समय बीर माताएँ हमारी तुम्हारी करनी के गीत गा गा कर अक्षत उछारेगी और जो भाग गए तो आधी रात्रि के समय पर्य्यक पर पडी हुई कामान्ध कामिनी भी हमे घृणा करेगी। आहा! जिस सुकीर्ति के निमित भीष्म ने मृत्यु मागी, दधीचि ने हाड दिए, दुर्योधन ने सपरिवार प्राण दिए, राम बनवासी हुए, राजा दिलीप ने सिंह को देह का मास दिया, मै पृथ्वीराज आज उस कीर्ति के लिये मुख फेर जाऊ। नही कभी नही, सौ क्या सहस्र वर्ष क्यों न जिऊ।

तब सामत बोले धन्य महाराज, फिर नही कपार है हमलोग भी तो यही बात कहते है। यहा पर यदि आपको जरा कुछ भी घट नट बात हो गई तो राजा जैचद की कीर्ति पर मानो कलसा चढ़गया। कृपा करके हमारी कही मान कर आप दिल्ली को चलिए, हमलोग न हटेगे, परदल को काट कपट कर पाट देगे और हमलोग भी तिल तिल होकर कट मरेगे। यह सुन कर पृथ्वीराज बोला हे सामंतो तुम बार बार यही बात कहते हो। तुम्ही क्षत्री हो तुम्ही [illegible] न हुआ। [illegible] स्वामी सेवक [illegible] नही है। [illegible] तुम हो, [illegible] [illegible]

सुन कर सामत लोग निश्वास परित्याग करके बोले कि महाराज हम लोगो के मुह मे कुछ और और पेट मे कुछ और नहीं है। हम लोग मन कर्म वचन तीनों से चत्रियत्व के सत्य व्रत पर आरूढ है अब आप हम लोगों को स्वामिद्रोही न जानिए। तब कविचद बोला कि सामतो सोच न करो सोच करने से बल पराक्रम और साहस सब नष्ट होते हैं। साहस हीन होने से कर्तव्य और कीर्ति मे बट्टा लगता है और कीर्ति गई तो जानो कि सब कुछ गया। इस लिये अब वह यतन विचारो जिसमे राजा का भी रुख रहै और बात बनी रहे।

इसी तरह जिद्दम जिद्दा होते हुवाते रात्रि चली गई पर राजा ने किसी की माख न मानी। वह गुस्से से भरा लाल लाल आखे किए हुए मरने पर ही उतारू रहा। दरबार बरखास्त होते समय फिर सामत बोले कि जैसे सर्प का विष मत्र के पास होता है उसी तरह हम सेवक होकर स्वामी के वश में है। हमे अपने धन जन गेह दारा पुत्र परिवार आदि का कुछ भी मोह नहीं है सब कुछ देख सुन चुके है, इस समय केवल यह आशा शेष है कि राजा पृथ्वीराज चेम कुशल घर जा पहुचे। इस पर पृथ्वीराज बोला कह तो चुका, न जाऊगा। क्यों फिर फिर वही बात कहते हो। अचल ध्रुव चाहे चल हो जाय, समुद्र मर्य्यादा लाघ जाय, सातों समुद्र सूख जाय और चद्रमा चादनी चाहे छोड़ दे पर यह पृथ्वीराज जैचंद को पीठ दिखाकर दिल्ली जाने वाला नहीं। यह सुनकर सामत लोग सन्न रह गए किसी ने कुछ कहे सुने बिना अपना अपना रास्ता लिया और जहा तहा मोरचों पर सब जा डटे।

उसी समय जामराय यादव ने नरनाह कन्ह से कहा कि भाइ सवेरा होते होते जो होगा सो देखा जायगा। इस समय राजा के सुहाग की रात्रि का सुख लेने का प्रवन्ध करो। जहा वरनी वहा वर, जहा वर वहा वरनी। वैसे तो सबके व्याह हुआ ही करते है पर यह व्याह बड़ा मगलमय है इस लिये आज व्याह की पहिली ही रात्रि को सुख सौनारा हो जाना उचित है। यह सुन कर कन्ह ने सब सैनिकों को हथियारो से दुरुस्त होकर पृथ्वीराज के शिविर के चारों ओर चौकस चौकन्ना रहने की आज्ञा दी और बारह सामतो को घोडे पर सवार कराके चौगिर्द गस्त करने पर सहेज दिया और इधर जामराय यादव से कहा कि आपने बहुत अच्छा सोचा पर आपही जाकर राजा से कहिए मे न बोलूगा उसके जी में आवे सो करे। जिस दिन से कैमास मरा उस दिन से तो उसकी मत मारी गई है सब काम उलटे सीधे करता है, बिना किसी की सलाह लिए हुए भाट के कहे में आकर यहा आन पहुचा। पर हमें क्या हम तो इस चोले मे सास रहते अपने बस भर उसकी रचा करेंगे और शत्रुओं का सत्या-नाश करेंगे, आगे आग जाने लुहार जाने।

कन्ह को रिसाना हुआ समझ कर जामराय उस के पैरों पर गिरपड़ा और बोला बस बस आप कुछ न कहें, आप केवल इस तरफ की डाट फाट रक्खें, मै जाता हूं। यह कहकर जामराय राजा पृथ्वी-राज के पास पहुचा और उससे बोला कि आज व्याह की पहिली रात्रि है सो आप सुख सेज सोइए इधर की फिकर न कीजिए। इधर हम लोग चौकस चौकन्ना है। पृथ्वीराज तो यह चाहता ही था, जाम राय की बात सुनकर उसका जी घी हो गया, सारे दिन समर के परिश्रम का पता न पड़ा, सयोगिता को गले लगा लेने की अभिलाषा में मस्त होकर पग दल को तिरस्कार करता हुआ प्रिया के समीप पहुचा। उसकी नजर से नजर मिलते ही काम का शायक कलेजे पार हो गया जिससे और सब बातो की कौन कहे वह अपने तक को भूल गया।

दोहा।

सुधि भूली सग्राम की, भूली अप्पनि देह।
जो न भयो बस पग दल, भयौ सो वाम सनेह॥
नयन चरन कर मुख उरज, विकसत कमल अकार।
कनक वेलि जनु कामिनी, लचक निवारन भार॥
रवनि रवन मन राज भय, भयो नैन मन पग।
सूरनि सो सग्राम तजि, मंड्यो प्रथम रस जग॥

तब सुराज रवनिय सिरखि, हँसि आसन सुख विट्ठ ।
रचिय काम सयनह सुवर. दिय आज्ञा भर उट्ठ ॥

कुल्ला कर के ऊपर से बीडा चबा कर राजा पृथ्वीराज तो संयोगिता के साथ सोने चला गया और इधर सब सामत मोरचे बाँध कर चारों कोने चौकस चौकी पर बैठ गए । राजा के शिविर से दस हाथ के फासले पर कविचद स्वय पहरे पर बैठा । निड्डुर राय, जामराय यादव, बलभद्रराय सिंह पामर, सामला सूर, नरनाह कन्ह, राजमत्री जैतराव, महुलाराय हम्मीर और जघारा भीम उत्तर दिसा मे, पहार राय तोमर, सलष प्रमार, हाडा हमीर के दोनों भाई, पीपा परिहार और कुछ धीरवशी राजपूत पश्चिम दिशा में, सलष का पुत्र लोहाना आजानबाहु, प्रसग राय खीची दक्षिण दिशा मे और सेना सहित शेष सब सामत पूर्व दिशा में पहरे पर बैठे ।

इधर राजा पृथ्वीराज तो सामतों के पहरे मे संयोगिता के साथ सुखशैय्या पर सो रहा था पर इधर पगराज को कब कल पडती थी । उसके दिल में तो इस बात की चुलबुली पडी हुई थी कि कब सवेरा हो और कब पृथ्वीराज पर पसर कर के उसे पकड लिया जावे । उसने रात भर आँख न मचकाई । घरी घरी धावन भेज कर इस बात का समाचार लेता रहा कि कहीं मोरचे के सिपाही तो गाफिल नहीं हैं । बरन पाच हजार सिपाहियो की जमात के साथ वह स्वय मौके देखता फिरता था । इस जंचद के जलेब में जितने असवार पैदल थे सब के साथ [illegible] हुई मशालें आगे आगे चलती थीं । इसी [illegible] पहरो पर भी हजारो मशालें जल रही थी । [illegible] समय ऐसा मालूम होता था मानो अभिमन्यु के [illegible] पर महाभारत का दृश्य सामने आगया [illegible] राजा जैचद मोरचे मोरचे स्वय कहता फिरता [illegible] सरदार पृथ्वीराज भागकर निकलने न पावे [illegible] निकल जायगा तो जिसके मोरचे पर से [illegible] उस सरदार को मार डालूंगा ।

[illegible] राजा पृथ्वीराज की [illegible] [illegible] सवेरा [illegible] मानो [illegible]

हो गई और पूर्व दिशा मे भास्कर भगवान के वाहक अरुण की अवाई की सफेदी दिखाई देने लगी । उसी समय पग सेना मे हुक्म पुकारा गया कि पूर्व दिशा से आक्रमण कर के पृथ्वीराज को इसी समय घेर लिया जाय । स्वामी की ऐसी आज्ञा पाकर पग सेना के निशान बजने लगे, ढोल मृदग भेरी नफेरी सहनाई और बासियो के सुरों से दिशाएँ गूँज उठें । जाँगडा लोग सिन्धूरिया के सुरो में उत्कर्ष तान से कडखे गा गा कर बीरों के चित्त चौगुने चग पर चढाने लगे, इसी तरह से हलकप मचाई गई पग सेना समुद्र की सी बाढ चली आती थी परन्तु राजा पृथ्वीराज को अभी कुछ खबर भी न थी । वह संयोगिता के गले मे हाथ डाले हुए बेसुध सो रहा था । इस समय सामत सेना की तो वह दशा हो रही थी कि न कुछ कहते बनता था न चुप रहा जाता था ।

अतएव अवसर जान कर कविचद ने विरदावली अलापी जिसे सुनते ही राजा पृथ्वीराज चट से उठ बैठा । उसने आज्ञा दी स्नानो के लिये गगा जल लाया जावे । तदनुसार कुछ सिपाहियों के साथ दो पेनादार गगा जी को गए । यद्यपि बीच में पग सेना के पहरेदारों ने बहुत कुछ आपत्ति की पर उन्होने गगाजल लाकर राजा के सामने हाजिर कर दिया । तब राजा पृथ्वीराज ने शौचादि से निश्चित हो गगाजल मे स्नान कर [illegible] और ईश्वर स्मरण करते हुए [illegible] । तब तक सब सामत और सिपाही [illegible] अपनी अपनी [illegible] में सज कर [illegible] कर हाजिर हुए, राजा ने [illegible] और कविचद ने उसे आशीर्वाद [illegible] । [illegible]

[illegible]

वाला ही था कि हल्ला गुल्ला मचाते हुए पंग दल ने आकर घेर लिया। यह देख कर पृथ्वीराज ने कमान हाथ में ली और वह सड़ासड़ बान चलाने लगा। पृथ्वीराज के चलाए हुए एक एक बाण में सात सात हाथी आर पार होते जाते थे। निदान हाथियों की बीड़ तो हट गई पर उधर से चार हजार जवान नंगी तलवारें लेकर दौड़े।

उधर पग दल की व्यूह इस प्रकार से थी। सब से आगे अर्थात् हरावल में दो हजार मतवारे हाथियों का हेला जिन पर नारगोर जबूर और हथनार आदि सजे हुए थे। उनके पीछे अश्वारोहियों की भीड़ लिए हुए बलिभद्र जंगम और केहर कंठीर थे, उनके पीछे पैदल और सवारों की गंगा जमनी जमात से घिरे हुए राजा जैचंद स्वयं थे। तस्करों की सहकारिणी रात्रि का अवसान हो चुका था पर अभी अंशुमाली भगवान या उनके वाहक अरुण के दिग्दर्शन नहीं हुए थे कि पग दल ने जंगी निशान बजाते और धरो मारो पकड़ो का रव मचाते हुए सामत समूह को आ दबाया। पंग सेना का यह आतंक साखुला सूर से न सहा गया। वह किरण सरीखी उज्वल तलवार सूरता हुआ पंग दल पर टूट पडा और अरि पंग दल रूपी अंधेरे को ध्वस करके उनके रक्त प्रवाह से बिना अरुण के उसने अरुणोदय कर दिया। सामत सेना के चक्रवाक वीर इस अरुणोदय को देखकर तन मन से प्रसन्न हो गए पर कुमुद रूपी पग का मुख मलीन पड़ने लगा और उसके दल स्वरूप दल कस कर संपुटित होने लगे। सच्चे सूर चहुआन के कर स्वरूप वीर उद्दिग पगार ने एक पहर पर्य्यन्त अतुल पराक्रम किया। उस सबेरे के समय भेरी नफेरी सहनाई और संख की लै में मिल कर तलवारों का झनाझन सुर ऐसा सुहावना मालूम होता था मानो स्वर्ग के देवालयों की झालरें झनझना रही हों। ओज में भरे अत्यन्त तेज तुखार तड़प तड़प कर किनकते मिनकते और ठिए देते थे, हाथियों के झुड कूकते और चिक्कारते थे और सौर्य्य मदमाते सूर वीर किन्नर से नाचते हुए हुमक हुमक व हथियार चलाते थे। जब कब कोई दोनों एक सा वार करके दम की दम में पार हो जाते थे। ज कब दो एक दूसरे के साम्हने गटा में गटा डटा व खडे रह जाते थे, एक तलवार का वार करता दूसरा ढाल पर ले लेता, वह सेल चलाता तो उसे हाथ से पकड कर ठेल देता, किसी के श पर हाथ पर हाथ पडने पर भी केवल पुष्पवर्षा होता, और किसी का सर नट का सा बेटा उछल दूर जा गिरता, किसी का मुड मार मार बकता रुंड कहर करता फिरता था। कोई अशक्त होकर रक्त में लथ पथ पड़ा मछली से तरफराता था पर कोई गिर भी पडने पर फिर से उठ उठ कर लडता था इस प्रकार से वीर उद्दिग पगार ने सार ऱ्या झेला मानो तलवार की धार से मोक्ष का द्वार खोला क्योंकि उस समय सहस्रों सूर वीर कोई तो आकाश में मुस्कराती हुई अप्सराओं के हिये का हार हुए और कोई उन्हें भी निदर कर परम पद को चले गए।

भूनिग राय के पुत्र उद्दिग पगार ने इस प्रकार एक प्रहर पर्य्यन्त विषम पराक्रम कर के पग दल का कलेजा दहला दिया। उसके युद्ध में योद्धा तो बहुतेरे कटे परन्तु एक दूसरे पर खडक खडक कर हजारों तेगा तलवारें और सेलें टूट फूट कर धूर में मिल गई। एक घडी दिन चढने पर उद्दिग पगार कुछ सुस्त पड़ते देख पड़ा, इसपर सूर वीर साखुला सूर खाँडा लोल कर झपट पड़ा और उसने भी आँखे मीच कर वह हाथ साफ किए कि जिसका कौतुक देख कर देवता भी मुँह बाकर रह गए। घरी भर में हजारों हाथी घोडे ऊँट कटकाट कर पट गए लोथ पर लोथ अटे गई और लोहू के कुड भर गए, और इतने बड़े पग दल में हलचल मच गई। जहाँ तहाँ हाय हाय होने लगा और योगिनी तुमर और नारदादि पचम स्वर में सिंदूरिए अलाप अलाप कर पृथ्वीराज की जै बोलने लगे। एक प्रहर दिन चढ़े इधर से वीर उद्दिग पगार और साखुला सूर

ते रहे और उधर पंग सेना का बनसिंह नामक क सरनाम सरदार खेत रहा। पग दल मे वह र बहादुर था अस्तु उसके मरते ही राजा जैचद ती पर हाथ रख कर रह गया।

वीर बनसिंह एक विशेष रणकुशल सेनानायक । उसके रहने इन सौ सामंतो को भी नाको दम गया था ये लोग जिस रूख पर जाना चाहते थे मी तरफ बनवीर पहिले बन्दोबस्त कर रखता था स्तु जब वह मारा गया तब सामंतों सहित पृथ्वी- ज बराबर आगे बढ़ने लगा। यह देख कर जैचद स्वय सेना का व्यूह बाँधा, सोलह हाथी, सात ार मुसल्मान सिपाही आगे करके जैचंद साम्हनें ला और आठ हाथी और कुछ सेना के साथ ार खा और आठ हाथियों सहित अपनी निज ी फौज के साथ चंदेरी के चदेल राजा के भाई ने ए बाजू से धावा किया। यह देख कर अत्ताताई । अब तक बाई तरफ था झट बमक कर दाहिनी रफ आ गया। इस प्रकार व्यूह बद्ध होकर भादों मेघों की तरह गर्जना करते हुए पर्व्वत के समान े वह मतवारे हाथियो को आगे करके पग दल । पुनः पृथ्वीराज पर धावा किया। इतने हेर फेर ृथ्वीराज मैदान से दस कोस हट गया था परन्तु पग दल ने फिर से जा दबाया और ैचद ने हाथ उठाकर कहा कि भला पृथ्वीराज ोने कर निकलने न पावे। जैचद का हाथ उठा हुआ देख पार पृथ्वीराज ने जो एक तीर मारा तो उसके े के को आकर लगा जिससे वह बेकाम होकर उसी ी गिर गया।

और सौ उनको जलाकर भस्म कर दिया। नवमी के दिन पहर भर दिन चढ़े जिस समय पग दल को सामंत समूह पर दूसरी पसर हुई उस समय चतुरा- नन चिंताग्रस्त होकर सोचने लगा हा! आज मेरी बरसों की कमाई मिट्टी मे मिली जाती है जो दस मास गर्भ मे रख कर बडे यत्न से पाल पोस कर इतने बडे किए गए थे वे दम के दम में बेदम होते जाते है खैर यही नही वे मेरी सृष्टि से निकल कर उस शक्ति में लीन हो जाते है जहा मेरा भी गुजारा या चारा नहीं है। उस समय राजा जैचद स्वय लाल आखे किए हुए बाण वर्षा कर रहा था। और पकड़ो पकडो कहते हुए पृथ्वीराज को धर लेने के लिये ऐसा उत्सुक हो रहा था जैसे महाभारत में भीम दुश्शासन के लिये। इन पग की क्रोध रूपी हुताशन में पृथ्वीराज साक्षात घी के समान था और सौ सामत अन्य सॉकिला की सामग्री के समान थे।

पृथ्वीराज को पकड लेना पग दल का अभीष्ट था और सामन्तों का कर्तव्य था पृथ्वीराज को बचाना। अस्तु इसी अपनी अपनी बात पर डटे दोनों दलों के वीर जान को हथेली पर लिए हुए बेकसर होकर पराक्रम कर रहे थे। ये सामत लोग तो उस घन घटा रूपी पग दल में बिजली से तड़प रहे थे। कोई हाथी के पुट्ठे पर हाथ देकर उसे कटौवा सा काट गिराते थे। कोई सर घोड़ा सवार को चीर कर चार कर देते थे और कोई पैदल दल को दलन करने में दत्तचित्त थे। इसी तरह मार मार होते होते उस समर भूमि पर रक्त का सरोवर भर गया और ... के ... लग ... । रक्त ...

बढ़ने के लिये बाग उठाई। यह देखकर जैचद ने बड़े आवेग मे आकर कुछ कुवाच्य कहते हुए अपने सैनिकों को बड़े जोर से ललकारा। तब तो पग दल ने तमक कर बडे ताव से घेरा डाला और पगराज की आज्ञानुसार तब तक शखधुनी भी सज कर आगए।

उस दिन नवमी रवि वार को मेप का सूर्य्य और सिंह का चंद्रमा था। जगनाम योग चित्रा नाम योगिनी और रोहिणी नक्षत्र था। मगल और बुध तीसरे थे केन्द्र का वृहस्पति था, सूर्य्य चन्द्रमा और शुक्र गोचर पडते थे और राहु पर उनकी पूर्ण दृष्टि थी। इस योग में युद्ध होते होते जब दो पहर हो गए तो पग दल मनहार होकर झिझक रहा और सामतो सहित राजा पृथ्वीराज पुनः आगे बढने लगा तब जैचद ने अपनी सेना को पद्मव्यूहाकार रचकर उसके आठ दल किए। एक दल का मालिक मुसल्मानी सेना का नेता धरि खा हुआ दूसरे सौ हाथियों की बीड लेकर सूर्य्यवशी मल्हन नरेश चला तीसरे दस हजार राजपूतो के बीच मे कदर्प कुमार था तिसके पीछे तिरहुत का राजा केहर कठेर, बीच में देवगिरि का राजा भान राय यादव, तिसके बाद देव दहिया तातारी था, उसके पीछे महनग मोरी और उसके बाद अत्यन्त बलवान भीपम खदारी था। इन लोगों ने लपक कर जब सामत समूह को फिर से घेर लिया और चारो ओर से एक बारगी पसर करके चहुवान को बॉंध लेना चाहा तब इधर से मालराय चदेल, भानराय भट्टी, भुआल धवलेस, वीर सामला सूर और पहार राय तूअर इन पाच सामतो ने तलवारे पकडीं और अपने भूत वैतालों के दल बल साहित चौसठ योगिनी और बावन वीर इनकी सहायता पर खडे हुए। जिस समय वे असल पानी वारे पाच राजपूत प्राणों का मोह छोड कर अष्टदल कमलवत व्यूह वद्ध पगदल को दलन करने के लिये वदल कर खडे हो गए, उस समय उनके ओज से भरे हुए चेहरे उदित अशुमाली से दम दमाते थे एवं वे ऐसे सुशोभित होते थे जैसे लाल मुख वाले पांच सुग्गों ने समुद्र की थाह लेने का प्रण किया हो। उनकी उस शोभा पर मनुष्य क्या आकाश में स्थित देवाङ्गनाए भी बार बार बलि जातीं और उनकी बलैयॉ लेती थीं।

परन्तु जब उन पाच सामतों ने तमक तमक कर हाथ देना आरभ किया तो वे उस समुद्र समान पग दल मे वडवाग्नि बनगए। लहरों के समान वेग से बढते हुए पग दल को उन्होंने उसी दम जहॉ का तहॉ रोक कर उन्हें एक भी कदम आगे न बढने दिया। और बात की बात में शत्रु सेना के सहस्त्रों सवार और पैदलों को काट कपट कर पाट दिया। उन उच्चवशी उच्चसाहसी पाच राजपूतों के ऊचे हाथ देख कर अतरिक्ष वासी देवता समूह वाह वाह और उनके अघातों से पृथ्वी पर पतित शत्रु हाय हाय की पुकार करते थे। राजा जैचद की आज्ञा पाते ही पग सेना के सिपाही उन पाचों पर बिजली से लपक पडे, दतारे दुरद वद्दर से जुट पड़े और हीं हीं हींसते ठीं ठीं टीं देते और फुर फुर फुर करते हुए घोडे चारों ओर से टूट पडे। खड खड़ बख्तर खडकने लगे, तलवारें झनाझन झालरें सी बजने लगी, सना सन तीर सनसनाने लगे और लबालब लोहू भर गया। वे बचाव की आशा से रहित हियाव और चाव भरे पाचों राजपूत बच्चे दाव पर दाव करते घाव पर घाव सहते पीछे पाव देने का भाव भी न करते थे। इसी तरह हिलते पिलते कटते काटते मरते मारते वे पाचो भी पचत्व को प्राप्त होकर इस असार संसार से पार हो गए। उन के कलेवर पृथ्वी पर पतित होते देख कर देवताओ ने स्वस्तिवाचन कहते हुए प्रसन्नता से पुष्प वृष्टि की पर अप्सराऐं आपस में झगडने लगीं, एक कहती उसे मै वरूगी दूसरी कहती नही वह मेरे योग्य है पर वे पाचों इन्हे यों ही लडते झगडते छोड कर उस आनन्दमय चिदानन्द में लीन हो गए जहा जाकर फिर इतर प्रपचो से एक दम सबन्ध ही टूट जाता है। वाह रे वीरो खूब पराक्रम किया दुनिया को

बतला दिया कि सच्चे स्वामिभक्त राजपूत बच्चे ऐसे होते है। राजपुतो देखो तुम्हारा यही कर्त्तव्य है कि बान पर प्राण देना पर जीते जी बान हाथ से न जाने देना।

उक्त पाचो सामतो के खेत रहते रहते साढे अठारह घड़ी दिन व्यतीत हो चुका था अन्य सामतों सहित राजा पृथ्वीराज भी कुछ मैदान जीत गया था। उन पाचो के खेत रहते ही केहर कठीर हाथियों का हेला पीछे छोड कर केवल सवार और पैदल दल लेकर झपटा और सामत समूह को उसने जा लिया। यह देखते ही पृथ्वीराज ने फ़ौरन घोडे की बाग फेर दी और उसके साथी सामंत लोग भी हारे ज्वारों की तरह बदल कर झपट पड़े। राजा पृथ्वीराज ने कंध से कमान निकाल कर उस पर बाण सधाना। उस समय शहाबुद्दीन का काल वह कमान ऐसी भासित होता था मानो दूज की जुन्हैया उदय हो रही है। कमान पर बाण चढाकर पृथ्वीराज ने सयोगिता से कहा कि देख मै इस बाण से तेरे पिता को मार कर सारे झंझट की जड मिटा देता हूँ इस पर सयोगिता कापती हुई हाथ जोड कर बोली कि इस समय मेरे कहने से उन्हे क्षमा कर दीजिए यह सुन कर राजा पृथ्वीराज ने अनमने हो कर बाण उतार लिया और जान लिया कि सचमुच यह स्त्री पूरी कलहकारिनी है।

बार भी पृथ्वीराज के सीने पर बैठ गया तब तो उसने तमक कर तलवार निकाली और इस पराक्रम से कहर करने लगा कि पग सेना के छक्के छूट गए उस दैत्यवशी राजा पृथ्वीराज ने दम भर में हजारों पैदल सवार और हाथी काट गिराए। पृथ्वीराज जिस पैदल पर हाथ फेरता था मानो उसकी आ बनती थी।

सन्ध्या को युद्ध बन्द होने पर फिर सब सामन्तों ने राजा पृथ्वीराज से कहा कि महाराज! हमे अपने जीते जी यह हाल देखना पड़ा। दो घाव आपको लगे दो घाव आपके घोडे को लगे और एक घाव सुन्दरी सयोगिता को लगा। हमलोग आपके चरण छूकर बार बार यही विनती करते है कि हमारे आखों देखते आप कुशल से दिल्ली जा पहुंचिए। हाय! हम लोगों के लिये इससे अधिक दुःख और लज्जा की क्या बात हो सकती है कि हमारे देखते रानी सयोगिता को और आपको घाव आजाय लडने में हार जीत हुआ ही करती है और दूसरे की हँसी करना दुर्जन लोगों का सहज व्यवसाय है अस्तु इस ओर ध्यान न देकर आप दिल्ली को जाइए यहा हम सो है सो समझते रहेगे।

कहावत है कि कोई बजावे कमाची पर [illegible] नाचे बेमाची, सो गति पृथ्वीराज की थी सबने हजार समझाया पर उसने एक न मानी। [illegible]

करने को उद्यत हुए। अद्वितीय अत्ताताई सीने में सेल पेल पेल कर पग दल के मुखिया सरदारों की खबर लेने लगा। छक पाकर रैसल राय ने पृथ्वी राज पर वार करने की इच्छा से उस तरफ को घोडा बढ़ाया पर बीर अत्ताताई ने बीच में आकर घोडे के सीने में सिंगी पेल दी जिससे वह रैसल राय को लिए दिए जमीन पर लोट गया। रैसल के गिरतेही अत्ताताई ने उसी सिंगी से उसका भी काम तमाम किया। इसपर कन्हराय मरहटा लपक कर साम्हने आया पर बीर अत्ताताई ने एकही हाथ में उसे मार गिराया इन दोनों के मरते ही सारी पगसेना वे दूलह की बरात की तरह भाग उठी।

यह देख कर राजा जैचद ने एक सहस्र शख धुनी सन्यासियों को आक्रमण करने की आज्ञा दी। तदनुसार सर्वाङ्ग मोर पच्छ से सुसज्जित वे शखधुनी सन्यासी हर हर कहते हुए घोड़े पर से उतर पड़े और सामन्त समूह को परास्त कर पृथ्वीराज को पकड़ लेने के लिये बढ़े। उन अत्यन्त बलवान और तेजस्वी तपस्वियों के आतंक से सामन्त लोगों का हृदय भी थर्रा गया और सब अपनी अपनी बगलें झाकने लगे। उसी समय पृथ्वीराज ने कवि चन्द से कहा कि ये ऋषिस्वरूप शखधुनी वैरागी बड़े तप और तेज के पूरे जान पड़ते है परन्तु आश्चर्य्य है कि ये सासारिक माया मोह से रहित होकर भी राजा जैचन्द की सेवा क्यों करते है। इस पर कवि चन्द ने उत्तर दिया कि उज्जैन नगरी में सदा से प्रमारों का राज्य चला आता है।

एक समय वह था कि ये उज्जैन्याधिपति प्रमार वंशी राजा सारे देश के शासक थे। उसी समय केहर कठेर नामक एक राजा हुआ उसके पश्चात् उसका पुत्र प्रताप राय गद्दी पर बैठा। प्रतापराय का पुत्र रामराय तैलग हुआ। उसके ताबे में एक हजार रघुवशी चत्री थे जिनके ताबे में दस लाख फौज थी। वे रघुवशी राजपूत बड़े ही बलवान प्रतापी और अतुल पराक्रमी थे। जब रामराय तैलग बूढे हुए तो उन्होंने अपना सारा राज्य नौखण्ड नौकुली चत्रियों को वितरण कर दिया, उसने तोमरों को दिल्ली का राज्य दिया चावंडों यानी चालुक्कों को पटन दी। चहुवानों को सभर की भूमि, कमधुज्जों को कन्नौज दिया, परिहारों को मुरदेश यानी मरु भूमि दी. बारडो को सिंधु देश दिया, यादवों को सोरठ देश दिया और जावालों को दक्षिण देश और चारणों को कच्छ और भाटों को पूर्व देश का राज्य दिया, इस तरह से यह सारा राज्य सकल्प करके बन में तपस्या करने चलागया। यह देखकर सच्चे स्वामि सखी रघुवशी राजपूत भी ससार के नेह नाते को अनित्य जान कर आप भी तपस्वी बन कर उत्तराखण्ड को चले गए। वे सब के सब एक उत्तग पर्व्वतवेष्ठित गहन बन में जाकर निश्चल मन से तपस्या करने लगे परन्तु उस बन के बासी निश्चर सदा उनकी तपस्या में विघ्न किया करते थे। पर वे बीर पुरुष कदापि चितभग न होते थे तब एक दिन उन दुष्ट निशाचरों ने उनकी उस गाय को चुरा कर मार खाया जिसके दूध घी से वे होम किया करते थे। बात यह उन सब को बहुतही खटकी यहा तक कि एक चिता रच कर वे सब अग्नि में प्रवेश करने पर उद्यत हुए। उसी समय नारद मुनि वहा आ पहुँचे उन्होंने अर्घ पाद्य आसन बंदनादि सब प्रकार से नारद जी का यथोचित सम्मान किया इसपर नारद जी ने प्रसन्न होकर उनसे पूछा कि यह क्या करते हो तब उन्होंने अपना सारा हाल वर्णन किया जिसे सुन कर नारदजी बोले कि हे चत्रिय बीरो तुम अग्नि में प्रवेश करने के पाप से मुक्त नहीं हो सकते तुम्हे चाहिए कि अभी तुम बीस वर्ष पर्य्यन्त और भी तपस्या करो और तत्पश्चात रण क्षेत्र में प्राण त्यागो। एक चत्री पुत्र के लिये समर मे मरने से अधिक श्रेयस्कर दूसरा मार्ग है ही नहीं। तपस्या का रास्ता बडा टेढा है अनेकानेक कष्ट सहकर जन्म भर तपस्या की पर कहीं इन्द्रिय डुलगई अथवा अन्य किसी प्रकार से व्रत भंग होगया कि सब किया कराया मिट्टी में मिल गया।

नारदजी के ऐसे बचन सुन कर वे लोग बोले कि महाराज आपकी आज्ञा सिर माथे पर है, पर हमें

अन्देसा इस बात का है कि समर मे सम्मुख होकर हम मारेगा कौन इस पर नारदजी ने उत्तर दिया कि गंगा के कूल पर कन्नौज नगर में राजा जैचद राज्य करता है किसी विशेष कारण वश उससे और दिल्लीपति राजा पृथ्वीराज से बैर होगा और उनमें जब परस्पर वैर होगा तब तुम लोग काम आओगे और सायुज्य मुक्ति पाओगे। यह सुन कर वे सब नारद जी के चरणों पर गिरे और बोले कि धन्य प्रभु आपने हमें अति उत्तम उपदेश दिया।

उनको इस प्रकार समझा बुझाकर नारदजी वहा से चलते हुए और चट वे राजा जैचन्द के पास पहुंचे। नारद जी को दूर से देखतेही राजा जैचन्द सिंहासन पर से उतर कर उनके पैरों पर गिर पडा और उन्हें सादर आसन देकर उसने नारदजी की विधिवत पूजा की और तब हाथ जोड कर बोला कि आज मेरे अहोभाग्य हैं जो आप का पधारना हुआ। यदि सेवकार के योग्य कुछ आज्ञा हो तो कहिए। तब नारदजी बोले उज्जैन के राजा तेलग प्रमार के तप करने को चले जाने पर उसके सच्चे सखा और सेनानायक खिन्न तन एक मन एक हजार रघुवंशी राजपूत भी तपस्या करने लगे। उन्होंने दो सौ वर्ष पर्य्यन्त घोर तप किया पर एक दिन राक्षसों ने उनकी गौ मार डाली जिससे वे अत्यन्त खिन्न मन हो कर अग्नि प्रवेश द्वारा आत्महत्या करने पर उतारू हुए। यह देख कर मैं ने उन्हें समझाया कि ऐसा न करो तुम क्षत्री हो इस लिये [illegible] क्षेत्र मे तन त्याग कर अलभ्य पद प्राप्त करो।

[illegible] ॥ जीवित लभ्यते लक्ष्मी मृते चापि सुरांगना।
दिना विध्वंसिनी काया का चिन्ता मरने रने॥

[illegible] वे मेरी बात मान गए। अब वे जटाओं [illegible] मुकुट बांधे चक्र लिए शंख बजाते हुए सब [illegible] पास आवेंगे सो आप उनको [illegible] । वे एक तो स्वभावतः [illegible] [illegible] पर तपस्या [illegible] [illegible] निकट [illegible] हो रहे हैं [illegible] तुम्हारे किसी गाढ़े समय में काम आवेंगे उन एक हजार को दस लाख के बराबर समझिए। यह कह कर नारद जी चले गए।

काल पाय वे रघुवंसी शखधुनी तपस्वी भी राजा जैचद के दरबार मे आ पहुंचे उन्हे पाकर राजा जैचद ने उनको बडे आवभगत से लिया और अपने बडे भाई के समान मान कर उन सबको अपने दरबार में स्थान दिया। तब से आज की घडी तक वे लोग गगा के किनारे निवास करते हुए मौज से समय बिता रहे थे आज जैचंद की आज्ञा पाकर उन्होंने आप पर पसर की है अतएव सासारिक माया मोह से रहित एक हजार तो वे सब है और केहर कंठेर, प्रतापराय, सिंघुआ पहार रामराय, प्रमार कड्डियाराय, रानागुंडीर रायपरबत राय और सामत राय साखुला इतने सरदार उनकी सहायता पर है।

अभी कविचद की बातें खतम न होने पाई थीं कि अग्नि ज्वाला के समान जाज्वल्यमान नेत्रों वाले वीर जिनकी टेढ़ी टेढ़ी मूछें भौंहों को स्पर्श कर रही थीं वज्र मल्ल गर्त्ता तोमर तलवारें और बाणें हाथों में लिये हर हर करते हुए सिर पर आ पहुंचे। उनके ओज मे भरे हुए लाल लाल चेहरे ऐसे चमचमाते थे जैसे सैकडों सूर्य उग रहे हों। वे घन घोर नगाडों के साथ में शंख बजाते और सिर पर मोर पंख बांधे हुए ऐसे चले आते थे जैसे सावन भादों के कुहकुहा कर नाचते हुए मोरों की सेना लिए हुए पावस ऋतु चढ़ी चली आ रही हो। उन्हें आ पहुंचा देख कर दल मे [illegible] राय [illegible] जैतराय प्रमार और [illegible] चंदेल ने [illegible] कर आगे कदम दिए। [illegible]

निदान मांस यहां से ले जाकर ऊपर कोटर में तो चील्ह सपरिवार भोजन करने लगी और उसी के नीचे चौंसठ्ठियों का एक समूह वीरों के मध्ये भक्षण करता और वीरों के गुण गान करता था। भोंहा चंदेल के शव का मास पाकर चिल्हनी सपरिवार खूब सतुष्ट हुई।

खाने पीने से तृप्त हो अंत में उसने अपने पति से पूछा कि आजकल ये माल टाल कहा से लाते हो। जहा देखो तहा आजकल पलचरों के भण्डार लबा लब भरपूर है। मैने अपने बडे बूढ़ों से सुना है कि सबसे प्रथम बडा भारी युद्ध देवासुर सग्राम हुआ।

तत्पश्चात महादेवजी ने तारकासुर का बध किया फिर लका मे रावण से युद्ध हुआ और फिर यहा भारत का युद्ध हुआ उसके पश्चात फिर आज तक वह बात देखने सुनने में नहीं आई, पर आज कल फिर कहीं विषम काण्ड उपस्थित हुआ जान पडता है। कहीं तो यह सब रक्त प्रवाह किसके लिये हो रहा है किसी सुन्दरी का विवाह है या कोई किसी पर वैर भँजा रहा है अथवा दो दल योंही गर्व में आकर अपना अपना पराक्रम दिखाने के लिये एक दूसरे को मारते है। इस पर चील्ह ने उत्तर दिया कि राजा जैचद यज्ञ विध्वस का बैर भँजा रहा है पृथ्वीराज ने सुदरी सयोगिता का पाणिग्रहण किया है और वे दोनो परस्पर शत्रु एक दूसरे से कम पराक्रमशाली भी नहीं है। चिल्हनी ने कहा कि ऐसा ही आज मैने चौसठ्ठी देवी को कहते सुना है जिस समय उसने किसी एक बडे बाके वीर का सिर शिवजी को समर्पण किया तब उसने कहा था कि मनुष्यों में ऐसा युद्ध आज तक देखने में नहीं आया वे लोग साक्षात देवताओं का सा पराक्रम करते है जिस समय किसी कदर बीर का रुड उठ खडा होता है तो ठट्ट के ठट्ट असवार प्यादे और झुण्ड के झुण्ड हाथियों को चट्ट पट्ट काई की भाति काट देता है। उन लोगों का युद्ध कौशल देख कर आकाशवासी देवतागण पुष्पवर्षा करते हैं रंभादिक अप्सराए देख देख कर हँसती है और उन्हें धरने को भगाती है और तबूर और नारद आदि गन्धर्व उनके गुणगान करते हुए फूले अग नहीं समाते उनका रणकौशल देखकर सूर्य्य का रथ स्थिर हो जाता है बैताल ताल देते हैं नारद नाचते है पर बॉझे छाती पर हाथ मारमार कर पछताती हैं। यह सुन कर चील्ह बोला हा सच है ऐसा युद्ध अब तक देखने सुनने में नहीं आया है जब पग दल के सिपाही नगी तलवारें मूंट कर सामत समूह पर आए तो राजा पृथ्वीराज ने साक्षात अर्जुन के समान बाणावली करके आकाशवासी देवताओं को भी चकितचित्त कर दिया। उसकी प्रिया अपने पति का पराक्रम देख कर चित्र लिखी सी रहगई। जिस समय जैचद की आज्ञा पाकर चारों ओर से बाण बर्साते हुए दस हजार मुसलमानों ने आक्रमण किया तो राजा पृथ्वीराज और उसके सौ सामत घायल सिंह की तरह पछल कर खड़े होगए। उन पराक्रमी सामतों के बीच में अचलचित्त राजा पृथ्वी राज साक्षात ध्रुव के समान अचल होकर डटा था। जिस ओर से मुसलमान सिपाही पकडो कहकर जोर से धावा करते उसी ओर को राजा पृथ्वीराज घोडे की बाग उठा देता और अगनित बाण मार कर सघटित मीर सेना को काई सा फाड देता था इसी तरह युद्ध होते होते सन्ध्या होगई पंग दल के सिपाही भी सारे दिन के परिश्रम से शान्त होगए थे इसलिये युद्ध बन्द होगया और आलस्य भरे नेत्रों वाली नव-दुलहिन सयोगिता को हृदय से लगाकर पृथ्वीराज भी सुख में हुआ दूसरे दिन पुन. पग सेना ने पसर की और राजा पृथ्वीराज ने पुनः अतुलित पराक्रम दिखाया इस बार उसने तलवार से युद्ध किया, राजा पृथ्वीराज जब मतवारे हाथी के कुभ पर तलवार का वार करता तो वह खरबूजा सा फट जाता था। मत-वारे हाथी के काले काले कुंभ में पृथ्वीराज की उज्ज-बल तलवार बद्दलों के बीच मे जुन्हैया सी समा जाती थी उसमें जो गजमुक्ता के कण लपटे लगे आते थे वे ऐसे जान पडते थे मानो दूज की जुन्हैया को तारागण लपटे रहे हों। इसी प्रकार युद्ध होते होते

दूसरे दिन की सन्ध्या होगई और दोनों दल दो दिन के परिश्रम से शान्त होकर रात्रि में विश्राम लेने लगे और तीसरे दिन दो घडी रात्रि रहते से फिर युद्ध होने लगा।

परन्तु यदि तू विदित वर्णन सुना चाहती है तो इसी सबन्ध में एक बात विशेष वक्तव्य है उसे सुन।

इसी तरह जब कि सामंत सेना के सिर पर असंख्य अस्त्र शस्त्रों की वर्षा हो रही थी कविचद वरदाई ने युद्ध करने की इच्छा की और राजा की अनुमति चाही पर पृथ्वीराज ने कहा कि हे कवि जहा हम राजपूत लोग हथियार बाधे हुए जूझने को खडे है वहा तुम्हारे हथियार उठाने की कोई आवश्यकता नहीं है, हम लोगों को मरने दो और हम लोगों का यश बखान करने के लिये तुम जीते जागते घर जाओ। इस पर कवि ने उत्तर दिया कि यश बखान करने के लिये मेरा पुत्र जल्ह है मै गल्हन पुत्र कविचद इस समय दो हाथ दिखाए बिना कदापि न मानूंगा। यह कहकर कविचद घोडे को एड देकर मैदान मे जा पहुँचा। कविचंद के बाग बतलाते ही वह वायु के समान बेगवाला तेज तुरग इस तरह से तडप गया जैसे आकाश से तारा टूटता है और मैदान में खडा होकर ऐसी आखें करने लगा जैसे नाट्यशाला में पद्रह सोलह वर्ष की छोकडी छैलों को छकाती हो। पृथ्वीराज का दिया हुआ उच्चश्रवा कैसा बछेडा सिर से पैर तक [illegible] साज से सजा हुआ कविचंद का घोडा ऐसा जान पडता था मानो अभी सूर्य्य के रथ में से [illegible] खडा कर दिया हो। उस घोड़े के दोनों [illegible] और कान शत्रु के प्राण हरन [illegible] बाण के उसकी पूछ की ओर अच्छे चौर सी छहरा रहा थी। अस्तु कविचद वरदाई को मैदान में चमकता हुआ देखकर राजा जैचद ने हुसेन खा, कमाल खा खलीस खा, जलाल खा, फीरोज खा, गुलाब खा, फरीद खा और निवाज खा इन आठ मुसल्मान सरदारो को कविचद पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। उधर से वे हल्ला करते हुए आए और इधर से कविचद ने अपनी चद किरण सी तलवार चलाई। कवि ने दो मीरों (वीरों) को तो मार गिराया पर आगे हाथ उठातेही एक ने घोडे को बेकाम कर दिया। दूसरे ने उसका तंग काट दिया इसलिये जब घोडा बेदम हो कर गिर पडा तब कविचद भी लौट कर राजा पृथ्वीराज के पास आ गया। अपने कवि का ऐसा साहस और पराक्रम देख कर राजा पृथ्वीराज अत्यत प्रसन्न हुआ। कविचद को पैदल देख कर नरनाह काका कन्ह ने उसे अपना घोड़ा दे दिया। कविचद ने उसी समय जै बोलकार घोडे की बाग पकडी और राजा को आशीर्वाद देता हुआ उसकी पीठ पर सवार हुआ।

राजा जैचद ने जब अपने सैनिकों को ललकारा और उन्होंने कुपित होकर लगातार बाण वर्षा की तो उस समय ऐसा जान पडता था मानो मेघों से जल वर्षा हो रही हो अथवा कोई [illegible] जतु दल बाध कर बद्दल की सैर करने [illegible] हो। वे बाकी मूछों वाले ज्वान जब [illegible] के वार करते तो उनके [illegible] काले [illegible] और उज्वल फल छिन्न भिन्न होने से [illegible] जैसे राहु और चन्द्रमा [illegible] लोग अपने शत्रुओं पर [illegible] [illegible]

तुमसे कहां तक कहूं उनका रणकौतुक देखतेही बनता है, मुझमे इतनी शक्ति कहा है कि मै उसे यावत वर्णन कर सकू । राजा जैचद और पृथ्वीराज चौहान दोनो के दल के जो छत्री इस समय रणक्षेत्र मे परस्पर कट कर मरे जाते है वैसे फिर न होंगे । वे कट कट कर मुंड पर मुंड और रुंड पर रुंड परते जाते है कोई तरातर होकर गिरते जाते है उनके शरीर के सब अवयव छिन्न भिन्न होते जाते है और अति मोटा मेदा मज्जा आदि निकल बिथर जाते है जिन्हें हम पलचर लोग आनंद से नोच नोच खाते हैं पर शरीर में स्वासा रहते हुए वे धर मार से वाज नही आते। क्या कहूं वे ऐसे साहसी और पराक्रमी है कि देखने में तो वे एक साधारण भोले मनुष्य है पर जब उन्हे क्रोध आता है उनमे दसगुना बल आजाता हैं। शत्रु के सम्मुख बार करते हुए उनमें हजार का जोश आ जाता है और कबंध कट जाने पर तो वे लाख को भी लख में नहीं लाते । इत्यादि कहां तक कहू चलती तो है आप देख लेना "हाथ कंगन को आरसी क्या"।

कहा जा चुका है उधर से सखधुनी वीरों के आक्रमण करने पर इधर से भोंहाराय चदेल मोरचे पर गया परंतु जुड़तेही मारा गया इससे पंग दल का जोर बढ़ गया और पहर रात्रि जाते जाते केहरि कंठेर ने पृथ्वीराज के गले में कमान आन डाली और बड़े जोर से हांक करके संयोगिता से बोला री माता पिता की आज्ञा भग करने और यज्ञ वि-ध्वंस करने वाली वाला तू आज चोरी से चहुआन के साथ चली जाती थी देख अब तेरे प्यारे का क्या हाल होता है। केहरिकंठेर की बात खतम भी न होने पाई थी कि संयोगिता ने उसकी कमान की डोरी काट दी। डोरी के कटतेही पृथ्वीराज ने जो हुमक कर एक हाथ मारा तो केहर कंठेर कट कर दो होगया। परंतु तब भी पंगदल के सिपाहियों का जमाव अधिक था इस लिये पृथ्वीराज को विशेष हस्तलाघवता से काम लेना पड़ा। राजा को बेडौल फॅसा देख कर सारे सामत लोग भी उसी मोरचे पर आ डटे और एक घडी वहा मार काट हुई। चन्द्रदेव की चादनी रहते तक वहा सहस्त्र में से सात सौ सखधुनी समाप्त हो गए और सौ में सोलह सामन्त शान्त हुए । परन्तु पंगदल विचल गया और राजा पृथ्वीराज बच गया। इस चाँदनी रात्रि की लडाई में जो सोलह सामत खेत रहे उनमे मडली राय, मल्हनराय, जावला मल्हराय, बग्गरीराय बघेला, जामराय यादव, सारगराय गोरी, पहरीराय पड़िहार, साखुल सिंह, भानुसिंह, सिंधुआराय, सदल्लराय गोरी, भोज राज, और भोहा राय चंदेल इत्यादि थे। चौदह सामन्त जब काम आ चुके तब रजपाल राय ने पृथ्वीराज के साम्हने आकर सिर झुकाया और कहा कि हे स्वामी देखिए अब मैं भी आपकी सेवा में सिर समर्पण करता हूं। यह कहकर मियान से तलवार निकालते हुए ज्योंही उसने आगे कदम दिया कि किसी सखधुनी के एकही हाथ मे उसका सिर उड गया। सिर के कटते ही उसके कबंध नें यह पराक्रम किया कि इतने बड़े पग दल में हाय हाय हो उठी, बड़े बडे राजा रज-पूत और खानजादे पठान गरदन फाड़ कर चंपत होने लगे। उधर चन्द्रदेव के शान्त होने मे भी कुछ थोड़ी कसर रह गई । यह देख कर जैचद मारे क्रोध के गदेरी काटने लगा। उसने ऊचा हाथ उठा कर अपने सैनिकों से कहा रे सिपाहियो ये सौ सामंत तुम्हारे बल के नहीं है। यह कह कर उसने काशी के राजा को आज्ञा दी कि एक लाख सैनिकों के साथ वह मोरचे पर जाय। अस्तु जैचद की ऐसी आज्ञा पाकर काशिराज राजा कंचन राय एक लाख असवार पैदल और बहुत से हाथी लेकर स्वय सा-मत समूह के समुख आया। पगदल रूपी समुद्र का जल सोखने के लिये ये सामत तो साक्षात अगस्त स्वरूप थे। उधर से वे एक लाख धरो पकड़ो करते हुए चढ़ चले और इधर से ये सच्चे स्वामिसेवी सामंत मरने पर उतारू हुए। उधर वे अपने स्वामी की जै चाहते थे इधर ये अपने स्वामी की, निदान

दोनों में वह बिकट मार काट मची कि रक्त की सरिता वह निकली और लोथ पर लोथ पट गई। सहस्त्रों सैनिकों के मुड कट गए और रुंड पड़े पड़े मछली से तरफराने लगे, भसुड से सुड कट जाने पर सैकड़ों हाथी पहाड से चिक्कारते फिरने लगे। धन्य सूर सामतो जिन्हें एक स्वामिसेवा के सिवाय और कुछ भी प्रिय नहीं था हम तुच्छ मनुष्य एक जीभ से उनकी क्या प्रशसा कर सकें। उनके शौर्य्य और पराक्रम की सराहना करते हुए सूर समूह भी स्तभित होते थे परन्तु कहते है कि एक की दवा दो होते है अस्तु सामत लोग मारते भी जाते थे और हटते भी जाते थे उधर से पग दल बराबर दबाता जाता था।

अतएव सामत लोग जब बिलकुल कगार पर आ गए और मोरचे का ढग बेडौल देख पड़ने लगा तब औरंगशाह के पुत्र अत्ताताई ने त्रिसूल की थाह भरी और अपने सब साथियों में से छट कर बीच पंगदल में पिल पडा। उसने दहिने हाथ से तलवार और बाये से त्रिसूल की मार करके पग दल की व्यूह बिदार दी। उसने हरावल के हाथी और घोडों के कलेजे में त्रिसूल भोंक भोंक कर उन्हे विचला दिया और फिर प्रकोष्ट में पैठकर बाजू ताडने लगा। यह देख कर उधर से यशवतराय कमधुज्ज उसके साम्हने आया पर अत्ताताई ने एक ही हाथ में उसका सिर उतार दिया परन्तु उसका धड़ भी हाक कर जब ऊपर आने लगा तो उसे भी उसने त्रिसूल मेल कर शान्त कर दिया। इस पर काशिराज के सैनिकों के भी पैर उखडने लगे तब उधर से आठ हजार तातारी पठान ज्वान लेकर मीर सेना का अफसर गभीर भीर अत्तताई के मुकाविले में आया। तब तक अत्तताई के तलवार और त्रिसूल दोनों शस्त्र फट चुके थे इसलिये वह भी कटार निकाल कर मरने पर मुस्तैद हुआ। उसने अपने इष्ट देव को स्मरण करते हुए उच्च स्वर से सिंगीनाद करके सारे पगदल को कपायमान कर दिया, उतने में मीर गभीर ने तलवार का एक ऐसा वार किया जिससे अत्ताताई का सिर तन से जुदा हो गया पर धर ने कलेजे में कटार मेल कर मीर गम्भीर को भी ससार से बिदा कर दिया। अत्ताताई का शीश तो योगिनियों ने उछग में ले लिया और अग गगा जल मे जा गिरा। यह कौतुक देखकर आकाश में स्थित सुर समूह जै जै कार बोल कर पुष्प वर्षा करने लगे। औरंगशाह का पुत्र अत्ताताई तो चल बसा पर शत्रु दल को इस तरह बेकाम कर गया कि फिर किसी में मोरचे पर रुकने का हियाव बाकी न रहा।

अत्ताताई के धड को गगा जी में डालने वाला एक गधर्व था। अस्तु इधर यह कौतुक करके वह इन्द्र के पास पहुँचा और बोला कि हे देवपति ऐरावत को सजा कर शीघ ही सवार हुजिए और सामंत और पंगसेना का युद्ध देखने चलिए। उसने युद्ध का सारा बृतान्त वर्णन करके यह भी कहा कि मै अत्ताताई के शव को गगा में डाल आया हू। यह सुन कर इन्द्र अत्यन्त प्रसन्न हुआ और कतिपय देवता अप्सरा और किन्नरों को साथ लेकर आकाश मार्ग से वहा आ पहुँचा जहा दोनो दल खड्ग से खेल रहे थे। अत्ताताई के मोरचा रोकने पर सामंत लोग अवकाश पाकर गगा कगारे पर से हट कर मैदान पकड चुके थे और वे इस समय फिर भी बड़े जोर शोर पर थे इसलिये दोनों दलो का बीच बचावा करने के लिये इन्द्र देव ने बीच से सौ हाथ ऊची एक बज्र की दीवार प्रगट कर दी जिससे दोनों दल यथातथ्य रह गए। अब तक सामत लोग लडते मरते कन्नौज से पचास कोस दूर पहुच चुके थे।

वीर अत्ताताई का ऐसा अद्वितीय पराक्रम देख कर दोनों दल के योद्धा स्तभित रह गए। राजा पृथ्वीराज ने कविचद से पूछा कि क्या तुम इस अतुल महिमा वीर अत्ताताई की उत्पत्ति के विषय में कुछ कह सकते हो। तब कविचद बोला कि हा अन्नदाता कहता हू सो सुनिए—दिल्ली राज्यान्तर्गत आमापुरमडल राज्य का मालिक औरंगी नामक एक

चहुआन वंशी क्षत्री था। वह राजा अलगपाल के दरबार का प्रधान कर्मचारी था। औरंगी चहुआन स्वयं एक-नारी-व्रती धर्मज्ञ तथा सब भांति से उत्तम प्रकृति का पुरुष था। भगवत कृपा से उसका घर भी अन्न धन धान्यादि सब आवश्यक वस्तु सामाग्रियों से परिपूर्ण था, परन्तु सन्तान के नाम से उसको केवल एक कन्या थी। जिस समय वह कन्या जन्मी तो उसकी माता यानी औरंग की प्रसूता स्त्री ने प्रकट किया कि उसको पुत्र जन्मा है। निदान उसके घर या सगे सबंधियों मे सर्वत्र पुत्रोत्सव मनाया गया। कुछ सयानी होने पर वह कन्या पुरुष वस्त्र पहिने हुए दरबार में जाने आने लगी। सब लोग औरंगी चौहान का कुवर जानकर उसका राजकुमार का सा आदर करते थे परन्तु जब उसकी अवस्था बारह वर्ष की हुई और उसे स्त्री के अंग प्रगट होने लगे तो वह अपने मन मे बड़ी लज्जित हुई और उसकी माता भी बड़े संकट में पड़ गई। एक दिन उस कन्या के मन में कुछ ऐसी आई कि वह दस सखियों को साथ ले कर आधी रात्रि के समय हरिद्वार को चली गई और वहा गहन बन में जाकर तपस्या करने लगी। वह नित्य आधी रात्रि के समय षोड़सोपचार सहित शिव जी की पूजन करती और स्तुति करती कि हे असुरों का संहार करने वाले, गरल को गले में, चद्रमा को माथे में स्थान देने वाले, जटाओं में गंगा और कटि में मृगाल, और सब शरीर में सर्पोंधारण करने वाले, माया मोहादि विकारों से रहित, पार्वती को बाएं अंग में धारण करने वाले तीसरे नेत्र से कामदेव को भस्म करके बज्रताली लगाने वाले शृंगी विभूति की त्रिशाल को धारण करने वाले अखंड ब्रह्मचारी शिव तेरे स्मरण मात्र से सेवकों के संकट हरण होते हैं। हे माया से रहित जगत के कारण अधम उधारण देवताओं के देव महादेव जब आप बैल पर चढ़ कर चलते हैं और आप के माथे से विभूति झरती है सो भास होता है मानों भानु की किरणें झकझका रही हैं। इसी तरह से नित्त पांच गोदानों युक्त त्रैकालिक पूजन करते और निरंतर व्रत करते हुए उस कन्या को छ महीने हो गए। तब एक दिन आशुतोष शिव जी प्रसन्न होकर उसके साम्हने प्रगट हुए और उससे बोले कि क्या चाहती है। तब कन्या ने आद्योपान्त सब वृतान्त कह प्रार्थना की कि मुझ में पुरुषत्व प्राप्त हो जाय जिसमें मेरे माता पिता की लज्जा रह जाय। तब शिव जी ने कहा मैंने तेरे पिता औरंगीशाह को पुत्र होने का वर भी दिया था जो तुझे भी वरदान दिया पर तू अभी साधना न छोड मैं तुझे ध्यान में दर्शन देकर तेरा मनोरथ सिद्ध करूंगा। यह कह कर शिव जी तो अन्तर्ध्यान हो गए और वह कन्या पुनः निश्चल चित्त से आसन लगा कर तपस्या में रत हुई। सच है किसी देवता का स्मरण पूजन क्यों न हो निश्चल चित्त और दृढ़ विश्वास से करना चाहिए तभी सिद्धि प्राप्त होती है यदि चल चित्त हो गए तब कुछ भी सिद्धि नहीं होती पर लोग अपना दोष न देख कर तपस्या को निष्फल या देवता को झूठा कहने लगते हैं। अस्तु जब उसे तीन दिन और भी अत्यन्त व्रत करते हुए व्यतीत हो गए तब शिव जी ने उससे स्वप्न में कहा कि सचेत हो। मैंने तुझे पुरुषत्व दिया अब से तेरा नाम अत्ताताई होगा। तू ऐसा बली पुरुषार्थी और साहसी होगा कि कोई भी तेरे अपार बल का पार न पा सकेगा और जब क्षत्रियों मे अन्तिम युद्ध होगा तब तु ऐसा अद्वितीय समर कौशल करेगा कि सब लोग तमाशा देखते हुए रह जायगे। मनुष्य की तो बात ही क्या है तेरे पराक्रम से देवता और दानव भी तुझसे शसक रहेंगे। तू जब तक जियेगा ससार मे सुख से रहेगा और अन्त में रणक्षेत्र में प्राण तज कर शिव जी के अंश मे मिल जायगा। यह कह कर वह वीर अत्ताताई को विभूति डमरू माला और त्रिशूल देकर अन्तर्ध्यान हो गए।

इस प्रकार से शिव जी का वरदान पाकर वह भीम के सामन बलवान अर्जुन के समान पराक्रमी इन्द्र के समान तेजस्वी और अपने पराक्रम के आ-

तक से लोकपाल काल और दसों दिग्पालो को कपायमान करने वाला अत्ताताई प्रसन्नता पूर्वक घर आया और अपने माता पिता से मिलकर उसने सारा वृतान्त कह सुनाया । यह सुन कर उसके माता पिता अत्यन्त प्रसन्न हुए उन्होने कहा कि तू हमारे वश मे कुल का तरनतारन करने वाला सुपुत्र उपजा है तूने अपने तपोबल से साक्षात शिव जी का दर्शन पा लिया इससे अधिक भला और क्या हो सकता है। निदान जब सर्वांग विभूति रमाए कठ में रुद्राक्ष की कठी पहिने हाथो मे सिंगी और त्रिसूल लिए लाल लाल नेत्र किए जटा फटकारता हुआ वीर अत्ताताई अपने पिता के साथ अनगपाल के दरबार में आया तो राजा अनगपाल ने उसे देखते ही पूरी ताजीम दी। यह देख कर और सामत लोग भी उठ खडे हुए तब से अब तक उसका वैसाही आदर सत्कार चला आता था । ऐसा सब सामतों में श्रेष्ठ अतुलित पराक्रमी अत्ताताई भी आज चल बसा। कविचद के मुह से ऐसी कथा सुन कर पृथ्वीराज के चित्त पर विशेष प्रभाव पडा । उसने कहा सच है वीर अत्ताताई का पौरुष देख कर मेरा भी दिल दग हो गया । धन्य है! मै उस वीर की हृदय से कृतज्ञता स्वीकार करता हू । अतानाई का देहान्त होते ही काशिराज की बाजी फिर सहजोर होगई। एक तो अकेले एक सामत से इस तरह मार खाना ऊपर से राजा जैचद का वानी चढाना, इस लिये काशिराज ने तीन सौ हाथी कई हजार सवार और पैदल लेकर अब की बार बडे ताव से आक्रमण किया। उधर गगा कगारे से दूर हटकर सामंत लोग भी मैदान पकड कर जोश में आ गए थे । आगे आगे काशिराज की सेना और उसके पीछे कामधुज्ज राजपूतों की जमात के बीच में श्वेत हाथी पर सवार राजा जैचद स्वय चला आता था अस्तु उस काशिराज की सेना से सामत लोग इस तरह से जुट पडे जैसे सूर्योदय होतेही चकवा चकवी से जा मिलता है । काशिराज की फौज के हाथी आषाढ़ के से बदल चले आते थे । उनकी अम्मारियों पर रग बिरगी बेरखें और सुमेर शिखा की सी श्रृंगें सोने की कलीस सी भास होती थीं। उनके दात बगपात से सुशोभित होते और उनके बोलने से मेघों की गडगडाहट की सी ध्वनि होती थी। उस काली काली अँधियारी सी हाथियों की बीड में तलवार की धार पर धार बजाते हुए ये सौ सामत झिल्ली सी झनकारनें लगे। अपनी अपनी बान एव स्वामिसेवा की आन पर डटे हुए दोनों दल के योद्धा एक दूसरे की तरफ सिंह के समान आखें गुरेर कर हेरते और गठा नठेर नठेर कर दूसरे की चोटी पर हाथ फेरते थे। सामतो की तलवार के साम्हने से काशिराज के हाथियों का हेला बिचल गया इसलिये उधर से सवारों की पसर हुई और उन्होंने सामत सेना को दबा कर फिर से गगा की कगार पर लेजाना चाहा, परन्तु पृथ्वीराज इस चाल को परख गया और ज्योंहीं उसने सामतो की तरफ नजर फिरा कर देखा कि हाहुलीराय हाडा हम्मीर और उसका भाई गभीर सिंह दोनों अपने अपने घोड़ों को एड देकर काशिराज का दल बल बिदारने को उद्यत हुए। उन्होने दौड़कर चढी चोट हरावल तोड़ दी और अत्ताताई की तरह प्रकोष्ट में पैठ कर बाजुओं का बल तोडने पर उतारू हुए । उनके पीछे और भी बहुत से सामत सहायता पर थे, भीतर पैठ कर वे मारते और बाहर से ये लोग। इसी तरह मारा मार होते होते चंद्रमा की चादनी बिल्कुल लोप हो गई बल्कि दो घडी अधेरा भी हो गया तब तो परस्पर की जान पहिचान में गडबड़ पडन के कारण अथवा लगातार दो दिन के परिश्रम से अत्यन्त श्रमित होने के कारण दोनों दल किनारा कर गए। अस्तु सामत लोग भी अपने नित्त नियमानुसार पृथ्वीराज को बीच में करकें घन व्यूह बाध कर रह गए और उधर राजा जैचद ने अपनी सेना के चार भाग करके सामन्तों को चारो ओर से घेर कर तब प्रस्थान दिया । एक तरफ जैचद का भाई बनवीर राठौर था, एक तरफ मान्फ राय, एक तरफ कन्हराय राठौर, एक तरफ स्येन धजाधारी जैचद स्वयं था। इस तरह से सामत सेना को

चौचक्क घेर कर पंगराज पुनः प्रभात होने की प्रतीक्षा करने लगा।

पग ने तो चाहे पल भर पलक भी झपका लिये हो पर सामंतों को कब चैन पडता था। वे योंही कमर कस हुए इकट्ठे होकर गोष्ठी करने बैठ गए और उन्होने निर्णय किया कि अबतक जो हुआ सो हुआ पर सवेरा होतेही राजा को निकाल देनाही सलाह है। देखो अब तक हम लोगों में से २४ चौबीस सामत खप चुके पर बाजी बनी हुई है क्या जाने हाथी छूटें घोडे बिचलें जो राजा जैचद के हाथ पडगया तो बडी बदनामी हुई परन्तु जब यह बात पृथ्वीराज ने सुनी तो वह मारे गुस्से के लाल पीला होने लगा। वह बोला चलो बैठो बार बार वही बात, तुम सबको छोड़ कर मै जैचद के साम्हने से भाग जाऊ? इस समय तो मेरे साथ में तुम सौ सरदार हो यदि अकेला भी होऊ तौ भी दम में दम रहते पीछे को कदम देने वाला नही हू। तुम लोग पड़े किस प्रपच में हो मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है। जिसकी आन लगती है वह सदूकों के अदर बद करने से भी नहीं बचता और जिसकी नहीं है वह सिर पर खड़ग बर्सने से भी नहीं मरता। इस पर सामंतों ने कहा तो फिर मरजी आपकी, पर अब आप जान बूझ कर जीती बाजी हारते है। ये पग सेना का जोर शोर, ये साथियों का कहना सुनना और ये सयोगिता का संयोग। पर धन्य पृथ्वीराज वह तनिक भी चलचित्त न हुआ। तू तूही था तेरा सा और कौन हो॥

सारी रात्रि इसी कहा सुनी में व्यतीत होगई परन्तु राजा पृथ्वीराज ने किसी की जब एक आख न मानी तो सामत लोग मरने पर उतारू होकर फिर से कमरे कस कस कर घोडे पर सवार हुए और सूर्य निकलने के पहिलेही लोहा निकाल कर मैदान में आन अडे। उधर ज्योंही चौथे पहर की घरियार बजी कि पग सेना में भी सजा सजी होने लगी। एक घडी रात्रि शेष रहते ही अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर स्वामिसेवा में सिर देने के लिये सब सन्नद्ध हो गए। राजा जैचंद ने अपनी सेना के बीच में हाथ उठाकर कहा कि हे सूरवीरो आज मै तुम्हारे बाहु बल के भरोसे पर प्रतिज्ञा करता हू कि यदि आज पृथ्वीराज को न पकड लिया तो यह तन तज दूगा। यह कह कर उसने समस्त दल को यथा अवसर मोरचों पर चलने की आज्ञा दी। इधर राजा पृथ्वीराज भी सामत समूह सहित व्यूह बद्ध हुआ। सबसे आगे यानी हरावल मे जैतराय हुआ उसके पीछे काका कन्ह था और उसके पीछे सयोगिता सहित राजा पृथ्वीराज स्वय रहा। उसके पीछे अपने भाई बेटों सहित अजमेर के किले का किले दार गोरिया सरदार था।

अभी सूर्य भगवान के दर्शन नहीं हुए थे। परतु रात्रि की अधेरी शेष नहीं थी कि उधर से पंग दल इधर से सामत समूह दोनों परस्पर जुट पडे। दोनों दल के शूर वीर योद्धा एक दूसरे पर वार करके मरने मारने पर उद्यत थे। परतु रण कुशल राजा पृथ्वीराज ने कुछ ऐसी चाल की जिससे पग दल की तेजी आपही कम होगई। तात्पर्य्य यह कि पग दल उस व्यूह से लोहा लेने योग न रहा जिससे उसने आक्रमण किया था। इसलिये सारा दल बल रुक कर रह गया। यह कौतुक होते होते दो घडी दिन चढ आया। अस्तु ज्योंही मोरचे की अदला बदली होने के लिये व्यूह बिथर जाने का कारण पग दल में गडबडी पडी कि सामत समूह फौरन जा जुटा। सामत लोगों ने जुटते ही तेजी से तलवारों के वे करारे हाथ फटकारे कि पग दल के छक्के छूट गए। किसी सामत का जब पंग दल के किसी बख्तरिया सवार के खोपडे पर हाथ पडता तो तलवार झिल्ली सी झनकारती या झाला सी झनझना उठती थी। उधर वह मय टोप के और बख्तर के सिर से पैर तक फिर कर दो हो जाता था। यद्यपि दोनों दलों के योद्धा एकही दीन के थे एकही इष्ट की आराधना करते थे और अत में एकही में मिलते थे पर परस्पर में दो स्वामी

और उनकी इच्छाएं भिन्न होने के कारण वे इस पंचभौतिक रात को छिन्न भिन्न करते हुए जुदे जुदे देख पड़ते थे। क्या कहें इन दोनो दलों को जुडते समय पृथ्वी डगमगा उठी जिससे शेषनाग को कुण्डली कस कर फन फटकारने की नौबत आ गई।

राजा जैचन्द के हाथी पर खवास खाने में जो खवास था वह उसका भाई होता था अर्थात् जैचद के पिता की खिदमत मे एक खवासिन थी उसका जन्म उसी के गर्भ से हुआ था उसका नाम वीरम खवास था। वह ऐसा वली और पराक्रमी था कि तीस मन लोहा बांधता था और नित एक भैसे का मास भक्षण करता था। जब जैचद ने पृथ्वीराज और उसके सामतों का ऐसा पराक्रम और रणकौशल देखा और जान लिया कि सन्देह नहीं कि ये मुझ पर भी वार कर जाय तब उसने बीरम खवास से कहा रे मूर्ख आज तीन दिन से बराबर हथियार चल रहा है हाथ में आया हुआ शत्रु निकला जाता है पर तेरे जान मानो कुछ होताही नहीं है धिक्कार है तेरी करतूत पर! राजा के ऐसे वचन सुनकर वह ढाल तलवार सम्हालता हुआ तुरन्त हाथी पर से कूद पडा और मार काट करते हुए सामतों के व्यूह में पैठ कर कहने लगा, वताओ तो मुझे वह पृथ्वीराज कहा है मै देखू वह कैसा रजपूत है। यह सुनतेही पृथ्वीराज लपक कर आगे उसके आने को ही था कि दोनों हाथों में कटार लिए हुए रनवीरराय परिहार आगया और उसने यह कहते हुए कि पहिले मुझे देख, खवास के सीने मे दोनों कटार घुसा दिए, इसके वदले में उसने भी एक हाथ ऐसा दिया कि रनवीर राय दो हो गए तब तक भीमराय यादव ने आकर वीर वीरम खवास को इस ससार से ही मिट्टी कर दिया।

अष्टमी के सबेरे से लेकर दसमी के सबेरे तक दो दिन दो रात्रि बराबर हथियार चलते हो चुका था। लज्जा के बाधे दोनो दल के योद्धा अब तक अपनी अपनी बान पर डटे हटाए नही हटते थे। ...न से उनके मन भी उमग और उत्साह से भरे हुए थे पर आदमी के हाथ तो दो ही होते हैं कहां तक काम करें। सिपाही सरदारों को कौन कहे हाथी घोड़े तक बेदम हो रहे थे। मुद्दा यह है कि जैचद पृथ्वीराज को पकड़ लेने की आशा से और पृथ्वीराज जीवित दिल्ली देखने की आशा से हाथ धो चुके थे। आज दसमी की सबेरे से लेकर दोपहर होने को आई पर केवल दो मोरचे हथियार चला जिसमें एक सामत पृथ्वीराज की तरफ का और कुछ सौ पचास सिपाही जैचद की तरफ के काम आए। दो दिन से बराबर सग्राम के श्रम से पृथ्वीराज का मुख झोपरा पड़ गया था चकचौरे गोरे ललाट पर पसीने की धारें बहती थी और आलस्य से पल झपके आते थे। सुन्दरी सयोगिता की भी यही अवस्था थी। वह मारे सकोच और लज्जा के कुछ कह तो सकती न थी पर बार बार पृथ्वीराज के मुख की ओर देखती और आखे नीची करके रह जाती थी मानो मनही मन अपने प्यारे के मस्तक के पसीने को पलकों से पोंछती अथवा उसके श्रम से शान्त हृदय को आखों के अचल से अँगोछती थी। इसी तरह पृथ्वीराज भी वार वार सयोगिता के मुख की ओर निहार निहार कर रह जाता था।

दपति की यह दशा देख कर सामतों ने अचलेशराय से कहा कि देखो दो दिन क्षेम कुशल वीते आज लाज का रखैया भगवान ही है। कृपा कर के कविचद और काका कन्ह को समझा दो कि वे राजा को लेकर चले जाय नहीं तो बुरी होगी। यह सुनकर अचलेशराय ने कवि और काका से कहा कि इस दो दिन के घमासान में उनचास सामत काम आचुके है। अब तक किसी तरह वात वनी हुई है परन्तु अब पद पद पर आपद दिखाई देती है। यदि अब भी रानी ने दिल्ली की राह न ली तो अच्छा न होगा। तब कविचंद राजा पृथ्वीराज के पास जाकर वोला "धन्य महाराज जैसा आपने किया वैसा कोई न करेगा, किसी कवि की क्या ताकत है कि कहे, साक्षात वासुकि भी आपके पराक्रम को कथन नहीं कर सकते। आपने

पगदल को दलन करके अपनी प्रिया को अपना लिया और वीर बाने की लाज रक्खी। अब कृपा करके दिल्ली जाकर आनन्द कीजिए और अपनी सुकीर्ति को सुनकर सुखी होइए। यह कहकर कवि चंद ने राजा के घोड़े की बाग पकड़ ली और दिल्ली की तरफ को चल पडा। उसने पुनः कहा कि चाहुआन और कमधुज्ज वंशरूपी दो वासो पर बधी हुई पुरातन सस्कार की वरद पर चढकर हे नटवर चहुआन तू ने सच्चा करतब कर दिखाया तेरी सुरत साधना के लिये सहस्त्रों भेरी ढोल और घंटे वज रहे है, तूने सुयश और प्रिया को भी पा लिया अब तो सकुशल रास्ते पर उतर चल। कविचद की ऐसी युक्ति भरी वात सुनकर पृथ्वीराज दिल्ली चलने को सहमत हो गया। वह साज सम्हार होते होते पगदल सहजोर होगया था अस्तु उसने सामंत समूह को वाए बाजू से चलाने की इच्छा से बडे जोर शोर से पसर की। यह देखकर सामत लोग तो व्यूह वद्ध होकर पगदल से जूट पड़े और राजा पृथ्वीराज गगा जी में उतर पड़ा उसने सयोगिता सहित स्नान किए और पुनः अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित होकर सामत समूह में आ मिला, जब तक पृथ्वीराज गंगा जी से स्नान करके आया तब तक पहर दिन चढ़ आया और इसी अर्से में पाच सामत और भी कट मरे।

निज स्वामी राजा पृथ्वीराज को दिल्ली की ओर वाग उठाते देखकर सामत लोग फूले अग नही समाते थे वे जातीय लज्जा के निमित्त जीवन को तिलाजुली देने के लिये उद्यत असल पानी वाले राजपूत मूछों पर हाथ फेरते हुए परस्पर बोले हां! हमारा जीवन अब सफल हुआ। सुन्दरी संयोगिता सहित हमारा स्वामी दिल्ली राज्य सिंहासन पर सुशोभित होगा और उसके लिये हम लोग यहा तिल तिल होकर कट मरेंगे। निदान उधर पृथ्वीराज ने घोड़े की बाग उठाई इधर सामतों ने पंग दल का मोरचा रोकने के लिये हाथ उठाए। जब जैचद ने देखा कि पृथ्वीराज तो संयोगिता को लेकर जाता है तब उसने अपने सिपाहियों से कहा पकडो जाने न पावे, देखो यदि पृथ्वीराज निकल गया तो तुम्हारी वडी वदनामी होगी। जैचद के ऐसे बचन सुनतेही उधर से उसकी सेना के सिपाहियो का पसर करना हुआ और उधर से सामतों ने उन्हें आडे हाथ लिया। उस समय बडा आनन्द आया। अपनी प्रिया को लिये दोनों दलो को चीरता हुआ पृथ्वीराज तो इस तरह से भागा जैसे वराही के खेत में से वराह भागता है और पगदल के सिपाही ऐसे दौडे जैसे पारधी उसके पीछे लगें। सुन्दरी सयोगिता के स्नेह में सना हुआ संभरेश तो सटका परन्तु जातीय लज्जा को रज्जू एवं जंजीर में जकडे हुए दिलों के सच्चे राजपूत बच्चे सामत अटल हो कर डट गए। उनके सनाहों पर पग सेना के मुसल्मान सिपाहियों की तलवारों की टूकें उडने लगीं। उस समय ऐसा आभास होता था मानो आकाश से तारे टूट रहे हों। उस समय सूर सिपाहियो के सीने दूने हो रहे थे और कपूत कायरों के मुह दिवाकर के प्रकाश में कुमोदिनी से कुम्हला रहे थे। कहीं कहीं सनाह कटकर जो छोटे छोटे छेद हो जाते सो ऐसे जान पडते मानों जाल फाडकर लाल लाल मछली उछल रहीं हों। इधर से पग सेना के मोरचे का नेता मारूफ खा नामक मुसल्मान था और इधर से अगुमा वीरसिंह राय सोलकी था अस्तु ये दोनों कट मरे पर राजा पृथ्वीराज पग दल के प्रकोट में से इस तरह निकल गया जैसे लका को जाते हनुमान जी छाया राचसी की पीठ फोड़ कर निकल गए थे। धन्य रे सूर सामंतो जिनके बाहु वल जदल जल के समान पगदल तत्ते तवे के की सी बूदे विलाता गया और पृथ्वीराज पर फुई भी न पडने पाई! पग दल के प्रकोट को तोड कर पृथ्वीराज मार्ग पर तो आया पर योंही दिल्ली पहुच जाना क्या दिलग्गी था अव्वल तो जगह जगह मोरचों पर चौकी लगी हुई थीं दूसरे पीछे से भी बराबर सुरगधार सी ठिली चली आती थी अस्तु इस तरह मौका वे डौल देखकर कुछ

सामंतों के सहित पज्जून राय का भाई बलभद्र राय तो मोरचे पर डट रहा और शेष लोग राजा के साथ हो लिए। यह कौतुक देखकर जैचंद ने अपनी मलेव के दो मुसल्मान सरदारों को आज्ञा दी कि वे पाच हजार सवार लेकर पसर करें और जिस तरह हो सके पृथ्वीराज को जीता पकड़ लावें, बात यह थी कि दोनों मुसल्मान सरदार मल्लयुद्ध यानी पहलवानी में बडे निपुण थे इसके सिवाय पटा बनेठी डंडे या लठ की लड़ाई में भी वे अपना सानी न रखते थे। वे सर से पैर तक काली पोशाक पहने हुए थे और जिन हाथियों पर सवार थे वे भी दोनों काले समान से सजे हुए थे। वे लोग अल्लाः हो अकबर कहते हुए ज्योंही मैदान में आए कि बलभद्रराय घोडा बढ़ाकर उनके सामने हुआ और हर हर कह कर घोडे को एड़ देकर काल की सी डाढ़ कटारी लिए हुए मीर के हाथी के हौदे पर बिजली की तरह चमक गया। उसने दाए हाथ से उसके बाए पजर में कटार पेल दिया और बाए हाथ से उसकी दाढ़ी पकर हौदे पर से खीचकर नीचे गिरा लिया और जब तक वह अपने को सम्हाले कि उसका सर भी तन से जुदा कर दिया। इतने पर उसके साथियों ने तो बलभद्र को घेर लिया और उसका भाई आगे बढ चला। यह देखकर पृथ्वीराज को प्रणाम करके हरसिंह राय उसके पास आया। अभी वह अपने भाई का तमाशा देख चुका था इसलिये फौरन हाथी पर से उतर कर घोड़े पर सवार हुआ इस पर हरसिंह राय पैदल होकर कहर करने लगा। तब तो मीरमल्ल भी पैदल होकर चला। उसके मेल में आतेही हरसिंह ने उस पर तलवार चलाई और उसने हरसिंह राय पर। दोनों के हाथ एक साथ भर पूर बैठे परन्तु वे गिरे नहीं तलवारें फेंक कर दोनों एक दूसरे से भिड पड़े और मल्ल युद्ध करते करते दोनों का एक साथ दम टूटा। हरसिंह राय का पराक्रम देखकर देवताओं ने भी उसकी वाहवाह की। कविचन्द कहता है कि हरसिंह के मोरचा पाने पर पृथ्वीराज चार कोस जमीन जीत गया।

उक्त दोनों मीरबन्दों की यह दशा देखकर राजा जैचन्द ने अपने धाभाई वीरमराय को आज्ञा दी यद्यपि वह धापुत्र था परन्तु जैचन्द उसे सगे भाई के समान मानता था। वीरम राय भी जैसा गुणवान विद्वान बुद्धिमान और वीर था वैसाही जैचन्द का पूरा शुभचिन्तक भी था। जैचन्द की आज्ञानुसार लाल निशानवाला वह वीरमराय कई हजार सिपाही लिए हुए पृथ्वीराज की तरफ दौड पडा और जब शत्रु समूह रूपी भ्रमर पुनः चाहुआन कुल कमल पर आच्छादित होते देख पडने लगे तब कनकराय रघुवंसी ने हथयार सम्हाले। उसने पृथ्वीराज को झुक कर प्रणाम किया और कहा हे स्वामी अब मैं आप से सदा के लिये विदा होता हूं यदि कुछ अपराध हुआ हो तो क्षमा कीजिए. अब शीघ्रही यह शीश शिव जी की रुडमाला में पोहा जायगा और जीभ आदि जोत में जा मिलेगी। यह कह कर वह हृदय में अपने इष्ट देव को धारण कर मुख से वीर मन्त्र उच्चारण कर काल कैसी जीभ कायरों का हृदय कँपाने वाला दुधारा लपलपाता हुआ खड्ग ले कन्नौज राज की फौज पर लपक पडा। उसकी अवाई तवाई देखकर सेई जोर से चिक्कारने लगी योगिनी गला फाडकर गाने लगी और भूत बैताल नाचने लगे। उस वीर कनकराय के एक एक हाथ में सैकडों ज्वान दो दो होते देख पड़ने लगे। यद्यपि वह अकेला था परन्तु परसेना को जिधर देखो तिधर अनेकों कनकराय देख पड़ते थे। वह बडगुज्जर वीर इसी तरह अखाडे करता हुआ वीरम के सम्मुख जिस समय आया उसने उसके खोपडे पर एक हाथ मारा। खोपडे पर घाव खाते ही कनक राय ने घायल बाघ की तरह चमक कर उसके दोनों बाहु काट डाले। बाहु कट जाने पर वीरमराय बड गुज्जर की तरफ काल की तरह मुह बाकर दौडा परन्तु उसने बाए हाथ से उसकी चोटी पकड कर सिर काट लिया। वीरम राय की यह दशा होतेही परसेना के सैकडों सिपाही उस पर टूट पड़े और उन्होंने उसे धज्जी धज्जी कर डाला। कनकराय

के हाथों बीरम राय के साथियों में करीब आधे के खेत रहे। कनकराय के युद्ध करते समय में पृथ्वीराज छः कोस निकल गया।

कनकराय बड़ गुज्जर के गिरतेही पंगदल फिर पृथ्वीराज के सिर पर आगया। तब पृथ्वीराज ने निड्डुरराय की तरफ़ देखा। स्वामी का इशारा पातेही बीर निड्डुरराय फौरन पलट कर शत्रु सेना के सम्मुख खड़ा होगया। उस तरफ के मोरचे का मालिक निड्डुर राय का छोटा भाई वलिभद्र था और उसके साथ में चार कमधुज्ज सरदार और भी थे जिन्हें बीजापुर का किला फतह करने पर जैचन्द ने प्रत्येक को बारह बारह हज़ार की जागीर का पट्टा दे रक्खा था। वे चारों सरदार सब सेना के चार बिभाग करके चार मोरचे बांध कर पीछे पीछे आ रहे थे पर कुछ अश्वारोहियों को लिए हुए बलिभद्रराय आगे निकल गया। अनुज को आते देख के निड्डुरराय मतवाले हाथी की तरह अग्निकण के समान लाल आखे किए हुए पैतरा बदल कर खड़ा होगया। उस सहज तेजस्वी निड्डुर राय के माथे पर का टोप बाल सूर्य्य सा प्रदीप्त होरहा था और सर्वाङ्ग सुसज्जित उज्वल सनाह बिजली सी चमचमा रही थी। वह हाथ में धनुष बाण लिए कन्धे पर तूनीर कसे हुए इस तरह से खड़ा था जैसे भारथ में पारथ या द्रोणाचार्य्य पग रोप रहे हों और वास्तव में उसने अपने अनायेर बाणों की वर्षा करके बड़े आवेग और बेग से वढ़ी आती हुई पंग सेना को स्वर्ग से पतित सुरसरि धारा को शिव की तरह से रोक लिया। निड्डुर राय की बानावली से भिदकर महावतों के हजार हजार अंकुश गड़ने पर भी पग सेना के हाथी आगे पैर न देते थे वरन चिक्कार कर लंगर डालते हुए पीछे को भागते थे। असवार आहत होकर लड़ते और घोड़ों पर से गिरते जाते थे और पैदल बिचारे तो इन दोनों की चल बिचल में आपही कुचले जाते थे। निड्डुर राय की बाण वर्षा से रुधिर की धारा बह निकली। परन्तु बढ़ते बढ़ते जब पंग सेना के सिपाहियों ने उनकी कमान काट डाली तो वह बिजली की तरह चमचमाती हुई तलवार से काम लेने लगा। निड्डुर राय का बिलक्षण रणकौशल देखकर देवता, गन्धर्व और क्षेत्रपाल भी उसकी प्रशंसा करते थे। निड्डुरराय की मार के मारे अपनी सेना को इस तरह बेहाल होते देखकर बालिभद्रराय स्वयं घोडा बढ़ाकर भाई के साम्हने आगया। दोनों भाइयों की नजरें चार होतेही दोनों का हृदय समुद्र उमड आया परन्तु स्वामिसेवा की मर्याद से बाहर नहीं। दोनों अपने अपने घोड़े छोड़ जुट पडे। बड़ी देर तक तो दोनों एक दूसरे पर तलवार कटार के वार करते रहे पर जब दोनों रक्त में लत्थ पत्थ होगए और दोनों के हाथ में हथयार भी न रहे तो वे दोनों क्षुभित मृगराज की भाति एक दूसरे से ऐसे भिड़ पडे जैसे महाभारत में बिन्दु अनुबिन्दु भिड रहे हों। निड्डुर राय का देहान्त होतेही उसके शरीर से अतर की सी सुगन्ध फैल गई जिससे ४१ कोस तक भ्रमर भूम में पड़कर भिन्नाते फिरने लगे।

कमधुज्ज कुल कमल निड्डुर राय के कलेवर को रणभूमि में पडा देखकर जैचन्द ने उसे अपनी कमर का फेंटा छोड़कर ढाक दिया और हाय सास लेकर आपही आप बोला। हाय क्षत्री कुल की लीक, मेरे समुद्र सरीखे दल से चाहुआन को पार उतारने वाली नैया, भैय्या निड्डुर राय आज तू भी बेभूल होकर सोरहा। तदनन्तर कुछ रुककर जैचन्द फिर झल्ला कर बोला, भला लेना है भाइयो जाने न पावे। जैचन्द का यह कहना क्या था मानों जलती हुई आग को उसकाना था। वहा तो उसके सवार आपही पृथ्वीराज के खुरों पर खुरी देते सर पर लार डारते और चमाचम तलवारें झारते हुए छुआ छाई सी करते बढ़ते हुए चले जाते थे। निडडुरराय के मोरचा रोकने पर पृथ्वीराज आठ कोस निकल गया था पर जब फिर भी शत्रुओं ने आ लिया तब बिरसिंहराय राठोर वदल खडा हुआ. उसने भी अच्छा पराक्रम किया खूब

तलवार चलाई खूब मार काट की खूब राजपूतपन रक्खा, पर कुछ देर पश्चात उसने भी अपने अन्य भाइयों का साथ दिया।

आया है सो जायगा। विरसिंह राय के मरतेही डंके पर चोट देते और रंग विरंगी झंडियां झुलाते हुए पंगदल के सवार फिर सिर पर चील्ह से मड़रा आए। यह देखकर नरनाह काका कन्ह ने अपने पट्टनपुर का मैदान मारनेवाले पट्टन नामक घोडे का ऐंडा सम्हाला। परन्तु जब तक कन्ह अपने आने बाने से दुरुस्त होकर मैदान में आवे आवे तबतक पंग दल आही गया और ऐसा जान पड़ा कि यदि यह अनी न टली तो बेबस होकर घिर जाना पड़ेगा। तब तो कन्ह का सेवक छग्गनराय मैदान पकड़ गया और लगा पंग सेना के सवारों को ककडी सा काटने। परन्तु एक की दवा दो होते हैं फिर वहां तो उसके शरीर पर सौ सौ हाथ इकट्ठे पड़ते थे। पर तब भी उसने वह कौतुक कर देखाया जो अबतक सुनने में भी न आया था। घोडा गिर जाने पर छग्गनराय पैदल युद्ध करने लगा पर जब उसके पैर भी कट गए तो वह बिच्छू चल कर लोगों के पैर पकड़ पकड़ कर गिराने लगा पर जब हाथ भी कट गए और सिर भी धड से अलग होगया तब उसका सर फुटबाल की तरह चोटें करते करते अन्त में बडी देर के बाद शान्त हुआ। इस छग्गन राय छत्री ने कौरवों के चक्रव्यूह में घिरे हुए अभिमन्यु का सा पराक्रम किया। धन्य है, यह तो गया गुजरा पर सुनो क्षत्रियो अभी उसकी सुकीर्ति नहीं गई। छग्गनराय के मरते मारते पृथ्वीराज ढाई कोस आगे निकल गया। निदान छग्गन राय के छै पाच रोनेही जब हलचल मचाता हुआ पगदल फिर से सिर पर आगया तब भूखे सिंह की भाति क्रोध से भरा हुआ खरे खेलवारे पट्टन पर सवार दहिने हाथ में काल नागिनी एव काल की कन्या अथवा प्रलय काल की अग्निज्वाला के समान जाज्वल्य मान लोहे की बनी हुई लम्बी पूरी नराजी, और बाए हाथ में जबरजग गुरज लिए हुए नरनाह काका कन्ह मैदान मे आगया। पंग सेना से आमना सामना होतेही ज्यो कन्ह ने पट्टन को एड़ लगाई कि वह जोर से ठीं देकर हीं हीं करता हुआ बज्र सा उड गया। वाह रे पट्टन यदि कन्ह किसी करि के कुंभ को कृपाण से काटता तो पट्टन टापों से उसके दात तोड देता। एक के सिर पर कन्ह की गुर्ज पडती तो दूसरे पर पट्टन की दुलत्ती झडती थी तात्पर्य यह है कि ये घोडा सवार दोनों मार करते थे और क्यों न करें। नरनाह कन्ह भी सूर्य्य भगवान के अंश से था और यह पट्टन उच्चश्रवा का अवतार था।

क्रोधातुर कन्ह की तलवार जहां कहीं जरा भी छू जाती उसी अंग को इस तरह से काटकर डाल देती जैसे गरुड़ उरग को गड़ेर गड़ेर कर गिरा रहा हो। बांह कट जाने पर जो बाजू की सनाह दूर जा छटकती वह ऐसी जान पडती जैसे उसी सर्प की किचुली निकल पड़ी हो। वह काल की सी जीभ लपलपाती हुई नराजी कभी किसी को चीर कर दो कर देती कभी किसी को खड खड करके काट गिराती और कभी रुंड पर से मुंड इस तरह से उतार लेती जैसे कुम्हार मिट्टी उतार रहा हो। वह सर्पिणी की भाति लपक कर कभी किसी के भंडार में पैठ कर उसके मेदा मज्जा और कलेजे सहित आंतें निकाल लाती और किसी की चोटी पर चोट करके वहां से लोहू की सेंट लटका देती थी। कभी किसी बदल सरीखे दीर्घ काय मदान्ध मैगल के कुंभ पर पड़कर वह उज्जल नराजी विद्युन्माला सी विलीन हो जाती, और गसाव में पडकर कभी लपट कर तीन तीन हो जाती पर फिर उकाम पाकर फनी की तरह फनफनाती हुई लोट पलट करके काट काट करने लगती। इस तरह से काका कन्ह एक हाथ से तो नराजी से फतह करता था और दूसरे हाथ से तर्ज तर्ज कर गुरज फटकार रहा था। जिस किसी पर बांके वीर कन्ह की गुरज का गद्दा पड़ जाता वह क्या सवार क्या प्यादा चूर चूर हो कर

धूर में मिल जाता था। अगर खोपडी पर हाथ पडता तो मय टोप के तालू टूट फूट जाता और भेजी गरी का सा भेजा अलग जा छटकता। कनपटी पर हाथ पडता तो गटा निकल पड़ता और यदि छाती पर हाथ पड़ा तो कलेजा मुंह से निकल पड़ता था।

नरनाह काका कन्ह के विषम पराक्रम एवं उसकी बिकट मार काट के कारण पगदल आगे तो एक कदम भी न बढ़ सका पर सब का सब उसी पर सिमट पड़ा। उस समय कन्ह नें भी हाथ देने में कसर न की। उससे काटे जाकर सहस्रों घायल सिपाही हाय हाय करके प्राण देने लगे लोथ पर लोथ अटे गई और मुंडों के ढेर लग गए। इसी तरह से जब एक पहर के करीब हो गया और कन्ह का क्रोध शान्त न हुआ तब जैचद की आज्ञा पाकर उधर से अरिदास नामक एक सरदार कन्ह के मुकाबले पर आया। उसने जुडते ही कन्ह की गरदन पर एक हाथ दिया और कन्ह ने उस पर जनेउ उतार वार किया। बस इधर तो कन्ह का सिर धड़ से अलग हुआ और उधर वह दो होकर सदा के लिये शान्त होगया। सिर तो कट गया पर कन्ह का कबंध खड़ा हुआ और चौमुखा मार करने लगा। इसी बीच मे उसकी तलवार टूट गई तब वह साक्षात काल की सी डाढ़ असल अनियारी यानी उज्वल यमदाढ़ कटार काढ़ कर उसी से काम लेने लगा। शत्रु सेना के प्राणों की प्यासी रक्त रक्त पीने वाली काली काली कलाए काल की सी जीभ वह विकट कटार काका कन्ह के कर में इस प्रकार से सुशोभित होती थी जैसे उसके हस्ति सुंडाहल भुज दड में से लोह का अंकुर जम कढ़ा हो। जिस किसी पर उस कटार का एक बार हो जाता था, वह इस दुनिया से सदा के लिये पार हो जाता था। इस पार लगती तो उस पार निकलती, उदर पर बैठती तो पीठ के पार हो जाती और जो भंडार में चुभती तो आतें निकाल कर डाल देती थी। क्षुधित सिंह की सी जिह्वा वह कटारी कभी कभी हाथी के कंठ पर भी जा लगती और वहां से रक्त की धार बहा लाती थी। कन्ह की कटारी ने भी कहर कर दिया उसके द्वारा उसने पांच हजार जवान मारे पर हाथ पर हाथ पड़ने से जब वह कटार भी बेकाम होकर टूक टूक होकर टूट कर गिर गई तब वह हथ्था बाँही करने पर उद्यत हुआ। वाह रे नरनाह क्यों न हो। उस समय वह बांका काका कन्ह घरी भर के लिये साक्षात गोकुल के कन्हैया का अवतार बन गया। वह पग दल के सिपाहियों को पकड़ पकड़ कर उन्हें इस तरह से पछारने लगा जैसे कृष्णभगवान ने कस की मल्लशाला को चूर चूर कर दिया था। वह कभी किसी के पैर पकड कर उसे धोबी के वस्त्र सा पछार देता, कभी दोनों हाथों से दो की मुगरिया पकड कर उनके मुंड परस्पर भिड़ा कर नरियर से तोड देता, कभी किसी की मौर पर हाथ दे कर गरदन मरोड देता था परन्तु कभी तो वह मतवारें हाथी की तरह शत्रु का एक पैर पैर से चापता और दूसरे को हाथ से पकड कर उसे दतौन सा चीर कर फेंक देता था। इसी तरह एक पहर पर्य्यन्त विषम पराक्रम करते हुए नरनाह काका कन्ह भी टूक टूक होकर कट मरा उसका कबंध शान्त होते होते पृथ्वीराज दस कोस जमीन जीत गया। कन्ह का कलेवर पतित होते देख आकाश मार्ग मे स्थित अप्सराए उसके हसा को आलिङ्गन करने के लिये इस तरह से दौडीं जैसे आजन्म दरिद्री द्रव्य लूटने को टूट पड़े पर उस सच्चे सूर पुरुष ने परमहंस की तरह किसी की ओर आख उठाकर भी न देखा और साक्षात सूर्य्य भगवान की ज्योति में जा मिला। इसी तरह उसका अश्व पट्टन भी इस पचतत्वमय शरीर के धज्जी धज्जी उड जाने पर दिव्य देह से उच्चश्रवा के साथ सूर्य्य के रथ में जा जुता।

कबित्त।

जिम जिम तन जरजर्यौ.
बिहसि वर धायौ तिम तिम।
जिम जिम अंत रुलत,

लष्ष दल तिन गनि तिम तिम ॥
जिम जिम करिवर परत,
उठत जिम सीस सहित वर।
जिम जिम रुधिर झरत,
सघन धन परखत सद्धर ॥
जिम जिम सु खग्ग बज्यौ उरह,
तिम तिम सुर नर मुनि मन्यो।
जिम जिम सुचाव धरनी परयो,
तिम तिम शंकर सिर धुन्यौ ॥

इस तरह से भीष्म के समान भीम भट, एक लाख कई सहस्र और कई सौ शत्रुओं को काटकर पाट देने वाला पट्टन पति नरनाह काकाकन्ह चहुआन भी जब कण कण होकर काल कवलित हो चुका तब अल्हन कुमार परिहार ने कृपाण कर में लेकर पृथ्वीराज को सिर झुकाया। उसने कहा हे सुर शिरोमणि स्वामी अब मैं भी आप से सदा के लिये बिदा होता हू चलते मिलते यह सौगाद समर्पण करता हू सो लीजिये, यह कहकर उसने अपने हाथों से अपना माथा काटकर पृथ्वीराज के हाथ पर रख दिया और आप दाहिने हाथ में तलवार और बाए हाथ में कटार फटकारता हुआ आषाढ़ के बद्दरों की भाति दबी चली आती हुई पंग सेना में पैठकर पछवाव वायु का काम करने लगा। जिस समय अल्हनकुमार ने अपनी इष्ट देवी महामाया का स्मरण करते हुए अपने धड से सिर जुदा किया उस समय एक महान भयानक अवाज और हुंकार शब्द हुआ और महामाया स्वयं उसके कबन्ध पर आ बैठी। बस फिर क्या था जिस तरफ को अल्हन कुमार का कबंध सीधा हो जाता उधर एक दम पाटा हो जाता था। अल्हनकुमार का यह अकथनीय कौतुक एव उसके कबंध का विषम पराक्रम देखकर मनुष्य की कौन कहे देवता भी चकित चित हो रहे थे। अब इसी तरह खड्ग से खेलते खेलते अल्हनकुमार को देर हो गई और पग सेना तीन तेरह होकर पीठ दिखाने को हुई तब उधर से बीरयानाथ नामक एक दक्षिणी सरदार हाथी पर चढ़ा हुआ अल्हन के साम्हने आया। परन्तु जुडते ही अल्हनकुमार ने एक हाथ ऐसा दिया जिससे हाथी का एक दांत उड गया। इसपर हाथी तो भागा परन्तु बीरयानाथ उसपर से नीचे कूद कर कबन्ध का पैर पकडने को झपटा पर इसके पहिलेही कबन्ध ने उसका गला घोंटकर उसे मार डाला। यह देख कर उसका छोटा भाई आगे बढा। इस समय अल्हन की तलवार कट चुकी थी इस लिये उसने हाथी के मथार पर कटार की वार की जिससे हाथी तो चिक्कार कर भागा पर उस बाके बीर ने अल्हन पर एक हाथ आही जमाया, इसने भी उसे एक हाथ मारा और वे दोनों सदा के लिये शान्त हुए। इस अल्हनकुमार ने पग दल के बहुत से चुने चुने मुखिया सरदार और कई सौ सिपाही मारे।

अद्वितीय पराक्रमी अल्हनकुमार के भी तिल तिल होकर कट गिरने पर पंग दल पुन सबल हो उठा और पकड़ो पकड़ो कहते हुए पृथ्वीराज के पास जुमकने लगा तब पृथ्वीराज ने अचलेस की तरफ देखकर कहा धन्य है सूरबीरों के यही लक्षण हैं कि सदा अपने स्वामी के साकर में सहाय हों, पचतत्व के पुतले हम तुम और ये आश्चर्य्य जनक प्रपच सब चले जायगे पर यह सुकीर्ति ससार में सदा स्थिर रहेगी कि सौ सामतों ने असख पगदल का मुह तोड कर सयोगिता सहित पृथ्वीराज को बेदाग बचा लिया। यह सुनते ही अचलेसराय ने पृथ्वीराज को सिर नवाकर घोडे को एड दी। मगरेज लगतेही वह तेजताजी उस लोह की लहर मय समरसरिता मे त्रिनेत्र के नेत्र का सा तेज तैरता फिरने लगा। अचलेशराय ने शत्रु समूह पर पमर करते समय पृथ्वीराज से कहा कि महाराज मैं तो चला परन्तु इस पंगदल को विचला कर छोडूगा। मैं पैज करके कहता हूं कि इस तन पिंजर में प्राण पखेरु के रहते आप पर आच नहीं आसकती। यह कह कर वह दुर्गा का ध्यान और स्मरण करता तथा सभरीनाथ की दुहाई देता हुआ झडमट के हाथ झाडने लगा। उस समय उस भीमकाय अच-

लेसराय के मुख मडल पर सूर्य्य का सा तेज विराज रहा था। उसकी करारी मार के कारण पंग सेना के सिपाहियों के सर नट के से बटा उछलते देख पड़ते थे। चौसठ योगिनियों सहित महाकाली स्वय किलकार शब्द करके ताली बजाती हुई उसके साथ साथ चलती थी। और अंतरिच्च में स्थित सूर समूह एवं अप्स। यच्च किन्नर और गंधर्वादि उसकी स्तुति करके पुष्प वर्षा करते थे। अतएव बडे पराक्रम के साथ पंगदल के पांच सौ सिपाहियों को कत्ल कर के वाहर राय का पुत्र अचलेस आप भी अत्यन्त घायल होकर धराशायी हुआ।

अचलेसराय के चल बसने पर प्रलयकाल के जल के समान बेगवान और प्रबल पगदल चलाचल पृथ्वीराज के सिर पर आ पहुचा तब पृथ्वीराज ने बिझ राज सोलकी की ओर रुख करके कहा। हे बीर चालुक्क इस खल दल का संहार कर। इसके उत्तर में उसने कहा जो आज्ञा महाराज, मैं इन लोगों का संहार करता हू आप प्रसन्नता पूर्वक सकुशल रास्ता पार करते जाइए यह कह कर बीर बिझराज चालुक्क भगवती अम्बा देवी का स्मरण करता हुआ शत्रु सना के सम्मुख होगया। आगे आगे खड्गहस्त बिझराज चलता था और उसके पीछे पीछे भैरो भूत पिशाच ताल बजाते हुए बैताल और खून भरने के खप्पर लिए हुए योगिनी आदि चलते थे। पंगदल के बीच में पहुंचने पर बिझराज के तलवार के हाथ देखकर सुर समूह प्रसन्न हो पुष्प वर्षा करते अप्सराएं उत्सुक हो उसे आलिंगन करने की इच्छा करतीं और गन्धर्व गला फाड फाड़ कर उसका गुण गान करते थे। उधर मतवारे हाथी के दातों पर बिझराज के घोडे की टापें खडखड़ाती थीं। इधर उस करके काटे गए उसके शत्रुओं के मुड परस्पर झड़ाझड लडते थे। जो कोई उस राजपूत की तलवार के साम्हने आया वह उसके एक हाथ में दो हो गया। एक घरी भर में लोहू के कुण्ड भर गए और लोथ पर लोथ पटकर आब लग गए तात्पर्य यह है कि पंगदल के सिपाहियों के पैर पीछे को पडने लगे। तब जैचन्द के ललकारने पर उधर से कृष्णराय तोमर, रुद्रसिंह कंठेर, जयसिंह देव यादव, भीमदेव चालुक्क, देवीदास सांखुला और वीरभद्र बघेला ये छः सरदार आगे हुए, पर बीर बिझा बढता हुआ जैचन्द के हाथी के पास ही आधमका और उसने जुडते ही एक सूर्य्यबशी सरदार चदमेन, नैषदबशी नरसिंहराय को मार गिराया। यह देख कर उक्त छहों सरदारों ने उसे चारों तरफ से घेर लिया। कृष्णराय तोमर ने बिझ राज का घोडा मार दिया और उसके बदले में उस ने कृष्णराय का सिर उतार दिया, पर जब तक उधर से निश्चित होकर दूसरी तरफ रुख करे कि रुद्रसिंह ने उसका सिर तन से जुदा कर दिया। सिर कट जाने पर दो घड़ी पर्य्यंत उसके कबंध ने बिषम पराक्रम किया। अत में उस बीर बिझ का कबंध भी कट गिरा और पगदल पुनः प्रबल हो कर पृथ्वी राज के पीछे पडा। अस्तु जब पगदल के एक हजार सिपाहियों को मार कर बांका बीर बिझराज भी इस असार ससार से चल बसा तब उधर से तीन हजार सवारों का स्वामी सारगराय जाट अग्रसर हुआ। उसने स्वय जैचंद के सम्मुख सिर नवाकर प्रार्थना की कि यदि आज्ञा पाऊं तो मैं पृथ्वीराज को पकड़ लाऊं। यह सुनकर पंगराज अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने जट्ट की प्रशसा करते हुए हाथ उठा कर कहा वाह बाके बीर क्यों न हो। मालिक का इतना मुह पाते ही अपने साथियों सहित सारग जट्ट उधर से तीर सा छूटा। उसे इस तरह ताव में भरा हुआ देख कर इधर से आबूपति राज्यमंत्री जैतरावप्रमार उस पर बाज सा टूटा। वह अपने इष्ट देव बजरगबली का स्मरण करते हुए जाट सेना के साम्हने आ गया। उसके साथ में उसीका एक सगा सम्बन्धी जयसिंहराय भी था अस्तु यह जैतराव से आगे जाकर सारगजाट से जा जुड़ा। उसने यद्यपि जाट सेना के तीन सौ सवार काट गिराए परन्तु सारंगराय ने उसे एक ही हाथ में मार गिराया। इस तरह से जैसिंह को मार कर सारगराय ने जैतराव के सिर पर भी

एक हाथ दिया जिससे उसकी टोप कटकर खोपडी भी फट गई तब तक सुमनखां ने बाण छोडा जो कि जैतराव की कनपटी पर लगा और उससे जैतराव की फटी हुई खोपडी जुड गई। इतने में जैतराव ने सम्हल कर जट्ट पर एक ऐसा दुहत्था वार किया जिससे उसका सिर भुट्टा सा कटकर दूर जा छटका। पर वाह रे वीर जट्ट। वह चटपट कटारी काढ़ कर फिर भी झपटा और बेसुध होकर धराशायी होने के पहिले उसने जैतराव के वक्षस्थल पर एक हाथ ऐसा मारा जिससे जैतराव भी अशक्य होकर गिर पड़ा। राजमन्त्री जैतराव को भी इस तरह बेकाम होते देखकर लक्खनराय बघेला मरने मारने पर उतारू हुआ। उधर से सारगजाट के मरने पर जैचद के ममेरे भाई प्रतापसिंह सौलकी ने धावा किया उसके ताबे में छः हजार राजपूत थे जैचन्द की आज्ञा पाकर उसने अपने साथियों से कहा कि भाइयो चाहे जो हो पर चौहान भाग कर जाने न पावे। इसी तरह से और भी अवाई तवाई की बातें हाकते हुए प्रतापसिंह को आते देख कर लक्खन बघेला ने मूठ पर हाथ रक्खा और अपने आराध्य इष्ट हनुमानजी का स्मरण करते हुए प्रतापसिंह के मुकाबले पर वह जा पहुँचा। वह बाए हाथ से घोडे की बाग थाम्हे और दहने हाथ से तलवार के वार करता हुआ जिस समय सौलकी सेना में पैठ पड़ा उस समय आकाश मार्ग में स्थित सूर समूह भी उसकी प्रशसा करते और पुष्प वृष्टि करते थे। घरी भर म सैकडों कमध नाचने लगे। सिर इधर के उधर लुढ़कते फिरने लगे और भैरों भूत बैतालादि ताल देदेकार गाने और निनव बजा बजाकर नाचने लगे। अप्सराए उसके बरने की चिन्ता में व्यग्र थीं और गधर्व गण उसकी हस्तलाघवता पर आश्चर्य्य चिन हो रहे थे। निदान इसी तरह मारकाट करता हुआ जब तक लक्खन बघेला प्रतापसिंह के साम्हने आया तब तक उसकी तलवार टूट गई। इतने में प्रतापसिंह दौड़ कर उससे लपट पड़ा तब उसने कटारी से काम लिया। उधर प्रतापसिंह ने भी कटार निकाली और दोनों एक दूसरे के शरीर को छिन्न भिन्न करके एकही छन इस असार संसार से चल बसे। प्रतापसिंह को वेदम करके लक्खन बघेले का रक्तप्लावित कलेवर कटार का वार करता हुआ पुनः आगे बढ़ने लगा। इतने में किसी सिपाही ने उसे बीच से काट कर दो कर दिया परन्तु आतों में लपटता और मतवारे की तरह झूमता हुआ वह आधा धड भी जब इधर उधर डोलता फिरने लगा तब किसी ने उसे भी खंड करके शान्त किया। कविचन्द कहता है कि सौ सामन्तों में से चदलोक से भी परे जो गति सात सामंतो ने पाई सोई लक्खन बघेले ने पाई।

सात कमल ससि उप्परह, कन्ह चंद गोपन्द।
निड्डुर सलख वरसिहनर, साख भरे सुर इन्द॥

क्या कहें। लक्खन बघेला ने ऐसा पराक्रम किया कि कुछ कहते नहीं बनता। जैचंद की सघन बनवत् चतुरगिनी सेना में यह दवारि होकर लगा। उसकी उज्ज्वल तलवार की धार ही उस दवारि की लपट थी। धन्य बघेला वार मारते काटते धज्जी धज्जी होकर कट मरा मगर मजाल क्या कि मन में या आख पर जरा सी मैल आ जाय।

निदान सारंगराय जाट के मारे जाने पर उधर जैचद के जलेव के रिसाले के रिसालदार असोकराय ने स्वामी के सम्मुख आकर प्रार्थना की अब मुझे आज्ञा हो तो मैं पृथ्वीराज को पकडने का प्रयत्न करूं और इसपर जैचद की आज्ञा पाकर वह निज के ताबे के आठ हजार सवारों सहित आगे को बढ़ा। उसे इस तरह बढ़ते देख सहदेवराय यादव भी जैचद की आज्ञा लेकर उसके साथ हो लिया और तब दोनों अपने अपने दल लेकर पृथ्वीराज को पकड लेने के लिये उत्सुक होकर मोरचे पर आए। उन्हें इस तरह से ताव में भरा हुआ आता देखकर इधर पहाडराय तूंअर ने तलवार की मूठ पर हाथ रक्खा। तूंअर पहाडराय को खड्गहस्त होते देख पृथ्वीराज ने उसकी तरफ देख कर कहा। वाह धन्य हो पाडव वशी वीर, आप उसी कुल में

उत्पन्न हो जिसकी सहायता में श्री कृष्णभगवान स्वय थे और जिसकी पति रखने के लिये उन्होने रथ तक हाका। इतना सुनतेही पहाड़राय का दिल दूना हो गया। उसने इष्टमंत्र उच्चारण करते हुए पृथ्वीराज को सिर नवाया और घोडे को एड देकर फौरन असोकराय के सम्मुख वह जापहुँचा। अफसर के आगे सदा सौ दो सौ सिपाही रहा करते है। अस्तु पहाडराय ने पहिले तो उन्हीं लोगों पर हाथ साफ करना शुरू किया और उस व्यूह बद्ध पगदल के सवारों में इस तरह से झपटें करने लगा जैसे मांस के लोथडे पर चिरह झपटती है। लोह पर लोह बजाता हुआ पहाड़राय ज्योंही कुछ पद्रह पचास कदम आगे बढ़ा कि असोकराय स्वय सांग की दोहत्था वाह भरे हुए उसके साम्हने आ गया और उसने जुड़तेही वार किया परन्तु पहाड़राय के बज्रवत् सीने पर उसकी साग ने कुछ भी असर न किया। शत्रु का वार खाली देकर पहाड़राय ने ज्यों एक तलवार का वार किया कि असोकराय का सर धड़ से जुदा हो गया। अपने साथी असोकराय की यह दशा देखकर सहदेवराय से सहा न गया और वह भी दाहने हाथ से साग ताने हुए पहाड़राय के साम्हने आया। ज्योंही पहाड़राय ने उसपर वार करने को हाथ उठाया कि उसने ऐन घंटी पर साग छोड़ी। इधर उसकी सांग इसकी गर्दन फोड़कर पल्लेपार हुई उधर इसकी तलवार ने उसके रुड से मुण्ड को अलग कर दिया। साग के वारापार होने पर पहाड़राय क कण्ठ में से भरजोर रुधिर धारा बह निकली। परन्तु वह उसी तरह रुधिर में तरातर होता हुआ बराबर तलवार चलाता रहा और जब तक तन में तनिक भी स्वांसा का लेश रहा तब तक उसका हाथ न थम्हा। बड़ी देर लो लड़ते लडते पहाड़राय मूर्छित होकर गिर पड़ा और एक घड़ी बाद फिर से सचेत होकर मार करने लगा और जब मारते मारते पग सेना के बारह सौ सवार मार कट सब दल पल बिचला दिया तब शान्त हुआ।

कवित्त।

वेद कोस हरसिंह, उभयत्रियत बड़ गुज्जर।
काम वान हर नयन, निडर निड्डुर भुमि सुकझ्झर॥
छग्गन पट्ट पलान कन्ह खत्रिय द्रगपालह।
अल्हवाल द्वादसह, अचल विग्घ गनि कालह॥
शृंगार त्रिक सलखह सुकथ, लखन पहारति पंचचय।
इत्तने सूर सथ झुझ्झनह, सोरोंपुर प्रथिराज अय॥१॥

निदान ६२ सामन्त खेत रहने पर ८१॥ कोस जमीन पार कर चैत्र सुदि १० को ४ घडी दिन चढ़े राजा पृथ्वीराज सरोंपुर तक आ पहुचा। जब पृथ्वीराज कन्नौजराज की भूमि लांघकर अपनी भूमि पर पैर देने लगा, तो यह देखकर जैचन्द के शोक चिन्ता का ठिकाना न रहा। वह भीतर ही भीतर हाय सांस लेकर पर ऊपर से कडक कर बोला बड़ आश्चर्य्य की बात है, बडे खेद की बात है और बडी शरम की बात है कि इन सब सूरवीरों के रहते हुए भी अकेला पृथ्वीराज इस तरह से बेदाग निकल जाय। उसके ऐसे बचन सुनकर संयोगिता का मामा राजकुमार महादेवराव बोला कि आप तनिक भर भी सोच न करें मैं जाता हूं वीर पृथ्वीराज को पकड़ लाता हू। यह कहकर वह षोडसवर्षीय राजकुमार घोडे को एड देकर पृथ्वीराज के पीछे पड़ा। यह देखकर उसका सहकारी लील प्रमार भी सारी सेना सहित उसके पीछे हो लिया। महादेवराव संयोगिता के मामा का लड़का था उसे आगे चढ़ा बढ़ता हुआ देख संयोगिता ने सहम कर सर नीचा कर लिया तब इधर से गुजरात के राजा भीमदेव का पुत्र कचराराय उसके मुकाबले पर जाने को सनद्ध हुआ। कच्चराराय के शरीर में पहिले भी बहुत से घाव-आ चुके थे पर उनकी वह कुछ भी परवाह न करके अपने इष्टदेव भैरवजी का स्मरण करता हुआ पृथ्वीराज के पास गया और उसे सिर नाकर आज्ञा चाही। पृथ्वीराज की आज्ञा पाकर ज्योंही वह राजकुमार मोरचे पर चलने को हुआ कि संयोगिता ने अपने गले से मोतियों की माला उतार कर उसके गले में पहना दी। गले में माला पड़ते ही

वह इस तरह से रोक उठा जैसे रामचन्द्र जी का बल पाकर सुग्रीव ने बाली को प्रचारा था। जिस समय कच्चराराय चचला सी चमचमाती हुई तलवार निकाल कर शत्रु सेना में पिल पडा उस समय ऐसा जान पडता था मानो पार्थपुत्र अभिमन्यु चक्रव्यूह को भेदन कर रहा हो। इस किशोर वय राजकुमार ने ऐसा पराक्रम किया कि देखने वालों का दिल दग हो गया। मनुष्य की तो बात ही क्या है उस समरभूमि में उपस्थित भूत बैताल भी उसकी बलाये लेते थे। उस समय उसका मुख मडल साचात मगल ग्रह के समान दमदमा रहा था और उसकी इकहरी कृपाण सौदामिनी के सौरभ को तिरस्कृत करती थी। वह जहा हाथ देता वहा बधिया बाकी न रहती बडी बडी दोहरी देह वारे जबरदस्त ज्वान दो होकर रह जाते थे। कच्चराराय का इस प्रकार विपम पराक्रम देखकर महादेव राव स्वय उसके साम्हने आया और उसने आते उसके सीने पर साग का वार किया। उसी घडी इसने उस पर तलवार का वार किया। वाह इधर उसकी साग इसका पजर पार कर गई उधर इसकी तलवार से उसका सिर तन से जुदा होगया। पर फिर भी दोनो दौड कर एक दूसरे से लपट गए और आखिर योंही गुथे गुथाए जमीन पर गिरे। इन दोनों पोडम वर्षीय किशोर वय राजकुमारो का ऐसा ओज उत्साह और समरकौशल देखकर देवताओं का भी दिल दग हो गया। उन्होंने उनकी स्तुति करके उनके कलेवरो पर पुष्प वृष्टि की और दिव्य विमानों में बैठी हुई देवाङ्गनाए आकर इस ससार सागर से उनके हसों को उडा ले चली।

महादेव राव के मारे जाने पर उधर से तीन हजार सवारों के साथ लीलराय प्रमार ने पसर की और इधर से उसके मुकाबिले में धार का राजा बलदेव राव उतरा, ये दोनों सरदार बडे डिलारे और अच्छे ऊंचे पूरे ज्वान थे। सारी सेना भर में इन दोनो के सिर हाथ हाथ भर ऊचे मुनारे से उठे देख पडते थे। उनके शरीर पर के उज्वल सनाह की और सूरज की जोति एक हो रही थी। उनके सिर पर स्वेत स्वेत टोप तो ऐसे मालूम देते मानो गगा जी को सिर पर रक्खे हुए दो मलयाचल चहल कदमी कर रहे हो। उन दोनों के हाथ में बडी बडी गेडे की ढालें और लम्बे लम्बे दुधारे थे। वे दोनों स्वामि-धर्म-रसमाते बीर एक दूसरे पर बेकसर होकर वार करते, शत्रु को मारना चाहते और दाव पेच कर कर के अपना अपना बचाव बिचारते थे पर उन दोनों मे से उन्नीस कोई न था इसलिये जब बडी देर लो फड रोप कर लडते लडते दोनो के दुधारे और कटार दोनों हथियार टूट गए और अगनित घावों के कारण दोनो के शरीर भी जर्जर हो गए तब उन्होंने एक दूसर पर साग चलाई। बीच कलेजे पर सागो की ठोकर खाने से दोनो बेसुध होकर चक्कर खाते हुए गगा जी में जा गिरे।

राजा पृथ्वीराज कच्चराराय को बहुत चाहता था अस्तु जब महादेवराय और वह दोनों खेत रहे तब पृथ्वीराज को बहुत बुरा मालूम हुआ। इस समय ग्यारह सौ राजपूतों मे से केवल सौ मनुष्य बचे थे सो उनमें भी मरने मारने वाले केवल पैतालीस सरदार थे। शेप पचपन सागिर्द पेशा के आदमी थे। पीछे सोरो घाट की अगम अथाह गगाजी भरी हुई थी और तीन तरफ से समुद्र के समान पगदल चढा आता था। इस समय पृथ्वीराज को निश्चय हो गया कि बचना कठिन है। यह विचार कर और अपना मरना निश्चय ठान कर उसने सयोगिता को घोडे पर छोडा और आप पैदल हो गया। उसने अपने इष्टदेव भगवान कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द का स्मरण करके कधे पर से कमान निकाली और शत्रु सेना पर वह सनासन बाण बर्षाने लगा। इस समय बारह बारह कर के चौबीस सामन्त सयोगिता के घोडे के दोनों बगलों मे हो गए और शेप लोगों सहित जोगी जवाग भीमदेव जैचन्द का मोरचा रोकने को चला। एक हाथ में तलवार और एक में कटार लिए हुए आगे भीमदेव और सेन

लिए हुए उसके पीछे चार सूरमा और चले। जीवन की आशा को तिलाजुली दिए हुए वे पाचों राजपूत जिस तरफ को सीधे हो जाते उस तरफ पगदल के सैंकडों सिपाही काई से कटते जाते थे। तलवार पर तलवार पडने से लोह की चेर्ली और आग की चिनगारिया उडती देख पडती थी। जहां सेल या साग लगती वहा से खून की सेंट वह निकलती और जहा तलवार का वार बैठता वहा से धारा बह निकलती थी। झलाझल झिलमों को फोर कर वीरों के कठोर कलेजे मे बैठी हुई साग ऐसी सुशोभित होती जैसे मल्लाह के जाल में से मछली निकली चली जाती हो अथवा धीमर स्वय जाल मे से मछली निकाल रहा हो, इसी तरह से शत्रु सेना के बड़े बडे बज्रकाय वीरों के कलेजे फोड़ता और कुलकलङ्क कपूत कायरो के कलत्र कँपाता हुआ वीर वारडसिह काम आया। वारड़सिंह को गिरते देखकर जगमाला चंदेल उसके स्थान पर आया और बडी देर लों अत्यन्त पराक्रम करके अंत मे वह भी धराशायी हुआ। इतने में करनाटक के एक सरदार ने दहना दबाव देकर झट बाई ओर से छापा मारा परन्तु उस बाजू के रक्षक बिझमाल ने उसे आड़े हाथों लिया। वे दोनो चटपट परस्पर इस तरह से जुट पड़े जैसे ताजे मास पर सिह टूटे। उसने उसके खोपड़े पर हाथ दिया और उसने कंधे पर बस दोनो एकही दम दो से चार हो गए और दोनों के हंसा इस असार ससार से सदा के लिये पार हो गए। इतने मे दो घडी और व्यतीत हो गई और इस अर्से में पन्द्रह सरदार पगदल सेना के और पाच सरदार पृथ्वीराज के खेत रहे।

परन्तु पगदल बराबर बढ़ता चला आता था और घरी घरी की कुशल परमात्मा के हाथ थी। ऐसा कठिन समय देखकर असिरूपी भस्म और शत्रु समूह रूपी पवन भक्षक, सर्प रूपी कटार से विभूषित पंगदल रूपी कामदेव को मथन करने वाला गज चर्म को चीरने वाला दुष्टों के मुण्ड की माला बनाने वाला सिंगी का शब्द करने वाला मस्तक में सदा शान्तरसमय चन्द्रमा को धारण करने वाला साक्षात शिव स्वरूप दृढ़ासन योगी जघारा दृढ़ पंज से पगदल रोप कर खडा हो गया और चार घडी पर्य्यन्त अतुल पराक्रम करके जब वह भी इस दुःखमय ससार को त्याग कर शिवजी के स्वरूप में जा मिला तब अजमेर के किले के किलेदार सगरराय गौर ने मोर्चा पकडा। इस वीर ने तो ऐसा पराक्रम किया कि सब के छक्के छुडा दिए। कविचद कहता है कि वैसे तो स्वामिसेवा में सब सामन्त लडकर मरे परन्तु आखरी खेत सगरराय के ही हाथ रहा अर्थात् उसके मरते ही फिर मानहो हो गया। मार काट होते होते जिस समय अपनी माई का लाल सच्चा सपूत राजपूत बच्चा उद्धकुमार सगरराय गौर भी गिर गया उस समय दोनों दलों की विलक्षण दशा थी। न तो जैचन्द के दिल मे पृथ्वीराज को पकड़ लेने की होस शेष थी और न पृथ्वीराज के हृदय में जीवन की आशा शेष थी। वाह रे राजपूतो खूब किया तुम्हारे सिवाय और किस का कलेजा ऐसा हो सकता है कि कटते फटते बेकाम हो गए पर तुम्हारे हाथों ने हार न मानी। हाथ करते करते हथियार भोथले हो गए पर तुमने मरने मारने से मुह न मोड़ा। लोथ पर लोथ पटते पटते पृथ्वी तो थक गई पर तुमलोग पौरुषहीन न हुए, शिवाशिव! ज्यों ज्यो सार पर सार बजा त्यों त्यों तुम्हारा तेज तिगुना होता गया।

निदान दोनों दलों में द्वद होते होते सुदी दसमी का भी दुपहर लौट गया। यद्यपि दोनो दलो के दिलो मे जय पाने की आशा शेष न थी पर उन्हो ने अभी मरने मारने से भी कच्ची नही खाई थी, गिरते परते मरते मारते हाथ पर हाथ देते जैसे तैसे तिल तिल जमीन जीतते चले जाते थे। अत में जब केवल चार घडी दिन शेष रह गया तब जैचद स्वय घोड़े पर सवार होकर पृथ्वीराज को पकडने के लिये चला पर गजमेल मे जुमकते ही ज्योंही उसकी नजर सयोगिता पर पडी कि वह मुह से पकड़ो पकड़ो पुकारते हुए बेहोस होकर जमीन पर गिर पडा।

यह देख कर उसके साथ के सरदार या सिपाही सब लोग घोडे पर से उतर पडे। किसी किसी फौजी सरदार की फिर भी पसर करने की इच्छा थी। पर समझदार राज्यकर्मचारियों ने कहा कि नहीं ऐसा ठीक नहीं। कन्नौज से यहां तक उनके केवल चौसठ सामंत खेत रहे पर अपने हाथ कुछ भी न लगा। अब तो पृथ्वीराज अपने राज्य मे आ गया फिर आगे क्या होगा सो किसने देखा। जैचद का चित्त स्वय मोहवश दुचिता हो रहा था अस्तु उसने भी इस बात को न काटा। और वही से वह पृथ्वीमाता को पाच परिक्रमा देकर यह कहता हुआ कन्नौज को लौट पडा कि हे राजसूय यज्ञ के बिगारने वाले और मेरी प्राणप्रिय पुत्री को हरण करने वाले पृथ्वीराज, दिल्ली का राज्य और अपनी प्रतिष्ठा और लाज आज तुझे दान देकर मै कन्नौज को जाता हू। यह कह कर बची खुची सेना सहित जैचन्द मलीन मन होकर घर को फिरा और नवदुलहिन सयोगिता सहित राजा पृथ्वीराज आनन्द की बंशी बजाता हुआ दिल्ली को चला।

इस प्रकार से अद्वितीय वीर्य्यवान चौसठ सामंतों और एक हजार अन्य राजपूतों को खपा कर केवल पैंतालीस सामंत और कुछ परिकर के लोगो सहित पृथ्वीराज ने एकादशी के दिन जगल में पडाव दिया और वहा से कविचद को दिल्ली में खबर देने के लिये भेजा। उधर सयोगिता का सम्बन्ध विचार कर विचारवान राजा जैचद अछताता पछताता हुआ उलटा फिर गया। आगे पीछे की सब बाते विचार कर राजा जैचद का हृदय अत्यन्त क्रोध लज्जा और ईर्षा के कारण जला जाता था। परन्तु फिर भी वह माम के लालच से फांसी मे पडे हुए सिह की तरह मन ही मन मसोस कर रह जाता था। उसने रास्ते मे आते आते दोनों तरफ के मृत सरदारो की यथा विधि दाह क्रिया करवाई और साधारण सिपाहियों की लाशें हरि बोल कर गगाजल मे विसर्जन करवा दी। द्वादशी के सूर्य्योदय के बाद बीस पल पर जैचद दिल्ली में जा दाखिल हुआ। यह सब से पहिले अपने घर जाकर अपनी एक कुमारी प्यारी सारिका से मिला और उससे सारा दुःख सुख कह सुन कर तब राजद्वार पर आया। वहा उसने कहा कि शत्रु समूह को शमन कर और सुन्दरी संयोगिता को साथ लेकर सभरीनाथ महाराज पृथ्वीराज दिल्ली को आ रहे है अस्तु जिसकी इच्छा हो सो दर्शन करने चले। यह सुखमय सदेसा सुनतेही बहुत से प्रजा के लोग और समस्त सैनिक सिपाही और सरदार तो उधर पेशवाई के लिये रवाना हुए। इधर कलकंठ से मगल गीत गान करती हुई नवयोवना मगल मुखी महिलाए अपने अपने महलों के मोखों और झरोखो पर ऐसी लपक गई जैसे तृन समूह पर अग्निज्वाला लपके अथवा कोई भारत की कथा सुनकर नाग कन्याए अतरिच्छ में जा विराजें।

निदान तेरस को सवेरे भीमदेव सौलंकी वगतिराय, जैतराव प्रमार, जामराय यादव, लोहाना आजानबाहु, भरतसिंह पडिता, जाजराय यादव, बलिभद्रराय, कूरंभ ठंठरीराय चाटा, पीपा परिहार, लक्खन बघेला, हाहुलीराय हमीर, अचलेस भट्टी, चन्द्रसेन बडगुज्जर, सग्रामसिंह बघेला, तेजल्लडोल प्रमार आदि घायल सामंतों की तैंतालीस डोलियों के बीच मे चवालीसवी संयोगिता की डोली लिवाए हुए राजा पृथ्वीराज दिल्ली में आया। उस दिन दिल्ली नगर की कुछ छटा ही निराली थी। जहां तहा अटारियों पर बैठी स्त्रिया आनन्द के अच्छत छोड रही थीं, द्वार द्वार पर नवीन कलश और वदनवार सजे हुए थे और आबाल वृद्ध सब लोग खुशी के मारे फूले अग नहीं समाते थे। राजद्वार की शोभा का तो कहनाही क्या है जहा हजारों मधुर स्वर बाजे बज रहे थे और चारण और कवि लोग राजा पृथ्वीराज की विरदावली पढ रहे थे। ज्योंही राजा ने राजद्वार के सम्मुख आ घोडे से उतर कर पृथ्वी पर पैर दिया त्योंही सिर पर सोने के कलश लिए हुए सोलहों शृगार और बारहों आभूषणों से सुसज्जित सैकड़ों षोडसवर्षीय नवयौवना नायिकाए एक स्वर से मगल गीत गाने लगीं। राज्य कर्मचारी और नगर के

सेठ साहूकार तथा सगे सम्बन्धी सरदार लोग हीरा, जवाहिर, रुपया, मोहरं और नाना प्रकार के पाटंबर और जरतारी वस्त्र राजा को न्योछावर करने लगे। पटरानी इछनी अपने पति की आरती उतारने लगी और अन्यान्य रानिया अपने चिक्कन सूक्ष्म और मुलायम केशों से राजा पृथ्वीराज के पेरो पर की धूलि झाडने लगीं। क्या कहें उस समय दिल्ली के राज्यमहल सुरवीर को और वे रानिया साक्षात नागकन्या या देवागनाओ को तिरस्कृत करती थीं।

अभी राजा पृथ्वीराज को दिल्ली में आए हुए दो दिन भी नही हुए थे कि राजा जचन्द का भेजा हुआ श्रीकठ प्रोहित विवाह की सब सामग्री लिए हुए आ पहुचा। राजा पृथ्वीराज ने उसे बड़े आवभाव से लिया और उसे निड्डुरराय के घर मे डेरा देकर उसका यथोचित आतिथ्य सत्कार किया। एक सप्ताह विश्राम करके राजा पृथ्वीराज ने वैसाख वदी पंचमी को प्रातःकाल बडा दर्बार किया और उसमें कन्नौज में काम आए हुए सामतों के पुत्र पौत्रों को बुला कर उनके सिर सामतपने की पगडी बांधी। उसने निड्डुरराय के पुत्र बीरचद को बुलाकर अपने हाथ से उसका तिलक किया और इस बधाई में उसे बीस गांव पाच घोड़े और एक हाथी और सिरोपाव दिया। कन्ह चहुआन के पुत्र ईसरदास को पन्द्रह गाव एक हाथी और आठ घोड़े दिए। गोयंदराय गहलौत के पुत्र सामंतसिंह को बारह गाव और पाच घोडे बधाई में दिए और चन्दसेन पुडीर के पुत्र धीरपुडीर को उसके पिताकी जागीर का पट्टा दिया। इसके सिवाय और भी सब सामत पुत्रों को उनकी पैतृक जागीर के पट्टे सिरोपाव और मोती माला आदि देकर सब को उचित मान पान और सम्मान से संतुष्ट किया।

उसी दिन पुष्य नक्षत्र का वेध होने पर गोधूली वेला मे व्याह होने का मुहुर्त था। कहा जा चुका है कि श्रीकठ का डेरा निड्डुरराय की हवेली में दिया गया था, वहीं पर दहेज में देने के लिये जैचन्द का भेजा हुआ सब सामान सजाया गया। उसने दहेज में देने के लिये यह सामान भेजा था। जरीदार जडाऊ साज और गगाजमुनी हौदे और अम्मारियों से सजे हुए एरावत के से पुत्र एक सौ आठ हाथी. जडाऊ जीन रेशमी पटे और सुन्दरी पाखरों से सजे हुए अच्छे खेत के आठ हजार अच्छे अच्छे घोडे और पलग सेज सुपेती बरतन गहने और कपडे और नगदी की गिनती कौन करे। निड्डुरराय के घर लडकी की तरफ का मडवा गाडा गया। कन्नौज मे आई हुई सयोगिता की सखियों ने उबटन करके उसे मज्जन कराया और यथा विधि शृंगार बनाव किया। उन्होंने सयोगिता के केश सवार कर वेणी गुही बीच बीच मे रंग विरंग सुगधित पुष्प भरे। शीश पर शीशफूल लगाए, ललाट पर जडाऊ तिलक सॅवारा, बड़े बड़े खजन से नेत्रों में काजल लगाया, नाक मे वेसर पहिनाई, मुख में तमोर खिलाया, कठ में नाभी तक हरती हुई मोतियों की माला पहिनाई, हाथों में चूडी, पटेले, नौगरई, पोहुंची, वरा, बाजूबंद और जोसन आदि सजे, कमर मे क्षुद्रघंटिका मेखला और करधनी पहिनाई, पैरों में नूपुर पैजनी और पाजेब पहिनाए और उसके सहज अरुणारे तलुओं मे महावर लगाया। यह ऊपरी सजाव बनाव तो किया ही गया परन्तु सयोगिता के लज्जामय कटाक्ष, मद मुस्कान, नवीन वय, मन की मजेज, रति मे प्रीति, स्त्रियोचित भय, स्वामी से सच्चा प्रेम, शृगार रस की सरसता, हंस की सी चाल, धैर्य्य, क्षमा, मीतमन-हारिणी शक्ति, उसके गुप्त स्थानों की सुन्दरता और कोमलता और स्वाभाविक शील यह सोलह शृंगार उस की शोभा के लिये अलम् थे।

गोधूली वेला होने पर दिल्लीपति पृथ्वीराज सब तरह से बन ठन कर और जडाऊ मुकुट माथे पर बाध कर घोडे पर सवार हो अपने सिपाही और सामतों सहित इस गली उस गली होते हुए निड्डुरराय के घर जा पहुचे। वहा जाते ही निड्डुरराय के पुत्र वीरचन्द ने महाराज का टीका किया और उन्हें सादर मंडप में लिवा लेगया। राजा पृथ्वीराज के

पटा पर बैठते ही मडप में उपस्थित ब्राह्मणों ने जै जैकार की ध्वनि की। इतने में सखियों में मिली हुई सयोगिता भी मडप में आई और राजा के बाए पार्श्व में बैठ गई। कवि लोग बिरदावली बखान करने लगे और उधर से श्रीकंठ और इधर से गुरुराम में शाखोचार करके दंपति की गाठ जोड़ी।

निदान कन्या के कुल के और सब नेगचार भी वीरचद ने किए और सकुशल व्याह समाप्त हुआ। व्याह के अन्त मे भूरसी हुई और असख्य धन ब्राह्मणों को दान दिया गया जिस समय सयोगिता अपने प्राण प्यारे पति के साथ राज महलों को चलने लगी तो सैकड़ों मन चादी के फूल और जड़ाऊ जेवर आदि न्योछावर में लुटाए गए। राजा पृथ्वीराज संयोगिता सहित गद्दी पर विराजमान हुआ उस समय सैकडों गनिकाएं स्त्रिया मगल गीत गाती और नृत्य करती थीं, कवि और चारण लोग आशीर्वादात्मक कवित्त पढते और ब्राह्मण लोग अचक्क दान मान पाकर स्वर से वचन बोलते थे। कन्नौज के राजा जैचद का भेजा हुआ दहेज का जो सामान आया था सो महलों में जमा किया गया और पन्द्रह दिन पहुनई में रख कर चार घोड़े एक हाथी और बहुत सा धन रत्न देकर श्रीकंठ प्रोहित विदा किया गया।

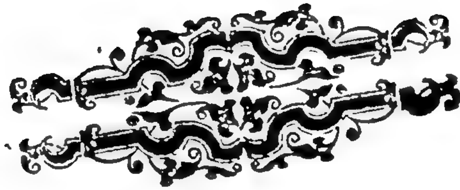
प्रिय पाठको! अब जरा इस अन्यन्य प्रेमी दम्पति के सुख सहवास की बात सुनिए। सच तो यों है कि जो एक दूसरे के लिये वर्षों से बेहाल हो रहे थे जिनके लिये हजारों जानें गई उन दोनों का सुख सहवास उनकी हार्दिक उत्कठा और उनकी प्रसन्नता का यावत् वर्णन करना किसी कवि की कथन शक्ति से बाहर है।

आग की तरह गरमी बरसाने वाले ग्रीष्म के दिन थे इसलिये सुन्दरी सयोगिता का सुहाग महल बसन्ती बहार से सजाया गया। जहा तहा उत्तमोत्तम तरु और लताओं के तान वितान मय लता [illegible] लगाकर उसी की शीतलता सरसाई गई। अगर [illegible] के मेघ बनाकर गुलाबजल की नन्ही नन्ही बूंदे बरसाई गई और नाना प्रकार के बरसाती पक्षियों की बोली भी सुनाई गई। वहा राज महल के उज्वल कलसे आप बिजली से दमदमा रहे थे और हास्यरस में निमग्न स्त्रिया स्वय दादुरों को मात कर रही थीं। इसके सिवाय और भी नाना प्रकार के राग रंग होते और अप्सराओं के समान सजी बनी वाराङ्गनाए सरस रस मय गीत गाती और नाचती थी। रात्रि का विशेष भाग बीतने पर तीस आगे और तीस पीछे ऐसी साठ सखियों के बीच में गसी हुई सयोगिता पृथ्वीराज के पास आई। उसे देखते ही पृथ्वीराज ने बढ कर उसका हाथ पकड़ लिया और कलेजे से लगाकर उसे अपनी गोद में बिठा लिया। उस समय सुन्दरी सयोगिता के रस वस होकर पृथ्वीराज ऐसा मुग्धमन हो गया जैसे केतकी के पुष्प की सुवास पाकर भ्रमर सब भूल जाता है। ऐसा वीर ऐसा प्रतापी ऐसा चतुर ऐसा कामक्रीडा में कुशल और ऐसा विषय विलासी राजा पृथ्वीराज किंकर्त्तव्य-विमूढ़ होकर रह गया। अपनी प्रिया को ऊपर से नीचे तक भर नजर देखता और कुछ हाथ पैर चलाने की इच्छा भी करता पर फिर न जाने क्यों आपही आप झिझक कर रहता था। पृथ्वीराज की ऐसी विलक्षण चेष्टा देखकर सयोगिता की एक सखी असल मतलब ताड गई। उसने समझ लिया कि यह मनमुग्ध राजा पृथ्वीराज इस सुकुमारी कुमारी के शरीर की सूक्ष्मता और कोमलता देखकर डरता है। उस क्रियाविदग्धा सखी ने तुरन्त ही अपनी आख के कोए से काजर ले कर गदेरी पर एक चित्र खींचा जिसमें उसने दिखलाया कि एक रसाल वृक्ष की नवीन कोंपों में हो कर कोमल कोमल मंजरी निकल रही है, उनमें से एक अत्यत सूक्ष्म मजरी पर एक मदोन्मत्त भ्रमर बैठा हुआ है। उस नवीन मंजरी का रसपान करता हुआ उनमत्त भ्रमर लुर लुर जाता है और उसी तरह उसके बोझ से दबी हुई मजरी भी लचलच कर चौबाई हो हो जाती है पर न मंजरी टूटती है न भ्रमर रस लेना छोड़ता है। यह दृश्य दिखला

कर उसने कहा हे राजन आप तो वीर पुरुष हैं, जरा तलवार की बारीक धार का ध्यान तो कीजिए जो मदोन्मत्त दतारे हाथियों के कुंभस्थल को सहज ही काट डालती है। यह सुनते ही पृथ्वीराज के होश ठिकाने आ गए। और

(दोहा)

अलिय अलिय एकंत मिलिय, रसरस वर संजोगि।
सो कविचंद त्रय वरस रस, पुह प्रगटित रतिभोग॥१॥



शुक्रचरित्र ।

बासठवां समय ।

सच है ! तनमद, धनमद, राज्यमद और मद्यमद इन चार में से एक का भी जहा सचार तथा प्रचार होता है वहा सब चौपट होकर चौका लग जाता है फिर पृथ्वीराज के सिर पर तो ये चारों एक होकर के सवार थे। और सब सुखसारे तो उसे ईश्वर ने जन्म से ही दिए थे युवा होने पर उसने अपने सब शत्रुओं को परास्त किया और सब से सबल सुलतान शहाबुद्दीन को कई वार बदी बना बना कर छोड दिया, बाकी थी कन्नौज की पैज सो वह भी पूरी हो गई । अब इस समय उसके कोटि रोम में से एक में भी किसी प्रकार के दु:ख या खटके का लेश भी शेष न था । वह अपनी नवयौवना प्राण प्रिया के हिये का हार बना हुआ अहर्निशि के आठों प्रहर विषय बासना में बिताता था, वह अपने को पृथ्वी पर के सब प्राणियो में श्रेष्ठ सुखी मानता और यह भी न जानता था कि सूर्य्य भगवान कब कहा से उदय होते है और कब कहां अस्त होते है ।

एक दिन राजा पृथ्वीराज ने योंही मौज में आकर असाढ सुदि दुतिया को, अपने अंतर महल मे एक महिलामडल रचा । उस मडल में पमारिनी रानी इछनी आदि को लेकर सब रानिया उपस्थित थीं । जेष्ठा रानी होने के कारण अब तक रानी इछनी ही पटरानी के पद पर थी और कभी कोई विशेष शुभ कार्य्य पाकर ऐसाही अतरंग उत्सव होता तो रानी इछनी ही गाठ जोडकर राजा के साथ गद्दी पर बैठती थी । परन्तु अब की यह बात न हुई । इस बार पग पुत्री रानी सयोगिता राजा पृथ्वीराज की अर्द्धाङ्गिनी बनकर गद्दी पर बैठी और रानी इछनी को अन्य सब रानियों की भांति साधारण आसन मिला । यद्यपि यह बात और सब रानियों को भी बुरी मालूम हुई पर रानी इछनी के कलेजे में तो मानो सैल सी टूट गई । वह चतुरा चेत गई कि यह सब चरित्र मेरीही मानहानि करने को रचा गया है । वह प्रौढा मनही मन उसासें लेती हुई सोचने लगी । हाय जिस प्राण प्यारे को मैने अपनी प्रेम की प्रतीति या स्त्रियोचित विनय से आज लो अपना करके रक्खा उसके मन में आज इस सौति ने ऐसा अतर डाल दिया । हा उसे भी क्या दोष दे उसकी चढ़ती जवानी है और मेरी अवस्था उतर गई है । योंही सोचती विचारती वहां से उठ कर वह अपने महलों मे आई । एक तो एक साल से पति का सहवास न होने के कारण वह आपही काम बिथा की मारी मर रही थी ऊपर से दूसरा यह दु:ख । बस वह मुरझाई हुई बेल की तरह झमी खाकर गिर पड़ी ।

उसी छिन से छिन छिन पतिव्रता पमारिनी इछनी की कैसी दशा बदलने लगी सो कह नहीं सकते । अत्यन्त मन मलिन होने के कारण वह तन मलिन भी हो गई । जिस शरीर पर सदा चदन चढा रहता था उस पर अब मिट्टी पडी रहने लगी । अजन विहीने नैन सूने से हो गए और पान की पीक रहित मुख फीका पड गया और शृगार विहार की कौन कहे उसका आहार भी कहने को रह गया । उसने बहुत दिनों से एक सुग्गा पाल रक्खा था बस बैठी बैठी उसी को दूध भात खिलाती और उसी को अपनी आतरिक व्यथा की कथा सुनाया करती थी । योंही होते होते जब बहुत दिन हो गए, तब एक दिन वह सुआ खिसिया कर बोला री रानी क्यों वृथा मुझ बरबस बदे का सिर खाया करती है बहुत बकबक करेगी तो मै तेरी ये सब बातें राजा से कह दूगा । रानी बिचारी हाय साम लेकर चुप हो गई, तब वह सुआ पुन बोला हे सलख पुत्री मै जानता हू कि राजा सयोगिता के हिये का हार हो रहा है और तेरा मन मौनिपाटाह और विरह बिथा के कारण अत्यन्त बेकल हो रहा है पर किया क्या जाय ! हा एक बात अवश्य है । यदि तू किसी तरह मुझे सयोगिता की चित्रसारी में रख सके तो अच्छा हो मैं [illegible] तो देख सयोगिता से

ऐसा कौन सा जादू है, फिर कुछ बन पडा तो देखा जायगा। रानी इंछनी इस बात पर राजी हो गई। सच है, सर्वस विरोधी से रावरसम हो सकता है। बाप को मारने वाले से भी मन मिल सकता है पर सौति बैर सदा दिन दूना रात चौगुना होता जाता है। दो सौतें परस्पर इकट्ठी होकर मुह देखी मीठी मीठी दो बातें भले ही कर लें पर असल में उनके जी की ज्वाला और भी जर्जरीभूत होती है। एक दूसरी को देखतेही उसके अग अग में वज्र सा लग जाता है। और वे ज्यों ज्यों एक दूसरी का आदर करती है त्यों त्यों उनके कलेजे में छेद होने लगते है। वे सदा एक दूसरी के लिये यही सोचती रहती है कि कब इसका सत्यानाश हो जाय और कब इसका धुवा देखूं।

दैवयोग से कुछ दिनों के बाद सयोगिता ने एक उत्सव किया और अपनी सब सौतों को न्योता दिया। स्त्रिया सहज से ही लोभी स्वभाव की होती है। वे एक एक डोरे के लिये लड़ लड मरती है फिर पति का प्रेम बाटने वाली प्रेम सौति का सुख सारा देखकर सिहायें तो कैसे सिहायें। पर किसी न किसी तरह सबने सयोगिता का न्योता मान लिया और पुंडीरनी, इन्द्रावती, हम्मीरनी, ससिव्रता, कूरंभी, कंनानी, हंसावती, और दाहिमी आदि सब रानिया नियत समय पर संयोगिता के महलों में जा पहुची। सब के पीछे एक दासी से सुआ का पिंजरा लिवाए हुए रानी इंछनी भी जा पहुची। वैसे तो रानी इछनी उस सुग्गे को योंही अधिक प्यार करती थी पर फिर भी आज उसकी सजावट बनावट विशेष थी। सुग्गे के गले में हीरों की कंठी पड़ी हुई थी पिजरे के ऊपर जड़ाऊ जरदोजी की झूल पड़ी हुई थी और भीतर सोने की कटोरियों में ताजा दूधभात परोसा हुआ था। रानी इंछनी संयोगिता की चित्र-सारी में पहुच कर देखती क्या है कि वह कमरा शृंगार रस के असल रसिया मनसिज का निवास स्थान बन रहा है। चारो और चोवा और चंदन का छिड़काव है बीच बीच मे मृगमद के छींटे दिए हुए है। जहां तहा नाना भाति के लता पता एवं बेल बूटे सजे हुए है और उन पर बैठे हुए मलिंद वृन्द मंद मद गुंजार कर रहे है। द्वार और द्वारियों में जरी के परदे पड़े हुए हैं और बीच मे रानी पगानी का पलग सजा हुआ है। बड़ी बडी आखों में काजल लगाए और हाथों में कुकुम का लेप चढाए हुए सयोगिता रानी इछनी से बड़े आवभाव से मिली और दासी के हाथ में सुए का पिंजरा देखकर फौरन उसे अपने हाथ में ले लिया।

राजा पृथ्वीराज भी वहीं था। निदान कुछ देर मे वह तो उठकर चला गया और सब रानिया परस्पर एक दूसरी को अपना अपना दुःख सुख सुनाने लगीं। वैसे तो औरतों की बातें है गोरखधंधेर मे कम नहीं पर असल में सब का यही उलहना था कि आज एक साल से ऊपर हो चुका तब से हमने राजा का मुख नहीं देखा। न जाने ये पापी प्राण किस आशा बिधे शरीर में रम रहे है। जैसे बरसात बीतने पर तलाब शनैः शनैः तट को छोडने लगता है, वृद्धापन में बुद्धि, और पावस गए मोर शोर करना छोडने लगता है उसी तरह अब प्रेमपात्री की जवानी उतरने पर पति की प्रीति भी कम होने लगती है। कुछ समय पश्चात् रानी सयोगिता ने सब को नाना प्रकार के पाट पाटम्बर और जर-तारी सारी आदि अनेकानेक वस्त्र देकर विदा किया। निदान सब तो उठकर अपने अपने महलों को गई पर सुए के आसेर रानी इंछनी बैठी रही। अत में वह भी यह कहती हुई उठ खडी हुई कि अच्छा तब इसे आज की रात अपनेही पास रखिए ईश्वर चाहेगा तो इसके द्वारा सबेरे मुझे आपकी प्रेम कथा सुनने को नसीब होगी।

यह कहकर उधर तो रानी इंछनी अपने महलों को रवाना हुई इधर सयोगिता उस सुए का पिजरा लिए हुए अपने अतर आवास मे पहुची। सयोगिता की उस अतरशाला के देहरी द्वार, खिड़की, किवार और दीवारों में भांति भाति के सच्चे नग जड़े हुए थे, नाना प्रकार के चित्र खचित थे और भाति भाति

के बेल बूटे रचित थे । मोधी सुगंधि भरपूर होने के कारण यहा माधव मास का आभास होता था और बीच में बिछा हुआ पर्य्यंक तो साक्षात मनोज महाराज की गद्दीसा छबि छा रहा था । उसी मुख्य आवास के आसपास भोजन मज्जन और शृंगार आदि के अलग अलग कोठे थे और वे सब अपने अपने रकम की आवश्यक सामग्रियों से सजे रहते थे। सयोगिता सुग्गे के पिजरे को लिए हुए मज्जनागार मे चली गई और अपने बदन पर से डोरा डोरा करके सब कपडे और गहने अलग करके स्नान करने लगी । उस स्नानागार मे जहा तहा गरम जल के हडे और कडालें भरे रक्खे थे, शरीर को स्वच्छ करने वाले भाति भाति के सुगधित मसाले और तेलों से अलमारिया तर थीं, जगह जगह अग्निसदन बने हुए थे जिनमें अगर छुवाया गया था और अग प्रत्यग को धोकर साफ करने के लिये भिन्न भिन्न भांति के फुहारे बने हुए थे । वहा पर अपने सुकोमल शरीर को नग नग से धो माज करके उसने सुगंधि लेपन की और फिर सुग्गे सहित शृगारागार मे आई । वहा उसने अपने कमर लों लटके हुए कारे मटकारे और मुकोमल केशों में कघी लगाकर उन्हे साफ किया और फिर बीच बीच में रग बिरंगे फूल गूंथ कर बेंदी गुही, ललाट पट पर जडाऊ तिलक सवारा, रुचि कर सुचि भौहें बनाई, कानों मे ताटक पहने, गालों को साफ किया, ठोढ़ी पर तिल जमाया, कुचों पर चोली कसी और और भी अग प्रत्यंग को नाना प्रकार के गहनों से सजबज कर [illegible] नोनी सारी सँवार कर काम कैसी कमान टाढी हुई । उसने फिर सुए को हाथ में ले लिया और चमकती हुई चल कर पुन: अपने अनर अवास [illegible] चित्रसारी मे चली आई । इस समय दिया लगने की वेला हो चुकी थी । अस्तु सयोगिता की चित्र [illegible] मे तो दिवाली की बहार दिप रही थी । अनर [illegible] धूप की सुगंधि से चारों दिशाए सुवासित होती [illegible] उसके पौढने का पलग देखकर तो सुए का [illegible] दग हो गया । पैताने से उसीसे तक सारी सज्जा प्रसूनों से इस प्रकार से सजाई गई थी मानो कामदेव रूपी भ्रमर को फासने को फटेकी[1] लगाई गई हो ।

सुन्दरी संयोगिता ने अपनी सौति के दूत उस सुग्गे का पिंजरा एक तरफ रख दिया और आप प्रिय प्यारे की बगलगीर होकर पर्य्यक पर पौढ़ गई । पहिले तो सयोगिता ने सुए के सबब से कुछ सकोच किया परन्तु जब हृदय में कामज्वर का अधिक जोर हुआ और विकट हरहराहट उत्पन्न होने से सारा शरीर थर थर कापने लगा तब तो उससे रहा न गया और लज्जा को अलग कर दुकूल सम्हारती हुई राजा की छाती से चिपट गई । उस समय उस रसिक दपति में विपरीति केल रचा गया । चन्द्रमा चुपहोकर चिमा गया पर मृग भयभीत होकर भागने लगे किन्तु जब अग अग अनग का रग स्वेद होकर निकलने लगा तब तो लज्जा का नाम निशान बाकी न रहा, साराश यह कि उन दोनों ने परम मनोहर केलि का आनन्द लूटा, उनका यह आनन्द बिहार देख कर इधर सुआ भी मनही मन मुसकाता और सब बातें एक एक करके चित्त में देता चला जाता था ।

दुतिया के दिन जो कुछ थोडा बहुत लज्जा का अश शेष था सो तृतिया को न रहा, तृतीया को था सो चतुर्थी को न रहा और चतुर्थी को था सो पचमी को न रहा । इसी तरह पूर्णिमा तक काम की कलाए पूर्ण होने पर सयोगिता राजा पृथ्वीराज के चित्त रूपी चकोर की चादनी होगई । जवानी की जोर में गगव की कसक निकल जाने से रस के फुहारे छूटने लगे और सयोगिता निपट निर्लज्ज और निर्भय होकर पति के साथ स्वतंत्र रूप से रमण करने लगी । पहिले दिन तो उसका यह हाल था कि हाथ पकड़ते ही हाय हाय करती थी । अपने हृदय सर्वस्व को प्रेम रस का प्याला पीने ही नहीं देती थी । पृथ्वीराज की नजर को रख परख कर मुख मोड लेती और [illegible]

[१] इकहरे फंदे के [illegible] जिसमें होकर [illegible] सब जीव पार [illegible] सकते है ।

से आखें ढांक कर खसकती फिरती थी। दूसरे दिन दाव मे गस गई, तीसरे कसकती मसकती सिसकती और उसकती फुसकती अवश्य थी परन्तु कुछ यह कुछ न रहा, पांचवें दिन हँस हँस कर बातें करने लगी और छठे दिन लज्जा को तिलाजुली देकर स्वय राजा का हाथ धरने लगी। सातवें दिन रस का श्रोत सवाया हो गया, आठवें दिन आठ अंग पूरे होने पर नवें दिन उसके अंग अंग में नौरस भरपूर भर गए। दसमी से दंपति प्रेम दिन दूना होने लगा और एकादशी को दोनों एक मन हो गए। द्वादसी को दून गठे। तेरस को लोकलाज पर पानी पड़ने लगा, चतुर्दशी को राजा का चित्त उसका चेरा हो गया और पूर्णिमा को तो पृथ्वीराज तन मन से संयोगिता का हो रहा। संयोगिता के रति रमण से पृथक होने पर जो उसके शरीर पर किंचित स्वेदकण झलक पड़े सो ऐसे सुशोभित होते थे मानो काम कारीगर ने इस मनोज मजरी पर चन्द्रमा की किरचें काट कर पच्चीकारी की हो, पर कविचन्द कहता है, नहीं उस कुन्दकली सी लली के ऊपर प्रेम रस की ओस की बूदे दरस रही थीं। अपने अप्राप्त पति को पाकर संयोगिता के आनन्द का बारा पार न था। पर फिर भी निश्चित न होकर उसने राजा को ऐसे प्रेमजाल में फासा कि जिससे निकल कर वह आजन्म भी किसी सौति के पास जाने की जी मे न लावे।

सवेरा होते ही सुआ रानी इंछनी के पास लाया गया और वह लगा रात की देखी हुई सब बातें कहने। तब एक सखी हँस कर बोली अरे सुग्गा तेरी ऐसी बातें सुन कर हम सब तो हँसती है पर एक मुग्धा वधू के लिये यह एक बड़ी लज्जा का कारण है. रे पक्षी पहिले पापो के कारण तो अबकी सुआ हुआ पर फिर भी तू पिंजरे में पड़ने का काम करता है। सुआ बोला अरी रानी तेरी सौति बड़ी सयानी है। वह पहिले तो हाव भाव से ही पति का मन भर देती है फिर कोकिला के से मीठे वचन बोल कर उसका चित्त चुराती है और फिर गाढ़ आलिङ्गन मे आड़े आने वाले आभूषणों को उतार कर तब पति के हिये की हार होती है। वह मुह से हूहू करती और लज्जा से आखें लुकाती हुई बड छल बल से अगस्पर्श करने देती है। तब कहीं हृदय से लग कर पर्य्यङ्क पर पौढ़ती है और रसकेलि मे प्रवृत्त होती है। गजब हुआ। जिस रस को रसिक दंपति के सिवाय दूसरा कदापि नहीं जान सकता पर वे भी अपने अपने होंठ दबा कर अपने मन का भाव एक दूसरे पर प्रगट नहीं होने देते उस रस को इस सुए ने सौति और सखियों को सुना कर गलियों में बहा दिया। यह समाचार सुनकर संयोगिता लज्जा के मारे गड गई और बहुत पछताई पर क्या करे अपनी जाघ उघार कर आपही लाजों मरना था।

रानी इंछनी सुग्गे से बोली--अपनी सौति के विषय में जो मैं पूछू सो बतलाएगा। सुग्गे ने उत्तर दिया हा पूछो। तब वह बोली कि उसके गुप्त अगों का वर्णन कर। यह सुनकर सुआ बोला सुन जैसा उसका मूल अग सूक्ष्म स्थूल रच स्याही मायल असल सफेद है वैसेही उसके अन्यान्य अवयव भी इन चारो में से एक एक सिफत के साचे हैं उसके हाथ पैर कमर और हृदय कमल अत्यन्त मुलायम एव सूक्ष्म है। कुचमण्डल भुजमूल नितम्ब और जघा स्थूल हैं उसके नख दत कान और माग उज्वल है और उसके कुचो का अग्र भाग आखो के तिल सा श्याम है। हे रानी जब वह सोलहो शृंगार बारहों आभूषणों से सज बज कर सन्नद्ध होती है तो राजा पृथ्वीराज का दिल बेमोल मोल ले लेती है।

सुन रानी इछनी जिस समय संयोगिता आनन्द में उन्मत्त होकर कलकंठ से मधुर मधुर गान करती है तो ऐसा आभास होता है मानो कलकल करते हुए जमुना जल में गगा की धारा धस रही हो और सिर पर सुनहले सीसफूल जमुना में सुमेर शिखर से सुशोभित होते है। उसके चन्द्रमा से चौंडे चकरे और उज्वल ललाट पर केशर का तिलक उसके हुई वेनी के बीचो बीच मालती की कलिया भरती

शीश में श्री की सुरखी और नीचे कस्तूरी का बूंदा ऐसे सुशोभित होता है कि यह सूक्ष्म रूप राहू मगल सहित अन्य सब ग्रहों का ग्रास किया चाहता है। उसकी बाकी भौंहे सर्पनी सी और सेत श्याम नेत्र साक्षात चन्द्रमा के कलेजे पर अधकार सा चुभे जान पडते है उसकी नाक पर नीलम की तीली ऐसी जान पडती है जैसे छोटे छोटे चन्द्रमा और राहु लड रहे हों, उसके मुलायम और कामगीदार होंट, चन्द्रमा से चाक की हुई किरचें सी कपूर कुन्दकली एव अनार कैसे दात, अनग के रग से सींची, सरसिज सुमन के दल की तरह सुढार और रंगदार रसना, सचक्कन सुढार गोलाकार गुलाबी मोती के सीप से गाल सोहते है। उसके कुचों के बीच में ढरती हुई मोतियों की माला में मुख के सित असित और अरुण शृगार की छाया गगधारा में विद्रुम को लिए भृग और मीन के उछलने की झलक मारती है और कुचों के ऊपर से पडा हुआ नौरत्नी हार तो ऐसा जान पड़ता है मानो शिवजी का पूर्व्व वैर स्मरण करके कामदेव ने ज्वाल माला प्रचण्ड की हो और उसके कोर पर मोतियों का गमाव राहु को ग्रास करने के लिये चन्द्रमासा चढ़ता जान पड़ता है। जडाऊ बेल बूटेदार सुरंग कंचुकी के नीचे चींटियों की सी कतार रोमराजि देखते ही हृदय में सुरसुराहट उठाती है, छुद्र कटि तट में जड़ाऊ छुद्र घटिका सिह राशि पर नव ग्रहो सा गसाव जान पड़ता है, उसके भारी और गुदगुदे नितम्ब, मोटी सुढार जघा खराद की सी खरादी सुढ़ार पिंडुरी और कमर और महावर से रगे हुए दर्पण से दुतिदार पतले पैर अजब ही छवि छाते है। उस के नख चन्द्रमा मे चमचमाते हैं और पैरों में जडाऊ जेहर और पाजेब आदि गहने चन्द्रमा के दरबार में उडगन समूह से जुटे जान पड़ते हैं।

हे रानी सो ऐसी उस कुसमकली सी सुकुमार राजकुमारी के प्रेम पाश में पडा हुआ राजा पृथ्वीराज सब बान्धव और भृत्य आदि सब को भूलकर बमन्त ऋतु के भौंरे की भाति बेसुध हो रहा है। बसंत ऋतु में जब सब प्रात काल के समय शीतल करने वाली सुगंधित पवन मद मद चलती है तो उसके स्पर्श से आनन्द मे उन्मत्त मन भौंरी जाग उठती है और मालती की लता पर बेसुध सोए हुए अपने प्राण प्यारे भ्रमर के मुख पर लगे हुए पराग को पखों से झालती हुई, मद स्वर से प्रेममय गीत गाती हुई अपना मन समझाने लगती है परन्तु मालती की मुलायम डाली हिलने से ज्योंही मलिन्द की निद्रा भग होती है त्योंही वह उडकर किसी स्वच्छ सलिल मय सरोवर मे प्रफुल्लित नलिनी में जा बैठता है और सूर्य्योदय पर नलिनी की कली बंद होने से वह सारे दिन उसी में बंद रहता है। सौभाग्यवश सायकाल के समय नलिनी खिली और भौंरा उड़ भागा, उस समय भौंरी तो उसके पीछे पीछे लगी फिरती है, परन्तु वह रस लोलुप मालती लवग सुगधरा गुलाब, मौरसिरी, कुंद, करौंदा कलब आदि सुगधित कुसमों का रस लेता फिरता है। उसी समय सध्या की सरसर पौन जो डालियों को हिला कर झरझर शब्द उत्पन्न कर देती है उसमे भ्रमर को भौंरी की पुकार भी नहीं सुन पडती। सो हे रानी तू उस बसंत ऋतु की विरहिनी भौंरी के समान है। हाय भौंरी तो केवल बसत मे यह दुःख भोगती है पर तेरे लिये अब बारहो मास बसन्त है।

परन्तु पश्चात्ताप करने से क्या। सुन रानी ऐन आधी रात्रि के समय जब कुसुमायुध की सेना की पसर होती है तो एक ही छापे में लज्जा का किला लुट जाता है, दोनों के थर थर कांपते हुए अधर एक दूसरे मे जुट पडते है और गाढ आलिङ्गन करके जब पृथ्वीराज अपनी प्रिया को पलग पर लिटा देता है तो वस्त्र और आभूषण रूपी कवच छिन्न भिन्न होजाते है और पृथ्वीराज जग के हाथ खेत रहता है परन्तु जब कर कंकन मुद्रिका छुद्रघटिका चोटी चुटबद कंचुकी भुजबद बाजूबद हिय का हार और नूपुर आदि साज शृंगार सम्हार के संयोगिता हँसती हुई राजा को पान देने लगती है तो उस समय राजा परास्त होता है और तेरी भांति विरही होते है।

इस तरह से विजय पाकर जब महाराज मकरकेतु की प्रतिनिधि स्वरूप तेरी सौति सयोगिता आसन मार कर बैठ जाती हैं तो उसके सिर पर प्रीति का छत्र आच्छादित हो जाता है। हाव भाव विभ्रम कटाच्छादि उसके नीति चतुर मत्रीगन अपने अपने कार्य्य में चचलता दिखाने लगते है। बचन चातुर्य्य और स्नेह रूपी सेनानायक अपनी धाक बाध देते है। लज्जा रूपी पण्डित शास्त्र की मर्य्यादा समझाता है। इस प्रकार से उसके विजित शरीर रूपी प्रजा के सब प्रबन्ध हो चुकने पर मोह की शृखला में बधा हुआ राजा पृथ्वीराज रूपी बधुआ इजलास के साम्हने लाया जाता है और तब रूप रस की बेडी पहिना कर उसे आजन्म कैद की सजा क. हुक्म सुनाया जाता है। हे रानी इन्छनी मै क्या कहू वे दोनो हंस हसिनी की तरह एक पल भर का भी विछोह नहीं सह सकते। सौंदर्य्य रूपी समुद्र में जवानी की तरगे उठती हैं और एक दूसरे के गुण रूपी मोतियों को चुन कर वह जोडा अत्यन्त प्रेम के वशीभूत हो रहा है। गुरुजन भृत्य और राज-काज की कौन कहे राजा पृथ्वीराज अपने को भी भूला हुआ है।

हे रानी, संयोगिता के छवि रूपी समुद्र में स्नेह रूपी अमूल्य मोती भी है इसीसे शत्रु दल रूपी अधकार को विदारनेवाला चहुआन चन्द्रमा अन्य परिचारक रूपी चकवा चकवी एव चकोरों की कुछ भी परवाह न करके उसी पर लट्टू हो रहा है। स्त्री को स्त्री के स्वरूप की खूबी नहीं नजर आती ईर्षा से कहता हू कि सयोगिता संयोगिता ही है, उसके हृदय पर कठोर कुच ऐसे जान पडते है जैसे स्वर्ग से भागा हुआ मतवारा ऐरावत स्वय उसके दिल में हुक रहा हो और उससे उसके कुम्भ निकल पड़े हों। और उन पर की श्यामता से मद की कालिमा का आभास होता है, उसका मुख मण्डल ऐसा प्रदीप्त होता है जैसे सूक्ष्म बदली में दबा हुआ सूर्य्य हो। उस पर हाथ की हवा लगने से मैल चढ़ती है उसके अग प्रत्यग मे अनग का रग कोल कोल कर भरा हुआ है उसके श्याम सेत और रत-नारे दृग देखकर तीनो ताप नाश होते है उसका चन्द्रमा सा चमकीला ललाट पट देखकर साधु हृदय मे सात्विक भाव उत्पन्न हो जाता है। आहा उसकी वाणी में क्या विलक्षण लावण्य है इसका वर्णन करना तो किसी कवि की कथन शक्ति से बाहर है। हे रानी इछनी सौतिया भाव की रीस छोडकर मेरी बात सच्ची मान कि सयोगिता सी सुन्दर दूसरी स्त्री है ही नहीं। चन्द्रमा मानों उसी के मुख लावण्य से चिढकर आकाश में चढ गया है। कामदेव मानों उसी के अगों की लुनाई पर वारिया होकर अनंग हो गया है। उसी का कंठ स्वर सुनकर मानो कोकिला काली हो गई और नेत्रों की चचलता लख हिरण बन मे जा बसे है इस लिये हे रानी अब तू आशा और शोक दोनों को त्याग कर शान्त हो जा। इसी में भला है।

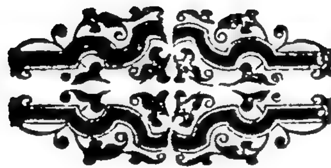
उस चतुर सुग्गे ने जो कुछ कहा सो आबाल वृद्ध सबने सुना। रानी इछनी की अवस्था पर सबको अफसोस हुआ जहा तहा लोग कहने लगे हाय परमेश्वर बुढ़ापा किसी को न दिखावे फिर विशेष कर स्त्री का बुढ़ापा तो और भी बुरा। यह चरचा उडती हुई राजा के कान तक भी जा पहुंची। उसने भी एक क्षण के लिये इच्छनी की अवस्था पर विचार किया, परन्तु सयोगिता के प्रेम पाश के कारण उसके उद्धार का उपाय न विचार सका।

इंछनी बोली गगाराम सच है होनी की औषधि एक मात्र सतोषही है पर क्या करू सौतिया डाह सही नहीं जाती। यह सुनकर सुआ बोला अच्छा सुन एक राजनैतिक चुटकुला बतलाता हूं सो कर। यानी मुझे महलों से निकाल दे। यह सुनकर रानी इंछनी ने सुग्गे को सोने के पिंजरे मे रखकर दो कचुकियों को सुपुर्द किया और उन्हे आज्ञा दी कि वे उसे हाथी पर रखकर सयोगिता के महलों के साम्हने से ले निकलें। अस्तु ऐसा ही किया गया परन्तु जब राजा पृथ्वीराज की उस पर नज़र पडी

तो उसने सुग्गो का पिंजरा अपने पास मंगा लिया, यह देख कर लज्जा ग्लानि और क्रोध के कारण सयोगिता की नजर चढ़ गई जिसे देखकर उसी समय सुआ बोला कि आज मैंने रानी इच्छनी की आंखों नहीं देखा न जाने उसका क्या हाल है। इसके बाद उसने रानी इच्छनी की सारी हार्दिक व्यथा कह सुनाई और अपनी बुद्धि के अनुसार राजा को साम दाम सब तरह समझाया। इस पर सयोगिता ने तो सुग्गो को झूठा बतलाकर बहुत बिराया पर राजा के मन में पतिव्रता इच्छनी का अनुराग उत्पन्न हो आया और वह उसी समय वहां से उठ कर अचेत अवस्था मे पर्य्यंक पर पड़ी हुई रानी इच्छनी के पास जा पहुचा। पृथ्वीराज के सिर पर हाथ रखते ही रानी इच्छनी पानी पडने पर मुरझाई हुई लता सी सचेत हो उठी। राजा ने उसे बहुत कुछ पोंछा पुचकारा और दिलासा दिया जिससे उस खिन्न मन माननी के जी में जी आया। राजा पृथ्वीराज रात्रि भर उसी के महलो मे रहा भोर के पहर जब राजा की कुछ आख झपी तो स्वप्न में देखता है कि मानों उससे कोई कह रहा है कि हे पृथ्वीराज सचेत हो सब दिन बराबर नही जाते—

दोहा।

मान करें मतिहीन नर, जोबन तन धन रूप।
कोन नहिं नद्दे गए, बिना ज्ञान रस कूप॥



आखेटक आप प्रस्ताव।

(तिरसठवां समय।)

सच है इस परिवर्तन शील और विषम संसार सागर में राव रंक कोई भी सदैव सुख की नींद नहीं सोता। एक जाती है तो एक आती है। सब के कलेजे पर एक न एक खटका लगाही रहता है।

जिस दिन से राजा पृथ्वीराज कन्नौज को पैज कर के आया उस दिन से उसका चित्त और भी बेचैन था। क्यों न हो। यदि पाला हुआ सुआ पिंजरे से उड़ जाता है तो सारा घर सूना सा लगता है फिर उसके तो वे काका पोते मामा भांजे और ससुर सार आदि सगे सम्बन्धी सूर सामन्त समाप्त हो चुके थे जिनके विना वह छिनभर नहीं रहता था। अपने सच्चे मददगारों और प्यारे लंगोटिया यारों का बिछोह उसकी छाती पर त्रिशूल सा सालता था और इसी से वह निपट उचाट चित्त होकर हर दम गहरी साँसें लिया करता था।

राजा पृथ्वीराज को इस प्रकार मन मलीन देखकर रानी इंछनी आदि सब रानियों ने हाथ जोड़कर बिनय पूर्बक उससे कहा कि महाराज! आप हमलोगों को शिकार का खेल दिखलाइए। हम देखना चाहती है कि सिंह मृग और सूअर आदि जगली जन्तु किस तरह से मारे जाते हैं। बाराह बागुर में किस तरह से फसता है, हिरण बाण से कैसे मारा जाता है, डोर से छोडकर कुत्ते किस तरह छुछकारे जाते है और फिर वे अपने शिकार पर किस तरह से घात करते है। चीते क्या कौतुक करते है और चिडिया चिडियों को क्यों मार लाती है। हम कुछ भी नही जानतीं। यह सुनकर पृथ्वीराज ने हँस कर कहा यदि तुम लोग वहा चलकर गोठ रचना स्वीकार करो तो चलूं। राजा की यह बात सब रानियो ने प्रसन्नता पूर्बक स्वीकार कर ली और रानी सयोगिता ने सब खर्च अपने जिम्मे लिया।

वह रात्रि व्यतीत हुई और प्रातः काल हुआ। सितारों सहित तारापति अस्तमित हुए और तरु लताओं ने अपनी अपनी शिथिल शाखाओं को उत्थान दिया। योगी जन जप यज्ञ करने लगे और देवालयों में झालरें झकारने लगीं। घर घर के किवार खुल गए और सब स्त्री पुरुष शैय्या से उठकर झटपट लज्जा से अपने अपने पट सम्हालने लगे। राजा पृथ्वीराज की भी निद्रा भग हुई, वेद मत्र उच्चारण करते हुए गुरुराम ने आकर आशीर्वाद दिया और दर्शनी गा खूटे मे खोल दी गई। दरवाजे पर नौबत निशान बजने लगे, चोर चुप हो गए, सहनाई के स्वरों मे दिशाएं गूंज उठी। गायन गण गान करने लगे, पण्डित पोथी पुराण पढने लगे और ज्योतिषी ग्रहों का जप दान करने लगे। उसी समय रानी सयोगिता शैय्या से उठी। उसने आखे मलते हुए ही झगरूशाह को बुलाए जाने की आज्ञा दी और तदनुसार जब वह दरवाजे पर आकर हाजिर हुआ तब सयोगिता ने अपनी गुनबेली, नवेली, मदनावती, मालती, कमला, विमला, मोहनियां, सोहनिया, लीलावती, लाजमती, लालिता, कलिआ, रत्नावली, रामगिरी, जमुनिया, वलुभा, कुंजबेली, जुही, सुहियर, मृनालिनी, गुलाला, मधुमालती, मुग्धा, चंपाकली, सेवनी और हरदासी आदि दासियों से कहा कि तुम झगरू शाह से समझा कर कह आओ कि उसे जितना द्रव्य आवश्यक हो हमारे खजाने से ले और इसी समय पानीपत के बगीचे में जाकर गोठ के लिये रसोई की सामग्री प्रस्तुत कर रक्खे। भला खट्टे मीठे से कोई चीज छूटने न पावे। खांड, बताशा, शक्कर, गोरस, पीपर, अचार, हरदी, धनिया, मिर्च, सोंठ, चन्दन, केसर, कस्तुरी, कपूर, लोंग, लाइची, आदि सब सामग्री यथा सभव शीघ्रही जुटा रक्खी जाय। सयोगिता का इतना आदेश होतेही एक के बाद दस दौड पड़ीं और शब्द प्रति शब्द सब बातें झगरूशाह को भी समझा आईं।

सयोगिता की आज्ञानुसार झगरूशाह उसी समय

सब साज समाज लेकर पानीपत जा पहुचा और बगीचे को अच्छी तरह साफ सुथरा करा कर उसने एक तरफ गोठ का सामान रचा और एक तरफ रनवास के रहाइस का स्थान बनाया, पर यहा भी सयोगिता का डेरा सबसे अलग बगीचे के आग्नेय कोण में था जहा वह आप पति के साथ आनन्द लूटती थी और उसकी सौतें विरह की ज्वाला में जला करती थी।

यह समाचार पाकर राजा पृथ्वीराज ने एक महीने पर्य्यन्त पानीपत में रहना निश्चय किया और सब रानियों को आज्ञा दी कि वे पहिले से वहा पहुच कर गोठ की सामग्री रचें। उस समय पृथा कुमारी भी वही थी। निदान रानी इछनी आदि सब रानिया और पृथा कुमारी ने पानीपत की तैयारी की। प्रस्थान के समय सैकड़ों पालकी पीनस डोला डोली सुखपाल रथ बहली सुखासन और मुकाम वाले हाथी सजकर दरवाजे पर हाजिर हुए। अस्तु अपनी अपनी इछानुसार सब रानिया अपनी अपनी सवारी पर सवार हुई और उनके आस पास रग बिरंगे वस्त्र पहिने लौंड़ी बादिया चलने लगी। वे बादिया इत्रदान, पानदान, पीकदान, और सफरी जमदान लिए हुए लचक लचक कर चलती हुई ऐसी भली मालूम देती थीं जैसे झूम झूम कर सावन भादों के रग बिरगे बद्दर दौड रहे हो। उनके पीछे पीछे लाठी लिए हुए पुरुष के अग से हीन खोजों के झुण्ड चलते थे, उनके भी पीछे या सबको घेरे हुए वीर विश्वासपात्र वृद्ध राजपूत योद्धाओं की फौज चलती थी। ऊपरी इन्तजाम के लिये साथ में चौदह कायस्थ थे और इस सब समाज का मुख्य अफसर गुरुराम प्रोहित था।

रनिवास की सवारी पानीपत जा पहुची। और भगरुशाह की रुच कर सवारी हुई जगहों में सब रानियो के यथा स्थान डेरे पड़ गए। जब तक दास दासी बादिया डेरों का इन्तजाम करने लगी तब तक सब रानियों ने कहा चलो जब तक इस प्राण प्यारे के प्यारे बगीचे की भी सैर कर आवें। अस्तु वे सब रानिया एक झुण्ड होकर बगीचे में चारो ओर चहल कदमी करने लगीं तो देखती क्या है कि उस बगीचे की समतल क्यारी और रौसो पर की बारी बड़ी ही रुचि कर बनाई गई है। भाति भाति के वृक्ष और बेल फल फूलों से लद रहे है और उन पर बैठे हुए नाना भाति क पंछी कल्लोल कर कर बोल रहे हैं। एक तरफ आम निबू नारगी जिमुरिया और जामुन की कतारे लगी है। एक तरफ चपा और चीनियां की भरमार है। एक तरफ नारियर सुपारि बदाम और पिंड खजूर खडे है जिनकी डालों पर बैठे सुआ सारो चिकाचिक करके चोंच चुभा रहे है। एक तरफ अनार ही अनार लगे हैं जिनके दानों पर पिडकी चोटें कर कर भागती है। किसी किसी हरे पेड़ पर लालो के झुण्ड के झुण्ड फुदक रहे है। बीच बीच में क्यारियों में जूही मालती चमेली कुन्द गुलाब आदि फूल फूल रहे है और उन पर बैठकर गुंजार करते हुए झुण्ड के झुण्ड मलिन्द वृन्द झूल रहे है। एक तरफ केलों का बन है और एक तरफ दाखें लगी है तथा मूगफली आदि के छोटे छोटे पेड़ फूलों से लदे खडे है। इन सब की बरदास और सिचाई के वास्ते जहा तहा चरसे चल रहे है रहँट ढल रहे है और जहा कहीं उचाई के सबब से पानी नहीं चढ सकता वहा ढेकुरी से काम लिया जाता है। बाग की ऐसी बहार देखकर सब रानियों का चित्त प्रसन्न होगया।

रनिवास के पानीपत में पहुच जाने का समाचार पाकर राजा पृथ्वीराज ने अपनी तयारी की। जिस समय पवन के वेग को परास्त करने वाले तेज तुरी पर सवार होकर राजा पृथ्वीराज पानीपत को चला तो राजमत्री जैतराव आदि सब राजपूत सरदार भी अपने घोड़ों पर सवार हो कर उसके साथ हो लिए। पीछे से भागते हुए हिरन को लपक कर लेने वाले बाराह और सिंह को पकड़ कर पछाड़ देने वाले काले कान और लाल मुँह वाले कुत्ते [illegible]

डोरी पकड़े हुए डोरियें, आखों पर पट्टे चढे रथ पालकी और वहलियों पर बैठे हुए चीतो को लिए हुए चीतेवान, जुर्रा कुही बाजे पिटका सिचान और हुरमो आदि शिकारी चिड़ियों और फदैत हिरणों को लिए हुए वहेलिए आदि शिकारी परिकर के लोग भी चलें। रोज दस दस कोस जमीन मे शिकार खेलते हुए राजा पृथ्वीराज कुछ दिनों में पानीपत के जगल मे जा पहुचे। उक्त बगीचा अर्थात् सदर पड़ाव जब थोड़ी दूर रह गया तो राजा ने मैदान से मिलता हुआ एक मुडा पहाड़ देख कर उसी जगह खेल होने की आज्ञा दी। सब सरदारों सहित पृथ्वीराज पहाड पर चढ गया और वहा उनकी लैगाई लगाई। पहाड के एक तरफ वागरें लगीं और तीरदाज बैठे और एक दूसरी तरफ कुत्ते छोड़ दिए गए। इधर से हैकों यानी बनरखों ने जंगल हाका। फिर क्या था चारों ओर मार मार होने लगी। एक पहर भर में सैकडों सुअर सावर हिरनों को पाट कर पहाड लगा दिए गए। ससा शृगाल और सेइ स्यार की तो गिनती कौन करे। निदान दिन भर तो वहीं पडाव रहा। रात्रि के चौथे पहर कूच करके राजा उक्त बगीचे में जा पहुचा और अपने प्राणपति की अवाई सुन कर सब रानिया अत्यन्त प्रसन्न हुईं।

पृथ्वीराज के डेरो पर पहुचते ही भीतर से आ कर दासी ने समाचार दिया कि भोजन तैयार है। यह सुनतेही राजा ने वस्त्र उतारे और नव यौवना मर्दानियों ने आकर सुगधित तेल लगा कर राजा का मर्दन किया। मर्दन हो चुकने पर उसने उष्ण जमुना जल से स्नान किए और केसर रलित चन्दन का लेप करके उसने श्राद्ध और तर्पण किया और फिर नित्त नियमानुसार ब्राह्मणों की सेवा करने के लिये आसन पर आ बैठा। उधर से पाच वेदपाठी ब्राह्मणों ने आकर राजा को तुलसी दल दिया और उसने उसे सिर पर धारण करके तलवार की धार से अपनी मौत मागी। राजा ने उन ब्राह्मणों का चरणोदक लिया और उन्हें उचित आसन देकर आप पुनः अपने स्थान पर बैठ गया। खुरों में चादी और सींगों में सोना मढा हुआ ऐसी सर्वाङ्ग सुन्दर सौ गौएं लाई गईं उन्हे राजा ने ब्राह्मणों को दान दिया और फिर सिर पैर से उत्तमोत्तम वस्त्र आभूषणों से शृगारित ६ कुमारी कन्याएं लाई गई जिन्हे उसने नौग्रहों का दान दिया और फिर एक हजार वेद-पाठी और दिव्य ब्राह्मणों को इच्छा भोजन कराया। इस प्रकार से अपना नित्त नियम परा करके माथे पर जूडा बाधे ललाट पर त्रिपुड लगाए, मुख से नन्दलाल का नाम लेते और हाथ मे माला फेरते हुए ब्राह्मणों की मडली में मिला हुआ देवता स्वरूप राजा पृथ्वीराज अटाले में गया। अटाले में भोजनों के लिये निर्मित समतल स्थान गौओं के गोबर से लीप कर स्वच्छ किया गया था और राख की चाकें खीच कर चौके काटे गए थे, प्रत्येक चौके में अगारों से भरी हुई सिगरी रक्खी हुई थी। बीचों बीच राजा पृथ्वीराज के लिये एक मुलायम आसन बिछा हुआ था और साम्हने पैलौठ[१] लगी हुई थी। राजा अपने आसन पर बैठा इधर उधर सब सामत लोग भी पाती पाती से बैठाए गए और राजा के साम्हने कविचद बैठा।

राजा पृथ्वीराज के आसन पर आसीन होतेही पण्डित मण्डली ने एक स्वर से ओंकार शब्द का उच्चारण किया और फिर वे दशशीश और बीस भुजावाले रावण को मारने हारे रामचन्द्र जी का गुणानुवाद गान करने लगे। पहिले साफ पानी से पखारे हुए नूतन पत्तों के पत्तल और दोनें रक्खे गए और फिर पवित्र और उज्वल ब्राह्मणों ने जिस की परम आरम्भ की। सबसे पहिले लड्डुओं की भावें निकाली गई। इसके बाद पूरी सुख पूरी (मोन दी हुई) और गुठेनदार बेला कटी हुई लुचइया परसी गई। तदनन्तर पिठी की कचौरी.खस्ता, तेवा,

[१] जंगल में शिकार खेलने के लिये जानवर की अवाई के रुख पर बैठ जाने को लगाई कहते है।

[१] वह पीढा जिस पर भोजनो का थाल रक्खा जाय।

घेवर,जलेबा, जलेबी, मिठी और नमकीन मट्ठी,फेनी, सक्करपारे, बुंदिया, सेव, सिंगार पाग, कसार भरे और पगे हुए गूझा, खुरमा, गिंदोरा, सिरके और शीरे में पगे हुए आम, पिंडखजूर बिही, अखरोट, दासपानी, रकम रकम के रंग बिरंगी पिराके, तिनके ऊपर पापर आदि रकाने और चना चिरोंजी कसेरू कमलगटा आदि नाना प्रकार के चरपन परोसे गए। इसके बाद कच्ची रसोई निकली जिसमें सबसे पहिले खीर परोसी गई इसके अनन्तर निंबू नरगी करोदा कैथा और इमली की चटनी, पकौडी डाली कढ़ी, मूंग की बडी, शोरवेदार मैदे और बेसन की तरकारी, खट्टे मीठे बडे, मैदे और पीठी के भोग से बनी हुई खटमिठी बिठई, और तिसके बाद तंदूरी रोटीया और मैदे के माडे परोसे गए। सालन यानी साक की बारी आई जिस में मारु और बैंगन दोनों तरह के भटा, सेम, सेमा, चचेंडा, करेला, मुरेला, भिंडी, किमाच, कचनार की कली और लौकी आदि की दो दो तीन तीन रकम की तरकारी और लोंग मिरच सोंठ हरदी हींग आदि मसाले डाले हुए रायते तैयार किए गए थे। कई एक रकम के दही और मठे के रायते थे और कई केवल नींबू के रस में रसे हुए थे। इतनी परस हो चुकने पर जैलक्ष्मीनारायण बोला गया और सब सामन्तों सहित राजा पृथ्वीराज भोजन करने लगा। तब पंडों ने सरसों अरुई राजगिर बथुआ चौराई और पालक के साग परसे जिनमें वाय विरंग और चूक की पुट देकर एक अजीबही स्वाद लाया गया था। वहां नाल की खली देवदारु गुगयना और नींब की कोयों का साग भी प्रस्तुत था। साग हो चुकने पर ममुरी मूग उरद रहर चना आदि की दालें और लाल पीला रंग बिरंगी भिन्न भिन्न स्वाद का भात और सबके पीछे गोश्त परोसा गया जिसमें सुअर साबर हिरन मछली आदि सब प्रकार का मास था।

(१) आज कल चचेंडा अपवित्र समझा जाता है और इसको लोग नहीं खाते।

जब सब लोग भोजन करके अफर गए और पेट पर हाथ फेरते हुए डकारे लेने लगे तब पछा-वर की परस आरम्भ हुई। पहिले तो पहिले कही हुई जिसोंही का एक फेरा किया गया और जिसके यहां जो कमी पाई गई सो परसा गया इसके बाद लोग मिरच सोंठ और जीरा पड़ा हुआ मठा, दाख मिश्री केसर और कपूर की पुट देकर औटा हुआ अधावट, गौ का दूध और जामुन और नींबू को सिरके में भीगे हुए मखाने मेवे आदि की परस हुई। जब सब लोग तृप्त होकर अपनी अपनी पत्तलों पर हाथ की छाया करने लगे तब परस बंद हुई। इसी समय संयोगिता का कामदार जो कि सब सरदारों को पखा झलता हुआ हाथ बांधे खड़ा था बोला कि जो कुछ भूल चूक हुई हो सो क्षमा कीजिए यह सुन कर राना और सब सामन्तों ने कहा नहीं, खूब बना। इसके बाद सब लोग आसनों पर से उठे और गरम जल से हाथ पखार कर बीड़ा चबाते हुए अपने अपने डेरों पर गए। इसी भांति एक महीने तक यही हाल रहा। रोज किसी न किसी एक रानी की तरफ से न्योता होता था।

जब दिल्ली को कूच करने का केवल एक दिन बाकी रह गया तो राजा पृथ्वीराज ने पुन. शिकार खेलने की इच्छा से सवारी की। उस समय गुरुराम ने उसे रोका और कहा कि महाराज खूब खेल हुआ खूब रस रहा अब दिल्ली को चलिए इस व्यसन की विशेषता अच्छी नहीं देखिए इसी अहेर के फेर में राजा दशरथ को शाप सिर पर लेना पड़ा और इसी के कारण पाडवों को आपत्ति झेलनी पड़ी। राजा ने इस पर कुछ उत्तर न दिया और वह उठ कर घोडे पर सवार होगया। उसके साथी सामन्त और सिपाही लोग भी अपने अपने घोडों पर सवार होकर उसके पीछे हो लिए उनके पीछे [illegible] की डोरी पकडे हुए [illegible] [illegible] बान फदैत हिरन और शिकारी [illegible] हुए बहेलिये भी चलने लगे। [illegible]

दूर चलकर सब लोग एक सघन बन परिपूर्ण पहाडी जगल मे जा पहुचे। वह बन बडाही गुजान और रमणीक था उसमे कहीं कही पर सागौन साकू सीसम, स्यामर आदि के ऊचे दरख्त खडे आकाश से बाते कर रहे थे, कही करोंदा मकोर धवा सेजा, करधई के कुंज के कुज गस रहे थे और कही हरी हरी बेली परस्पर गस कर इस तरह के उकास निकासदार बगले बना रही थीं कि ठीक दुपहरी में भी वहा धूप की रौ न आवे। जहा तहा कूप बावरी तलाब और निर्मल जल परिपूर्ण झरने भी थे इस प्रकार से लता पता फल फूल और घास पात की संपति से परिपूर्ण उस गहन बन मे अगनित जीव जन्तु निवास करते थे। कही हिरण चौकडी फादते फिरते थे, कही खरगोश फुदकते फिरते थे, कहीं स्यार लोमड़ी और बनबिलाव दौडते फिरते थे, कहीं सुअर लडते थे, कही सीतल छाया तक कर रीछ पडे सो रहे थे और कहीं पुछंदर बन्दर शाखाओं के अन्दर बैठे हुए फल फूल खाते और कुछ कतर कतर कर गिराते थे।

राजा पृथ्वीराज इसी बन के बीच शिकार खेलने लगा। एक तरफ सामत लोग हिरण और वराहों के पीछे घोडे डालकर उन पर बाण चलाने लगे एक तरफ बहेलियो ने बागुरे और जाल विथराए जिनमें विधकर असख्य जन्तुओं की प्राण हानि हुई। सैकडों साबर सुअर चीते हिरण मार कर ढेर लगा दिए गए छोटे मोटे जानवर और चिडियों की गिनती कौन करे। उसी समय एक बनरखे ने एक बाराह की खबर दी जिसे सुनतेही जैतराव सहित राजा उस ओर चल दिया तो देखता क्या है कि एक अत्यन्त भयानक और भीम काय बाराह बद्दल के समान गर्जना करता हुआ हरी हरी घास पर अखाड़े कर रहा है। वह मगल ग्रह के समान तेजोमय नेत्रों और दुतिया के चन्द्रमा से दातों वाला बाराह जब कूक मार कर जमीन पर चोंद मारता है तो मानो मिट्टी उछलती है और बड़े बड़े वृक्ष जड़ से उखड़ कर गिर पड़ते है। इस तरह के कंद मूल खाता हुआ वह स्थूल काय जन्तु नदी के कूल पर क्रीडा कर रहा था। शिकारियों की आहट पाते ही उसने कान खडे किए और बेवर फुलाकर धावा किया तब जैत प्रमार ने बढकर अठारह भार भर तलवार का भरजोर वार किया पर ढका न हुआ, इतने में लोगों ने उसे चारों तरफ से घेर लिया और सैकडो भालों से उसे बेदम कर दिया। वहीं आस पास कहीं एक सिंह की चुल थी उसमें सिंह सिंहनी दोनो पडे हुए बेसुध सो रहे थे अस्तु जब उन्होंने यह कोलाहल सुना तो वे दोनो पूछ पटक कर होठों पर जीभ फेरते हुए उठ बैठे और बमक कर मैदान में आगए। उन्हें देखकर जैतराव सिंह के साम्हने जा जुटा और उसे पकड कर उसने पछाड दिया। यह देखकर सिंहनी और भी बेताब होगई और वह राजा पर झपटी परन्तु बलिभद्रराय ने एक ऐसा हाथ मारा कि अधबीच में ही वह दो होगई। उसका पिछला धड तो गिर पडा परन्तु अगले धड़ ने फिर भी राजा का हाथ जा पकडा। उसे राजा ने कटार से काटकर डाल दिया।

इसके पश्चात् सब लोग आराम लेने की इच्छा से जहा तहा छाया में बैठ गए। तमाम दिन शिकार के परिश्रम से थके हुए सब लोगो को वह शीतल छाया ऐसी सुखद मालूम हुई कि वे लोग कुछ देर के लिये अपना पराया सब भूल गए। लगी हुई बात व्यापती भी ऐसे ही अवसर पर है। किंचित शान्त रहने पश्चात राजा पृथ्वीराज आपही आप कुछ मुस्कराया और आखो में आसू भरकर कविचन्द से बोला कि हे कवि इस कठिन कलिकाल में करतारही लज्जा रखनेवाला है हाय काका कन्ह से सूरमा मारे गए। यह सुनकर कविचन्द ने कहा हे राजन् ‘ बीती बात बिसार दे आगे की सुधि लेय ’ गई बीती बात पर सोच करके क्यों नाहक शरीर का खून सुखाते हो। यह कहकर उसने राजा को इधर उधर की बातों में लगाकर भुला लिया और कहा कि चलिए डेरों पर चले। खूब शिकार हुआ।

हरे कृष्ण ! यह पापी पेट बुरी बला है । इस पेटपालना के आशा पाश मे बँधा हुआ मनुष्य जाने क्या क्या कर्म कर गुजरता है, स्वामी और सेवक की मर्य्यादा रखने वाला यही पेट है । पृथ्वीराज के सेवकों में नारायणदास सोलकी का पुत्र सतोषदास नाम का एक मनुष्य था । राजा पृथ्वीराज घोडे पर सवार होकर डेरा को चलनाही चाहता था कि नगे पैर हाफते हाफते सतोषदास ने आकर कहा कि अमुक स्थान में एक बडा भारी सिह है । यह सुनतेही राजा धनुष बाण लेकर उसी तरफ पा प्यादे चल दिया और भी जो जहा थे सो सब उठ उठ कर उसके पीछे हो लिए ।

धन्य विधाता आपकी लीला अपरपार है । समुद्र का जो पुत्र है और अमृत का उत्पादक है धन्वन्तरि का भाई है और ससार भर की वनस्पति मित्र की पोषण करता है, लक्ष्मी जिसकी बहिन है और विष्णु भगवान का जो साला है आशुतोष शिव जिसे माथे पर रखते है और अगनित तारागण जिनके कुटुम्बी है उस चन्द्रमा को पूर्व पापों के कारण आपने एसा सृजा कि पूर्णिमा के सिवाय और कभी भी पूर्ण कला मे उदय नहीं होसकता । उसके उदय और अस्त का स्थान भी नियत नहीं है और उसका सारा शरीर कलक कालिमा से कलुषित है । धन्य विधाता तूने मुरलीधर को गिरधर बनाया, देवताओं को निःसन्तान किया, बलि को पाताल मे पठाया, अग्नि को अभक्षभक्षी बनाया ब्रह्मा को पूजन मे रहित किया, शिव के गले मे कपाल माला डाली, इन्द्र का शरीर भगमय कर दिया, शुक्र को काना किया, सती सीता को दुःख दिया और राजा नहुष को नर्क में डाला । तूने नल दमयन्ती में बिछोह डाला, सत्यवादी हरिश्चन्द्र से नीच की टहल करवाई, नारद को पुरुष से स्त्री किया, रामचन्द्र को वनवास दिया, सत्यशील पाडवों को विपत्ति मे डाला, राहु को चन्द्रमा से चाक कराया, कामदेव को अनग किया, गनेस को हाथी का मुँह लगाया और राजा दक्ष को बकरे का सिर लगाया । तूने समुद्र को खारा किया, शृंगी ऋषि के सिर पर सींग उगाए, बाकुरे बीर हनुमान को लंगडा किया और रावन के माथे पर गधे का सिर लगाया और की क्या कहे तूने अन्त में पारथ को पुरुषार्थ हीन कर दिया और तेरी करतूत के कारण भगवान कृष्णचन्द्र की भील के हाथों मौत हुई । हाय ! राजा विक्रम को तूने कौवे का मास खिलाया, क्या कोई भी काले सिरवाला तेरी प्रेरणा से बेदाग होकर बचा ।

राजा पृथ्वीराज ने अमुक स्थान पर पहुँचतेही गुफा के द्वार पर धुवा कराए जाने की आज्ञादी । राजा की आज्ञा पातेही लोगों ने घास पात और लकडियों का ढेर लगाकर उसमें आग डाल दी । उससे जितना धुवा हुआ सब गुफा मे गूजने लगा । उस गुफा में सिह नहीं था सिह की छाल ओढ़े हुए एक तपस्वी तप कर रहा था, धुवें की तीव्रता मे तपस्वी को बडा कष्ट हुआ, उसकी आखों से तरातर पानी के पनारे चलने लगे । उसने अपने को बहुत सम्हाला परन्तु अत्यन्त कष्ट के कारण जब उसकी अन्तरात्मा व्याकुल हो उठी और सारा शरीर क्रोध के मारे थर थर कापने लगा तब वह बाघम्बर को त्याग कर गुफा से बाहर निकल पडा और आपही आप कहने लगा हा ससार के मनुष्य बडे ही पापी है बडे ही स्वार्थी है अपना स्वार्थ साधन करने के लिये ये किसी का दुःख सुख नहीं देखते हम लोग सबकी शत्रुता मित्रता से बिलग होकर जगल मे वास करते है घास पात खाकर कालक्षेप करते हैं और भगवत का भजन करते है पर ये पापी हमें भी चैन नहीं लेने देते । अच्छा आज मनुष्य मात्र को भस्म कर देता हू । यह कह कर ज्योंही उसने जल और कुशा हाथ में लिए कि एक दिव्य मूर्ति ने आकर उसका हाथ पकडलिया और कहा हे ऋषिवर यह क्या करते हो जिसने तुम्हारा अपराध किया हो उसे शाप दो, मनुष्य मात्र ने तुम्हारा क्या किया है । यह सुन कर तपस्वी बोला हा जिसके राज्य मे सिह और गौ एक घाट पानी पीते है उसके ...

जी मेरी कंदरा में धुआं किया जाय। यह कह कर उसने कहा कि जिसके कंदरा में धुआं करने से मेरे नेत्रों में असह्य पीड़ा हुई कुछ दिन बाद उसका शत्रु उसके दोनों नेत्र निकालेगा। तब जितनी पीड़ा मुझे हुई है उससे कहीं हजार गुनी पीड़ा उसे होगी।

उस तपस्वी के मुख से ऐसा शाप सुनकर राजा पृथ्वीराज पीला पड़ गया। और उसके साथ सब सामन्त और सिपाही लोग मारे भय के थर थर कांपने लगे। सब का हृदय धक धक धड़कने लगा और सबके सब अवाक होकर चित्र लिखे से रह गए परन्तु कविचन्द दौड़कर तपस्वी के पैरों पर गिर पड़ा और बोला हे ऋषिवर आपको सब सामर्थ है आपलोगों के ही तपोबल से पृथ्वी स्थिर है। हे नाथ क्षमा कीजिये हमलोगों ने भ्रमवश ऐसा किया है प्रभु इस सोमेश्वर के पुत्र राजा पृथ्वीराज ने सिंह के लिये धुआं करवाया था। देखिए महाराज इसी तरह प्रियव्रत के पुत्र ध्रुव के वंश में उत्पन्न राजा यशव्रत एक बार शिकार खेलने गया और जंगल में जाल फैलाकर बैठा था कि उधर से मृगछाला ओढ़े हुए एक ऋषि आ निकले, राजा ने उन्हें मृग के धोखे बाण मार दिया, ऋषिवर शर से मरगए पर उन्होंने राजा को शाप न दिया। एक बार शिवजी ने जब कुपित होकर एक ब्राह्मण पर चक्र चलाया उससे उसका माथा कट कर शिवजी की जांघ में आन चिपटा, हजार हजार यत्न करने पर भी वह खोपड़ी वहां से न छूटी। अनेक तीर्थों का पर्य्यटन करते हुए अंत में जब दक्षिण में एक सरोवर में उन्होंने स्नान किया तो वह पाप रूपी खोपड़ी छूट गई। इसी से उस स्थान का नाम कपालमोचन हुआ, हे ऋषिवर आप लोगों की महिमा अपार है आपके लिये राजा दधीच ने देह दान कर दी और भगवान भी आपके चरण चिन्ह को हृदय में धारण करते हैं। हे स्वामी हम लोग संसारी जीव तो महा स्वार्थी हैं अपने इस साधन के लिये जो कुकृत्य कर डाले सो सब थोड़े हैं। राजा पृथ्वीराज आपकी शरण में सिर नवाए खड़ा है और जिस में इस शाप से मोक्ष हो सो उपाय बतलाइए। यह सुनकर तपस्वी ने पूछा 'और तू कौन है, तब कविचन्द ने भी अपना नाम ग्राम कह सुनाया।

पृथ्वीराज को पहिचान कर तपस्वी अपने मन में बहुत पछताया। उसने राजा को सप्रेम अपने पास बुलाकर उसके सिर पर हाथ रक्खा और कहा 'तपस्वियों का कहा हुआ वचन अब मिथ्या होता नहीं है पर यह वरदान देता हूं कि तेरा शत्रु शहाबुद्दीन भी तेरेही हाथों से मरेगा। राजा तू कविचन्द और शहाबुद्दीन तीनों एकही समय में प्राण त्यागोगे। यह सुनकर चहुआन का चोला चंगा होगया। वह सोचने लगा क्या हुआ इस दुनिया में किसकी देह सदा बनी रहती है। सुर नर नाग असुर किन्नर यक्ष गन्धर्व गुह्य सिद्ध चारण और बड़े बड़े ऋषि मुनि सब एक न एक दिन इस मल मूत्र भरी देह को दूर कर देते हैं। पर यशस्वी पुरुषों का नाम अनन्त काल लौं शेष रहता है। यह सोचकर राजा तपस्वी के पैरों पर गिर पड़ा और उसने अत्यन्त सकुचित होते हुए राजा की पीठ पर हाथ रक्खा।

तब कविचन्द ने उस तपस्वी से कुछ धर्म-नीति सम्बन्धी प्रश्न किए जिनका उसने भी प्रसन्नता पूर्वक उत्तर दिया। यह प्रश्नोत्तर इस प्रकार है—

कविचन्द—कुटुम्ब के लोगों में सब से अधिक स्नेह भाजन और हितेच्छु कौन है।

तपस्वी—स्त्री जो यावज्जीवन दुःख सुख की साथी रहती है पुत्र रत्न प्रसव करती है और अंत में मृत शरीर के साथ सती होती है?

कवि—जीवधारियों में कौन श्रेष्ठ है?

तप—मनुष्य।

कवि—मनुष्यों में कौन श्रेष्ठ है।

तप—तपस्वी।

कवि—मनुष्य शरीर में सार क्या है?

तप—बुद्धि और विद्या।

कवि—ब्राह्मण का धर्म्म क्या है?

तप—वेद पढना तथा पढाना।
कवि—क्षत्री का धर्म्म क्या है ?
तप—अपने बाहु बल से शत्रु को जीत कर स्वतंत्र शासन करना।
कवि—वैश्य का धर्म्म क्या है ?
तप—दया।
कवि—शूद्र का धर्म क्या है ?
तप—तीनों वर्णो की सेवा करना।
कवि—वस्त्र पहिने हुए भी कौन नगा है ?
तप—यशहीन।
कवि—विना वस्त्र के कौन ढका हुआ है ?
तप—यशस्वी।
कवि—कौन सदैव मन मुग्ध रहता है ?
तप—लपट।
कवि—विना शस्त्र के कौन विजय पाता है ?
तप—स्त्री।
कवि—राज्य की वृद्धि कैसे होती है ?
तप—ऋषि और ब्राह्मणों की पूजा करने से।
कवि—राज्य नष्ट क्यों कर होता है ?
तप—ऋषियों का अपमान करने से।
कवि—राजा को यदि द्रव्य की आवश्यकता हो तो क्या करे ?
तप—एक ब्राह्मण को छोडकर दूसरों के धन से अपना भडार भरे।
कवि—विकट और कटक मय मार्ग कौन है ?
तप—हरि विमुख।
कवि—सुख किस मे है ?
तप—हरि भजन मे।
कवि—उज्वल वस्त्र पहिने हुए भी कौन मलीन है ?
तप—जिसका मन मैला है।
कवि—मुक्ति का अधिकारी कौन है ?
तप—जो संसारी हो कर भी [illegible] रहित है [illegible] उसे [illegible] नहीं [illegible]।
कवि—इस संसार में निर्भय कौन है ?
तप—[illegible]

और इसके विरुद्ध स्मरण करनेवाला महा नीच पद पाता है।
कवि—मरने पर भी कौन जीवित रहता है ?
तप—यशस्वी पुरुष और अपयश भाजन लोग जीवित भी मरे के समान है।
कवि—सोता हुआ भी कौन जागता रहता है ?
तप—दाता, और सूम जागता हुआ भी सोये के समान है।
कवि—विरागी कौन है ?
तप—निर्लोभी, जो लोभ ग्रस्त है वह वन में निवास करता हुआ भी राग लिप्त है।
कवि—आखो के आगे से कौन द्रव्य हरण करता है ?
तप—पटुभाषी।
कवि—धनी जन किसका आदर नहीं करते ?
तप—कटुभाषी एव सत्यवादी का।
कवि—वे लोग कौन है जिनका प्रत्येक अवसर पर आदर करना चाहिए ?
तप—स्वपक्ष, वैद्य, मरमी, शस्त्रधारी, वदीजन, धनवान और आश्रित।

इतनी बाते हो चुकने पर तपस्वी तो एक ओर जगल को चल दिया और राजा पृथ्वीराज घोडे पर सवार होकर सब सेना सहित डेरों को चला। आज पृथ्वीराज के साथियों में वह चुहल पहल न थी तथा न भेरी और सहनाई के स्वर सुन पडते थे, और न सिपाहियों में परस्पर बोला चाली हो रही थी। जो जहा थे सब नीचा मुह किए हुए डेरों पर जा पहुचे। जब रनिवास में यह समाचार पहुचा तो सर्वत्र हाहाकार मच गया। सब रानियो ने तथा राजा ने बहुत सा धन रत्न ब्राह्मणों को दान किया और दूसरे दिन वहा से डेरा कूच करके राजा पृथ्वीराज दिल्ली में आ पहुचा।

शिकार से लौट कर जब से राजा पृथ्वीराज [illegible] महल में गया तब से फिर उसने बाहर निकल कर किसी के [illegible] तक नहीं दिखाई।

धीर पुंडीर प्रस्ताव ।

[चौंसठवां समय]

कन्नौज से आकर जिस दिन से राजा पृथ्वीराज संयोगिता की चित्रसारी में गया फिर तीन महीने तक उसने किसी को सूरत तक न दिखाई। पर वहा भी जब कभी सन्ध्या सवेरे वह संयोगिता से विलग हो कर एकान्त होता तो उसे अपने सच्चे स्वामि भक्त सामंतों और बाल सखा कैमास की सुधि बेचैन कर देती थी।

एक दिन वह अपने नवीन सामंतों की मंडली में आ बैठा और अवसर पाकर आपही आप हाय स्वास ले कर कहने लगा, आह ! जब से मैंने सुरत सम्हारी तब से बराबर लडाइया ही लडता रहा पर अपने सामंतों के बल न तो कभी परास्त हुआ न पीठ दिखा भागा केवल कन्नौज में यह कलक लगा अब मै अपने इन नव वयस्क योद्धाओं की परीक्षा करके शहाबुद्दीन को सदा के लिये शान्त किया चाहता हूं। यह सुनकर बलिभद्रराय बोला कि महाराज "जब जैसी गाति तब तैसी माति" इसके लिये कोई क्या करे परन्तु निश्चय रखिए कि अब भी आपके सौ के सौ पूरे है और इन में से कोई भी कम नहीं है किन्तु नहीं। यदि आप इनके बल की परीक्षा ही करना चाहते है तो जैतखभ रोपकर देख लीजिए। यह बात पृथ्वीराज ने मान ली और बाल वृद्ध सब सामन्तों के बल की परीक्षा करने के लिये निगमबोध स्थान पर जैतखभ रोपेजाने की आज्ञा देकर वह आप पुनः महलों मे चलागया।

पावस की बहार थी, सूर्य्य भगवान के दर्शन दुर्लभ थे, पृथ्वी और मेघ एक हो रहे थे, रात दिन पछैंया पवन चलती थी और झरझर बरषा की झडी लग रहती थी, तलातल जल से भरे हुए नदी नाले और ताल तलैया उबल रहे थे और नगर बन बाग उपबन आदि सब जगह हरयाली की बहार छाई हुई थी। इसी तरह से सावन गया भादों आया, भादों गया कुँवार लगा और कुवार के कृष्ण पक्ष का अवसान होते ही ज्यों ही नवदुर्गा लगी कि हठात प्रकृति का काया पलट होगया। जहा तहा जोरावर जवान मैदान के चौहट्टो पर जमा होन लगे, घर घर माता भगवती का अर्चन पूजन हवन और पाठ होने लगा, सूर वीर सामन्तों के घर भी दिन रात ज्योति जलती, झालरें झनकारतीं और रोज भैंसों का बलिदान दिया जाता था। यह सवत् ११५२ की बात है। परिवा मे लेकर अष्टमी तक आठ दिन में वह आठ मुट्ठी दल वाला आठ हाथ ऊचा और आठों धातुओं का मिलाकर बनाया हुआ जैत खभ भी तैयार हो गया। सारे नगर में भी इस बात का समाचार फैल गया कि राजा पृथ्वीराज ने यह खभ सामंतों के बल की परीक्षा करने के लिये बनवाया है। अष्टमी के दिन हथियारों की पूजा करके राजा पृथ्वीराज ने सब सामन्तों से कहा कि मैंने जो अष्ट धाती खम्भ बनवाया है उससे मेरा यह अभिप्राय है कि जिस किसी सामन्त की सिगी सेल साग या सेली उसे पार कर जायगा वह सब में शिरोमणि समझा जायगा और यह कौतुक विजय दशमी के दिन होगा,-यह कहकर राजा पृथ्वीराज महलों मे चला गया और सब सामन्त लोग अपने अपने घर को आए और उक्त परीक्षा में उतीर्ण होने के अभीष्ट से अपने अपने इष्ट देवों की आराधना में दत्तचित्त हुए।

चन्दसेन पुडीर के कन्नौज में मारे जाने पर उसका पुत्र धीरसेन पुडीर भी नवीन सौ सामन्तो में से एक था। उस समय उसकी अवस्था केवल १७ वर्ष की थी। वह देवी जालपा का उपासक था अस्तु वह भी उक्त परीक्षा में उतीर्ण होने के लिये अपनी इष्टदेवी की आराधना करने लगा उसने अपने घर के एक कोठे के नीचे गौ के गोबर से लिपा कर उसमें पूजन की सामग्री लगाई। उसने घर के बीचोंबीच एक स्वर्ण खचित त्रिकोण वेदी रची। स्वेत पाटम्बर का आसन बिछाकर और पत्र पुष्प चढ़ा कर देवी का आह्वान किया

उसके सम्मुख ज्योति जगाई छत्तीस सेर की लोहे की साग रोपी और अपने बाधने का खड्ग नग्न करके रक्खा। इसके सिवाय ध्वजा नारियर पान सुपारी खीर अठवाई फूल इत्र लौंग रक्त चन्दन और अन्य सब सुगन्धित और खाद्य पदार्थ जुहा कर आप मौनव्रत धारण कर जालन्धरी यानी जालपा देवी का हवन और जप करने बैठा। निदान एक दिन एक रात बिना अन्न जल के बैठे बैठे वह दस हजार आहुती कर चुका और दूसरी रात्रि का मध्य समय आया तब देवी जालपा पुण्डरी पर प्रसन्न हुई और अद्रिष्टवाणी हुई कि "माग माग"। इस प्रकार माता जालन्धरी को प्रसन्न जानकर धीर ने कहा हे अन्तर्यामिनी मैं यही चाहता हू कि मेरी साग जैतखभ को भेद जावे। तब पुनः शब्द हुआ ऐसाही होगा तू जैतखभ को बेधेगा और राजा तुझे बहुत से गाव हाथी घोडे और खिलत देगा। इसके सिवाय और भी जब तुझ पर सकट पडे तब मेरा स्मरण करना मै तेरी रक्षा करुगी। यह सुनकर धीर ने कहा कि हे माता अब जब जैत खभ को बेध कर तेरे दर्शन कर लूगा तब अन्न जल ग्रहण करूँगा।

निदान दूसरे दिन दसमी को दसहरे के पूजन का सरजाम लगाया गया। पुडीर ने प्रातःकाल से स्नान करके दस कुमारी कन्याओं को वस्त्र आभूषणादि से सजकर उनकी यथाविधि पूजा की, तत्पश्चात ब्राह्मण भोजन करवाया और फिर नवीन वस्त्र पहिन तथा अंगे सनाह और शस्त्र धारण कर वह घोडे पर सवार हुआ। कमर में तलवार कन्धे पर ढाल और हाथ में साग लिए घोडे को कुदाता हुआ धीर पुंडीर उस स्थान पर जा पहुचा जहा राजा पृथ्वीराज अन्य सब सामन्त कुमारों के बल की परीक्षा कर रहा था, राजा पृथ्वीराज एक उच्च सिंहासन पर बैठा हुआ था सब सामन्त और सिपाही [illegible] खडे थे। सब शूर सामन्त [illegible] एक के बाद एक राजा पृथ्वीराज की आज्ञा ले लेकर [illegible]। कोई [illegible] कोई सांग कोई तीर चलाता पर किसी का वार पार न होता था। उस तीस मन लोह मिश्रित कठोर खभ में केवल चिटे पडती थी, यदि बहुत हुआ तो किसी की साग मूठ दो मूठ पैठ गई। यह कौतुक देखकर राजा पृथ्वीराज मन ही मन विस्मित होता था और सोचता था कि इनके भरोसे कैसे शाह से भिडा जा सकता है। तब तक घोडे पर सवार ऐडे बेडे कदम देता हुआ धीर पुंडीर आ पहुचा। उसने जाते ही राजा के साम्हने साग रख दी और सिर झुका कर खडा हो गया। राजा ने प्रसन्नता पूर्वक मुस्करा कर उस किशोर वय राजकुमार को अपने हाथ से साग सोंपी और खभ भेदने की आज्ञा दी। आहा स्वामी का आयसु पाकर ज्योंही पुडीर ने घोडे की बाग उठाई कि वह बिजली सा तडप कर आकाश मे जा लगा। उसकी ओज़ तौज देखकर वहा उपस्थित छत्तीसों वंश के क्षत्री पुत्र हक्का बक्का हो गए। धीर पुडीर ने एक तिरछी पलट करके ज्योंही भरजोर साग का वार किया कि वह वज्रवत मज़बूत जैत खभ के पार होगई।

धीर पुंडीर की ऐसी वीरता देखतेही चहुआन का चित्त चौगुना हो गया। उसने उसी समय धीर को पाच हजार गाओं के पट्टे सहित सिरोपाव, बैरखवाला झडा और हाथी का निशान देकर उसे सब सामन्तों का सर्दार स्थापित किया। राजा के दिए हुए रखत बखत और पद को स्वीकार करके धीर ने नम्रता पूर्वक प्रणाम किया और प्रार्थना की कि इस पद को पाकर अब मेरा क्या कर्तव्य होगा सो कृपा करके आज्ञा हो। यह सुनकर पृथ्वीराज ने कहा हम क्षत्रियों का मरने मारने के सिवाय और कर्तव्य ही क्या है परन्तु मेरी इच्छा है कि एक बार फिर भी शहाबुद्दीन जीता पकड लिया जाय तो अच्छा है। इस पर पुडीर ने पुनः प्रणाम किया और कहा कि श्रीमान् की इस अभिलाषा को मैं पूरा करूगा। सब सुलतानी दल के बीच में से [illegible] और [illegible] और [illegible]

गिराऊंगा। धिक्कार है उस क्षत्री को जो शरीर में स्वासा रहते हुए अपने प्रण से हटे। इस पर राजा पृथ्वीराज ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर के सिर पर हाथ रख कर कहा धन्य हो।

हाय री ईर्षा तेरा सत्यानाश जाय!! इस भाग्यवान भारत की विभूति तेरी ही भभक में भस्मीभूत होकर भस्म हो गई। राजा पृथ्वीराज का पुंडीर वंश को ऐसी प्रभुता देना जैतराव और चामडराव को बहुत बुरा लगा अस्तु जैतराव ने चामडराय की तरफ कुछ आख का इशारा किया और तब चामडराय बोला 'बेटा धीर ऐसा प्रण नहीं करना होता है। जिस बादशाह को घेर कर सात फेरे हाथियों के खड़े होते है उसे जीता पकड लेना हँसी नहीं है अपना वित्त देखकर बातें करो हाथी और शेर को तराजू पर तौलने का विचार छोड दो। वो बाबा जी के राज्य की बाते गई अब जो है सो देखो वह बात बुरी कि घर में शेर खा बहादुर बाहर बकरी के बच्चे। यह सुन कर धीर बोला कि मै चंद पुंडीर का पुत्र कैसा जो कही हुई बात करके न बतला दू कि मै अपने इष्ट के बल से शाही के ठट्ठ लेकर मिट्टी मे न मिलादूं तो तब कहनो।

हवा के चलते चाहे देर हो पर बात फैलते क्या देर लगती है। पल भर में सारे शहर में शोर हो गया कि आज धीर पुंडीर ने बादशाह के पकड़ने की प्रतिज्ञा की है। रात बसी बात सौ कोस की खबर लेती है। लीजिए दस दिन में सारे देश भर में हल्ला मच गया। इसी तरह उड़ती खबर शहाबुद्दीन ने भी सुनी कि चंद पुंडीर के पुत्र ने तपस्या करके देवी से दो बरदान पाये है एक पृथ्वीराज के रोपे हुए जैत खभ का बेधना दूसरा शाह को जीते पकड लेना। उन में से एक तो पूरा हो चुका संभव है कि दूसरा भी पूरा हो। यह सुन कर शहाबुद्दीन मन ही मन सकपका गया और सोचने लगा कि अब क्या करू।

इधर दिल्ली में बालिभद्रराय, जामराय यादव, प्रसगराय खीची, देवराव बग्गरी, लोहाना आजानबाहु और रामराय गुज्जर आदि पुराने सामन्तों की एक गुप्त गोष्ठी हुई। उसमे सबलोग अपनी अपनी करनी बखान करके कहने लगे कि हमलोगों को लडते मरते जनम गया सो तो कुछ नहीं और इस कल के छोकरे ने लोहे का खंभा बेध लिया उसे राजा ने सब का सिरमौर बना दिया। कोई कोई बोले "बना देने दो जी हमलोग थोड़ेही उसके हुक्म की करेंगे"। चामडराय बोला "आप लोग जानते है कि यह वंश परंपरा मे हमारा पद है और हमलोग सदा से राजा के लिये प्राणों पर खेलते रहे है सो आज राजा ने सिंह का भाग श्वान को दे दिया। निदान सबकी यह सलाह पक्की हुई कि धीर को पकड़ा दिया जाय। तदनुसार चामडराय ने अरदास कायस्थ से शहाबुद्दीन के नाम एक पत्र लिखाया। उसमें उसने स्पष्ट लिख दिया कि यहा धीर ने तुम्हें जीतेजी पकड लेने का प्रण किया है। होना न होना तो परमेश्वर के हाथ है पर छोटे मुह बडी बात वैसेही अच्छी नहीं लगती, देश देश में शोर तो होगया। अस्तु आगामी आश्विन मास की अष्टमी को वह जालधरी देवी की पूजा करने कागडे को जायगा यदि तुम से कुछ करते बने तो कर लेना।

इधर ज्योंही भादों मास का अवसान हुआ कि धीर पुंडीर सकुटुम्ब जालधरी देवी के दर्शन करने को चला। वह वृष के सूर्य्य के समान तेजस्वी किशोर वय राजकुमार इस समय पूर्ण ब्रह्मचर्य्य धारण किए हुए था। उसके सब संगी साथी तो अपनी अपनी असवारियों पर थे पर वह आप नगे पैर पाव पियादे चलता था दिन रात्रि में एक बार केवल खीर का आहार करता और कुशासन बिछा कर भूमि पर सोता था। साय प्रातः धूप दीप नैवेद्य से भगवती का पूजन करता और मौनव्रत धारण

(१) चामडराय एक खिताब भी है। जिस किसी के बाप का धड के ऊपर सिर लड़ाई मे काट लिया जाता है वह "चामडराय" का खिताब पाता है। सभव है कि चामँड राय का दिल्लीराज्य से कुछ ऐसाही सम्बन्ध रहा हो।

किए हुए आठों पहर बीज मंत्र जपता रहता था एक दिन रात्रि को उसे स्वप्न में देवी ने बता दिया कि नैतराव और चामंडराव ने तेरे विषय में बिलक्षण षड् यंत्र रचा है। उन्होंने तेरा समाचार शाह को लिख भेजा है सो उसके भेजे हुए आठ हजार लश्कर तेरे पकड़ने के लिये आरहे है परन्तु किसी बात की चिन्ता न करना मै तेरी पद पद पर सहायता करूंगी।

चामंडराव का पत्र पाकर शहाबुद्दीन मनही मन मुस्कराया और उसने उसे सब दरबारियों को सुना कर कहा कि कौन ऐसा है जो धीर को मेरे पास पकड़ लावे। निदान आराशखा ने बीड़ा उठाया और साठ हजार गक्खरों को साथ लेकर कागडे की तरफ वह चल पड़ा। वे सब गक्खर लोग अपने हथियारों को अंगों के अन्दर छिपाए हुए और ऊपर से गुदरी पहिने हाथ में लाठी लिए कापालिक योगी के भेष में थे! धीर पुंडीर सप्तमी को कागडे पहुंच गया था और अष्टमी को आधी रात्रि पर जिस समय वह देवी के मन्दिर में ध्यानावस्थित बैठा हुआ था कि उक्त गक्खर लोगों ने मन्दिर को आन घेरा। पूजन पाठ पूरा करके ज्योंहीं धीर मन्दिर से बाहर हुआ कि उन लोगों ने उसे घेर लिया और चलते चलाते सिन्ध नदी पर आकर दम लिया। नावों पर सिन्ध नदी पार की और उस पार हाथियो की डाक लगी हुई थी सो वे धीर को हाथी पर बिठा कर गजनी को ले चले। स्मरण रहे कि इस कार्य मे कागडे के राजा हाहुलीराव हाटा हम्मीर ने भी गक्खरों को पूरी सहायता दी थी क्योंकि चामडराव ने उसे भी एक पत्र लिख भेजा था।

आठ हजार गक्खरों से घिरा हाथी पर बैठा हुआ धीर [illegible] जिस समय शहर गजनी में पहुंचा [illegible] [illegible] [illegible]

पवाई पैर से उतार कर उसे दे दी। आगे चल कर धीर जब राजमहल के दरवाजे पर पहुचा तो वहां तो इतनी भीड थी कि जिसका कुछ ठिकाना नहीं। शाही बेगमें भी गोखों में से झाक कर वीर धीर का स्वरूप देखती और मनही मन प्रसन्न होती थीं।

जिस समय धीर मन्दिर में था तब उसका खवास भी वहीं पर हाजिर था अस्तु जब पुंडीर पकडा जा चुका तो वह किसी तरह भाग कर दिल्ली पहुचा। उसने चामडराय को अपना जान कर सब व्यथा निवेदन की। उसने कहा, महाराज आधी रात के समय आठ हजार गक्खरो ने मन्दिर को आ घेरा और उन लोगों के राजा आमदेव ने वीर धीर के पास जाकर तलवार उतार ली—राजकुमार ने समझा कोई छल है इसलिये उन्होंने कोई वार न किया परन्तु देखते देखते बड़ी भीड़ इकट्ठी होगई और उन सब ने मिल कर धीर कुमार को पकड लिया परन्तु मै किसी प्रकार से प्राण बचा कर भागा हूं। यह समाचार सुन कर चामडराय मन में तो खिल गया परन्तु ऊपर से अफसोस करके उसने खवास को धैर्य दिया और उसे अपने पास रक्खा परन्तु वह सच्चा-स्वामी-धर्म-धारी बेडाल खवास अपने मालिक के बिना इस तरह से बेचैन हो रहा था जैसे थोड़े पानी में मछली तड़फे। उसने अन्न पानी सब त्याग दिया और अपने स्वामी वीर धीर की कुशल को निस दिन देवी देवता से मनाता रहता था।

[illegible] धीर पुंडीर जो गजनी पहुंचा था, [illegible] [illegible]

सोकर उठा तो पहिले उसका चित्त बहुत कलमलाया पर फिर यह सोच कर शान्त होगया कि सपने बात तो उलटी होती है।

इधर ज्योंही शाही महल नियराता जाता था त्यों त्यों धीर पुडीर का मन सोच विचार से गोते खाता था। क्यों न खाय जहा जहा तक नजर पसारी वहा तक एक दम शत्रु देख पडते थे मित्र का कहीं पुतला भी न था, वहा धैर्य रखना कठिन काम है। होते होते अन्त में धीर ने सब सोच विचारो को तिलाजुली देकर निश्चय कर लिया कि

दोहा।

* जाको रक्खे साइया मार न सक्के कोय।
बाल न बांका कर सके जो जग वैरी होय॥

उसे उसी समय एक पौराणिक आख्यायिका स्मरण आगई। वह यह है—एक समय एक हिरण बन में चर रहा था उसनें जब सिर उठा कर देखा तो देखता क्या है कि साम्हने व्याधा बागुर लगाए हुए बैठा है और पीछे से दमारि दौडी आ रही है, बाई ओर से स्वान समूह आ रहा है और साम्हने सिंह दहाड़ रहा है। अब जाय तो कहा जाय अपने को कराल काल के गाल में ग्रासित जान कर उस हिरण ने भक्ति भयहारी गुपाल को स्मरण करके कहा कि इस समय मेरी रक्षा का भार तेरे ऊपर है। तो देखता क्या है कि दमारि की लौ ने लपक कर जाल को जला दिया और मेघ ने बरस कर दमारि को दमन किया। कुत्ते शृगाल समूह के साथ हो लिये और बहेलिए ने सिंह पर बाण संधाना। कमान से बाण छूटा सो सिंह के शीश में लगा और प्रत्यचा टूटी सो बहेलिया आप मर पड़ा। धन्य प्रभु तेरी लीला, पल की पल में सब खेल समाप्त हो गया और हिरण निर्भय होकर विचरने लगा। तात्पर्य यह कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है।

फिर उसने सोचा कि और जो आन ही लगी है तो बचा कौन सकता है। महाभारत में जिस समय अर्जुन ने जयद्रथ के मारने का प्रण किया तो कौरव दल की १८ अक्षौहिणी सारी सेना उसी की रक्षा पर उतारु हुई और भूरिश्रवा, दुःशासन, कृतवर्म, करण और अश्वत्थामा आदि बडे बडे महरथी जयद्रथ के रथ के चारो तरफ कोट बाध कर खडे हो गए। परन्तु उसकी अर्जुन के हाथ मौत थी बचे सो कैसे। अन्त में सायकाल होते होते भगवान कृष्णचन्द की सहायता से अर्जुन ने जयद्रथ को मारही डाला। तात्पर्य यह कि काल आ पहुचने पर फिर पल भर कोई नहीं बच सकता।

अतएव धीर ने धैर्य्य धारण करके निश्चय कर लिया कि होनी होय सो होय मै तो मुह तोड बात कहने से न चूकूगा।

यही सोचते विचारते धीर सदर दरवाजे पर जा पहुंचा। उसकी अवाई का समाचार पाते ही शहाबुद्दीन ने उसे अपने पास बुलाया और उससे कहा।

शहाबुद्दीन—धीर तू चड पुडीर का पुत्र है और जीता हुआ बाधकर मेरे साम्हने आया है। धिक्कार है उस क्षत्री को जो जीवन की आशा से कुल की लीक और लोक लज्जा को परहेरे। भरे दर्बार में सरासर ऐसी झूठी बात बोलना। बतला अब कहा गया तेरा यह प्रण?

धीर०—पूछ देखिये अपने सिपाहियो से कि मैंने लड़ने भिडने का नाम तक भी नहीं लिया केवल अपनी पैज पूरी करने के लिये जीवन रक्खा और चुपचाप तुम्हारे पास चला आया।

शाह०—लानत तेरी पैज पर। अबे जब इज्जत चली गई तब पैज कहा रही। जिस समय जिस इज्जत पर लोग जान और जर निसार करते है उसे सरासर खोकर अब तू क्या शर्त पूरी करेगा।

धीर०—आपका कथन सत्य है परन्तु मै अपनी पति इसी में समझता हू कि अपने

* यह दोहा रासो मे का नहीं है।

स्वामी से जो वचन हार चुका उसे पूरा कर छोड़ूं। सुनो शाह जिस दिन युद्धक्षेत्र में मैं तुम्हारी खुरासानी सेना को खपा कर तुम्हें जीता पकड़लूंगा और फिर दयापूर्वक तुम्हें छुड़ा दूंगा उस दिन समझूंगा कि अब मेरी पति रही और अब मेरा जीवन सफल हुआ। जिस पैज के लिये त्रिलोकीनाथ ने वावन रूप धारण किया और हनुमानजी ने आप अपने को बंधन में बँधाया उस पैज को पूरा करने की लालसा से जान बूझ करके बंधुआ बना तुम्हारे पास आया हूं।

शाह०—अभी बच्चे हो, मैदान जंग की हवा खाओ तो औसान ढीले हो जाय। जहां गोले गोलियां पानी से बरसते हैं और तलवारें बिजली सी चमकती है अगर वहां तेरे होश ठिकाने रहें तो समझूं कि तेरा नाम ठीक है। ऐसे मौके पर कोई किसी का नहीं होता।

धीर०—सत्य है दूध का दाहा हुआ छाछ फूंक फूंक कर पीता है। जैसे आपके सरदार आपको छोड़ छोड़ कर भाग आए वैसे हम नहीं हैं। मैं तुम्हारे साम्हने भी प्रण करके कहता हूं कि तुम जो यहां शेर बने बैठे हो, सो भर भीर में से बकरी की तरह तुम्हें पकड़ लूंगा।

शाह०—क्यों झूठ बोलता है, न पहाड़ हाथ से ठेला जाता है न स्वप्न की संपति अपनी होती है। अबे जिस शाह की फौज से काल कांपता है उसे तू हाथ से पकड़ने की हिम्मत करता है।

धीर०—सांप विषैला होता है पर गरुड़ के लिये बिछुआ है, जल के लिये अग्नि ज्वाला भयानक नहीं होती, और न सूर्य की किरण के सामने अंधेरा रहता है, इसी तरह पृथ्वी-राज के [illegible] के साम्हने [illegible] दल बादल है क्या वस्तु।

शाह०—अबे क्या फिर भी तुम्हारी [illegible] नहीं [illegible]

धीर०—हां जानता हूं और फिर भी कहता हूं कि यदि तुझे युद्ध स्थल में देखूं तो बकरी की तरह पकड़ लूं।

शाह०—अबे नादान हिन्दू फिर वही बात, तू नहीं जानता कि जिस वक्त मेरी फौज कशी होती है तो जमीन आसमान एक हो जाता है।

धीर०—हां जानता हूं मुझे भी बार बार कहने में लज्जा लगती है यदि तुम अपनी सेना सजाकर पृथ्वीराज के साम्हने आओ तो बताऊं कि देखो पकड़ लिया न?

शाह०—इस शहाबुद्दीन को अब कौन पकड़ सकता है अगर पकड़ेंगे तो आखिरी वक्त में फिरिश्ते ही इसका हाथ पकड़ेंगे।

धीर०—नहीं अभी यह धीर पुंडीर भी आपके हाथ पकड़ेगा! और कहता तो है कि यदि जीता रहा तो घर बतलावेगा।

शाह०—कसम खुदा कि, अगर दिल्ली को खोद कर धूल में न मिला दूं और जिस चौहान की तू इतनी तारीफ करता है उसे कैद करके न ले आऊं तो मैं शहाबुद्दीन झूठा।

धीर०—ईश्वर की सौगंध करके कहता हूं कि इस गजनी को तहस नहस करके यहां के बाद-शाह को बंधुआ न बना छोड़ूं तो मैं धीर कैसा!

शाह०—अबे बेवकूफ तेरे हाथों में हथकड़ी पैरों में बेड़ी और गले में तौक डाल कर पिंजरे में बन्द कर दूंगा और चढ़ी सवारी जाकर चौ-हान को भी पकड़ लाऊंगा, तब क्या करेगा बेहूदा कैदी की तरह बात नहीं करता।

धीर०—मेरे देखते कोई भी पृथ्वीराज की तरफ उंगली उठा सकता है! पिंजरे को तोड़ कर शेर की तरह निकल पड़ूं और उलटा तुम्हीं को उसमें ठोक दूं। हे कृष्ण इस शरीर के रहते कोई पृथ्वीराज को बांध सकता है!

शाह०—नामुमकीन, पर कैसे हो सकता है, मालूम [illegible] की हामी करके [illegible] [illegible]

सोकर उठा तो पहिले उसका चित्त बहुत कलमलाया पर फिर यह सोच कर शान्त होगया कि सपने बात तो उलटी होती है।

इधर ज्योंही शाही महल नियराता जाता था त्यों त्यों धीर पुंडीर का मन सोच विचार से गोते खाता था। क्यो न खाय जहा जहा तक नजर पसारी वहा तक एक दम शत्रु देख पड़ते थे मित्र का कहीं पुतला भी न था, वहा धैर्य रखना कठिन काम है। होते होते अन्त में धीर ने सब सोच बिचारो को तिलाजुली देकर निश्चय कर लिया कि

दोहा।

* जाको रक्खे साइया मार न सक्कै कोय।
बाल न बांका कर सके जो जग वैरी होय॥

उसे उसी समय एक पौराणिक आख्यायिका स्मरण आगई। वह यह है—एक समय एक हिरण वन में चर रहा था उसनें जब सिर उठा कर देखा तो देखता क्या है कि साम्हने व्याधा वागुर लगाए हुए बैठा है और पीछे से दमारि दौड़ी आ रही है, बाई ओर से स्वान समूह आ रहा है और साम्हने सिंह दहाड़ रहा है। अब जाय तो कहा जाय अपने को कराल काल के गाल में ग्रासित जान कर उस हिरण ने भक्ति भयहारी गुपाल को स्मरण करके कहा कि इस समय मेरी रक्षा का भार तेरे ऊपर है। तो देखता क्या है कि दमारि की लौ ने लपक कर जाल को जला दिया और मेघ ने बरस कर दमारि को दमन किया। कुत्ते शृगाल समूह के साथ हो लिये और बहेलिए ने सिंह पर बाण संधाना। कमान से बाण छूटा सो सिंह के शीश में लगा और प्रत्यंचा टूटी सो बहेलिया आप मर पड़ा। धन्य प्रभु तेरी लीला, पल की पल में सब खेल समाप्त हो गया और हिरण निर्भय होकर विचरने लगा। तात्पर्य यह कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है।

फिर उसनें सोचा कि और जो आन ही लगी है तो बचा कौन सकता है। महाभारत में जिस समय अर्जुन ने जयद्रथ के मारने का प्रण किया तो कौरव दल की १८ अक्षौहिणी सारी सेना उसी की रक्षा पर उतारू हुई और भूरिश्रवा, दुःशासन, कृतवर्म, करण और अश्वत्थामा आदि बड़े बड़े महरथी जयद्रथ के रथ के चारो तरफ कोट बांध कर खड़े हो गए। परन्तु उसकी अर्जुन के हाथ मौत थी बचे सो कैसे। अन्त में सायंकाल होते होते भगवान कृष्णचन्द की सहायता से अर्जुन ने जयद्रथ को मारही डाला। तात्पर्य यह कि काल आ पहुचने पर फिर पल भर कोई नहीं बच सकता।

अतएव धीर ने धैर्य्य धारण करके निश्चय कर लिया कि होनी होय सो होय मै तो मुह तोड़ बात कहने से न चूकूगा।

यही सोचते विचारते धीर सदर दरवाजे पर जा पहुचा। उसकी अवाई का समाचार पाते ही शहाबुद्दीन ने उसे अपने पास बुलाया और उससे कहा।

शहाबुद्दीन—धीर तू चंड पुडीर का पुत्र है और जीता हुआ बाधकर मेरे साम्हने आया है। धिक्कार है उस क्षत्री को जो जीवन की आशा से कुल की लीक और लोक लज्जा को परहरे। भरे दर्बार में सरासर ऐसी झूठी बात बोलना। बतला अब कहा गया तेरा यह प्रण?

धीर०—पूछ देखिये अपने सिपाहियो से कि मैने लड़ने भिडने का नाम तक भी नहीं लिया केवल अपनी पेज पूरी करने के लिये जीवन रक्खा और चुपचाप तुम्हारे पास चला आया।

शाह०—लानत तेरी पेज पर। अबे जब इज्जत चली गई तब पेज कहा रही। जिस समय जिस इज्जत पर लोग जान और जर निसार करते है उसे सरासर खोकर अब तू क्या शर्त पूरी करेगा।

धीर०—आपका कथन सत्य है परन्तु मै अपनी पति इसी में समझता हूं कि अपने

* यह दोहा रासो मे का नहीं है।

स्वामी से जो वचन हार चुका उसे पूरा कर छोड़ू। सुनो शाह जिस दिन युद्धक्षेत्र में मै तुम्हारी खुरासानी सेना को खपा कर तुम्हें जीता पकडलूंगा और फिर दयापूर्वक तुम्हें छुड़ा दूगा उस दिन समझूगा कि अब मेरी ...ति रही और अब मेरा जीवन सफल हुआ। ...स पैज के लिये त्रिलोकीनाथ ने वावन रूप ...रण किया और हनुमानजी ने आप अपने ...ो बन्धन में बंधाया उस पैज को पूरा करने ...ी लालसा से जान बूझ करके बधुआ बना ...म्हारे पास आया हूं।

—अभी बच्चे हो, मैदान जग की हवा ...ाओ तो औसान ढीले हो जाय। जहा गोले ...ोलिया पानी से बरसते हैं और तलवारें ...जली सी चमकती है अगर वहा तेरे होश ...काने रहें तो समझू कि तेरा नाम ठीक है। ...से मौके पर कोई किसी का नहीं होता।

सत्य है दूध का दाहा हुआ छाछ फूक फूक ...र पीता है। जैसे आपके सरदार आपको ...ड छोड कर भाग आए वैसे हम नहीं ...। मै तुम्हारे साम्हने भी प्रण करके कहता ... कि तुम जो यहा शेर बने बैठे हो, सो भर ...र में से बकरी की तरह तुम्हें पकड लूगा।

—क्यों झूठ बोलता है, न पहाड हाथ से ...ता जाता है न स्वप्न की संपति अपनी ...ती है। अबे जिस शाह की फौज से काल ...पता है उस तू हाथ से पकडने की हिम्मत ...रता है।

—साप विषैला होता है पर गरुड के लिये ...चुआ है, जल के लिये अग्नि ज्वाला ...शनक नहीं होती और न सूर्य्य की किरण ... साम्हने अन्धेरा रहना है, इसी तरह पृथ्वी...न के प्रताप रूपी ताप के साम्हने तुम्हारा ...र बदल है क्या वस्तु।

अबे क्या फिर भी गुस्ताखी से बाज नहीं ...ता, क्या तू नहीं जानता कि तू मेरा कैदी है।

धीर०—हा जानता हूं और फिर भी कहता हू कि यदि तुझे युद्ध स्थल में देखूं तो बकरी की तरह पकड़ लू।

शाह०—अबे नादान हिन्दू फिर वही बात, तू नहीं जानता कि जिस वक्त मेरी फौज कशी होती है तो जमीन आसमान एक हो जाता है।

धीर०—हा जानता हू मुझे भी बार बार कहने मे लज्जा लगती है यदि तुम अपनी सेना सजाकर पृथ्वीराज के साम्हने आओ तो बताऊ कि देखो पकड लिया न?

शाह०—इस शहाबुद्दीन को अब कौन पकड़ सकता है अगर पकडेंगे तो आखिरी वक्त मे फिरिश्ते ही इसका हाथ पकड़ेंगे।

धीर०—नहीं अभी यह धीर पुडीर भी आपके हाथ पकडेगा! और कहता तो है कि यदि जीता रहा तो घर बतलावेगा।

शाह०—कसम खुदा कि, अगर दिल्ली को खोद कर धूल मे न मिला दू और जिस चौहान की तू इतनी तारीफ करता है उसे कैद करके न ले आऊ तो मै शहाबुद्दीन झूठा।

धीर०—ईश्वर की सौगंध करके कहता हू कि इस गजनी को तहस नहस करके यहा के बादशाह को बधुआ न बना छोडूं तो मै धीर कैसा!

शाह०—अबे बेवकूफ तेरे हाथों में हथकडी पैरों में बेडी और गले में तौक डाल कर पिंजर में बन्द कर दूगा और चढ़ी सवारी जाकर चौहान को भी पकड लाऊंगा, तब क्या करेगा बेहया, कैदी की तरह बात नहीं करता।

धीर०—मेरे देखते कोई भी पृथ्वीराज की तरफ उगली उठा सकता है! पिंजरे को तोड कर शेर की तरह निकल पड़ू और उलटा तुझी को उसमें ढकेल दूं। हरे कृष्ण इस शरीर के रहते कोई पृथ्वीराज को बाध सकता है!

शाह०—नामुमकीन, यह कैसे हो सकता है, महज नादानी की बातें करके फजूल सर खपाने से क्या गरज!

धीर०-कदापि नहीं यदि तू सेना लेकर पृथ्वीराज पर चढ़ाई करे तो सारी सनाह सेना में से तुझे ऐसे निकाल लूं जैसे धीमर जाल में से मछली निकाल लेता है।

शाह०-अरे धीर मैं सिर्फ दिल्ली क्या सारे हिन्द के हिन्दुओं को मिट्टी में मिला कर सारे देश में शाह जलाल की दुहाई न फेर दूं तब कहना। जिस वक्त पृथ्वीराज पकड़ा जावेगा और दिल्ली में मुसलमानी झंडा फहराने लगेगा, तब अपनी बेवकूफी पर रोना पड़ेगा कि चत्री छल नहीं करते। चंद पुंडीर के लड़के फजूल गमार की तरह गप गप बातें न बना। तू मेरे दल बल को नहीं देखता, और अब तेरे तरफ की वह बात गई।

धीर०-शाह तुम ऐसा विचार छोड़ दो। तुम इसी मगरूरी के पीछे मारे पड़ते हो और फिर भी धोखा खाओगे। यह खुली बात है कि तुम्हारे पास तीन लाख सिपाही है और राजा पृथ्वीराज की सेना में कुल सत्तर हजार राजपूत है तिनमें से भी बहुत से नामी नामी वीर काम आचुके पर वह मोर मुकुटवाला तो है जिसने भारथ में पारथ का रथ हांका, द्रौपदी का चीर बढ़ाया और बालि को बांधा। एक मात्र इसी नंदनन्दन आनन्द कन्द कृष्णचन्द के भरोसे पर यह चन्दपुत्र चन्द पुंडीर तुम्हारी भरी सभा में कहता है कि तुम्हारे दोनों हाथ पकड़ कर बन्दर सा नचाऊंगा। मै झूठ नहीं कहता मेरी बात पत्थर की लकीर समझो। यदि मैंने तुम्हें बांध कर पृथ्वीराज के पैरों पर न गिराया तो मैं अपने चंद पुंडीर का जायाही नहीं।

शाह०--अबे धीर बच्चे तू सरासर झूठ बोलता है और फिर भी कहता है कि मैं झूठा नहीं बोलता। तोबा तेरा सा झूठा और कौन होगा। बेशरम एक कैदी की तरह बात नहीं करता, किसी आकिल मालिक ने सच कहा है कि जो गरजता है सो बरसता नहीं।

इस प्रकार धीर और बादशाह की बातें सुन कर शाही वजीर तत्तार खां की त्योरी चढ़ गई। उसने धीर को मार डालने की इच्छा से सेल हाथ में लेकर वार करना चाहा परन्तु शहाबुद्दीन के इशारे से मना कर देने पर उसे रुक जाना पड़ा। तब वह दांत पीस कर बोला, इस नामाकूल छोकरे की वाहियात बातें सुन कर गुस्सा तो वह आता है कि इसकी इसी वक्त गोशमाली कर दूं इसके गप गप गप्पें मारने वाले गाल तोड़ डालूं और खाल निकाल कर भूसा भरवा दूं, मगर अफसोस हुजूर आली की इनाअत वगैरो चश्म बरदास्त है। अव्वल तो आका की तौहीन सुनना नमकखारी के खिलाफ़ है दोयम दरबार पैगंबराने आली इस्लाम में एक काफिर हिन्द बच्चे का ऐसा हौसला हम लोगों के लिये क्या कम नदामत की बात है, शाने आली के ख्याल से बाज़ आता हूं वरनः इसी दम तेरी जबान निकाल कर ये जबादराजी खामोश कर देता। यह सुनकर धीर बोला।

धीरसे०-- शाह की कही हुई कहावत कि 'गरजता है सो बरसता नहीं' अब पूर्ण रूप से चरितार्थ हुई। बार बार कमान क्या टटोलते हो हिम्मत हो सामने आ जावो। तुम ऐसे दस को कांख में दबा सकता हूं।

तत्तार--देखो धीर यह शाह का दरबार है अदब से बात करो वाहियात अलफाज निकालने से क्या हासिल, ख्याल रक्खो कि यह वह शाहशाह है जिसका मुकाबिला करने वाला पैदा ही नहीं हुआ है। फिर तुम अपनी भी हैसियत देखो, बड़े से बड़ा चना भी अकेला भाड़ नहीं फोड़ सकता।

धीर--सत्य है इस शाही दल का सामना करने वाला कोई चाहे न हो पर मैं हूं इस सारे दल बल को बिदार कर तुम्हारे आंखों देखते हुए शाह को पकड़ कर पृथ्वीराज के पैरों पर डालूंगा। और तुम लोग उस समय भी निलज्जता पूर्वक जीते जागते हुए हमसे चमा प्रार्थना करोगे।

यह सुनतेही तत्तार खां की आंखें अंगारे की तरह लाल हो गईं और उसने गोसा चढाई तो लिया परन्तु शहाबुद्दीन ने स्वय उसके हाथ से कमान छीन ली और कहा, ऐसी जल्दी क्यों करते हो जो अपना कैदी है उसकी जान लेना क्या बड़ा काम है इस वक्त मेरी राय में इसे छोड़ देना ही मुनासिब है। और दुश्मन पर फौज कशी करके देखना है कि यह क्या मर्दुमी करता है। यह सुन कर धीर बोला।

धीर०-जो जीवन का लोभ नहीं करते वे जम से नहीं डरते, जो कामी है वे कुल की लीक नहीं देखते, जो स्वार्थ साधन पर उद्यत है वे जीने मरने की परवाह नहीं करते और जो भोगी है वे स्त्री से सम्बन्ध नहीं रखते। तुम लोग बार बार दपटते क्या हो इस चंद पुंडीर पुत्र के रक्त में भी शका का संचार होना असंभव है।

किंचित शान्त रह कर शहाबुद्दीन ने धीर से कहा कि तुमने अष्टधाती खंभ को साग से फाड़ने में तो बड़ी कुव्वत की होगी, जरा इस साम्हने के दरख्त को तो उखाड़ो। यह सुनतेही धीर ने उस वृक्ष को अकोर में लेकर ज्यों जोर लगाया कि वह जड़ से उखड पड़ा। यह देखते सारी सभा के लोग सन्न रह गए और शाह ने स्वयं धीर के बल की प्रशंसा करते हुए कहा कि मांग ले जो कुछ चाहिए। शाह के ऐसे वचन सुनतेही धीर हँस कर बोला।

धीर०-मैं तो उसी दिन सब कुछ पाचुका जिस दिन माता के गर्भ में आया था। जिस दिन मैं जन्मा बड़े उत्सव हुए थे और पण्डितों ने मेरा धीर नाम रक्खा था। सो मेरे नाम की नोक तो रह गई अब बिरद का बान रह जाय यही चाहता हूं अर्थात् जिस दिन तुम्हें पकड़ लूंगा उसी दिन सब कुछ पालूं।

शाह०-धीर, तुझे वाकई यकीन है कि तू मुझको पकड़ लेगा। कयास कर कि अगर तू जंग में शहीद हो गया तब तेरी मुराद किस तरह बर आवेगी, बाद तेरे कौन इसका हामी होगा।

धीर०-"आप मुए जग डूबा" फिर कौन देखता है कि क्या हुआ पर जब तक नसों में स्वासा का संचार शेष रहेगा, जब तक हाथ पांव चलेंगे तब तक अपनी सी करने में कसर न लगाऊंगा। और फिर भी कहता हूं कि तुम्हारा दल बल दलन करके तुम्हें पकड़ूंगा और फिर पकड़ूंगा।

धीर के ऐसे बचन सुनकर शाह ने कहा 'शाबास' और एक बढिया सिरोपाव और अपनी निज सवारी को मगाकर उसी समय धीर को समर्पण करके उसने कहा कि जाओ अपने आका को होशियार करो मैं भी आया, फिर देखूं तू और तेरे साथी कितने में है। धीर ने पोशाक पहिनी और घोड़े की पीठ पर सवार होकर मंत्र उच्चारण किया और कहा शाह मैं तुम्हारी तीन लाख मुसल्मानी सेना का मान मर्दन करके इसी घोड़े पर से तुम्हारे हाथ पकड़ूंगा पर तुम किसी प्रकार की शका न करो। यह कहकर धीर ने ज्यों घोड़ा पलटा कर सलाम किया कि बादशाह ने उसे सादर पान दिया और कहा, देख चन्द के बच्चे सचाई से न चूकना। इस पर धीर ने कहा कभी नहीं, जिस हाथ से आपने पान दिया उसी हाथ को अपने इस हाथ से पकड़ूंगा जिससे मैंने इस समय पान पाया है।

धीर पुंडीर के पीठ फिरते ही शहाबुद्दीन ने तत्तार खां को आज्ञा दी कि दिल्ली पर चढाई करने के लिये सेना तैयार की जावे। शाह का ऐसा फरमान पाते ही उसने दसों दिशाओं में धावन भेज दिए। दूसरे ही दिन राजद्वार पर राई डालना कठिन होगया। रूमी, पलखी, गप्पार, तुरक, बलोल आदि नाना जाति के मुसल्मान सैनिक अपने अपने कील काटे से दुरुस्त होकर जुट पड़े। अपनी सर्वाङ्ग सुसज्जित सेना को सम्पूर्ण रूप से सन्नद्ध देखकर शहाबुद्दीन भी हाथी पर सवार हुआ। जिस हाथी पर शहाबुद्दीन सवार था वह नीचे से ऊपर तक लालरंग के साज से सजा हुआ था और शाह खुद लाल पोशाक पहने हुए था। दिन की किरणें फूटने ही जिस समय शाही सेना कूचकर चली उस समय

ऐसा मालूम होता था मानो सदेह माधवमास चहल कदमी कर रहा हो और बीचों बीच शाह का लाल हाथी तो ऐसा ज्ञात होता था मानो माधवमास की शोभा निरीक्षण करने को मंगलग्रह आन विराजे हो। सेना के चलते समय धूलि उडने से सूर्य्य प्रछन्न हो गया और सन्ध्या के भ्रम से अपने विछोह की आशंका कर चकवा चकवियों का कलेजा कांपने लगा परन्तु कूच के समय बडे अशकुन हुए। देखते क्या है कि साम्हने रीते घडे आ रहे है, बाए स्यार किकार रहा है, पीछे गीध उड रहे है, रास्ते में बिल्लियां लड़ रही हैं, आकाश से रक्त की बूंदे टपकती हैं, नंगे सिर ऊंट का सवार साम्हने आ रहा है, स्वेत वस्त्र पहिने मलिन मुख स्त्री भी साम्हने खड़ी है और दाहिने लोहे की भट्टी जल रही है। यह सब देखकर अग्रगामी तत्तार खां ने अपने घोडे की बाग मोड दी और शाह के पास आकर उससे कहा कि आज की कूच मुल्तवी कर दीजिए, गो ये ठीक है कि वही होता है जो मंजूर खुदा होता है मगर फिर भी जानबूझ कर ऐसा करना अकल के खिलाफ है। आइन्दा इर्शाद आला तहेदिल मंजूर है।

यह सुनकर शहाबुद्दीन ने कहा सुनो तत्तार खां ये तो सब हुआ ही करता है, मरने से अधिक और क्या होगा। बस, मगर मैं समझता हूं ऐसी मौत मुश्किल से मिलती है। वो जमामर्द जो इस्लाम के लिये शहीद होगए क्या मरे हुए समझे जा सकते हैं। सारी जमीन खुदा की है और हम उसके बंदे हैं, बस नमाज़ एक पढ़लो और फिर बिसमिल्लाह करो। देखो दुनिया के पर्दे पर क्या कोई ऐसी भी जगह है जहां काजी नमाज न पढ़ते हों, मुल्ला बांग न देते हों, गाय की कुर्बानी न की जाती हो और मुसल्मान की कब्र मौजूद न हो। फौत और पैदाइश ये तो कानून इलाही हैं, इनके खिलाफ कोई भी मुदाखिलत नहीं कर सकता, लिहाजा ऐसा ही मरना बेहतर है जिसमें आइन्दा नाम बाकी रहे। चार बहादुरों की थोड़ी ही जिन्दगी अच्छी।

तब तत्तार खां ने प्रत्युत्तर दिया कि वाकई, इर्शाद आली काबिल गौर है। देखिये जिस वक्त फकीर रोशनअली ने दिल्ली में जाकर दही जूठा कर दिया और इस कुसूर पर वहां के राजा ने उसकी अंगुली कटवाडाली तब उसने मक्के शरीफ़ में जाकर फर्य्याद की। उस वक्त दर्गाह पैगम्बर में उसकी फर्य्याद कुबूल हुइ और राजा नादान को सजा देने के लिये वहां से सौदागरी लबास में ख्वाजा मीरा शाह रवाना हुए। मीरा साहब के पास बहुत से बेशकीमती घोडे थे। मीराशाह के पहुचने की खबर पाकर दिल्ली के राजा ने सब घोडों में से एक अच्छा घोडा खरीदा। मीराशाह ने जो दाम लगाए वही दाम दिए गए। इस पर वहां तो मीराशाह कुछ न कर सके पर वहां से आकर उन्होंने अजमेर के ग्राम देवता अजैपाल के मुकाम पर नमाज पढ़ी और बाग दी जिससे वहां के सब हिन्दू देवता भाग गए। उस वक्त उस काफिर सरदार ने गुस्से में आकर फौजकशी कर दी। उधर से तो हिन्दू सिपाही लडते थे मगर इधर से चालीस यार उनका मुकाबला करते थे। जंग होते होते और तो सब बच गए मगर मीराशाह मारे गए। इस बात का उनके साथियों को निहायत अफसोस और गम हुआ लेकिन उसी रात को उन्होंने ख्वाब में देखा कि एक पीर मर्द उनसे कहता है कि तुम लोग रंज मत करो ये मीर साहब अजमेर में औलीया होकर पूजे जायंगे और चंदरोज में वो वक्त आनेवाला है कि हिन्द के हिन्दू मिट्टी में मिल जायंगे और तमाम मुल्कों में इस्लाम का उरूज होगा। खुदा जाने यह वही मौका आ पहुचा हो और यह रुतबा आपही के नसीब में हो तो तअज्जुब क्या है। लिहाजा इसी दम फौजकशी करके काफिरों को कत्ल करना ही मुनासिब है आइन्दा अल्लाह मददगार है। अव्वल तो एक जबरदस्त दुश्मन पर फतह पाना, दूसरे इर्शाद पैगंबरान की इताअत बजा लाना, इससे ज्यादा खुशनसीबी की बात और क्या हो सकती है। तत्तार खां के इतना कहने पर शाह ने हुक्म दिया कि कूच

किया जावे। बस आगे आगे पुंडीर और उससे दश बीस कोस के फासिले चलती हुई शाही सेना दिन प्रति दिल्ली को नियराने लगी।

दिल्ली पहुच कर धीर पुंडीर घर न गया सीधा राजद्वार पर जा पहुंचा। धीर की अवाई का समाचार सुनकर अबाल वृद्ध जो जहा थे सब उसे देखने के लिये दौडे और राजा ने जब यह समाचार सुना तो उसे ऐसा हर्ष और अल्हाद हुआ जैसे मनियारा सर्प अपनी खोई हुई मणि पावे। एक राजद्वार पर क्या घर घर बधाई बजने लगी। जहा तहा नाना प्रकार के राग रंग और नाच तमाशे होने लगे। उधर रनिवास में भी हलचल मच गया। सब रानियां सोलहों शृगार और बारहों आभूषणों से सुसज्जित होकर धीर के सकुशल घर आने की बधाई मनाने लगीं। जब धीर * महलों में गया तो सब रानियों ने उसकी आरती उतारी और प्रसन्नता पूर्वक बलाएं लेकर उसको आशीर्वाद दिया। रनिवास से होकर ज्योंही पुंडीर दरबार में पहुंचा कि पृथ्वीराज ने उसे देखते ही छाती से लगा लिया। पर धीर ने नीचे से ऊंचा सिर न किया।

पृथ्वीराज बोला धीर मुझे आश्चर्य है कि शाही सेना ने तुम्हें किस प्रकार से पकड लिया। आश्चर्य्य नही महा आश्चर्य्य है कि तुम ऐसा वीर पुरुष जीता बाध लिया जाय। यह सुन कर धीर तो कुछ न बोला। चामंडराय राजा को सुना सुना कर धीर से कहने लगा, बात का खंभ फाड कर प्रतिज्ञा कर लेना सहज है पर बात का निबाहना बडा कठिन होता है। घमड में आकर जिसको बाधने की प्रतिज्ञा की थी उसके आप बकरी से बध गये। धिक्कार है, वृथा क्षत्री के घर जन्म लेकर माता की कख को कलंकित किया। अब तक पुंडीर ने अपने को खूब सम्हाला पर आखिरी बात सुन कर उससे न रहा गया। वह बोला। मैं महाराज की आन मानकर कुछ नही कहता पर फिर भी इतना कहे बिना नही रहा जाता कि अब वह समय भी आ गया जब कि सबकी करतूत मालूम होजायगी और मैं अपना प्रण पूरा कर दिखाऊंगा। अर्थात् म्लेच्छ दल को दलन करके शहाबुद्दीन को बाध लाऊंगा। यह सुन कर चामडराय बोला।

चामडराय-अभी खट्टी खाचुके और फिर वही बात। जिस शाह की फौज में तीन लाख घोडे और साठ हाजर हाथी है उसे तू किस तरह से जीता पकड़ लावेगा। बेटा बढ़ कर नही बोलना होता है और जो बात जबान से निकल जाय तो मरते मर जाय पर बात से न टरे। सच्चे सपूत का यही धर्म है।

धीर॰ हा ऐसाही होगा जो कह चुका हू उसे कर दिखाऊगा। म्लेच्छों का अगिनित दल धूलि में मिला कर शाह को बाध कर लेआऊं तब कहना कि हां रे धीर पक्का चद पुंडीर का पुत्र है।

चामंड॰--अरे धीर क्यों बातें करता है। चन्द्रमा को हाथ से कौन छू सकता है, कौन लका से सोना ला सकता है और कौन सिंह का बाल पकड़ सकता है अथवा पहाड़ को पाव से कौन ठेल सकता है और अग्नि को गोद में कौन झेल सकता है। इसी प्रकार हाथियों के ठठ्ठ से परवेष्टित उस शाह का हाथ कौन पकड़ सकता है।

धीर॰--हा सो ठीक है परन्तु जब तक इस शरीर में स्वास का संचार है हाथ पैर चलते है और मुंह से बोल निकलता है तब तक धीर अपनी बात से हटने का बादशाह नहीं। जो न पकड लाया और राजा पृथ्वीराज को प्रसन्न न कर दिया तो धिक्कार है इस जीवन को।

इसी प्रकार बातें होते हवाते दरबार बरखास्त हुआ। पृथ्वीराज उठकर महलों मे चला गया और धीर अपने घर को आया। उसके आते ही छोटे बड़े में उसके कुटुम्ब के सब लोग जुट आये सब ने बडी खुशियाली मनाई और एक साथ भोजन किया। दूसरे दिन सब धीर वंशियों की एक गुप्त गोष्ठी हुई जिसमें रंवरीराव सागरसिंह मल्हनसिंह और हरीराव ये चार पांच मुखिया थे। ये लोग धीरपुंडीर से बोले क्या कहें आपके पकडजाने से विरद की बड़ी बड़ी

* धीरसेन रानी इछनीनी का निज भतीजा होता था।

आनघटी। जो ऐसा जानते तो हम सब आपके साथ चले होते। यह सुनकर पुंडीर बोला " कोई रजकी बात नहीं है। आपको मालूम ही है कि यह सब जैतराव और चामडराय के कुचक्र का फल है जो कुछ हो गया सो अच्छा ही हुआ, शाह ने भी मुझे जान लिया और मैंने भी वहां का सब रंग ढंग हचान लिया। सुनिये जिस वक्त मैं वहां गया तो पशाह के राजमन्त्री तत्तारखां ने तथा और अमीर उमरावों ने बडे रोब बांधे, बडी घुडकी बताई परन्तु मैं दबा नहीं, मैंने वार वार यही कहा कि हां पैज की तो है और पूरी भी करूंगा अन्त मे शाह ने मुझे वडे आदर से विदा किया और कहा कि मैं आया, तुझे भरी है सो कर दिखाना। अतएव मुझे अत्यन्त प्रसन्नता इस बात की है कि आप लोगों की भी मेरे प्रण का उतनाही ख्याल है जितना कि मुझे खुद है। बीती पर बिचार करना वृथा है। अब ऐसा कीजिए कि जिसमें बात रह जाय। यह सुनकर रंधरीराव ने हरीराव से कहा कि सुना आप क्या कहते है। उसने उत्तर दिया हां मैं तो यही उचित समझता हू कि हम अब पुंडीर वंशी अपनी सेना सजकर आगे का मौका जा बांधे और शाह की सेना के दाव में- आतेही पहली चोट हमारी ही हो। मरना तो एक दिन है ही फिर अपने कुल की वान पर मेरे और स्वामी के अन्न से उऋण होकर मरे, उससे भला और क्या। सामन्तो का सिरताज बना हुआ धीर पुंडिर बडा मौज से दिन बिता रहा था अपने कुटुम्ब के लोगों के साथ जीवन के सब सुख सारे करता और घोड़े पर सवार होकर शिकार खेला करता था इसी प्रकार तीन महीने व्यतीत होगए। तब इसफ मियां नाम का एक खदाई ऐराकी घोडे लिये हुए दिल्ली में आया। पुंडीरने उसके पांच सौ घोड़े खरीदे। जिसमें से दो तिहाई दाम तो उसी समय चुका दिये गये। एक तिहाई बाकी रहा। एक दिन मौका पाकर जैतराव और चामडराव ने इसफ मियां से कहा कि तुम लोग किस माया में पड़े हो, दामों की लालच में कहीं जान भी न गवा बैठना, यह सुनकर सौदागर बिचारा सन्न होगया उसने कहा तब क्या करें। इस पर चामडराय ने सलाह दी कि करना क्या है तुम खुद उसे खपा दो यह बात सौदागर के मन भा गई। उसने डेरे पर आकर तुरत अपने साथियों को सहेज कर सब बात कह सुनाई, तब उन सब की यह सलाह पड़ी कि आज अपने यहां जलसा किया जाय और उसमें धीर को भी बुलाया जाय। जब ऐन आधी रात का समय हो तो हम सब लोग जुडकर उसे मार डालें। तदनुसार सौदागरों के डेरे पर जलसे की तय्यारी हुई। सब तरफ़ जरदोजी और कार-चोबी के काम के कपडे बिछ गये, मसालों की रोशनी होने लगी और मीरमारूफ का गुमाश्ता मालिनखान पुंडीर के पास गया। उसने कहा कि हमारे यहां आज विशेष उत्सव है सो कृपाकर आज उसमें सम्मिलित होने को पधारिये। धीर ने मीर का न्योता स्वीकार कर लिया। भोजन करके पान चबा कर कपड़े पहिन कर और अतर फुलेल लगा कर धीर मीर की मेहमानी में जाने को तैय्यार हुआ ही था कि तब तक समाचार मिला कि शहाबुद्दीन सिन्धु पार कर चुका है और बराबर बढता हुआ आरही है, यह सुनतेही धीर ने वहां का जाना बंद कर दिया और तीन हजार पुंडीर वंशीय राजपूतों भाई बेटों को लेकर शाही सेना का मोर्चा बांधने को सन्नद्ध हुआ। उधर साठ हजार सेना सहित जैत-राव और चामडराय भी तैयार होगए।

धीर पुंडीर के घर आ पहुचने पर जब चामंड राय और जैतराव ने सुना कि शहाबुद्दीन बडी भारी सेना सजकर चढा चला आ रहा है तब वे सब सामन्त मिल कर कहने लगे कि भाइयों बडा विकट समय आ उपस्थित हुआ है। जिनके जोट के बल अब तक किसी को नजर में न देते थे सो तो सब कन्नौज में कट गए। राजा का सो यह हाल है कि कि की रहते नहीं जानता अब जो हम लोग जरा भी सुस्ती करें तो सारी बुराई का ठिकरा हमारे सिर फूटेगा

अपना धर्म नहीं चूकना है। इतने में चन्दबरदाई भी आ पहुचा और चामडराय से बोला कि अब ऐसा करो जिसमें बात रहे। आपसे अधिक कहना सुनना वृथा है आप सा स्वामिसेवी और कौन होगा जिसन राजा के आज्ञानुसार बेडी तक पहिनना स्वीकार कर लिया। कन्ह, गोयन्द और निड्डर राय आदि सबकी पगडी इस समय आपके सिर है सो बेडी उतार डालो और युद्ध के लिये तैय्यार हो जाओ। देखो चामडरायजी पुराने मुखियाओ में इस समय आपही रह गए हो सो ऐसा करना जिसमें राजा पृथ्वीराज की बात न जाने पावे। चामडराय ने कविचन्द की बात मानली और पैर से बेडी उतार डाली। उसने पूजन पाठादि नैमित्तक कार्यों से निश्चिन्त हो हथियार बाध कर घोड़ा मगाया और सात हजार दाहिमा राजपूतों के साथ सजकर वह राजद्वार पर आ पहुचा। जब पृथ्वीराज ने चामडराय को इस तरह से स्वतन्त्र घोडे पर सवार देखा तो वह क्रोध के मारे जल गया। वह आपही आप झल्ला कर कहने लगा, प्रथम तो अपराध करना और दूसरे मेरी आज्ञा उल्लघन करना! और कुछ नहीं मै कैमास की निवाहता जाता हू और कुछ सम्बन्ध का भी विचार है नहीं तो अभी बतला देता। राजा का ऐसा मिजाज बिगडा देखकर चामडराय घर को लौट गया, पीछे से राजा का भेजा हुआ लोहाना पहुचा और चामड के साम्हने बेड़ी रख कर बोला कि इन्हे पुन अगीकार कीजिए। क्रोध के मारे चामडराय काप रहा था। वह बोला अच्छा भइ मालिक है चाहे जो करैं, उनकी आज्ञा मुझे सब प्रकार से स्वीकार है, नहीं तो लोहाना तुम मुझे जानते हो। यह कह कर चामडराय ने पुनः पैर में बेड़ी चढ़ा ली।

इस समय शहाबुद्दीन के साथ मे अपनी अपनी सेना सहित बारह मुसल्मान सरदार और भी थे जो कि बाहर से उसकी सहायता के लिये आए थे। उनके हाथियों के गले में गगा जमुनी झूमले पड़ी हुई थीं, उनके सिर पर छत्र छहरा रहे थे और आगे आगे नकीब लोग अलकाब अलापते हुए चलते थे। उन सब के बीच में शहाबुद्दीन का हाथी था। डफ ढोर भेरी सहनाई आदि रण वाद्य बजाते हुए जब सर्प व्यूहाकार मुसलमान सेना पास में आपहुची तब पृथ्वीराज ने अपनी राजपूत सेना का मयूर व्यूह रचा जिसमें चामडराय चोंच, जैतराव चक्षु नख और पिंड पुंडीर और पुछ स्थान पर वलिभद्र राय कूरभ थे और एक पक्ष पर पृथ्वीराज और दूसरे पर जामराय यादव थे। उधर मुसल्मान सेना की हरावल में हाथियों की बीड़ थी तिसके पीछे सवार और सबसे पीछे पैदलों की कतारें थी पर राजपूत सेना विलक्षण रीति से व्यूह बद्ध की गई थी। इसमें चामडराय के साथ आगे एक कतार हाथियों की उसके पीछे पैदल और सवार बराबर से थे, उनके पीछे निखालस सवारों की सूती और सबके पीछे फिर हाथियों की कतारें थीं। इन सब हाथियों का नेता जामराय यादव था जो कि स्वय एक दीर्घ काय दतारे हाथी पर सवार था। उसके हाथी का सब साज काला था और वह स्वय काली पोशाक पहने हुए था।

अस्तु ज्योंही दोनों फौज दिखादाव मे आई कि मुसल्मानी सेना की तरफ से जबूरे और हथियार छूटने लगे परन्तु राजपूत सेना इस कौशल से व्यूह बद्ध हुई थी कि उस अगम अग्नि वर्षा से भी उसकी कोई विशेष क्षति न हो सकी क्योंकि प्राय· सुविस्त्रित और दृष्टव्य भाग में हाथियों की भरमार थी और पैदल और सिपाही बीच में भरे हुए थे फिर भी व्यूह मुख चामडराय ने इस रीति से कमाण्ड किया कि राजपूत सेना बराबर बढ़ती हुई मुसल्मानी सेना के मुठ भेर में जा भिड़ी। उस समय पिंड विभाग में स्थित पुंडीर वशी घुडसवारों ने शाही सेना पर इस जोर मे धावा किया कि हरावल सब टूट गई और हाथी चिक्कार कर उलटे भाग उठे और अपने ही पक्ष के सवार और पैदलों को पददलित करने लगे। यह आपत्ति देखकर तत्तार खा ने पैदल और सवारों को सावधान किया और आप स्वय अग्रसर होकर मयूर

व्यूह का पिंड भेदन करने के लिये वह दाहिने तरफ से बढ़ा परन्तु तब तक कूरंभ वंशी राजपूतों ने बांई अलग से तिरछा धर दबाया। ये लोग प्रायः सब घुड़सवार थे इनकी अचाचक घुस पैठ से इतना बड़ा शाही दल-बल बिलकुल बेसिलसिले होगया। अब तक शाही दल की तरफ से जो अग्न्यास्त्र धुक रहे थे सो एक दम बंद होगए। तलवार और बर्छे की पारी आगई, दोनों ओर के रणोन्मत योद्धा खूब दिल खोल कर लड़े, समस्त युद्धस्थल में रक्त की कीच मच गई जहां तहां लोथें अँट गई और मुर्दों के ढेर लगे देख पड़ने। इस समय पुंडीर वंशी राजपूतों ने बड़ा ही रणकौशल और पराक्रम दिखाया। स्मरण रहे कि यह घटना तीसरे पहर की है। जब कोई चार घड़ी दिन शेष रह गया तब मुसल्मानी सेना ने कुछ जोर पकड़ा परन्तु यहां की हरावल में तो चामंडराय था जो ताल के वृक्ष की तरह अचल हो कर डटा था। फिर भी मुसल्मान लोग किसी तरह सम्हल कर समूह बद्ध हो गए और राजपूतों पर अग्नि वर्षा करने लगे। इसी अवसर में धीरसेन ने पीछे से धावा किया और पैदलों को मार काट करते हुए वह शहाबुद्दीन के हाथी तक आ पहुचा, इस घड़ी भर में धीर के साथ के तीन सौ पुंडीर कट मरे और बाहर से आए हुए बारहों सर्दार बादशाह के चारों ओर जुट पड़े जिससे किसी प्रकार कुशल रही। इतने में सन्ध्या हो गई और उस दिन अष्टमी मंगलवार को युद्ध समाप्त हुआ। इस युद्ध में कवि चन्द का पुत्र, धीर पुंडीर का भाई और कुल मिला कर कोई पांच सौ राजपूत खेत रहे और उधर मुसल्मानी सेना के आठ सौ सिपाही मारे गए।

कायर चोर और चकोर तो भोर होने की सूचना से संकुचित होते है, परन्तु धीर पुरुष और बाल वधू सदा सूर्योदय की इच्छा करते है। लीजिए रात्रि बीत गई तारागणों का तेज मंद पड़ गया। दिशायों में लालिमा छागई और गंधर्व-गण देवताओं के गुण गान करते हुए अन्तरिक्ष में विहार करने लगे। इधर युद्ध भूमि में भी नाम मात्र की निद्रा से निश्चिन्त होकर शूर वीर लोग शस्त्र सम्हाल कर मरने मारने पर सन्नद्ध होगए। अरुणोदय होतेही एक तरफ से मुसल्मानी दल बल लिए हुए शहाबुद्दीन और दूसरी ओर से राजपूत सामन्तों की सेना सहित पृथ्वीराज दोनों आकर सम्मुख मिल गए। उस समय दोनों दलों के हाथी चिक्कारते और शूर सिपाही मार मार पुकारते हुए दिशाओं को प्रतिध्वनित कर रहे थे, बीच बीच में आनन्दमग्न योगिनी भी किल किल शब्द करके कल्लोल करती हुई नाच रही थीं।

दोनों दीनों में दुधारे चलने लगे, लोहा झनझनाने लगा, घोड़े हिनहिनाने लगे, बान सनसनाने लगे और तन से सिर जुदे हो होकर नट कैसे बटा उछलने लगे। दोनों ओर की दो चतुरंगिनी सेनाए परस्पर खिल्लमिल्ल होकर अष्टरंगिनी तरंग दिखलाने लगीं। सेल, सांग, बरछी, बगुरदा और तलवार आदि अस्त्र शस्त्र चलते हुए तीन पहर होगए, मार करते करते दोनों दलों के योद्धाओं के हाथ हार सी खाने लगे। पर मन फिर भी हरे भरे थे, इसलिये मुह किसी ने न मोड़ा वरन और तमक तमक कर वार करने लगे, अपने अपने दीन की दुहाई देकर जब एक दूसरे पर तलवार का वार करते थे तो दोनों का एकही साथ वारा न्यारा होजाता था। एक दूसरे की छाती में सेल पेलता तो दूसरा उसके पंजर को छुरी से उसेल देता था। एक एक का पेट फाड़ देता तो दूसरा उसका कलेजा निकाल लेता था। घोड़े के कंधे पर हाथ पड़ता तो वह भी दो हो जाता और क्या कहें सामंतों की तेज तलवार से हाथी का गंडस्थल भी ककड़ी सा कट जाता था। विशेष आनन्दमय दृश्य तो तब होता जब दो ज्वान बरनी से लड़ते लड़ते थक जाते और अंत में एक दूसरे के सीने में कटार पेलते हुए गले से मिल जाते थे। इसी तरह वीरत्व के बंदरों ने गरजते तड़पते हुए वीभत्स और करुणा का कीच मचा दिया। किसी के हाथ पैर कट गए तो योंही पड़े मार मार पुका-

रते थे, कोई कंठगत प्राण होजाने पर पानी पानी पुकारते थे, कहीं बेसुड के हाथी खडे झूलते थे और कहीं बेमुड के घोडे उछलते कूदते थे। बीच बीच में श्वान, शृगाल, गीध, कौआ आदि मासाहारी जन्तु जुदे सांझे की सपंति वाले भाइयों की भांति लड रहे थे।

आज कुछ ताजी फौज लिए हुए पृथ्वीराज अब तक अलग खडा हुआ था। जब उसने यह समासान अवसर देखा तो एक तरफ से अनायास धावा धर किया और शाहबुद्दीन को धर दबाया। यह देख कर मुसल्मान सरदारों मे खलबली मच गई, वे सब लोग दीन की दुहाई देते हुए बादशाह के हाथी के अगल बगल ऐसे जुट पडे जैसे गुड पर चींटी जुट पडती है। उसी अवसर पर धीर पुंडीर और शाह का चौनजरा हुआ। शाह फौरन घोडे पर से उतर कर हाथी पर चढ गया और उसने महावत को आज्ञा दी कि धीर पर ही हाथी झुकाया जाय अस्तु उधर से शाही हाथी ने दाव की और इधर से धीर पुडीर ने अपने घोडे को बाग बतलाई। उधर से वे बाहरी बारहो सर्दार और मुसल्मान सेना शाही हाथी के गिर्द मडली बांध कर चले और इधर से पुडीर की सहायता पर राजपूत सर्दार चले। बादशाह को देखतेही धीर बोला "सचेत होजा मैं आया"। उस समय मानो साक्षात् जालधरी माता उसके साथ थी और भैरव भूत वैताल लिए चौसठ योगिनी भी उसी का पक्ष समर्थन करती थी। रुडमाल के लिये मुडो को लेने के निमित्त आये हुए शिवगण भी वीर वर धीर पुडीर के पराक्रम पर मोहित होकर उसी के सखा होगए। उन शिव गणों ने कैलास पर जाकर शिवजी को शीश समर्पण किये और पार्वतीजी को गजमुक्ता दिए। मोती देख कर पार्वतीजी नें पूछा ये कहां से पाये तब गण बोले धीर पुडीर के प्रताप से। यहां पर तो आगे द्वापर में अर्जुन कृष्ण भीष्म और भीम आदि योद्धा होगये है या इस समय धीर पुडीर है। अहा कैसा निश्चल मन सच्चा स्वामी सेवी क्षत्री है कि जिसको जीवन का मोह और ससार सुख की छाह कहीं से छू भी नही निकली है।

धन्य क्षत्रियों का धर्म! धर चला जाय पर धरती न जाय। जान जाय पर धरती न जाय। जान जाय पर कुल की लज्जा न जाय! क्यों न हो उनका यह सिद्धान्त बहुतही सारगर्भित है कि मरना जीना कोई वस्तु नहीं है। जैसे जीर्ण वस्त्र को त्याग कर लोग नवीन वस्त्र धारण करते हैं ऐसेही यह जीव जीर्ण कलेवर को त्याग कर सदा नवीन शरीर धारण करता रहता है। मरन जीवन का लौट फेर केवल पाच भौतिक शरीर से सवन्ध रखता है न कि जीवात्मा से, क्योंकि जीवात्मा अमर है अभेद्य है अजित है और अनन्त है उसे सासारिक दुःख सुख आदि की कोई वासना बाधित नहीं कर सकती। उसका अवरण स्वरूप सत्रह तत्व वाला[१] लिंग शरीरही मरन जीवन के प्रपच में पडा रहता है।

अतः कर्मों के वशीभूत होकर जीव इस जन्म के भोग भोगता है और अत में उन्हीं कृतकर्मो की वासना में लिप्त होकर जन्म धारण करता है। अस्तु जो क्षत्री वीर अपना धर्म जान कर धरा क्षेत्र में पराक्रम करते है और सासारिक वासनाओं से अलिप्त मन होकर लडते भिडते कटते मरते है वे कर्म बन्धनों से मुक्त होकर मोक्ष पद पाते है।

अहा उस युद्धस्थल में हाथी हाथी से सवार सवार से और पैदल पैदल से भिड कर जी खोल खोल कर अपना अपना पौरुष पराक्रम और रण कौशल दिखला रहे थे। तलवार टूट जाती तो कटार लेते और काल की सी जीभ शत्रु की छाती में पेल देते। यदि यह भी न होता तो सेल से काम लेते परन्तु उसके भी न होने पर मल्ल युद्ध करते। वाह रे शूर वीरो जान की परवाह न करके मतवाले हाथी के खींसों मे लटक जाना तुम्हाराही काम है। वाहरे माई के सपूतो मर्द होकर कट मरना पर राजपूतों पीछे न हटना, ऊंची मूछ का पानी रखने के लिये

[१] सत्रह तत्व पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच कर्मेन्द्रिय पच प्राण और मन बुद्धि।

जीते जी ऊंचा हाथ रखना। मुसलमान भी दीन की दुहाई दे देकर हाथ करते थे। इस मार मार में योगिनियों का व्यापार सबसे अलग था। वे रणवाद्यों की ध्वनि में ताल दे देकर तायेई तायेई थेई नाचती और किलकार शब्द कर करके कलोल करती थीं। इस अखंड रण मंडल के बीच मे वीर धीर पुडीर का पौरुष विशेष सराहनीय था। वह कभी इधर तो कभी उधर बिजली सा लपकता फिरता था। किसी का सिर उडा देता, किसी का उदर विदार देता किसी की खोपड़ी काट देता और किसी को बीच से चीर कर दो कर देता था। उसके एक ही हाथ मे दो दो हाथियों के दात मूली से कट कट गिर पड़ते थे। अधिक कहा तक कहें वह एक रणवीर धीर पुंडीर वीर मीर पीर लोगों को हजार होकर देख पड़ता था। इसी तरह मार काट करते हुए जब वह शहाबुद्दीन के सम्मुख जा पहुचा तो सारे मुसल्मान सर्दारों की आंखों में चकाचौंधी लग गई और उसने बढ़कर शाह के हाथी के कुभ में तलवार का हाथ मार ही तो दिया। फिर क्या था धीर का हाथ खाते ही हाथी खड़ा न रह सका। वह बैठ गया और एक तरफ से हाड़ा हम्मीर ने और दूसरी तरफ से धीर ने लपक कर शाह के दोनों बाजू जा पकड़े। उस समय शाह तो नीची निगाह करके रह गया परन्तु उस के सर्दारों ने बड़ा बल बाधा। इधर धीर के साथ में मीर हुसैन का पुत्र था सो वह इन लोगों से लड़ने लगा। उसे देखते ही शाह की आखों में खून उतर आया और उसने एक बाण सधान कर उसका वारा न्यारा कर दिया, दूसरे बाण से धीर को मारा, तीसरा बाण चढ़ाते हुए कमान छीन ली गई, पर फिर उसने तलवार निकाली तब धीर ने तलवार छीन कर उसकी मुश्कें चढ़ालीं और उसे घोड़े के कंधे पर डाल कर अपने लश्कर की तरफ मुड़ पड़ा। मुसल्मान सर्दारों ने बहुतेरा सिर पीटा पर एक भी पेश न गई अत में सब लज्जित होकर भाग उठे और धीर पुडीर की पैज पूरी पडी। वाह रे धीर जहां नौ सौ हाथियों का घेरा फिरा हुआ था एक लाख मीर जादे नगी तलवारें लिए मरने मारने पर डटे थे और कुल मिलाकर चार लाख हथियार पानी से बरस रहे थे, उनके बीच में से शाह को पकड लाना तेरा ही काम था!

शहाबुद्दीन के पकड़े जाने पर मुसल्मानी सेना भाग उठा। उसका जो साज सामान था सो राजपूतों ने लूट लिया। इधर दिल्ली में आनन्द बधाई बजने लगी और गजनी में कुहराम पड गया। इस लड़ाई के समय बादशाह के साथ में सेरन नाम का एक खवास था और उसके पकड़े जाने के समय वह हाथी पर खवासखाने में बैठा था। जिस समय राजपूतों ने बादशाह के हाथी को घेर लिया और चारों ओर से विकट मार काट होने लगी तो सेरन बादशाह को उसी अवस्था में अकेला छोड़कर भाग गया और अपनी प्राणप्यारी स्त्री के पास पहुचा परन्तु जब उसकी स्त्री ने अपने पति की यह करतूत सुनी तो वह बड़ी लज्जित हुई और बोली हे स्तनों के भारस्वरूप पामर, धिक्कार है तुझे जो अपने मालिक को इस हालत में छोडकर भाग आया. अगर तू वहा कट मरता और मैं तेरी मिट्टी के साथ दफन होती तो बेहतर था मगर इस तरह भाग कर आने पर तो मुझे तुझ से बात करने में शरम आती है। वह बोला, अये नेकबख्त मैंने तेरे ही लिये किसी न किसी तरह अपनी जान बचाई वरनः उस मौके से बच कर आना क्या आसान काम था। देख अगर जिन्दगी है तो सब कुछ है अगर वहा मारा जाता तो मारा ही जाता अगर बच गया तो देख मालिक को बचा लाता हू न। यह कह कर सेरन घर से चलता हुआ और रात दिन चल कर दिल्ली आन पहुचा।

इधर शाह को पकड़नेवाले धीर पुडीर का बड़ा महत्व बढा। राजा पृथ्वीराज ने बहुत कुछ इनाम

इकराम निज से दिया और सब सामंतों में तथा प्रजा में उसका बडा सम्मान बढ गया। धीर पुंडीर भी अपनी पैज पूरी करके खुशी के मारे फूला अग नहीं समाता था। निदान गज़नी से आया हुआ उक्त सेरन खवास धीर पुंडीर के खवास बैजला के घर गया और उसे मिलाकर इस बात पर पक्का किया कि वह शहाबुद्दीन के छुटकारे का उपाय करे।

एक समय वृद्ध बैजल ने धीर से कहा कि तुम्हारी पैज पूरी हो चुकी अब बादशाह यहा से जीता भागता छूट निकले तो बडा नाम हो। उस पर धीर ने कहा कोई बडी बात नहीं है सब हो जायगा। दस पाच दिन धैर्य्य धरो मै स्वयं महाराज से कह कहा कर शाह को छुडवा दूंगा। बैजला ने वहा तो हा कह दिया पर सेरन के उसकाने से उस का धैर्य्य न रहा और जब धीर के साथ दरबार में गया तो समय पाकर वह कह उठा कि जिस शाह ने मेरे[1] लाल धीर को पकड़ कर छोड़ दिया उसे यदि महाराज जीव दान दें तो बड़ा सुयश हो। बैजला के मुंह से यह बता सुनते ही धीर के तलुए से लारें छूटने लगीं और वह तलवार निकाल कर बैजला को मारने के लिये झपटा परन्तु पृथ्वीराज ने डपट कर रोक दिया। उसने कहा धीर क्या लडकपन करते हो इतनी बडी लडाई हुई जिसमें हिन्दू मुसल्मान दोनों दीन के हजारों आदमी कट मरे। हजारों हाथी घोडे और ऊँट काटे गए वहा तुम्हारी तलवार तृप्त नहीं हुई अब इस अस्सी वर्ष के बूढे को मार कर बहादुर बन जाओगे। बैठो एक तरफ। पृथ्वीराज के ऐसा कहने पर धीर शान्त हो गया परन्तु बोला कि श्रीमान् जिस बात को मैंने इसे रोक दिया उसी को इसने भरे दरबार में कहा। मैंने अपनी पैज पूरी की। शाह को पकड कर आप के पास हाजिर कर दिया अब आप की इच्छा। मैं तो जानता हू कि उसके हिमायती आप ही आप से प्रार्थना करेंगे इसी से मैंने इस मूर्ख से कहा था कि दस पाच दिन रह जा।

महाराज पृथ्वीराज एक ही चतुर पुरुष था उसने घटना के अभ्यतर एव बात के तात्पर्य्य को समझ लिया। उसने उसी समय शहाबुद्दीन को बुलाए जाने की आज्ञा दी। तदनुसार जब शहाबुद्दीन दरबार में आया तो लज्जा एव सकोच के कारण उसकी आख ऊँची नहीं होती थी परन्तु राजा पृथ्वीराज ने उसकी बाह पकड कर उसे गद्दी के बराबर बैठ लिया और तीस हाथी और पाच सौ घोड़े जुरमाने में लिए जाने की सूचना देकर उसे छोडे जाने का हुक्म सुना दिया। यह सुनतेही शहाबुद्दीन ने खडे होकर तीन बार कुर्निस की और अधीनतापूर्वक राजा की कृतज्ञता स्वीकार की। इसके पश्चात् राजाज्ञा पाकर वह पुनः बैठ गया। तब पृथ्वीराज ने कहा शहाबुद्दीन तुम एक देश के बादशाह हो। पर बड़े ही धृष्ठ और निर्लज्ज हो। तुम बार बार यहा से छोड़ दिए जाते हो फिर भी चढ़ाई करके आते हो अब मै समझता हू कि तुम्हारा इसी में कुशल है कि फिर कभी दिल्ली की हद्द में कदम देने का साहस न करो। यह कहकर पृथ्वीराज ने शाह को सुखपाल में बिठाकर गजनी को बिदा किया और दड वसूल कर लाने के लिये लोहाना आजानबाह को उसके साथ में लगा दिया। रास्ते में जाते जाते भागी हुई फौज के बहुत से आदमी शाह के साथ होलिए और सब सकुशल गजनी जा पहुचे। वहा से उसने दड में देने के लिये कहे हुए हाथी और घोड़े देकर लोहाना को बिदा किया। लोहाना के लौट आने पर पृथ्वीराज ने दड में आया हुआ सारा सरजाम धीर का दिया और चार गाव का पट्टा और भी दिया।

जबसे शाह सिरोपाव देकर गजनी को बिदा किया गया तबसे धीर का दिमाग और भी बढ गया। उसके मन में इस बात का बडा गर्व होगया कि मैंने शाह को पकड़ कर छुडवा दिया। वरन दो एक बेर उसने इस बात को कह भी डाला

(१) यह बैजला खवास धीर का पुश्तैनी नौकर था उसने धीर के बाप को भी गोद मे खिलाया था।

और यह भी कहा कि इस समय यह राज्य पुंडीर वंश के बाहुबल पर स्थिर है। चामंडराय और जैतराव तो सदा इसी ताक झाक मे रहते थे कि कब मौका मिले और कब पुंडीर को जड से उखाड दें। निदान एक दिन उन्होंने हँसी हँसी राजा को सूचित कर दिया कि धीर को बडा अभिमान है। साथ में कुछ और भी निमक मिर्च मिलाया होगा। बस वह बात राजा के चित्त में चढ गई इसलिये उसने आज्ञादी कि पुंडीर वंश का पुतला दिल्ली में न रहे। सब इसी दम बाहर हो जाय।राजा की ऐसी आज्ञा पाकर धीर का परिवार लाहौर को चला गया। लाहौर उस समय दिल्ली राज्य का परगना था।

धीर पुंडीर उस समय कागडे को गया हुआ था। जब उसने यह समाचार सुना तो उसके मन में बडा दुःख हुआ वह मनही मन सोचने लगा हा नीति शास्त्र का बचन बहुतही ठीक है कि राजा किसी का मीत नहीं होता। हा जैसे क्लीव के हृदय में धैर्य्य और मतवारे के चित्त में चेतना नही होती वैसेही राजा को किसी की प्रीति नहीं होती। सर्प को कितनाही दूध क्यों न पिलाइए पर जरा सी पूंछ कुचलने पर वह फन किए बिना न रहेगा। ऐसेही राज लोग जनम भर की करनी बिसार कर जरा सी बात पर बिगड जाते है। सच है राजा, वेश्या, अग्नि, यम, अतिथि, याचक और बालक ये लोग पराया दुःख सुख न देख कर अपने मतलब के यार होते है। सर्प स्त्री और राजा अपने वश में भी क्यों न हों पर इनका विश्वास न करे क्योंकि इनकी प्रकृति ही ऐसी है कि जरासी बात में टेढे हो जाते है। इनको आखे नही होतीं, कान होते है जिसने जो कह दिया सो मान लिया, खैर राजा का क्या दोष दें, हुआ सो हमारे भाग्य से हुआ। अवसर पाकर शत्रुओं ने पेच किया और उनका दाव पूरा पड गया। अब हो न हो राजा के राज्य में भी रहना अच्छा नहीं है। यह सोच कर वह वहीं का वहीं सिन्धु पार करके गजनी जा पहुंचा। धीर पुंडीर की आवाई का समाचार पातेही शहाबुद्दीन उससे बडे आदर से मिला और उसे साठ गांव का परवाना और खिलत देकर उसे अपने दरबार के सर्दारों में स्थान देने का आग्रह किया परन्तु धीर ने कहा कि मै महाराज पृथ्वीराज के रहते और का मुसाहिब नहीं हो सकता। आपसे केवल बैठने के लिए स्थान चाहता हू और कुछ नहीं। इस पर शहाबुद्दीन ने उसे फाटक के किनारे ढिल्ला पहार की बैठक दी। धीर गजनी से सीधा ढिल्ला पहार को चला आया और वहीं मे उसने अपने पुत्र पावस पुंडीर के नाम एक पत्र लिख भेजा कि तुम लोग यहा चले आओ। इस पत्र के पातेही पुंडीरों ने लाहौर में लूट मचा दी और वहा का खजाना तोसखाना आदि सब लूट करके वे धीर के पास चले गए। लाहौर की लूट की बात सुनकर धीर अपने भाई बेटों से बडा बिगडा पर करता क्या होनी थी सो तो होही चुकी थी।

परन्तु जब पृथ्वीराज ने लाहौर की लूट का हाल सुना तो उसने धीर पुंडीर के नाम एक परवाना भेजा जिसमें लिखा था कि धीर तुम गई बात का बिचार छोड़ दो और यहा चले आओ मै तुमसे प्रसन्न हू। यह पत्र पाकर धीर पुंडीर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसने अपने भाग्य सराहे। उसने सोचा खैर जो होतव्य थी सो हुआ। इसका सोचना वृथा है, अब उचित यही है कि जाकर अपने सनातन स्वामी से मिलू और उसके चरणों पर शीश रख कर अपने अपराधों की क्षमा मागू। यह बिचार कर धीर ने कागडे होकर दिल्ली को जाने की तैयारी करदी। अभी कूच को दो एक दिन बाकी थे कि इतने में कुछ घोडों के सौदागर आ पहुचे। धीर ने सोचा चलो यह भी अच्छा हुआ महाराज को नजर करने के लिये कुछ घोडे भी लेते चलें। अस्तु उसने उनमे से कोई दो हजार घोडे चुन लिए और दाम देकर सौदागरों को बिदा किया।

असल में वे घोडे शहाबुद्दीन की फरमाइश से लाए गए थे। अतएव जब सौदागर लोग गजनी पहुंचे तो शहाबुद्दीन ने घोडों को ना पसन्द किया

उसी समय किसी ने उससे कह दिया कि सिरे के घोडे तो ये धीर पुंडीर को बेच आए हैं।यह सुनतेही शहाबुद्दीन ने उन सौदागरों के सब घोडे छीन लिए और उन्हे कैद भी कर दिया। परन्तु उनमें से कुछ लोग निकल भागे और धीर के पास आकर रोए कि आपके पीछे हमारी यह दुर्दशा हुई है। तब तो धीर ने उन्हे अश्वासन देकर अपने पास रक्खा और अपनी तरफ से शहाबुद्दीन को एक पत्र लिख भेजा जिसमें बड़े शिष्टाचार पूर्वक निवेदन किया कि यदि आप चाहे तो घोडे मुझसे ले सकते है पर गरीब सौदागरों को दुःख देने से क्या। धीर पुंडीर का पत्र पाकर शहाबुद्दीन ने सौदागरो को छोड दिया और उनका सब रुपया भी कौडी पाई करके चुका दिया।तब तो वे सौदागर सब के सब धीर के पास चले आए और वहीं कुछ दिन के लिये कायम मुकाम होगए। धीरे धीरे सौदागरों और धीर में यहां तक राव रसम बढ गया कि वे एक दूसरे के यहा जाते आते और खास खास बातों में एक दूसरे की सलाह लेते थे।

अन्त में इसका परिणाम बड़ा भयानक हुआ, क्योंकि शहाबुद्दीन को इसका पता लग चुका था कि अब धीर पुनः दिल्ली को जाने वाला है इससे अब वह धीर के प्राणों का गॉहक बन गया। प्रकास में तो कोई अनियमित कार्रवाई कर नहीं सकता था। इसलिये उसने इन सौदागरो को ही अपने कुचक्र की चाभी बनाया। उसने अपने दरवार के दो एक गुप्तचर भेज कर सौदागरों को इस बात पर राजी कर लिया कि वे पुंडीर को मार डालें। सामाजिक धर्म एव व्यापार की प्रथा के अनुसार वे इस अकर्तव्य पर सहमत नहीं होते थे परन्तु जब उन्हें दीन की दुहाई दी गई तो विवश होकर उन्होंने पुंडीर के प्राण लेना स्वीकार किया।इसके लिये चार हजार पठान भी मदत पर दिये गए।

धीर के परिवार के लोग तो पहिलेही रवाना हो चुके थे, रहा आप सो सौदागरों को साथ लिए हुए कागडे की तरफ चला। अभी अटक पार होकर एकही पडाव तै हुआ था कि सौदगरो ने किसी आवश्यक कार्य्य के मिस उसे अपने डेरों में बुलाया। सब लोग इधर उधर जुट कर बैठ गए और बातें करने लगे तब तक मदत को आए हुए पठानों के सरदार कालन खा ने पीछे से धीर की गरदन पर एक हाथ दिया। सिर तो अलग जा गिरा पर धड ने तलवार पकडी और बहुत से शत्रुओं को मार गिराया अन्त में वह भी समाप्त होगया। अहा! जिस वीर धीर पुंडीर ने इतने बडे शाह शहाबुद्दीन को हाथों हाथ पकड लिया उसकी यह दशा कि सौदागरों हाथ मारा जाय। हा! कौन जानता है कि कब क्या होने वाला है इससे इस पानी भरी खाल पर गुमान करना वृथा है।

पुंडीर की लाश लेकर गजनी को भेज दी गई जिसे देखकर शहाबुद्दीन का दिल दग होगया। परन्तु इधर जब दिल्ली में पृथ्वीराज ने यह समाचार सुना तो उसकी आंखों में पानी भर आया और वह अपनी मूर्खता पर पछताने लगा। पृथ्वीराज ने यह समाचार भादो सुदि १५ को पाया था घडी भर अछता पछता व र राजा फिर अपनी प्रिया सयोगिता के साथ बरसात का रस लेने लगा और इधर जो कुछ होता था सो होने लगा।

हा यह कहना भूल गए थे कि जब धीर के भाई बेटों ने यह हाल सुना तो वे पठानों पर चढ़ दौडे और एक एक को मारकर उनके कुल का सहार कर दिया।

विवाह समय।

(पैंसठवां समय।)

पृथ्वीराज का पहिला विवाह ग्यारह वर्ष की अवस्था में मंडोवर के पड़िहारों के यहां हुआ था। इस विवाह में नाहरराय पडिहार मारा गया और उसकी कन्या पृथ्वीराज की रानी हुई। दूसरा विवाह १२ वर्ष की अवस्था मे रानी इंछनी के साथ हुआ। इस विवाह में पट्टन के राजा भीमदेव से विग्रह हुआ और इछनी का भाई जैतराव पृथ्वीराज का अनुचर बना। १३ वर्ष की अवस्था में दाहिमी चामंड की बहिन व्याही गई जिसके गर्भ से राजकुमार रेनसी का जन्म हुआ। १५ वर्ष की अवस्था में हम्मीर पुत्री का पाणि ग्रहण हुआ। १५ वर्ष की अवस्था होने पर चौहान ने रामराय बडगुज्जर की कन्या से विवाह किया। सोलहवें वर्ष में पूर्व देश पर चढाई करके यादवों की कन्या व्याही। सत्रह वर्ष की अवस्था में देवगिरि के राजा रामधन की कन्या से विवाह हुआ और अठारहवें वर्ष की अवस्था में उसने पज्जून की बहिन को रानी बनाया। उन्नीसवें वर्ष में चदपुंडीर की पुत्री से विवाह हुआ। बीस वर्ष की अवस्था में उसने असंख्य सेना काटकर शशिव्रता का हरण किया। इक्कीसवें वर्ष उसने हंसावत्ती को व्याहा और बाइसवें वर्ष उसने सारंगसुता को अपनी रानी बनाया और अन्त में ३६ वर्ष की अवस्था में उसने कन्नौज में चौसठ सामंत कटाकर संयोगिता का पाणि ग्रहण किया।



बड़ी लड़ाई समय।

(छाछठवां समय)

संपूर्ण प्रकार के राजसी सुखों का उपभोग करता हुआ चित्तौरपति रावल समर सिंह सुख से समय बिता रहा था। एक दिन रात्रि को उसनें स्वप्न में देखा कि एक नवयौवना सुन्दरी स्वेत वस्त्र धारण किए हुए कभी रोती थी और कभी हंसती थी। यह देखकर रावल जी ने उससे पूछा कि तू कौन है और तेरी ऐसी अवस्था क्यों है। इसपर उस स्त्री ने उत्तर दिया कि मै दिल्लीराज्य की राज्यश्री हू और कुछ दिनो के उपरान्त गजनी-पति शहाबुद्दीन मेरा स्वामी होगा। इसी दु:ख से दुखी होकर रोती हू। इतने में रावल जी की आख खुल गई तब उन्होंने अपनी प्रिया पृथा से स्वप्न का सब हाल कहा। उसने यह भी कहा कि मुझे अपनी योग दृष्टि से भी यही होनहार जान पडती है कि अब हिन्दुस्तान का राज्य हिन्दुओं के हाथ से सदा के लिये विदा होगा क्योंकि पृथ्वीराज के पकडे जाने पर राजकुमार रणसी साका करेगा और फिर मुसल्मान लोग यहा के सर्वभौम्याधिकारी होंगे।

दूसरे दिन भरी सभा मे रावल समरसिंह जी ने अपने सब सरदारों से कहा कि राजकुमार रतन सिंह[१] को चित्तौर की गद्दी देकर हम निगम-बोध को जाना चाहते है। रावल जी का यह प्रस्ताव सब सरदारो ने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया। रतनसिंह जी के पाट बैठने का सुदिन सोधा गया। एक तरफ आबूगढ, जालौर, बूंदी, गोरगढ, धार, उज्जैन और रणथभोर आदि के राजाओं के नाम बुलावे के परवाने भेजे गये। उन राजाओं के आजाने पर बडी धूम धाम से रतनसिंहजी का राज्याभिषेक संस्कार किया गया और फिर देवराज को किले की रक्षा का भार सौंप कर रावल जी पृथा सहित दिल्ली को रवाना हुए। रावल जी ने कुवार सुदि ३ को चितौर से कूच किया और पहिले दिन दस कोस के ऊपर डेरा किया। यहा तक रावल जी के साथ सत्तर हजार सवार और सब छोटे बडे सरदार उन्हे पहुचाने आये थे। इस पड़ाव से चलते समय रावल जी ने केवल एक हजार सवार पचास हाथी और कुछ खास खास सरदार अपने साथ ले लिये और सब को चितौर को लौट जाने की आज्ञा दी। कहने को रावल के साथ केवल पचास हाथी और हजार सवार थे पर वे हजारो का मुंह मोडने के लिये अलम् थे। वे मद-कपोल कालेत कुजर ऐसे डील डौलदार और बलवान थे कि लता पताओं की कौन कहे बडे बडे गढों को ढकेलकर ढहा देने में समर्थ थे। उनपर जरतारी झूलें पडी हुई थीं, जडाऊ हौदे और अम्मारी कसी हुई थीं और उनके ऊपर रंग बिरंगी बैरखें फहराती थीं। उनके कुम्भ पर लाल लाल श्री तो ऐसी सुशोभित होती थी मानों कट गिर पर गुलाल बगर गया हो। ऐसेही घोडे क्या आग के चिनगारे थे। बाग बतलातेही हवा से बातें करते थे। स्थान से छुट कर स्थिर खडा रहना तो मानो उन्होंनें सिखाही न था, नवीन वयस्का वेश्या की भाति थिरकते हुए वे पाषान को भी खोद कर खट्टा कर देते थे। ऐसे अरबी, ताजी कच्छी, काठियावाडी आदि अनेक जाति के अनीले घोडो पर सिर पैर से सुनहली, रुपहरी पाखरें पडी हुई थी और सब साज भाति भाति के रत्नों से जडे हुए थे। उनकी पीठ पर डटे हुए दीर्घकाय और बलवान राजपूत जवान ऐसे भले मालूम देते थे जैसे साक्षात् [illegible] रूप देवता विराज रहे हों। एक ही सी चमचमाती हुई भालों की अनी ऐसी मालूम होती थी मानो समुद्र की लहर उमडी आ रही हो। इस प्रकार कायरों के

[१] रावल समरसिंह का ज्येष्ठ पुत्र कुंभाजी था पर वह किसी कारण से रूस कर दक्षिण को चला गया था और वहा के दरबारी बादशाह का मुसाहिब होकर बिदुर नगर का जागीरदार बन गया था। (रासो मू० छन्द ६)

कलेजे को कलमलित कर शत्रु दिल को दहलाने वाले राजपूत दल बल को लिए हुए रावल जी कूच दर कूच चला चल चलाते हुए जुम्बनगढ़ के पास आगए। आगे आगे सब सेना सहित रावलजी चलते और पीछे सौ सवारों के बीच में महारानी पृथाबाई का डोला चलता था। जुम्बनगढ से चल कर जिस समय रावलजी के डेरे आमेर में पड़े हुए थे तो इधर जुम्बनगढ़ के स्वामी रनधीरराय को किसी ने बहकाया कि यदि इस समय धावा करके रावलजी के डेरे लूट लिए जावें तो बड़ा अच्छा हो। एक तो असंख्य द्रव्य हाथ आवे और नाम होजाय, दूसरे आबेर की भूमि भी अपने हाथ लगे।यह बात रनधीरराय के मन में भी भागई और उसने उसी समय कुछ सवार और तीरदाज सिपाही लेकर आमेर की तरफ़ धावा कर दिया। जब रनधीर की फ़ौज पास आ पहुची तब दूतों ने रावलजी को समाचार दिया क पटनपुर (१) का रावत रनधीर आप पर चढ़ा चला आरहा है। यह समाचार पाकर रावलजी ने अपने साथियों को सचेत कर दिया और सब सेना को व्यूहबद्ध करके सावधान हो बैठे। रनधीरराव के साथ में बाइस हज़ार सवार और पैदल और एक हज़ार हाथी थे। उसने अपनी सेना को चक्र व्यूहाकार रचकर ठीक आधी रात के समय धावा किया। इधर से रावल समरसिंह जी तो रनिवास तथा डेरों के बचाव पर सन्नद्ध रहे और कन्हराय ने रनधीर का साम्हना किया। बडी देर तक दोनों दलों में खूब मारा मार होती रही परन्तु वीर कन्हराय ने शत्रु की सेना के व्यूह को भेद कर रनधीर का साम्हना किया। कन्ह को देखतेही रनधीर राव तलवार सूत कर झपटा और जुड़ते ही उसने एक हाथ मारा पर हाथ खाली पडा। इससे कन्ह के कन्धे में केवल हलका छोपा हुआ परन्तु इधर से कन्ह ने जो साग का वार किया तो वह रनधीर के कलेजे में पार होगई जिससे वह बेहोस होकर गिर पड़ा और उसके साथ के सब लोग भाग उठे। इस प्रकार से शत्रु को जीत कर रावल समरसिंहजी ने खेत साफ करवाया। दोनों तरफ़ के मृत योद्धाओं को दाह करवाया और अपनी तरफ के जो घायल सिपाही थे उन्हें चित्तौर को भेज दिया।

रावलजी की अवाई का समाचार पाकर संयोगिता का प्रधान दस कोष आगे बढ कर पेशवाई करने गया और पाच कोस से सब सामंतों ने पेशवाई की। सब लोगों ने साथ जाकर रावलजी को निगम बोध पर डेरे दिए और पृथा कुमारी महलों में आकर रानी इंछनी के पास रहने लगी। रावल जी के डेरों में स्थानापन्न होतेही पहिले तो संयोगिता की तरफ़ से भार बरदाई तथा चना चन्दी की जिनस भेजी गई इसके बाद रनिवास की दासियां कलेऊ लेकर गई। रावल समरसिंहजी के डेरों पर जाने वाली दासियों ने अपने सहज सुन्दर शरीर को पहिले तो दर्पण की भांति धो मांज कर उज्वल किया फिर अंग अंग आभूषण सवारें और नाना भाति के बहुमूल्य वस्त्र पहिने। उनके गोरे गोरे मुख पर लहराती हुई अलकें ऐसी भली लगती थी जैसे चन्द्रमा पर नागिन कलोल कर रही हो। उनकी वेनी में गुहे हुए सोने फूल अंधियारी रात में दीवाली से देदीप्य होते थे, उनके हृदय पर रुरती हुई मोतियों की माला पर्वतों के बीच गंगधारा सी सुशोभित होती थी अधिक कहा तक कहें वे चन्दवदनी मृगलोचनी रोम रोम से ऐसी बनी ठनी थीं कि देखने वाले का दिल दूनर हो जाता। अस्तु वे सची की सी सखिया पचीस भाव पूरी, साठ भाव मिठाई, बत्तीस भाव थाना पापार, अचार पान मसाला वगैरह और कई प्रकार का बना हुआ मास तथा फल फलहार लेकर डोलियों में बैठी हुई रावलजी के डेरों पर पहुची। दूर से ही सब दासियों

[१] खबरि मन रावर समर हैरयौ पट्टन राय।

सदयो हुं पृथिराज को ल्यो चित्रकूट सुभाय ॥१॥

मालूम होता है रनधीर राय चालूक्य वंश में से कोई होगा और संभव है कि कचरा राय के मारे जाने पर सब अपने भाव में आगए है और पृथ्वीराज से भीमदेव का बदला लेने के लिए सन्नद्ध हों।

ने डोली पर से उतर कर उक्त सामग्री आप हाथों में लेली और एक उच्च सिंहासन पर बैठे हुए रावल समरसिंह जी के साम्हने गई । वहा जाकर उन्होंने सामग्री आगे रख दी और नीची नजर करके एक तरफ खड़ी होगई। उनमें से जो मुखिया थी उसने हाथ जोड कर विनयपूर्वक कहा कि रावलजी की अवाई का समाचार सुनकर महारानी संयोगिता को बडी प्रसन्नता प्राप्त हुई। उन्होंने हम लोगों को श्रीमान् के चरणों में यथोचित भेट भलाई निवेदन करने के लिये भेजा है। इसके उत्तर में रावलजी ने रानी संयोगिता को उचित शब्दों में आशीर्वाद दिया और दासियों को बैठ जाने का आदेश किया।

स्मरण रहे कि ये दासियां रावलजी की पूर्व परिचिता थीं इसलिए उन्हें कोई विशेष संकोच न था। रावलजी ने हँस कर उन दासियों से कहा—हा यह शिष्टाचार तो हुआ अब असल समाचार तो कहो क्या हाल है। यह सुनतेही दासियों ने गद्गद कंठ होकर कहा "महाराज क्या पूछते हैं। सभरी नाथ चौहान तो संयोगिता के चेरे होरहे हैं। रात दिन उन्हीं के पास रहते है। राज काज की कौन कहे उन्हें अपने बिगाने की भी सुधि नहीं है।क्या आपको मालूम नहीं है कि यहा हाहुलीराय हमीर रुठ कर घर बैठ रहे है, धीर पुंडीर को सौदागरों ने मार डाला, भोहाराय गंगातीर पर समाप्त हुए। चामंडराय के बेड़ी डाल दी गई और कैमास को राजा ने अपने हाथों से मार डाला, फिर कन्नौज को जाकर सब सूर सामन्त कटा आए और संयोगिता को ब्याह लाए। उसी दिन से सब बातें उलटी सीधी हो रही है। जिन लोगों को दिल्ली राज्य की हद में कदम देना दुस्तर था,जो अबतक इस दरबार के तावेदार थे वे अब स्वतंत्र राजा बन बैठे हैं और क्या कहे जो अब तक दंड भरते आए है वे अब दंड लेने को उद्यत है। इसी तरह और सब जानिए, हम कहातक कहें"। यह सुन कर रावलजी का हृदय भर आया, वे माथे पर हाथ रखकर कुछ देर लौं निपट निश्चेष्ट बैठे रहे फिर सावधान होकर उन्होंने दासियों को पान दिये और मुस्कुरा कर संयोगिता के लिये कपूर देकर उन सब को विदा किया।

पाहिले दिन संयोगिता के तरफ की पहुनई हो जाने के पश्चात् दूसरे दिन जैतराव ने रावल जी का न्योता किया। उसने आटा मैदा बेसन घी चीनी साक तरकारी दही दूध आम पापड़ मसाला आदि सब पाच सौ मन जिस डेरों पर पहुंचा दी और वहीं आप जाकर सब सत्कार साधा। उसके बिहाने होकर चामंडराय दाहिमा ने और फिर बलिभद्रराय कछवाहा, रामदेराय खींची, जामराय यादव, सिंह प्रमार आदि सामंतों ने बारी बारी से रावल जी का सत्कार साधा। सब सामंतों की रोल हो चुकने पर रेन कुमार की तरफ से गोठ रची गई। इसमें गुरुराम पुरोहित चंदबरदाई और सामंत लोग सब निगम बोध पर इकट्ठे हुए।भांति भांति के मेवा मिष्टान तर तरकारी और पकवानादि परोसे गए और सब साहबों ने रुचिपूर्वक भोजन किये। भोजन हो चुकने पर दरबार जम गया। कुछ देर गुरुराम की पोथी पुरान की वार्ता होती रही। फिर कविचंद कवित्त उच्चारण करने लगा। उसने कहा चितौरगढ को जीत देन वाले प्रतापी खुमान राय की संतान में उत्पन्न रावल जी आप को कवि कोटिशः आशीर्वाद देता है। उज्जैन राज को बांधने वाले, भीम देव को संहारने वाले, रणथंभ से दंड लेने वाले और आबू गढ़ को जीत कर पुनः दे देने वाले इस पृथ्वी तल के इन्द्र राजा पृथ्वी राज के सिवाय यदि कोई दूसरा छत्रधारी है तो आप ही है। तत् पश्चात कविचन्द ने कन्हराव को आशीर्वाद दिया। उसने कहा रनधीर राव को खेत में खपाकर रावल जी की रक्षा करने वाले रनधीर तुम धन्य हो। क्षत्रियों के छत्तीसो कुलों में श्रेष्ठ आप के और रावल जी के ऊपर सदा शेष नाग के फन की छाया रहे। तदापरान्त रावल जी ने कविचन्द से पूछा कि यदि तुम चंद वंश की उत्पति के विषय मे कुछ जानते हो तो कहो। तब कविचन्द बोला कि महाराज! एक

समय 'वनखंड पतारे में' श्रीमहादेव जी पार्वती जी के साथ एकान्त क्रीडा कर रहे थे। उसी समय घूमते फिरते सप्तर्षि वहा जा पहुचे परन्तु महादेव जी की उक्त अवस्था देख कर वे लज्जित होते हुए वहा से लौट आए। महादेव जी के मन में भी बड़ा सकोच हुआ और क्रोध आया इस लिये उन्हों ने श्राप दे दिया कि मेरे सिवाय और जो पुरुष इस बन में आवे वह स्त्री हो जाय। इसके कुछ काल अनन्तर राजा मार्तण्ड ने पुत्र के लिये यज्ञ रचा। वशिष्ठ जी उसके होता थे। जब आहुति पूर्ण हुई तो यज्ञ कुंड में से एक कन्या निकली परन्तु वशिष्ठ जी ने कुछ ऐसा मंत्रोपचार किया कि वही कन्या पुरुष होकर अग्नि के बाहर आई। परन्तु एक समय यह कुमार शिकार खेलता हुआ भूलकर उपरोक्त श्रापित बन में जा पहुंचा और स्त्री हो गया। उसे बन में अकेला फिरते देखकर चन्द्रसुत बुध उस पर मोहित हो गए और उसे अपने घर लिवा ले गए। जब वशिष्ठ जी ने यह समाचार जाना तो उन्हो ने महादेव जी की सेवा बदगी करके यह बरदान पाया कि जबतक वह बुध के घर रहे तब तक स्त्री रहे और जब अपने पिता के घर आवे तो पुरुष हो जावे और ऐसा ही एक एक महीने पारी पारी से हुआ करेगा। निदान बुध के सयोग से जो उस मार्तण्ड के पुत्र की सतान हुई उसी से चन्द्र वंश चला। परन्तु जिस समय यमदग्नि पुत्र परशुराम जी ने क्षत्रियों के नाश कर देने का प्रण किया तो पृथ्वी पर से क्षत्री मात्र को निर्बीज कर दिया, उन्हों ने बीस बार ऐसा ही किया और इकीसवीं बार सारी पृथ्वी कश्यप को दान करके वे आप दंड कमंडल धारण करके तपस्या करने चले गये। अब कश्यप को इस बात का सोच हुआ कि पृथ्वी की रचना कौन करेगा। इसलिये उन्हों ने अपने केशों की रज से एक पुरुष उत्पन्न किया और कश्यप के केशों के रज से उत्पन्न हुए पुरुष की सतान क्षत्री रजपूत कहलाए।

इस प्रकार से इधर उधर का बहुत सा वार्तालाप हो चुकने पर दरबार बरखास्त हुआ और सब लोग अपने अपने घर गए। पीछे से दो हाथी, एक सजा हुआ घोड़ा एक तलवार और जरतारी सिरोपाव रावल जी ने कवि चंद के घर भेजा। एक हथिनी एक मोतियों की माला और दो अगूठी उन्होंने अटाले के अध्यक्ष बन वीर पड़िहार को दिए। कुछ दिन में सूर्य सक्रान्ति आई उस पर्व में रावल जी ने एक लाख का नगदी जेवर और कारूडा ग्राम प्रोहित गुरुराम को दिया। इस के सिवाय रावल जी दिल्ली के ब्राह्मणों और चारणों को नित्य प्रति डेढ सौ मोहरें दान किया करते थे। रोज रोज राजपूत और सामत लोगों का जमाडा जुड़ता और सबका समय मौज से कटता था, हा रावल जी के अटाले में यह आज्ञा थी कि एक से करोड़ तक जो भोजन की अभिलाषा करके आवे सो विमुख न जाने पावे, तीसरे चौथे पृथाबाई भी डेरों पर हो जातीं और भाई की रसीली करतूत का रोना रो जाती थीं।

चैत्र मास के अंत में एक रात्रि के पिछले पहर राजा पृथ्वीराज ने स्वप्न म देखा कि बारहों आभूषणों से सुसज्जित श्वेत साड़ी पहिने हुए एक सर्वाङ्ग सुन्दरी स्त्री भयभीत होकर कह रही थी कि हाय माणिकराय के वंश में कोई ऐसा है जो मेरी रक्षा करे। उस स्त्री से पृथ्वीराज ने पूछा हे सुन्दरी तु कौन है और क्या चाहती है। उसने उत्तर दिया कि मै भूमि देवी हू और अपना भोक्ता चाहती हू। पृथ्वीराज ने पूछा कैसा भोक्ता? धनवान दाता उदार स्वरूपवान इत्यादि कैसा पति चाहती है। तब स्त्री ने हँसकर उत्तर दिया कि इन में से एक भी मेरे योग्य नहीं है। मेरा बर वह हो सकता है जो बीर हो और रणधीर हो। इतने में राजा की आख खुल गइ तो देखता है कि वहा कोई भी नहीं है। इस स्वप्न से राजा का चित्त अत्यन्त उदास हुआ और उसने प्रातःकाल सयोगिता से सारा हाल कहा। उसने यह भी कहा कि हे प्रिया आज मेरे मन में बार बार यही आभास होता है

कि अब मेरी राज्यश्री शीघ्र ही मुझसे विदा होना चाहती है। उस उज्वल वस्त्र वाली स्त्री की झाकी मेरी आखों मे झूलती है। हा न जाने विधाता को क्या मंजूर है। यह सुनकर सयोगिता बोली हे राजेन्द्र ऐसे सपने हुआ ही करते हैं ऐसी व्यर्थ चिन्ता को चित्त में स्थान न दीजिए। दूसरे ज्ञानी महात्मा लोगों का यह मत है कि ससार के यावत् दृश्यमान पदार्थ असत्य हैं और ये एक न एक दिन अवश्य ही नष्ट होंगे। तब मान को रख कौन सकता है। इसलिये सब सोच विचार परहर कर जो कुछ साम्हने है उसी का उपभोग करना उचित है। यह सुनते ही पृथ्वीराज ने अपनी जीवनाधार प्राणप्यारी सयोगिता को आलिङ्गन करके उसका मुख चूम लिया और आगे पीछे का सब सोच विचार छोडकर वह पुनः तन मन से उसी में रत हो गया।

गजनी के गुप्तचर तो सदाही दिल्ली मे विचरा करते थे अतः एक ने जा कर शहाबुद्दीन से कहा कि जहापनाह अब दिल्ली की हकुमत का रग दरहम बरहम हो गया है। इस वक्त चूकना मुनासिब नहीं है। इस पर शहाबुद्दीन ने तत्तारखा, खुरासानखा, रुसतमखा, फीरोजखा और जमाल-कामालखा आदि सरदारों को बुलाकर दिल्ली का सारा समाचार कह सुनाया और कहा कि इस वक्त मेरे दिल में दफे दफे यही उम्मेद होती है कि अगर इस मौके पर हमला किया जावे तो जरूर है कि यह जबरदस्त दुश्मन हाथ आ जावे। इस बाबत ज्यादा कहना सुनना फजूल है, तुम खुद ख्याल कर सकते हो कि जिसने मुझे कई बार गिरफ्तार करके छोड छोड दिया उसके गिरफ्तार करने की मेरी कितनी जबरदस्त आरजू ख्वाहिश होगी और अगर तुम ऐसे बहादुरों के रहते मेरी यह मुराद बर न आई और यह ख्वाहिश पूरी न हुई तो तोबा है ऐसी मनहूस जिन्दगी पर। यह सुन कर सब सरदारों ने उत्तर दिया कि जरूर हुजूर की बार बार मुरादें बर आवे, फौजकशी की जावे और दुशमन को गिरफतार कर लिया जावे मगर पेश्तर इसके मुनासिब है कि चंद दानिशमद जासूस भेजकर वहा का सब खातिर ख्वाह हाल दरयाफ्त कर लिया जावे। यह बात शहाबुद्दीन के मन में भी आ गई और उसी समय चार विचारवान दूत दिल्ली का हाल चाल जानने के लिये प्रेषित किए गए।

साम दान दड भेद नीति के चार अङ्गों मे परम चतुर ये चारों चर फकीरी वेष धारण किये हुए चले चले दिल्ली जा पहुंचे और कायस्थ कुलकपूत कुटिल धर्मायन तथा चलतू चरचाओं द्वारा वे वहा की धार्मिक हाल चाल चरचने लगे। इधर जब बहुत दिन हो गए और उनका कोई समाचार न मिला तो एक दिन शहाबुद्दीन ने उकताकर तत्तारखा से कहा कि मामला क्या है अबतक एक भी जासूस वापिस नहीं आया? इस पर तत्तारखा ने कहा कि जासूसों को देर होना ही यह बतलाता है कि उम्मेद अच्छी है। जिस तरह बहुत दिन तक याद अल्लाह में रहने का अच्छा नतीजा होता है वैसेही जासूस या ऐयारों का देर में आना अच्छा नतीजा लाता है। दूसरे उनके खतरे का कोई ख्याल नहीं है क्योंकि वहा हमारे माकूल मददगार मौजूद है।

अभी बादशाह और वजीर की बातें समाप्त भी न हुई थीं कि दरबान ने आकर समाचार दिया कि दिल्ली से एक जासूस आया है। यह सुनते ही दोनों दग हो गए और वह जासूस उसी समय सम्मुख बुलाया गया। तत्तारखा ने उससे पूछा कहो क्या हाल है। इसपर वह बोला, राय पिथोरा रानी सयोगिता के रग मे रँगा हुआ है। हाहुली राय हम्मीर नाराज होकर घर बैठ रहा है, महलों के दरवाजे पर हाथी घोड़े और सिपाहियों के पहरे नहीं रहते, मरदाने लिबास में औरतें लाठी लिए हुए पहरे पर रहती हैं वो बहादुर राजपूत सरदार जो राजा की जबान पर जान कुरबान करते थे इस वक्त बिलकुल बेदिल हो रहे हैं। तब एक दूसरा दूत आया उसे भी शाह ने बुलाया। उसने सलाम

करके कहा कि हुजूर दिल्ली की वह रौनक गई, वहा के सरदारों में से आपस का इत्तिफाक तो कत्तई रुखसत हो गया है, कोई अपना पराया नहीं पूछता जो जिसके जी में आता है सो करता है। रियासत में इल्म अदब का नाम निशान बाकी नहीं है और हुजूर के तरफदार लोग काफी तौर अपना दबदबा जमा रहे हैं इतने में तीसरे दूत के आने की इत्तिला हुई और वह भी अन्दर बुलाया गया, वजीर के पूछने पर उसने कहा 'हुजूर इसमें कोई शक नहीं कि अब हिन्दुओं का इकबाल गिर गया है क्योंकि उनका सरताज महाराज तो अपनी माशूका में इसतरह मतलूब है कि उसे अपने तनोबदन की होश बाकी नहीं है और उसके सामंत जो उसकी बुराई सुनना भी गुनाह समझते थे इस वक्त खुद उसका गिला करते है और बसबब आपस की नाइत्तिफाकी के एक दूसरे की जड काटने पर अमादः हैं। इस लिये हमारे वास्ते सब रास्ते साफ हैं।" लीजिये चौथा चर भी आ पहुचा। उसने सविनय निवेदन कर कहा "जहापनाह आलीजाह इस वक्त दुश्मन के घर पर वाकई कहरे खुदा है, जहा देखिये वहा जनानियों का जोर है और मरदों के हक मौकूफ है, घर घर लोग यही चरचा करते हैं कि जहा हर एक शख्स खुद मालिक हो, नाबालिग की हुकूमत हो या औरतों का जोर हो उस मुल्क में रहना भी मुनासिब नहीं है। राजा ने चामडराय के पैरों में बेडी डाल दी, अपने वजीर कैमास को मार डाला है, और जिन बहादुरों के बाजू के बल वो अब तक जोर पर था उन्हें कन्नौज में कटाकर चौपट कर चुका और वहां से जो जयचद की लड़की को लाया है बस उसी के पीछे पडा रहता है, खुलासा यह है कि हुजूर के इकबाल से दुश्मन सब तरह से खस्ता खराब और बरबाद हालत में है। चामडराय बलिभद्रराय जैतराव देवरावबगारी हाहुलीराय हमीर जामराय जादो जो ये दो चार सरदार कन्नोज से बचकर आ भी गये थे सो भी अपनी अपनी ढाई चावल की खिचड़ी पका रहे है। बस इस वक्त बिला तरद्दुद फौजकशी की जावे खुदा चाहे तो हाथोहाथ फतह दस्तयाब होगी क्योंकि दुश्मन की दिलेरी की अब कोई सूरत बाकी नहीं है।

विश्वासपात्र जासूसों की जबानी ऐसे समाचार सुनते ही शहाबुद्दीन का चोला चंगा हो गया। उसने उसी समय मंत्री तत्तार खां को आज्ञा दी कि फौरन फौज की तैय्यारी करो और कधार हबसी गक्खर तुरक बलोच वगैरह सरदारों को भी मदत के लिये आने के परवाने भेज दो। गोकि दुश्मन इस वक्त सब तरह से कमजोर है मगर फिर भी अपनी तरफ से इन्तजाम पूरा होना चाहिये।

निदान शुक्ल पक्ष की द्वितिया रविवार को शहाबुद्दीन ने गजनी से कूच कर दिया और वहीं से एक सुतर सवार के साथ दिल्ली को लिख भेजा कि होशियार हो मै आया, इस परवाने के पहुचते ही दिल्ली में लोगों की पोटरी सूखने लगी। आबाल वृद्ध बनिता सबके हृदय में भय छा गया। जो जहा थे सो तहा सन्न रह गए और अपने गये दिनों को विसूरते हुए भविष्य भावी पर सोच विचार करने लगे। शहर के सब बनियें महाजन नगरसेठ श्रीमत साह के यहा दौडे गए और बोले कि इस समय चूहे की दौड मॅगरे तक है। बीरसिंह साह, श्रीधर साह, मोदी सुदर दास, राय श्रीकरन, सोहनमल, मोहनमल, अमरसिंह, हरदास, उदयसिंह, गणपतराय, गणेशगुप्त, घड़ासिंह, धनूशाह, जोधराज, टोडरमल, ठाकुरसिंह, बिरसिहराय, गुलाबसिंह, भैरों, भाई, मोहनराम, मथुराप्रसाद, लखनलाल और शकर साह खत्री इत्यादि अत्यन्त सुकुवार बड़े बड़े महाजन जो कभी घर से बाहर पैर न देते थे इस समय उपनए पांव चल पड़े। आहा सर से पैर तक जड़ाऊ जेवरों से लदे हुए वे महाजन लोग ऐसे स्वरूपमान थे जैसे दिव्य स्वरूप देवताओं के अंश से अवतीर्ण हुए हों, नित्त तीर्थ वृत कथा पुराण सुनानेवाले ब्राह्मणों को दान देनेवाले और उत्तम व्यापार से द्रव्य संचय करने वाले पर अकारथ एक कौड़ी भी न खोकर लेखे जोखे मे

यमराज के भी कान काटनेवाले वे महाजन करोड पती से कोई कम न थे। प्रत्येक के चहल पहल मय महल लक्ष्मी से परिपूर्ण थे और उन पर पताका फहराते रहते थे। वे सब महाजन श्रीमत-शाह के पास जाकर कहने लगे कि सुनते है कि गजनीपति शाह चढा चला आता है और महाराज के यहां अब तक खबर भी नहीं है। अब हमारे बाल बच्चों की कौन रक्षा करे।

नगरसेठ श्रीमन साह उन आगन्तुक महाजनों से बडे शिष्टाचार से मिला। उसेन सबसे कुशल प्रश्न पूछकर टीका इतर पान आदि से विधि पूर्वक सबका यथा उचित सत्कार किया और उनसे कहा " आप लोग आए सो बडी कृपा की परन्तु जबसे शाह की चढाई का समाचार सुना तब से मेरे चित्त को आपही चैन नहीं है, मैं यही सोच रहा था कि इस समय क्या किया जाय। तब महाजन लोग बोले कि अतक यह बात हमारे ध्यान में नहीं आई कि किसके द्वारा अपनी पुकार महाराज तक पहुंचावें। जिन लोगों को हमारी प्रजा वर्ग की हीर पीर है सो तो इस समय स्वय तीन तेरह हो रहे हैं। चामडराय बिचारे बेड़ियों में पडे हैं, कैंमास की तो वह गति हुई कि ईश्वर किसी की न करे, रानी इछनी महलो में रहते हुए भी राजा के पास नहीं पहुच सकती, विचारा मधुसाह प्रधान तो दरबार से ही निकाल दिया गया। रहे राजकुमार रेनसी सो लडके हैं। अब हम किसके यहा जाय और किस से कहें सो हमारी समझ में कुछ भी नहीं आता। इस रूपराशि सयोगिता ने तो ऐसी सत्यानाशी की कि कुछ कहते नहीं बनता। शाह जी! जब हमारी बुद्धि ने कुछ भी काम नहीं किया तब आपको कष्ट देने आये है। तब श्रीमतसाह बोला सत्य है इस समय बडा टेढ़ा समय आ पड़ा है खबर पहुचाने की और बात समझाने की कौन कहे पुरुष का पुतला भी राजा का मुहं नहीं देखने पाता, आठों पहर द्वार पर जटैन दासियों का पहरा रहता है। और की कौन कहे राजकुमार रेनसी भी आज छै महीने से पिता का मुह देखने को तरस रहे है और इन सारे प्रपञ्चों का मूल कविचन्द है। सो आप तो घर बैठा मौज करता है और सारी प्रजा में हाय हाय की पुकार मच रही है. न उसकी सलाह से राजा कन्नौज को जाकर संयोगिता को लाता न ये सारे व्यतिक्रम खडे होते। हा इस समय एक बात मेरे ध्यान में आई है वह यह है कि हम सब लोग मिलकर गुरुराम के घर चले क्योंकि वही एक ऐसे हैं जो महाराज को पूजन कराने के लिये राज जाया करते है और उन्हें हमारी हीर पीर भी है।

यह बात सब महाजनों ने स्वीकार की। तब उपस्थित मडली सहित श्रीमतसाह गुरुराम के घर गया। इन लोगों के द्वार पर पहुचते ही ज्योंही दर-वान ने गुरुराम से खबर की सब महाजनों के सहित नगर सेठ श्रीमतसाह आप से मिलने आये है त्योंही गुरुराम बाहर निकल आया और पहिले नगर सेठ से फिर वारी वारी से सब महाजनों से कुशल प्रश्न पूछ कर उसने सबका यथा योग्य आदर सत्कार किया। गुरुराम ने नगर सेठ से पूछा कहिये कैसे आना हुआ है। तब श्रीमतसाह बोला कि आप को नहीं मालूम कि गजनीपतिशाह दिल्ली पर चढा चला आता है उसके आतक से सारे पञ्जाब प्रान्त में हलचल मच गया है, प्रजा के लोग जहा तहां भागते चले जाते हैं पर हम लोग कहा भाग कर जांय। सामत सरदारों का तो यह हाल है कि पुडीरों ने आप लाहोर लूट लिया चामडराय को बेड़ी पड जाने से दाहिमा सरदार जुदे बेदिल हो रहे है, हम्मीरराव अपने घर बैठ रहे, लोहाना आजानबाह अजमेर की गढ़ रक्षा पर हैं और सब है सो नये नये लडके है सो अपने अपने मन के है। क्या कहिये जब से सयोगिता के चरण पधारे हैं तब से सब चौपट हो गया है। यह हाल चाल देख कर हमारे जी में तो यही आती है कि कोई सुने तो सुने नहीं तो सब अगण खंगण छोडकर दंड कमर लेंव और जगल को चले जाय। हम लोग किस

लेख म हैं। चित्तौरपति रावल समरसिंह जी आज बीस रोज से आये हुए हैं और राजा ने अब तक बात भी नहीं पूछी। विचारने की बात है कि भला वे भी अपने मन में क्या कहते होंगे। तात्पर्य्य यह है कि हम लोग आपको यह कष्ट देने आये हैं कि अब आपही हमारी पुकार राजा तक पहुचावें क्योंकि उधर महाराज आपको मानते पूजते हैं और इधर हम लोगों पर आपका स्नेह है।

यह सुनकर गुरुराम बोला शाह जी सो तो सब ठीक है। यह चरित्र देखकर हमारी आपे बुद्धि ठिकाने नहीं है। हम करें सो क्या करें। हम तो पोथी पत्रा सुनाकर दक्षिणा लेते हैं, आशीर्वाद देते हैं, बहुत हुआ तो जनेऊ गठिया दिया और चन्दन घस दिया। हम राजकाज की बातों को क्या जानें. इस समय कविचन्द का काम है वे बड़े वाक्‌चतुर कवि हैं औंधा सीधा सब कर सकते हैं आप सब लोग उन्हीं के यहा चले तो अच्छा हो। बहुत हुआ तो हम भी आपके साथ चलेंगे।

आहा जिस भूमि के वास्ते पाण्डवों ने सगे भाइयों का सर्वनाश कर दिया, इतने बड़े त्रिलोकीनाथ ने बलि के साम्हने हाथ उठाया, जरासंध ने गुरु के साथ गदा युद्ध किया और जिस भूमि के लिये सुरपति इन्द्र दधीच से हड्डी मागने गए उस भूमि का भोक्ता होकर जो राजा अपने जीते जी दूसरे को अपनी भूमि भोगने दे उसके समान नीच और कौन है, हा उसने अपनी माता का यौवन नष्ट करने के लिये वृथा ही जन्म ग्रहण किया। हाय! कहते हुए खेद होता है कि इस समय महाराज पृथ्वीराज की प्रजा ब्राह्मण के घर पर पुकार मारने गई! लम्बे चौड़े तिलक लगाये पगड़ी बाधे माला पहिने हुए राजप्रोहित गुरुराम सुखपाल पर सवार हुआ। श्रीमतसाह अपनी पीनस में बैठे और सब बनिये महाजन हाथी घोड़े पालकी नालकी चौडोल आदि अपनी अपनी सवारियों पर सवार होकर सबके सब कविचद के घर पहुचे। जब कविचद ने गुरुराम की अवाई का समाचार सुना तो वह जैसा बैठा था वैसा ही उठ दौड़ा और गुरुराम को घर में लिवा लेगया। वहा उसने अपनी स्त्री से कहा कि धन्य भाग हमारे जो आज राजगुरु घर पर पधारे हैं लज्जा छोड़कर महाराज की पूजा करो और चरणों पर सिर धरो। यह सब शिष्टाचार हो चुकने पर कविचद ने कहा कि कहिये महाराज आज कैसे कृपा की। यह सुनकर गुरुराम मुस्कुरा कर बोला, कविचद मुझे बनाते हो, तुम तो बरदाई हो अपने इष्ट के बल से अदृश्य का भी मर्म समझने में समर्थ हो फिर जो कुछ हो रहा है सो आखों देखते हो और मुझ से पूछते हो कैसे आये क्या हाल है? इसके बाद गुरुराम ने महाजनों का अपने पास आना और उनका दुःख रोना आदि सब वृतान्त आद्योपान्त कह सुनाया,[१] जिसे सुनकर कविचद का भी दिल भर आया और वह उसी समय गुरुराम के साथ राजमहल को जाने के लिये तैय्यार हुआ।

दिल्लीपति महाराज पृथ्वीराज के पूज्य पुरुष गुरुराम प्रोहित और कविचद बरदाई दोनो एक चौंडोल पर सवार हुए और राज्य महल की तरफ चले। आगे आगे कविचद की चौंडोल उसके पीछे श्रीमंतसाह की सुखपाल और उसके पीछे और सब महाजन और सैकड़ों आदमी शहर के तमासगीर लोग चलते चलते राजद्वार पर पहुचे तो वहा देखते क्या है कि न तो वे मतवारे हाथी झूमते हैं, न घोड़े खुरी करते हैं, न शूर वीर सिपाहियों का पहरा है। इन सब के स्थान पर सैकड़ो पुरुष वेषधारी स्त्रिया हाथ में लाल लकड़ी लिए हुए हाजिर है। इन लोगों के पहुंचते ही वे मार मार करती हुई दौड पड़ी, बिचारे बनिये महाजन तथा

[१] इसके बाद के दोहे में गुरुराम ने कवि से पूछा कि वह सयोगिता कैसी है जिसपर राजा ऐसा मोहित है और मालती छद में कवि ने संयोगिता के नखशिख का वर्णन किया है सो भी कोई विशेष युक्तिमय नहीं है। यह तो स्पष्ट ही है कि उक्त नखशिख निष्प्रयोजन होने से साक्षात क्षेपक है इससे उसका साराश छोड़ दिया गया है॥

और सब लोग तो भाग उठे परन्तु गुरुराम और कविचन्द ने हिम्मत न हारी। इनके सिर पर सैकड़ों लाठियां छा गईं मार हल्ला हो उठा परन्तु ये बढ़ते ही गए और किसी तरह प्रथम पौरी तक जा पहुंचे। इस हल चल का समाचार सुनकर रानी इछनी ने एक दासी को भेजा कि देख तो कौन है क्या है। उसने जाकर रानी इछनी से कहा कि कविचन्द और गुरुराम आए हैं। तब रानी ने अपनी एक निज परिचारिका को आज्ञा दी कि तू जाकर इन बादियों को शान्त कर और कबि से पूछ कि क्या आज्ञा है। निदान यह परिचारिका आई और कवि और प्रोहित को विनयपूर्वक प्रणाम करके उसने उन्हें सादर आसन पर बैठाया और कहा क्या आज्ञा है, तब कविचन्द ने कहा आज्ञा क्या है मेरा यह पुर्जा राजा तक पहुंचा दो। उस पुरजे में लिखा था—शहाबुद्दीन गोरी चढ़ा चला आता है। अब न तो नरनाह कन्ह चहुआन है न बुद्धिविशारद मंत्री कैमास है और न चदपुंडीर, गोयन्दराय, लगरीराय अत्तताई, सलख, लक्खन बघेल, भोहा चन्देल आदि वे सामंत हैं जिनके बल भरोसे आप सदा निश्चिन्त रहे। अब कृपा करके अपनी प्रजा की खबर लीजिए। हे राजन सचेत हो जाओ वृथा राज्य न बोर दो। तुम गोरी के हो रहे और गोरी तुम्हारी ताक में है।

कविचन्द के हाथ से पुर्जा लेकर दासी भी डरती हुई सिकुड़ती सी धीरे धीरे पृथ्वीराज के पास पहुंची, उसके पैरों की आहट पाकर राजा ने जो नजर उठाकर देखा तो दूसरे महल की दासी को आते देखकर उसने पूछा क्या है। तब दासी ने कहा कि महाराज! द्वार पर बड़े लोग जमा हैं कविचन्द ने आप को यह पुर्जा दिया है और कहा है कि राजन राज्य जाता है! यह कह दासी तो चपत हुई और राजा पुर्जा पढ़ने लगा। पुर्जे को पढ़ते ही उसका सारा शरीर लाल हो गया। उसने सर्प की तरह फुसकारते हुए आप ही आप कहा हा अब भाट और ब्राह्मण राज्य की रक्षा करेंगे और पुर्जा फाड़कर फेंक दिया। राजा का ऐसा रुख देखकर संयोगिता भी सिकुड़ गई और ताड़ गई कि है कुछ दाल में काला। अतः वह कुछ लज्जित और मलिन होती हुई बोली क्या है? आज सहसा ऐसा क्रोध क्यों? तब राजा बोला कुछ न पूछो आज रात को पिछले पहर जो स्वप्न देखा सो सच्चा उतरता जान पड़ता है। यह सुनकर संयोगिता बोली भला बतलाइए तो सही कैसा स्वप्न है मैं भी सुनूं। तब राजा बोला हां! सुनलो सुनकर क्या करोगी। आज रात को पिछले पहर की बात है। मैं देखता क्या हूं कि मैं तुम्हें साथ में लिए हुए अन्य सब रानियों के बीच में बैठा हुआ हूं, न जाने क्यों तुम सब लोग आपस में लड़ने लगीं इतने में सहसा आकाश से दानव लोग उतर पड़े और तुम्हारा हाथ पकड़कर अपनी तरफ खींचने लगे। तुम लोग चिल्लाईं, और मैं तुम्हें बचाने की चेष्टा करने लगा तब तक आंख खुल गई। यह सुनकर संयोगिता बोली आर्य्यपुत्र आप ऐसे शूर शिरोमणि पुरुष सिंह की अर्द्धाङ्गिनी मुझको हाथ पकड़कर कौन खींच सकता है। परन्तु इसपर पृथ्वीराज ने कुछ ध्यान न दिया और बोला बस अब बहुत हुआ अब मैं दरबार में जाकर अपना राज काज देखूंगा और सेना तथा सामन्तों को सम्हालूंगा।

राजा पृथ्वीराज ने गुरुराम और चंद कवि को बुला भेजा और उन से भी उस स्वप्न का सारा हाल कह सुनाया। उसे सुनते ही ये दोनों सिर नीचा करके चुप हो रहे। गुरुराम ने विष्णुपंजर कवच पढ़ कर राजा को दिया और जल भरे हुए एक हजार बड़े संकल्प कर करके ब्राह्मणों को दान करवाए। कविचन्द ने भी देवी की अर्चना वंदना की और दसों दिशाओं में दस महिष बलि किए गए। धन्य रे मनुष्य पराया सर्वनाश करके अपना कुशल चाहता है पर इससे होना क्या है "होइहै वही जो राम रचि राखा"।

राज-सभा मंडल जो बरसों से सूना पड़ा

हुआ था उसके आज भाग्य खुल गए जहा तहा सब साज सामान दुरुस्त होने लगे। सैकडो नकीब और हलकारे दरबार की सूचना देने को दौडे दौडे फिरने लगे और जहां तहा हाथी, घोडे, फौज और सूर सामंत लोग सज बज कर सायकाल के समय राजद्वार पर हाजिर हो गए। आज दिल्ली मे फिर वही पुरानी रौनक आ गई। बाॅकी मूछों वाला राजा पृथ्वीराज राज्य गद्दी पर आ डटा और सूर सामंत तथा राज्य कर्मचारी लोग यथास्थान बैठकर अपना अपना काम करने लगे। मधुसाह प्रधान ने सब से पहिले रावलजी के आने की सूचना दी और यह भी कहा कि उन्हें आए हुए आज बीस दिन हो चुके है। यह सुनते ही राजा सोच एव शोक समुद्र में डूब गया। वह बोला हा मैं बडा अभागा हूं पूज्यपाद रावल जी को आए हुए बीस दिन हो चुके और मुझे खबर भी नहीं है। किसी को क्या इसमे मुझे तो बड़ी लज्जा है। माना मैंने कि वे योगिराज बडे विचारवान है मेरा अपराध क्षमा करेगे। मुझे इस बात का बडा खेद है। खैर जो हुआ सो हुआ अब ऐसा कुछ उपाय करना चाहिए जिसमें वे चित्तौर को चले जाय क्योंकि समय टेढ़ा आया है।

रावल जी के विषय में पृथ्वीराज का पश्चाताप करना सुनकर सयोगिता जुदी सर्पणी सी फूलने लगी। वह बोली हा इन्हें खबर न हुई तो क्या हुआ मैने तो उनका सब आदर सत्कार साध दिया। यदि वे इतने पर भी कुछ बुरा मानें तो आश्चर्य्य है। क्या मै कोई न हुई। स्त्रियो को तो लोग न जाने क्यों नीच और दुर्बुद्धि समझते है। यह नहीं जानते कि यह सृष्टि की रचना स्त्रियों से लगी है। स्त्री न हो तो कहा से गृहस्थी हो और कहा से पुरुषत्व की व्यवस्था सधे। हा जो स्त्री जीते जनम भर सुख दुःख की साथी रहे और मरे पर शव के साथ में सती हो जाय उसी स्त्री को तुच्छ समझना और सामाजिक व्यवहारों मे किसी प्रकार का अधिकार न देना कितने अन्याय की बात है। धिक्कार है पुरुषो तुम्हारे स्वार्थ को। यह कहती हुई वह आप गोख में आ बैठी और एक दासी को भेजा कि जा बुला तो राजा को। दासी को आते देखकर राजा स्वयं झटपटाकर उठ बैठा और सबसे यह कहकर कि शेष कार्य्य कल देखा जायगा आप सयोगिता के महलो में चला गया। राजा को देखते ही सयोगिता ने आसू भर लिए और बडे भावपूर्ण स्वर मे बोली, आप ने क्या समझकर भरे दरबार में मेरी फजीहत की। मैने अपने ननदऊ का जैसा कुछ चाहिए सब सत्कार तो साधा। अपने प्रधान को भेजकर उनके जनवासे का सब प्रबन्ध करा दिया। दासियों के हाथ खान पान की सामग्री भेज दी और वह मोतियों की माला जिसे मेरे पिता दिग्विजय में दक्षिण से लाए थे सो भी समर्पण कर दी अब क्या चाहिए! रानी सयोगिता के मुंह से ऐसी वशीकरन की सी बातें सुनकर पृथ्वीराज घुट गया। उसने हॅसते हुए प्रिया का मुह चूम लिया और हाथ पकड़कर हृदय से लगा लिया। लीजिए फिर रस बरसने लगा और दोनों के लेखे ससार सूना हो गया परन्तु किंचित काल में राजा को फिर रावल का स्मरण आगया। तब वह बोला अब मै जाऊगा। यह सुनतेही संयोगिता विकल हो गई। वह बोली मै जाने को रोकती नही जाइए पर मेरी सुधि न बिसराइए और शीघ्रही आइए। आपके बिना मुझे यहा पल पल कल्प सम बीतेगा। कहने से क्या यदि आपको मेरी चाह है तो आपको आपही मालूम हो जायगा। सयोगिता से किसी तरह अपना पीछा छुडाकर पृथ्वीराज रानी इछनी के महल म गया। राजा को देखते ही सीता के समान सती लक्ष्मी के समान सुदर और सरस्वती के समान चतुर एव पण्डिता रानी इंछनी कैसी प्रसन्न हुई सो कह नही सकते परन्तु अवसर जानकर राजा को उसने शीघ्र ही विदा दी। तदनन्तर राजा एक एक करके दसो रानियों के पास गया और उसने सब से विदा मागी।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही नित्यकृत्यादि से निश्चिन्त होकर राजा पृथ्वीराज ने सिर पर कुसुमानी पाग सवारी सुगन्धिसेवन की दो लाख के मूल्य की कुडल जोडी कानों मे पहिनी और बागा पटका आदि सब पोशाक से लैस होकर, गत रतिरग से विरत और राज्योचित कार्य्य पटुता मे रत राजा पृथ्वीराज सब सामन्तो सहित रावलजी से मिलने के लिये निगमबोध स्थान को चला। आज बरसों के बाद राजा पृथ्वीराज का पूर्ववत् वीर वेष देखकर छोटे बडे सब प्रसन्न थे।

नए पुराने सब सामन्त घोडों पर सवार हुए राजा को कुडलाकार घेरे हुए चले जाते थे। उनके पीछे और सब सेना थी। उधर रावलजी को भी समाचार लग चुका था। अस्तु वे भी घोडे पर सवार होकर आगे बढ आए आधो आध रास्ते मे दोनो सम्बन्धी एक दूसरे से मिले और दोनों ने एक दूसरे से भुजभर भेंट की। इसके बाद सेना सहित रावल जी तथा राजा जी निगमबोध स्थान पर पहुंचे। वहा यथास्थान आसनों पर आसीन हो जाने पर दोनों ने एक दूसरे से पहिले लौकिक शिष्टाचार के अनुसार कुशल प्रश्न पूछा। फिर दोनों ने दिल खोलकर अपनी अपनी बीती कह सुनाई। जब पृथ्वीराज अपने आप कन्नौज का बीतक सुना चुका तब रावल जी बोले चलो किया सो अच्छा किया परन्तु स्मरण रक्खो कि स्त्रियो के भोग विलास से आज तो कोई सन्तुष्ट नहीं हुआ है। सोमवशी राजा समिवन्ध के महलों में दस हजार स्त्रिया थी और ग्यारह हजार उनके पुत्र थे परन्तु अत समय तक भी वह उनसे सन्तुष्ट नहीं हुआ था।

इसके पश्चात सामन्तों की भेंट होने लगी। सब नए पुराने सामत एक एक करके रावल जी से जुहार करने लगे और कविचद बरदाई उनका नाम ग्राम और विरद बखान करने लगा। सब से पहिली भेंट राजमत्री जैतराय की हुई। उसके बाद देवराज बग्गरी जी और फिर उसके बाद सिंह प्रमार, लोहाना आजानबाहु, कामराय यादव, अवधूत राजगौर, ईसरीदास, मल्हनास, पर्व्वतराय आदि सब की भेट हुई। रावलजी ने सब से कुशल प्रश्न पूछा और सब को पान दिए। कुछ देर तो इधर उधर की बाते और हॅसी दिल्लगी होती रही तब राजा पृथ्वीराज ने रावल जी से सविनय निवेदना किया कि अब महलों को चलिए। रावलजी ने कहा अच्छा।

निदान सब फौज सहित वे दोनों साले बहनोई राजमहलों को आए। यहां आज के दरबार के लिये सयोगिता के महलों का एक खास कमरा सजाया गया था और उसमें वही सब सामान सजा था जो कि कन्नौज से दहेज में आया था। रावल जी के साथ के तथा अपने सब सरदारों सहित राजा पृथ्वीराज उसी सुसज्जित कमरे में चले गए। एक जडाऊ मसनद पर वे दोनों सरताज महाराज बैठ गए और नीचे फर्श पर अपनी अपनी मनजल से सब सरदारो ने आसन जमाए। पहिले रावल जी सहित सब सरदारों का टीका और इतर पान हुआ फिर बनवीर परिहार ने आकर निवेदन किया कि रसोई तैय्यार है भोजनों के लिये चलिए। यह सुनकर दरबार बरखास्त हुआ और आगे आगे रावल जी और पृथ्वीराज और उनके पीछे पीछे सब सरदार लोग अटाले में पहुचे। वहा अलग अलग चौकों में पहिले से ही सब व्यजन परोसे हुए उपस्थित थे। अस्तु जब सब लोग अपने अपने थालों पर बैठ गए तब कुकुट नकुल क्रौंच हिरण हस सुआ और मोर आदि जन्तु अटाले के बीच मे लाकर उपस्थित किए गए। यह इस लिये कि यदि भोजन के किसी पदार्थ में दिनाई या विष का लवलेश भी हो तो वे झट ताड जाते है। दिनाई को देख कर हस गतिभग हो जाता है, मोर कटु शब्द उच्चारण करने लगता है, क्रौंच रोने लगता है, हिरण आहार छोड देता है, सुआ वमन करने लगता है, नकुल और कुकुट पस्पर गिर हो

जाते है और चकोर के जोडे मे परस्पर वैमनस्य हो जाता है।

उस दिन राजा पृथ्वीराज के अटाले में कैसी रसोई बनी थी वैसे कैसे पदार्थ और कितने व्यञ्जन बने थे सो कहानक बखान करे। कच्ची पक्की दोनों रसोई थी। हरदी धनिया मिर्च हींग जीरा और अजुआयन की पुट देकर सैकडो तरह के नमकीन साग सालन और सलूने रींधे गए थे। मेवा सोंठ काली मिर्च पीपल इलायची और केसर पडे हुए नाना भाति के मीठे भात मालपुआ हलुआ वगैरह भी प्रस्तुत थे। जलचर थलचर नभचर आदि सब प्रकार के खाद्य जन्तुओं के मांस तथा नाना भाति के चटनी पापड अचार गोरस आदि यावत् खाद्य पदार्थ रुचकर रचे गए थे। सब लोगों ने बड़े आनन्द और उत्साह के साथ भोजन किए। भोजन करने पश्चात हाथ मुह अँगोछ करके फिर सब लोग उसी बैठक मे आए। यहां पान इलायची की हुई और तब रावल जी अपने डेरों को रवाना हुए। रावल जी के साथ साथ सब सामत सरदार भी उन्हे पहुचाने के लिये जाने लगे परन्तु उन्होंने शिष्टाचार पूर्वक सबको अपने अपने घरों को विदा किया और आप अपने साथियों सहित निगम बोध को चले आए।

वह दिन तो यों गया दूसरे दिन सबेरे चार की घड़ियार बजते ही ज्योंही पृथ्वीराज शैया से उठा त्योंही इधर तो आप अपनी नित्यक्रिया में लगा और उधर जैतराव, रामराय बडगुज्जर, प्रसंगराय खीची, जामराय यादव, कविचन्द वरदाई और गुरुराम को बुलाने के लिये दरबान दौडाए। सूर्य्योदय होते होते सब लोग सजबज कर राजद्वार पर आ गए, तब तक राजा भी निश्चिन्त हो चुका था। उसने इन सब को अपने निज अंगशाला में बुलाया और कहा कि और काम पीछे करना सबसे पहिले रावलजी की बिदाई की तदबीर लगाओ और ऐसा उपाय करो जिसमे वे यहा से चले जाय। कौन जाने हाथी छूटे घोड़ा बिचले ऐसे में सगे सम्बन्धी को शामिल करना उचित नहीं। राजा की ऐसी आज्ञा पाकर जैतराव ने कन्नौज से दहेज में आए हुए हाथी घोडे सजाकर प्रस्तुत किए और बहुत से बहुमूल्य मोती माला तथा नगदी के थाल लगाकर प्रस्तुत कर रक्खे। इतने में और दरबारी लोग भी आ जुटे। तब बिदाई का सब सामान लिवाकर और सामन्तों को साथ लेकर पृथ्वीराज रावल जी के पास पहुचा। मामूली राम रहीम हो चुकने के पश्चात कविचंद ने रावल जी से कहा कि महाराज हमारे ऊपर इस समय समय पड़ा हुआ है इसलिये हम आप को सादर बिदा करते हैं क्योंकि उधर भी आपके बिना राज काज में हानि होती होगी। कृपापूर्वक चित्तौरगढ को पधारिए और हमारे ऊपर सदा कृपा रखिए।

यह सुनते ही रावल समरसिंह को क्रोध आ गया। वे बोले 'वाह क्या कहना है आपने हमारी बडी मर्य्यादा रक्खी। इस समय हमको बिदा करते हुए तुम्हे लज्जा नहीं आती, तुम्हारे ऊपर एक प्रबल शत्रु चढा चला आ रहा है और हम तुम्हें छोडकर घर को चले जाए। बडे चतुर हो, हमको बिदाई क्या देने आए कालिन्दी के किनारे पर अन्तदान देने आए हो। ठीक है ऐसे सुअवसर पर ऐसा सुपात्र दानग्राही सुगमता से नहीं मिलता। सो हमको दान देकर तुम लोग शूरवीर बनकर शत्रु से युद्ध करो और हम कायर की तरह चित्तौर को चले जाय? सुनो! जो धर्म जाय तो धन किस काम का? ईश्वर का स्मरण न किया तो कर्मकाण्ड जानने से क्या? मानभग हो गया तो जीवन किस काम का? तत्वज्ञान न हुआ तो ज्ञानी होने से क्या? और भी सुनो लज्जाहीन सेवक किस काम का, पराई स्त्री पर चित्त चलाने वाला पुरुष ही क्या और जो युद्ध से मुख मोडकर भाग जाय तो वह क्षत्री ही कैसा? देखो माथे पर चन्द्रमा दोनों भौंहो के बीच में रुद्र, नेत्रों में सूर्य्य, नासिका में अश्विनीकुमार, जिह्वा पर वरुण, कानों में पवन,

भुजाओं पर इन्द्र, लिंगेन्द्री पर ब्रह्मा, गुदा पर बरुण और पाँओं में विष्णु का वास है। उक्त देवता गण शरीर के उक्त अंगों की रक्षा करते है और उस शरीर में प्राण निरतर घूमा करता है और देवताओं के अंग स्थान त्याग देने पर प्राण पखेरू उड भागता है। ये पच प्राण इस पंचतत्वमय पुतले के पाहुने है अतएव शरीर द्वारा जैसा शुभ अशुभ भोग होता है वैसाही प्राणो के सतोष या असतोष से ससार में यश अपयश होता है। तुम कह सकते हो कि प्राण पाहुन विना क्या यह शरीर कुछ भी कर सकता है ऐसा ही सम्बन्ध हमारा तुम्हारा है।

यह सुन कविचद बोला कि मरजी हुई सो ठीक है। आपका वल प्रताप कौन नहीं जानता पर हमारी केवल इतनी प्रार्थना है कि इस समय जो फूलपान है लेकर कृपा कीजिये। यहा आपकी दया से कई एक मुकुटवेध राजा लोग सहायक है और सब शूर सामत है। इधर की कोई चिन्ता न कीजिए। इसपर रावल समरसिंह की दोनो भौंहें चढ गई और गुस्से के मारे लाल मुह हो गया। उन्होंने कहा हा इसी करतून से मुझे क्या नहीं मालूम है जो कुछ कमाई कर रक्खी है उसका फल फलेगा तब मालूम होगा। आज हमें हठकर विदा कर देते हो कि लोग अपने मनका करें और कहें वे तो मौका देखकर खिसक गए। सच कहते है इस दरबार में अब ऐसेही लोग शेष हैं। रावल जी को इस प्रकार कुपित देखकर राजा पृथ्वीराज उनके पैरों लग गया और हाथ जोडकर बोला—अपराध क्षमा कीजिये अब जैसी आपकी आज्ञा हो सो करूगा। इसपर रावल जी ने फिर कहा हम क्या जाने हमतो मूर्ख है हमें विदा करदो और अपने सामन्तों से पूछो। तब तो पृथ्वीराज का मुह उतर गया वह बोला आप बडे है आपकी हमारी सब हार पीर है और आप हमारे सब तरह से शुभचिन्तक है अब हम निश्चय वही करेंगे जो आपकी आज्ञा होगी हमसे जो अपराध बन पड़ा हो सो क्षमा कीजिए।

तब रावल जी बोले तुम ने कैमास को क्यों मारडाला और बादशाह को पकड़कर उसका मान भग करके फिर उसे छोड़ किस लिये दिया। आपस में लडकर सब सूर सामन्त कटा दिए और जो कुछ रहे सहे थे सो भी सत्यानाश कर दिए। और तो और चामडराय ऐसे वीर पुरुष के पैरो में बेडी भरके क्या लाभ पाया सो नहीं समझ में आता? इसपर पृथ्वीराज ने उत्तर दिया कि उसने मेरे इन्द्र के ऐरावत के समान सुन्दर शृंगारहार को वृथा मारडाला। वह कस के कुवलया पील से भी सुन्दर शृंगारहार मुझे अत्यन्त प्रिय था। तब पुनः रावल जी बोले लाख हाथी प्यारा था पर चामडराय से बढकर नहीं हो सकता, परन्तु अच्छा जो हुआ सो हुआ इस समय मेरे कहने से चामडराय को छोडदो। यद्यपि तुम्हारे दरबार में यादव कूरभ बड़गुज्जर रघुबसी गौर पुडीर राठौर पडिहार चालुक्क चहुआन आदि बड़े बडे सरदार है परन्तु तुम्हारे राज्य की ढाल स्वरूप चामडराय के समान एक भी नहीं है। वे जैसे डील डौल वाले और बलवान है वैसेही युद्ध विद्या में परम निपुण है उनके साम्हने मुसल्मान सेना के सब सैनापति भाग जायगे।

रावल जी के इस आदेश को पृथ्वीराज ने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया और एक कुसुमानी पाग और एक तलवार गुरुराम के हाथ चामडराय के पास भेजनी चाही पर रावल जी ने कहा ऐसा नहीं इस समय आपको उनके घर चलना चाहिए। निदान रावल जी राजा पृथ्वीराज कविचद और सब सामंत लोग चामडराय की पौरि पर जा पहुंचे। परन्तु सकोच वश पृथ्वीराज चामडराय के साम्हने न जा सका इसलिये उसने पहिले कविचन्द और सब सामन्तों को भेजा कि तुम जाकर उनके पैरों से बेडी उतरवा डालो तब मैं मिलूंगा। सब लोगों ने अन्दर जाकर देखा कि देव के समान देह वाला चामडराय चुप बैठा हुआ है। इन लोगों के पैरों की आहट पाकर उसने आख उठा कर देखा और कविचद ने आशीर्वाद

देकर कहा महाराज पृथ्वीराज की आज्ञा है कि आप बेडी उतार डालिए। यह सुनकर चामडराय बोला जरासी बात पर मेरे पैरो मे बेडी डाल दी और सर्वस्व सत्यानाश करके सयोगिता का व्याह लाए तब मुझे बात भी न पूछी अब मुझ से क्या प्रय तन, जाओ ऐसा कह देना राजा से। चामड राय के उत्तर का कविचद ने यह प्रत्युत्तर दिया।

आप आकाश के शत्रुओं को जीतने के लिये वीरता की नसैनी है पाताल के शत्रुओं को नाश करने के लिये काल का कुदाल है और युद्ध रूपी अग्नि के लिये साक्षात पतिगे है। अस्तु राजा ने यही सब आगा पीछा सोचकर आप को बेबस कर रक्खा था कि आप सकट के समय पर काम आवेगे। हे चामडराय जी महाराज स्वय आए हुए है परन्तु वे लज्जावश आप के सम्मुख नही पधारे। पौरि मे विराज रहे है और सामन्तो की आज्ञा दी है कि चामडराय के परो की बेडी उतार डालो इसलिये अब आप भी राजाज्ञा मानने मे विलम्ब न कीजिये। आप दिल्ली राज की ढाल है और शत्रु ढोल बजाकर चढा चला आ रहा है क्या अब भी आप चुप रहेंगे। इस समय बीती बातों का ध्यान छोड दीजिए हृदय से क्रोध को दमन कीजिए और बेडी उतार के हाथ मे तलवार लीजिए। देखिए यह राज्य इस समय आप ही के भुजाओं के भरोसे है। एक तो स्वामी के राज्य पर सबल शत्रु चढा चला आता है सो भविष्य में भीषण युद्ध की रचना है। दूसरे पूज्यपाद रावलजी और महाराज आप के घर पधारे है इन दोनों उत्सवों की बधाई मे मै आप से यही मागता हू कि कृपा करके बेडी उतार डालिए। यह सुन कर चामडराय बोला है तो सब लोग पमार यादव खीची पुडीर कूरम्भ सलख आदि सब सामन्त सूरमा है और तुम ऐसे नीति चतुर सलाहकार हो फिर न हुआ एक चामड तो क्या?

तब कविचन्द पुनः बोला, सुनो रावजी! यह कहना आपको शोभा नहीं देता। इस समय धन देश तथा मान पान का हिस्सा बाट नहीं होना है वरन तलवारो मे शरीर बाटे जाने है इसलिये सब ईर्षा द्वेष छोड कर अपने स्वरूप में होजाइए। राजा की दी हुई इस कुसुमानी पाग को बाधिए और तलवार को पकडिए। या तो कोई विवाह के समय कुसमानी पाग बाधता है या राज्य मे कुछ सम्मान पाता है तब। परन्तु आज आप शत्रु के विरुद्ध युद्ध करने के लिये पाग बाधते है सो आपकी यह बात सदा बनी रहेगी। हे चामडराय आप तो एक अद्वितीय वीर पुरुष है। आपने हम्मीर मे होड की, चालुको का दर्प कुचला और बादशाह को पकड लिया। आपका नाम सुनकर मुसल्मानों की मनानिया टोली हो जाती है। आप इस सामन्त सेना मे वैसे बलवान और पराक्रमी है जैसे वानर सेना मे हनुमानजी थे। विशेष प्रशसा करने से क्या? आप के अद्वितीय बल पौरुष को जहान जानती है। कृपा करके वीर भेष धारण कीजिए और अपने पूज्य के पूज्य रावल समरसिंहजी से भुजभर भेंट करके नेत्रो को सफल कीजिए।

तब तक राजा पृथ्वीराज आप वहा जा पहुचा और उसने अपनी कमर से तलवार खोल कर चामड राय को दी। राजा पृथ्वीराज के हाथ से तलवार पाते ही चामडराय कुछ का कुछ होगया। वह बोला हा मेरा स्वामी राजा पृथ्वीराज मुझ पर दयाल है तो शत्रु की सेना है कितनी, चुटकी से चूर कर दूगा। यह कह कर चामडराय ने बेडी उतार कर राजा को प्रणाम किया और राजा ने बहुत कुछ प्रबोध करके उसे जागीर और सिरोपाव दिया। सच है जिसके रुष्ट होने से दड न मिले और प्रसन्न होने से कुछ प्राप्ति न हो वह नपुसक नाह की तरह निकम्मा राजा हुआ भी तो किस काम का। पृथ्वीराज ने डेढ हजार घोडे सोलह हाथी दस मोतियों की माला और बहुत से पाटंबर वस्त्र और भी चामडराय को दिए। चंदबरदाई ने विरदावली पढ कर चामडराय को आशीर्वाद दिया और उसने बरदाई को पारितोषिक दिया।

बात की बात मे घर घर बात फैल गई कि आज राजा ने चामंडराय की बेडी काट दी। सइ

समाचार को सुनकर क्या प्रजा क्या राज्य कर्मचारी सब प्रसन्न हो गए। रेनकुमार तो मारे खुशी के उछल पडा और उसकी माता को तो जो आनन्द हुआ सो कह नही सकते। लोग कहने लगे चामडराय यह नही जानते कि अब बँधे अच्छी तरह से। अभी तक तो चामडराय के पैरो मे केवल लोहे के कडे थे जिन्हे वह एक झटके में तोड सकता था परन्तु अब तो उसका तन मन सब बँध गया, उसके पैरो मे अब जातीय लज्जा की वडी पड गई। स्वामी स्नेह की हथकडी से दोनो हाथ भी बँध गए। ऐसे समय में राज्य के आशा की तौक भी उसके गले में पड गई और वीरोचित ओज मे तो उसका मन पहलेही से बधा हुआ था। आहा सचमुच ये ऐसे बधन है कि एक सच्चा सपूत राजपूत बच्चा यावज्जीवन इन बन्धनो से विमुख होने की इच्छा ही नहीं कर सकता। अतः ऐसे जातीय मर्य्यादा के बँधन में बधा हुआ चामडराय गत बीतक को चित से एक दम दूर करके राजा के घोडे पर सवार हुआ और दाहिने हाथ से तलवार उछालता हुआ रावल जी से मिलने के लिये निगमबोध को चला। राजा के दिए हुए जिस घोडे पर चामडराय सवार था वह भी हजारों मे एक था। जिस समय बरसों के बाद चामडराय घोडे पर सवार होने लगा तो पहिले उसने घोडे के पैर मस्तक नेत्र कधा और पूछ पाचों अगों की विधिवत पूजा की, तब सीस नवाकर सवार हुआ। बाग उठाते ही वह सिर से पैर तक सुनहरी साज से सजा हुआ तेज तुरग नट की कलाबाजिया करता हुआ चचला की सी चपल चाल चलने लगा। दूरही से उस घोडे की चाल पहिचान कर रावल जी ने कविचंद से पूछा मुझे इस घोडे को देखकर सूर्य्य के रथ के रैवत का स्मरण आ गया। क्यों कविजी उस रैवत की कितनी द्रुत चाल होगी? कविचन्द बोला अन्नदाता सूर्य का रथ आधे निमेष मे नौ हजार छै सौ कोस जगह चलता है और ३० दिन मे पृथ्वीमडल के गिर्द सूर्य्य ८४०८००००८० कोस की परिक्रमा करता है। इसी से रैवत की चालका वेग विचार लीजिए।

चामडराय छोड दिया गया। घर घर आनन्द की बधाई बजने लगी सैनिक तथा सरदार सब लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए। अब आवश्यक यह था कि जहा तक हो सके जल्दी ही शत्रु का मुकाबला करने का प्रबन्ध किया जाय। अतएव सब सामन्तों को तथा राज्यकर्मचारियों की यही राय पडी कि इस विषय में जो कुछ बात सलाह हो सब रावल जी के यहा चलकर हो। क्योंकि एक तो वे बडे है सब बातो के जानकार ह दूसरे युद्ध विद्या मे अद्वितीय निपुणता रखते है। इसलिये जो कुछ वे आज्ञा दे सोई स्वीकार करना श्रेयस्कर होगा। यह विचार कर उसी दिन सायकाल के समय सब सामन्तो के सहित राजा पृथ्वीराज पुन. निगमबोध में आ उपस्थित हुआ और रावल जी को सभापति बनाकर आगत युद्ध प्रबंध पर विचार किया जाने लगा।

निगमबोध स्थान मे बत्तीस हाथ लम्बी बारह हाथ चौडी और साठ अगुल मोटी एक पाषाण शिला थी। वह शिला आपही आप हिलने लगी यह देख कर सब लोग चकचौंधिया गए। कोई बोले भूकम्प हुआ है कोई बोले शेषनाग ने करवट बदला है। इसी प्रकार और जिसके जी मे जो आया सो कहने लगे तब तक उसके नीचे से एक भीमकाय प्रचड भुजदड वाला एक देव निकल पडा। उसका शरीर बिलकुल काला था हृदय पीला और दोनो नेत्र अग्निज्वाला के समान लाल थे। उसे देख कर कवि चद ने विनयपूर्वक उसमे दडवत किया और पूछा आप कौन है? तब वह देव बोला मेरा नाम वीरभद्र है। जब सती जी का अपमान करने के कारण शिव जी ने दक्ष प्रजापति पर रुष्ट होकर अपने जटा फटकारे तब मै उत्पन्न हुआ और शिव जी के अनुरोध मे मैने दक्ष प्रजापति का यज्ञ विध्वस करके उसका सर्वनाश कर दिया। यह सतयुग की बात है फिर उसके पश्चात

द्वापर त्रेता आदि युगों में जो बडे बडे युद्ध हुए उनमे म सदैव प्रस्तुत था। द्वापर मे जिस समय से कौरव पाडवों का युद्ध हो चुका तभी से मै पडा पडा सो रहा हू। आज अचानक यह कोलाहल सुनकर मेरी निद्रा भङ्ग हो गई।मै जानना चाहता हूं कि यह बाजे किस बात पर बज रहे है क्या हो रहा है। इसपर कविचन्द ने उत्तर दिया कि इस समय दिल्ली पर गजनीपति शहाबुद्दीन बढा चला आता है सो एक सामन्त चामडराय युद्ध के लिये बन्धन मुक्त किया गया है उसी के उत्सव में ये बाजे बज रहे है। यह सुनकर वीरभद्र बोला वाह रे कलियुग के तुच्छ बुद्धि मनुष्यो इतना गर्व! अहा हो चुके युद्ध अब क्या कोई युद्ध कर सकेगा। मैने तारकासुर सग्राम देखा, राम रावण का युद्ध देखा और कौरवों पाडवों का महाभारत देखा, अब ये तुच्छ बुद्धि तुच्छ आयु और तुच्छ तन वाले मनुष्य क्या पुरुषार्थ करेंगे। तब पुनः कवि ने प्रत्युत्तर दिया कि आपने देवताओं के बल पुरुषार्थ देखे सो सही परन्तु इन पृथ्वीराज के सामतों का पराक्रम भी देखिए। इनका युद्ध कौशल देखते हुए आप को वही आनन्द आ जायगा जो आप को पूर्व समय सुरासुर सग्राम में आया होगा। इसलिये आलस्य रहित होकर चैतन्य हो जाइए।

वीरभद्र बोला, रे मनुष्य, मनुष्य की सी बातें कर देवताओं की समसरी करने का साहस छोड हां मनुष्यों में कोई वीर और पराक्रमी हुआ तो दुर्योधन, उसके सिवाय और किस का साहस है है कि मुझे जगाकर युद्ध दिखावे। उसके युद्ध के समय आकाश पाताल में सर्वत्र रुधिर की वर्षा होने लगी थी। धन्य है उस हठी बीर दुर्योधन को जिसने साक्षात भगवान कृष्णचन्द्र के कहने से भी सधि न की और न सुई के अग्रभाग भर भूमि दी।उसने अवनी के पीछे धर्माधर्म का भी विचार न कर के भरी सभा में द्रौपदी का चीर खिचाया और लड़ते लड़ते मर गया पर भूमि का भाग देने के नाम हा न किया। उसके आतङ्क स उत्तप्त पाडव लोग यद्यपि बलि को छलने वाले वामन भगवान के आश्रय मे थ पर फिर भी उन्हें वन वन भटकते फिरना पडा। अहा जब तक इस संसार में मानी पुरुषों का नाम रहेगा तब तक दुर्योधन ही सर्व श्रेष्ठ गिना जायगा। कविचन्द पोथी पुरान में कथा पढ लेने की बात दूसरी-दुर्योधन का पराक्रम मैने अपनी आखों से देखा है। जिस समय वह ग्यारह अक्षौहिणी सेना लेकर रणाङ्गन में खडा होता था तो पृथ्वी की क्या आकाश पर्य्यन्त हलचल मच जाता था, भूत बैताल योगिनियों का युद्ध में आना तो व्यवसाय ही है परन्तु शिव जी तक की समाधि भङ्ग हो जाती थी। अहा दुर्योधन की तरफ कैसे कैसे वीर और पराक्रमी महारथी थे जिन्होंने भगवान श्रीकृष्ण को भी चलचित्त कर दिया। श्रीकृष्णजी ने प्रतिज्ञा की थी कि हम इस युद्ध में हथियार न पकडेंगे परन्तु जब वृद्ध ब्रह्मचारी भीष्मजी ने वाणावली की तो उन्हे अवश होकर चक्र उठाना पडा, इसी प्रकार उन्हें जयद्रथ का शीश छेदन करने के लिये भी चक्र चलाना पड़ा। उन कौरवों पाडवों का ऐसा विकट सग्राम देखकर जब से मै सोया तब से आज जागा हूं। सुनो कविचन्द जो बातें मै देख चुका सो अब कहां है। न वे मनुष्य है और न वह बल पराक्रम है।

तब कविचन्द बोला हे गणश्रेष्ठ आपने भूत काल की सब बाते स्वय देखी है और भविष्य का आपको पूरा ज्ञान है। अब मै अपने यहा का बीतक कहता हू सो कृपा करके सुन लीजिए और बतलाइए कि अब भविष्य में क्या होनहार है। यह कह कर कविचन्द ने पृथ्वीराज के जन्म से लेकर उस दिन तक का सारा हाल कह सुनाया और प्रार्थना की कि अब आप स्वय कृपा करके सामन्तो की सभा मे पधारिए और उनकी मत्र सलाह सुनिए। इस पर वीरभद्र बोला हा समझ लिया पृथ्वीराज का भविष्य अब अच्छा नहीं है पर हा चलो तुम्हारे कहने से चलता हू। यह कह कर वीरभद्र सामन्तों की सभा में जा पहुंचा और उसने कवि से पूछा कि यहा

उपस्थित सब्यों के नाम कह तब कविचन्द ने जैतराव प्रसंगराव जामराय रामराय वलिभद्रराय चामंडराय आदि सब सामन्तों के नाम और विरद बखान करके वीरभद्र को सबका परिचय दिया। उसने कहा हे वीरवर एक अकेले कैमास के विना यह दल चल हो रहा है। यदि वह होता तो कोई कानों कान न जानता और शत्रु कब का परास्त हो गया होता।

तब चामंडराय बोला हे जामराय बीती बातों पर पछतावा करने से क्या, हो गया सो हो गया अब जो आगे आया है उसे देखो। बीती पर सोच करने से मन खिन्न होता है, मन खिन्न होने से दुःख होता है और दुःख से बल का ह्रास होता है। दुःख सुख मरना जीना ये तो जीवधारी मात्र के धर्म हैं वीर सनति चत्रियों के लिये एक मात्र स्वामिधर्म सार है जिससे जन्म सफल होता है और मुक्ति मिलती है।

जामराय बोला—चामंड! तुम्हारे पैरो मे लोहा लगा सो लगा तुम्हारी बुद्धि में भी लोहा लग गया है। साम दाम दंड भेद इन चारो से राज्य कर मरना तो आसान है पर कुछ आगे पीछे का भी विचार करो। शहाबुद्दीन की सेना का समारोह देखो और अपनी तरफ देखो सौ मे से अब छः सात शेष हैं।

चामंडराय बोला—ठीक है हमारी बुद्धि में तो लोहा लग गया अब तुम अपनी करतूत कर दिखाओ। हमारे पैरों में फिर से बेड़ी डला दो और जब शत्रु छाती पर आन चढ़े तब आधी रात को उठ कर घर भागना। लो न हाथ मैल न पैर मैल, गजब ने हुई।

वलिभद्रराय बोला—ऐसा नहीं होता है, ये क्या करोगे। जहां कूरमवंशी उपस्थित हैं वहां भागना कैसा! शत्रु सबल है तो क्या हुआ हम भी दिल्ली राज्य की ढाल हैं और कौन नहीं जानता कि कूरमा ने कैसे कैसे मोर्चे मारे है।

[illegible] बड़गुज्जर बोला—आप लोग जो कुछ कहते है सो सब सत्य है। जीव का मोह करना हो चत्री के लिये अत्यन्त अधर्म है परन्तु राजनीति के आज्ञानुसार राजा को उचित है कि सब कार्य्य समय देख के करे, अस्तु मेरा मत तो यह है कि शाही सेना पर रात्रि को आक्रमण करना चाहिए।

वलिभद्रराय बोला—रे गवारे गूजर अपनी यह सलाह अपने पास रख। शाही सेना को देखता है या हम को देखता है। जिस समय खेत में खड्ग खींच कर खड़ा हो जाऊंगा तो देवता कौतुक देखेंगे और घड़ी भर के लिये सूर्य्य का रथ स्थिर हो जायगा। अरे मूर्ख इस सेवाबंधन को इस प्रकार से काटे कि जिसमें जन्म जन्मान्तर के लिये संसार के भी बंधन कट जावें। वेदव्यास का बचन है कि जो होनहार है सो तो अवश्य ही होती है तब फिर आप अपने कर्तव्य से क्यों चूके अपने चत्री धर्म को पालन करके लज्जा के साथ मर जाना भला परन्तु निर्लज्ज होकर मुह दिखाना अच्छा नहीं।

रामराय बोला—कूरमराय तुम बड़े पराक्रमी हो इसमें कोई सन्देह नहीं, पर तब की बात तब गई। रानी संयोगिता के स्वागत में चौसठ सामन्त समाप्त हो चुके हैं। मैं तो गंवार हू पर आप तो बुद्धिमान हैं, सो अपनी बुद्धि पर जोर देकर जरा विचारिए और कृपा करके मेरे प्रस्ताव को स्वीकार एवं समर्थन कीजिए। हां एक बात है जो कभी न किया होता और हम आज कहते तो अनुचित था, भोरा भीमदेव से युद्ध के समय सोभती के मैदान में क्या आप न थे जब रात्रि की लड़ाई करके ही उसे हराया था।

चामंडराय बोला—देखो, जादो और कूरम दोनों सदा के डरपोक हैं, प्रसंगराय खीची भी बड़े चारधारी योद्धा बने फिरते है। तुम लोगों की करतूत देखली। कन्नौज से चोर की तरह भाग आए और यहां गए हाकिम हो और [illegible] के पीछे भाग खड़े हुए। [illegible] बढ़ गए थे। तब [illegible]

सीधे होने की हिम्मत न हुई।

चामडराय की ऐसी बाते सुनकर जामराय यादव और बलिभद्रराय दोनो तालिया बजाकर हँस पड़े और बोले–धन्य भाइ। इन्हें स्वामी और सेवक का भी लिहाज नहीं है! क्या समय है और ये क्या बात करते हैं! इस समय इन्हे ताना मारने को सूझी है! यही है कि किसी का घर जले कोई तापे। अरे मारकूट कर किसी तरह घर आ गए सो अच्छा या वहीं सर्वस्व गवा बैठते सो अच्छा था।

तब जैतराव बोला—चामडराय यह तो बात ही कौन सी है, बड़ों बड़ों पर आ बनती है। पाचों पाडवों की उपस्थिति में द्रौपदी का चीर खीचा गया और किसी ने चू न किया। अगद ने बाप का बैर बिसार कर रामचन्द्र की सेवा की और सब बातें दूर रहीं, आज तुम भी तो पैकरों से निकल कर मूछों पर ताव दे दे बातें करते हो।

सिंघप्रमार बोला—जैतराव रोको इन्हें (चामडराय को) व्यर्थ बढ़ बढ़ कर बातें न करें। ये बड़े शूरवीर हैं। दिल्ली की सहंसाही इन्हीं के गले बंधी है, इन्हें जो करतूत करनी हो सो शत्रु के साम्हने कर दिखावेंगे। और बलिभद्रराय और जामराय से भी कहिए कि जरा देर के लिये शान्त हो जाय। ये लोग सलाह क्या करते हैं लड़ते है। सो इनको रास्ते से चुप करके आप जरा लोहाना आजानबाहु से पूछिये ये क्या कहते हैं।

लोहाना आजानबाहु बोला–जहां हम सब के शिरोमणि रावजी विराजमान है वहा हम क्या कहें और कैया कोई कहगा। रावल जी से भी मेरी यह प्रार्थना है कि जो ये सब सामत अपनी अपनी अलाप रहे है सो इनको शान्त करें और जो आज्ञा देवें सो हम लोग कर्तव्य समझ कर शिरोधार्य्य करें। तब रावल समर सिंह ने कहा–अभी हम से कुछ न पूछो सब लोग अपनी अपनी कह डालो। हम तो यह जानते है कि जब शत्रु सिर पर चढ़ आया है तब लडना अवश्य है, दिन को हो अथवा रात्रि को, परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि यारो कलक का टीका लगा कर नहीं मरना है। मरना है सुकीर्ति के साथ। तब चामडराय बोला–रावलजी बड़े है वे ऐसी बात न कहेंगे जैसे समुद्र को अँजुली से अचते समय अगस्त के हाथ नहीं थके और न पर्व्वतों के पक्ष उखाडते हुए इन्द्र के हाथ थके, इसी प्रकार युद्ध से योद्धाओं के हाथ नहीं थकते। रावण ने शिव सहित इतने बड़े कैलास को कमल कली की तरह हाथ पर उठा लिया था। लोहाना आजानबाहु बोला–रात्रि समय न देखना हमारा पराक्रम देखेंगे न अप्सराए, तब हमारी कीर्ति कौन बखान करेगा इसलिये श्री सूर्य्य भगवान के उजेले में उज्वल यश को अर्जन करने वाले वीर कभी युद्ध के लिये सम्मत न होंगे। जानते हो रात्रि में पति पत्नी का सयोग होता है। शूरवीरों के सम्मुख शत्रु को लक्ष्य करके बाण चलाना, वार में आये हुए पर तलवार का वार करना और मुठ में से बिछुए या कटार से पजर काट कर बाणत्याग करना ये सब रात्रि में क्या शोभा देंगे। हरे कृष्ण अकेले महाराज पृथ्वीराज की सभा में शाह को हम कुछ नहीं समझते फिर इस समय तो रावल जी भी हमारी सहायता पर सन्नद्ध हैं।

पृथ्वीराज की सेन पाकर प्रसगराय खींची ने कहा–सुनो भाइ, हम सब से कहते है तुम्हारी तुम जानो पर हम जैसी करेंगे सो आप देख लोगे। यदि मै छत्रधारी बना बैठा हूं तो शाह का छत्र भग करके स्वामी के छत्र की रक्षा न करूं तो मै प्रसंगराय ही नहीं।

यह सुनकर तलवार उछालता हुआ चामडराय अधखड़ा होकर बोला–वाह तुम तो हो ही शूर वीर और कोई हथयार करना थोड़े ही जानता है। तुम लोग अभी धन की मगरूरी में मस्त हो जब शत्रु का साम्हना पडेगा तब चामडराय ही सब से आगे देख पडेगा। जैत प्रमार बोला—जामराय जी जो कुछ चामडराय ने आप से कहा सुना है उसके लिये हम आपसे क्षमा मागते है पर हमारा भी कहना यही है कि आप वृद्ध है सो सब को अपने

में होकर न देखिये । और की और जाने मे सब से आगे तय्यार ह् । इस समय मुख मोडने मे क्षत्री धर्म कलंकित होता है अगे विजै परमेश्वर के हाथ है जहा तक मेरा विश्वास है महाराज भी इसी बात को अंगीकार करेंगे ।

यह सुनकर गुरुराम बोला—सुनो सामन्तो मैने माना कि आप लोग बडे वीर और पराक्रमी है परन्तु तनिक राजा की फौज देखो और शाही लश्कर का विचार करो । भैया एक की दवा दो होते है । होनी सब ईश्वर के हाथ है परन्तु अपने वश भर सब काम सोच विचार कर करना चाहिए क्या जाने आगे पीछे क्या हो और नाहक में अपना भद्दा फूटे ।

इस पर देवराव बग्गरी बोला—हां ठीक है जो कुछ गुरुजी कहते है सो बात ध्यान देने योग्य है । इस समय साम दाम का काम है, सन्धि कर लेना सर्वोत्तम है । केवल मरने मारने में बुद्धिमानी नहीं जानी जाती, आगा पीछा सोच कर काम करना चाहिए । यदि लड़ना ही है तो यह समय बचा कर फिर लडना । इससे यह न समझना कि मैं मरने से डरता हू । मुझे तो एक दिन कभी न कभी मरना है । भाइयो लड़ना सही पर वार बचा कर । आंखे मीच कर लड मरने में पराजय की पराजय होती है और दुनिया हॅसी उड़ाती है इस लिये रावलजी से मेरी यही प्रार्थना है कि गुरुजी का मत माना जाय अथवा जिसमें राज्य रहे सोइ काम किया जाय ।

तब मल्हन राय बोला—हे सामन्तो, तुम शूरवीर तो पक्के परन्तु बुद्धि की ओर से तो काठ के पुतले हो । बुद्धिमता और विचार विवेचना गई कैमास के साथ । चौरासी योनी भोगने के पश्चात् बड़ी कठिनता से मनुष्य जन्म मिलता है तिस जीवन को व्यर्थ गवा देना और राज्य से हाथ धो बैठना कहा की बुद्धि है सो हमारी समझ में नहीं आता । यह जानते है कि यदि जीवन है तो कीर्ति अपकीर्ति अपने हाथ मे है ।

रामदेराय बोला—कीर्ति अपकीर्ति की बात नहीं है । अपनी आखें मिचीं फिर कौन देखता है है कि क्या हुआ । हमारा सिद्धान्त तो है कि जिस तरह हो सके स्वामी के ऋण से उऋण होना उचित है । ये जो परिहार महाशय कहते हैं कि जीते रहे तो सब कुछ है, सो उनको अपने प्राण प्यारे है वह नहीं जानते कि यावज्जीवन का संग्रह उस समय कुछ काम नहीं देता जब काल आ पहुचता है ।

कौडी कौडी माया जोरि, जोरि लाख करोर ।
रामनगर से पाती आई, बैठ रही मुख मोर ॥

‘ जौ लौ जीना, तौ लौं सीना ’ भला इस जीवन में दुःख के सिवाय सुख कहा इस लिये यारो ऐसी सलाह विचारो जिसमें बेड़ा पार हो ।

तब प्रसंगराय पुन बोला—यही वो सामन्त हैं और यही वो शाही सेना है पर समय के हेर फेर से बलाबल में भेद है सो मैं तो यही समझता हूं कि रामराय के कथनानुसार रतिव्राह करना उचित होगा फिर आगे जैसी रावलजी की आज्ञा हो सो कर्तव्य है ।

रावल समरसिंह ने कहा—सो सब ठीक है पर सडी सिकार दाल मे अच्छी होगी, तेजस्वी का तेज देखा जाता है समारोह मे क्या होना है ।

देवराय बग्गरी बोला—जैतराव देखते हो, एक दिन वह था कि सौ सामन्त एक सूत में बॅधे हुए थे बडे बडे काम हो जाते थे और किसी को खबर भी न होती थी आज एक दिन यह है कि सब आपस में लडे मरते है ।

अन्त में राव समरसिंह ने कहा—अरे सामन्तो अन्त समय में क्यों तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है । सब अपनी अपनी डफली अपना अपना राग अलाप रहे हो किसी दूसरे की सुनते भी नहीं, जो कुछ करना तो एक होकर करो और यदि मेरी सलाह पूछते है तो मेरी बुद्धि में तो यही आता है कि आगा पीछा सब छोड कर क्षत्री धर्म पर कटिबद्ध होना सिद्ध है ।

रावल समरसिंहजी के ऐसे वचन सुनते ही सब सरदार एक स्वर से कह उठे हमें सिर के बल स्वीकार है। अहा! युद्ध का प्रस्ताव पक्का होते ही उन सामन्तों के मुख मंडल पर एक अद्वितीय तेज आविर्भूत हो गया. उनकी आंखों में गुलाबीपन झलक आया, मूछें बरो उठीं और उन का मन वीररस में ऐसा डूब गया कि क्षणमात्र के लिये उन्हें अपने तन बदन की सुधि न रही। अब तक जो परस्पर कलह हो रही थी उसे तो वे इस प्रकार से भूल गए मानो कहीं कुछ हुआ ही नहीं था। तब रावलजी ने पृथ्वीराज से कहा कि अब राजकुमार रैनसी को दिल्ली की गढ़ रक्षा पर छोड़ो और यथासम्भव शीघ्र ही सेना की तैयारी करो। पृथ्वीराज ने रावलजी की इस आज्ञा को स्वीकार करके सब सामन्तों में वृद्ध जामराय को बुलाया और कहा कि रावलजी की ऐसी आज्ञा होती है सो वे सब लड़के तो रहेंगे ही पर उनके निरीक्षण के के लिये कोई एक वयोवृद्ध पुरुष भी रहना आवश्यक है अस्तु मेरी इच्छा है कि यदि रैनकुमार का भार तुम अपने सिर लो तो अच्छा हो। यह सुन कर जामराय बोला—ऐसे समय में मुझ बुड्ढे को क्यों छोड़ते हो 'बारह बरसे सेई काशी मरने गए मर्वा की पाटी' मेरी बिनती यही है कि मेरा पुत्र यहां रहेगा और राजकुमार की सेवा करेगा, मेरे वास्ते क्षमा कीजिए, दूसरी बात यह भी है कि यदि युद्ध में मेरा पुत्र मारा गया तो मेरा जीवन व्यर्थ गया। यहां भी मेरा शेष जीवन दुःख में बीतेगा और परलोक में भी कोई पानी देनेवाला न रहेगा। इसपर रावलजी ने मुस्करा दिया और कहा ठीक तो कहते हैं। तब पृथ्वीराज ने जैतराव से कहा कि तब आप दिल्ली में रहिए। राजकुमार का निरीक्षण करिए और राज्य की रक्षा कीजिए। इस पर जैतराव ने खड़े होकर पृथ्वीराज को शीश नवाया और कहा हे राजन् आजन्म आप के साथ में रहा और आज के दिन घर में बैठ रहूं सो तो मुझ से न होगा। कृपा करके यह पाग किसी और के सिर बांधिए और हमें अपने साथ रखिए। आप छत्रधारी हैं और मैं आपका मंत्री हूं सो या तो शत्रु को निछत्र करके तब घर का मुह देखूंगा या वहीं कट मरूंगा। यह सुनकर पृथ्वीराज ने प्रसन्न मन से कहा अच्छा जो आपकी इच्छा मैं विशेष जोर नहीं देता। इसके बाद पृथ्वीराज ने प्रसंगराय खीची बलिभद्रराय कूरभसिंह प्रमार आदि सब सामन्तों से दिल्ली में रहने के लिये कहा पर किसी ने भी स्वीकार न किया। सब ने यही कहा कि इस समय आपका साथ छोड कर घर में न रहेंगे चाहे जो हो।

जब सब सामन्तों की तरफ से सूखा उत्तर पाकर पृथ्वीराज शान्त होकर बैठ रहा तब रावल समरसिंहजी ने अपने निज भतीजे वीरसिंहराय को सब तरह से समझा बुझाकर अपने साथ के सात सौ राजपूतों के साथ उसे रैनकुमार की रक्षा करने की आज्ञा दी। उसी समय पृथ्वीराज ने रैनकुमार को बुलाकर उसे समझाया कि देखो यह काका कन्ह के पुत्र ईसरदास, निड्डुरसुत वीरचद्र, कैमास पुत्र प्रताप, जैत पुत्र करनसिंह और सामन्तसिंह प्रतापसिंह जैसिंह आदि तुम्हारे सखा और सामन्त तुम्हारे साथ में हैं सो इनके सहित बडी सावधानी से गढ की रक्षा करना।

पिता के ऐसे वचन सुनकर राजकुमार रैनसी बोला—महाराज आज तक आपने मुझे सदा अपने साथ रक्खा है पर आज जब ऐन समय आया तब आप मुझे दिल्ली मे रहने की आज्ञा देते हैं। इस समय दिल्ली में रह कर क्या मैं क्षत्री धर्म से च्युत न होऊंगा क्योंकि शास्त्र की वचन है कि जो क्षत्री युद्ध के समय घर में घुस रहे वह शत्रु से पराजित तो होता ही है दूसरे मरने पर नर्कवासी होताहै

पृथ्वीराज बोला—तुम्हारा कहना सत्य है परन्तु पिता बचन मानना भी पुत्र का मूल धर्म्म है।

राजकुमार बोला—यदि आपकी ऐसी ही इच्छा है, यदि आप मुझे युद्ध में जाने की आज्ञा नहीं

देते तो दंड कमंडल लेकर बन को चला जाता हूं। तीर्थ ब्रत करता हुआ फिरूंगा। अथवा किसी आश्रम में बैठकर ईश्वर का भजन करूंगा। क्या करूं क्षत्री का पुत्र होकर जब आज बरबस युद्ध से विमुख किया जाता हूं तब क्या करूं। धर्म से विमुख होकर राज्य का उपभोग किस काम का?

पृथ्वीराज ने कहा—कुंवर! संसार की रीति नीति पर ध्यान दो। वंश परम्परा की सुकीर्ति रूपी बेलि पुरुष रूपी वृक्षों के आश्रय पर स्थिर रहती है। एक के काम में कुछ त्रुटि रह जाती है तो उसे दूसरा पूरा करता है। यदि हम शत्रु के हाथ से मारे जावें तो तुम बदला लेना। मेरे कहने पर यदि तुम्हारा मन न मानता हो तो कविचन्द और गुरुराम से पूछ देखो।

तब गुरुराम बोला—हां राजकुमार जो कुछ महाराज की आज्ञा होती है सो आपको स्वीकार करना चाहिये क्योंकि धर्म्मशास्त्र की यही आज्ञा है कि पिता माता की आज्ञा मानने से बढ़कर और कोई धर्म श्रेष्ठ नहीं है। यावत् १०८ तीर्थ सब पिता माता में वास करते हैं उनकी आज्ञा उलंघन करने से सब पुण्य नष्ट हो जाते हैं। और इस समय जो आप को राज्य का भार सौंपा जाता है उसका यह प्रयोजन है कि यदि शत्रु महाराज को परास्त करके राजधानी पर आ चढ़े तो उस समय आप रैयत की रक्षा कीजिए और सामन्त कुमारों के साथ आप उससे बैर का बदला लीजिए। इस लिये आपके सिर राज्य का भार दिया जाता है न कि घर जाकर सुख की नींद सोने के लिये।

एक तरफ पृथ्वीराज के दरबार में ये प्रबन्ध हो रहे थे और एक तरफ दिल्ली राज्य में भयानक अपशकुन हो रहे थे। बारबार पृथ्वी कांपती थी और आकाश से धूलि की वर्षा होती थी, भूमि में आपही आप जल अग्नि होता था, और दिग्दाह होता था। सब ऋतुओं के फल फूले हुए थे और रक्त की वर्षा होती थी। जहां तहां जंगल में जंगली पशु कोलाहल करते थे और दिन को सेई फिकारती थी प्रतिमाएं हंसती थीं रोती थीं और उनके नेत्रों से और मुंह से धूआं एवं अग्नि ज्वाला प्रगट होती थी। एक तरफ से पानी आता और दूसरी तरफ से वायु उसे उड़ा ले जाती थी। गिद्धनी और चिल्हनी रात्रि में मंडराती फिरती थीं और और पशुओं से और और पशु उत्पन्न होते थे जैसे गाय से गधा, गधी से घोड़ा इत्यादि। स्त्रियों से दो दो तीन तीन सिर वाले या ऐसेही अंग भंग बच्चे पैदा होते थे। लोगों के शरीर में सहसा रोमाञ्च हो आता पसीना चलने लगता और सामन्तों तथा सिपाहियों को स्वप्न में कैलास स्वर्ग तथा ऐसेही अन्यान्य देवलोकों के दर्शन होते थे। और भी इसी प्रकार के नाना भांति के अपशकुन होते थे।

ऐसे विलक्षण शकुन देखकर राजा पृथ्वीराज ने जगजोति व्यास अर्थात् ज्योतिषी को बुलाकर पूछा कि भविष्य विचार कर कहो तो क्या होनहार है। मेरा चित्त न जाने क्यों क्लान्त और उद्विग्न होता है। तब जगजोति बोला राजन् यह काल व्याल संसार के यावत पदार्थों को भक्षण करता रहता है आप किसी प्रकार का सोच न कीजिए। जो होना है वह तो होगा ही। सुनिए! यह वर्णन बिलकुल क्षेपक है किसी कवि ने बहुत पीछे महाभारत में से राज्य विप्लव के प्रबन्ध की कविता करके यहां रख दी है। इस समय चार ग्रह आपको अरिष्ट पड़े हैं। जिसमें दो ग्रह बहुत ही नष्ट हैं आप की राशि पर तो शनि की पूर्ण दृष्टि है और इस देश को सूर्य बारहवां है जिसका परिणाम यह विचारा जाता है कि आपके राज्य पर शत्रु चढ़ आवें, हिन्दू मुसलमान दोनों में घोर संग्राम हो अंत में राजपूत पराजित हों और मुसलमान जीतें। राजकुमार रैनसी दिल्ली के राजा हों और उन पर भी मुसलमान चढ़ें और तब वे सब राजपूतों को साथ लेकर साका करें और राज्य पर मुसलमानों का अधिकार हो। पहले से फिर वह कन्नौज पर चढ़ाई करें और कन्नौज की लड़ाई में जैचन्द और राय तथा उनका

शरीर गंगाजी में निमग्न हो जावे और तब समस्त भारतवर्ष भर में मुसलमानों की दुहाई फिर जावे।

ज्योतिषि के मुख से ऐसी भविष्यवाणी सुनकर राजा का मन उदास हो गया और उसके सामन्तों का भी मन दुखित हुआ। उन सब का मन मलिन देखकर रावल सरमसिंह ने कहा–पृथ्वीपति क्या सोच करते हो। इस संसार में किसी की भी सदा एकसी निभी है आज हम नहीं कल तुम नहीं यह तो यहां का नियम ही है सो सब सोच विचार परहर कर कर्तव्य को चित में दो जिसमें जन्म सुधरे। इस समय भी दुविधा में पड़कर दूसरा जन्म क्यों बिगाड़ते हो। किस झगड़े में पड़े हो। इस समय उस सांवेर सुजान घनश्याम का स्मरण करो। उस पीतपटवारे पुंडरीकाक्ष केशव का ध्यान धरकर राजपाट राजकुमार को सौंपो और साहस करके क्षत्री-धर्म निबाहने के लिये सन्नद्ध हो जाओ। रावलजी के ऐसे वचन सुनकर क्या पृथ्वीराज क्या उसके सामन्त सब के सब सावधान हो गए और सांसारिक प्रपञ्च को एक दम तिलाञ्जुली देकर अपने अपने इष्टदेवों के ध्यान में मग्न हो गए।

होनी सो मिटहै नहीं, अनहोनी ना होय।
इक जीतब के कारने, सोच करो जनि कोय॥

आहा भविष्य है सो अवश्य है!

और भविष्य का स्वामी काल है!! इस कराल काल के गाल में भूत मुक्त होगया और वर्तमान में दिन प्रति नित नए परिवर्तन होते रहते है!!! हा इस चाण्डाल काल ने किसी को भी नहीं छोड़ा। मनुष्य तनधारी कवि कोविदों की कौन कहे, बड़े बड़े किले कोट भी इसने कण कण कर दिए। किसी काल में जहा पर्व्वत थे वहा अब नदी है और जहा बन थे वहां आबादी है। यह काल की ही लीला है कि और क्या है। कहा राम कहा रावण! राम नें रावण को संहार कर विभीषण को राज्य दिया। ऐसे पुरुषार्थी यादव आप ही कट मरे। पांडवों को वन वन भिखारी बन फिरना पड़ा और कृष्ण की बधिक के बाण से मृत्यु हुई। मनुष्य का बखान कौन करे इन्द्र वरुण कुबेर और लोकपालों को भी काल के गाल का कौर होना पड़ता है। सूर्य्य और चन्द्रमा तो मानो उस काल की रीति नीति के प्रमाण हैं जो रात दिन चक्कर लगाए हुए ततलाते रहते हैं कि इसी तरह से आओ और जाओ।

ज्योतिषी का वचन सुनकर राजकुमार रैनसी बोला तो अब क्षमा कीजिये मैं दिल्ली में नहीं रहूंगा या तो तलवार बांधकर आपके साथ युद्ध में सम्मिलित होऊंगा या लंगोटी लगाकर बन को चला जाऊंगा। इस पर पृथ्वीराज ने स्वयं कुछ उत्तर न देकर रावलजी की तरफ देखा और कहा अब आप समझाइए। तब रावलजी ने कहा राजकुमार तुम अभी बालक हो घर में रहो राज काज देखो युद्ध में तुम्हारे जाने की कोई आवश्यकता नहीं। तुम एक मात्र वीर पुत्र हो वीर हो पराक्रमी हो पर अभी कुछ काल धैर्य रक्खो। इस पर रैनकुमार कुछ देर के लिये शान्त रहा फिर बोला महाभारत में जिस समय द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना की थी उस समय दुर्योधन का पुत्र लक्ष्मणसेन दस हजार योद्धाओं के साथ स्वयं व्यूह के मध्य में स्थित था। और इस तरफ से अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु ने उस व्यूह को जब भेदन किया था उस समय अभिमन्यु की अवस्था केवल सोलह वर्ष की थी।

तब कविचन्द बोला–सुनिए राजकुमार, ऋषभदेव के सौ पुत्र थे उन में से सब से बड़े पुत्र का नाम भरत था। वह राज पाट से विरक्त होकर आपही आप वैराग में रंग गया। और तपस्या करने के लिये बन को जाने लगा। माता पिता मंत्री सब ने बहुत समझाया पर उसने किसी की एक न मानी तब ऋषि लोगों ने आकर उससे कहा कि माता पिता के रहते और उनकी आज्ञा भंग करके तुम तपस्या करने जाते हो इसका कुछ भी फल न होगा। उसने कहा उत्तानपात के पुत्र ध्रुव को कैसे अचल पद प्राप्त

हुआ। तब ऋषियों ने उत्तर दिया कि यह पिता से तिरस्कृत होकर तपस्या को गया था परन्तु तुम पाटलीपुत्र हो इस लिये पिता की आज्ञा भंग कर के तपस्या करना तुम्हारे लिये शुभ नहीं है। ऋषियों के ऐसे वचन सुनकर फिर भरत तपस्या करने न गया और पिता के बाद उसने बड़ी अच्छी रीति से राज्य शासन किया।

अन्त में राजकुमार ने पिता की आज्ञा स्वीकार की। तब राजा पृथ्वीराज ने एक एक घोडा और एक एक हाथी और सब सामन्त कुमारों को दिया और एक हाथी राजकुमार को दिया। राजा ने अपने गले की मोतीमाला भी राजकुमार को पहनाई और तलवार भी बँधाई। राजकुमार के तलवार बांधते ही सब सामन्तों ने उसे धन्यवाद दिया और कवि और प्रोहित ने जैजैकार करके आशीर्वाद दिया। राजकुमार के हाथी पर सवार होकर महलों को चले जाने पर राजा पृथ्वीराज भी घोड़े पर सवार हुआ और आधी रात होते होते दिल्ली में आया। सब सामान्त लोग अपने अपने घर गए और राजा पृथ्वीराज महलों में जाकर संयोगिता के महल में सोया।

परन्तु आज सुख की नींद कहा थी आज तो पृथ्वीराज के चित्त पर विलक्षण खींचा तानी मची हुई थी। एक ओर से प्रिया के प्रेम का पैंमार होता तो दूसरी ओर से शत्रु के सम्मुख समर का मानचित्र मन में खचित हो जाता था। इसी प्रकार वीर और शृंगार रस के बीच में पृथ्वीराज करवटें बदलने लगा। विहान होते ही वियोग की घड़ी जानकर संयोगिता की तो यह दशा थी कि मानो उसके तन पंजर में प्राण हैं ही नहीं। उस रात्रि के शेषांश भर दो चार घंटे की अवधि को सुखपूर्व्वक बिताने की इच्छा से जो पृथ्वीराज संयोगिता से किसी तरह की छेड़छाड़ करता तो वह हाय जान लेकर उलटी करवटें ले जाती थी मानो भंग होनेहारी वियोग की रचना पाकर उसने अब से ही अपने को संसार से उदासीन बना रक्खा था। पृथ्वीराज के बहुत कुछ हिलाने झुलाने पर वह सीधी हुई गले से गले लग कर अभी दोनों दो दो बातें भी न करने पाये थे कि कुक्कुट ने बांग दी और चार का डंका बजा। जिस सुख में रात दिन लिप्त रह बार बरसों में तृप्त नहीं हुए उसके लिये अब घड़ी पल की बाट जोहना वृथा है, यही सोचकर पृथ्वीराज संयोगिता से पृथक होकर चलने की तैयारी करने लगा।

उस समय राजद्वार पर बजते हुए जंगी बाजों की आवाज से दिशाएं प्रतिध्वनित हो रही थीं। भेरी नफेरी नौबत नगाड़े रणतूर सिंगी सहनाई नरसिंहे आदि बाजों के स्वर सुनकर शरीर में सनसनाहट पैदा होती थी। हिंसते ठिनकते फुरकते और औरव से खुरी करते हुए घोडे एक तरफ नट की सी कलाबाजियां करते थे एक तरफ धुवाधार कारे कारे बद्दर से मतवाले हाथी जुटते जाते थे। बीचो बीच पैदल सिपाहियों की भीर तो इतनी थी कि राई डाली जमीन में न जाय। कौन गौर करे अरुणोदय होने के पहिले ही राजा पृथ्वीराज महलों से निकल कर एक दीर्घकाय दंतारे द्विरद पर सवार होगया। रंग बिरंगी पोसाक पहने हुए राजा पृथ्वीराज उस काल हाथी पर ऐसा सुशोभित होता था मानो मेघ पर इन्द्र धनुष विराज रहा हो। इस प्रकार सब सेना सहित दिल्ली से दस कोस पर पृथ्वीराज ने पहला पड़ाव किया।

जिस समय पृथ्वीराज सजधज कर चलने लगा तो संयोगिता चित्र लिखी पुतली सी रह गई। कभी राजा की तरफ देखती और कभी अपने शरीर की तरफ देखती आपही आप रोदती सीसती दांत पीस कर रह जाती थी परन्तु वाह रे पृथ्वीराज फिर तो न पसीजा। उसने बरसों के भोग विलास पर एक दम लात मार दी और रणोन्मत्त होकर चल दिया राजा के आंखों ओझल होते ही संयोगिता थर थर कांपती हुई पृथ्वी पर गिर पड़ी। उसकी यह दशा देख कर दासियों ने उसे उठा कर पलंग पर लिटा दिया और वे सचेत करने का यत्न करने लगीं। उस अचेतन अवस्था

में भी उसके मुंह और नाक से विष की सी ज्वाला गरम स्वास निकालती थीं और सलोने नेत्रों के कोयों से आंसू की बूंद निकल निकल कर इस तरह से बिला जाती थीं मानो आकाश से टूटे हुए तारे का पता नहीं पड़ता। विरह की ज्वाला से विदग्ध हृदय वाली सयोगिता उस समय ऐसी निश्चेष्ट हो गई जैसे त्रिदोष व्यथित रोगी घड़ी पल का पाहुना रह जाता है। उसे सचेत करने के लिये दासियां नाना प्रकार के अनुपान करने लगीं कोई घनसार घसकर उसके हृदय पर लगाने लगी कोई गुलाब जल के छींटे देकर उसकी विरह तन्द्रा भगाने लगी कोई अंचल पट से वायु करने लगी और कोई हाथ पात्र में कपूर मलकर उसे जगाने लगी। इसी प्रकार उपाय करते करते प्रातः काल हो गया तब सयोगिता सचेत हुई। पर ऐसी नहीं कि किसी से कुछ बोले चाले बस अपने प्राण प्यारे के ध्यान में मग्न समाधि साधे हुए साधु की भाति बैठ रही। यह सचेत अवस्था सयोगिता के लिये और भी दुखदाई हुई। राजपूत सेना की चढाई के जो घनघोर बाजे बज रहे थे उन्हें सुनकर उसकी विरह विथा और भी बढती थी। जैसे तिथि पर चन्द्रमा की कलाए बढ़ती जाती है वैसे ही लप लप सयोगिता का विरह बढता जाता था। धन्य दिनों का फेर! जो सयोगिता अब तक अपने को अत्यन्त सौभाग्यवती समझती थी वही इस समय दुर्दैव की प्रेरणा से एक अनाथ और अभागिनी की भांति कलप रही थी। उस राज महल में जो रसरास की सामग्री उसके सुख के लिये थीं उन्ही को देख देख कर उसका दुःख दूना होने लगा। पृथ्वीराज के पयान समय से सयोगिता ने भोजन करना बिलकुल छोड दिया केवल पानी के आधार पर प्राण रखने लगी उसने निश्चय कर लिया कि अब तो सब बातें गईं प्राण प्यारे के संग।

परन्तु जायगे कहा। जो दिल्ली को सकुशल लौट कर आगए तो भली नहीं तो जिस लोक में जायगे वही उनके पीछे लगी जाऊँगी।

जब से राजा पृथ्वीराज ने दिल्ली का गवडा छोडा तब से हिरन की सी चौकड़ी भरता हुआ दिन दूनी रात चौगुनी मजलें तै करता हुआ शत्रु चला आता था। शत्रु का दर्प दूर करने के लिये एवं दोनों दलों के योद्धाओं के हेतु स्वर्ग का द्वार खोलने के लिये राजा पृथ्वीराज के पयान समय अग्नि दिशा में छींक हुई, भुकना हाथी साम्हने आता देख पड़ा, राजा की सवारी के घोड़े का तंग टूट पड़ा, बाल छुटकाए हुये सिर पर काला कलस लिए एक स्त्री साम्हने देख पड़ी-ये सब अशकुन देखकर राजा ने जान लिया कि अब कुछ हानी अवश्य है।

दूध का जला हुआ छाछ फूंक फूंक कर पीता है। बिचारा शहाबुद्दीन भी इधर से बात बात बिचारता शत्रु के बल की टोह लेता हुआ टटोलता सा चला आता था। उधर के दूत इधर का समाचार ले जाते थे और इधर के दूत उधर के समाचार ले आते थे। इधर के चर ने समाचार दिया महाराज शहाबुद्दीन आ पहुचा। राजा ने पूछा इस समय कहा है उसने कहा सिंध के द्वाब पर है। तब पुनः राजा ने पूछा ऐसा नही उसका ठीक एक पता बतलाओ। निदान दूत बोला पृथ्वीनाथ दिल्ली से सौ कोस पर सिंध नदी है और उससे बारह कोस आगे सतलज है। दिल्ली से दो सौ कोस पर लाहोर है और लाहोर से केवल अस्सी कोस के उपर मैंने शहाबुद्दीन की सेना को छोडा है अर्थात आज वह चिनाब पार कर चुका होगा और एक सप्ताह में वह पानीपत तक आ जायगा। यह समाचार पाकर राजा पृथ्वीराज अपनी राजपूत सेना सहित पानीपत के मैदान में जा पहुचा।

चिनाब लाहोर से केवल चालीस कोस पर है निदान जब वीर पुंडीर के पुत्र पावस पुंडीर ने शाही सेना की अवाई सुनी तो वह अपने सब भाई बेटों से बोला चलो अब हिसार का आसरा छोडो महाराज पृथ्वीराज की सेवा में चलो। हम से घर में बिगड गई तो क्या? इस समय स्वामी की सेवा करना ही हमारा परम धर्म है। उसके ऐसे बचन सुन

कर सब पुडीर बंशी बीर अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर उसके साथ हो लिए । पावस पुडीर सब सेना सहित चलकर राजा पृथ्वीराज के पास आ पहुंचा। सब सामन्त उससे बडे प्रेम से मिले और उसे राजा पृथ्वीराज के सम्मुख ले गए। पावस ने जाते ही नियमानुसार प्रणाम किया पर राजा ने उसका उत्तर भी न दिया तब पावस राय ने राजा के चरण पकड लिए और वह विनीत भाव से बोला कि मेरा अपराध क्षमा करके मुझे शरण में रखिए। इस पर पृथ्वीराज बोला कि लाहोर को लूटते समय तुम्हारी यह बुद्धि कहा गई थी, अब शरण में आए हो, सच जानो मैने तुम्हें धीर का पुत्र जान कर छोड दिया नहीं तो तुम्हारी जैसी गति करता सो तुम्हीं जानते। इस पर पावस पुडीर ने कुछ उत्तर न दिया, चार घडी तक सिर नीचा किए हुए खडा रहा। तब राजा ने उसे बैठने की आज्ञा दी। अपने आसन पर स्थित होकर उसने कहा हे सामन्तो यद्यपि मुझे स्वामी द्रोह का दोष लग चुका है, परन्तु सौभाग्य वश उसके प्रायाश्चित का अवसर भी आ उपस्थित हुआ है अब शीघ्र ही मै अपने इस नश्वर शरीर को स्वामी की से।ा में होमकर उसके ऋण से सदा के लिये उऋन होऊगा और पुडीर कुल की कलक कालिमा को धोकर बहा दूगा।

जब राजपूत सेना सतलज पार कर चुकी तब राजा पृथ्वीराज ने कवि चन्द मे कहा कि अब तुम कागडे को जाओ और हाडा हमीर को मना-लाओ। वहीं माता जालन्धरी के दर्शन करना और मेरी तरफ से भी दडवत निवेदन करके विनय करना कि सिंह पर सवार होकर चलिए और दोनों दीन का तुमुल युद्ध देखिए कविचन्द ने कहा जो आज्ञा तब राजा ने हाहुलीराय हमीर के नाम एक पत्र लिखवाया उसमें लिखा कि इस समय गई बात का न विचार कर स्वामी धर्म का विचार करो तुम राजा पृथ्वीराज के राज्य की हद में रहने हो इसलिये तुम्हें उचित है कि इस युद्ध में आकर सम्मिलित होओ। घर के झगड़े फिसाद हुआ ही करते हैं परन्तु मातृभूमि की रक्षा में प्राण देना क्षत्री मात्र का धर्म है। थोडा लिखा बहुत कर जानिए और जो कुछ कवि चन्द मुखाग्र कहै सो मानिए। यह पत्र लेकर कवि चन्द चलता हुआ और नदी पार करके बानगगा के किनारे देहुरा गाव में अष्टभुजी देवी के उसने दर्शन किए और फिर वह कांगड़े को गया। कविचन्द की अवाई का समाचार पाकर हाहुलीराय उससे बड़े आवभगत से मिला और साक्षात होने पर उसने बड़ा शिष्टाचार किया। कवि चन्द ने हम्मीर को आशीर्वाद देकर उससे सब सामन्तों की प्रणाम और भेट भलाई कही तदनन्तर उसने राजा का पत्र दिया। हम्मीर ने पत्र को बड़े आदर से लिया, राजा का कुशल प्रश्न तथा राज्य का समाचार पूछा। पर यह सब योंही था कि, मुह में राम राम पेटै कसाई के काम।

तब कविचन्द बोला—और तो सब प्रकार से कुशल है परन्तु इस समय शहाबुद्दीन ने दिल्ली पर चढ़ाई की है सो सब सेना सहित महाराज तो पानीपत में जा पहुचे हैं और उन्होंने आप को बुलाने के लिये मुझे भेजा है सो कृपा करके चलिये और सग्राम में सम्मिलित होइए देखिए जिन पुर्डोरों ने लाहोर शहर लूट लिया था इस समय वे भी स्वयं शरण में आ गए है और महाराज ने उन्हें प्रसन्नता पूर्वक स्थान दिया है। अतएव आप को भी उचित है कि राजा के पास चलिए और अपने क्षत्री जन्म को सफल कीजिए शास्त्र का वचन है कि जो क्षत्री युद्ध की सूचना पाकर उसी दम सन्नद्ध न हो जावे अथवा प्रस्तुत युद्ध में से मुंह मोड कर भागे वह जन्म जन्मान्तर नर्क मे वास पाता है और जो क्षत्री युद्ध में मारा जाता है वह ससार के आवागमन से रहित हो जाता है और उसी की कीर्ति अचल रूप से संसार में स्थिर रहती है।

हाहुली राय हम्मीर बोला—कविचद किस लिये पृथ्वीराज के पास जाऊ और उनकी तरफ़ से लड़ू मरु। कोरी शर्तों के लिये उस शहाबुद्दीन के पास न जाऊ जिसने मुझे आधा पंजाब प्रदेश

देने को कहा है सो मैं भोगूं विलसूंगा और वह मेरी पीढ़ी दर पीढ़ी का होगा।

कविचन्द बोला—हम्मीर धिक्कार है तुम्हारी इस बुद्धि को। चार के दिन की जिन्दगी के लिये भोग विलास का लालच करते हो। जाति धर्म को तिलाजुली देकर एक धर्मशत्रु के मित्र बनते हो इससे तुम्हारा क्या भला होगा। रावल जी इन बातों से नर्क में जाओगे और जब जम के धक्के खाओगे तब पछताओगे कि हाय मैंने क्या कूर कमाया।

हंमीर बोला—तब की किसने देखी अब की बातें करो। तुम कवि हो न्यायवान हो सच कहो ईमान से क्या अब की बार पृथ्वीराज के जीत के लक्षण हैं। अब दिल्ली की सेना में वह सत्त नहीं। है। अब की बार शहाबुद्दीन जितेगा।

कविचन्द बोला—रावजी जीत हार की भली चलाई। जब दो लड़ते हैं तब एक गिरता ही है। मरना जाना भी जीव का स्वाभाविक धर्म है संसार की सब वस्तुएं नष्ट होजाती हैं पर नाम निशान नहीं मिटता निश्चय रखिए।

हाहुलीराय बोला—सुनो कविचन्द जब किसी के अदिन आते हैं तो पहिले उसकी बुद्धि भ्रष्ट होजाती है। रावण के अदिन आए तब उसने सीता का हरण किया। पांडवों के अदिन आए तब उन्होंने जुआ विस्तारा और राजा परीक्षित के बुरे दिन आए तब उन्होंने शृंगी ऋषि के गले में सर्प डाला सो आज कल पृथ्वीराज ने अत्याचार की अन्त कर डाली है। सुनो कवि जैतराव, रामराय, बलिभद्रराय और हम सब बराबरी के पद वाले हैं क्योंकि पृथ्वीराज का जो सम्बन्ध उनसे है सो हमसे है फिर हम उन लोगों के ताने क्यों सुनें और वे जो कुछ उलटी सीधी भिड़ा देवें सो राजा मान जाय और हमारी एक भी न सुने।

कविचन्द बोला—सुनो रावजी यह समय इन बातों को ध्यान में लाने का नहीं है। वह क्षत्री कैसा जो संग्राम की सूचना पातेही दौड़ कर अपने स्वामी से न जा मिले और अपनी जातीय लज्जा का वशवर्ती होकर घाट औघट जहां मिल जाय तहां हाथ मारे। एक क्षत्री पुत्र के लिये संसार में केवल दो वस्तुएं सार हैं एक सुकीर्ति कामना दूसरे स्वामीसेवा में शीश देना।

हाहुली राय बोला— विषधर के आगे बिच्छी का मंत्र बतलाना वृथा है। नीलकंठ के सम्मुख नील-कंठी का क्या होता है। पृथ्वीराज के यहां जहां जैतराव ऐसे योद्धा वर्तमान हैं वहां मेरा क्या होता है। जैतराव मुझे सदा ऐसे ही ताने दिया करते थे कभी आप सिंह बनते और मुझे सियार बनाते थे कभी आप मेघ बनते और मुझे पपीहा बनाते थे सो अब वही पराक्रम करें मेरी तो राम राम है।

कविचन्द बोला—हां ठीक है जैतराव वास्तव में सिंह है और वे महाराज पृथ्वीराज के सच्चे शुभ चिन्तक हैं और राजा की भी उन पर पूरी कृपा है। वास्तव में जैतराव गोरी सेना को छिन्न भिन्न करेगा और किसी समय वह तुम्हें भी धूल चटावेगा। इस समय दाव आर डाला हुआ है सो चाहे जो कह डालो। रावजी जैसा अभी आप ने कहा सच-मुच मरते समय मनुष्य की मति बिगड़ जाती है मरते समय राजा बिक्रम ने कौवे का मांस खाया और भोज म्लेच्छ हो गया। जिनके भाग में विधाता ने नर्क लिखा होता है वे आजन्म अच्छे रह कर भी अपने लिये मरती बार नर्क का द्वार खोल लेते हैं।

इस पर हम्मीर राव हँस कर बोला—हो न हो हम तुम दोनों देवी जालपा के मन्दिर में चलें और एक शाह के पक्ष की और एक राजा के पक्ष की दो चिट्ठियां लिख कर रखदें वहां से जो चिट्ठी उठेगी उसी के अनुसार मैं करूंगा।

कविचन्द बोला—सच है जब राजा सत छोडता है तो अनीति आचरण करने लगता है, जब स्त्री सत छोडती है तो पराये घर जा बैठती है, जब जोगी सत छोडता है तो स्त्रियों की माया में फँस जाता है और जब शूर बीर सत छोड़ता है तो मरने से

डरने लगता है। रावजी इन बातों में देवताओं को दोषी ठहराना उचित नहीं।

हम्मीर बोला—

मूसा कहे बिलार से, सुन री जूठ जुठैल।
हम निकरत है सैल को, छोड़ बैठ तू गैल॥

कविचन्द बोला—सब कुछ क्यों न हो पर ऐसे ऐसे ताने कौन सहे। सच्चा सूर वीर और स्वामी सेवी पुरुष वही है जो समय आपड़ने पर स्वामी का साथ न छोड़े और देह में स्वांसा रहते हुए दया को हृदय से दूर न करे और जो पामर पुरुष इसके विरुद्ध आचरण करते हैं उनकी संसार में अपकीर्ति होती है और परलोक में वे नर्कवास पाते हैं।

हमीरराव बोला—मेरा स्वामी सेवक का सम्बन्ध तो उसी दिन टूट चुका जब जैतराव ने भरी सभा में मुझे स्वान बना डाला और राजा का रुख पाकर कामराय हमको मारने के लिये उठे थे।

तब कविचन्द कुरुख होकर बोला—रावजी आप यह क्षत्रियों की सी बातें नहीं करते हैं। प्रमार पज्जून और यादव आदि किसी की सममरि से क्या आप को अपना धर्म निबाहना चाहिए वास्तव में मुझे आप के या जैतराव के किसी के पक्ष से कुछ प्रयोजन नहीं है मैं तो कवि हूं सबकी सच्ची सच्ची कीर्ति बखान करनाही मेरा धर्म है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आप बड़े बली और पराक्रमी है आपने कन्नौज मे जैसा पराक्रम किया सो किसी को अप्रगट नहीं है पर इस समय न जाने आप को क्या हो गया है।

हमीर राव बोला—कविचन्द हम जानते है कि तुम बड़े वाक्य चतुर हो पर ध्यान रक्खो कि यहां तुम्हारी बातें न चलेंगी। वे तुम्हारे जैतराव और कामराय आदि जो बड़े बड़े योद्धा है सो उन्हीं की कीर्ति बखानो। आज और जो तुम्हारी रानी आवे सो कालही कल सब भार को चढ़ा लाऊंगा तो सबकी कलई खुल जायगी।

कविचन्द बोला—हम बात क्या करें। बात से तो बड़े बड़े हेरफेर हो जाते हैं और जिस निर्लज्ज को बात न लगी वह मनुष्य ही कैसा। तुम समझते हो कि शहाबुद्दीन की शरण में जाने से अमर हो जाओगे, तुम तो ब्राह्मण का पक्ष छोड़ करके म्लेच्छ की सेवा करना स्वीकार करते हो। भला सोचो तो परलोक में तुम्हारी क्या दशा होगी जमराज के सम्मुख जा कर क्या जवाब दोगे।

हमीर बोला—तुम्हें क्या बतलावें, ऊंट जीरे का स्वाद क्या जाने, भील के हाथ में हीरा पड़ जाय तो बहुत करेगा बकरी के गले में बांध देगा पर जौहरी लेजाकर जब राजा को देगा तो वहां वह राज्य मुकुट का भूषण होगा। देखो सुघड़ कारीगर के हाथ में पड़ कर मोर के पर कैसे कैसे स्थानों में पहुचते है।

कविचन्द बोला—राव जी कुछ भी हो स्थान भ्रष्ट पुरुष शोभा नहीं पाता।

हमीर बोला—पर शूर वीर पुरुष सदा पराई भूमि पर शोभा पाते हैं।

कविचन्द बोला—आप की यह आशा दुराशा मात्र है जैसे बलि के लिये परिपालित बकरा हरी हरी घास खाकर अपने भाग्य मनाता है वैसी ही दशा तुम्हारी है। आप यह नहीं समझते कि एक धर्मशत्रु पुरुष हमारा सच्चा मित्र क्योंकर होसकता है, आप आगा पीछा न सोचकर वर्तमान का सुख विचारते हैं यह बुद्धिमानी नहीं है।

इसी प्रकार दोनों में बहुत से प्रश्नोत्तर होने के पश्चात् अंत में यही ठे पाया कि जालपा के मन्दिर में चला जाय और वहा से जो आज्ञा हो सो किया जाय। निदान हाहुली राय हमीर और कविचन्द दोनों देवी के मन्दिर को चले। वहां पहुंच कर कविचन्द देखता क्या है कि ऊंचे ऊंचे चार कोट घिरे हुए हैं और बीच मे बड़वानल की सी ज्वाला ज्योति की लौ निकल रही है। ऊपर मोतियों की झालर वाला स्व[illegible] का छत्र [illegible] है मन्दिर के बाहर वाले बगीचे में दोनों ने स्नान किया और धूप दीप नैवेद्य आदि पूजन का सामान लेकर

दोनों मन्दिर में गए। कविचन्द ने मंत्र पढ़कर पहिले जल का अर्घ दिया फिर विधिवत पूजन किया और हाथ जोड़ कर भगवती की स्तुति की। स्तुति समाप्त करके उसने कहा। हे संसार की शक्ति भगवती तेरे बीज मंत्र के श्रीं ह्रीं क्लीं ये तीनों एक है त्रिगुणात्मक हैं और येही तीनों तीनों लोक के कर्ता धर्ता हैं। हे अन्तर्यामिनी यद्यपि तुझसे कुछ छिपा नहीं है पर फिर भी विनय करता हूं कि इस समय हिन्दू मुसल्मान दोनों के बीच में संग्राम उपस्थित है सो मैं राजा पृथ्वीराज की तरफ से हाहुलीराय को बुलाने आया हूं सो कृपा करके इन्हें राजा पृथ्वीराज के पास जाने की आज्ञा दीजिए। इसके बाद हाहुलीराय हम्मीर ने देवी की पूजा की और हाथ जोड़कर कहा— भगवती आप जानती हैं कि यह कविचन्द आप का सेवक है, न राजा का है न बादशाह का। इसे किसी की तरफदारी से क्या प्रयोजन. यह तो परम हंस के समान है, परन्तु हे माता मैं संसार रत जीव हूं। संसार के मान अपमान में ही मेरा सर्वस्व है। अस्तु इतना कह कर हाहुलीराय मन्दिर से बाहर हो गया और किवाड़ बन्द करके चलता हुआ। घर आकर उसने लगे हाथों सेना तय्यार की और शहाबुद्दीन की सेवा में शीश देने के लिये वह गजनी की तरफ चल पड़ा।

कविचन्द के साथ में जो आदमी थे भागकर पृथ्वीराज के पास आये और उन्होंने यथातथ्य सब समाचार कह सुनाया जिसे सुनते ही पृथ्वीराज मारे क्रोध के लाल पीला हो गया। तब चामंडराय बोला क्या चिन्ता है जाने दीजिए इतना ही अन्तर है कि शाही सेना अधिक है और हम लोग थोड़े हैं पर जहां उनके दस गिरेंगे तहां हमारा एक गिरेगा। पृथ्वीराज ने बहुत कुछ सोच विचार कर पावसपुंडीर को बुलाया और उसे बड़े आदर से पान देकर कहा कि इस समय इस स्वामिद्रोही हम्मीर को उसके किये का प्रतिफल देना आवश्यक है इसलिये मेरी आज्ञा से तुम अपने भाई बेटों सहित जाओ और उसका सर उतार लाओ। पृथ्वीराज की इस आज्ञा को पावसपुंडीर ने प्रसन्नता पूर्वक शिरोधार्य्य किया। उसने उसी समय जामराय के पास जाकर पूछा कि यहां से कांगुरा कितनी दूर है और मुल्तान कितनी दूर है अथवा कांगड़ा और मुल्तान का फासला क्या है और मैं कहां होकर जाऊं कि हम्मीर से और मुझसे भेड़ा पड़ जावे। तब जामराय ने रघुवंशराय को बुलाकर दरयाफ्त किया। रघुवंशराय ने सब जमीन का नाप तौल बतलाया और कहा कि तुम यहां से सीधे पांच पहाड़ों के रास्ते से मीरागांव में होकर जाओ। अस्तु तीन हजार अपने भाई बेटों और पांच सौ सवारों को ले कर पावस उसी रास्ते से चलता हुआ और इस उत्साह और परिश्रम से रास्ता तै करने लगा जैसे कोई दरिद्री धन की लूट करने जा रहा हो अथवा लवाई गाय अपने बच्छे के पीछे दौड़ी जाती हो।

चालीस हजार पैदल और पांच हजार घुड़सवार सेना लिए हुए हाहुलीराय हमीर भी दौड़ा दौड़ मुल्तान की तरफ बढ़ा चला जाता था मानो वह इस घटना से पहिले ही से सचेत था। परन्तु जब तक हम्मीर चिन्नाव के घाट पर पहुंचा तब तक पुंडीर ने भी उसे जा लिया। जिस समय हम्मीर की सेना में चिन्नाव पार होने की तैयारी हो रही थी उस समय पुंडीर उससे आठ कोस के फासले पर था। हम्मीर की करीब आधी सेना पार हो चुकी थी कुछ थोड़ी सी नदी के बीच में थी और कुछ इसी पार थी। कि तब तक पावस पुंडीर जा पहुंचा और चढ़ी सवारी उसने मार काट करना आरंभ कर दिया। उसने हाथ उठा कर कहा रे निलज्ज क्षत्री कुलकलंक स्वामिविरोधी धर्मभ्रष्ट हम्मीर मेरे साम्हनें आ तो मैं तेरा सिर छेदन करूं। अस्तु हम्मीर की जो सेना इस पार थी वह लड़ने लगी और जो नदी के बीच में थी वह भी लौट पड़ी घड़ी देर तक दोनों में खूब मार काट हुई। चिन्नाव का उज्वल जल गुलाबी रंग का हो गया और लहरों में आने को लाशें लहराती फिरने लगीं। हम्मीर तो पहिले ही उस पार जा चुका था पर उसके दोनों

भाई इस पार थे। पुंडीर सेना ने उन दोनों को घेर कर मार डाला। उनके मरते ही हम्मीर सेना युद्ध विमुख होकर भाग उठी परन्तु पुंडीरों ने जल में भी उसका पीछा न छोडा। पाच सौ पुंडीर जल मे हल पडे और वहा भी मार काट की। इस युद्ध में एक सौ अस्सी पुंडीर वंशी राजपूत काम आए। इस प्रकार स्वामि द्रोही शत्रू को जीत कर और स्वय स्वामिद्रोह से उऋण होकर जब पुंडीर लोग लौटकर पृथ्वीराज के पास आये तो सारी राजपूत सेना में आनन्द की बधाई बजने लगी। सब सामन्त लोग पावस पुंडीर से गले मिले और पृथ्वीराज ने स्वय पावसपुंडीर की बडी प्रशसा कर के उसे सिरो पाव दिया। अपने हाथ से तलवार बधाई और सब पुंडीरों का चार चार तलवारें बाधने की आज्ञा दी।

हम्मीर और पुंडीरों के युद्ध की सूचना पहिले ही शहाबुद्दीन के पास पहुच चुकी थी। थोड़ी देर में कुल कलक हम्मीर भी जा पहुंचा। उस क्षत्री कुल की लीक और लोक लाज को तिला-जुली देनेवाले धर्मशत्रु पामर हम्मीर ने अपने सनातन स्वामी और गो ब्राह्मण का पक्ष छोड कर स्वदेश शत्रु शाह शहाबुद्दीन के साम्हने बडी नम्रता से मस्तक नवाया, और बहुत सी कस्तूरी केसर और अपने देश के मेवे आदि और छै घोडे भी नजर किए। शहाबुद्दीन ने प्रसन्नता पूर्वक उसका नजराना स्वीकार किया और उसे अपने मुसाहिबों में स्थान दिया। तब तक गुप्त चरों ने जाकर समाचार दिया कि राजपूत सेना में आज पुंडीरों को चार चार तलवारें बधाई गई हैं और उन्होंने आपको पकडने की प्रतिज्ञा भी की है। यह सुनकर शहाबुद्दीन अपने मुसाहबों सरदारों और सेना नायकों को सुनाकर बोला 'हिम्मते मर्दा मदद खुदा' दुश्मन चार की आठ आठ तलवारें क्यों न बाधे पर मेरे सिपाहियों को एक ही एक तलवार काफी है और मुझे क्या मैं तो एक फकीर हू अगर मर गया तो गाजी हुआ वरन. हाजिर हर हालत में हूं। इस बात का ख्याल मेरे इन दीनदार सिपहसालार और सिपाइयों को चाहिये सिर्फ जर और जमीन का मुआमिला नहीं है वरन दीन की बात है।

इस समय राजपूत सेना में कुल सत्तर हजार सैनिकों का जमाव था जिसमें से जीवन की आशा से उदासीन निपट मरन-मूठ केवल पच्चीस हजार थे। इनमें भी बीस हजार वैतनिक सिपाही थे और बारह हजार जागीरदार सरदारो के सेवक थे कुल मिलाकर पाच सौ राजपूत सरदार थे और दस मुख्य सेनानायक थे और इन सब का नेता शूरशिरोमणि राजा पृथ्वीराज था। शत्रु सेना को अजमेर में आया हुआ जानकर जिस समय राजा पृथ्वीराज ने राजपूत सेना की सुसज्जित हाजिरी ली उस समय यावत् दृष्टिगोचर छिति क्षत्रियों से छा गई और आकाश मे धूल आच्छा-दित हो गई।

सिन्धु नदी पार कर के शहाबुद्दीन ने अपने मत्री तत्तार खा, खुरासान खा, हस्तमखा, मारुफ खा, कमालखा आदि मुसाहबों से कहा कि तुम लोग अच्छी तरह से जानते हो कि मै इस वक्त एक ऐसे दुश्मन पर फौजकशी करने जा रहा हूं जिसके मुकाबले में कई बार नीचा देख चुका हू मुझे उसने गिरफ्तार कर लिया और तुम लोग चुप के से भाग गए। मगर मेहर इलाही और दुश्मन की बेवकूफी कि मैं वहा से सहीह सलामत निकल आया। मगर फिर भी तुमने ऐसा ही किया तो ख्याल रक्खो कि मुश्किल होगी। गो कि मुझे पूरा यकीन है कि अब दुश्मन में वो जोर बाकी नहीं है और हमारा बाजू हर तरह म[illegible] हूत है मगर फिर भी तुमसे ताकीद कर देना [illegible] फर्ज है और इसी तरह से तुम तमाम फौज [illegible] ताकीद कर दो। शाह के ऐसे वचन सुनकर उन लोगों ने कहा 'जहापनाह अलीजाह हुजूर का फर्माना दुरुस्त है मगर अब ऐसा गुमान हरगिज न कीजिए कि हम लोग हारेंगे। इस वक्त हम लोग व[illegible]

हथियार करेंगे कि हिन्दुओं के होश फाखता हो जायेंगे। इस वक्त हम लोग हुजूर के रोबरो कुरान शरीफ़ के रू से अर्ज करते हैं कि हमारी बोटी बोटी क्यों न उतर जाय मगर भागना हराम है, खातिर जमा रखिये कि इस वक्त दुश्मन जरूर पकड़ा जायगा क्योंकि वो खुद खस्ता खराब हालत में है और उस तरफ़ से जो हम्मीर अपने में आ मिला है उसके कहने मुताबिक लड़ाई करने से फतह की पूरी उम्मेद है। अपनी जो नौ लाख फौज है उस में से चार लाख तो बिलकुल पीछे छोड दी जाय बाकी पाच लाख में से चार लाख के दो टुकड़े करके दुश्मन का मुकाबला किया जाय और छटे हुए सौ सरदार एक लाख सेना को पाच हिस्सों में बांट कर मैदान जंग के गिर्द बड़े फासिले से मुस्तैद रहें। हरामी हम्मीर की बतलाई हुई इस युक्ति का अभ्यतर शहाबुद्दीन की समझ में भी जम गया और उसने आज्ञा दी 'बेशक ऐसा ही किया जाय' तदनुसार सेना सुसज्जित करके व्यूह बद्ध की गई। और सेना नायकों में उक्त प्रोग्राम की सूचना, देदी एक महमूद नाम का रूहेला सरदार शहाबुद्दीन के साम्हने आया और बोला इस वक्त मैं सरे मैदान और हजूर आली के साम्हने कसम खाकर यह शर्त करता हूं कि मैं खुद पिथौरा को पकड़ूगा और हुजूर की कदमबोसी में लाकर हाजिर करूंगा। देखू हिन्दू लोग कैसे जवामर्द और बहादुर हैं।

शहाबुद्दीन ने एक लाख सेना के साथ कमाल खा का सनजज के जल में होकर पानीपत की तरफ रवाना किया। इससे उसके दो मतलब थे कि एक तो जमीन के उतार चढ़ाव और लड़ाई के मौके की जाच कर आवे और दूसरे राजपूत सेना में जाकर उसकी संख्या तथा अन्य आवश्यक बातों का भेद ले आवे। इसी लिये पृथ्वीराज के नाम एक सन्धिपत्र लिखकर उसे निर्विघ्न काम कर आने की एक राह निकाल दी।

अस्तु कमालखां चला चला राजपूत सेना में जा पहुंचा और दूत की भांति वह बेधड़क महाराज पृथ्वीराज के सिरायचे के द्वार पर चला गया। उस के आने का समाचार पाकर पृथ्वीराज ने उसे बुलाया। उसने बड़े अदब से सलाम करके जरी में लपेटा हुआ खरीता पृथ्वीराज के साम्हने रख दिया। राजा की आज्ञा पाकर मुंशी ने उसे पढ़ा। उस में लिखा था।

हिन्दुओं के राजा राजा पृथ्वीराज को मुसल्मानों के बादशाह शहाबुद्दीन महम्मद गोरी की मुनासिब सलाम कुबूल हो। आगे मालूम हो कि इस तरफ हम और उस तरफ तुम दोनों एक एक कौम के सरताज है। हमारी तुम्हारी दोनों की बादशाहत की सरहद मिलती जुलती है इस सबब से हमेशा मुल्की झगड़े दरपेश रहते हैं। हर एक बात को तुम अपनी तरफ खींचते हो हम अपनी तरफ़ खींचते है। ये रोजाना फसाद मुझे पसन्द नहीं। लिहाजा आपको बजरिये इस रोबकार के इत्तला दी जाती है कि या तो आप नीचे लिखी हुई दोनों शर्तों को कबूल कीजिये या हमसे जंग लीजिए।

शर्तें ये थीं—कि पंजाब का आधा सूबा जहां तक मुसल्मानों का ज्यादः सरोकार है हमारे ताबे में रहे और दूसरी यह कि अपने लड़के रेनसी को मेरी खिदमत में भेजो।

इस लिखतम को सुनतेही सब सामन्त गुस्से में भरे हुए सन्न रह गए। चामडराय बोला रे बीठ बपीठ तेरे बादशाह को ऐसा लिखते हुए लज्जा नहीं आती? क्या अभी सारुडा और मदनपुर की खबर भूल गए। अथवा जब घग्घर नदी की लड़ाई में मुसल्मानों सेना का पुतला भी न जीता बचा था और शाह बाधकर अजमेर में बंदी रक्खे गये थे तब की भी सुधि नहीं है। हम लज्जाशील राजपूतों को बराबर अपना बखान करने में तो लज्जा आती है पर उस धृष्ट को मुंह में थप्पड़ें खाते हुए भी मार मार कहते लज्जा नहीं आती। जामराय यादव

और बलिभद्रराय भी बोले। पुन बसीठ हम लोगो ने शाह के साथ जैसी नेकी की सो उसी का मन जानता होगा। जब पकड कर लाये तो उसने पीर पैगम्बर और कुरान सब की कसमें खाई और तलवार सिर पर रखकर बोला कि अगर अब मैं तुमसे तकरार करु तो खुदा मुझे बरबाद कर दे। आज हरामी हम्मीर का साथी होकर फिर चढ आया है और राजकुमार रेनसी को अपना सेवक बनाना चाहता है। धिक है उस निर्लज्ज को। छोटे मुंह बडी बात करते आप लज्जा नहीं आती। धन्य समय का फेर आज मेढकी को जुकाम हो आया है।

परन्तु राजा पृथ्वीराज ने रावलजी से पूछा कि क्या काम करना चाहिए। तब उन्होंने उत्तर दिया कि अब क्या करना है जो करना था सो तो कर चुके यदि तुम यह समझो कि अब संधि हो जाने से सदा के लिये झगडा तै हो जायगा सो भी नहीं है अतएव मै तो यह समझता हू कि कडाकूर उत्तर उचित है अतः उपरोक्त शाही पत्र के उत्तर में पृथ्वीराज की तरफ से यह पत्र लिखा गया।

इसमे कोई संदेह नहीं कि तुम बडे अभिमानी हो तुम्हें अपने बाहुबल का बडा भरोसा है परन्तु प्रतीत होता है कि तुम कृतघ्न भी पूरे हो। मालूम होता है तुम यहा से बन्धनमुक्त होने के समय की सब बातों को भूल गए। शायद इसका यह कारण हो कि अब वह काका कन्ह नहीं हैं जिन्होंने तुम्हें छुडाया था अच्छा भूल गये हो तो भूल जाओ तुम्हारी तुम्हारे साथ हमारी हमारे साथ।

उक्त दूत कामालखा को रवाना करके शहाबुद्दीन ने भी पडाव छोड दिया था। वह खानखाना तत्तारखा रुस्तमखा हाजीखा और फीरोजखा इन चारों की हुकूमत में चार लाख सेना के सहित बराबर धीरे धीरे आगे बढ़ता आता था। पांच दिन के बाद जब कमालखा लौटकर ठिल्लावहार गार के पास पहुंचा तो उसे वहा पर शहाबुद्दीन मिला उसने जाकर सादर सलाम किया और पृथ्वीराज की ओर से लिखा हुआ पत्र उसके हाथ में दिया। उसने उस पत्र को सुना और सुनकर कुछ देर तक सोचता सा रह गया फिर उसने तत्तारखा से कहा कि यहीं से फौज के दो हिस्से कर दिए जांय। तबतक दो गुप्तचर भी लौट कर आ पहुचे और उसे उन्हों ने कहा जहापनाह इस वक्त तो दुश्मन के पौबारह देख पड़ते हैं। तमाम राजपूत सरदार उसके साथ में इकठ्ठे हैं और किसी तरह की कमजोरी नजर में नहीं आती क्योंकि उसके सब सामन्त भी इस वक्त जान गेदरी पर रखकर जंग करने को तैय्यार है पृथ्वीराज का बहनोई समरसिंह भी तीन हजार फौज के साथ हाजिर हैं पुडीर लोग जो उससे बागी हो गए थे वे भी इस वक्त उसकी फौज में शामिल हैं चामण्डराय की बेडी काट दी गई है और वह भी मरने पर मुस्तैद है और बलिभद्रराय जैतराव जामराय आदि जो अबतक उसके हामी थे वह तो हैं ही। यह समाचार पाकर शहाबुद्दीन कुछ सहमा पर फिर सचेत होकर चोकन्ना होगया और उसने सब सरदारों को सलाह करने के लिये बुलाया।

शहाबुद्दीन ने चर का कहा हुआ समाचार सब को कह सुनाया और पूछा अब तुम्हारी क्या सलाह है। तब सब लोग बोले हुजूर सलाह क्या है लडाई मे मर गये तो 'अल्ला अल्ला खैर सल्लाह' अगर जिन्दा रहे तो पिथौरा को पकड कर कदमबोसी में हाजिर करेंगे। यह सुनकर उसका चित्त कुछ प्रसन्न हुआ पर उसने अपने तथा अपने सरदारों के मनोबल को दृढ करने के लिये अपने भविष्यद्वक्ता वृद्ध काजी को बुलाया। शाही आज्ञा पाते ही रोजा नमाज का पक्का इमान का सच्चा कुरानशरीफ की आयतें बर जबान पढने वाला सफेद दाढ़ी वाला सफेद पोश मोलवी अल्लाह के नाम की तसवी जपता हुआ दरबार में हाजिर हुआ और हुक्म पाकर उसने रमल की रु से कहा कि इस वक्त मुसल्मानी लश्कर की नसर ही फतेह होगी। इस वक्त हुजूर का इकबाल रहेगा और दुश्मन पामाल होगा। इसमें अगर जरा भी फरेब हो तो

हुजूर चाहे मेरी मो सजा फरमावें मुझे बिला इन्कार मंजूर होगा।

काजी का कथन सुनकर सब के हृदय में एक विशेष उत्साह और आशा की उमंग आ गई। अब तक धड़कता हुआ हमीर का दिल भी ठिकाने आ गया। शाह ने ततारखा को हुक्म दिया कि कल बड़े सबेरे कूच कर दिया जाय और यह भी कहा कि दस हजार सिपाही छटे हुए खास हम्मीर की निगरानी के लिये अलग दिये जाय।

चार की घडियार बजी। उधर मुर्गों ने बाग दी इधर काजी ने अजा दी। मुसल्मान सेना में हलचल पड गई सब सरदार या सिपाही बजू कर के नमाज पढ के और कमर कस कर लैस हो रहे। दिन के सिंदूरा फूटते ही मुसल्मान सेना कूच हुई। आगे आगे सिंदूरिया के स्वर में बाजे बजते चलते थे और पीछे पीछे सब सेना चलती थी। उस समय चार लाख मुसल्मानी सना के चलने से इतनी धूल उड़ी कि सूर्य्य आच्छादित हो गया। दसों दिशाओं में धूल की धुध छा जाने से ऐसा आभास होत. था मानो संध्या की अंधेरी झुमती आती हो और रोस भरे सैनिकों की लाल लाल आखे ऐसी प्रदीप्त होती थीं मानो दिवाली के दीये जल रहे हों। यह देख कर पशु पक्षियों को तो साक्षात दिन के अवसान का भ्रम हो गया। और और पक्षी तो अपने घोसलों में घुस रहे परन्तु चकवी बिछोह के दुःख से मलिन मन हो अपने नसीब को बिसूरने लगी। तब चकवे ने कहा प्यारी मलिन मन मत हो यह रात्रि की अन्धियारी नही बरन् गजनी पति शाह की सवारी चली आती है। रणवाद्यों के रव से ऐसा आतंक छाया हुआ था कि अपना शब्द आप अपने को सुनाई नहीं देता था।

शत्रु सेना को सन्निकट आया हुआ जानकर राजपूत सेना में भी जङ्गी सजनई होने लगी। क्या सरदार क्या सिपाही सबसत्यनिष्ठ राजपूत योद्धा अपने अपने इष्ट देवताओं को स्मरण करते हुए हथियार कसने लगे। योगिराज रावल समरसिंह ने भी शिव का नाम लेकर माथे में विभूति लगाई, उज्वल वस्त्र पहिने, कमर मे तलवार कसी, हाथ में साग ली और घोडे पर सवार होकर मदान में आ डटे। राजा पृथ्वीराज भी अपने बनाव मे सज कर दुरुस्त था। तीसरा डंका होने ही वह भी गरुड पर सवार हो कर सेना के बीच में उपस्थित हो गया। सेना के श्रेणी क्रम से व्यूह बद्ध होने का निशान होते ही रावल समर सिंह दक्षिण बाजू पर चले गए। तब जामराय यादव ने झपट कर राजा पृथ्वीराज के कान में कहा कि इस बार समय टेढ़ा है, रावल जी अपने पूज्य हैं अस्तु जहा तक बन पड़े उन्हें स्वय बचाना उचित है। यह सुनकर पृथ्वीराज ने बलिभद्रराय कूरम, पावस राय पुंडीर और मदन सिंह परिहार—इन तीनों सरदारों को इशारा किया और आप घोडा बढ़ाकर बाएं बाजू पर चला गया। वहां उन तीनों सरदारों को नियत करके फिर रावलजी के पास गया। उसने उनसे कहा' रावलजी आप हमारे बडे हैं आप जैसे हमारे हितू और शुभ चिंतक है वैसा कोई कदापि नहीं हो सकता। अतएव हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप इस समय व्यूह में सम्मिलित न होइए कृपा करके पीठि सेना के नेता रहिए और पीछे से दोनों सेनाओं की चाल और दाव बचाव परखते रहिएगा। यह सुनते ही रावलजी ने हँसकर उत्तर दिया वाह राजन खूब यह दुसाध्य भार मेरे ऊपर देते हो। इस समय स्नेह सबन्ध का विचार न करो, यहां हम तुम पे सामन्त और सिपाही सब बराबर है। जबतक इकट्ठे मिले खडे है तबतक चाहे छोटे बडे देख लो अन्त में तो सब एकही पन्थ के पथिक है। इसके बाद दोनों बराबर घोड़े लगाकर सारी सेना का निरीक्षण परीक्षण करते हुए इधर से उधर घूमने लगे। चारों तरफ एक चक्कर लगाकर जब दोनों पुन. सेना के मध्य भाग में आगए तो पृथ्वीराज ने एक बहुमूल्य मोतिओं की माला रावलजी को पहिनाई और बलिभद्रराय और पावसराय पुंडीर

सिरवानराय रंधरीराय आदि कई एक अच्छे अच्छे सरदारों को साथ में देकर उनसे बाएं बाजू का नेता होने की प्रार्थना की। उसे रावलजी ने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया पर उसी समय रावलजी ने जामराय के कान में लगकर कुछ कहा जिस पर जामराय ने जैतराव की तरफ दोनों उंगलियां बतला कर कुछ इशारा किया। जैतराव भी झपटकर वहीं आ गया और उसने राजा पृथ्वीराज का राजसी चिन्ह लेकर अपने माथे पर लगा लिया और वह इस लिये कि शत्रु सेना भ्रम में पड़कर उसी को राजा पृथ्वीराज समझे। उसी समय यह बात भी तै पाई कि चामंडराय हरावल का नेता रहे जैतराव दहिने बाजू पर रहे और रावलजी बाएं बाजू पर।

कविचन्द कहता है कि जैसा मैंने सुना वैसा कहता हूं। राजपूत सेना की संख्या कुल * तेरासी हजार थी। श्रावण अमावस्या शनिवार को, राजपूत सेना में आई रात से तैयारियां होने लगी थीं और इस आतंक ओज उत्साह और आडंबर से कि देखने सुननेवालों के छक्के छूटते थे। सेना के रणवाद्य साक्षात प्रलयकाल के से मेघ गरज रहे थे। हाथियों के झूलों की ठनठनाहट और घोड़ों की ठीं के कर्कश स्वर पर कान नहीं दिया जाता था। नीचे पृथ्वी थर थर कांपती थी और आकाश में विमानों पर चढ़ी हुई अप्सराएं कौतुक देख रही थीं। सूर्योदय होते होते सब सेना सुसज्जित होकर मैदान में जम गई और दस की दस में व्यूह बद्ध होकर युद्ध करने के लिये सन्नद्ध होगई। यह समस्त राजपूत सेना चार भागों में विभाजित हुई। तेतीस हजार सैनिकों के साथ चित्रकोटपति रावल समरसिंह बाईं बाजू पर था और जामराय यादव, बलिभद्रराय कूरम, पावसराय पुण्डीर, मदनसिंह परिहार ये चार सर्दार उनके सहायक सेनानायक थे। इक्कीस हजार सैनिकों का सिरमौर जैतराव प्रमार दाहिनी बाजू का नेता था और आगजराज राठौर, अनंगराय भाटी, जामराय यादव, वकटराय और धीरराव प्रमार, चन्द्रसेन बडगूजर, विरसिंहराव चहुआन, विजैराज बघेला और तेजलराय डोड़िया ये नौ सरदार उसके सहायक थे। उन्नीस हजार सेना सहित हरावल में चामण्डराय था और मारथराय और तिपाराय परिहार, जगलीराव दाहमा, ठठराराय झाला, पुन पहार और भीमराय सोलंकी ये पांच सरदार उसके सहायक थे और शेष यानी दस हजार सेना से राजा पृथ्वीराज पीठि सेना में सुरक्षित था और पंडितराव देव अर्थात् गुरुराम, पंचिराय गहलौत, पचाइनराव और और भी दस पांच साधारण सरदार उसके साथ में थे। इस प्रकार से व्यूहबद्ध होकर जिस समय जो भरी राजपूत सेना ने जंगी सलामी ली उस समय सुरसमूह आकाश से पुष्प वर्षा करने लगे और भूखे भूत भैरव गटा काह काह गरजने लगे।

इस समय शहाबुद्दीन की सेना का पड़ाव संतूलपुर के पास था। उसके साथ में एक लाख सवार नौ लाख पैदल और दस हजार हाथी थे *। जब शहाबुद्दीन ने राजपूत सेना की सजनई का शोर सुना तो उसने अपने मन्त्री को भी अपनी सेना को तैयार होकर व्यूहवद्ध होने की आज्ञा दी। तदनुसार मुसल्मान सेना भी सजकर मैदान में जम गई और इस प्रकार से व्यूहबद्ध हुई। दो लाख सिपाही दो हजार हाथी और चिमनखां, ममीखां, शाहकाभाई उसमानखां, महमूदखां, रुस्तमखां, सूरमखां, हाजीखां, गाजीखां, काजीहुमाम, हुसैनखां, सादीमलिक, अलीमानखां, हाहुलीराय हम्मीर और पांच सौ सरदारों के साथ ततारखां दाहिनी बाजू पर था। दो लाख सिपाही दो हजार हाथी ईमनखां, अलीलखां, पाकुब

* [illegible] साहब अपनी पुस्तक [illegible] हैं कि पचीस हजार सेना नहीं हो सकती है।

* पहले शाहीसेना की संख्या कुल नौ लाख बतलाई गई है उसमें से एक लाख लाहौर में [illegible] रखना [illegible] चार लाख मुलतान में रही [illegible] चार लाख दो [illegible] में [illegible] मैदान में आई पर इस समय लड़ाई के लिये [illegible] लाख सेना उपस्थित बतलाकर दो दो लाख के [illegible] विभाजना में आई है इसलिये इस बात का संदेह है कि मुसलमानी सेना के व्यूह का वर्णन [illegible] है।

खां, हवीबखां, मुलतानखां, महमूदखां, मीरनमीरनखां, कमाल खां, सुलेमान मीरा खां, मीरअब्बा, मीरअब-दुल्ला, मीरअगा आदि सरदारों सहित खुरासानखां नाई बाजू पर था। और मामूदखां, तातारखां, फीरो-जखां, पीरनमीर, शाहिमिरन, उमीदखां, फतेवदखन और वंकटराव इन सरदारों सहित शहाबुद्दीन सेना का सेनानायक था। और तीन हजार हाथी और दो लाख सेना सहित बहुत से नामी नामी सरदार हरावल में थे।

सम्वत् ११५८ श्रावण वदी अमावस शनिवार को दो घड़ी दिन चढ़ते ही दोनों सेनाओं का मुकाबला हो गया। पश्चिम दिशा से म्लेच्छ मुस-ल्मान और पूर्व से सपूत राजपूत दोनों एक दूसरे पर इस तरह से टूटे जैसे वारुनी में छका हुआ छैल वारिवधू पर गिरता है। वर्षा की बहार होने से हाथियार जंबूर आदि अग्न्यास्त्र यथा तथा ही रहे। दोनों दल एक दूसरे में पिलकर खिल्त मिल्त हो गए और तलवार कटार बरछा बिछुआ सेल साग आदि धारवाहे तथा अनयारे शस्त्रों की मार करने लगे। वीरत्व के जोश में भरे हुए दोनों दल के जवान ये उन्हें मारते और वे उन्हें मारते थे सैकड़ों घाव लग जाने से किसीका शरीर टुकडे टुकड़े होकर टूट गिरता था और कोई कोई एकही हाथ में कटकर दो टूक हो जाते थे। ऊपर से पृथ्वीराज के कमान से भी सरासर बान छूटने लगे और उनसे सनाह सहित शत्रु सेना के सिपाहियों के सीने फूटने लगे। जहां तहां जवान खून से तरा-बोर होने लगे और पृथ्वी पर भी कुछ कुछ छींटे पड़ने लगे।

जुटते समय मुसल्मानी सेना एक ओर में थी पर घराघरी होने पर थोड़ी देर में वह दो दलों में विभाजित होगई और उसने राजपूत सेना को बीच में दे कर दो ओर से आक्रमण किया। दो पहर तक दोनों दलों में घोर युद्ध होता रहा और फिर दोनों अपने अपने पड़ाव को हट गए। इस युद्ध में ५५० दाहिमा राजपूतों सहित चामण्डराय घायल हुआ। देवराय बग्गरि, माणुक्लाराय भाटी, राना गोइन्दसिंह परिहार, भीमराय राठौर सोरियाराव, छः सौ कूरंभ राजपूत, कई सौ टाका चन्देल और पुंडीर, पांच सौ पचास राजपूत समरसिंह जी के साथ के काम आए और जैतराव प्रमार भी घायल हुआ और मुसल्मान सेना के कुल पचीस हजार सरदार और सिपाही मारे पड़े।

जटाधर वीरभद्र जाकर देवी जालपा के पास पहुंचा। देवी ने उसे सादर आसन दिया और पूछा कहो कैसे आये, तब वह बोला कि आज सुबेल बहुत से भूत वैतालों को साथ लिए हुए महादेव जी के स्थान पर गया और उसने बहुत से शीश मुंड-माला के लिये नजर किये। महादेव जी ने उससे पूछा कहां से लाये। तब उसने उत्तर दिया कि सुल्तान शहाबुद्दीन और राजा पृथ्वीराज के युद्ध में से। धन्य महाराज ये सूर सामंत बडे वीर हैं उनका पराक्रम देखतेही बनता था। इस पर शिवजी ने उसे युद्ध का आद्योपान्त वृत्तान्त वर्णन करने की आज्ञा दी। शिवजी के आज्ञानुसार सुबेल बोला—

युद्ध के लिये प्रस्तुत सब सामन्तों ने चित्तौर-पति रावल समरसिंह को सभापति स्थापित करके आगत युद्ध प्रबंध पर विचार करने के लिये एक सभा की। उस सभा में जामराय यादव ने सुयश (१) मार्ग का अवलोकन किया और बलिभद्र राय ने

(१) कृष्णसिंहवाली मूलप्रति में "साक खुयिक्रम सत्त सौ षट भग्ग पचास" पाठ है परन्तु सत्त सो से किसी तरह '११' का मतलब नहीं निकलता अस्तु मेरे अनुमान से ग्यारह सौ पाठ होना चाहिये। सम्भव है कि यही पाठ होगा भी, किसीने इस दोहे पर निशान भी किया है पर यह कैसा निशान है सो मेरी समझ में नहीं आया।

(१) सुयश—नीतिद्वारा राज्य की ओर मान मर्यादा की रक्षा करना।

विपथ मार्ग का परन्तु रावल जी ने दोनो का खण्डन करके एक मात्र क्षत्री धर्म निर्वाह की सम्मति दी। उसने कहा सुनो भाइयो चौरासी मे भ्रमण करते करते मनुष्य योनि बड़े भाग्य से प्राप्त होती है। फिर भी क्षत्री के कुल मे जन्म पाना तो अत्यन्त सौभाग्य की बात है। इस समय हमलोगों के पूर्व कृत पुण्यों के प्रभाव से युद्ध क्षेत्र में प्राण दान दे कर सदैव के लिये जन्ममरण की यातना से मोक्ष पाने का मार्ग प्रस्तुत है यदि अब भी चूक जाय तो इससे अधिक दुर्भाग्य और क्या हो सकता है। रावलजी की इस सम्मति को सबने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया और सब लोग कमरें कसकर शत्रु से समर करने के लिये सन्नद्ध होगए।

उस समय वृद्ध जामराय यादव ने रावल जी से कहा आप तो योगिराज है पोथी पुराण की सब बातें जानते है अतः इस समय कृपाकर हमलोगो को कुछ राजधर्म और क्षत्रीधर्म का विवरण सुनाइए। साथही इसके यह भी बतलाइए कि कोई वीर पुरुष सालोक मुक्ति किस प्रकार और किस कारण से पाता है? । यह सुन कर रावल समरसिंह बोले। धन्य वयोवृद्ध जामराय जी आपने अच्छा प्रश्न किया। वैसे तो व्यास जी ने पुराणों में इस विषय की विस्तृत व्याख्या की है परन्तु कपिलदेवजी ने जो ज्ञान भरथ मे कहा और महाभारत के समय श्रीकृष्णजी ने पार्थ से कहा उसीके अनुसार मै इस समय तुम सबसे कहता हू क्योंकि शत्रु सेना समुख उपस्थित है। देखिए! कालचन्द्र के तिमिर मे पड़े हुए जीव को धर्म नही सूझता। केवल अंत समय मे निज तीनों अवस्थाओं का ज्ञान होता है। जन्मते ही अज्ञान और कर्मराग होता है। युवा होने पर स्त्रियों के प्रेम में लिप्त हो जाता है और वृद्धा अवस्था मे तृष्णा से पीड़ित हुआ जीव स्वरूपमेव नर्क मे पड़ता है।

इस पर जामराय ने कहा तो इस झंझट से सुलझ कर क्योंकर हम लोग भव पार हो सकते है। इस पर रावलजी बोले हा सुनिये वही कहता हूं— यह जीवनकाल जागृत सुसुप्ति स्वप्न और तुरिय चार अवस्थाओं में विभाजित है। इन चारों अवस्थाओं मे सद असद का विचार रखना और सार बात को ग्रहण करना मुख्य है और वह इस प्रकार से हो सकता है कि अपने माता पिता की सेवा करके सदा उनको प्रसन्न रक्खे और हृदय में स्वामिधर्म धारण किये रहे, दुष्टो का संसर्ग न करे, न उनकी बातों पर ध्यान दे। जहा तक बन पड़े शुभ कर्म करे सो भी ईश्वर हेतु अर्थात् उसका प्रतिफल पाने की इच्छा न रक्खे। ईश्वर के चरण कमल चित्त मे धरे रहे, कभी अगम्य विषय पर साहस न करे और सुख दुःख में सदा तन मन से स्वामी की सेवा किया करे। इस तरह से क्षत्री ससार पार हो सकता है। और भी क्षत्री को चाहिये कि सदा वेदोक्त नीति का आचरण करे। स्वामि धर्म मे न चूके और हमेशा हृदय मे अनहद ज्योति का ध्यान धरे हुए योगि की भांति उदड रहे अर्थात् लौकिक की सब कार पर किसी में लिप्त न हो, न अपने को किसी कार्य का कर्ता माने, न उसका फल भोक्ता माने और जिस समय शत्रु का सामना आ पड़े तो बड़े उत्साह से लड़ मरे, पर युद्ध करना अपना धर्म जानकर, न कि किसी लालच वश हो कर। युद्ध क्षेत्र में उपस्थित होकर ऐसी ध्यानमुद्रा करे कि इस शरीर का शोणित रक्ता देवी को समर्पित है। पिंड पावक में भस्म होगा। स्वास स्वामी की है। शीश शिवजी की रुंडमाला के लिये है। मै इस ज्योति स्वरूप परमात्मा का अंश हूं और अंत में उसीमें जा मिलूंगा। यह वीर पुरुष को उचित है, एवं वीर पुरुष के ये लक्षण है कि वह किसी का शत्रु न बने, सबसे उदासीन रहे, काम क्रोध ईर्षा और अभिमान से रहित हो, और जितेन्द्रिय हो, भलाई बुराई अथवा और गृहस्थी के प्रपंचों में चित्त को फसने न दे, अपनी निन्दा या स्तुति करनेवालों की तरफ ध्यान भी न दे, स्वामी के हित मे और युद्ध में मरने के लिये सदा सन्नद्ध रहे, सदा सच्चे शिष्टाचार से मिले [illegible]

काम आ पड़े वज्र स्वरूप हो जाय और जातीय लज्जा के लिये जीवन को तिलांजुली दे दे।

फिर जामराय बोला कि अच्छा अब कुछ राजनीति का तत्व बतलाइए। तब रावलजी ने कहा कि एक अच्छे राजा को माली के कर्म का आचरण करना चाहिये जैसे माली अपने बाग के वृक्षों की सम्हार करता रहता है वैसे ही राजा को अपनी प्रजा का भरण पोषण करना चाहिए। जैसे माली फले फूले हुए वृक्षों से युक्तिपूर्वक फल फूल उतार लेता है वैसेही राजा को धनिक पुरुषों से धनाकर्षित करते रहना चाहिए, नहीं तो जैसे उधर डार से गिर कर फल फूलों के व्यर्थ जाने की सभावना रहती है वैसेही इधर धनवानों को धन का भी किसी समय कुमार्ग में नष्ट होजाना संभव है। राजा अपने मंत्री को राज्य के समुचित अधिकार दे पर उसे अपने से सिरजोर न होने दे नहीं तो एक न एक दिन अवसर पाकर वह राजा को भी चाट बैठता है जैसे माली छोटे छोटे बिरवों को बढ़ाने का यत्न करता रहता है और बड़ों को काट छांट कर छोटा कर देता है वैसे राजा भी अपनी प्रजा में कांट छांट करता रहे, जैसे माली वृक्षों की टेढ़ी डालों को पेड से काट डालता हैं वैसेही राजा भी अपने से ऐंठ कर चलने वालों को समूल नष्ट कर दे और जैसे बगीचे की रखवाली के लिये माली कटीले वृक्षों की वारी लगाता है वैसेही राजा अपने राज्य की रक्षा के लिये अच्छे अच्छे वीर और विकट योद्धाओं को अपनी सेना में स्थान दें।

इसके पश्चात् रावल जी ने सब सामन्तों तथा अन्य राजपूत योद्धाओं को संबोधन करके कहा कि अब खूब बातें हो चुकी अब लड़ने मरने के लिये तैय्यार हो जाओ। यद्यपि मुझे विश्वास है कि आप लोग स्वयं पूरे पुरुषार्थी और पराक्रमी हो पर फिर भी कहता हूं कि असुर सेना सहजोर है इसलिये इस उत्साह और कौशल से युद्ध किया जाय कि शत्रु को भी राजपूतों के पराक्रम का पूरा पूरा पता लग जाय।

श्री शिवजी ने कहा हां सुवेल कहते जाओ मुझे इस कथा को सुन कर बड़ा आनन्द आ रहा है। तब सुवेल यक्ष बोला कि महाराज पहिले दिन तो केवल दो चार घड़ी युद्ध हुआ परन्तु दूसरे दिन अर्थात् श्रावण सुदी प्रतिपदा रविवार को चार घड़ी रात्रि से पुनः दोनों दल सुसज्जित हुए। राजा पृथ्वीराज की ओर के समस्त राजपूत योद्धा सवेरा होते ही हथियार बाध कर मैदान में श्रेणीबद्ध होकर खड़े हो गए और अपने अपने इष्ट देवताओं का स्मरण करते हुए ऐसे शान्त और स्थिर चित्रलिखे से रह गए जैसे निर्जीव पत्थर के पुतले हों। उन्होंने मनही मन जननी जन्मभूमि को प्रणाम किया और वे जीवन की आशा को तिलाञ्जुली देकर मरने मारने को मुस्तैद होगए। रावल समरसिंह और राजा पृथ्वीराज भी घोड़ों पर सवार होकर चारों ओर निरीक्षण परीक्षण करते हुए चक्कर लगाने लगे। दोनों टहलते हुए जब बाई बाजू के घोडे पर पहुचे तो एक दक्षिण देश का राजपूत रावलजी से बोला कि शत्रु सेना सहजोर जान पडती है इसलिये मेरा यह कहना अनुचित न होगा कि सेना की पूरी सम्हाल रक्खी जावे। आज बडी विकट लड़ाई होगी। रावल जी ने उस सरदार की तजवीज की सराहना की और लौट कर उन्होंने अपने भतीजे कन्ह से कहा कि तुम इसी समय व्यूह से पृथक होकर दिल्ली को चले जाओ और वहा राजकुमार रेनसी के साथ मे रहो। यह सुन कर कन्ह ने कहा कि यदि ऐसा ही करना था तो आप मुझे यहा लिवाही क्यों लाये चित्तौर में ही छोड़ देते। अब मै आपको यहा छोडकर उलटा जानेवाला नहीं। ऐसा करने से कुल और धर्म दोनों कलंकित होते है। मैने जाना कि आप मुझे दिल्ली के दुर्ग की रक्षा करने को भेजते हैं पर मेरी ओर से यही प्रार्थना है कि मुझे क्षमा करके किसी दूसरे को आज्ञा दी जाय। आज मैं श्रीमान् की सेवा मे वह पराक्रम करूंगा कि देवता कौतुक देखेंगे, रुंड और मुंडों का पहाड़ लगा दूंगा, शोणित की सरिता बहादूंगा और उसमें शत्रु सेना

के अच्छे अच्छे शूरवीरों का रोस सिरा दूगा। काका जी कर जोड कर कहता हूं कृपा कीजिए इस सुअवसर पर मुझे समर से वंचित न कीजिए।

यह सुनकर रावल समरसिंहजी ने उस किशोरवय वीर कुवर कन्ह को कालेजे से लगा लिया और कहा धन्य हो पुत्र ईश्वर तुम्हारी सहायता करे। इसके बाद रावलजी ने अपने साथ के अन्यान्य सरदारों को भी समझाया। इतने मे जामराव यादव ने रावलजी से कहा कि आज अपनी सेना को गरुड़ व्यूहाकार रचिये। और मेरे बिचार से एक पच्च पर बलिभद्रराय रहे एक पर मै स्वयं हू, चेच चोंच और कध भाग पर पुंडीर रहे, पांव और पिंड पर आप और कन्ह रहें, पूछ पर महनसिंह और कुछ सेन को वाया देकर बीच उदरस्थान पर राजा पृथ्वीराज रहे। जामराय का यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और इसीके अनुसार सेना व्यूहबद्ध हुई। उधर मुसल्मान सेना को तत्तारखा ने चंद्र व्यूहाकार रचा। उस चन्द्रव्यूह के अर्द्धभाग का नेता तत्तारखा खुद हुआ और आधा भाग खुरासान खा के तहत में था, रुस्तमखा और मारूफखा गक्खरो की सेना सहित हरावल में रहे और नमकहराम हाहुलीराय हम्मीर को बीच में देकर शहाबुद्दीन पीठ पर था। जब दोनों दलों के ठीक जुटाजुटी का समय आया तब पावसराय पुंडीर ने पृथ्वीराज से प्रणाम करके पूछा क्या आज्ञा है ? आज बादशाह को बांध लाऊं या हम्मीर का सिर काट कर लातों मारता हुआ ले आऊं ? यह सुन कर पृथ्वीराज ने कहा धीर के सपूत पूत पावस आज तू हम्मीर का सिर काट लाए तो बडा काम करे।

इधर से ये बढ़े उधर से वे बढ़े और आधी घड़ी के अमल मे दोनों एक दूसरे से जुट पड़े। एक घड़ी भर दोनों में परस्पर वह मार काट हुई कि किसीने अपना पराया भी नहीं पूछा। इसके बाद राजपूत सेना के अगुआ पुंडीर वीर मुसल्मानी सेना को बिदारते हुए हम्मीर को ढूंढने लगे। इस बात को परख कर मारूफखां हम्मीर को बिलकुल अदृश्य रखने की चेष्टा करने लगा और आड़ी टेढ़ी चाल करके हर तरह से हम्मीर को बचाने लगा। पर वाह रे पुंडीर बीरो ज्यों पिले फिर न पीछे फिरे, जहां डटे फिर न हटे, मतवारे की तरह आंखे मीचकर मार मार तलवारों हजारों मुसल्मान काट कर पाट दिए और एक घड़ी भर में वे हम्मीर के पास तक आ पहुचे। जुड़ते ही उन्होंने हम्मीर के भाई नारेन को घायल करके डाल दिया। अब तक घरी समय में कहा हुआ वेजला खवास और बहत्तर पुंडीर काम आ चुके थे। परन्तु हम्मीर की नजर से नजर मिलते ही पावसराय का दिल दूना हो गया। उसने देखते ही हांक कर कहा खड़ा रह नमकहराम जाता कहां है। इतने पर हम्मीर को बचाने के लिये दस हजार मुसल्मान सवारों ने बागें मोड़ीं पर पावसराय जरा भी न हिचका अपने साथियों सहित मार काट करता हुआ घोडा बढा कर हम्मीर के सिर पर जा पहुंचा और जुड़ते ही उसने तलवार का एक हाथ ऐसा मारा कि हम्मीर का सिर धड से अलग आ गिरा। पावसराय ने उसे भालें में छेद लिया और उसी दम लौट पडा। मुसल्मानों ने बहुतेरा घेरा पर पावसराय बेदाग बचकर अपनी सेना में आ मिला। हिम्मत का पक्का, प्रतिज्ञा का सच्चा अपनी माई का सपूतपूत पावसराय एक लाख शत्रुसेना की आखों में धूलि डाल कर हम्मीर का सिर काट लाया और अधीनता पूर्वक प्रणाम करके उसने उसे राजा पृथ्वीराज को समर्पण किया। हम्मीर के सर को देखते ही राजा पृथ्वीराज प्रसन्न हो गया। उसने एक गभीर स्वभाव से बड़े प्रेम पूर्वक कहा "मैं न जानता था कि पावस तुम ऐसे हो। लाहौर लूट लेने के लिये मैने जो कुछ तुमसे कहा सुना हो सो क्षमा करना। धन्य हो बेटा! अब चार चार तलवारें बांध कर इस निर्लज्ज गजनीपति को बांधो।

ऐसी बातों का असर सुन कर सिपाहियों का जोश दूना हो जाता है। उस समय वीररस के आतक में आकर उन्हें अपना पराया नहीं सूझता। इस समय हिन्दू और मुसल्मान इन दोनों सेनाओं में

भी यही हाल था। तलवारें बराबर चमाचम बिजली सी चमक रही थीं और खून पानी सा बरस रहा था। किसी का पेट फट गया आंतें निकल पड़ीं पर उन्हें कुछ परवाह ही नहीं। शरीर का मास टुकड़े टुकड़े होकर गिरता जाता है वे समझते हैं फूल वर्ष रहे हैं। यही हाल होते होते चार घड़ी व्यतीत होगई। जब हम्मीर का सिर काटा जा चुका तब शहाबुद्दीन को अत्यन्त क्रोध आया और वह स्वयं ही हाथी पर सवार श्वेत वस्त्र पहने हुए चंद्रमा की तरह चंचल हो कर अपनी सेना सम्हारता फिरने लगा परन्तु राजा पृथ्वीराज अब तक उदयाचल की भांति अपने स्थान पर अचल था। शहाबुद्दीन की साज सम्हार से मुसल्मानी सेना का बल बढ़ा देख कर इधर से रावल समरसिंह जी ने घोड़ा बढ़ाया अतएव उनके निज के तेरह हजार सैनिक भी घोड़े छोड़ कर उनके पीछे हो लिए। उस समय रावलजी ने नंगी तलवार लिए हुए दाहना हाथ उठाकर अपने साथियों से कहा मेरे प्यारे चत्री भाइयो अब मन में मरने मारने की ठान लो और जीतने की आशा छोड़ दो। देखो एक न एक दिन मरना तो अवश्य ही है पर ऐसी मौज की मौत बड़े भाग्य मिलती है, जो अब न मरा जायगा सो पीछे पछतायगा।

रावल समरसिंह जी के ऐसे वचन सुन सब राजपूत वीरों ने म्यान से तलवारें खींच लीं और मान मृठ होकर शत्रु सेना पर इस जोर से टूटे जैसे मुद्दतों का भूखा सिंह हाथी पर टूटता है। रावल जी को समर करते देख कर ऊधर से तत्तार खां इनके साम्हने आया। उस समय हिन्दू मुसल्मान दोनों दिल खोल कर ऐसे लड़े कि जिसका वर्णन करने की लेखनी को शक्ति ही कहां है। दोनों दल के योद्धा भेरी नफेरी आदि रणवाद्यों के स्वर में स्वर मिला कर हाकते और एक दूसरे की तरफ भूखे सिंह की तरह ताकते हुए जब भरजोर तलवार का हाथ देते तो फौरन एक एक के दो दो होते हुए देख पड़ते थे, रुंड और मुंडों के अटब अटे गए लोहू और मास गज्जा की कीच मच गई पर दोनों के बीच का जोस जरा भी कम न हुआ।

एक मसल मशहूर है कि "गाडर की पूछ कटी मेढ़े की घान लगी" सोई हाल यहां था। यहां तो हजारों घर के घर बरबाद हो रहे थे अहर्निशि सुख शैया पर सोने वाले मुखिया सरदारों के सिर लातों मारे लुढ़कते फिरते थे। हजारों कुल कन्याएं अनाथिनी हो रही थीं पर भूत प्रेत बैताल और गीध चील्ह जम्बुक स्यार आदि पलचरों के घर मानो यज्ञ हो रहे थे। भूत बैतालादि चूनड़ बजाकर नाचते गाते और खोपड़ियां भर भर कर, रक्त पीते हुए मारे खुशी के फूले नहीं समाते थे। कौवा गीध चील्ह वगैरह और भी अभिनय कर रहे थे। कोई आंत ले भागता था तो कोई हाथ ले भागता था, इत्यादि, इसी तरह होते होते दो हजार सैनिकों सहित शहाबुद्दीन का एक भतीजा मारा गया। यह देख कर नुसरतखां से न रह गया। वह एक हजार चुने हुए खुरासानी सवार लेकर रावल समरसिंह जी पर झपटा। यह देख कर सात सौ राजपूत सवारों के साथ उक्त कन्हकुमार खुरासानखां पर टूट पड़ा। वाह रे राजकुमार कन्ह जैसा कहा था वैसाही कर दिया। एक हजार खुरासानियों में से एक पुतला भी चलता फिरता न छोड़ा, सचमुच रुंड और मुंडों का अखाड़ लगादिया, रक्त की नदी बहा दी और खुरासानखां के रास को उसने सिरा दिया। खुरासानखां को गिरते देख कर शहाबुद्दीन को बड़ा दुःख हुआ तब उसने शेखों के सरदार दीनमुहम्मद को आवाज दी कि मारो इस छोकड़े को, जाने न पावे। निदान दीनमुहम्मद कन्ह कुमार के साम्हने आ गया। उस समय कन्ह के सात सौ साथियों में से केवल दस पांच शेष थे। अस्तु जो थे सो तो शेख के साथियों से जुट पड़े और कन्ह और दीनमुहम्मद का बरनी से युद्ध होने लगा। दोनों वीर तलवार से युद्ध करने लगे, दोनों अपने अपने दाव बचाते हुए तरह तरह के हाथ करने लगे। इसका हाथ बैठता

तो उसका पाव भर मास उतर जाता और उसका हाथ बैठना तो इसका वही हाल हो जाता। लडते लडते दोनों लोहू लोहान हो गए। अन्त में कन्ह के एक हाथ से दीनमुहम्मद दो होकर गिरगया। यह देख कर इम्मामखां और कमालखा उसके दोनों छोटे भाई कन्ह के ऊपर आ टूटे और दोनों ने एक साथ बरछे चलाए। दोनों बरछे राजकुमार की छाती आरपार फोर गए, परन्तु उसी हालत में आगे हिलकर कन्ह ने एक हाथ ऐसा मारा कि दोनों के सिर नारियल से गिर गए। इस प्रकार से मुसल्मान सेना के एक सरताज सरदार नुसरतखा को सहार कर तथा अपने मारियों को मार कर जिस समय कन्हकुमार निर्जीव हो कर धराशायी हुआ तो उसकी जीव ज्योति आदि ज्योति में जा मिली। आकाश से अप्सराए पुष्प वर्षा करने लगी और दोनों दल के योद्धा उस अद्वितीय पराक्रम की प्रशसा करने लगे। रावल समरसिंह जी को तो उस समय इतनी प्रसन्नता थी कि जिसकी कुछ कहने की नहीं, क्यों न हो। अपने कुल के एक सपूत राजकुमार ने वही कर दिखाया जो कहा था। आहा क्षत्री के लिये इससे अधिक सुख और क्या हो सकता है!

चुने हुए डेढ हजार खुरासानी सवारों के साथ नुसरतखा का माराजाना सुन कर शहाबुद्दीन को निहायत अफसोस हुआ। अतएव उसने मिया मुस्तफा और मानखा दोनों भाइयों को आज्ञा दी कि तुम लोग तत्तारखा की मदत करो और बहुत होशियारी के साथ लडो। समरसिंह के सिपाहियों ने नुसरतखा को मार लिया है। शहाबुद्दीन के ऐसे वचन सुनकर वे दोनों भाई कोई दो तीन हजार मुसल्मान सिपाहियों को साथ लेकर रावल समरसिंह जी की तरफ बढे। उन्हें आते देख कर इधर से जैतसिंह अरिसिंह तेजसिंह सामतसिंह नरसिंह रतनसिंह अर्जुनसिंह भीमसिंह और वीरबाहन ये नौ सरदार ढाल लेकर रावलजी के आगे आडे आये परन्तु दोनों मीर सरदारों ने सामने रण काट कर सिर्फ ... [illegible]

अच्छे अच्छे बानैत वीर विद्यमान थे। उन्होंने चट मुसल्मान सिपाहियों को आडे हाथों लिया। उधर से अल्ला अल्ला कहते हुए मुसल्मान लोग समुद्र की तरह चढ आये इधर से हर हर कह कर राजपूत सुमेर की भाति स्थिर होकर उन्हें काटने लगे। इस मार काट के कारण उस समरभूमि में शोणित की नदी बह चली और शूरवीरो के कटे हुए अवयव उसमें मगर मच्छ से तैरने लगे। किसीका सर धड़ से अलग हो जाने पर भी जमीन में पडा मार मार बकता है और किसीका सिरविहीन धडही मार करता है किसीके हाथ कट गए किसी के पैर कट गए और किसी किसी के पेट फट गए और आतें निकल पडीं। इसी तरह हाथा बाही करते हुए मुसल्मान जब बराबर बढते आने लगे तो इस ओर से राव सामतसिंह नामक एक सरदार ने मुस्तफाखा को जा ललकारा। इसका सामने जाना हुआ कि उसने साग छोडी। इधर से इसने भी साग चलाई फिर भी बढ कर दोनों एक दूसरे से जुट पडे और दोनों ने एक दूसरे की छाती में कटार पेल दिया। दोनों एकही दम दम तोड कर शान्त हो गए और दोनो दल के योद्धा उनके शौर्य साहस और पराक्रम की प्रशसा करने लगे। मुस्तफाखा के मारे जातेही मुसल्मान सेना मनहार होने लगी और तत्कालही पर पीछे पडने के लक्षण देख पडने लगे। तब उधर से ग्यारह अमीरों ने समरसिंह जी पर धावा किया और उन्हें मारगिराना चाहा पर इधर से पहिले कहे हुए नौ सरदार उनसे जुट पडे। खूब मार काट धर पकड हुई। बान कमान तलवार साग नेजा वगैरह सब दूर, केवल मल्लयुद्ध और कटारों से काम लियागया। उधर से वे ग्यारह इधर से ये नौ घायल सिंह की तरह गर्जना कर कर युद्ध करने लगे। इस समय भूत बैताल की कौन कहे दोनों दल के लड़ने भिड़ने ... [illegible] इनका कौतुक देखने मग्न होगए। ... [illegible] युद्ध हुआ अन्त में वे ग्यारह ... [illegible]

रतनसिंह अरिसिंह तेजसिंह अर्जुनसिंह सामंतसिंह मेतसिंह और वीरदेव ये सात सरदार खेत रहे।

स्मरण रहे हाहुलीराय हम्मीर का सर काट लाने पर पृथ्वीराज ने पावसपुंडीर को शहाबुद्दीन पर आक्रमण करने की आज्ञा दी थी। स्वामी की आज्ञा शिरोधार्य्य करके पावसराय घोड़े की बाग उठाना ही चाहता था कि बलिभद्रराय कूरम ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा भैय्या आप एक बाजी मार चुके अब बादशाह का बांधना मेरे हिस्से में है। चामंडराय की और रामराय की बातें मेरे कलेजे पर कसकती हैं इसलिये आप ऊपर से सहायता करना मैं आक्रमण करता हूं। इनकी बातें ही हो रही थीं कि वृद्ध जामराय यादव कब का मोरचे पर जा पहुंचा।

इसी तरह उधर निशानों के अफसर सिवानखां सीदी ने शहाबुद्दीन से कहा कि इस काफिर पृथ्वीराज को आज मैं गिरफ्तार करूंगा। शहाबुद्दीन ने प्रसन्न होकर कहा बहुत खूब। निदान उधर नग्न तलवार लपलपाता हुआ वह बढ़ा आता था इधर से जामराय यादव जा पहुंचा और दोनों की मुठभेड़ हो गई। उस समय दोनों बीर एक दूसरे को देख कर ऐसे प्रसन्न हुए जैसे सूर्य्योदय को देख कर चकवा चकवी प्रसन्न होते हैं। दोनों अपने अपने घोड़े छोड़ कर सिंह की भांति गरजते हुए एक दूसरे से जुट कर मल्लयुद्ध करने लगे। होते होते उक्त मुसल्मान सर्दार ने जामराय को पछाड़ दिया और उसके कलेजे में कटार भोंक दिया। कटार लगते ही एक बार उच्च स्वर से "राम" कह कर जामराय संसार से पार होगया। निदान मुसल्मान सेना का वह मोरचा सबल होगया और घनघोर निशान बजाते हुए सिवानखां ने आगे बढ़ना चाहा। तब तक बलिभद्रराय कूरंभ उसके मुकाबले में जा पहुंचा। पीछे से पृथ्वीराज का इशारा पाकर समरसिंह, सेवजसिंह साखुला, पूरनराय परिहार, पहारपति सारंग, चैनराय बघेला, देवराय सारंग, हरदेवसिंह खीची, डोडराय सोलंकी और समरसिंह तोंवर ये नौ सरदार बलिभद्रराय की सहायता के लिये जा पहुंचे। ये सब सरदार शरीर से अच्छे हृष्ट पुष्ट बलवान और युद्ध कौशल में परम निपुण थे। नौ सरदारों के सहित बलिभद्रराय को मोरचे पर आता हुआ देख कर उधर से लत्तारखां का भाई जलालजुलूस बाण चलाता हुआ आगे बढ़ा परन्तु बाणों की आन न मानकर जब बलिभद्रराय बिलकुल पास जा पहुंचा तब उसने तीर कमान फेंक कर तलवार निकाली। बलिभद्रराय के हाथ में तो पहलेही तलवार थी पर उसने दुश्मन का ही पहिला वार होने दिया। उसका वार खाली देकर बलिभद्रराय ने जो हाथ मारा कि जलाल का सिर धड़ से अलग होगया। जलाल के मारे जाने पर कमालखां नाम के एक पठान सरदार ने घोड़ा बढ़ाकर ऐसी साग फेंकी कि बलिभद्रराय के कलेजे के आरपार हो गई पर बलिभद्रराय ने उसे अनका भी नहीं, वह घोड़ा बढाकर कमाल के पास लपक गया और लगे हाथ उसे घोड़े पर से पटक कर उसने एक ऐसा गुर्ज का हाथ मारा कि बेचारे की हड्डी पसली सब चूर चूर हो गई। अपने एक मामा और सगे भाई को मरता देख कर उधर से ताजनखां पठान झपट आया और उसने बलिभद्रराय का सर धड़ से अलग करादिया। सिर कट गया तो क्या हुआ अभी धड़ में स्वासा तो शेष थी। बलिभद्रराय के रुंड ने पक्की दो घड़ी तक तलवार चलाई और शत्रु सेना के करीब दो सौ सिपाही काट कर तब शान्त हुआ। इसी के साथही साथ अपने सब सिपाहियों सहित राव समरसिंह भी खेत रहा। बलिभद्रराय कूरंभ और उसके सहायक राव समरसिंह के मारे जाने पर पुंडीरों ने पसर की। आपको मालूम ही है कि इस पुंडीर दल का अवतंस पावस पुंडीर था। पावस के बल पराक्रम से मुसल्मान लोग अनभिज्ञ न थे। वे जानते थे कि यह वही राजपूत सरदार है जो हमारे हजार आड़े आने पर भी हम्मीर का सर काट ले गया। मरते कटते इस समय कुल